समन्तपासादिकाय विनयट्ठकथाय अत्थवण्णनाभूता
भदन्तसारिपुत्तत्थेरेन कता

सारत्थदीपनी-टीका

(पठमो भागो)

सम्पादको
डॉ० ब्रह्मदेवनारायण शर्मा

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी

पालि-ग्रन्थमाला
[८]

समन्तपासादिकाय विनयट्ठकथाय अत्थवण्णनाभूता

भदन्तसारिपुत्तत्थेरेन कता

सारत्थदीपनी-टीका

[पठमो भागो]

सम्पादको
डॉ० ब्रह्मदेवनारायण शर्मा
एम्० ए०, पी-एच्० डी०
उपाचार्य
पालि एवं थेरवाद विभाग
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय
वाराणसी

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः

PĀLI-GRANTHAMĀLĀ
[Vol. 8]

Samantapāsādikāya Vinayaṭṭhakathāya Atthavaṇṇanābhūtā

Bhadantasāriputtattherena Katā

SĀRATTHADĪPANĪ-ṬĪKĀ

[PART I]

EDITED BY
DR. BRAHMADEVA NĀRĀYAṆA ŚARMĀ
M.A., Ph.D.
Reader
Department of Pāli & Theravāda
Sampurnananda Sanskrit University
Varanasi

VARANASI
1991

Research Publication Supervisor—
Director, Research Institute,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi.

Published by—
Dr. Harish Chandra Mani Tripathi
Publication Officer,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi-221 002.

Available at—
Sales Department,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi-221 002.

First Edition, 1000 Copies
Price Rs. 120.00

Printed by—
Ratna Printing Works
B 21/42 A, Camachha,
Varanasi-221 010.

पालि-ग्रन्थमाला

[८]

समन्तपासादिकाय विनयट्ठकथाय अत्थवण्णनाभूता

भदन्तसारिपुत्तत्थेरेन कता

सारत्थदीपनी-टीका

[पठमो भागो]

सम्पादको

डॉ० ब्रह्मदेवनारायण शर्मा

एम्० ए०, पी-एच्० डी०

उपाचार्य

पालि एवं थेरवाद विभाग

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय

वाराणसी

वाराणस्याम्

२०४८तमे वैक्रमाब्दे　　१९१३ तमे शकाब्दे　　१९९१ तमे खैस्ताब्दे

अनुसन्धानप्रकाशनपर्यवेक्षकः—
निदेशकः, अनुसन्धान-संस्थानस्य
सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालये
वाराणसी ।

□

प्रकाशकः—
डॉ० हरिश्चन्द्रमणित्रिपाठी
प्रकाशनाधिकारी,
सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयस्य
वाराणसी–२२१ ००२.

□

प्राप्तिस्थानम्—
विक्रय-विभागः,
सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयस्य
वाराणसी–२२१ ००२.

□

प्रथमं संस्करणम्, १००० प्रतिरूपाणि

मूल्यम् : १२०.०० रूप्यकाणि

□

मुद्रकः—
रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स,
बी २१/४२ ए, कमच्छा,
वाराणसी–२२१ ०१०.

प्ररोचना

प्रस्तुत ग्रन्थ समन्तपासादिका नाम की अट्ठकथा पर की गयी टीका है। इस टीका के रचयिता भदन्तसारिपुत्त महास्थविर हैं। इस टीका का सम्पादन **डॉ० ब्रह्मदेवनारायण शर्मा** ने किया है और इस पर विस्तृत भूमिका लिखी है। इस टीका की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पालि-वाङ्मय में जो पारिभाषिक शब्द प्रतिष्ठित हुए, उनकी सूक्ष्म पहचान करायी गयी है और इस पहचान के द्वारा जिस प्रकार विनय के आचार-नियमों का निर्वहण परम्परा में किया जाता था, उस पर समुचित प्रकाश डाला है। वस्तुतः यह टीका थेरवादी भिक्खु-समाज की जीवन पद्धति का एक प्रामाणिक अभिलेख प्रस्तुत करती है।

इस टीका की दूसरी विशेषता यह है कि इसमें भिक्खु-परम्परा से प्राप्त निजन्धरी-कथाएँ हैं, जिनके माध्यम से आचार के विधि-निषेधपक्षों का निदर्शन कराया गया है। यह टीका एक उत्तम कथा-कोष प्रस्तुत करती है।

इस टीका की तीसरी विशेषता यह है कि इसमें कुशल चित्त, ज्ञान और चारिका के विविध सोपानों का बहुत हो सटीक वर्णन किया गया है।

संक्षेप में अनेक दृष्टियों से यह टीका शब्दार्थ-प्रकाशन मात्र नहीं है; अपितु थेरवाद की परम्परा की अभिवृद्धि का अभिलेख भी है और इस दृष्टि से बौद्धधर्म और दर्शन के क्षेत्र में शोधार्थियों के लिए उपादेय है। मुझे इस टीका के प्रथमभाग के प्रकाशन पर सन्तोष है। इसका दूसरा भाग भी मुद्रित होकर शीघ्र प्रकाशित होगा। मैं इस ग्रन्थ के सम्पादक डॉ० ब्रह्मदेवनारायण शर्मा को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अथक परिश्रम से इस ग्रन्थ का सम्पादन किया है।

वाराणसी
श्रावणी-पूर्णिमा,
वि० सं० २०४८

विद्यानिवास मिश्र
कुलपति,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

भूमिका

नत्वा बुद्धञ्चधम्मञ्च संघञ्चाति अनाविलं।
विनयत्थविबोधाय निदानं उच्चते मया ।।

जीवन की महत्तम साधना के लिए शील आधार है। शील के उत्कर्ष के विना जीवन में महल्लक्ष्य की प्राप्ति सर्वथा असम्भव है। अतः भगवान् बुद्ध ने जिस सद्धर्म का उपदेश दिया है, उसमें शील का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शील, समाधि और प्रज्ञा भगवान् बुद्ध की त्रिशिक्षा हैं। जिसके द्वारा भवदुःखों का अन्त किया जा सकता है। शील सभी कुशल धर्मों का आधार है। शील निर्वाणनगर में प्रवेश के लिए द्वार है[1]। सभी कुशल धर्मों में शील और सुविशुद्धि प्रमुख है[2]। इसीलिए भगवान् बुद्ध ने भिक्षुओं को सम्पन्नशील होकर विहार करने का उपदेश दिया है, "सम्पन्नसीला, भिक्खवे, विहरथ, सम्पन्नपातिमोक्खा"[3]।

सम्बोधि लाभ के अनन्तर तथागत की अन्तश्चेतना में रागाभिभूत जनों को देखकर धर्मोपदेश के प्रति यद्यपि अभिरुचि उत्पन्न नहीं हुई, किन्तु ब्रह्मयाचना से उत्प्रेरित होकर और समस्त जनजीवन को करुणापूरित नेत्रों से देखने के उपरान्त शोकापन्न जनजीवन के उद्धार के लिए उन्होंने धर्मोपदेश करना स्वीकार किया। सर्व-श्रेष्ठ धर्मग्राहक कौन होगा ? इस उद्देश्य से सर्वप्रथम आलारकालाम और उद्दकरामपुत्र की गवेषणा की, किन्तु उन दोनों को कालकवलित जानकर पंचवर्गीय भिक्षुओं को धर्मोपदेश देने का सङ्कल्प किया तथा बोधगया से चलकर (इसिपतनमिगदाय)सारनाथ पहुँचकर पंचवर्गीय भिक्षुओं को प्रथम धर्मोपदेश किया। जिसे "धर्मचक्रप्रवर्तन" कहते हैं। तदनन्तर उन्होंने 'यस' श्रेष्ठीपुत्र तथा उनके अन्य तीस मित्रों को धर्म में विनीत कर, लोकमांगलिक भावना से उत्प्रेरित होकर नाना जनपदों और दिशाओं में सद्धर्म प्रचार के लिए भेजा। वैदिक धर्म की कट्टरता के कारण जो जनजीवन धर्म के अनुपालन से वंचित था उसने बुद्ध के लोकप्रिय धर्म को गले लगाया और इस प्रकार तथागत प्रवेदित धर्म अल्पकाल में ही लोकप्रिय हो गया। क्रमशः भगवान् बुद्ध ने विभिन्न जनपदों से आये श्रद्धालु भिक्षुओं के लिए प्रव्रज्या और उपसम्पदा का विधान स्वयं किया और यहीं से संघानुशासन के लिए वैनयिक नियम प्रज्ञप्त हुए।

---

१. सग्गारोहणसोपानं, अञ्ञं सीलसमं कुतो
द्वारं वा पन निब्बाननगरस्स पवेसने ।। वि० म० पृ० १०

२. 'को चादि कुसलानं, धम्मानं, सीलं च सुविसुद्धं' ।--सं० नि० ४-१२३ ।

३. सीले पतिट्ठाय नरो सपञ्ञो, चित्तं पञ्ञं च भावयं ।
आतापी निपको भिक्खु, सो इमं विजटये जटं" ति ।। (सं० नि० १-३)
अं० नि० ४, पृ० १६

'विनय' शब्द संस्कृत ग्रन्थों और पालि निकायों में अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है, किन्तु पालि में यह शब्द भिक्षुओं के जीवन को संयमित और साधनामार्ग पर पुरःसृत करने के आचार नियमों के समुच्चय का ज्ञापक है। भगवान बुद्ध के महा-परिनिर्वाण के अनन्तर सुभद्र जैसे भिक्षुओं के अशोभन वचन एवं आचरण से विषण्ण होकर महाकाश्यप ने अधर्म का उन्नयन एवं धर्म के अवपतन की आशंका से विनय और धर्म को सुरक्षित रखने के लिए तथा धर्मदीप को सदा प्रभास्वर बनाये रखने के लिए महासंगीति बुलाने की भावना से उत्प्रेरित हुए। तत्कालीन सम्राट अजातशत्रु के राजकीय संरक्षण में इस महासंगीति के अनुष्ठान की दीप्ति पूर्ण हुई। महाकाश्यप की अन्तश्चेतना में यह भावना पूर्णतः प्रतिबद्ध थी कि विनय के न रहने पर सम्पूर्ण बुद्ध का अनुशासन विनष्ट हो जायगा। विनय के पवित्र नियमों के रहने पर ही बौद्धधर्म की ज्योति सदा प्रभास्वर बनी रहेगी अन्यथा बौद्धधर्म उसी प्रकार विनष्ट हो जायगा जिस प्रकार सूर्य के न रहने पर समस्त सृष्टि विनष्ट हो जाती है। बौद्धधर्म को आलोक प्रदान करने वाला यह विनय-प्रभास्वर सूर्य के समान है। जिसके आलोक में संघ में दीक्षित भिक्षु संघ ही नहीं वरन् समस्त जनजीवन प्राणवन्त चेतना से उर्जस्वित रहेगा।

सुत्त और अभिधर्म की जितनी महत्ता है उससे कहीं अधिक महत्ता विनय की है। सुत्त और अभिधर्म यदि ज्ञानदर्शन का आलोक है तो विनय उस आलोक का आधार है। भगवान् बुद्ध के धर्म और दर्शन अर्थात् सुत्त और अभिधर्म को अपनी ज्ञान की सीमा में आयत्त कर संसार-प्रपंच को पार कर निर्वाण को प्राप्त किया जा सकता है, जो शील में संप्रतिष्ठित है। यह विनय उस पवित्र शील को नियमित और संयमित कर पूर्णता प्रदान करने वाला मानवीय अन्तश्चेतना का नैतिक न्यष्टि है, जिसके अभाव में समस्त साधनाएं विशीर्ण हो जाती हैं। इसीलिए कहा गया है कि "विनय बौद्धशासन की आयु" है[1]। जीवन के बीहड़ कान्तार में भटकने वाले भिक्षुओं के लिए दीपस्तम्भ के समान है। जिस प्रकार जलावर्तों में फंसी नाव तरंगों के घात-प्रतिघात पाकर डूब जाती है, उसी प्रकार विनय-विपन्न भिक्षु जीवन या सम्पूर्ण जनजीवन संसार के विषय तरंगों से प्रतिहत होकर भवप्रपंच की बाढ़ में डूब जाता है। अपार से पार को प्राप्त पारायण को नहीं प्राप्त कर पाता। अतः महाकाश्यप ने सिंह के समान उद्घोष किया कि "विनय के रहने पर ही बौद्ध-शासन की चिरकालिक संस्थिति सम्भव है—'विनये ठिते सासनं ठितं होती"ति।

बौद्धधर्म की पूर्ण प्रतिष्ठा के लिए विनय की भी पूर्ण प्रतिष्ठा अपेक्षित है। क्योंकि ये दोनों अविभाज्य और परस्पराश्रयी हैं। विनय के विना धर्म और धर्म के विना विनय की परिकल्पना जो करता है वह मरुप्रदेश में हरीतिमा से उल्लसित भूमि की परिकल्पना करता है। शासित मष्तिष्क में जैसे शास्त्र चिन्ता प्रवर्तित होती है, उसी प्रकार विनयानुशासित हृदय में धर्म की सुरसरि की लहरे रूपायित होती है। विनय नैतिक जीवन के उत्कर्ष के प्रकर्ष का सूचक है और धर्म आध्यात्मिक जीवन के समु-

---

१. विनयो नाम बौद्धसासनस्स आयू ति।

न्नयन का प्रभापुलकित प्रतीक है। विनय सम्पूर्ण जिनों के शासन की प्रमुख आधारभूमि है तो धर्म उस आधारभूमि पर खिलने वाला उत्फुल्ल कमल है, जिसकी सुरभि दिग्दिगन्त में प्रतिवात के होने पर भी परिव्याप्त हो जाती है। इन्हीं भावनाओं से उत्प्रेरित होकर महाकाश्यप ने धर्म और विनय के सांगायन का संकल्प लिया "धम्मं च विनयं च संगायेय्याम"।

विनय भगवान् बुद्ध की आज्ञादेशना (आणादेसना) है, अर्थात् "इदं वो कप्पति इदं वो न कप्पति" की देशना है। करणीय और अकरणीय को निर्देशित करने की देशना है। धर्मों के प्रविचय की देशना है। क्योंकि सांसारिक उपक्लेशों का उपशमन धर्मप्रविचय के विना सम्भव नहीं है।

विनय यथापराध शासन है। भिक्षुसंघ में जहां कहीं भगवान् बुद्ध ने उच्छृङ्खलता और असंयतता देखी वहाँ उन्होंने अपराध के अनुरूप दण्ड का विधान किया। कठिन अपराधों के लिए कठिन दण्डविधान और सामान्य अपराधों के लिए सामान्य दण्ड विधान प्रज्ञप्त हुआ।

भिक्षुओं के जीवन में संवर अर्थात् इन्द्रियनियन्त्रण तथा आत्मसंयम का अतिशय महत्त्व है। इसीलिए भगवान् बुद्ध ने संवरविनय[1] का प्रज्ञापन किया वे हैं—शीलसम्वर, स्मृतिसम्वर, ज्ञानसम्वर, क्षान्तिसम्वर तथा वीर्यसम्वर। इनके द्वारा कायिक, वाचसिक एवं मानसिक दुश्चरितों का विनाश होता है तथा कायसुचरितादि का आधान होता है जिससे पूर्ण आत्मसंयमन का अवसर प्राप्त होता है।

विनय में अधिशीलशिक्षा वर्णित है। भगवान् बुद्ध ने सम्पूर्ण शिक्षापद तीन वर्गों में विभक्त किया है। जिसमें सर्वप्रथम अधिशील शिक्षा है। 'सभी पापों का न करना, कुशल धर्मों का सञ्चयन करते रहना, अपने चित्त को परिष्कृत बनाना, किसी की निन्दा न करना, किसी को आघात न पहुँचाना, प्रातिमोक्ष के नियमों का पालन करना, भोजन में निश्चित परिमाण का ज्ञान रखना, एकान्त में शयनासन तथा चित्त को योगयुक्त रखना ही बुद्ध का अनुशासन है[2] तथा अधिशील शिक्षा का चरम चिरन्तन विन्दु है।

इस प्रकार कायिक, वाचसिक एवं मानसिक कर्मों के व्यतिक्रम अर्थात् उल्लंघन का निवारण विनय के नियमों के पालन से ही सम्भव है। विनय में अध्याचार

१. संवरविनयो ति सीलसंवरो, सतिसंवरो ञाणसंवरो खन्तिसंवरो वीरियसंवरो ति पञ्चविधोपि संवरो यथासकं संवरितब्बानं विनेतब्बानञ्च कायदुच्चरितादीनं संवरणतो संवरो, सा० दी० भा० २, पृ० ३६।

२. "सब्बपापस्स अकरणं कुसलस्स उपसम्पदा।
सचित्त परियोदपनं एतं बुद्धानसासनं॥
अनूपवादो अनूपघातो पातिमोक्खे च संवरो।
मत्तञ्ञुता च भत्तस्मिं पन्तं च सयनासनं॥
अधिचित्ते च आयोगो एतं बुद्धानसासनं॥ ध० प०, बु० व० पृ० १०६, १०८

(अज्झाचार) के परिवर्जन के नियम निर्धारित एवं प्रज्ञप्त हैं। इन नियमों के अनुसार चलकर कोई भी भिक्षु कर्मसंक्लेशों से विमुक्त एवं विसंस्कार चित्त होकर निर्वाण प्राप्त कर सकता है।

इस प्रकार विनय कायिक, वाचसिक एवं मानसिक शुद्धता के लिए आवश्यक और अपरिहार्य है। धर्म के अवगाहन से स्पष्ट हो जाता है कि उसमें विनय अन्तर्भूत हैं, जैसा कि अंगुत्तर निकाय में भगवान् बुद्ध ने कहा है कि सम्पूर्ण शिक्षापद शील, समाधि एवं प्रज्ञा के सतत अभ्यास में ही निहित है। "रजोहरणसुत्त" में तो सम्पूर्ण विनयपिटक ही आ जाता है। लोकीय सफलता के लिए भी जब संयम या अनुशासन आवश्यक है तो ब्रह्मचर्य के उस महत् लक्ष्य के लिए कितना आवश्यक था। यह सहजतया अनुमान लगाया जा सकता है। इसीलिए संगीतिकारों ने कहा कि "विनये ठिते सासनं ठितं होति"। अनेक सुत्तों में भगवान् बुद्ध ने विनय सम्बन्धी नियमों का पूर्णतः पालन करने का भिक्षुओं को उपदेश दिया है। जब तक भगवान् महापरिनिर्वाण को प्राप्त नहीं हुए थे तब तक उनके व्यक्तित्व और साक्षात् सम्पर्क से मनुष्यों को प्रेरणा मिलती थी। किन्तु उनके परिनिवृत हो जाने के बाद विनय-सम्बन्धी नियम ही संघ की एकता और मौलिक पवित्रता के लिए एकमात्र आश्रय रह गया। तदनन्तर बौद्ध-संघ में विनय पिटक का जो महान आदर और गौरव प्रतिष्ठापित हुआ वह आज भी देखा जा सकता है। लंका, वर्मा, स्याम आदि देशों के भिक्षुसंघ ने अत्यन्त प्राचीन काल से उसे सुत्तपिटक से भी ऊँचा स्थान दिया है, क्योंकि उसे ही उन्होंने बुद्धशासन की आयु माना है। "विनयो नाम सासनस्स आयू"ति। सिंहल, स्याम और वर्मा के भिक्षुसंघ में आज भी यह विश्वास दृढ़ है, और वे त्रिपिटक में वर्णित विषयों में विनय को सर्वप्रथम स्थान प्रदान करते हैं। विनय का प्रभाव वर्मा भिक्षु संघ पर तथा सिंहली भिक्षु संघ पर समान रूप से रहा है। दोनों देशों में बुद्धदत्त, बुद्धघोष और धम्मपाल के काल से लेकर आज तक विनयपिटक पर विपुल व्याख्यापरक साहित्य की रचना हुई है। इसी प्रकार चीन, जापान, तिब्बत आदि देशों के भिक्षुसंघों में भी विनय का महान् आदर है। विनय की महत्ता सम्पूर्ण बौद्ध जगत् सामान्य रूप से स्वीकार करता है।

विनय के नियम विनयपिटक में संकलित है। यह सुत्तविभङ्ग, खन्धक और परिवारपाठ में विभाजित है। सुत्तविभङ्ग के दो भाग हैं—भिक्षुविभङ्ग और भिक्षुणीविभङ्ग। खन्धक भी दो भागों में विभक्त है—महावग्ग और चुल्लवग्ग। इस प्रकार विनय पिटक भिक्खुविभङ्ग, भिक्खुनीविभङ्ग, महावग्ग, चुल्लवग्ग और परिवार-पाठ कुल ५ भागों में विभक्त है। ये विनय के नियम ई० पू० ६ठी शताब्दी में प्रज्ञप्त हुए थे। जिनमें वैदिक और जैन आचारों के भी नियमों का समन्वय दृष्टिगत होता है। उस समय जो नियम निर्धारित किये गये थे वे कालान्तर में दुर्बोध प्रतीत होने लगे क्योंकि नियमों के शब्दों के अर्थ सामान्य अर्थ से भिन्न प्राविधिकरूप में रूढ़ हो गये थे। अतः पालिवाङ्मय के बहुश्रुत विद्वान् अट्ठकथाकार आचार्य बुद्धघोष ने वैनयिक नियमों में आगत शब्दों का अपनी प्रखर प्रज्ञा के द्वारा निर्वचन

किया। यह निर्वचन सरल, सुबोध और प्रासादिक शैली में उपनिबद्ध हुआ। अतः आचार्य बुद्धघोष ने स्वरचित अट्ठकथा का नाम 'समन्तपासादिका' रखा। जिसका अर्थ सम्पूर्णरूप से सबों को प्रसन्नता प्रदान करने वाली अट्ठकथा होता है। "समन्ततो सब्बसो पसादं जनेती ति समन्तपासादिका"।

विनय के नियम तथा उसके अर्थ बुद्धकाल में सहज और सुबोध्य अवश्य रहे होंगे। किन्तु समय के अन्तराल से उनमें दुर्बोधता आने लगी ऐसा ऊपर कहा जा चुका है। उसी दुर्बोधता के निराकरण के लिए शब्द और अर्थ के मर्मज्ञ एवं चिन्तन-मनन के अग्रणी आचार्य बुद्धघोष ने शब्दों के भीतर निगूढ अर्थों का निर्वचनात्मक विश्लेषण के द्वारा अर्थों का निरूपण किया है। उनकी अर्थनिरूपण की शैली प्रासादिक तथा हृदयावर्जक है। जिसका संकेत हमें "समन्तपासादिका" नाम से ही हो जाता है। समन्तपासादिका नामक अट्ठकथा में आचार्य बुद्धघोष ने केवल शब्दों की आनुपूर्वी व्याख्या उपन्यस्त नहीं की है वरन् उस अर्थ की अपूर्व दीप्ति के लिए सामाजिक जनजीवन एवं भिक्षुजीवन में प्रवर्तित कथाओं एवं अन्तर्कथाओं का आश्रय ग्रहण किया है, जिससे अनेक ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों का भी आकलन स्वभावतः हो जाता है। उनकी शैली वैज्ञानिक, प्रामाणिक और निगूढ़ है। उन्होंने जो कुछ भी अट्ठकथाओं में कहा है वे सब के सब किसी न किसी मूल आधार पर आधृत हैं। समन्तपासादिका आचार्य बुद्धघोष की सम्भवतः प्रथम अट्ठकथा है।

जब अट्ठकथाएँ भी दुरनुबोध, दुर्दर्श और दुरवगाह हो गई तब अट्ठकथाओं को भी टीकाएँ लिखी जाने लगी। फलतः अनेक टीका ग्रन्थों का प्रणयन हुआ। यह कार्य सिंहल और बर्मा आदि देशों में आज तक होता आ रहा है। टीका का अर्थ "टीक्यते अर्थो यया सा टीका" अर्थात् जिससे अर्थ का अवबोध होता है। टीका से केवल अर्थ का ही ज्ञान नहीं होता वरन् निरन्तर व्याख्यात होने के कारण वह सहज ही सुबोध्य भी बन जाता है[1]। टीकाओं में व्युत्पत्यात्मक विवेचना के वाद शास्त्रीय गौरव की दृष्टि से उन शब्दों के अर्थों को उन्मीलित किया गया। इसमें कहीं कहीं शब्दों की विवेचना व्युत्पत्त्यात्मक शैली में की गई है तो कहीं पर्यायवाची शब्दों के द्वारा अर्थं को स्पष्ट किया गया है तथा कहीं कहीं गम्भीर विवेचन की दृष्टि से शब्दों की मीमांसा अनेक प्रकरणों के उद्धरण के माध्यम से की गई है। जिससे वह शब्द सहज ही सुबोध्य बन गये हैं। उदाहरण के लिए टीका की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

"नाथो ति लोकपटिसरणो, लोकसामी लोकनायको ति वुत्तं होति। तथा हि सब्बानत्थंपरिहारपुब्बङ्गमाय निरवसेसहितसुखविधानतप्पराय निरतिसयाय पयोग-सम्पत्तिया सदेवमनुस्साय पजाय अच्चन्तुपकारिताय अपरिमितनिरुपमप्पभावगुणविसेस-समङ्गिताय च सब्बसत्तुत्तमो भगवा अपरिमाणासु लोकधातूसु अपरिमाणानं सत्तानं एकपटिसरणो पतिट्ठा। अथ वा नाथती ति नाथो, वेनेय्यानं हितसुखं मेत्तायनवसेन आसीसति पत्थेती ति अत्थो। अथ वा नाथति वेनेय्यगते किलेसे उपतापेती ति अत्थो,

१. टीका निरन्तरव्याख्या। सुगमाणां विषयाणां च निरन्तरं व्याख्या यस्यां सा टीका।

नाथती ति वा याचतीति अत्थो। भगवा हि साधु भिक्खवे भिक्खु कालेन कालं अत्त-सम्पत्ति पच्चवेक्खेय्या" ति आदिना सत्तानं तं तं हितपटिपत्ति याचित्वा पि करुणाय समुस्साहितो ते तत्थ नियोजेति। परमेन वा चित्तिस्सरियेन समन्नागतो सब्बसत्ते ईसति अभिभवती ति परमिस्सरो भगवा "नाथो" ति वुच्चति।

तत्थ किरतीति करुणा, परदुक्खं विक्खिपति अपनेती ति अत्थो। दुक्खितेसु वा किरीयति पसारीयती ति करुणा। अथ वा किणातीति करुणा, परदुक्खे सति कारुणिकं हिंसति विबाधेति, विनासेति वा परस्स दुक्खं ति अत्थो। परदुक्खे सति साधूनं कम्पनं हृदयखेदं करोती ति वा करुणा। अथ वा कमिति सुखं, तं रुन्धती ति करुणा।

ऊपर की पंक्तियों के पर्यालोचन से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि शब्दों के स्पष्टीकरण में एक शब्द के लिए कई पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिससे शब्द के मूल अर्थ का सम्प्रत्यय हो जाय। दूसरी निर्वचन शैली में पर्यायवाची शब्दों के सन्निवेश के साथ ही अन्य वैसे शब्दों का विनियोग किया गया है, जो उसकी सम्पूर्ण अर्थच्छायाओं का स्पष्टीकरण कर सके। टीका की तीसरी शैली व्याख्यानात्मक है। जिसके द्वारा अतिगहनता एवं सूक्ष्मता के साथ एक ही शब्द की मीमांसा बहुविध-रूपों में उपन्यस्त की गई है। तथा टीका की चौथी विशेषता निरूक्त शैली है, जिससे शब्दों के मूल स्वरूप का सम्प्रत्यय होता है। इस प्रकार पर्यायवाची शब्दों का विधान, निरूक्त शैली या व्युत्पत्त्यात्मक शैली व्याकरणात्मक शैली तथा व्याख्यानात्मक शैली टीका की मुख्य विशेषता है।

'सारत्थदीपनीटीका' 'समन्तपासादिका' (विनयट्ठकथा) की टीका है। यह भदन्त सारिपुत्र महास्थविर की सर्वोत्तम रचना है। यह तीन भागों में विभक्त है। जिसमें सम्पूर्ण विनयपिटक के विषयवस्तु का पुङ्खानुपुङ्ख विश्लेषण तथा तथ्यों का यौक्तिक विशदीकरण और तथ्यगत उपस्थापन किया गया है। "समन्तपासादिका आचार्य बुद्धघोष की प्रखर प्रज्ञा का सर्वोत्तम निदर्शन है। इसमें प्रयुक्त दुरूह एवं दुरनुबोध्य पद जो अवबोध्य नहीं हो सके हैं, उन्हीं को सुबोध और सहजगम्य बनाने के लिए बहुप्रज्ञ महास्थविर सारिपुत्र ने सारत्थदीपनीटीका का साधु-निबन्धन इस प्रकार किया है जिससे समन्तपासादिका में प्रयुक्त शब्दों की अर्थगत दुरूहता एवं दुर्बोधता अशेषतः निराकृत हो गई है। 'सारत्थदीपनीटीका' का अर्थ सार अर्थ को प्रकाशित करनेवाली 'टीका' होता है। भदन्त सारिपुत्र स्थविर ने पूर्णतः अवहित होकर गम्भीरता के साथ मूलशब्दों की अर्थवत्ता के स्पष्टीकरण के लिए स्तुत्य प्रयास किया है। जिससे भदन्त सारिपुत्र स्थविर की बहुज्ञता का प्रतिपल दर्शन होता है। उनकी दृष्टि में कोई भी शब्द अपर्यालोचित नहीं रह सका है। 'सारत्थदीपनीटीका' विनयट्ठकथा में प्रयुक्त प्रत्येक पदों तथा प्राविधिक शब्दों की मीमांसा सुबोध एवं सरलनय से प्रस्तुत करती है।

ग्रन्थारम्भ कथा के वर्णनक्रम में आचार्य ने ग्रन्थ रचना के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि मैं विनयट्ठकथा में आगत पदों की गूढ़ और सार अर्थ को

प्रकाशित करनेवाली "लीनसारत्थदीपनी" नामक टीका की रचना करूँगा।

'विनयट्ठकथाया'हं, लीनसारत्थदीपनिं।
करिस्सामि सुविञ्ञेय्यं, परिपुण्णमनाकुलं॥

उन्होंने यह भी कहा है कि यद्यपि पुराने आचार्यों ने इसके गूढ़ अर्थ को प्रकाशित किया है, पर वह सभी भिक्षुओं के लिए सर्वतोभावेन अर्थसाधक नहीं है। क्योंकि सिंहली भाषा में निबद्ध वह गूढार्थ दुर्विज्ञेय है, साथ ही उसमें अनेक ग्रन्थिस्थल रह गये हैं जो दुर्बोध्य हैं। मागधी भाषा में भी इन अर्थों को प्रकाशित करने का यत्न किया गया है पर वह भी अन्य भाषाओं के साथ सम्मिश्रित होने के कारण स्पष्ट अर्थ को द्योतन करने में असमर्थ है। आचार्य ने अन्तिम गाथा के द्वारा यह सूचित किया है कि "इन सब दोषों से रहित, सभी प्रकार से सार को ग्रहण कर परिपूर्ण रूप से सरल एवं सुबोध अर्थ को प्रकाशित करने के लिए 'सारत्थदीपनी' नामक ग्रन्थ की रचना करूँगा"।

भासन्तरं ततो हित्वा, सारमादाय सब्बसो।
अनाकुलं करिस्सामि, परिपुण्णविनिच्छयं ति॥

उपर्युक्त सन्दर्भों से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि आचार्य सारिपुत्र ने समन्तपासादिका के दुरनुबोध अव्याख्यात पदों की सरल, सुबोध, स्पष्ट एवं गम्भीर व्याख्या प्रस्तुत करने के लिए 'सारत्थदीपनीटीका' की रचना की।

सद्धम्मसंगहो में सारत्थदीपनीटीका की रचना के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि :—"अथ खो थेरा भिक्खू भत्तकिच्चावसाने परक्कमवाहुनरिन्देन कतपासादे सन्निपतित्वा विनयपिटकट्ठकथाय समन्तपासादिकाय अत्थवण्णनं आरभित्वा मूलभासाय मगधिकाय निरुत्तिया सारत्थदीपनी नाम अत्थवण्णनं ठपेसुं[1]।

इससे यह ज्ञात होता है कि भदन्त सारिपुत्र ने समन्तपासादिका के दुरूह पदों का अर्थवर्णना के लिए मूलभाषा मागधी में सारत्थदीपनीटीका का प्रणयन किया। विनय में पटुभाव प्राप्त करने के लिए तथा बुद्धशासन की अभिवृद्धि हेतु विनयट्ठकथा के अर्थ को प्रकाशित करने के लिए सारत्थदीपनी की रचना की[2] गई।

परिचिति

'सारत्थदीपनीटीका' ग्रन्थारम्भकथा से प्रारम्भ हुई है। जिसके द्वारा सर्वप्रथम बुद्ध, धर्म और संघ की वन्दना की गई है। कहा गया है कि—"महाकारुणिक बुद्ध,

---

१. सद्धम्मसं०—पृ० ३८।

२. विनये पाटवत्थाय सासनस्स च वुड्ढिया।
वण्णना च समारद्धा, विनयट्ठकथाय सा
"सारत्थदीपनी नाम, सब्बसो परिनिट्ठिता।
तिंससहस्समत्तेहि, गन्थेहि परिमाणतो॥ सद्ध० सं० पृ० ३८।

श्रेष्ठ एवं विमल धर्म तथा दाक्षिणेय्य तथा मलरहित संघ की वन्दना करता हूँ, जिसके प्रभापुलकित तेज को प्राप्त कर बौद्धशासन को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए विनयट्ठकथा (समन्तपासादिका) के अर्थ को प्रकाशित करनेवाली "लीनसारत्थदोपनी-टीका" की रचना करूँगा।

"महाकारुणिकं बुद्धं, धम्मञ्च विमलं वरं।
बन्दे अरियसंघञ्च, दक्खिणेय्यं निरङ्गणं[1] ॥

महास्थविर सारिपुत्र ने ग्रन्थरचना निर्विघ्न सम्पन्न हो इसलिए मंगलाचरण के रूप में उपर्युक्त गाथा का उद्गीरण किया है। जिसमें बुद्ध धर्म एवं संघ को नमस्कार किया । पुनः परियत्ति (बुद्धवचनों) की रक्षा में सहायक संघनायक महास्थविर कश्यप का गुणानुस्मरण करते हुए उन्होंने कहा है कि उलारपुण्य के तेज से सभी शत्रुओं को नष्ट कर लंकाधिराज पराक्रम बाहु राज्याभिषिक्त हो बौद्धशासन को दृढ़ता प्रदान करने के लिए तथा संघ के लिए सभी सामग्रियाँ उपलब्ध कराकर शासन को सुविशुद्ध किया। संघप्रमुख महास्थविर 'कस्सप' ने ताम्रपर्णिद्वीप में बुद्धशासन को सुविशुद्ध और निर्मल बनाये रखने के लिए स्तुत्य प्रयास किया। महाकश्यप के गुणों का स्मरण करते हुए ग्रन्थकार ने कहा है कि महाकश्यप सदा साधना में तत्पर शीलादि गुणों से विभूषित आकास में चन्द्रमा की भाँति निर्मल तथा प्रकाशपुञ्ज की भाँति अपूर्व तेज सम्पन्न हैं। जो संघ के पिता हैं जिनके आश्रय में रहकर बौद्धशासन में प्रौढ़ता प्राप्त कर सका हूँ। उनको नमस्कार एवं वन्दना करता हूँ। अपने गुरु महास्थविर सुमेध के गुणानुस्मरण करते हुए आचार्य ने कहा है कि "महाकस्सप के बताये मार्ग का अनुशरण करने वाले श्रुतिविश्रुत अखण्डशील से सुशोभित निर्मल गुणों से युक्त बहुश्रुत, स्मृतिमान, दान्त एवं शान्त तथा एकाग्रचित्त धीर, गणनायक, आगम, तर्कशास्त्र, व्याकरणशास्त्र आदि के पारङ्गत विद्वान् हैं, जिनके चरणों में बैठकर भिक्षुगण शासन में सुप्रतिष्ठित हैं। वैसे प्रज्ञासम्पन्न संघनायक गुरु की मैं वन्दना करता हूँ। तदनन्तर अपनी रचना के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा है कि मैं "विनयट्ठकथा (समन्तपासादिका) के सार अर्थ को प्रकाशित करनेवाली 'लीनसारत्थदीपनी' नामक ग्रन्थ की रचना करूँगा जो सभी प्रकार से पूर्ण, सुव्यक्त, सुचिन्तित एवं सुविज्ञेय होगा[2]।

उपर्युक्त सन्दर्भों से यह ज्ञात होता है कि 'सारत्थदीपनी' समन्तपासादिका की टीका है। इसका वर्ण्यविषय सामन्तपासादिका के विषयों को स्पष्ट करना है। अतः इस प्रथम भाग में ग्रन्थारम्भकथा से लेकर बुद्धाचिण्णकथा तक के विषयों की विस्तृत व्याख्या की गई है। ग्रन्थारम्भ कथा की गाथाओं का विश्लेषण करते हुए आचार्य ने कहा है कि आचार्यबुद्धघोष ने विनय के सम्यक् वर्णन क्रम में सर्वप्रथम

---

१. सारत्थ० पृ० १.
२. सारत्थ० टी० पृ० ३

त्रिरत्न की वन्दना की है। और त्रिरत्न के विशिष्ट गुणों को दर्शाने के लिए—

"यो कप्पकोटीहि पि अप्पमेय्यं"
कालं करोन्तो अतिदुक्करानि।
खेदं गतो लोकहिताय नाथो,
नमो महाकारुणिकस्स तस्स" आदि गाथा

का निर्वचन किया है। क्योंकि वन्दनीय पुरुष की वन्दना करने से अभिप्राय की सिद्धि होती है। यहाँ आचार्य ने विनय वर्णन के प्रारम्भ में त्रिरत्न की वन्दना अनेक तात्पर्य से किया है। जैसा कि सारत्थदीपनी टीका में द्रष्टव्य है—"रत्नत्रय की पूजा से वर्णन करने वाले धर्म में वृद्धि, निःश्रेयस एवं विशुद्धभाव की प्राप्ति होती है। वर्णितधर्मों के प्रति विज्ञजन का आदर प्राप्त होता है। शीघ्रता के साथ धर्म की प्राप्ति, धारण, उग्रहण आदि क्रम को प्राप्त करने के लिए सम्यक् मार्ग प्रतिपन्न होकर सबों के हित सुख सम्पादन के लिए तथा मङ्गल के लिए। सभी करणीय कृत्यों में त्रिरत्न की वन्दना प्रथम अभीष्ट होने से, पण्डितों के द्वारा ऐसा किये जाने से तथा शिष्ट प्रयोग के कारण भविष्य में सभी प्रकार की मिथ्याभावनाओं को नष्ट करने के लिए बुद्ध धर्म और संघ की वन्दना की है।

महास्थविर सारिपुत्र ने भी विनयट्ठकथा की व्याख्या निर्विघ्न सम्पन्न हो इसके लिए त्रिरत्न की वन्दना की है। उन्होंने कहा है कि—मयं पि इधाधिप्पेतमेवपयोजनं दस्सयिस्साम, तस्मा संवण्णनारम्भे रतनत्तयपणामकरणं यथापटिञ्ञातसंवण्णनाय अनन्तरायेन परिसमापनत्थं ति वेदितब्बं। इदमेव हि पयोजनं आचरियेन इधाधिप्पेतं तथा हि वक्खति—

इच्चेवमच्चन्तनमस्सनेय्यं,
नमस्समानो रतनत्तयं यं।
पुञ्ञाभिसन्दं विपुलं अलत्थं,
तस्सानुभावेन हतन्तरायो' ति[1] ॥

अट्ठकथाकार आचार्य बुद्धघोष ने त्रिरत्न की वन्दना के प्रयोजन पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि रत्नत्रय प्रणम्य हैं इसलिए मैंने जो त्रिरत्न के प्रणाम का विपुल पुण्य प्राप्त किया है उसके आनुभाव से सभी विघ्न दूर हों और यह रचना निर्विघ्न सम्पन्न हो। टीकाकार ने भी इसी आशय से त्रिरत्न की वन्दना की है।

त्रिरत्न की वन्दना का अन्य प्रयोजन दर्शाते हुए टीकाकार ने कहा है कि—संकलिपत कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो, इसके लिए, प्रज्ञा में पटुता प्राप्त हो इसके लिए तथा प्रज्ञापटुता के द्वारा राग, द्वेषादि मल नष्ट हो जाय इसलिए भी त्रिरत्न की वन्दना इष्ट है। आचार्य ने त्रिपिटक में वर्णित उद्धरण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि—"हे महानाम आर्यश्रावक जिस समय तथागत का अनुस्मरण करता है; उस

१. स० पा०—३

समय उसके चित्त में राग, द्वेष एवं मोह नहीं रहता उसका चित्त परिशुद्ध रहता है जिससे प्रज्ञा में पटुता प्राप्त होती है[१]।

अथवा त्रिरत्न की पूजा आदर और वन्दना करने से आयु, वर्ण सुख एवं बल बढ़ता है, जिससे निर्विघ्नतः इष्ट की सिद्धि होती है। अतः आचार्य ने ग्रन्थारम्भ के रूप में त्रिरत्न की वन्दना की है। कहा है कि—तस्मा सुवुत्तं संवण्णनारम्भे रतनत्तय-पणामकरणं यथापटिञ्ञातसंवण्णनाय अनन्तरायेन परिसमापनत्थं ति वेदितब्बं" ति[२]। विनय वर्णन क्रम में ग्रन्थरचना रूप इष्ट निर्विघ्न सम्पन्न हो इसलिए आचार्य ने त्रिरत्न की वन्दना सप्रयोजन किया है। सर्वप्रथम बुद्ध की वन्दना करते हुए—'यो कप्पकोटीहि पि अप्पमेय्यं' का अभिधान किया है। टीकाकार ने यह विचार प्रस्तुत किया है कि जिस विनयदेशना का वर्णन मैं करने जा रहा हूँ वह करुणाप्रधान है न कि सुत्तन्तदेशना के समान करुणा प्रज्ञाप्रधान है और न अभिधम्मदेशना के समान केवल प्रज्ञाप्रधान ही है। इसीलिए आचार्य बुद्धघोष ने करुणाप्रधान भगवान् बुद्ध की सर्वप्रथम स्तुति की है। यह आचार्यों का स्वभाव है कि विषयानुरूप स्तुति ग्रन्थारम्भ में करते हैं। जिससे यह स्पष्ट हो जाय कि वर्ण्यविषय क्या है। सुत्तन्त-देशना का वर्णन करते हुए आचार्य ने करुणाप्रज्ञा प्रधान स्तुति की है जैसा कि "करुणासीतलहृदयं, पञ्ञापज्जोतविहतमोहतमं" अथवा अभिधम्मदेशना के वर्णन क्रम में आचार्य ने "करुणा विय सत्तेसु, पञ्ञा यस्स महेसिनो" ति प्रज्ञाप्रधान स्तुति की है। सुत्तन्त की देशना करुणाप्रज्ञाप्रधान इसलिए है क्योंकि इसमें प्राणियों के आशय, अनुशय, अधिमुक्ति तथा चर्या को जाननेवाली प्रज्ञा के द्वारा परिच्छेद कर प्राणियों पर महाकरुणा से पूरित होकर भगवान उनके अनुरूप देशना करते हैं। विनय देशना महाकरुणाबहुल होने के कारण विनेय्य प्राणियों को उनके अध्याशय के अनुकूल गम्भीर अर्थ में प्रतिष्ठित करती है। अभिधर्मदेशना केवल प्रज्ञाप्रधान है। इसलिए प्राणियों को परमार्थ धर्मों के यथास्वभाव का प्रतिवेध कराने में समर्थ है।

विनयदेशना तो आशयनिरपेक्ष है। केवल करुणाभरित हृदय से भगवान् ने वैसे प्राणियों के लिए भी इसकी देशना की है जो सुनने के योग्य नहीं है, जो पूछने के योग्य नहीं है तथा जो वार्तालाप के योग्य नहीं है उनके लिए शिक्षापदों का प्रज्ञापन किया है। जिससे वे भी अकुशल को त्याग कर कुशलमार्ग पर प्रतिपन्न हो सकें। अतः विनेय्यजनों को विनीत करने के लिए करुणायुक्त होकर भगवान् ने विनय की देशना की है। इसीलिए आचार्य ने करुणाप्रधान भगवान् की स्तुति की है।

पुनः करुणा ग्रहण से बुद्ध के सभी गुण स्वयं संग्रहोत हो जाते हैं। महाकरुणा के ग्रहण से बुद्धों का छ असाधारण ज्ञान समाहित हो जाते हैं। करुणा के ग्रहण से सम्पूर्ण बुद्ध गुण उसमें स्वयं ही द्योतित होने लगते हैं और इस प्रकार भगवान् बुद्ध के

१. अं० नि० भा० ३-८।

२. सारत्थ० टी०—भा० १ पृ० ६।

अशेष गुणों का कथन इसी एक पद के द्वारा अभिव्यक्त हो जाता है। इसीलिये आचार्य ने सर्वप्रथम भगवान् की करुणा प्रधान स्तुति की है। अन्यथा तथागत के अशेष गुणों के आख्यान करने में कौन समर्थ हो सकता है। कहा भी गया है कि—"बुद्ध के गुणों का वर्णन यदि स्वयं बुद्ध कल्पभर अपने मुख से करें तो भी कल्प समाप्त हो जाय पर बुद्धगुणों का अशेषतः वर्णन नहीं किया जा सकता।

यथा—

"बुद्धोपि बुद्धस्स भणेय्य वण्णं,
कप्पम्पि चे अञ्ञमभासमानो।
खीयेथ कप्पो चिरदीघमन्तरे,
वण्णो न खीयेथ तथागतस्सा" ति।[1]

इस प्रकार टीकाकार ने सर्वप्रथम मङ्गलाचरण के रूप में महाकारुणिक बुद्ध की स्तुति सप्रयोजन की है। जिससे ग्रन्थरचना रूप इष्ट की सिद्धि में बाधक तत्त्व नष्ट हों, प्रज्ञा में पटुता आये तथा सभी लोगों का मङ्गल हो। इसी भावना से उत्प्रेरित होकर मङ्गलाचरण किया गया है।

मङ्गलाचरण का प्रयोजन दर्शाने के उपरान्त टीकाकार ने 'समन्तपासादिका' की प्रथम गाथा की व्याख्या विस्तार से की है; जो इस प्रकार है—"लोकस्वामी भगवान् तथागत ने लोकहित के लिए अपरिमेय्य काल तक दुष्कर चर्या के द्वारा खेद अनुभव किया। उस महाकारुणिक बुद्ध को नमस्कार करता हूँ।" टीकाकार ने इस गाथा की व्याख्या करते हुए कहा है कि "कप्पकोटीहिपी" ति आदिना पन याय करुणाय सो "महाकारुणिको" ति वुच्चति, तस्सा वसेन कप्पकोटिगणनायपि अप्पमेय्यं कालं लोकहितत्थाय अतिदुक्करं करोन्तस्स भगवतो दुक्खानुभवनं दस्सेति। करुणाय बलेनेव हि सो भगवा हत्थगतम्पि निब्बानं पहाय संसारपङ्के निमुग्गं सत्तनिकायं ततो समुद्धरणत्थं चिन्तेतुम्पि असक्कुणेय्यं नयनजीवितपुत्तभरियदानादिकं अतिदुक्करमकासि।[2]

ऊपर की व्याख्या से उक्त गाथा में आगत "अतिदुक्करानि" पद अत्यन्त स्पष्ट हो गया है। जिसका अर्थ 'अपरिमित काल तक अतिदुष्कर कार्य करने से खेद का अनुभवन किया' होता है। इसे और स्पष्ट करते हुए टीकाकार ने यह बताया है कि "करुणा के कारण ही भगवान् ने हस्तगत निर्वाण को छोड़ कर संसारपङ्क में निमग्न सत्त्वसमूह को उससे निकालने के लिए नयन, जीवन, पुत्र, स्त्री तक का उत्सर्ग कर दिया और दानपारमिता आदि दुष्कर कार्य अपरिमित काल तक करते रहे। जिसके कारण उन्हें अत्यन्त परिश्रम करना पड़ा। ऐसा उन्होंने लोकहित के लिए किया। 'लोकहित' शब्द की व्याख्या करते हुए टीकाकार ने कहा है कि "लोकहिताया" ति

---

१. दी० ट्ठ० १-२५७, सार० दी० टी० पृ० ७।
२. सार० टी० पृ० ७, ८।

"अनमतग्गे संसारे वट्टदुक्खेन अच्चन्तपीळितं सत्तलोकं तम्हा दुक्खतो मोचेत्वा निब्बानसुखभागियं करिस्सामी"ति एवं सत्तलोकस्स हितकरणत्थाया।ति अत्थो"। अनमतग्ग संसाररूपी वृत्तदुःख से अत्यन्त पीडित जनों को मुक्त कराकर निर्वाणसुख का भागी बनाऊँगा" ऐसा सोचकर उन्होंने धर्मोपदेश किया। जिससे अनेक लोगों ने संसार चक्र से मुक्त होकर निर्वाण को प्राप्त किया। अतः लोकहित के लिए भगवान ने दुष्कर कृत्यों का सम्पादन किया। "अथ खो तादिसं अतिदुक्करं कत्वा सब्बञ्ञुभावं सच्छिकत्वा निय्यानिकधम्मदेसनाय मग्गफलादीसु सत्ते पतिट्ठापेन्तो लोकस्स हितं साधेति।

दूसरी गाथा के द्वारा आचार्य बुद्धघोष ने धर्म की स्तुति की हैं "जिसका सामन्य अर्थ करते हुए टीकाकार ने कहा है कि—भवाभव का अनुगमन करते हुए भगवान बुद्ध ने बुद्ध होने के पूर्व जिस धर्म के आसेवन से सम्यक्सम्बोधि का साक्षात्कार किया, उस अविद्यादि क्लेश जाल को नष्ट करने वाले धर्म को नमस्कार करता हूँ।[1]

प्रस्तुत गाथा में आगत 'असम्बुधं' शब्द की व्याख्या करते हुए टीकाकार ने कहा है "तस्स असम्बुज्झनतो अप्पटिबुज्झनतो ति अत्थो, यथासभावं अप्पटिबुज्झनतो ति वुत्तं होति। यहाँ 'असम्बुधं' शब्द पूर्वकालिक क्रिया का द्योतक है। जब बुद्ध ने सम्बोधि को प्राप्त नहीं किया था अथवा धर्म के यथास्वभाव का ज्ञान प्राप्त नहीं किया था यह अर्थ है। इसी सन्दर्भ में 'बुद्ध' शब्द की विस्तृत व्याख्या की गई है यथा—बुज्झिता सच्चानी ति बुद्धो, बोधेता पजाया ति बुद्धो" ति आदि।

'भवाभवं' शब्द की व्याख्या करते हुए टीका में कहा गया है कि "भवाभवं' ति अपरकालकिरियाय कम्मनिद्देसो, भवतो भवं ति अत्थो। अथ वा भवाभवं ति सुगति-दुग्गतिवसेन हीनपणीतवसेन च खुद्दकं महन्तञ्च भवं ति अत्थो। इसी प्रकार अन्य शब्दों की यहाँ विस्तृत व्याख्या की हैं।

तीसरी गाथा के द्वारा संघ की वन्दना की गई है—"जो आर्यसंघ शील, समाधि, प्रज्ञा, विमुक्ति-ज्ञान प्रभृति गुणों से युक्त है, तथा जो कुशल गवेषी पुरुषों के लिए पुण्य क्षेत्र है ऐसे आर्य संघ को नमस्कार करता हूँ।[2]

इस गाथा की विस्तृत व्याख्या के साथ टीकाकार ने आर्य संघ के गुणों का अनुस्मरण करते हुए कहा है कि संघ चार पारिशुद्धिशील, प्रथमध्यान, द्वितीयध्यान आदि ध्यानों से युक्त समाधि, प्रज्ञा-मार्गप्रज्ञा, फलप्रज्ञा तथा प्रत्यवेक्षण-ज्ञान, ६ अभि-

---

१. असम्बुधं बुद्धनिसेवितं यं, भवाभवं गच्छति जीवलोको।
नमो अविज्जादिकिलेसजाल, विद्धंसिनो धम्मवरस्स तस्स ।। स० पा० पृ० ३।
अपि च—"ये केचि धम्मं सरणं गतासे, न ते गमिस्सन्ति अपायभूमिं।
पहाय मानुसं देहं; देवकायं परिपूरेस्सन्ती" ति। —दी० नि० २-२०४।

२. द्र० सार० दी० टी० पृ० १२.

ज्ञायें चार प्रतिसम्भिदायें आदि गुणों से युक्त है। इसीलिए "गुणेहि यो सीलसमाधि-पञ्ञा, विमुत्तिञाणपभुतीहि युत्तो" आदि गाथा के द्वारा संघ गुणों का स्मरण किया गया है। "खेत्तं जनानं कुसलत्थिकानं" पद के व्याख्याक्रम में कहा गया है कि "कुशलार्थी जनों के पुण्य की वृद्धि करने में संघ क्षेत्र के समान है। जिस प्रकार क्षेत्र में बीजवपन करने पर महत् फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार संघ की पूजा, वन्दना, तथा दानादि से पुण्य की अभिवृद्धि होती है। इसीलिए संघ को अनुत्तर पुण्य-क्षेत्र कहा गया है "अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा" ति। अरियसंघ की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि "क्लेशों को दूर कर देने के कारण, अनय की ओर न लगने के कारण, यथामार्ग प्रतिपन्न होने के कारण, इन्हें आर्य कहा जाता है। आर्यों के समूह को आर्य संघ कहते हैं, ऐसे आर्य संघ को नमस्कार करता हूँ। अन्त में यह भी दर्शाया गया है कि भगवान् बुद्ध के अभाव में धर्मरत्न भी संघरत्न के अधीन होकर वृद्धि वैपुल्य को प्राप्त करता है अतः आर्यसंघ अनेक प्रकार से अत्यन्त उपकारक है, अतः आर्यसंघ को नमस्कार करता हूँ।

आचार्य बुद्धघोष ने मङ्गलाचरणस्वरूप त्रिरत्न वन्दना के प्रयोजन पर प्रकाश डालते हुए "इच्चेवमच्चन्त नमस्सनेय्यं" आदि गाथा का उद्‌गीरण किया है जिसका वर्णन किया जा चुका है। विनयवर्णन रूप उद्देश्य की पूर्ति में कोई बाधा उत्पन्न न हो तथा विनयट्ठकथा निर्विघ्न सम्पन्न हो इसके लिए आचार्य बुद्धघोष ने त्रिरत्न की वन्दना की है।

इस प्रकार त्रिरत्न की वन्दना का प्रयोजन बताकर आचार्य ने अपने उद्देश्य का कथन इस प्रकार किया है—

यस्मिं ठिते सासनमट्ठितस्स, पतिट्ठितं होति सुसण्ठितस्स।
तं वण्णयिस्सं विनयं अमिस्सं, निस्सायपुब्बाचरियानुभावं॥

इसकी व्याख्या करते हुए टीकाकार ने कहा है कि "जिस विनयपिटक की स्थिति से बौद्धशासन अर्थात् अधिशील, अधिचित्त एवं अधिप्रज्ञा त्रिशिक्षा सम्पन्न बौद्ध शासन की स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है तथा 'अट्ठितस्स' अर्थात् अत्यन्त कामनाओं में लिप्त रहना, तथा अपने को अत्यन्त क्लेश में रखना इन दो अन्तों से अलग कर मध्यम मार्ग में स्थित करता है। जो प्राणियों के दुःखों को दूर करने में सर्वदा सहायक है; उस विनयपिटक का पूर्वाचार्यों के निर्देशानुसार अन्यतैर्थिकों के मतों से भिन्न सुविशुद्ध रूप में वर्णन करूँगा। "निस्साय पुब्बाचरियानुभावं" गाथांश के द्वारा आचार्यबुद्ध-घोष यह सूचित करते हैं कि पूर्वाचार्यों द्वारा संवर्णित अट्ठकथा को आधार मानकर विनय का वर्णन करूँगा, न कि अपने मतानुसार।

यदि पोराण अट्ठकथा विद्यमान है तो पुनः विनय का वर्णन करने की क्या आवश्यकता है? इस प्रश्न का समाधान प्रस्तुत करते हुए "कामं च पुब्बाचरियास-

---

१. द्र० सारत्थ दी० टी० पृ० १४-१५।

भेहि" आदि गाथा वर्णित है। टीकाकार इसकी व्याख्या इस प्रकार करते हैं—"तस्स पोराणट्ठकथाय अनूनभावं अत्तनो च संवण्णनाय पयोजनं" दस्सेन्तो "कामञ्चा"ति आदिमाह। कामं सवण्णितोयेव, नो न संवण्णितो ति अत्थो। केहि पन सो विनयो संवण्णितो ति आह "पुब्बाचरियासभेही"ति। अर्थात् पोराणट्ठकथा महत्त्वपूर्ण है पर मेरे द्वारा वर्णन करने का भी प्रयोजन है, इसे बताते हुए आचार्य ने कहा है कि महाकाश्यप आदि पूर्वाचार्य श्रेष्ठ आचार्य हैं। ये आचार्य मार्गज्ञान रूप जल से विगतकल्मष हैं। राग, द्वेष, मोह रूपी मलों से दूर हैं, क्षीणाश्रव हैं तथा विशुद्धविद्या तथा प्रतिसम्भिदायुक्त हैं, सद्धर्म का वर्णन करने में निपुण हैं, त्रिपिटक रूप सद्धर्म वर्णन में पण्डित हैं ऐसे श्रेष्ठ महाकश्यप आदि के द्वारा वर्णित अट्ठकथा में निर्देशित तथ्यों का आश्रय लेकर विनय का वर्णन करूँगा। यह विनय श्रेष्ठ महाविहार (चित्तलपर्वतस्थित महाविहार) वासी उत्तमभिक्षुओं द्वारा सुलिखित एवं सुव्यक्त है और विचित्र नयों में वर्णित है। श्रेष्ठ सर्वज्ञ बुद्ध का अनुगमन करते हुए पूर्वाचार्यों के द्वारा लिखा गया है। पर यह सिंहली भाषा में उपनिबद्ध है जिससे अन्य द्वीपवासी भिक्षुओं के लिए सुबोध्य नहीं है। इसलिए मैं बुद्धश्री महास्थविर के निर्देशानुसार पालिनयानुरूप विनय अट्ठकथा का वर्णन करूँगा। यह अट्ठकथा धर्मसंगीतिकारों के सांगायनानुरूप है। धर्मसंगीतिकारों ने तीन संगीतियों में सांगायन कर सम्पूर्ण बुद्धवचनों को तीन पिटकों में संग्रहीत किया है। उसे महामहेन्द्रस्थविर के द्वारा लंका लाया गया। तदनन्तर ताम्रपर्णी के भिक्षुओं ने किसी अन्य सम्प्रदाय के विनय नियम इसमें न मिल जाय इस भय से उन भिक्षुओं ने सिंहली भाषा में विनय अट्ठकथा का प्रणयन किया। उसके अनुसार मैं मागधी भाषा में इसका वर्णन करूँगा जिससे अन्य द्वीपवासी भिक्षुओं को भी इसका लाभ मिल सकेगा।

अट्ठकथा वर्णन के प्रयोजन को बताकर आचार्य ने यह सूचित किया है कि इसके वर्णन क्रम में महाअट्ठकथा को आधार माना गया है। तथा महापच्चरी अट्ठकथा 'कुरुन्दी अट्ठकथा, अन्धकट्ठकथा तथा सङ्खेप अट्ठकथा आदि में थेरवाद परम्परा के अनुसार जो अर्थ विनिश्चय किया गया है उस युक्त अर्थ को विना छोड़े मैं इसका वर्णन करूँगा[1]। इस प्रकार वर्णन प्रक्रिया को सूचित कर आचार्य बुद्धघोष ने श्रोता एवं पाठक को इस अर्थ कथा में नियोजित करने के लिए इस गाथा का उद्गीरण किया है—

तं मे निसामेन्तु पसन्नचित्ता, थेरा च भिक्खू नवमज्झिमा च।
धम्मप्पदीपस्स तथागतस्स, सक्कच्च धम्मं पतिमानयन्ता॥[2]

अर्थात् मेरे द्वारा रचित इस विनय अट्ठकथा रूप धर्मप्रदीप के आलोक को प्राप्त करें। जो तथागत के शासन धर्म का या पालिधर्म का सत्कार करते हैं, साक्षा-

---

१. "सवण्णनं तं च समारभन्तो, तस्सा महाअट्ठकथं सरीरं।
कत्वा महापच्चरियं तथेव, कुरुन्दिनामादिसु विस्सुतासु॥ स० पा० पृ० ४, ५

२. स० पा० भा० १, पृ० ५, सा० दी० टी० पृ० १८।

त्कार करते हैं, आदर और सम्मान करते है। वैसे महास्थाविर, नवागन्तुक भिक्षु तथा मध्यम भिक्षु सावधानता के साथ इसे सुनें। धर्मप्रदीप की व्याख्या करते हुए यहाँ टीकाकार ने कहा है कि—"तत्थ धम्मप्पदीपस्सा ति धम्मोयेव सत्तसन्तानेसु मोहन्धकारविधमनतो पदीपसदिसत्ता पदीपो अस्सा ति धम्मपदीपो, भगवा। तस्स धम्भपदीपस्स।

आगम विशुद्धि प्रतिपादन के अनन्तर आचार्य बुद्धघोष ने विनयवर्णन हेतु प्रमाण उपस्थित करते हुए "बुद्धेन धम्मो विनयो च वुत्तो, आदि गाथा का कथन किया है। टीकाकार ने इस गाथा के व्याख्याक्रम में कहा है कि "जिस प्रकार बुद्ध ने धर्म और विनय की देशना की है उसी प्रकार उनके शिष्य धर्मसेनापति सारिपुत्र आदि ने उस धर्म और विनय को मौखिक रूप में सुरक्षित रखा है। इसलिए उन आचार्यों के द्वारा वर्णित तथ्यों के आधार पर ही सिंहली अट्ठकथाचार्यों ने पहले अट्ठकथा की थी[1]। धर्म और विनय से सम्पूर्ण बुद्धवचन यहां गृहीत हैं। टीकाकार का कथन है कि भगवान् बुद्ध ने न केवल त्रिपिटक का आख्यान किया था वरन् अर्थकथा का भी आख्यान किया था "वुत्तो" पद के द्वारा यह ज्ञात होता है—"वुत्तो" ति पाळितो अत्थतो च बुद्धेन भगवता वुत्तो। क्योंकि भगवान बुद्ध ने अपने उपदेश को अव्याकृत नहीं रखा है, वरन् सबको वह सरलता से समझ में आ सके इसलिए उन्होंने त्रिपिटक में वर्णित अपने उपदेशों का सम्यक अर्थवर्णन भी किया था, इसीलिए भगवान् बुद्ध द्वारा यत्र तत्र वर्णित अर्थवर्णन क्रम को भगवान् का प्रकीर्णक देशना कहा गया है और यह देशना ही अट्ठकथा है। "न हि भगवता अब्याकतं नाम तन्तिपदं अत्थि, सब्बेसंयेव अत्थो कथितो, तस्मा सम्मासम्बुद्धेनेव तिण्णं पिटकानं अत्थवण्णनाक्कमोपि भासितो ति दट्ठब्बं, "तत्थ तत्थ भगवता पवत्तिता पकिण्णकदेसनायेव हि अट्ठकथा"।[2]

इसलिए जो अट्ठकथा में उक्त है, उसमें से प्रमादजन्य लेखों को छोड़कर अवशेष प्रामाणिक वर्णन ही यहाँ उद्धृत है। इसलिए सभी इस प्रामाणिक अट्ठकथा को ध्यान देकर सुनें।

यहाँ टीकाकार ने यह आशंका व्यक्त की है कि यदि पूर्व में अट्ठकथा थी तो पुनः उसके कथन की क्या आवश्यकता थी? इसका समाधान प्रस्तुत करते हुए कहा है कि यद्यपि अट्ठकथा का वर्णन अशेषतः प्रामाणिक था तथापि यहाँ आचार्य बुद्धघोष द्वारा रचित अट्ठकथा वचनमात्र ही भिन्न है अर्थतः यह पोराण अट्ठकथा के समान ही है। इसलिए यह भी प्रामाणिक है। हाँ, यह सिंहलीभाषा से परिवर्तित कर मागधी भाषा में उपनिबद्ध है।

अतः श्रद्धापूर्वक तथा सत्कारपूर्वक आदरभाव से युक्त होकर इसकी शिक्षा को ग्रहण करना चाहिए। टीकाकार ने कहा है—"तथा हि पोराणट्ठकथानं पमाणभावो,

---

१. बुद्धेन धम्मो विनयो च वुत्तो, यो तस्स पुत्तेहि तथेव ञातो।
सो येहि तेसं मतिमच्चजन्ता, यस्सा पुरे अट्ठकथा अंकसु ॥ स० पा० पृ० ५

२. द्र० सार० दी० टी० भा० १ पृ० १८।

इमिस्सा च संवण्णनाय भासन्तरपरिच्चागादिमत्तविसिट्ठाय अत्थतो ततो अभिन्नभावो ति उभयम्पेतं सक्कच्चं अनुसिक्खितब्बभावहेतू ति दट्ठब्बं।[१] इस प्रकार आचार्य बुद्धघोष ने सिंहली भाषा में उपनिबद्ध पोराणमहाअट्ठकथा जो अन्य द्वीपवासियों के लिए बोधगम्य नहीं था उसे मागधी भाषा में परिवर्तित कर सबों के लिए सुलभ एवं बोधगम्य बनाया। साथ ही जो वहाँ अतिविस्तार से वर्णित था उसे संक्षेपतः वर्णन किया। यथा—अवलोकनकर्म, ज्ञाप्तिकर्म, ज्ञप्तिद्वितीयकर्म तथा ज्ञप्ति चतुर्थकर्म आदि परिपाटि को छोड़कर विस्तार से परिवार पाठ के कर्मविभङ्ग में वर्णन किया। जिससे प्रथम पाराजिक आदि के वर्णन में सुविधा होगी तथा पालि अर्थात् त्रिपिटक का अर्थ-ज्ञान सुविज्ञेय होगा और ग्रन्थिस्थल नहीं रहेंगे। इस प्रकार यह अट्ठकथा विनय के अर्थज्ञान में अत्यन्त उपयोगी होगी।

ग्रन्थारम्भकथा के अनन्तर 'बाहिर निदानकथा' विषयप्रस्तावना के रूप में वर्णित है। जिसके द्वारा विवेच्य विषय का संक्षेप में निर्देश किया गया है। तदनन्तर प्रत्येक विवेच्यपदों की व्यञ्जन एवं पदगत अर्थ का प्रस्तुतिकरण के साथ ही विशेष अर्थ या सिद्धान्त के स्वरूप का निर्देश किया गया है। सर्वप्रथम "तं वण्णयिस्सं विनयं अमिस्सं" की व्याख्या करते हुए टीकाकार ने कहा है कि आचार्य बुद्धघोष की पूर्व प्रतिज्ञा "मैं विनय का वर्णन करूँगा" के अनुरूप संवरविनय, प्रहाणविनय आदि नय से विनय के अनेक प्रकार होने के कारण विनय के अर्थ वर्णन के लिए प्रथम विनय के पदों को व्यवस्थित कर पुनः बाद में उसका वर्णन करूँगा यह द्योतित होता है 'विनय' से यहाँ सम्पूर्ण विनयपिटक अभिप्रेत है। "विनयो नाम सकलं विनयपिटकं अधिप्पेतं" ति। अतः विनयपिटक का वर्णन करने के लिए यह मात्रिका यहाँ उद्धृत हैं—'मातिका' शब्द का अर्थ उद्देश अर्थात् संक्षेप कथन किया गया है। यह मात्रिका निर्देश अर्थात् विस्तृत व्याख्या के लिए माता की तरह है इसलिए इसे 'मातिका' कहते हैं;—मातिका ति उद्देसो। सो हि निद्देसपदानं जननीठाने ठितत्ता माता विया ति मातिका ति वुच्चति।[२]

विनयवर्णनक्रम में सर्वप्रथम मात्रिका उपन्यस्त करते हुए कहा गया है कि—यह विनयपिटक किसके द्वारा उक्त है? किस समय कहा गया? किसलिए कहा गया? किसने धारण किया? किसके द्वारा लाया गया? कहाँ प्रतिष्ठित हुआ आदि प्रश्नों को उपस्थित कर आचार्य बुद्धघोष ने इन्हीं प्रश्नों के समाधान स्वरूप विनयवर्णन विस्तार से किया इसीलिए इसे मातिका कहते हैं।

"वुत्तं येन यदा यस्मा, धारितं येन चाभतं।
यत्थप्पतिट्ठितं चेतमेतं वत्वा विधिं ततो॥
तेना ति आदिपाठस्स, अत्थं नानप्पकारतो।
दस्सयन्तो करिस्सामि, विनयस्सत्थवण्णनं ति॥

---

१. सार० दी० टी० पृ० १९।
२. सा० दी० टी० पृ० २१

उपर्युक्त गाथा की व्याख्या करते हुए टीका में कहा गया है कि "वुत्तं येन" के समाधान स्वरूप "तेन समयेन बुद्धो भगवा वेरञ्जायं विहरती" ति आदि निदानवचनपटिमण्डितं विनयपिटकं येन पुग्गलेन वुत्तं, यस्मि काले वुत्तं, यस्मा कारणा वुत्तं, येन धारितं, येन च आभतं, येसु पतिट्ठितं, यथावुत्तविधानं वत्वा ततो "तेन समयेना" ति आदि पाठस्स अत्थं अनेकप्पकारतो दस्सयन्तो विनयस्स अत्थवण्णनं करिस्सामी"ति। इस प्रकार बाहिर निदानकथा विषयप्रस्तावना के रूप में उपन्यस्त कर विस्तार से विनयवर्णन रूप (अट्ठकथा) की रचना हुई। टीकाकार ने कहा है कि भगवान् ने जिस समय विनय की देशना की उस समय भिक्षुओं ने इसे कण्ठस्थ कर लिया, तथा प्रथम संगीति के समय भिक्षु उपालि ने इसका सांगायन किया। अतः इदं वचनं केन वुत्तं? का समाधान 'आयस्मता उपालित्थेरेन वुत्तं' किया है। कदा वुत्तं? 'तं च पन पठममहासंगीतिकाले' कह कर प्रथम संगीति का विस्तार से वर्णन किया है।

उपर्युक्त कथन के सन्दर्भ में यह विचारणीय है कि संगीतियों का वर्णन चुल्लवग्ग में किया गया है पर अट्ठकथाकार ने बाहिरनिदानकथा में इन संगीतियों का वर्णन किया है। चुल्लवग्ग में भी केवल दो संगीतियों का वर्णन उपलब्ध होता है, पर यहाँ तीन संगीतियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। जिससे ऐसा लगता है कि अट्ठकथाओं की रचना कालान्तर में हुई इसलिए आचार्य बुद्धघोष ने विषयप्रवेश के रूप में 'बाहिरनिदानकथा'[1] के द्वारा सम्पूर्ण वर्ण्य विषय की प्रस्तावना लिखी और उसी का विस्तृत वर्णन अट्ठकथा में की गई। टीका में भी इन प्रश्नों का समाधान प्राप्त नहीं होता। ऐसा ज्ञात होता है कि महास्थविर सारिपुत्र को मात्र समन्तपासादिका की व्याख्या करना ही इष्ट था। अतः जैसा उसमें वर्णित था, उसी की टीका उन्होंने की। बाहिरनिदानकथा में जो प्रश्न उपस्थित किया गया है उसी के समाधानस्वरूप प्रथम महासंगीति का वर्णन उपलब्ध होता है। यहाँ प्रश्न किया गया है कि "इदं वचनं केन वुत्तं? कदा वुत्तं? कस्मा च वुत्तं"ति? जिसका समाधान करते हुए "आयस्मता उपालित्थेरेन वुत्तं, तं च पन पठममहासङ्गीतिकाले। इसी सन्दर्भ में प्रथमसंगीति का विस्तार से वर्णन किया गया है। यहाँ संक्षेप में टीका में वर्णित विषय का परिचय इष्ट है।

प्रथममहासंगीति

धर्मचक्रप्रवर्तन से लेकर कुसीनारा में जोड़े शालवृक्षों के मध्य भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण तक तथागत ने जो धर्मोपदेश किया था उसे पाँच सौ अर्हत भिक्षुओं ने राजगृह के सप्तपर्णी गुहा में संगायन कर व्यवस्थित किया। यही प्रथमसंगीति के नाम से जाना जाता है। भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के अनन्तर सात हजार भिक्षुसंघ के महास्थविर आयुस्मान् महाकाश्यप पावा और कुसीनारा के बीच थे तो

१. निदानकोसल्लत्थं ति निददाति देसनं देसकालादिवसेन अविदितं विदितं कृत्वा निदस्सेती ति निदानं, तत्थ कोसल्लं निदानकोसल्लं, तदत्थं ति अत्थो। सा० दी० टी० पृ० २२.

उन्होंने एक आजीवक से सुना कि एक सप्ताह पूर्व तथागत का परिनिर्वाण हो गया है। ऐसा सुनकर अवीतराग भिक्षु रोने लगे, वीतराग भिक्षुओं ने अनित्यता का स्मरण कर दुःख को सहन किया। किन्तु सुभद्र नाम के एक वृद्ध प्रव्रजित ने कहा कि अच्छा हुआ जो महाश्रमण के अनेक विधि-निषेधों से मुक्ति मिली। अब हम जो चाहेंगे वह करेंगे। जो न चाहेंगे वह नहीं करेंगे[1]। यह सुनकर महाकाश्यप ने सोचा कि अधर्म और अविनय प्रकट हो रहा है, यह आवश्यक है कि धर्म और विनय का संगायन किया जाय। "हन्द मयं, आवुसो, धम्मं च विनयं च सङ्गायेय्याम। पुरे अधम्मो दिप्पति, धम्मो पटिबाहिय्यति, अविनयो दिप्पति, विनयो पटिबाहिय्यति। पुरे अधम्मवादिनो बलवन्तो होन्ति, धम्मवादिनो दुब्बला होन्ति; अविनयवादिनो बलवन्तो होन्ति, विनयवादिनो दुब्बला होन्ती"ति[2]।

संगीति के लिए महाकाश्यप ने एक कम पाँच सौ अर्हत्-भिक्षुओं का चयन किया। आनन्द के शैक्ष्य होने पर भी धर्म और विनय से बहुत परिचित होने के कारण उनका भी चयन किया गया। राजगृह में वर्षावास करते हुए धर्म और विनय के संगायन का निश्चय किया गया। प्रथम मास में संगीति की तैयारी की गई तथा द्वितीय मास में संगीति हुई। आयुष्मान् आनन्द संगीति के पूर्व अर्हत्वपद को प्राप्त किये। महाकाश्यप की अध्यक्षता में संगीति की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। महाकाश्यप ने उपालि से विनय के सम्बन्ध में प्रश्न किया। उन्होंने पूछा कि प्रथम पाराजिक कहाँ प्रज्ञप्त किये गये थे? किसे लेकर, एवं किस प्रकरण में। उपालि के उत्तर सुनकर महाकाश्यप ने प्रथम पाराजिक की वस्तु, निदान, पुद्गल, प्रज्ञप्ति, आपत्ति एवं अनापत्ति भी पूछी। तदनन्तर दूसरे, तीसरे एवं चौथे पाराजिक के सम्बन्ध में प्रश्न किये गये। इस प्रकार यहाँ इस प्रश्न और उत्तर का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसके बाद कहा गया है कि इसी उपाय से दोनों विभंगों अर्थात् भिक्षु और भिक्षुणी विभंग को पूछा गया और आयुष्मान् उपालि ने उनका उत्तर उसी प्रकार दिया जैसा भगवान् से उन्होंने सुना था।

महाकाश्यप ने आनन्द से धर्म (धम्म) से सम्बन्धित प्रश्न पूछा कि 'ब्रह्मजालसुत्त' का उपदेश कहाँ किया गया था? तथा किसे उपदिष्ट किया गया था? ब्रह्मजालसुत्त के निदान और पुद्गल के बारे में भी पूछा। पुनः श्रामण्यफल के सम्बन्ध में प्रश्न किया। इसी तरह पाँचो निकायों के बारे में भी प्रश्न किया गया। जिसका समाधान आनन्द ने जैसा भगवान् से सुना था उसी प्रकार किया। इसके अनन्तर

---

१. भगवतो परिनिब्बाने सन्निपतितानं सत्तन्नं भिक्खुसतसहस्सानं संघत्थेरो आयस्मा महाकस्सपो सत्ताहपरिनिब्बुते भगवति, सुभद्देन वुड्ढपब्बजितेन "अलं, आवुसो, मा सोचित्थ, मा परिदेवित्थ, सुमुत्ता मयं तेन महासमणेन; उपद्दुता च होम—इदं वो कप्पति, इदं वो न कप्पती'ति। इदानि पन यं इच्छिस्साम तं करिस्साम, यं न इच्छिस्साम न तं करिस्सामा"ति। चु. व., ४०६। स. पा. पृ. ६,७। सा. दी. टी. पृ. ३४

२. चु. ब. ४०६।

आनन्द ने स्थविर भिक्षुओं से कहा कि भगवान् ने परिनिर्वाण के समय कहा था कि 'आनन्द, मेरे अनन्तर संघ क्षुद्रकानुक्षुद्र शिक्षापदों को चाहे तो छोड़ सकता है। इस पर आनन्द से पूछा गया कि क्या उन्होंने इन शिक्षापदों के विषय में तथागत से प्रश्न किया था। आनन्द के 'नहीं' कहने पर स्थविरों ने अनेक मत प्रस्तुत किये। इस प्रकार विनय का समाधान आयुष्मान उपालि ने तथा शेष पाँच निकायों का समाधान आनन्द स्थविर ने किया।

इस संगीति में सम्पूर्ण बुद्धवचनों का विभाजन किया गया। जो इस प्रकार है। सम्पूर्ण बुद्धवचन रसवसेन एकविध है। धर्म और विनय के योग से दो प्रकार का है। प्रथम, मध्यम और पश्चिम या अन्तिम बुद्धवचन के योग से तीन प्रकार का है। पिटक के योग से तीन प्रकार का, निकाय के योग से पाँच प्रकार का, अङ्ग के योग से नौ अङ्गों में तथा धर्मस्कन्धों के योग से चौरासी हजार धर्मस्कन्धों में संगृहीत है[१]।

रस के योग से सम्पूर्ण बुद्धवचन एक रस 'विमुक्तिरस' है। धर्म और विनय के योग से दो प्रकार है। यहाँ विनय से सम्पूर्ण विनयपिटक तथा धर्म से अवशेष बुद्ध वचन गृहीत है। प्रथम, मध्यम तथा अन्तिम बुद्धवचन के योग से सम्पूर्ण बुद्धवचन तीन प्रकार के हैं। यथा—

"अनेकजातिसंसारं, सन्धाविस्सं अनिब्बिसं।
गहकारं गवेसन्तो, दुक्खा जाति पुनप्पुनं॥
"गहकारक दिट्ठोसि, पुन गेहं न काहसि।
सब्बा ते फासुका भग्गा, गहकूटं विसङ्खितं।
विसङ्खारगतं चित्तं, तण्हानं खयमज्झगा"ति॥[२]

यह प्रथम बुद्धवचन है। कुछ लोगों का मत है कि बुद्धत्व प्राप्ति के अनन्तर बोधिवृक्ष के नीचे एक ही आसन पर सात दिनों तक बैठे भगवान् बुद्ध द्वारा उदगीरित निम्न **'उदान'** प्रथम बुद्धवधन है, यथा—

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कङ्खा वपयन्ति सब्बा यतो पजानाति सहेतुधम्मं॥
यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कङ्खा वपयन्ति सब्बा यतो खयं पच्चयानं अवेदि॥[३]

तथा महापरिनिर्वाण के समय कुशीनगर में दो शाल वृक्षों के बीच परिनिर्वाणमंच

---

१. तदेतं सब्बं पि बुद्धवचनं रसवसेन एकविधं, धम्मविनयवसेन दुविधं, पठममज्झिमपच्छिमवसेत तिविधं, तथा पिटकवसेन, निकायवसेन पञ्चविधं, अङ्गवसेन नवविधं, धम्मक्खन्धवसेन चतुरासीतिसहस्सविधं ति वेदितब्बं। स० पा० पृ० १६.

२. खु० नि० १-३२, धम्मपदे।

३. म० व० पृ० ३

पर लेटे हुए भगवान् बुद्ध का भिक्षुओं के प्रति निम्न उपदेश अन्तिम बहुवचन है यथा—

"हन्द दानि, भिक्खवे, आमन्तयामि वो, वयधम्मा सङ्खारा, अप्पमादेन सम्पादेथा"ति।

इन प्रथम और अन्तिम वचनों के बीच भगवान् बुद्ध द्वारा उपदिष्ट अमृतत्व सदृश सद्धर्म मध्यम बुद्ध वचन है।[1]

त्रिपिटक—पुनः सम्पूर्ण बुद्धवचन पिटक के योग से तीन पिटकों में विभाजित है यथा—विनयपिटक, सुत्तन्तपिटक तथा अभिधम्मपिटक।[2]

यहाँ सर्वप्रथम 'पिटक' शब्द विवेच्य है।

'पिटक' शब्द का सामान्य अर्थ भाजन अथवा पात्र होता है[3]। प्राविधिक रूप में यह 'परियत्ति' अर्थात् बुद्धोपदिष्ट उपदेशों का अभिव्यञ्जक है।[4] 'पिटक' का अर्थ पिटारी अथवा पात्र भी किया जा सकता है जिसका उपयोग वस्तु संरक्षण के लिए होता है। अतः 'पिटक' शब्द पात्र एवं पात्रगत वस्तु का द्योतन करते हैं। इसलिए वह पात्र जो बुद्धवचन का द्योतन, धारण एवं संरक्षण करता है, पिटक कहलाता है। आचार्य बुद्धघोष ने पिटक शब्द के अर्थ पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि—

पिटकं पिटकत्थविदू, परियत्ति भाजनत्थतो आहु।
तेन समोधानेत्वा, तयो पि विनयादयो ञेय्या[5] ॥

विनयपिटक—भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के नियम-उपनियमों के संग्रह का नाम है। विनयपिटक के वर्णन के पूर्व विनय शब्द का अर्थ अवेक्ष्य एवं अवधेय है। विनय शब्द का सामान्य अर्थ—भिक्षुजीवन के नियम उपनियम; शिक्षापद, आत्म-संयम, नम्रता, शिष्टाचार आदि होता है। विनय शब्द 'वि' उपसर्ग-पूर्वक 'नी' धातु से 'अच्' प्रत्यय लगाकर व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है—विशिष्टता पूर्वक ले जाना। विनय शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग-विनियोग ऋग्वेद में उपलब्ध होता है—

स सनयः सविनयः पुरोहितः, स सुष्ठुतः स युधि ब्रह्मणस्पति ॥

अर्थात् ब्राह्मणस्पति मित्रों को समवेत करने वाला है और शत्रुओं को पृथक्-पृथक् करने वाला है (ऋ० वे० २।२४। अ० ७)। विनय शब्द के पृथक्कर्त्ता और पृथक् पृथक् ले जानेवाला अर्थ से ही शास्त्र विहित आचार अर्थ का विकास हुआ है। शास्त्रविहित

---

१. उभिन्नमन्तरे यं वुत्तं एतं मज्झिमबुद्धवचनं ति। एवं पठममज्झिमपच्छिमवसेन तिविधं। स० पा० पृ० १७

२. कथं पिटकवसेन तिविधं? सब्बं पि हेतं विनयपिटकं सुत्तन्तपिटकं अभिधम्मपिटकं ति तिप्पभेदमेव होति। स० पा० पृ० १७, अ० सा० पृ०

३. अ० सा० पृ० १८

४. द्र० स० दी० टी०, भा० १ पृ० ५६

५. स० पा० पृ० २०

आचार शिष्टाचार अर्थ महाभारत आदि ग्रन्थों में प्राप्त होता है। मनुस्मृति के निम्नोद्धरण से भी विनय का अर्थ शास्त्रविहित आचार ही सिद्ध होता है—

बहवोऽविनयान्नष्टा राजानः सपरिच्छदाः।
वनस्था अपि राज्यानि विनयात्प्रतिपेदिरे॥

(मनु० अ० ७ श्लोक ४०)

विनय अर्थात् आत्मसंयम, शिष्टाचार तथा शास्त्रानुकूल आचरण से प्रकर्ष गुणों की अवाप्ति होती है—'गुणप्रकर्षो विनयादवाप्ते" महाकवि भारवि ने किराता-र्जुनीयम् में लिखा है कि विनय (आत्मसंयम, मनोनिग्रह) तपस्वियों को पुण्य प्रदान करता है, सुखैषियों को सम्पत्ति प्रदान करता है तथा योगियों को मुक्ति (निर्वाण) प्रदान करता है।

निष्ठतां तपसि पुण्यमासजन
सम्प्रदोऽनुगुणयन् सुखैषिणाम्।
योगिना परिणमन् विमुक्तये
केन नास्तु विनयं सतां प्रियः॥ ३॥

विनय के आत्मसंयम अर्थ से ही नियन्त्रण तथा अनुशासन अर्थ विकसित हुआ। पालिवाङ्मय में विनय शब्द आत्मसंयम की तथा आत्मसंयम प्राप्ति के नियम के अर्थं में प्राप्त होता है, अट्ठसालिनी तथा समन्तपासादिका (विनयट्ठकथा) में आचार्य बुद्धघोष ने विनय शब्द का अर्थ करते हुए लिखा है कि—

विविधविसेसनयत्ता विनयनतो चेव कायवाचानं।
विनयत्थ विदूहि अयं विनयो विनयो ति अक्खातो॥[1]

अर्थात् विविध और विशेष नयों से यह कायिक वाचसिक अध्याचारों का निषेध करता है, तथा कायिक, वाचसिक संयम की ओर ले जाता है इसलिए इसे विनय कहते हैं। विनय आचार तथा नियमों को प्रदर्शित करता है, शरीर तथा वाणी को नियन्त्रित एवं अनुशासित करता है, अतः इसे 'विनय' कहते हैं। इस प्रकार चारित्रिक परमोज्वलता तथा कायिक, वाचसिक एवं मानसिक संयम विनय से ही प्राप्त होता है। अतः विनय प्रस्फुटित एवं प्रफुल्ल जीवन पुष्प का सौरभ है, चारित्रिक विकास का परमोत्कर्ष है, अवदात व्यक्तित्व का प्रकाश सौन्दर्य है। इसीलिए बौद्धसंघ में प्रतिपादित एवं प्रवेदित आत्म संयम विषयक नियमों को 'विनय' अभिधान किया गया है, और इसीलिए महास्थविर भिक्षुओं ने महाकाश्यप को सर्वप्रथम विनय के संगायन के लिए प्रेरित किया—"भन्ते महाकस्सप, विनयो नाम बुद्धसासनस्स आयु, विनये ठिते सासनं ठितं होति, तस्मा पठमं विनयं सङ्गायामा" ति[2]।

---

१. स० पा० पृ० १८
२. स० पा० पृ० १३।

विनयपिटक निम्नलिखित भागों में विभक्त है—

१. सुत्तविभंग (२) खन्धक (३) परिवार। सुत्तविभंग के दो भाग हैं पाराजिक एवं पाचित्तिय। खन्धक के भी दो भाग हैं—महावग्ग और चुल्लवग्ग। इस प्रकार विनयपिटक पाँच भागों में विभक्त है—पाराजिक, पाचित्तिय, महावग्ग, चुल्लवग्ग तथा परिवार। विनयपिटक का परिचय देते हुए आचार्य बुद्धघोष ने कहा है कि दो प्रातिमोक्ष अर्थात् भिक्षुप्रातिमोक्ष तथा भिक्षुणीप्रातिमोक्ष इसे ही दो विभङ्ग अर्थात् भिक्षु विभंग, तथा भिक्षुणी विभंग भी कहा गया है। बाईस स्कन्धक अर्थात् महावग्ग एवं चुल्लवग्ग तथा परिवार।[1]

विनयपिटक आणा (आज्ञा) देशना है। आज्ञा देने योग्य भगवान् बुद्ध द्वारा देशित विनयपिटक आज्ञाबहुल होने से 'आणा'—देशना है। यह यथापराध शासन है। क्योंकि इससे अधिक अपराध वाले सत्त्व शासित किए जाते हैं। इसमें संवर (संयम) और असंवर का कथन किया गया है। इसलिए विनयपिटक 'संबरासंवर कथा' है। विनयपिटक करुणा प्रधान है। इसमें अधिशील शिक्षा वर्णित है। विनय-पिटक में व्यतिक्रम प्रहाण उपदिष्ट है, क्योंकि इसमें प्रतिपादित शील व्यतिक्रम करनेवाले क्लेशों का प्रतिपक्ष है। इस प्रकार यहाँ विनयपिटक पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

सुत्तपिटक—त्रिपिटक का दूसरा भाग सुत्तपिटक है। संगीतिकारों ने बुद्धवचनों का दूसरा विभाजन पाँच निकायों में किया है "निकायतो पञ्चनिकाया"। वे हैं—दीघनिकाय, मज्झिमनिकाय, संयुत्तनिकाय, अंगुत्तरनिकाय तथा खुद्दकनिकाय। इन्हें सुत्तपिटक भी कहा जाता है। इसमें भगवान् बुद्ध का सामान्य उपदेश संगृहीत हैं। जम्बूद्वीप में विचरण करते हुए भगवान् ने समागत मनुष्यों के अध्याशय, अनुशय, अधिमुक्ति आदि के अनुकूल उपमा, नय, दृष्टान्त आदि के सहारे अत्यन्त सरल ढंग से उपदेश किया है, उन उपदेशों का संग्रह सुत्तपिटक है। व्यवहार कुशल भगवान् बुद्ध द्वारा बहुलतया व्यवहारिक उपमाओं एवं नयों से युक्त उपदेश इसमें संगृहीत हैं। इसलिए इसे 'वोहार' देशना तथा यथानुलोम शासन कहा गया है। क्योंकि इसमें अनेक प्रकार के अध्याशयवाले, अनुशय वाले, अनेक प्रकार की चर्या एवं अधिमुक्ति वाले प्राणी अपने अपने अध्याशय, अनुशय, चर्या और अधिमुक्ति के अनुसार शासित किये गये हैं। पुनः इसके अनेक सुत्तों में प्रधान या गौण रूप से मिथ्यादृष्टियों का कथन एवं उनके प्रहाण का मार्ग प्रज्ञप्त है। इन दृष्टियों के जाल से मुक्त कराने में सहायक 'सूत्रपिटक' दिट्ठिविनिवेठन कथा' है। इसमें प्रधानतः अधिचित्त (समाधि) शिक्षा वर्णित है।

'सुत्तपिटक' के अर्थ पर प्रकाश डालते हुए आचार्य बुद्धघोष ने अधोलिखित गाथा का उद्गीरण किया है—

---

१. उभयानि पातिमोक्खानि, द्वे विभङ्गानि, द्वावीसतिक्खन्धकानि, सोळस परिवारा ति इदं 'विनयपिटकं' नाम स० पा० पृ० १७। द्र० सा० दी टी० पृ० ५१।

अत्थानं सूचनतो सुवुत्ततो, सवनतोथ सूदनतो।
सुत्ताणा सुत्तसभागतो च, सुत्तं सुत्तं ति अक्खातं ॥[१]

अर्थात् हित की सूचना देने के कारण, सुव्यक्त होने के कारण, लौकिक तथा लोकोत्तर इष्ट फलों का निष्पादन करने के कारण, बहुजन हित और सुख के लिए सुखद विमुक्तिरस का अभिश्रवण करने के कारण, कामसुखों के दुर्गुणों को बताकर उनसे विरति के गुणों के प्रकाशन द्वारा उत्तम त्राण दिलाने के कारण, विनेय्य जनों को दिशानिर्देश करने के कारण तथा विविध विनेय्य जनों के प्रसंग में जहाँ तहाँ प्रकीर्ण रूप से दिये गये उपदेशों का सुन्दर अभिग्रन्थन एवं निबन्धन करने के कारण इसे सुत्त, कहा जाता है। इसीलिए सुत्तनिपात अट्ठकथा में कहा गया है कि—

सुवुत्ततो सवनतो, अत्थानं सुट्ठु ताणतो।
सूचना सूदना चेव, यस्मा सुत्तं पवुच्चति ॥[२]

दीघनिकाय—यह दीर्घ आकार के सूत्रों का संग्रह है। भगवान् बुद्ध के वैसे उपदेश जो लम्बे आकार के हैं, इस निकाय में संगृहीत हैं। ब्रह्मजाल आदि चौंत्तीस सुत्तों के संग्रह का नाम दीघनिकाय है। यह तीन वर्गों में विभक्त हैं १. सीलक्खन्धवग्गा २. महावग्ग ३. पाथिकवग्ग। निकायों में इसका प्रथम स्थान है।

चतुत्तिसेव सुत्तन्ता, तिवग्गो यस्स संगहो।
एस दीघनिकायो ति, पठमो अनुलोमिको ॥[३]

मज्झिमनिकाय—यह मध्यम आकार के सुत्तों का संग्रह है। यह तीन भागों में विभक्त है—मूलपण्णास, मज्झिमपण्णास तथा उपरिपण्णास। इसमें १५ वर्ग हैं, जिनमें १५२ सूत्र संगृहीत हैं।

दियड्ढसतसुत्तन्ता, द्वे च सुत्तानि यत्थ सो।
निकायो मज्झिमो पञ्चदसवग्गपरिग्गहो ॥[४]

संयुत्तनिकाय—यह छोटे बड़े सुत्तों का संग्रह है। इसमें ७७६२ सूत्र हैं। यह पाँच वर्गों में विभाजित हैं—सगाथवग्ग, निदानवग्ग, खन्धवग्ग, साळायतनवग्ग, तथा महावग्ग। यह '५६ संयुत्तों का संग्रह है। आचार्य बुद्धघोष ने इसका परिचय देते हुए कहा है—

सत्तसुत्तसहस्सानि, सत्तसुत्तसतानि च।
द्वासट्ठि चेव सुत्तन्ता, एसो संयुत्तसङ्गहो ॥[५]

अंगुत्तरनिकाय—सुत्तपिटक का सबसे बड़ा भाग है। यह संख्याबद्धशैली में निबद्ध है। इसे एकोत्तरनिकाय भी कहा जाता है। यह एककनिपात, दुक निपात, तिक निपात

---

१. स० पा० पृ० १८
२. सु० नि० अ० १३
३. स० पा० पृ० २४
४. स० पा० पृ० २५
५. स० पा० पृ० २५।

आदि ११ निपातों में विभक्त है। एककनिपात अनेक वर्गों में विभक्त है तथा एक एक वर्ग में अनेक लघु आकार के-सुत्त हैं। यह ९५५७ सूत्र, ११ निपात और १६९ वर्गों का संग्रह है। आचार्य बुद्धघोष ने कहा है कि—

नवसुत्तसहस्सानि, पञ्चसुत्तसतानि च।
सत्तपञ्ञास सुत्तानि, सङ्ख्या अङ्गुत्तरे अयं॥[1]

खुद्दकनिकाय—सुत्तपिटक का पाँचवाँ भाग है। यह निकाय छोटे छोटे १५ स्वतंत्र ग्रन्थों का संग्रह है। सभी ग्रन्थ छोटे भी नहीं हैं वरन् कुछ तो बहुत बड़े भी है। भाषा शैली में समानता नहीं है। कुछ विशुद्ध पद्यात्मक हैं तो कुछ गद्य-पद्य मिश्रित हैं। खुद्दकनिकाय के १५ ग्रन्थों का नाम इस प्रकार हैं—१. खुद्दकपाठ, २. धम्मपद, ३. उदान, ४. इतिवुत्तक, ५. सुत्तनिपात, ६. विमानवत्थु, ७. पेतवत्थु, ८. थेरगाथा, ९. थेरीगाथा, १०. जातक, ११. निद्देस, १२. पटिसम्भिदामग्ग, १३. अपदान, १४. बुद्धवंस तथा १५. चरियापिटक। खुद्दकनिकाय में समस्त विनयपिटक और अभिधर्मपिटक का भी ग्रहण किया जाता है। कहा भी गया है—

ठपेत्वा चतुरोपेते, निकाये दीघआदिके।
तदञ्ञं बुद्धवचनं, निकायो खुद्दको मतो ति॥[2]

अभिधर्मपिटक—त्रिपिटक का यह तीसरा महत्त्वपूर्ण भाग है। यह परमार्थ-देशनाओं का संग्रह है। आचार्य बुद्धघोष के अनुसार धर्मातिरेक धर्मविशेष अर्थ में अभिधर्म शब्द प्रयुक्त है।[3] यह सात प्रकरणों में विभक्त है, यथा—धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति, कथावत्थु, यमक एवं पट्ठान।[4] इन सभी प्रकरणों में चित्त, चैतसिक, रूप और निर्वाण इन चार परमार्थ धर्मों का अनेक दृष्टियों से वर्णन किया गया है। इस प्रकार सम्पूर्ण बुद्धवचन को तीन पिटकों में तथा निकायतः पाँच निकायों में संगीतिकारों ने सांगायन कर संग्रह किया।

नवङ्ग बुद्धशासन

संगीतिकारों ने समस्त बुद्धवचन को नौ अङ्गों में विभाजित किया। वे हैं, सुत्त, गेय्य, वेय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अद्भुतधर्म (अब्भुतधम्म) एवं वेदल्ल। इनमें दीघनिकाय आदि में जितने बुद्धवचन 'सूत्र' के नाम से गद्य में हैं,

---

१. स० पा० पृ० २५।
२. स० पा० पृ० २५।
३. "यं एत्थ बुद्धिमन्तो, सलक्खणा पूजिता परिच्छिन्ना।
वुत्ताधिका च धम्मा, अभिधम्मो तेन अक्खातो" ति। स० पा० पृ० २०।
द्र० सा० दी० टी० पृ० ५५
४. धम्मसङ्गणि विभङ्गञ्च, कथावत्थुञ्च पुग्गलं।

वे सब 'सुत्त' कहे जाते हैं। गाथाओं से युक्त सूत्र गेय्य हैं। व्याख्यापरक उपदेश 'वेय्याकरण' है। इसमें अभिधर्मपिटक और वे सब सूत्र संगृहीत हो जाते हैं जो अन्य आठ अङ्गों में संगृहीत नहीं होते। धम्मपद, थेरगाथा, थेरीगाथा आदि पद्य-मय उपदेश "गाथा" है। सौमनस्य से युक्त होकर समय समय पर भगवान् बुद्ध के मुख से गाथा के रूप में निकले हुए प्रीति-उद्गार 'उदान' है। वुत्तं हेतं भगवता इत्यादि प्रकार से प्रवृत्त ११० सूत्रान्त 'इतिवुत्तक' हैं। 'जातक' का अर्थ है, बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएँ। अप्पणक आदि ५५० कथाएँ 'जातक' है। 'चत्तारो मे भिक्खवे अच्छरिया अब्भुतधम्मा इत्यादि प्रकार से प्रवृत्त अद्भुत धर्मों का निरूपण करनेवाला सूत्र 'अब्भुतधम्म' है। वे उपदेश जो प्रश्न और उत्तर के रूप में उपलब्ध होते हैं 'वेदल्ल' कहे जाते हैं। मज्झिमनिकाय के चुल्लवेदल्ल, महावेदल्ल, सम्मादिट्ठि तथा सकपञ्ह आदि सुत्त इस विभाग में संगृहीत हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण बुद्धवचन नौ अंगों में विभक्त है।

पुनः सम्पूर्ण बुद्धवचनों को संगीतिकारों ने ८४००० धर्मस्कन्धों में विभाजन कर संगायन किया, जो इस प्रकार है—

द्वासीतिं बुद्धतो गण्हिं द्वे सहस्सानि भिक्खुतो।
चतुरासीति सहस्सानि ये मे धम्मा पवत्तिनो' ति।[१]

८२००० धर्मस्कन्ध भगवान् बुद्ध द्वारा उक्त है, तथा २००० धर्मस्कन्ध शारीपुत्र आदि भिक्षुओं के वचन हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण बुद्धवचन ८४००० धर्मस्कन्धों में संगृहीत है।

इस प्रकार संगीतिकारों ने संगीति के अन्त में समस्त बुद्धवचनों को यह कहकर अनुमोदित तथा व्यवस्थित किया कि यह प्रथम बुद्धवचन है, यह मध्यम बुद्धवचन है, यह अन्तिम बुद्धवचन है, यह विनयपिटक है, यह सुत्तपिटक है, यह अभिधम्मपिटक है, यह दीघनिकाय है.......यह खुद्दकनिकाय है, ये सुत्त आदि नौ अंग हैं, ये ८४००० धर्मस्कन्ध हैं।

यह धर्मसंगीति सात महीने में सम्पन्न हुई। इसमें पाँच सौ अर्हत् भिक्षुओं ने भाग लिया। इसलिए इसे 'पञ्चशतिका' कहा जाता है।

सतेहि पञ्चहि कता, तेन पञ्चसता ति च।
थेरेहेव कतत्ता च, थेरिका ति पवुच्चती ति॥[२]

धातुयमक पट्ठाना, अभिधम्मो ति वुच्चती" ति—एवं संवण्णितं सुखुमञाणगोचरं तन्तिं सङ्गायित्वा "इदं अभिधम्मपिटकं नामा" ति वत्वा पञ्च अरहन्तसतानि सज्झायमकंसु।

सा० दी० टी० पृ० ४८।

१. अ० सा० पृ० २३, स० पा० पृ० २७।

२. स० पा० पृ० २७।

सारत्थदीपनीटीका में 'संगीति' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा गया है यत्र तत्र उपदिष्ट भगवान के धर्म एवं विनय रूप उपदेश जो विप्रकीर्ण थे उनका संग्रह कर गायन करना या कहना ही संगीति है। "यथापच्चयं तत्थ तत्थ देसितत्ता पञ्ञत्तत्ता च विप्पकिण्णानं धम्मविनयानं सङ्गहेत्वा गायनं कथनं सङ्गीति"। एतेन तं तं सिक्खापदानं सुत्तानञ्च आदिपरियोसानेसु अन्तरन्तरा च सम्बन्धवसेन ठपितं सङ्गीतिकारवचनं सङ्गहितं होति। महाविसयत्ता पूजनीयत्ता च महती सङ्गीति महासङ्गीति; पठमा महासङ्गीति पठममहासङ्गीति।[1]

इस प्रकार "वुत्तं येन यदा यस्मा, अर्थात् 'इदं वचनं केन वुत्तं, कदा वुत्तं, कस्मा च वुत्तं ? का समाधान आयस्मता उपालित्थेरेन वुत्तं; तं च पन पठममहासंगीतिकाले, कहकर किया गया और इसी सन्दर्भ में प्रथमसंगीति का विस्तार से वर्णन किया गया है। 'कस्मा वुत्तं' ति इस प्रश्न का समाधान करते हुए कहा गया है कि—यस्मात् आयुष्मान महाकाश्यप ने निदान पूछा, इसलिए उस निदान (संक्षेपकथन) को प्रारम्भ से लेकर विस्तार से वर्णन करने के लिए कहा। अतः आयुष्मान् उपालिस्थविर के द्वारा भगवान् बुद्ध द्वारा उपदिष्ट यत्र तत्र प्रकीर्ण विनय उपदेश को कहने के लिए तथा उसका संग्रह कर लेने के लिए कहा। "एवमिदं आयस्मता उपालित्थेरेन पठम-महासङ्गीतिकाले वदन्तेना पि इमिना कारणेन वुत्तं ति वेदितब्बं"। अतः धर्म और विनय के सांगायन के लिए, भगवान् बुद्ध द्वारा कथित वचनों के संग्रह करने के लिए 'निदानवचन' उक्त किया गया है। जिससे भगवान् की देशना बहुत दिनों तक स्थित रहे तथा उसके प्रति बराबर श्रद्धाभाव बनी रहे इसलिए 'निदान' का कथन किया गया।[2]

पुनः प्रश्न किया गया है कि इस विनय को किसने धारण किया तथा किस तरह आज तक लाया गया ? और कहाँ प्रतिष्ठित हुआ ? समाधानस्वरूप कहा गया है कि—सर्वप्रथम आयुष्मान उपालिस्थविर ने भगवान् के सम्मुख धारण किया, उनसे तथागत के समय ही छ अभिज्ञाओं को धारण करने वाले सहस्रों भिक्षुओं ने तथा भगवान् के महापरिनिर्वाण हो जाने पर महाकाश्यपप्रमुख तथा धर्मसंग्राहक स्थविरों ने इसे धारण किया। 'केनाभतं' किसके द्वारा लाया गया ? इस प्रश्न के समाधानस्वरूप कहा गया है कि—जम्बूद्वीप में उपालिस्थविर से लेकर आचार्यों की परम्परा ने तृतीय संगीति तक इसे लाया। वह आचार्य परम्परा इस प्रकार है— आयुष्मान् उपालि, आयुष्मान दासक, आयुष्मान सोणक, आयुष्मान सिग्गव तथा आयुष्मान् मोग्गलिपुत्त महास्थविर[3]।

---

१. द्र० स० पा० पृ० २८।

२. द्र० सा० दी० टी० पृ० ८२।

३. उपालि दासको चेव, सोणको सिग्गवो तथा।
तिस्सो मोग्गलिपुत्तो च, पञ्चेते विजिताविनो॥
परम्पराय विनयं, दीपे जम्बुसिरिव्हये।
अच्छिज्जमानं आनेसुं, ततियो यावसङ्गहो॥ स० पा० पृ० २८।

इस प्रकार धर्मसंग्राहकों महाकाश्यप आदि स्थविरों ने इस संगीति में धर्म और विनय का वैसा ही संगायन किया जैसा उन्होंने स्वयं भगवान् से सुना था और जो उन्होंने संगायन किया वही विनय एवं सुत्तपिटक में आज भी प्राप्त है। जिसे महास्थविर भिक्षुओं की परम्परा ने सुरक्षित रखा है।

द्वितीय संगीति

भगवान् बुद्ध के परिनिर्वाण के १०० वर्ष बाद (वस्ससतपरिनिब्बुते भगवति) वैशाली के वालुकाराम में 'धम्म' और विनय का पुनः संगायन किया गया। यह बौद्धभिक्षुओं की दूसरी संगीति थी, जिसमें सात सौ बहुश्रुत भिक्षुओं ने भाग लिया। यह सभा दस विनयविरुद्ध आचरणों के विवादग्रस्त प्रश्नों का निर्णय करने के लिए बुलाई गई थी। वैशाली के भिक्षु दस बातों में विनयविरुद्ध आचरण करने लगे थे, जो इस प्रकार थी। (१) सिंगिलोणकप्प (शृंगिलवण-कल्प) (२) द्वयंगुलकप्प अर्थात् दो अंगुल छाया विताकर दोपहर के बाद भी भोजन कर लेना, (३) गामन्तरकप्प अर्थात् किसी दूसरे ग्राम में जाकर उसी दिन पुनः भोजन करना (४) आवासकप्प अर्थात् एक ही सीमा के अन्दर बहुत से आवासों में उपोसथ करना (५) अनुमतिकप्प अर्थात् कर्म करने के बाद स्वीकृति लेना (६) आचिण्णकप्प अर्थात् अपने आचार्य या उपाध्याय के किसी भी आचरण को अपने लिए उदाहरण वना लेना (७) अमथित-कप्प अर्थात् भोजन के उपरान्त ऐसे दूध को पीना जो अभी दही नहीं बना है, परन्तु जो दूध भी नहीं रहा है, (८) जलोगीपानकप्प अर्थात् कच्ची शराब या ताड़ी पीना, (९) अदसक निसीदन कप्प अर्थात् विना मगजी का आसन प्रयोग करना और (१०) जातरूपरजतकप्प अर्थात् सोना चाँदी ग्रहण करना[1]। अनेक भिक्षुओं के मत में इन दस वातों का आचरण करना विनय विपरीत और निषिद्ध था। इन दस वातों को लेकर भिक्षुओं में दो दल हो गये—पाचीनक या पूर्व वाले और पावेय्यक अर्थात् पश्चिमवाले। पाचीनक भिक्षु वैशाली के विनयविरुद्ध आचरण करनेवाले भिक्षुओं में थे और पावेय्यक उनके विपक्ष में थे। इनमें से कौन सही है इसका निर्णय करने के लिए वैशाली में यह सभा हुई।

इस सभा के मुख्य आयोजकों का नाम समन्तपासादिका में इस प्रकार दिया गया है:—भिक्षु सब्बकामी, साल्ह, भिक्षु-खुज्ज, शोभित, यशकाकण्डकपुत्त, साणसम्भूतवासी[2], आदि। यशकाकण्डकपुत्त को वैशाली के भिक्षुओं द्वारा इस प्रकार

---

१. स० पा० भा० १ पृ० २९।
द्र० सा० दी० टी० पृ० ८४।

२. येहि थेरेहि सङ्गीता, सङ्गीति तेसु विस्सुता।
सब्बकामी च साळहो च, रेवतो खुज्जसोभितो॥
यशो च साणसम्भूतो, एते सद्धिविहारिका।
थेरा आनन्दथेरस्स, दिट्ठपुब्बा तथागतं॥ द्र० स० पा० भा० १ पृ० ३०, ३१

विनयविरुद्ध आचरण किए जाने के प्रति चिन्ता हुई और उन्होंने विचार किया कि—"हन्दाहं अधम्मवादिनो निग्गहेत्वा धम्मं दीपेमी" ति। इसी के फलस्वरूप वैशाली के वालुकाराम में द्वितीय संगीति आयोजित हुई, जिसमें भिक्षु रेवत को सभापति वनाया गया। इस विनय संगीति में ७०० भिक्षुओं ने भाग लिया। इसलिए यह सत्तसतिका[1] कहलाती है।

वैशाली की सभा ने वैशाली के भिक्षुओं के दस वातों सम्बन्धी व्यवहार को विनय-विपरीत ठहराया। साथ ही प्रथम संगीति के समान पुनः 'धम्म' और विनय का संगायन किया। और समस्त बुद्धवचनों का तीन पिटकों, पाँच निकायों, नौ अङ्गों तथा ८४००० धर्मस्कन्धों में विभाजित कर अनुसंगायन किया। यह संगीति आठ माह तक चलती रही। यह संगीति सुसुनागपुत्र कालासोक के काल में हुई[2]। इस सभा की कार्यवाही से एक महत्त्वपूर्ण बात का पता चलता है कि "उन महास्थविरों ने यह देखा कि भविष्य में इस प्रकार उपद्रव हो सकते हैं या नहीं तो उन्होंने यह पाया कि—आज से ११८ वर्ष बाद पाटलिपुत्र में अशोक का राज्य होगा। वह बुद्धशासन से प्रसन्न होकर उसके प्रति उदार भाव अपना कर विशेष लाभ सत्कार प्रदान करेगा जिससे अनेक अन्यमतावलम्बी इसमें प्रवेश करेंगे और अपने-अपने मतानुसार शासन को अनेक उपद्रवों से ग्रस्त कर देंगे। अतः उन भिक्षुओं ने ब्रह्मलोक में तिस्स नामक महाब्रह्मा को मोग्गलि ब्राह्मण के घर प्रतिसन्धि ग्रहण करने के लिए निवेदन किया। फलस्वरूप वही महाब्रह्मा मोग्गलिपुत्र तिष्य नाम से अभिहित हुआ।

तृतीय संगीति

बुद्धपरिनिर्वाण के २१८ वर्ष वाद पाटलिपुत्र के अशोकाराम में मोग्गलिपुत्त-तिस्स की अध्यक्षता में बौद्धों की तीसरी संगीति हुई[3]। समन्तपासादिका की बाहिर-निदानकथा में इस संगीति के विषय में विस्तार से वर्णन किया गया है। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि इस संगीति का वर्णन चुल्लवग्ग में प्राप्त नहीं होता। वहाँ केवल पञ्चशतिका तथा सप्तशतिका का ही उल्लेख प्राप्त होता है। जिसके कारण कुछ विद्वानों ने इसकी ऐतिहासिकता पर सन्देह किया है। समन्तपासादिका के वर्णन से यह ज्ञात होता है कि अशोक के काल तक बौद्धसंघ १८ सम्प्रदायों में विभक्त हो चुका था और इनमें से जिस सम्प्रदाय का पक्ष ग्रहण कर यह सभा बुलाई गई थी वह विभज्यवादी या स्थविरवादी सम्प्रदाय था।

---

१. सतेहि सत्तहि कता, तेन सत्तसता ति च।
पुब्बे कतं उपादाय, दुतिया ति च वुच्चती ति॥ स० पा० पृ० ३०

२. द्र० स० पा० पृ० ३०, सा० दी० टी० पृ० ८४,८५

३. "इतो वस्ससतस्स उपरि अट्ठारसमे वस्से पाटलिपुत्ते धम्मासोको नाम राजा उप्पज्जित्वा सकलजम्बुदीपे रज्जं कारेस्सति। स० पा० भा० १ पृ० ३१

सारत्थदीपनी टीका[१] में इन सम्प्रदायों के वारे विस्तार से बताया गया है। कहा गया है कि दूसरी संगीति में धर्मसंग्राहकों के द्वारा निष्कासित १० हजार वज्जिपुत्तक भिक्षुओं ने अपने पक्ष को प्रबल बनाने की आकांक्षा से अलग महासांघिक आचार्यकुल नाम दिया। उसके भी दो भेद हो गये (१) गोकुलिक (२) एकब्योहारिक गोकुलिकनिकाय के भी दो भेद हो गये (१) पण्णत्तिवादी (२) बाहुलिक। उसे ही बहुश्रुतिक भी कहा जाता है। उसमें से ही एक चैत्यवादी सम्प्रदाय उत्पन्न हुआ। इस प्रकार महासांघिक आचार्यकुल से द्वितीय शतक तक पाँच आचार्यकुल उत्पन्न हुए। जो महासांघिक को मिलाकर छः हो गये।

परिनिर्वाण से दूसरी शताब्दी में थेरवाद के दो सम्प्रदाय हो गये। (१) महीशासक (२) वज्जिपुतक। वज्जिपुत्तक से चार और सम्प्रदाय हो गये (१) धम्मुत्तरियक (२) भद्दयानिक (३) छन्नागारिक तथा (४) सम्मितिया। पुनः उसी शदी में महिशासक सम्प्रदाय से (१) सर्वास्तिवाद (२) धम्मगुत्तिक ये दो सम्प्रदाय हो गये। पुनः सर्वास्तिवाद से कस्सपिक, कस्सपिक से संकन्तिक और संकन्तिक से सुत्तवादी ये ग्यारह सम्प्रदाय हो गये, जो थेरवाद के साथ बारह हो गये। इस प्रकार थेरवाद के बारह तथा महासांघिक के छः सम्प्रदायों को मिलाकर उस समय तक अट्ठारह सम्प्रदाय हो चुके थे। इनमें से सत्रह सम्प्रदाय विनय में सुधारवादी थे तथा थेरवाद ही केवल विनय नियमों को यथा बुद्धोपदिष्ट माननेवाले थे[२]। दीपवंस में इन सम्प्रदायों के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है। इनसे भिन्न अन्य छः सम्प्रदायों की चर्चा की गई है जो इस प्रकार हैं—हैमवत, राजगिरिक, सिद्धार्थिक पूर्वशैलिय, अपरशैलिय, वाजीरिया[३]। इस प्रकार पूर्व के अट्ठारह सम्प्रदाय तथा बाद के छः सम्प्रदाय हुए। इन सभी बौद्धसम्प्रदायों का धर्मराज अशोक के द्वारा प्रचुर मात्रा में लाभ सत्कार प्राप्त होता था। इस लाभ सत्कार को न पाने के कारण असंतुष्ट सम्प्रदायों से बौद्धशासन दूषित हो रहा था। जिसके निराकरण के लिए मोग्गलिपुत्ततिस्स महास्थविर ने त्रिपिटकधर, प्रतिसम्भिदाप्राप्त भिक्षुओं में से एक हजार भिक्षुओं को चुनकर जिनमें महाकश्यप स्थविर, महास्थविर यश आदि के साथ मिलकर धर्म और विनय का पुनः संगायन किया[४]। इस प्रकार तृतीय संगीति का आयोजन हुआ।

---

१. द्र० सा० दी० टी० भा० १ पृ० ८७

२. द्र० सा० दी० टी० भा० १ पृ० ८७, ८८।

३. द्र० सा० दी० टी० भा० १ पृ० ८९

४. तदा हतलाभ सक्कारेहि तित्थियेहि उप्पादितं अनेकप्पकारं सासनमलं विसोधेत्वा मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरो तिपिटकपरियत्तिधरानं पभिन्नपटिसम्भिदानं भिक्खूनं सहस्समेकं गहेत्वा यथा महाकस्सपत्थेरो च यसत्थेरो च धम्मञ्च विनयञ्च सङ्गायिंसु, एवमेव सङ्गायन्तो ततियसङ्गीतिं अकासि। सा० दी० टी०—भा० १ पृ० ९०।

यह संगीति बुद्धपरिनिर्वाण से २१८ वर्ष बाद अशोक के काल में पाटलिपुत्र के अशोकाराम में आयोजित की गई। इसके अध्यक्ष मोग्गलिपुत्ततिस्स महास्थविर थे। सारत्थदीपनी के अनुसार "राजा ने समस्त पृथ्वी के भिक्षुओं को अशोकाराम में एकत्र करवाया। भिक्षुओं के मतों की परीक्षा के अनन्तर मिथ्या दृष्टिवाले भिक्षुओं की प्रवज्या छीन ली गई और उन्हें श्वेतवस्त्र पहनाकर संघ से निष्कासित कर दिया गया। कहा गया है कि ६०,००० भिक्षुओं का निष्कासन हुआ। राजा ने धार्मिक भिक्षुओं से भी भगवान् बुद्ध का वास्तविक मत पूछा तो भिक्षुओं ने भगवान् को विभज्यवादी बतलाया। मोग्गलिपुत्ततिस्स ने इसी मत का समर्थन किया और भिक्षु संघ की बैठक हुई। मोग्गलिपुत्ततिस्स ने एक सहस्र त्रिपिटकधर, छ अभिज्ञाओं के ज्ञाता (षड्भिज्ञ) प्रतिसम्भिदाप्राप्त, बुद्धिमान तथा प्रतिभासम्पन्न भिक्षुओं को सद्धर्मसंग्रह के लिए चुना और उनके साथ उपोसथ किया तथा धर्म और विनय का संगायन किया। जैसा प्रथम संगीति में महाकाश्यप आदि भिक्षुओं ने बुद्धवचनों का संगायन किया था वैसा ही इस संगीति में भी समस्त बुद्धवचनों को पिटक भेद से, निकाय भेद से, अङ्गभेद से तथा स्कन्ध भेद से विभाजित कर संगायन किया गया। इसके साथ ही मोग्गलिपुत्ततिस्स ने अन्य मतों के खण्डन के लिए कथावत्थुप्पकरण की रचना की तथा १७ बौद्ध सम्प्रदायों का निराकरण किया। जिसे अभिधम्मपिटक में स्थान दिया गया है।[१] इस तरह महाराज अशोक के संरक्षण में तथा मोग्गलिपुत्ततिस्स की अध्यक्षता में एक सहस्र भिक्षुओं ने नौ महीने में तीसरी संगीति सम्पन्न की।[२] अशोक के शासन का उस समय १७वाँ वर्ष था तथा मोग्गलिपुत्ततिस्स ७२ वर्ष के थे। समन्तपासादिका से यह भी ज्ञात होता है कि मोग्गलिपुततिस्स ने भविष्य को देखते हुए सीमा-प्रदेशों में बुद्धधर्म की स्थापना के लिए अनेक धर्मदूतों को भेजा। मध्यान्तिक स्थविर को काश्मीर तथा गान्धार, महादेव को महिषमण्डल, महारक्खित स्थविर को वनवासी, अपरन्तयोनकधम्मरक्खित को अपरन्त, महाधम्मरक्खित को महाराष्ट्र, महारक्खित को यवन, भिक्षु मज्झिम को हिमवन्त प्रदेश, काश्यपगोत्र, मूलदेव, सहदेव और

---

१. तस्मिं समागमे मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरो परप्पवादं मद्दमानो 'कथावत्थुप्पकरणं अभासि।

द्र० स० पा० भा० १ पृ० ५३

परप्पवादं मद्दन्तो ति तस्मिं ततियसङ्गीतिकाले उप्पन्नं वादं, ततो पट्ठाय याव सद्धम्मन्तरधाना आयतिं उप्पज्जनकवादञ्च सन्धाय वुत्तं। ....., सब्बेसम्पि तेसं पटिवाहनत्थं सत्थारा दिन्ननयवसेनेव तथागतेन ठपितमातिकं विभजन्तो सकवादे पञ्चसुत्तसतानि, परवादे पञ्चातिसुत्तसहस्सं आहरित्वा तदा उप्पन्नवादस्स मद्दन्तो ... आयतिं पटिसेधलक्खणं कथावत्थुप्पकरणं अकासि। सा० दी० टी० भा० १ पृ० ११२

२. अयं सङ्गीति नवहि मासेहि निट्ठिता। या लोके—

कता भिक्खुसहस्सेन, तस्मा साहस्सिका ति च।
पुरिमा द्वे उप्पादाय, ततिया ति च वुच्चती ति॥

स० पा० भा० १ पृ० ५३

दुन्दुभिस्वर को हिमवन्तप्रदेश, सुवण्णभूमि में सोण और उत्तर को ताम्रपर्णी में महेन्द्र इट्ठिय, उत्तिय, सम्बल और भद्रशाल को धर्मप्रचार के लिए भेजा गया। इसी संगीति के कारण अशोक ने धर्मविजय का उद्घोष किया। इस प्रकार विश्व के गोलार्द्ध में बौद्धधर्म का ध्वज फहराया गया। वे देश आज भी भारत के प्रति गौरव के भाव रखते हैं।

आजतक विनय किसके द्वारा लाया गया इसका समाधान करते हुए कहा गया है कि अविच्छिन्न आचार्य परम्परा की अटूट श्रद्धा के द्वारा यह लाया गया। उपालि स्थविर से प्रारम्भ कर आचार्यों की परम्परा के द्वारा जम्बूद्वीप में तृतीय संगीति तक इस विनय को अत्यन्त आदर सहित लाया गया। उन आचार्यों की परम्परा की सूची इस प्रकार दी गई है—उपालि, दारुक, सोणक, सिग्गव, मोग्गलिपुत्ततिस्स ये पाँच अग्रणी थे। इसी आचार्य परम्परा ने तृतीय संगीति तक विनय की धारा को अविच्छिन्न प्रवाहित रखा। तृतीय संगीति के उपरान्त लंकाद्वीप में धर्म और विनय महेन्द्र के द्वारा ले जाया गया। महेन्द्र अरिट्ठ आदि महास्थविरों ने सिंहल में बौद्धधर्म को प्रचारित किया और इस प्रकार विनय जम्बूद्वीप से लाया गया। साथ ही अन्य भिक्षुओं की विस्तृत नामावली यहाँ प्रस्तुत की गई है। यह भी विस्तार से बताया गया हैं कि इन भिक्षुओं ने उन-उन प्रदेशों में धर्मप्रचार के लिए क्या-क्या कार्य किये। जिस समय महेन्द्र आदि ने सिंहल में विनय की स्थापना की उस समय देवानंपियतिष्य का राज्य था। देवानंपियतिष्य ने भारतीय भिक्षुओं का बड़ा सत्कार किया और उनके सन्देश को स्वीकार किया। स्थविर महेन्द्र और उनके साथी लंका में उस त्रिपिटक को भी ले गये थे जिसके स्वरूप का अन्तिम निश्चय पाटलिपुत्र की संगीति में हो चुका था। लंका के अनुराधपुर नगर में 'महाविहार' की स्थापना हुई और त्रिपिटक के अध्ययन का क्रम चलता रहा। उस समय तक मौखिक परम्परा से ही बौद्धधर्म और विनय की संरक्षा होती रही, कालान्तर में उसी के आधार पर त्रिपिटक को ताडपत्रों पर लेखबद्ध कर दिया गया। इस प्रकार भिक्षुओं की उस अटूट परम्परा ने जिनमें महाप्रज्ञ, विनयज्ञ, मार्गकोविद भिक्षु थे, उन्होंने ताम्रपर्णी (लंका) में विनयपिटक को प्रकाशित किया। इसीलिए कहा गया है कि तृतीय संगीति के बाद विनय को इस द्वीप अर्थात् (लंकाद्वीप) में सर्वप्रथम महेन्द्र, रट्ठिय, उत्तिय आदि ने लाया, तदनन्तर अरिट्ट आदि स्थविरों ने इसे लाया, तब से लेकर आज तक उन्हीं के अन्तेवासी शिष्यों की आचार्य परम्परा ने इसे आज तक जीवित रखा[1]।

गाथा में दूसरा प्रश्न था कि विनय कहाँ प्रतिष्ठित हुआ? "कत्थ पतिट्ठितं ति? इसका समाधान करते हुए कहा गया है कि जो पालि (बुद्धवचन) और उसके

---

१. "ततियसङ्गहतो पन उद्धं इमं दीपं महिन्दादीहि आभतं, महिन्दतो उग्गहेत्वा कञ्चि कालं अरिट्ठत्थेरादीहि आभतं, ततो याव अज्जतना तेसंयेव अन्तेवासिकपरम्पराभूताय आचरिय-परम्पराय आभतं" ति। स० पा० पृ० ९०।

अर्थ को अपने चरित्र में आचरित करते हैं। जिस प्रकार मणि के घड़े में रखा गया तेल थोड़ा भी नहीं गिरता, उसी प्रकार पालि एवं उसके अर्थ को जो अपनी स्मृति में रखकर तदनुसार आचरण करते हैं, ऐसे स्मृतिमान्, धृतिमान, अधिशीलादिशिक्षा को पालन करने वाले भिक्षुओं में यह विनय प्रतिष्ठित है। विनय के गुणों को देखते हुए ये स्मृतिमान् भिक्षु विनय के प्रति श्रद्धाभाव से युक्त हो उसकी संरक्षा और संबर्द्धन में संलग्न हैं। ऐसे भिक्षुओं में विनय प्रतिष्ठित है।

विनयपरियत्ति के गुणों की चर्चा करते हुए समन्तपासादिका तथा टीका में कहा गया है कि विनयपरियत्ति (विनयपिटक) में कुशल पुरुष तथा बौद्धशासन में प्रव्रजित श्रद्धावान् कुलपुत्रों के लिए विनय मातापिता के समान हैं। जिस प्रकार माता-पिता अपने पुत्र को अकरणीय कर्मों से पृथक कर कर्त्तव्य कर्मों में लगाता है, उसी प्रकार विनयपरियत्ति अकर्त्तव्य को अकरणीय कर्तव्य को करणीय बतला कर सम्यक्मार्ग प्रतिपन्न करता है।

विनय परियत्ति के पालन से 'आचारगोचर कुशलता' को प्राप्त करता है। 'आचार' शब्द की व्याख्या करते हुए सारत्थदीपनी टीका में कहा गया है कि सभी प्रकार के कायिक, वाचसिक एवं मानसिक अनाचार को छोड़कर सदाचरण से युक्त होना, इन्द्रियों को वश में रखना, भोजन में मात्रा को जाना, स्मृतिमान एवं जागरूकता, अल्पेक्ष, सन्तुष्ट, पराक्रम युक्त एकान्तसेवन आदि आचार है। गोचर तीन है उपनिस्सय गोचर, आरक्खगोचर, तथा उपनिबन्ध गोचर। उपनिस्सयगोचर की व्याख्या करते हुए टीका में कहा गया है कि दसकथावस्तुसम्पन्न कल्याणमित्र जिनसे अश्रुत को सुनता है, श्रुत को परिष्कृत करता है, जिस शिक्षा से श्रद्धा बढ़ती है, शील, त्याग, प्रज्ञा बढ़ती है उसे ही उपनिश्रयगोचर कहते हैं। इन्द्रियदमन संयम तथा सत्यान्वेषण ही आरक्षगोचर है तथा चार स्मृति प्रस्थान ही उपनिबन्ध गोचर है। इन आचार और गोचर सम्पन्नता को 'आचारगोचरकुशलता' कहते हैं। यह विनयपरियति का दूसरा गुण है।[1] पुनः विनयपालन से शील का अधिगम होता है अलज्जिता, अज्ञानता, सन्देह, आदि का अपसरण हो जाता है। यह विनयपरियत्ति का तीसरा गुण है। विनय का पालन करने वाला भिक्षु संघ के मध्य विशारद निर्भय होकर स्थित रहता है। अन्यतैर्थिकों के वादों का धर्म सहित खण्डन करता है तथा सद्धर्म के संरक्षण में सर्वदा प्रतिपन्न रहता है। इसीलिए भगवान् ने भिक्षुओं को कहा है कि ये पाँच विनयधर पुरुषों के गुण हैं।[2]

जो भी संवरमूलक कुशल धर्म हैं उनका विनयधर पुरुष दायाद हैं, उन संवरमूलक धर्म का मूल विनय है। भगवान ने स्वयं कहा है कि विनय संवर (आत्मसंयम) के लिए है, संवर अविप्रतिसार (पाश्चातापराहित्य) के लिए है, अविप्रतिसार प्रमुदिता के लिए, प्रमुदिता प्रीति के लिए, प्रीति प्रश्रब्धि के लिए, प्रश्रब्धि सुख के

---

१. स० पा० पृ० ९०। सा० दी० टी० १४२, १४३।

२. तेनाह भगवा—पञ्चिमे, भिक्खवे आनिसंसा विनयधरे पुग्गले, परि०, २३७।

लिए, सुख समाधि के लिए, समाधि यथाभूतज्ञान दर्शन के लिए, यथाभूतज्ञानदर्शन निर्वेद के लिए, निर्वेद विराग के लिए, विराग विमुक्ति के लिए, विमुक्ति विमुक्तिज्ञान-दर्शन के लिए, तथा विमुक्तिज्ञानदर्शन अनुपादापरिनिर्वाण के लिए है। अनुपादापरि-निर्वाण ही मनुष्यजीवन का अन्तिम लक्ष्य है। अतः विनयपरियत्ति के अनुसार आचरण के लिए प्रयत्न करना श्रेयस्कर है[1]।

इस प्रकार पूर्व प्रतिज्ञात गाथा में आगत विनय का उपदेश किसने दिया ? कहाँ दिया ? कब दिया ? किसने इसे धारण किया ? कैसे आज तक प्रवर्तित रहा ? और कहाँ प्रतिष्ठित हुआ ? आदि प्रश्नों का समाधान विस्तारपूर्वक किया गया। समाधान का सार इस प्रकार समझा जा सकता है। भगवान बुद्ध ने विनय की देशना की वेरञ्जा नामक स्थान में, वेरञ्ज ब्राह्मण को जिसे उपालि आदि भिक्षुओं ने ग्रहण किया और प्रथम संगीति के अवसर पर संगायन किया। तदनन्तर गुरु-शिष्य परम्परा से यह विनय आज तक प्रवर्तित है। तथा विनयधर, स्मृतिमान भिक्षुओं में यह (विनय) प्रतिष्ठित है। इस प्रकार बाहिरनिदानकथा के माध्यम से इन विषयों पर विस्तार से विचार किया गया है।

वेरञ्जकण्डवण्णना

बाहिर निदान कथा के अनन्तर वेरञ्जकण्डवण्णना प्रारम्भ होता है। यह विनयपिटक के वर्ण्य विषय का विषयप्रवेश के रूप में वर्णित है। निदानकथा में कहा गया था कि "तेन समयेन बुद्धो भगवा वेरञ्जायं विहरति" आदि निदानवचन प्रति-मण्डित विनयपिटक है। विनयपिटक-महावग्ग, चुल्लवग्ग, पाराजिक, पाचित्तिय और परिवारपाठ इन पाँच भागों में विभाजित है। इनमें से 'पाराजिक'को भिक्खुविभङ्ग भी कहा जाता है, यह पञ्ञत्तिनिदानकथा के अन्तर्गत 'वेरञ्जब्राह्मणपुच्छा' नामक शीर्षक से प्रारम्भ होता है। पाराजिककण्ड—यह उन चार अपराधों की व्याख्या करता है, जिनका दण्ड संघ से भिक्षु को तत्काल जीवनभर के लिए निकाल दिया जाता है। ये चार अपराध हैं—अब्रह्मचर्य, चौर्य, हत्या तथा दिव्य-यौगिक शक्ति से युक्त होने का मिथ्या दावा। ग्रन्थ का प्रारम्भ वैरञ्जा के दुर्भिक्ष-वर्णन तथा उस स्थिति का सामना करने के लिए 'मोग्गल्लान' द्वारा यौगिक-दिव्य शक्ति के प्रयोग करने के आश्वासन से होता है। लेकिन बुद्ध ने इस प्रकार की सांसारिक परिस्थितियों के लिए यौगिक-शक्तियों के प्रयोग को स्वीकृत नहीं किया।

ग्रन्थ का प्रारम्भ इस प्रश्न की चर्चा से हुआ है कि इसका क्या कारण है कि पूर्व बुद्धों में से कुछ का 'सद्धर्म' लम्बी अवधि तक चला, जब कि उनमें से कुछ कुछ का 'सद्धर्म' अल्प समय में ही लुप्त हो गया। बुद्ध ने बतलाया कि पूर्व-बुद्धों का 'सद्धर्म' दीर्घजीवी रहा, जिन्होंने अपने संघ को सङ्गठित और व्यवस्थित करने में परिश्रम किया तथा उसमें मार्गदर्शन और अनुशासन के लिए 'प्रातिमोक्ष' का विधान

---

१. स० पा० भा० १ पृ० ९१। सा० दा० टी० भा० १, १४८, १४५।

किया। अतः शीघ्र ही 'सारिपुत्र' ने उनसे 'सद्धर्म' की चिरस्थिति के लिए 'प्रातिमोक्ष' की देशना के लिए प्रार्थना की। बुद्ध ने कहा कि 'प्रातिमोक्ष' के नियमों की सम्पूर्ण देशना एक ही समय में नहीं की जा सकती। उन्होंने बताया कि वे क्रमशः समय और अवसर के अनुकूल नियमों का विधान करेंगे।

पाराजिककण्ड में वर्णित प्रत्येक अपराध की व्याख्या एक कहानी से आरम्भ होती है, जिसे 'वत्थु' कहा गया है। इसका नामकरण उस अपराध करने वाले प्रथम अपराधी के नाम से हुआ है। उस सर्वप्रथम अपराधी भिक्षु के सन्दर्भ में बुद्ध ने जिस विधान की घोषणा की थी, उसे 'पञ्ञत्ति' कहते हैं। तदनन्तर उस सम्बन्ध में आई हुई अन्य कहानियों का विधान हैं, जिनके अनुसार बुद्ध ने अपने पूर्व-कथित नियम में सुधार करके संशोधित रूप में उसकी देशना की। इस संशोधित रूप को 'अनुपञ्ञत्ति कहा गया है। नियम के अन्तर्गत प्रयुक्त प्रत्येक शब्द की व्याख्या की गई है, जिसे 'विभङ्ग' कहते हैं। पाराजिक और पचित्तिय भिक्षु और भिक्षुणियों के संघ के सम्बन्ध में बुद्ध द्वारा स्थापित नैतिक-अनुशासन के नियमों का विश्लेषणात्मक व्याख्या करते हैं जो क्रमशः भिक्षुविभङ्ग और भिक्षुणीविभङ्ग कहलाता है।

प्रथम पाराजिक की व्याख्या 'सुदिन्नभिक्खु' की कथा से प्रारम्भ होती है, जिसने अपने सम्बन्धियों के कहने से अपनी कुल-सम्पत्ति का उत्तराधिकार प्राप्त कराने के लिए तथा पुत्र उत्पन्न करने के लिए अपनी पत्नी से मिलना स्वीकार कर लिया था। जिससे वह पाराजिक दोष से आपन्न हो गया। इसी सन्दर्भ में बुद्ध ने इसे 'पाराजिक' अपराध की संज्ञा दी और उसे संघ से निष्कासित कर दिया। पुनः विशेष अवस्थाओं के उपस्थित होने पर बुद्ध ने उस अपराध की परिभाषा को संशोधित कर उसे ऐसा पूर्ण रूप दिया कि जिससे इस प्रकार का कोई भी अपराधी दण्डविधान से न बचे।

एक समय भगवान् बुद्ध वेरंजा में नलेरुपुचिमन्दमूल में विहार कर रहे थे। उस समय वेरंज ब्राह्मण ने सुना कि भगवान् वहाँ विहार कर रहे हैं। उनका कल्याण-प्रद कीर्ति शब्द सर्वत्र फैला था कि भगवान् अर्हत्सम्यक्सम्बुद्ध विद्या आचरण से युक्त सुगत लोक को जाननेवाले अनुत्तर, पुरुषों के दमन में सारथि स्वरूप हैं तथा देव मनुष्यों के शास्ता हैं, भगवान् बुद्ध हैं। वह देवता, मार, ब्रह्मा, श्रमण एवं ब्राह्मण सहित सम्पूर्ण प्रजाओं को स्वयं जानकर साक्षात्कार कर धर्मों का उपदेश करते हैं। उनका उपदेश आदिकल्याण, मध्यकल्याण, पर्यवसान कल्याण, अर्थ सहित, व्यञ्जन सहित, केवल परिपूर्ण ब्रह्मचर्य को प्रकाशित करते हैं। ऐसा जानकर वेरंज ब्राह्मण को यह अनुभव हुआ कि क्यों न मैं ऐसे सज्जन पुरुष का दर्शन करूँ।

तदनन्तर वेरंज ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। जाकर भगवान् के साथ संमोदन कर कुशलक्षेम पूछकर, एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए, वेरंज ब्राह्मण ने भगवान् से कहा—हे गौतम ! मैंने सुना है कि श्रमण गौतम वृद्ध-महल्लक वयः प्राप्त ब्राह्मणों के आने पर, न अभिवादन करते हैं, न प्रत्युत्थान करते हैं, और न ही आसन

के लिये कहते हैं। हे गौतम ? क्या यह ठीक है ? ब्राह्मण। देव, मार, ब्रह्मा-सहित सारे लोक में, श्रमण-ब्राह्मण-देव-मनुष्य-सहित सम्पूर्ण प्रजा में भी मैं किसी को ऐसा नहीं देखता, जिसका कि मैं अभिवादन करूँ, प्रत्युत्थान करूँ, तथा आसन के लिए कहूँ। तब वेरंज ब्राह्मण ने कहा "हे गौतम" ! आप अ-रस-रूप हैं।"

भगवान् ने कहा "ब्राह्मण ! ऐसा कारण है, जिससे ठीक कहने पर भी 'श्रमण गौतम अ-रस रूप हैं ऐसा कहा जा सकता हैं। ब्राह्मण ! जो वह रूप-रस रूप का स्वाद), शब्द-रस, गंध-रस, रस-रस, स्पर्श-रस है, तथागत के वे सभी प्रहीण हो गये हैं, जड़-मूल से कट चुके हैं, सिर कटे ताड़ से नष्ट हो चुके हैं, आगे न उत्पन्न होने वाले हो गये हैं। ब्राह्मण ! यही कारण है जिससे मुझे 'श्रमण गौतम अ-रस रूप है, कहा जा सकता है', किन्तु उस कारण से नहीं जिस कारण से तू कहता है। इसी तरह वेरंज ब्राह्मण ने पुनः भगवान् को कहा कि गौतम निर्भोग है ?" भगवान् ने कहा कि मैं रूपभोग, शब्दभोग, रसभोग, आदि से रहित हूँ इसीलिए मुझे निर्भोग कहा जाता है। पुनः आप गौतम अक्रियावादी हैं इस आक्षेप का निराकरण करते हुए भगवान ने कहा कि मैं कायिक दुराचरण, वाचसिक दुराचरण, मानसिक दुराचरण को अक्रिया कहता हूँ। अनेक प्रकार के पाप-धर्मों को अक्रिया कहता हूँ इसीलिए मुझे अक्रियावादी कहते हैं। पुनः गौतम उच्छेदवादी हैं इसका निराकरण करते हुए भगवान् ने कहा कि हे ब्राह्मण ! राग, द्वेष, मोह का उच्छेद करना चाहिए ऐसा मैं कहता हूँ, साथ ही अन्य अकुशल धर्मों का उच्छेद बतलाता हूँ। इसीलिए मुझे उच्छेदवादी कहा जाता है। पुनः आप गौतम जुगुप्सु (घृणा करने वाले) हैं इस आक्षेप का निराकरण करते हुए भगवान् बुद्ध ने कहा कि मैं कायिक, वाचसिक, मानसिक दुराचरणों से घृणा करता हूँ, साथ ही अन्य पाप-धर्मों से भी घृणा करता हूँ। इसीलिए मुझे 'जुगुप्सु' कहा जाता है। पुनः आप वैनयिक हैं (हटाने वाले हैं) इस आक्षेप का निराकरण करते हुए भगवान् ने कहा हे ब्राह्मण ! मैं राग, द्वेष तथा मोह के विनयन (हटाने) के लिए धर्मोपदेश करता हूँ, तथा अन्य पापधर्मों के विनयन का उपदेश देता हूँ। इसीलिए मुझे वैनयिक कहा जाता है न कि अन्य कारण से पुनः वेरंज ब्राह्मण ने कहा आप गौतम ! तपस्वी हैं" के बारे में भगवान् ने बताया कि मैं काय-वचन-मन के दुराचारों को तपाने वाला हूँ। "आप अप-गर्भ हैं" का निराकरण करते हुए भगवान् ने कहा कि ब्राह्मण जिसका भविष्य का गर्भशयन, अर्थात् आवागमन नष्ट हो गया है, उसको मैं अप-गर्भ कहता हूँ। हे ब्राह्मण ! तथागत के भविष्य का गर्भशयन समूलतः नष्ट हो चुका है, इसीलिए गौतम अप-गर्भ हैं यह कहा जाता है।

भगवान् बुद्ध ने आगे कहा कि अविद्या में पड़ी, अविद्या से जकड़ी इस प्रजा में, मैं अकेला ही अविद्या रूपी अंडे को फोड़कर, अनुत्तर सम्यक्-सम्बोधि को जानने-वाला हूँ। हे ब्राह्मण मैं ही लोकों में ज्येष्ठ तथा श्रेष्ठ हूँ। हे ब्राह्मण ? मैंने ही न देखनेवाला वीर्य आरम्भ किया; विस्मरण-रहित स्मृति मेरे सम्मुख थी, अचल और शांत मेरा शरीर था, एकाग्र समाहित चित्त था। सो हे ब्राह्मण ! मैं सवितर्क

सविचार विवेक से उत्पन्न प्रीति-सुख वाले प्रथम ध्यान को प्राप्त होकर विहरने लगा। पुनः वितर्क और विचार के शांत हो जाने से भीतरी शांति, चित्त की एकाग्रता, अवितर्क, अविचार, समाधि से उत्पन्न प्रीति सुख से युक्त द्वितीय ध्यान को प्राप्त हो विहरने लगा। प्रीति से विरक्त, और उपेक्षक हो विहरता हुआ स्मृति एवं संप्रजन्य से युक्त हो, काया से सुख को भी अनुभव करता हुआ, जिसे आर्यलोग उपेक्षक, स्मृतिमान्, सुख विहारी कहते हैं, वैसा तृतीय ध्यान को प्राप्त होकर विहरने लगा। सुख और दुःख के प्रहाण से सौमनस्य और दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, अदुःख, असुख, उपेक्षा, स्मृति की परिशुद्धता रूपी चतुर्थ ध्यान को प्राप्त हो विहरने लगा। इस प्रकार चित्त के समाहित परिशुद्ध-पर्यवदात अङ्गणरहित (उपक्लेशरहित) मृदुभूत, कर्मनीय, स्थिर और समाहित हो जाने पर, पूर्व जन्मों की स्मृति के ज्ञान के लिए चित्त को मैंने झुकाया। फिर मैं अनेक पूर्व-निवासों को स्मरण करने लगा— जैसे एक जन्म भी, दो जन्म भी····आकार-सहित, उद्देश्य सहित, अनेक पूर्व निवासों का स्मरण करने लगा। हे ब्राह्मण! इस प्रकार प्रमादरहित, तत्पर, आत्मसंयम युक्त विहरते हुए, मुझे रात्रि के पहले प्रहर में प्रथम-विद्या प्राप्त हुई, अविद्या नष्ट हो गई, विद्या प्रकट हुई, तम नष्ट हुआ, आलोक उत्पन्न हुआ।

इस प्रकार चित्त के परिशुद्ध पर्यवदात होने पर प्राणियों के जन्म-मरण की ओर मैंने अपने चित्त को लगाया। सो मैंने अमनुष दिव्य विशुद्ध चक्षु से अच्छे बुरे, सुवर्ण-दुर्वर्ण, सुगत-दुर्गत, मरते उत्पन्न होते प्राणियों को देखा। कर्मानुसार गति को प्राप्त प्राणियों को जानने लगा। इस प्रकार हे ब्राह्मण! रात के मध्यम प्रहर में यह द्वितीय विद्या उत्पन्न हुई। पुनः चित्त के परिशुद्ध पर्यवदात मृदु एवं कर्मनीय हो जाने पर मैंने आश्रव क्षय ज्ञान के लिए चित्त को झुकाया—यह दुःख हैं, इसे यथार्थतः जान लिया, यह दुःखसमुदय है, इसे यथार्थतः जान लिया। यह दुःखनिरोध-गामिनी-प्रतिपदा है इसे यथार्थतः जान लिया। यह दुःखनिरोध है यह यथार्थतः जान लिया। यह आश्रव है, इसे यथार्थतः जान लिया। 'यह आश्रव-निरोध है' इसे यथार्थतः जान लिया। यह आश्रवनिरोधगामिनीप्रतिपदा है यह जान लिया। इस प्रकार जानते, इस प्रकार देखते हुए चित्त कामाश्रव आदि आश्रवों से मुक्त हो गया। अविद्याश्रव से भी विमुक्त हो गया। विमुक्त हो जाने पर मैं विमुक्त हो गया 'ऐसा ज्ञान हुआ।' जन्म समाप्त हो गया' ब्रह्मचर्यवास पूरा हुआ; करणीय कर लिया; अब यहाँ कुछ शेष नहीं रहा, इसे जान लिया। अब पुनर्भव नहीं होगा इसे भी जान लिया। रात्रि के पिछले प्रहर में यह तृतीय विद्या प्राप्त हुई। अविद्या नष्ट हुई, विद्या उत्पन्न हुई। तम गया, आलोक उत्पन्न हुआ। हे ब्राह्मण इस प्रकार तीसरी विद्या उत्पन्न हुई।

भगवान् बुद्ध के ऐसा कहने पर वेरञ्ज ब्राह्मण ने भगवान् को कहा—"हे गौतम आप ज्येष्ठ हैं, हे गौतम आप श्रेष्ठ हैं। हे गौतम आश्चर्य है कि आपने जैसे

---

१. स० पा० पृ० ८

औंधे को सीधा कर दे, छिपे को प्रकट कर दे भूले हुए को मार्ग दिखा दे, अन्धकार में जैसे तेल प्रदीप जला दे जिससे चक्षुष्मान् रूप को देखे इसी प्रकार भगवान् आपने अनेक पर्याय से धर्म को प्रकाशित किया है। आज से मैं भगवान् की शरण में जाता हूँ। हे भगवान् मुझे आज से आप अपना उपासक समझें, तथा वेरंजा में वर्षावास करें। भगवान् ने शान्त भाव से वेरञ्ज ब्राह्मण के निवेदन को स्वीकार किया। तदनन्तर वेरञ्ज ब्राह्मण आसन से उठकर भगवान् का अभिवादन किया तथा प्रदक्षिणा कर चला गया।

इस वर्णनक्रम में समन्तपासादिका तथा टीका में प्रथमध्यान, द्वितीयध्यान, तृतीयध्यान एवं चतुर्थ ध्यान का विस्तार से वर्णन किया गया है। इस प्रसंग में यहाँ निर्दिष्ट है कि जैसा ज्ञानविभङ्ग में वर्णित है, वैसा ही यहाँ भी वर्णन किया जा रहा है अतः इन ध्यानों का यहाँ संकेत मात्र ही किया गया है। चतुर्थध्यान के अनन्तर "पुब्बेनिवासकथा" जिसका अर्थ "पूर्वनिवासानुस्मरणकथा" किया जा सकता है, वर्णित है। इसमें कहा गया है कि इन चार अरूपावचरध्यान से किसी का चित्त एकाग्र हो जाता है तो कुछ को विपश्यना की प्राप्ति होती है, कुछ छ अभिज्ञाओं को प्राप्त कर लेते हैं, कुछ निरोधसमापत्ति के द्वारा सात दिनों तक अचित्तक होकर विहार करते हैं, तो कुछ लोग भव बन्धन से छूट जाते हैं। जैसे क्षीणाश्रव का चित्त एकाग्र हो जाता है, शैक्ष्य और पृथक्जन को 'विपस्सना' को प्राप्ति होती है। जो आठ समापत्तियों की भावना के अनन्तर अभिज्ञाओं को प्राप्ति के लिए ध्यान करते है, उन्हें अभिज्ञाओं की प्राप्ति होती है। जो आठ समापत्तियों की भावना के अनन्तर यह संकल्प करते हैं कि "निरोधसमापत्ति की भावना कर सप्ताह भर अचित्तक होकर दृष्टधर्म निर्वाण को प्राप्त कर सुख से विहार करूँगा, उनका ध्यान 'निरोधपादक ध्यान' कहा जाता है। और जो यह सोचते हैं कि इन ध्यानों की भावना से अनन्त ब्रह्मलोक में उत्पन्न होऊँगा उनका वह ध्यान भव के अतिक्रमण के लिए होता है।[1]

निरोधसमापत्ति

सारत्थदीपनीटीका में निरोधसमापत्ति का वर्णन विस्तार से किया गया है जो इस प्रकार है—"का पनायं निरोधसमापत्ति" निरोधसमापति किसे कहते हैं? निरोध समापत्ति एक यौगिक अवस्था है। यह अनुपूर्वनिरोध के योग से चित्त एवं चेतसिक धर्मों की अप्रवृत्ति का नाम है[1]। यह न तो शील के अन्तर्गत है, न समाधि के, और न प्रज्ञाभावना के अपितु प्रज्ञाभावना से उपलब्ध समाधान समर्थता से प्राप्य एक प्रकार की लोकोत्तर समाधि है। इस दृष्टि से इसे 'समथ' एवं 'विपस्सना' के युगनद्ध

---

१. स० पा० भा० १ पृ० १४५। सा० दी० टी० भा० १ पृ० ३८४, ३८५

१. तत्थ का पनायं निरोधसमापत्ति नामाति या अनुपुब्बनिरोधवसेन चित्तचेतसिकानं धम्मानं अप्पवत्ति। सा० दी० टी० भा० १ पृ० २८५।

सांहाय्य-जनित अवस्था भी कहा जा सकता है[१]। यह सत्य है कि लोकोत्तर भूमि में योगावचर द्वारा रूपध्यान एवं अरूपध्यान का अभ्यास किया जाता है, इसीलिए वे लोकोत्तरध्यान कहे जाते हैं, तथापि यह अवस्था उनसे भिन्न है। इसकी भिन्नता दो रूपों में देखी जा सकती है—प्रथम यह कि यह चित्त, चैतसिकों की अप्रवृत्ति के कारण रूप एवं अरूपध्यानों से ऊपर की अवस्था है[२], तथा द्वितीय यह कि इसका अभ्यास कुछ विशिष्ट योगावचरों द्वारा ही सुलभ है। इसीलिए यहाँ प्रश्न किया गया है कि "कौन इसकी भावना कर सकते हैं, कौन इसकी भावना नहीं कर सकते ? जिसका समाधान करते हुए कहा गया है कि "सभी पृथक्जन, स्रोतापन्न, सकृदागामी, सुखविपस्सक, अनागामी तथा अरहत इसकी भावना नहीं कर सकते पर आठ-समापत्तियों के लाभी अनागामी तथा क्षीणाश्रव इसी पंचवोकार भव अर्थात् कामलोक तथा रूपलोक में इसकी भावना के वास्तविक अधिकारी हैं[३]। पहले कहा जा चुका है कि निरोधसमापत्ति का अर्थ कायिक, वाचसिक तथा मानसिक प्रवृत्तियों का पूर्ण निरोध होता है। इसे ही कायसंस्कार, वचीसंस्कार तथा चित्तसंस्कार कहा जाता है। इनमें आश्वास-प्रश्वास को कायसंस्कार, वितर्क-विचार को वचीसंस्कार तथा संज्ञा, वेदना एवं अन्यान्य चित्तसम्प्रयुक्त धर्मों को चित्तसंस्कार कहते हैं[४]। इन्हीं त्रिविध संस्कारों के पूर्णतः निरुद्ध हो जाने से जिस दशा की प्राप्ति होती है, वह निरोधसमापत्ति है। संज्ञावेदयित निरोध भी इसी का नाम है।

निरोधसमापत्ति के अभ्यास का एक नियम है। अभ्यास का अभीप्सु पहले अपने को मानसिक स्तर पर प्रबुद्ध करता है। वह भोजनोपरान्त हस्त-पादादि का प्रक्षालन कर अरण्य, गिरिकन्दरा या अन्य एकान्त स्थान में सुप्रज्ञप्त आसन पर ऋजुभूत काय से स्मृतिमान् हो आसीन होता है। इस प्रकार आसीन हो कर प्रथम रूपध्यान का अभ्यास करते हुए समस्त संस्कृत धर्मों के अनित्य, अनात्म तथा दुःखपूर्ण स्वरूपों पर विचार करता है। तदनन्तर रूपध्यान की अन्य अवस्थाओं का अभ्यास करते हुए, अरूप ध्यान में 'आकिञ्चञ्ञायतन' तक पहुँचता है। इस

---

१. यो पन उभयवसेनेव उस्सक्कित्वा पुब्बकिच्चं कत्वा नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं निरोधेति, सो तं समापज्जति। वि० म० पृ० ५०१।

"सञ्ञावेदयितनिरोधसमापत्तिया द्वे धम्मा बहूपकारा समथो च विपस्सना चा ति"। सं० नि० भा० ३, पृ० २६१-६३

२. सब्बसो नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं समतिक्कम्म सञ्ञावेदयितनिरोधं उपसम्पज्ज विहरति। म० नि० भा० २, २६६ पृ०

३. सा० दी० टी० पृ० २८५, वि० म० पृ० ५९२।

४. तयो सङ्खारा—कायसङ्खारो, वचीसङ्खारो, चित्तसङ्खारो ति। अस्सास पस्सासा कायसङ्खारो, वितक्क विचारा वचीसङ्खारो, सञ्ञा च वेदना च चित्तसङ्खारो। ठपेत्वा वितक्कविचारो सब्बे पि चित्तसम्पयुत्तका धम्मा चित्तसङ्खारो। यमक पृ० २-३ वि० म० ४९९

अवस्था की प्राप्ति के साथ वह कुछ क्षणों के लिए विराम लेता है। विराम के ये क्षण निरोध समापत्ति के पूर्वकृत्यों के लिए होता है। "अथ आकिञ्चञ्ञायतनं समापज्जित्वा वुट्ठाय चतुब्बिधं पुब्बकिच्चं करोति नानाबद्धअविकोपनं संघपतिमाननं सत्थुपक्कोसनं अद्धानपरिच्छेदं ति।[1]

पूर्वकृत्य में तीन अधिष्ठान तथा एक अवलोकन ये चार बातें होती हैं। प्रथम अधिष्ठान "नानाबद्धअविकोपन" विषयक है। वह ऐसा अधिष्ठान करता है कि निरोध समापत्ति समापन्नकाल में उसके, पात्र, चीवर, शयनासन आदि को अग्निदाह, उदकप्रकोप, वायु संक्षोभ या अन्य कारणों से कोई क्षति न हो।[2] द्वितीय अधिष्ठान (संकल्प) "संघपतिमानन" विषयक है। वह ऐसा अधिष्ठान करता है कि निरोध की अवधि में संघकार्य के लिए उसकी आवश्यकता होने पर वह किसी के द्वारा बिना सूचना पाये ही उठ जाय। तृतीय अधिष्ठान "सत्थुपक्कोसन" विषयक है। वह अधिष्ठान करता है कि निरोध की अवधि में 'शास्ता' द्वारा किसी देशना के प्रसंग में उसकी आवश्यकता होने पर वह विना बुलाये ही निरोधसमापत्ति से उठ जाय। तथा चौथा अधिष्ठान है "अद्धानपरिच्छेद" विषयक। वह इस प्रकार अवलोकन या अधिष्ठान करता है कि निरोध की अवधि तक उसकी आयु है या नहीं। आयु अवशेष नहीं रहने पर वह मृत्यु को टाल नहीं सकता है, तथा निरोध की अवस्था में मरण की सम्भावना इष्ट नहीं हैं। अतः इन दो बातों के प्रकाश में वह 'आयु-परिच्छेद' का अवलोकन करता है[3]।

इस प्रकार इन चार अधिष्ठानों के अवलोकन के अनन्तर चतुर्थ अरूपध्यान "नेवसञ्ञानासञ्ञायतन" की भावना का अभ्यास करता है। यह चतुर्थध्यानिक चित्त केवल एक या दो बार प्रवृत्त होता है। इसके अनन्तर चित्त, चैतसिकों की प्रवृत्ति पूर्णतः निरुद्ध हो जाती है। इसमें भी पहले वची संस्कार पुनः कायसंस्कार तथा अन्त में चित्त संस्कार निरुद्ध होता है। इन त्रिविध संस्कारों के निरोध से शरीर एवं मन की समस्त वृत्तियाँ पूर्णतः निरुद्ध हो जातो हैं। यह अवस्था इसी रूप में सात दिनों तक बनी रहती है। वह सचेतन योगावचर अचित्तक हो जड़वत् दृष्टिगोचर होता है। निरोध की ऐसी दशा की सम्प्राप्ति ही निरोधसमापत्ति है।

निरोधसमापत्ति का अभ्यास सांवृतिक एवं पारमार्थिक दृष्टियों से अपूर्व फलदायक है। इसके सांवृत्तिक पक्ष के सन्दर्भ में कहा जाता है कि निरोध की अवधि में उस पुरुष के काय, चीवर, पात्र आदि तत् आबद्ध उपकरणों को अग्निदाह, उदक प्रकोप, वायु संक्षोभ, शस्त्र प्रहार आदि से किसी प्रकार की क्षति नहीं हो सकती तथा पारमार्थिक दृष्टि से इसके द्वारा पूर्वेनिवासानुस्मृति ज्ञान, दिव्यचक्षु आदि

---

१. सा० दी० टी० भा० १ पृ० २८५। वि० म० पृ० ५९५।

२. द्र० सा० दी० टी० भा० १ पृ० २८५, २८६, वि० म० पृ० ५९६।

३. द्र० सा० दी० टी० भा० १ पृ० २८५, २८६, वि० म० ५९६, ५९७

प्राप्त होते हैं। इसके साथ ही निर्वाण सुख का रसास्वादन होता है। पिटकों तथा पिटकेतर ग्रन्थों में ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख मिलता है। जिनमें निरोधसमापन्न भिक्षुओं को जला दिये जाने पर भी निरोध से उठने पर पूर्व रूप में बने रहने की चर्चा है[१]।

निरोधसमापत्ति से उत्थान का एक नियम है। अधिष्ठित अवधि की परिसमाप्ति पर क्रमशः चित्तसंस्कार, कायसंस्कार तथा वचीसंस्कार पुनः जाग उठते हैं। फलतः वह योगावचर भी प्रबुद्ध हो जाता है। प्रबुद्धक्षण में उसे जिस चित्त की उपलब्धि होती है, वह अनागामी फल या अर्हतफल चित्त होता है[२]। इससे यह ज्ञात होता है कि अनागामी तथा अर्हत् मार्ग चित्त से निरोध में प्रवेश करते हैं तथा फलचित्त की उपलब्धि से उनका उत्थान होता है। यहाँ दर्शनीय यह है कि इस अवस्था में एक क्षण में सहस्त्रों बार प्रवृत्त होनेवाला चित्त सात दिनों तक नितान्ततः निरुद्ध रहता है। इस दृष्टि से निरोध एवं उत्थान क्षण के चित्तों का सम्बन्ध समनन्तर तथा अनन्तर प्रत्ययों से दर्शाया गया है[३]। निरोधसमापत्तिसम्पन्न पुरुष का चित्त अत्यन्त परिशुद्ध, पर्यवदात, विगतउपक्लेश, अनङ्गण, मृदुभूत, कर्मण्य एवं स्थित हो जाता है। यह स्वभावतः निर्वाणोन्मुख हो उठता है[४]।

इस प्रकार निरोधसमापत्ति के पूर्व, मध्य, एवं अपर दशाओं का संक्षिप्त विवरण दिया गया। प्रस्तुत प्रसङ्ग में यह विचारणीय है कि इसका अनुभव कैसे होता है, जबकि संज्ञा, वेदना आदि चित्त, चैतसिकों की अप्रवृत्ति हो जाती है।

विशुद्धिमार्ग में यह प्रश्न किया गया है कि निरोधसमापत्ति की अवस्था को निद्रा की अवस्था की तरह माना जाय या इसे ध्यान कहा जाय या इसे मृत्यु कहा जाय ? समाधानस्वरूप कहा गया है कि यह निद्रा नहीं है, क्योंकि निद्रा इन्द्रियों के शैथिल्यवशात् होती है, वहाँ स्वतः प्रवेश का प्रश्न नहीं उठता। साथ ही निद्रा की अवस्था में चित्त तथा चैतसिक 'मिद्ध' से उपहत होने के कारण प्रवृत्ति रहित होते हैं, पर निरोध की अवस्था में स्वयं प्रवेश होता है, चित्त क्लेशों से मुक्त रहता है तथा इसकी अप्रवृत्ति अनवरत साधनावश होती है। इसे रूप या अरूपध्यान भी नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि उन दोनों अवस्थाओं में रूपवान् तथा रूपरहित आलम्बनों पर चित्त की एकाग्रता देखी जाती है, पर 'निरोधसमापत्ति' की अवस्था में कोई आलम्बन नहीं रहता है तथा चित्त, चैतसिकों की एकान्ततः अप्रवृत्ति देखी जाती है। तथा चित्तनिर्वाणनिम्न तथा निर्वाणपरायण होता है[५]।

---

१. म० नि० भा० १, पृ० ४०७, ४०८, वि० म० पृ० ५०१, ५०२

२. द्र० वि० म० पृ० ५९८।

३. द्र० पट्ठान भा० १, पृ० १२९।

४. द्र० म० नि० भा० १, पृ० ३७३।

५. द्र० म० नि० भा० १ पृ० ३७३ वि० म० पृ० ५९८।

यह मरण भी नहीं है। क्योंकि मृत्यु होने पर कायसंस्कार, वचीसंस्कार तथा चित्तसंस्कार निरुद्ध हो जाते हैं, आयु अर्थात् जीवितिन्द्रियाँ क्षीण हो जाती हैं, उष्मा समाप्त हो जाती है तथा इन्द्रियां 'विपरिभिन्न' (नष्ट) हो जाती है। पर निरोधसमापन्न योगावचर के काय, वची तथा चित्त संस्कार निरुद्ध एवं शान्त हो जाते हैं, आयु अर्थात् जीवितिन्द्रिय अपरिक्षीण रहती है, इन्द्रियाँ प्रसन्न रहती है, इस प्रकार इन दो दशाओं में पार्थक्य दर्शाया गया है[1]। अतः निरोधसमापत्ति उस अवस्था विशेष को कहा जा सकता है जिसमें चित्त चैतसिकों का सर्वांशतः अप्रवृत्ति हो जाती है तथा योगावचर निरोधसंपृक्त तथा निरोधपरायण रहता है। वह अचित्तक आश्रवमुक्त होकर निरोध से आख्यात निर्वाण में उपलब्ध प्रणीत सुख का अनुभवन करता है[2]।

ऊपर कहा जा चुका है कि निरोधसमापत्तिसमापन्न पुरुष का चित्त निर्मल, पर्यवदात, अनङ्गण, विगतुपक्लेश एवं शान्त हो जाता है। चित्त के इस निर्मल एवं शान्तभाव में स्थित हो जाने पर भगवान् बुद्ध ने अपने पूर्व जन्मों के स्मरण के लिए अपने चित्त को लगाया तो उन्होंने अनेक जन्मों के जाति, गोत्र, नाम, वर्ण, च्युति एवं उत्पत्ति को देखा। इसे ही 'पुब्बेनिवासानुस्सतिञाण' पूर्वेनिवासानुस्मृतिज्ञान कहा गया है। भगवान् बुद्ध को यह पहली विद्या प्राप्त हुई। जिससे पूर्व-पूर्व जन्मों में किए हुए कर्मों का तथा पूर्व पूर्व जन्मों का अनुस्मरण हुआ[3]।

दिव्यचाक्षुषज्ञानकथा

वह अ-मनुष्य दिव्य, विशुद्ध चक्षु से अच्छे-बुरे, सुवर्ण-दुर्वर्ण, सुगत, दुर्गत, मरते-उत्पन्न होते, प्राणियों को देखा; कर्मानुसार प्राणियों के गति को भी देखा। इसे ही दिव्यचक्षु ज्ञान या च्युत्युत्पाद ज्ञान कहा जाता है। दिव्यचक्षुज्ञान के द्वारा सत्त्वों के च्युति एवं उत्पत्ति को जानता है। "दिब्बचक्खुञाणेनेव हि सत्तानं चुति च उपपत्ति च ञायति"[4] सारत्थदीपनी टीका में कहा गया है कि दिव्यचक्षुलाभ के लिए इस प्रकार परिकर्म करना चाहिए दस कृत्सनों में से तेजोकसिण, अवदात-कसिण तथा आलोककसिण में से किसी एक को निकट कर ध्यान करने से यह प्राप्त होता है। इसके प्राप्ति से मनुष्य-अमनुष्य, सुगत, दुर्गत, सुवर्ण-दुर्वर्ण, मरते एवं उत्पन्न होते देखता है। इस अलौकिक चक्षु के प्राप्त होने पर पुनः उन्होंने आश्रवों के क्षय ज्ञान के लिए अपने चित्त को लगाया। यह उन्हें दूसरी विद्या प्राप्त हुई।

---

१. द्र० म० नि० भा० १, ३६५, वि० म० पृ० ५९८।

२. कस्मा समापज्जन्ती ति ? दिट्ठधम्मसुखविहारत्थं। वि० म० पृ० ५९०।
सङ्खारानं पवत्तिभेदे उक्कण्ठित्वा दिट्ठेव धम्मे अचित्तिका हुत्वा "निरोधं निब्बानं पत्वा सुखं विहरिस्सामा"ति समापज्जन्ति। वि० म० पृ० ५९५।

३. इमिना पन पदेना ति "यथाकम्मूपगे सत्ते पजानामी"ति इमिना वाक्येन।

४. सा० दी० टी० भा० १ पृ० २९६।

आश्रवक्षयज्ञान कथा[1]

कामाश्रव, भवाश्रव, दिट्ठिआश्रव तथा अविद्याश्रव ये चार आश्रव (चित्तमल) हैं। इन आश्रवों के नष्ट हुए बिना क्षीणाश्रव भाव को प्राप्त नहीं किया जा सकता। अतः उन्होंने इन आश्रवों को नष्ट कर आश्रवक्षयज्ञान से युक्त होकर यह दुःख है, यह दुःखसमुदय है, यह दुःखनिरोध है तथा यह दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपदा है इसे यथार्थतः जान लिया। यह आश्रव है, यह आश्रवसमुदय है, यह आश्रवनिरोध है, यह आश्रवनिरोधगामिनी प्रतिपदा है, इसे यथार्थतः जान लिया। समन्तपासादिका में इसका वर्णन करते हुए कहा गया है कि—उन्होंने इस प्रकार समाहित निर्मल, शान्त एवं स्थित चित्त को आश्रवक्षयज्ञान के लिए लगाया। आश्रवक्षयज्ञान के लिए अर्थात् अर्हत्मार्गज्ञान के लिए। अर्हत्मार्ग को ही आश्रवों के नष्ट करने के कारण आश्रवक्षय-ज्ञान कहा जाता है। इस ज्ञान के द्वारा चार आर्यसत्यों का यथार्थ ज्ञान होता है। साथ ही आश्रव, आश्रव के कारण, आश्रवनिरोध तथा आश्रवनिरोधमार्ग का यथार्थ ज्ञान हो जाता है। अर्हत्मार्गक्षण में इन आश्रवों से चित्त विमुक्त हो जाता है तथा अर्हत्फलक्षण में मैं विमुक्त हूँ यह ज्ञान होता है, इसे ही आश्रवक्षयज्ञान कहते हैं। इस ज्ञान की प्राप्ति से मैं विमुक्त हूँ, यह होता है। "जाति (जन्म) समाप्त हो गया, ब्रह्मचर्यवास पूरा हुआ, करणीय कार्य कर लिया गया, "अब पुनर्जन्म नहीं होगा" यह ज्ञान होता है। इस प्रकार प्रत्यवेक्षण ज्ञान ग्रहण से आश्रवक्षयज्ञान की प्राप्ति हुई और उन्होंने बेरञ्ज ब्राह्मण को बताया कि अर्हत्मार्गज्ञानरूपी विद्या उत्पन्न हुई तथा चार आर्यसत्यों का आच्छादन करनेवाली अविद्या नष्ट हो गई और इस प्रकार यह तीसरी विद्या प्राप्त हुई।

इससे यह स्पष्ट होता है कि भगवान् बेरञ्ज ब्राह्मण को बताया कि जैसे अण्ड-कोष को स्वयं नष्ट कर मुर्गी का चूजा बाहर निकलता है, उसी प्रकार भगवान् बुद्ध को ये विद्याएँ प्राप्त हुई तो उन्होंने अविद्यारूपी अण्डे को फोड़कर पूर्वनिवासानुस्मृतिज्ञान को प्राप्त किया। तदनन्तर च्युति प्रतिसन्धि (पुनर्जन्म) को छिपानेवाली अविद्यारूपी अण्डकोष को फोड़कर दिव्यचक्षुरूप द्वितीय विद्या प्राप्त हुई। पुनः चार आर्यसत्यों को आवृत कर देनेवाली अविद्यारूपी अण्डकोष को फोड़कर आश्रवक्षयज्ञान रूपी तीसरी विद्या को प्राप्त किया। पूर्वनिवासस्मृतिज्ञान के माध्यम से अतीतसंज्ञान को प्राप्त किया, दिव्यचाक्षुष् ज्ञान के द्वारा प्रत्युत्पन्न तथा अनागतं (भविष्य) ज्ञान को प्राप्त किया तथा आश्रवक्षयज्ञान के द्वारा सम्पूर्ण लोकोत्तर गुण को प्राप्त किया। इस प्रकार इन तीन ज्ञानों के अधिगम से भगवान् ने सर्वज्ञता प्राप्ति के गुणों को प्रकाशित कर अपने श्रेष्ठ एवं ज्येष्ठ भाव को दर्शाया।

देसनानुमोदन कथा

भगवान् के ऐसा कहने पर बेरञ्ज ब्राह्मण को ज्ञात हुआ कि भगवान् बुद्ध ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ हैं। तीन प्रकार की विद्याओं को प्राप्त कर विहार कर रहे हैं। ऐसे

---

१. स० पा० भा० १ पृ० १५७, सा० दी० टी० पृ० ३०४, ३०५।

ज्येष्ठ और अग्र पुरुष किसी को प्रणाम नहीं करता वरन् स्वयं प्रणम्य होता है। बेरञ्ज ब्राह्मण को पश्चात्ताप हुआ और भगवान् के पास जाकर कहा कि आप लोक में श्रेष्ठ हैं। साथ ही उसने भगवान की देशना का अनुमोदन करते हुए कहा कि हे गौतम ! समझ गया, समझ गया। आपका उपदेश साफ है, जैसे औंधे को सीधा कर दे, छिपे को उघाड़ दे, दिग्भ्रमित को मार्ग बता दे। अन्धकार में कोई चिराग जला दे, जिससे आँख वाला रूप को देखे। उसी प्रकार भगवान ने अनेक प्रकार से धर्मोपदेश द्वारा धर्म को प्रकाशित किया।

प्रसन्नाकार कथा[1]

इस प्रकार भगवान् बुद्ध की देशना की प्रशंसा कर बेरञ्ज ब्राह्मण अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने बुद्ध, धर्म और संघ के प्रति प्रसन्न हो श्रद्धा से सत्कार तथा स्वागत किया। इसी को पालि में 'पसन्नाकार' कहा जाता है। उसने श्रद्धाबहुल हो कहा कि मैं भगवान् की शरण जाता हूँ। क्योंकि भगवान् ही शरण हैं, भगवान् ही पारायण हैं, पापों को दूर करने वाले तथा सबका कल्याण करने वाले हैं अतः मैं भगवान् की शरण जाता हूँ, धर्म और संघ की शरण में जाता हूँ। आर्यमार्ग और निर्वाण को धर्म कहते हैं, सर्वगुणों से युक्त पुण्यक्षेत्र सर्वकल्याणकारक संघ, इन तीन की शरण जाना इनके प्रति श्रद्धा का भाव जागृत होना, तथा इनका सत्कार, आदर, करना ही कुशल है, इसे ही प्रसन्नाकार कहा गया है।

शरणगमनकथा

जब कोई पुरुष भगवान् बुद्ध के उपदेश को सुनकर श्रद्धायुक्त हो शुद्ध हृदय से उनके बताये मार्ग का अनुशरण करने की इच्छा व्यक्त करता है कि मैं बुद्ध की शरण में जाता हूँ (बुद्धं सरणं गच्छामि), धर्म की शरण में जाता हूँ (धम्मं शरणं गच्छामि), तथा सङ्घ की शरण में जाता हूँ (सङ्घं सरणं गच्छामि) इसे ही पालि में शरणागमन कहा गया है। बुद्ध धर्म एवं संघ की शरणागमन ही त्रिशरण गमन है। त्रिशरणगमन के साथ साथ शरण में जानेवाला व्यक्ति उपासक हो जाता है।

शरण शब्द की व्याख्या करते हुए सारत्थदीपनी टीका में कहा गया है कि "तत्थ सरणं ति पदत्थतो ताव हिंसती ति सरणं। हिंसत्थस्स हि सरसद्दस्स वसेनेतं पदं दट्ठब्बं, तस्मा सरणागतानं तेनेव सरणगमनेन वट्टभयं चित्तुत्रासं कायिकं दुक्खं दुग्गतिपरियापन्नं सब्बम्पि दुक्खं हनति, विनासेती ति अत्थो। रतनत्तयस्सेवेतं अधिवचनं[2]। अर्थात् शरण शब्द का अर्थ होता है—विनाश करने वाला। शरण में गये पुरुषों का भय, संत्रास, दुःख, दुर्गति, परिक्लेश आदि का जो हनन करता है या विनाश करता है, वह शरण है। शरण शब्द त्रिरत्न का ही अधिवचन है। जो

१. पसन्नाकारं ति पसन्नेहि कातब्ब सक्कारं। सा० दी० टी० भा० १ पृ० ३०९।

२. सा० दी० टी० भा० १ पृ० २११। सु० वि० भा० १ पृ० २५५।

हितसाधक धर्मों की प्रवृत्ति तथा अहितसाधक धर्मों की अप्रवृत्ति द्वारा सत्त्वों के भय, संत्रास, दुःख को विनष्ट करता है, वह बुद्ध है। जो भवकन्तार से सत्त्वों का सन्तारण करता है, आश्वासन देता है, वह धर्म है। जो अल्प दान, पूजा आदि कर्मों का महान फल प्रतिलाभ के द्वारा सत्त्वों के भय, संत्रास का नाश करता है वह संघ है[1]। भय, संत्रास, आदि का विनाश कर भव कन्तार से संतारण करता है इसलिए त्रिशरणगमन महान फलदायक है। तथा सम्यक्सम्बुद्ध, सुआख्यात धर्म, सम्यक् मार्ग प्रतिपन्न संघ ही त्रिरत्न है। इनके शरण में जाने से इनके प्रति श्रद्धाभाव सम्पन्न होने से सम्पूर्ण क्लेशों का तथा सम्पूर्ण अकुशल धर्मों का विनाश हो जाता है अतः शरणगमन महान फलदायक है।

शरणागमन के स्वरूप पर विचार करते हुए कहा गया है कि त्रिरत्न को शरण सद्गति प्रदान करने में सहायक है, त्राण दिलाने में सहायक है ऐसा सोचकर तत्परायणाकार प्रवृत्त चित्तुत्पाद का नाम हो शरणागमन है। ऐसे चित्त से युक्त होकर बुद्ध, धर्म एवं संघ की शरण में जाना ही शरणागमन है। यह शरणागमन दो प्रकार का होता है—लौकिक एवं लोकोत्तर शरणगमन। लौकिकशरणगमन से कामावचर, रूपावचर एवं अरूपावचर चित्तों में से किसी एक कुशल चित्त की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। लोकोत्तर शरणागमन में आठ प्रकार के लोकोत्तर चित्तों में से किसी एक कुशलचित्त की प्रवृत्ति इष्ट है। इसीलिए सारत्थदीपनी टीका में कहा गया है कि—"सरणगमनप्पभेदे पन दुविधं सरणागमनं लोकुत्तरं लोकियञ्च[2]।"

लोकोत्तरशरणगमन पर विचार करते हुए कहा गया है कि चार आर्यसत्यों का यथार्थज्ञान ही लोकोत्तरशरण गमन है। मार्गभावना के द्वारा निर्वाण का साक्षात्कार ही शरणागमन के अर्थ का साधक है। अतः शरणगमन लोकोत्तरप्रज्ञा का अधिगम है। इस दृष्टि से शरणागत पुरुष मार्गक्षणों में क्लेशों का प्रहाण करता है तथा फलकाल में यह स्पष्ट रूप से जानता है कि वे प्रहीण हो गये। इसका सफल पर्यवसान निर्वाण की प्राप्ति है।[3]

लौकिकशरणगमन के वारे बताया गया है कि जिस समय कुशलचित्त उत्पन्न होता है, उस समय उस चित्त का आलम्बन बुद्ध, धर्म या संघ होता है। यह चित्त श्रद्धासमन्वित सम्यक्दृष्टि से युक्त होता है। श्रद्धा तथा प्रज्ञा की उसमें समस्थिति होती है। इसीलिए इसमें श्रद्धा के अधिक्य से न अन्धविश्वास होता है, न प्रज्ञा के आधिक्य से तर्कबुद्धिपुरःस्सर चित्त में चांचल्य होता है। बल्कि श्रद्धा और प्रज्ञा के समभाव के कारण बुद्ध, धर्म और संघ के प्रति अटलविश्वास उत्पन्न होता है कि यही भवत्राण दिलाने में समर्थ है। अतः बुद्ध, धर्म और संघ के प्रति श्रद्धा का प्रतिलाभ होता है। लौकिक शरण-गमन के चार प्रकार बताये गये हैं। वे हैं—आत्मविसर्जन

---

१. द्र० सा० दी० टी० भा० १ पृ० ३११।
२. द्र० सा० दी० टी० भा० १ पृ० ३११।
३. द्र० सा० दी० टी० भा० १ पृ० ३११, ३१२।

(अत्तसन्निय्यातन) तत्परायणता, शिष्यभावूपगमन तथा प्रणिपात। जब बुद्ध के उपदेशों को सुनकर उनमें अपूर्व श्रद्धा प्राप्त कर यह कह उठता है कि—"मैं आज से अपने को बुद्ध, धर्म एवं संघ के प्रति समर्पित करता हूँ, यह आत्मपरित्यागपूर्वक शरणगमन ही आत्मसंनिर्यातन शरणगमन है। पुनः जब कोई ऐसा कहता है कि मैं बुद्ध-परायण, धर्म-परायण, संघ-परायण होता हूँ तो इसे 'तत्परायणशरणगमन" कहते हैं। आजसे मैं बुद्ध का अन्तेवासी हूँ, धर्म का अन्तेवासी हूँ, संघ का अन्तेवासी हूँ, मुझे इसी प्रकार धारण किया जाय तो इसे 'शिष्यभावूपगमन' शरण-गमन कहा जाता है। श्रद्धा से प्रेरित हो जब कोई इस भाव से युक्त होता है कि मैं आज से बुद्ध, धर्म एवं संघ के प्रति ही अभिवादन अञ्जलिकर्म आदि करूँगा; ऐसे त्रिरत्न के प्रति परम सत्कार के साथ प्रवृत्त होने के भाव को ही 'प्रणिपात 'शरण-गमन कहा जाता है। इन चार प्रकार के शरण-गमनों में से किसी एक प्रकार से त्रिरत्न की शरण में जाना ही शरण-गमन है[1]।

पुनः जातिवश, भयवश, आचार्यवश, तथा दक्खिणेय्यवश शरण-गमन का उल्लेख प्राप्त होता है। इनमें से दाक्षिणेय्यवश शरण-गमन को ही शरण-गमन माना गया है अन्य को नहीं। क्योंकि इसी शरण-गमन के द्वारा बोधि की प्राप्ति इष्ट है।

शरणगमनफल कथा

त्रिरत्न के शरण में जाना उत्तम मंगल है। लोकोत्तरशरणगमन से चार श्रामण्यफल, मार्गज्ञान, फलज्ञान तथा निर्वाण का अधिगम बताया गया है—जैसा कि कहा गया—जो बुद्ध, धर्म तथा संघ की शरण में जाता है, वह दुःख, दुःख का कारण, दुःखनिरोध तथा दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपदा रूप चार आर्यसत्य को सम्यक् प्रज्ञा से देखता है। यही उत्तम शरण क्षेम प्रद है, कल्याणकारी है और यही उत्तम शरण है। ऐसे शरणगमन से सभी दुःख नष्ट हो जाते हैं[2]।

लौकिक शरणागमन से भवसम्पदा तथा भोगसम्पदा दोनों प्राप्त होते हैं। शरणागत पुरुष इस लोक में भी सुखी रहता है तथा उसका परलोक भी सुखकर होता है। इसीलिए कहा गया है कि जो कोई बुद्ध, धर्म एवं संघ की शरण में जाता है वे अपायादि (नरक, तिरश्चीन, प्रेत, असुर) में नहीं जाते। मनुष्य देह को छोड़ने पर वे देवभूमि में उत्पन्न होंगे।

---

१. द्र० सा० दी० टी० भा० १ पृ० ३१२, सु० नि०, १-१५६।

२. यो च बुद्धञ्च धम्मञ्च, संघञ्च सरणं गतो।
चत्तारि अरियसच्चानि, सम्मप्पञ्ञाय पस्सति ॥
दुक्खं दुक्खसमुप्पादं, दुक्खस्स च अतिक्कमं।
अरियञ्चट्ठङ्गिकं मग्गं, दुक्खूपसमगामिनं ॥
एतं खो सरणं खेमं, एतं सरणमुत्तमं।
एतं सरणमागम्म, सब्बदुक्खा पमुच्चती ति। धम्मपदे ४२ पिट्ठे।

"ये केचि बुद्धं सरणं गतासे, न ते गमिस्सन्ति अपायभूमिं।
पहाय मानुसं देहं, देवकायं परिपूरेस्सन्ती" ति[१]।

शरणगमनसंक्लेशभेद कथा

शरणागमन के संक्लेशों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि त्रिरत्न के प्रति अज्ञान, संशय या मिथ्याज्ञान ही लोकियशरणागमन का संक्लेश है। त्रिरत्न के गुणों के प्रति अज्ञानता ही अज्ञान है, बुद्ध, धर्म एवं संघ के प्रति संशय को विचिकित्सा (विचिकिच्छ) कहा जाता है तथा बुद्ध, धर्म एवं संघ के गुणों को दुर्गुण के रूप में विपरीतग्रहण करना ही मिथ्याज्ञान है। अतः इन तीन बातों के कारण शरणगमन संक्लेशित हो जाता है। लोकोत्तरशरण-गमन का कोई संक्लेश नहीं है। लोकियशरण-गमन के दो भेद हैं—सावद्य एवं अनवद्य। लोकोत्तर शरणगमन का कोई भेद नहीं है।

उपासकत्व प्रतिवेदन

समन्तपासादिका तथा सारत्थदीपनी टीका से प्रकट होता है कि भगवान् बुद्ध के उपदेश इतने हृदयस्पर्शी होते थे कि उनके सुनने के बाद श्रोता कह उठता था कि "भगवान्, आज से मुझे उपासक के रूप में ग्रहण करें" या भगवान, मुझे प्रव्रज्या दें। "उपासकं मं भवं गोतमो धारतू"ति। इस तरह जो व्यक्ति गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए बुद्ध, धर्म एवं संघ की शरण जाता है वह 'उपासक' कहा जाता है। तथा जो गृहस्थ जीवन को छोड़कर त्रिरत्न की शरण में जाता है वह 'भिक्षु' कहलाता है।

सारत्थदीपनीटीका में—"को उपासको"ति उपासक कौन है? का समाधान करते हुए कहा गया है कि "क्षत्रिय आदि में से जो कोई गृहस्थ त्रिरत्न की शरण में जाता है वह 'उपासक' कहलाता है[२]। यतः वह बुद्ध, धर्म, संघ की शरण ग्रहण करता है शरणागत होता है, अतः 'उपासक' है, ऐसा कहा जाता है। उपासक क्यों कहा जाता है? का समाधान करते हुए कहा गया है कि—त्रिरत्न की उपासना करने के कारण वह 'उपासक' कहलाता है[३]।

उपासक का धार्मिक जीवन शील परिपालन से प्रारम्भ होता है। उपासकों के लिए पाँच शिक्षापदों का विधान है जो पंचशील कहलाते हैं। वे हैं—जीवहिंसा,

---

१. दी० नि० २-२०४, सं० १-२५।

२. **को उपासको** ति खत्तियादीसु यो कोचि तिसरणं गतो गहट्ठो। सरणगमनमेव हेत्थ कारणं, न जाति आदि विसेसो। वुत्तञ्हेतं "यतो सो महानाम बुद्धं शरणं गतो होति, धम्मं, संघं शरणं गतो होति। एत्तावता खो महामाम उपासको होती ति।

सा० दी० टी० भा० १ पृ० ३१६

३. कस्मा उपासको ति रतनत्तयउपासनतो, सा० दी० टी० भा० १ पृ० ३१६, सु० नि० १-२५९।

चोरी, व्यभिचार, असत्यभाषण, तथा मद्यपान नामक पाँच अकुशल कर्मों से विरत रहना। पंचशील का पालन करने वाला व्यक्ति "उपासक" कहलाता है।

उपासक शुद्ध आजीविका से अपना जीवनयापन करता है। जीविकोपार्जन के लिए मिथ्यामार्ग का परित्याग कर वह धर्मानुसार जोविकोपार्जन द्वारा जीवनयापन करता है। वह पाँच वस्तुओं के व्यापार का पूर्णतः परित्याग करता है। वे हैं—शस्त्र का व्यापार, सत्त्व (प्राणी) का व्यापार, मांस का व्यापार, मद्य का व्यापार, तथा विष का व्यापार। इन पाँच प्रकार के व्यापार से विरत होकर जीवनयापन करना 'उपासक' के लिए विहित बताया गया है। तथा ऊपर के पाँच वाणिज्यकर्म उपासक के लिए अकरणीय बतलाया है।

उपासक का जीवन व्यवहार तथा परमार्थ दोनों के प्रति सजगभाव पुरस्सृत होता है। शील विपत्ति और अपरिशुद्ध आजीविका से "उपासक" 'उपासकचाण्डाल, 'उपासकमल' तथा 'उपासकपतिकुट्ठ' हो जाता है। उनके इस पतनभाव के पांच मुख्य कारण बताये गये हैं। वे हैं—त्रिरत्न के प्रति अश्रद्धावान होना, शील का पालन न करना, कौतूहलमांगलिक होना, कर्म न करते हुए केवल लाभ की कामना करना, तथा तथागत प्रतिपादित मार्ग से अन्यत्र लाभ ढूँढ़ना। ये पाँच कर्म उपासक की विपत्ति कहे जाते हैं[१]। इसके विपरीत उपासक की पाँच सम्पत्तियों का भी उल्लेख है। वे हैं—त्रिरत्न के प्रति श्रद्धावान होना, शीलवान होना, कौतूहलमांगलिक न होना, कर्म करना, केवल लाभ की इच्छा न करना, सौगत-शासन से अन्यत्र लाभ की गवेषणा न करना। इन पाँच सम्पत्तियों से युक्त उपासक को क्रमशः उपासकरत्न, उपासकपद्म, तथा उपासकपुण्डरीक कहा गया है। इन गुणों से समुपेत उपासक ऐसी प्रतिज्ञा करता है कि मैं आज से यावत् जीवन त्रिरत्न की शरण जाता हूँ। इसे ही उपासकत्वप्रतिवेदन (उपासकत्व के लिए निवेदन) कहा गया है।

दुर्भिक्ष कथा

उस समय वेरञ्जा में महा अकाल पड़ा था। अकाल और महामारी दो ईतियों के कारण कृषि सूख चुकी थी और महामारी के कारण अनेक लोग कालकवलित हो चुके थे। वहाँ भिक्षाटन से जीवनयापन करना कठिन था। उस समय उत्तरापथ के घोड़े के सौदागर पाँच-सौ घोड़ों के साथ वेरञ्जा में ही वर्षाकाल व्यतीत कर रहे थे। अश्वशाला में उन्होंने भिक्षुओं के लिए प्रस्थ भर चावल बाँध रखा था। भिक्षु पूर्वाह्न समय पात्र चीवर ले वेरञ्जा में पिंडाचार (भिक्षाटन) के लिए प्रवेश कर, पिंड न पा, अश्वशाला में भिक्षाचार का प्रस्थ-प्रस्थ चावल पा आराम में लाकर, ओखल में कूट-कूट कर खाते थे। आयुष्मान् आनन्द उस चावल को पीसकर, भगवान को देते थे और भगवान उसी का भोजन करते थे।

भगवान ने ओखल का शब्द सुना। जानते हुए भी पूछा। हे आनन्द। क्या यह ओखल का शब्द है? तब आयुष्मान् आनन्द ने वह सब बात भगवान् को बता

दी। भगवान् ने उन्हें साधुवाद किया और कहा कि तुम जैसे सत्पुरुषों ने तो इस प्रकार जीवन यापन कर लिया पर आनेवाली जनता को शालि-मांस ओदन आदि चाहेगी।

महामोग्गल्लान का सिंहनाद

तदनन्तर महामोग्गल्लान जहाँ भगवान थे वहाँ गये। वहाँ जाकर भगवान का अभिवादन कर एक तरफ बैठ गये। और भगवान से निवेदन किया। भन्ते इस समय बेरञ्जा दो ईतियों अकाल एवं महामारी से पीड़ित है। यहाँ के लोगों को भोजन मिलना कठिन है, ऐसी अवस्था में यहाँ भिक्षाचार के द्वारा जीवनयापन करना कठिन है। हे भन्ते ! पृथ्वी के अन्दर मधुर एवं सुस्वादुरस वर्तमान है। अतः यहाँ की पृथ्वी को उलट दिया जाय। भगवान् ने कहा ऐसा करने से पृथ्वी के आश्रय से स्थित अन्य प्राणी क्या करेंगे। अतः ऐसा करना युक्त नहीं है। मोग्गल्लान ने कहा यदि ऐसा करना उचित नहीं है तो हमलोगों को भिक्षुसंघ के साथ उत्तरापथ की ओर पिण्डपात के लिए जाना चाहिए। इस प्रकार भगवान् ने ऐसा करने से मना किया और ऋद्धिबल के प्रयोग करने से रोक दिया।

आनन्द उस समय भगवान के (उपट्ठाक) सेवक थे या नहीं इसका समाधान इस प्रकार प्राप्त होता है। एक समय भगवान् बुद्ध नागसमालस्थविर के साथ मार्ग-प्रतिपन्न थे तो वहाँ दो मार्ग मिले। स्थविर ने उस मार्ग को छोड़कर दूसरे मार्ग से जाने को कहा। पर उस स्थविर ने भगवान् का चीवर पात्र वहीं रख दिया और स्वयं दूसरे मार्ग से चला गया। इसी को लेकर भगवान ने भिक्षुओं से कहा कि मैं वृद्ध हूँ। कोई-कोई भिक्षु इस मार्ग से चलो कहने पर दूसरे से जाते हैं। कोई कोई मेरा पात्र-चीवर भूमि पर रख देते हैं। मेरे लिए एक नियत उपस्थापक (परिचारक) भिक्षु खोजो। ऐसा सुनने पर भिक्षुओं को खेद हुआ। तब आयुष्मान् सारिपुत्त ने भगवान् की वन्दना कर कहा। भन्ते मैं आपकी सेवा के लिए तैयार हूँ। भगवान ने कहा "नहीं सारिपुत्र ! जिस दिशा में तूँ विहार करता है, वह दिशा मुझसे अ-शून्य होती है। तेरा धर्मोपदेश बुद्धों के धर्मोपदेश के समान है। इसलिए मैं तुझे 'उपस्थापक' नहीं बनाउँगा। इसी प्रकार महामौद्गल्यायन आदि अस्सी महाश्रावकों ने इसी प्रकार का प्रस्ताव रखा, पर भगवान् ने उनमें से किसी को 'उपस्थापक' स्वीकार नहीं किया। तब आनन्द को भिक्षुओं ने इसके लिए प्रेरित किया तो उन्होने कहा भगवान् मुझे देख रहे हैं यदि उनकी इच्छा होगी तो मैं अवश्य उनका अनुचर एवं परिचारक होना स्वीकार करूँगा।

भगवान् ने कहा—'भिक्षुओं ! आनन्द को कोई प्रेरित न करें, वह स्वयं जानकर मेरी सेवा आदि करेगा। तब भिक्षुओं ने कहा—उठो आवुस ? आनन्द ! दशबल से उपस्थाक बनने की आज्ञा लो। स्थविर आनन्द ने उठकर निवेदन किया—भन्ते ! मुझे (चार प्रतिक्षेप) अर्थात् यदि भगवान् अपने लिए मिले उत्तम

चीवर मुझे न दें, पिण्डपात न दें, एक गन्धकुटी में निवास न दें, तथा निमन्त्रण में लेकर न जायें, तो मैं भगवान् का उपस्थान करूँगा"। तो भगवान् ने कहा "आनन्द ! इनमें तूने क्या दोष देखा ?" आनन्द ने कहा भन्ते ? यदि मैं इन वस्तुओं को पाऊँगा, तो लोग कहेंगे आनन्द दशबल को मिले उत्तम चीवर पिंडपात आदि का उपभोग करता है। इन्हीं वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए तथागत की सेवा करता है। इसके साथ ही आनन्द ने पुनः भगवान् से निवेदन किया—"यदि भन्ते ! भगवान्' मेरे द्वारा स्वीकार किये निमन्त्रण में जायँ। दूसरे राष्ट्र या दूसरे जनपद से भगवान् के दर्शन को आई परिषद् को आने के समय ही भगवान् का दर्शन करा पाऊँ, जब मुझे इच्छा हो उसी समय भगवान् के पास आ जाऊँ। तथा भगवान मेरे परोक्ष में जो धर्मोपदेश करें, उसे आकर मुझे भी उपदेश देने की कृपा करें, तो मैं भगवान् की सेवा, पूजा आदि करता रहूँगा।

भगवान ने आनन्द को उपर्युक्त आठ वर दिया। इस प्रकार आठ वरों को लेकर आनन्द नियत उपस्थाक हुए। और भगवान् बुद्ध के अत्यन्त निकट रहकर सेवा आदि करते रहे। इस प्रकार आनन्द के उपस्थाक स्थान ग्रहण करने की अत्यन्त रोचक कथा प्रसङ्गतः मिलती है।[1]

उपर्युक्त प्रसङ्ग से यह ज्ञात होता है कि उस समय सभी भिक्षु अल्पेक्ष सन्तुष्ट एवं सल्लेखवृत्ति से युक्त थे। इसीलिए भगवान् ने आनन्द सहित सभी भिक्षुओं को साधुवाद दिया तथा लोभ और इच्छा पर विजय के लिए उनकी प्रशंसा की।

विनयप्रज्ञप्तियाचन कथा

एकान्त में समाधिस्थ आयुष्मान सारिपुत्र के चित्त में यह वितर्क उत्पन्न हुआ कि-किन किन बुद्धों का ब्रह्मचर्य (सम्प्रदाय) चिरस्थायी नहीं हुआ तथा किन बुद्धों का ब्रह्मचर्य चिर-स्थायी हुआ ? इस वितर्क के परिशमन के लिए संध्या समय आयुष्मान् सारिपुत्र ध्यान से उठकर जहाँ भगवान् थे वहाँ गये, अभिवादन कर एक ओर बैठ गये। और भगवान् से इसके बारे में पूछा। भगवान् ने कहा कि सारिपुत्र ! विपश्यी, शिखी, और वेस्सभू बुद्ध का ब्रह्मचर्य चिरस्थायी नहीं हो सका तथा ककुसंध, कोणागमन तथा काश्यप बुद्धों का ब्रह्मचर्य चिर-स्थायी हुआ।[2]

भगवान् के ऐसा कहने पर आयुष्मान सारिपुत्र ने इसका कारण जानना चाहा तो भगवान् ने कहा सारिपुत्र ? भगवान् विपस्सी, सिखी, तथा वेस्सभू श्रावकों को विस्तार से धर्मोपदेश करने में अल्प उत्सुक तथा निरुत्साही थे। उनके सुत्त, गेय्य, व्याकरण (व्याख्यान) गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अद्भुतधर्म, वेदल्ल थोड़े थे। उन्होंने शिक्षा-पदों (भिक्षुनियम विनय) का विधान नहीं किया था,

---

१. द्र० सा० पी० टी० भा० १, पृ० ३२०, ३२१, ३२२।

२. पाराजिक पृ० १०, स० पा० भा० १ पृ० १७४, १७५, सा० दी० टी० भाग-१ पृ० ३२८, ३२९।

प्रातिमोक्ष का उद्देश्य नहीं किया था। उन बुद्धों के अन्त होने पर, उनके बुद्ध, प्रबुद्ध श्रावकों के अन्तर्धान होने के वाद', नाना-नाम, गोत्र, जाति तथा नाना कुल से प्रव्रजित जो पिछले श्रावक थे, उन्होंने उस ब्रह्मचर्य को शीघ्र ही अन्तर्धान कर दिया। हे सारिपुत्त जिस तरह सूत में विना पिरोये नाना पुष्प तख्तेपर रखे हों, उनको हवा बिखेरती है, विध्वंस कर देती है, उसी प्रकार इन बुद्धों के अन्तर्धान होने पर, उस ब्रह्मचर्य का शीघ्र ही अन्तर्धान हो गया।[1]

इसी प्रकार हे सारिपुत्र ? चूँकि भगवान् ककुसंध, कोणागमन, तथा कस्सप श्रावकों को विस्तारपूर्वक धर्मोपदेश करने में उत्साही थे। उनके उपदेश यथा-सुत्त, गेय्य, व्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अद्‌भुतधर्म और वेदल्ल बहुत थे। उन्होंने शिक्षापद का विधान किया था। प्रातिमोक्ष का उद्देश्य किया था। इसलिए उनके अन्तर्धान होने पर, बुद्धानुबुद्ध—श्रावकों के अन्तर्धान होने पर, जो नाना नाम, गोत्र, जाति, कुल से प्रव्रजित पिछले शिष्य थे; उन्होंने उस ब्रह्मचर्य को चिर-स्थायी रखा। हे सारिपुत्र ? जिस तरह सूत में संगृहीत एवं गूँथे हुए नाना प्रकार के पुष्प हवा के प्रभाव से नहीं विखरते उसी प्रकार उन बुद्धों का ब्रह्मचर्य चिरस्थायी रहा, अन्तर्धान नहीं हुआ।[2]

भगवान् के ऐसा कहने पर आयुष्मान् सारिपुत्र ने आसन से उठ उत्तरासंग को एक कंधे पर कर हाथ जोड़कर भगवान् को ऐसा कहा भगवान् श्रावकों के लिए शिक्षा-पद (विनय) का विधान करें, प्रातिमोक्ष का उद्देश्य करें, जिससे यह ब्रह्मचर्य चिस्थायी हो[3]। भगवान् ने कहा—हे सारिपुत्र। ठहरो समयानुकूल शिक्षा-पद विधान किया जायगा। हे सारिपुत्र ! तथागत तबतक श्रावकों के लिए शिक्षापदों का विधान नहीं करते, प्रातिमोक्ष का उपदेश नहीं करते, जब तक कि संघ में कोई चित्तमल वाले धर्म उत्पन्न नहीं होते। हे सारिपुत्र ! जब यहाँ संघ में कोई चित्तमल को प्रकट करने वाले धर्म पैदा हो जाते हैं, तो उन्हीं का निवारण करने के लिए, उन्हीं के प्रतिघात के लिए शास्ता श्रावकों को शिक्षापद का विधान करते हैं, प्रातिमोक्ष का उपदेश करते हैं। अभी तो सारिपुत्र ! संघ मलरहित, दुष्परिणाम रहित कालिमा-रहित, शुद्ध सार में स्थित है। इन पाँच सौ भिक्षुओं में जो सबसे

---

१. पाराजिक पृ० १०, ११, स० पा० भा० १ पृ० १७५, १७६, सा० दी० टी० भा० १, पृ० ३२८, ३२९।

२. पाराजिक पृ० ११, १२, स० पा० पृ० १७१, १७६, सा० दी० टी० भा० १ पृ० ३३०, ३१।

३. अथ खो आयस्मा सारिपुत्तो उट्ठायासना एकंसं उत्तरसङ्गं करित्वा येन भगवा तेनञ्जलिं पणामेत्वा भगवन्तं एतदवोच—"एतस्स भगवा कालो। एतस्स, सुगतो कालो ? यं भगवा सावकानं सिक्खापदं पञ्ञापेय्य, उद्दिसेय्या पातिमोक्खं, यथयिदं ब्रह्मचरियं अद्धनियं अस्स चिरट्ठितिकं" ति। पाराजिक, पृ० १२।

पिछड़ा भिक्षु है, वह भी स्रोतापत्ति फल को प्राप्त, दुर्गति से रहित, स्थिर, और संबोधि-परायण है। अतः अभी शिक्षापद प्रज्ञापन की आवश्यकता नहीं है।

इस प्रकार भगवान् बुद्ध से आयुष्मान् सारिपुत्र ने शिक्षापद (विनय) प्रज्ञापन के लिए सर्वप्रथम याचना की, इसीलिए इसे ''विनयपञ्ञत्तियाचन कथा'' कहा गया है।

बुद्धाचिण्णकथा = बुद्ध परिपाटि या परम्परा

इस प्रकार शिक्षापद प्रज्ञापन सम्बन्धी बातों को वताकर भगवान् ने आयुष्मान् आनन्द को सम्बोधित किया—हे आनन्द! यह बुद्धों का आचार है, कि जिनके द्वारा निमन्त्रित हो वर्षावास करते हैं, उनसे मिलकर, बातचीत कर कहीं अन्यत्र चारिका के लिए जाते हैं। अतः चलकर वेरञ्ज ब्राह्मण से मिल लें। तदनन्तर भगवान् चीवर-धारण कर पात्र, चीवर ले आनन्द के साथ जहाँ वेरञ्ज ब्राह्मण का निवास था वहाँ गये। वहाँ जाकर बिछे आसन पर बैठे। तब वेरञ्ज ब्राह्मण भगवान को अभिवादन कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे वेरञ्ज ब्राह्मण को भगवान् ने कहा—'ब्राह्मण तुम से निमन्त्रित होकर, हमने वर्षा-वास सम्पन्न किया। अब तुम से मिलने आये हैं, हम जनपद-चारिका को जाना चाहते हैं। तब वेरञ्ज ब्राह्मण ने भगवान् को भिक्षुसंघ सहित भोजन के लिए निमन्त्रित किया। भगवान् ने मौनभाव से स्वीकार किया और वेरंज ब्राह्मण को धर्मोपदेश कर सन्तर्पित तथा सन्तुष्ट कर चल दिये।

वेरञ्ज ब्राह्मण ने उस रात के बीत जाने पर अपने घर में उत्तम खाद्य-भोज्य तैयार कर भगवान् को काल की सूचना दी। तव भगवान् पूर्वाह्ण समय चीवर पहन कर, पात्र, चीवर ले वेरञ्जब्राह्मण के निवास स्थान पर पहुँचे। जाकर भिक्षु-संघ सहित बिछे आसन पर बैठे। वेरञ्ज ब्राह्मण ने अपने हाथ से बुद्ध प्रमुख भिक्षु-संघ को उत्तम खाद्य-भोज्य से सन्तुष्ट किया। भोजन समाप्त कर लेने पर भगवान् को तीन चीवर से आच्छादित किया। अन्य सभी भिक्षुओं को एक एक जोड़े (धुस्से) दुशाले से आच्छादित किया। तदुपरान्त भगवान् ने वेरञ्ज ब्राह्मण को धर्मोपदेश कर आसन से उठकर चल दिये।

भगवान् बेरञ्जा में इच्छानुसार विहार कर, सोरेय्य, संकाश्य, कान्यकुब्ज होते हुए जहाँ प्रयाग-प्रतिष्ठान था वहाँ गये। प्रयाग-प्रतिष्ठान में गङ्गा नदी पारकर वाराणसी में इच्छानुसार विहार कर वैशाली की ओर चल दिये, वैशाली पहुँचकर भगवान् महावन कूटागार-शाला में विहार करते थे। समन्तपासादिका में "आचिण्णं खो पनेतं" की व्याख्याक्रम में बुद्धचारिका के महत्त्व को बतलाते हुए कहा गया है कि बुद्धों का आचार है, बुद्धों का यह व्रत है या बुद्धों की यह परिपाटि है। यह आचार दो प्रकार का है—बुद्धाचार तथा श्रावकाचार। इनमें से बुद्धाचार बुद्धों का आचार है। वर्षावास समाप्त कर जिनके द्वारा निमंत्रित हो बर्षावास करते हैं, उनसे मिलकर कहीं अन्यत्र चारिका करने के लिए जाते हैं। यही बुद्धों की आदर्श-परम्परा

है। दूसरी बात यह है कि वर्षावास समाप्त कर प्रवारणा करके लोक संग्रह तथा लोक-कल्याण के लिए जनपदों में चारिका करते हैं। इस प्रकार जनपदचारिका करते हुए महामण्डल, मज्झिममण्डल तथा अन्तिम मण्डल में से किसी एक मण्डल में चारिका करते हैं। महामण्डल नौ सौ योजन है, मध्य-मण्डल छ सौ योजन तथा अन्तिम-मण्डल तीन सौ योजन है। जब वह महामण्डल में चारिका करना चाहते हैं तो महाप्रवारणा आश्विनपूर्णिमा को कर प्रतिपदा के दिन महाभिक्षु संघ के साथ ग्राम, निगम-नगर आदि में चारिका करते हुए अन्न पान (आमिष) ग्रहण कर जन जन पर कृपा करके, धर्मंदान (धर्मोपदेश) करते हुए उनके पुण्य की वृद्धि करते हैं[1]। नौ महीने में यह चारिका सम्पन्न होती है। यदि वर्षावास अवधि में भिक्षुओं की शमथ-विपस्सना (समाधि-प्रज्ञा) अपरिपक्व (तरुण) होती है, तो महाप्रवारणा को प्रवारणा न कर, कार्तिक की पूर्णिमा को प्रवारणा कर मार्गशीर्ष के प्रतिपदा को महाभिक्षुसंघ सहित उपर्युक्तनय से मध्यमण्डल में आठ महीने में चारिका समाप्त करते हैं। और यदि वर्षावास समाप्त हो जाने पर भी विनयाकांक्षी सत्त्वों की भावना पूर्ण नहीं होती, तो उनकी भावना के परिपक्व होने के लिए मार्गशीर्ष मास भर भी वहीं वासकर, पौष मास के प्रतिपदा से महाभिक्षुसंघ-सहित उक्त नय से अन्तिम मण्डल में चारिका करते हैं जो सात महीने में सम्पन्न हाती है। इस प्रकार उन-उन मण्डलों में से जहाँ कहीं भी विचरण करते प्राणियों के दुःखों को दूर करते हुए 'सोतापत्ति' मार्ग फल आदि में प्रतिष्ठापित कराते हैं।

'चारिका' शब्द 'चर' धातु से निष्पन्न है, जिसका अर्थ चलना या विचरण करना होता है। पर यह सामान्य रूप से चलने का द्योतक नहीं है वरन् यह ऐसे विचरण का नाम है जो परहित की भावना से प्राणिमात्र के कल्याण के लिए होता है, स्वहित का त्याग तथा परहित का दृढ़ संकल्प इसका लक्ष्य होता है। यह इससे ज्ञात होता है कि भगवान् ने धर्मचक्रप्रवर्तन के अनन्तर भिक्षुओं को नाना दिशाओं में वहुजन हितार्थ, वहुजन सुखार्थ, तथा प्राणिमात्र के कल्याण के लिए विचरण करने को कहा था। "चरथ भिक्खवे चारिकं बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं" ति।

चारिका के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए आचार्य बुद्धघोष ने वतलाया है कि—भगवान् बुद्ध का सम्पूर्ण जीवन जनकल्याण के लिए था। इसलिए उनकी चारिका से जनसम्पर्क होता था तथा मनुष्य धर्मश्रवण कर प्राणातिपात, अदिन्नादान, व्यभिचार, असत्यभाषण, तथा मद्यपान से विरत हो चार रूपध्यान तथा चार अरूपध्यान की अवस्थाओं का लाभ कर चार लोकोत्तरमार्ग तथा चार लोकोत्तर-फलों का अधिगम कर सांसारिक आसक्ति से क्रमशः विरक्ति की ओर अग्रसर

---

१. स० पा० पृ० भाग० १, १८६, १८७।
आचिण्णं ति चरितं वत्तं अनुधम्मता। सं० पा० १, पृ० १८६।

हो परम सुख एवं शान्त अवस्था निर्वाण लाभ कर सके, इसी उद्देश्य से उनकी चारिका प्रवर्तित थी।

सारत्थदीपनीटीका से ज्ञात होता है कि बुद्ध की चारिका दो प्रकार की होती थी—तुरितचारिका तथा अतुरितचारिका। दूर में भी बोधनेय्यपुरुष के समीप सहसा पहुँच जाना त्वरित चारिका है। भगवान् एक क्षण में सहस्र योजन की दूरी तय कर अतिशीघ्र उन विनेय्यजनों के निकट पहुँच जाते थे और उन्हें अमृतोपम धर्मोपदेश से संतुष्ट करते थे। इसे 'तुरितचारिका' या त्वरितचारिका कहा गया है। तथा ग्राम नगर निगमों में विचरण कर जनसमूह को तृप्त करते हुए प्रतिदिन एक योजन या अर्द्धयोजन तक चलते थे[१] और मार्गस्थ श्रद्धालु जनों के द्वारा पिण्डपात ग्रहण करते हुए उनमें पुण्यवपन करते थे। इसे अतुरितचारिका कहते हैं। "यं पन गामनिगमनगरपटिपाटिया देवसिकंयोजनंअड्ढयोजनवसेन पिण्डपात—चरियादीहि लोकं अनुगण्हन्तस्स गमनं, अयं **अतुरितचरिका** नाम। इस प्रकार सारत्थदीपनीटीका के इस प्रथम भाग के विषयों पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। इन सब विषयों पर अट्ठकथा में विस्तार पूर्वक विचार किया गया है और सारत्थदीपनीटीका में इसमें आगत प्रत्येक पदों का विस्तार से व्याख्या की गई है, उन सब का संक्षेप में भी विवरण प्रस्तुत करना कठिन है। अतः इस भूमिका में सारत्थदीपनीटीका में वर्णित विषयों का सामान्य परिचय मात्र दिया जा सका है।

लेखक एवं रचनाकाल

सारत्थदीपनीटीका समन्तपासादिका (विनयट्ठकथा) की टीका है। यह भदन्त सारिपुत्र महास्थविर को रचना है। भदन्त सारिपुत्र सिंहल के राजा महापराक्रमबाहु के गुरू थे। ऐसी अनुश्रुति है कि इन्होंने सभी अट्ठकथाओं पर टीका लिखी। पर इस समय सभी टीकाएँ उपलब्ध नहीं हैं। भदन्त सारिपुत्र के गुरु भदन्त कस्सप बड़े ही शीलसम्पन्न तथा त्यागी थे। इनके सम्बन्ध में 'सारत्थदोपनीटीका' के 'गन्थारम्भ कथा' में भदन्त सारिपुत्र ने उद्‌गार व्यक्त किया है[२]—

सिंहल के राजा पराक्रमबाहु ने जिनकी सहायता लेकर सम्प्रदायों के भेद को मिटा कर धर्म का संशोधन किया; जिन्होंने ताम्रपर्णी द्वीप में बौद्धशासन को प्रतिष्ठित किया है, जो धर्मरूपी आकाश में चन्द्रमण्डल के समान हैं, जो प्रतिपत्ति के आधीन हैं तथा सदा ही अरण्यवासी हैं; जो संघ के पिता हैं, तथा 'विनयपिटक' में सुविशारद

१. चारिका

२. निस्साय सोहळिन्देन, यं परक्कमबाहुना।
कत्वानिकायसामग्गिं, सासनं सुविसोधितं।
कस्सपं तं महाथेरं, संघस्स परिणायकं।
दीपस्मिं तम्बपण्णिम्हि, सासनोदयकारकं॥ सा० दी० टी० भा० १ पृ० ३

हैं; जिनके आश्रय में रहते हुए मुझे धर्मसम्बन्धी बुद्धि की प्राप्ति हुई, ऐसे महास्थविर काश्यप की मैं बन्दना करता हूँ।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है कि भदन्त सारिपुत्र संस्कृत के पण्डित थे और प्रमाणशास्त्र का पण्डित होने के कारण दिङ्नाग तथा धर्मकीर्ति के ग्रन्थों से भी परिचित थे। चान्द्र व्याकरण का उस समय सिंहल में भी प्रचार था और इसकी व्याख्या में भी 'सारिपुत्र' ने अपना योगदान दिया तथा इस पर लिखी गयी 'रत्नमतिपञ्जिका' की पञ्जिकालंकार नामक टीका प्रस्तुत की। यह पुस्तक सम्प्रति अनुपलब्ध है। 'पदावतार' के नाम से एक संस्कृत व्याकरण का संक्षिप्त ग्रन्थ भी इनके द्वारा लिखा गया था। विनय पर इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पालिमुत्तकविनय-विनिच्छय' या महाविनयसंग्रह-प्रकरण है[1]।

'सारिपुत्र' के शिष्य 'सुमंगल महासामी' ने अपने गुरु के सम्बन्ध में 'विभा-विनी टीका' के अन्त में लिखा है—

"सम्पन्नशील, दम एवं संयम द्वारा सन्तोषित, गुणाकार एवं जितेन्द्रिय भिक्षुओं के समूह द्वारा सम्मानित, बुद्ध वचन के पण्डित तथा अनेक ग्रन्थों की रचना करने के कारण विद्वानों द्वारा सम्मानयुक्त आचार्य-पदवी-प्राप्त, 'विनयट्ठकथा' आदि की 'संवण्णना' जिसके प्रातिभ ज्ञान प्रताप को सूचित करती है, जो अपने नाम में विद्यमान साररूपी गुणों के आकर हैं[2]।

विभाविनी टीका की निगमन गाथा में सारिपुत्त की कृतियों के सम्बन्ध में कहा गया है कि—

"नगरों के अधिराज रम्य 'पुलस्तिनगर' (पोलन्नरुव) में महाभुज राजा पराक्रमबाहु द्वारा वनवाये हुए रमणीय श्रेष्ठ प्रासादों तथा उपवनों से अभिराम 'जेतवन विहार' में सारिपुत्त निवास करते हैं। सर्वत्र फैले हुए यशवाले, परिशुद्ध कुल में उत्पन्न, तर्क तथा आगमादि शास्त्र में कुशल, यतीश्वर, गुण से महान, 'सारी' के पुत्त, यति सारिपुत्त ने,' योगियों के उपकार के लिए' विनयसंग्रह'

---

१. पा० सा० इ०, राहुल सांकृत्यायन, पृ० २०३

२. पटिपत्तिपराधीनं, सदा रञ्ञनिवासिनं।
पाकटं गगने चन्द-मण्डलं विय सासने॥
संघस्स पितरं वन्दे, विनये सुविसारदं।
यं निस्साय वसन्तो हं, वुद्धिप्पत्तो स्मि सासने॥ सा० दी० टी० भा० १ पृ० ३

३. रम्मे पुलत्तिनगरे नगराधिराजे,
रञ्ञो परक्कमभुजेन महाभुजेन।
कारोपिते वसति जेतवने विहारे,
यो रम्महम्मिय वरूपवनाभिरामे॥

की रचना की और इन्हीं के द्वारा इसकी 'लीनत्थपदवण्णना' नामक टीका रची गयी। इन्होंने अरण्यवासी भिक्षुओं के लिए 'विशुद्धपथसंग्रह' तथा कर्मस्थानिक भिक्षुओं के लिए 'कम्मट्ठानसंग्रह' का निर्माण किया। चन्द्रगोमी के अभिधान पर जो रमणीय 'पञ्जिका' थी, उस पर इन्होंने 'अलंकार' नामक व्याख्या प्रस्तुत की। श्रोताओं में प्रसन्नता उत्पन्न करने के लिए तथा विद्वानों के हित के लिए इन्होंने अत्यन्त मूल्यवान् 'सम्पसादनी' व्याख्या लिखी। पवित्र तथा शुद्ध पदक्रम से' 'विनयट्ठकथा' की भी विनयज्ञों द्वारा प्रशंसित रम्य टीका की रचना की। अङ्गुत्तरनिकायट्ठकथा' की भी स्पष्ट तथा सुसंस्कृत टीका भिक्षुओं को पटुभाव में प्रतिष्ठित करने के लिए इनके द्वारा निर्मित की गयी। इन्होंने, मङ्गलसुत्त' के अट्ठकथा की सुन्दर टीका प्रस्तुत की।

'अभिधम्मत्थसंगहो' में उत्पन्न होने वाली शंकाओं को दूर करने के लिए तथा भिक्षुओं के लिए यह ग्रन्थ सिंहली भाषा में उनके द्वारा लिखा गया। वहीं पर 'सारिपुत्त' के सम्बन्ध में यह कहा गया है कि—

"जिन 'सारिपुत्त' को चान्द्र व्याकरण में चन्द्रगोमिन् के समान, पाणिनीय में तीक्ष्ण बुद्धिवाले पाणिनि के समान तथा सम्पूर्ण तर्कशास्त्र में तीव्र-बुद्धि-जनकर्त्ता के समान तत्त्व स्वरूप मानते हैं; कवित्व में जिनको कविजनों के हृदय को आनन्द देनेवाले कालिदास के समान मानते हैं, उनकी यह रचना लोगों को अर्थसिद्ध प्रदान करे।"

भदन्त सारिपुत्त के विषय में यह भी कहा गया है कि इन्होंने सिंहल में प्रचलित (महाविहारीय, अभयगिरिक, तथा जैतवनीय) सम्प्रदाओं में एकता स्थापित की। उस समय ये 'संघराज' थे।

पालि प्रोपर नेम के अनुसार भदन्त सारिपुत्त सिलोन के राजा पराक्रमबाहु प्रथम के समय एक भिक्षु थे। उनका नाम सागरमति था। राजा ने उनके लिए विशेष आवास का निर्माण कराया था जो पुलस्त्यपुर में जेतवनाराम के निकट था। उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की, उनमें से विनयसंग्रह या विनयविनिच्छय, जो विनय का संक्षेप है, तथा सारत्थदीपनी टीका जो समन्तपासादिका की टीका हैं, सारत्थमञ्जूषा जो अट्ठसालिनी की टीका है, पपञ्चसूदनी (अंगुत्तरअट्ठकथा) की टीका

---

१. सम्पन्नसील-दम संयमतोसितेहि,
सम्मानितो वसिगणेहि गुणाकरेहि।
पत्तो मुनिन्दवचनादिसु नेकगन्थ-
जातेसु चाचरियतं महितं विदूहि।

२. ञाणानुभावमिह यस्स च सूचयन्ती,
संवण्णना च विनयट्ठकथादिकानं।
सारत्थदीपनिमुखा मधुरत्थसार,
सन्दीपनेन सुजनं परितोसयन्ती॥

लीनत्थप्पकासिनी, आदि प्रसिद्ध है। भदन्त सारिपुत्र के अनेक प्रतिभाशाली शिष्य थे। जिन्होंने टीका ग्रन्थों की रचना में सहायता की। उनके शिष्यों में प्रधान थे—संघरक्खित, बुद्धभाग, वाचिस्सर सुमंगलसामी, सद्धम्मजोतिपाल या छपद; धम्मकित्ति, बुद्धरक्खित और मेघंकर। सारिपुत्र संस्कृत के भी पण्डित थे, इन्होंने चन्दगोमिन व्याकरण पंजिकासार या रतनमतिपंजिका टीका की रचना की थी।

उपर्युक्त सन्दर्भों से यह ज्ञात होता है कि भदन्त सारिपुत्र पराक्रमबाहु प्रथम के काल में वर्तामान थे और उसी समय लंका में एक बौद्ध सभा (संगीति) हुई। इस सभा का उद्देश्य अट्ठकथाओं पर मागधी (पालि) भाषा में टीकाएँ लिखना था। इस सभा के संयोजक उदुम्बरगिरि-विहार के निवासी प्रसिद्ध सिंहली स्थविर महाकस्सप थे, जो विनय के एक महान् आचार्य थे और जिन्होंने अभिधम्मत्थसंगह पर एक 'पोराण-टीका' लिखी थी। इस सभा के प्रयत्नों के फलस्वरूप बुद्धघोष की अट्ठकथाओं पर पालि-भाषा में टीकाएँ लिखी गई, जिनमें से केवल 'सारत्त्थदीपनी टीका' आज उपलब्ध है। यह तत्कालीन सिंहली भिक्षु सारिपुत्र की रचना है। इनके अन्य रचनाओं में लीनत्थप्पकासनी-बुद्धघोषकृत मज्झिम-निकाय अट्ठकथा की टीका। विनयसंग्रह' इसे ही पालिपुत्तक-विनयसंग्रह, तथा सारत्थमंजूषा, बुद्धघोष कृत अंगुत्तरनिकाय की अट्ठकथा की टीका आदि प्रसिद्ध है।[४]

काल—लंका के राजा पराक्रमबाहु प्रथम (११५३-११८६ ई०) का राज्यकाल पालि साहित्य के विकास के लिए गौरवपूर्ण माना जाता है। इसी समय पालि अट्ठ-कथाओं के ऊपर टीकाएँ लिखने की परम्परा चल पड़ी जो उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी तक अप्रतिहत रूप से चलती रही। इसी समय अनेक टीका ग्रन्थों की रचना हुई जिनमें से सारत्त्थदीपनीटीका' भी एक है। अतः काल की दृष्टि से इस ग्रन्थ का रचना काल ११५३-११८६ ई० के बीच माना गया है। गन्थारम्भ कथा, गन्धवंस तथा अभिधम्मत्थसंगहो की विभाविनी टीका की निगमन गाथा आदि से यह स्पष्ट होता है लंकाधिराज पराक्रमबाहु प्रथम के संरक्षकत्व में बौद्ध संगीति बुलाई गई जिसमें इन टीका ग्रन्थों का प्रणयन हुआ।[५]

---

१. तस्सानुकम्पवलम्बिय सारिपुत्त,
थेरस्स थामगतसारगुणाकरस्स।
यो नेकगन्थविसयं पटुतं अलत्थं,
तस्सेस ञाणविभवो विभवेकहेतु॥

२. सोहमेतस्स संसुद्धि वायमस्सानुभावतो।
अद्धा सासनदायादो हेस्सं मेत्तेय्यसत्थुनो॥

३. जोतयन्ति तदा तस्स सासनं सुद्धमानसं।
पस्सेय्यं सक्करेय्यञ्च गरुं मे सारिसम्भवं।

४. स० सं० पृ० ३७, ३८।

५. द्र० पालि साहित्य का इतिहास, म० पं० राहुल सांकृत्ययन २०२, ३०३। डॉ० भरतसिंह उपाध्याय पृ० ५६९, स० सं० पृ० ३७, ३८।

प्रस्तुत संस्करण

प्रस्तुत ग्रन्थ विनयट्ठकथा समन्तपासादिका की प्राचीनतम टीका है। यह भदन्त सारिपुत्त की रचना हैं। इन्होंने इस टीका में समन्तपासादिका में आगत तथ्यों का अतिगम्भीर विश्लेषण किया है। विनय के गम्भीर और गूढ़ विषयों का सरल एवं सुबोध व्याख्या की है। साथ ही परम्परागत अर्थों को भी उद्घाटित किया है। इससे बौद्ध आचार (विनय) के गम्भीर और निगूढ़ विषयों को समझने में अत्यन्त सहायता मिलती है। ऐसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का आजतक किसी भी भारतीय लिपि में प्रकाशित न होना पालि एवं बौद्धविद्या के अध्येताओ के लिए कष्ट का विषय था। यह प्रसन्नता की बात है कि सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा उदारतापूर्ण दिये गये अनुदान से इस ग्रन्थ के प्रथम भाग का सर्वप्रथम देवनागरी लिपि में सम्पादित संस्करण विद्वज्जनों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है।

सारत्थदीपनी टीका, प्रथम भाग में निदानकथा से लेकर बुद्धाचिण्णकथा तक के विषयों का ही विवेचन किया गया है। इसके शेष दो भागों का प्रकाशन प्रगतिक्रम में है शीघ्र ही इनके भी प्रकाशित हो जाने की आशा है।

इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि तैयार करने में बर्मी संस्करण जों बुद्धाब्द २५०४ तदनुसार १९६० ई० बुद्धसासन समिति, बर्मा से प्रकाशित है के पाठ को आधार मानकर सहायता ली गई है तथा सिंहली संस्करण जो विद्याभूषण प्रेस, कोलम्बो से १९१४ ई० में प्रकाशित है से तुलनात्मक अभिवाचन करने पर जो पाठभेद दृष्टिगोचर हुए हैं, वे पादटिप्पण में उद्धृत कर दिये गये हैं। ग्रन्थ में जो अनेक ग्रन्थों के उद्धरण हैं, उनका भी यथासम्भव स्थलनिर्देश पादटिप्पण में उल्लिखित हैं। इस तरह शुद्ध संस्करण प्रकाशित हो इसका प्रयास किया गया है। कुछ त्रुटियों की सम्भावना रह गई है, इसके लिए विद्वज्जन से क्षमाप्रार्थी हूँ।

इसके सम्पादन में समालोचनात्मक सम्पादनविधि का अनुगमन किया गया है। ग्रन्थ को सहजतः सुबोध्य बनाने के लिए विषयानुसार शीर्षक, अनुशीर्षक आदि दिये गये हैं। 'समन्तपासादिका' के व्याखेय्य पदों को कृष्णाक्षरों में तथा पिटकों के उदाहृत अंशों को युग्म चिह्नों के अन्तर्गत रखा गया है। सारत्थदीपनी टीका का अध्ययन करते हुए पाठक का मूलग्रन्थ से सम्बन्ध बना रहे, इसके लिए मूलग्रन्थ का पृष्ठ प्रसङ्ग अनुच्छेद क्रमांक अव्यवच्छिन्न रूप से निर्दिष्ट है। साथ ही पृष्ठपार्श्व में बर्मी के छट्ठसंगायन संस्करण की पृष्ठसंख्याओं का भी संकेत किया गया है। पृष्ठ के अधोभाग में आवश्यक टिप्पणियाँ तथा ग्रन्थ संकेतों का समावेश है। ग्रन्थ में सहजतः प्रवेश के लिए इसकी कुछ सामग्रियों के आधार पर प्रारम्भ में आलोचनात्मक भूमिका प्रस्तुत की गई है। अन्त में प्रकृत ग्रन्थ में प्रयुक्त शब्दों की अनुक्रमणिका दी गई है।

'सारत्थदीपनी टीका' प्रथमभाग के देवनागरी लिपि में सर्वप्रथम प्रकाशन के इस पुनीत अवसर पर अपने गुरुजनों एवं कल्याणमित्रों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना

मेरा पावन कर्त्तव्य है। इस दिशा में सर्वप्रथम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिसने संस्कृत-संस्कृति संरक्षण की प्राचीन परम्परा को अव्यवच्छिन्न रूप से अक्षुण्य बनाये रखते हुए इस ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए यथेष्ट अनुदान देकर मूलभूत उपक्रम प्रदान किया है। पू० कुलपति प्रो० बी० वेङ्कटाचलम् जी के प्रति मैं श्रद्धा एवं भक्ति से विनत हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन की स्वीकृति देकर मुझे उत्साहित किया है। परम श्रद्धेय पं० विद्यानिवास मिश्र कुलपति सं० सं० वि० वि०, वाराणसी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने ग्रन्थ के प्रारम्भ में दो शब्द लिखकर तथा प्रकाशन में शीघ्रता लाने की प्रेरणा देकर मुझे अनुगृहीत किया है।

परमपूज्य गुरुवर डॉ० महेश तिवारी, आचार्य, बौद्धविद्या विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रारम्भ से ही पालि एवं बौद्या के क्षेत्र में प्रवेश कराकर तद्विषयक निगूढ़ तत्त्वों को सिखाने की कृपा की है, तथा ग्रन्थ सम्पादन में मार्ग-निर्देश कर मुझे प्रोत्साहित किया है। डॉ० अनुकूल चन्द्र बनर्जी (पू० अध्यक्ष, पालि विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय), स्वामी द्वारिकादास शास्त्री (अध्यक्ष, बौद्ध भारती, वाराणसी), प्रो० लक्ष्मीनारायण तिवारी (अध्यक्ष, श्रमणविद्यासंकाय, सं० सं० वि० वि०, वाराणसी), प्रो० रामशंकर त्रिपाठी, प्रो० गोकुलचन्द्र जैन, डॉ० फूलचन्द्र जैन प्रेमी आदि विशेषज्ञ विद्वज्जनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके सत्परामर्श से यह कार्य सम्पन्न करने में सहायता मिली है। डॉ० ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन' (अध्यक्ष, पालि एवं प्राकृत विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया), डॉ० कोमलचन्द्र जैन, डॉ० हरिशंकर शुक्ल काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, डॉ० छोटेलाल त्रिपाठी साहित्य विभाग, डॉ० हरप्रसाद दीक्षित, प्राध्यापक, पालि विभाग ने अपने अमूल्य सुझाव देकर इस कार्य में सहायता की है, मैं उन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। कल्याणमित्र पं० श्रीकान्त पाण्डेय 'उपाचार्य' व्याकरण विभाग, आचार्य सर्वेश्वर राजहंस 'न्याय विभाग' ने इस ग्रन्थ के सम्पादन में अनेक सुझावों से मुझे उपकृत किया है, मैं इन सब विद्वज्जनों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में प्रकाशनाधिकारी पं० हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठी जी का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है, मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के तथा श्रमणविद्यासंकाय के उन समस्त विद्वज्जनों का आभारी हूँ, जिन्होंने किसी भी प्रकार की सहायता प्रदान की है।

अन्त में रत्ना प्रिन्टिंग वर्क्स वाराणसी को साधुवाद देता हूँ, जिनके पूर्ण सहयोग, सद्व्यवहार तथा जागरूकता के फलस्वरूप ही ग्रन्थ का यथा समय प्रकाशन हो सका है।

ब्रह्मदेवनारायण शर्मा
२४/४/९१

सारत्थदीपनी टीकाय

सूची

सारत्थदीपनीटीकाय पठमभागे
मातिका निट्ठिता।

समन्तपासादिकाय विनयट्ठकथाय अत्थवण्णनाभूता
भदन्तसारिपुत्तत्थेरेन कता

सारत्थदीपनी टीका

(पठमो भागो)

निदानकथा

सिरिमता अम्हाकं बुद्धेन भगवता अरहता सम्मासम्बुद्धेन सकललोकपत्थटमहाकरुणासिनेहसिनिद्धहदयेन सब्बत्थ अप्पटिहतसब्बञ्ञुतानावरणादिञाणोभाससमुज्जलितेन सनरामरलोकगुरुना सदेवकस्स लोकस्स अत्थाय हिताय सुखाय धम्मो च विनयो च देसितो पञ्ञत्तो, सो परियत्तिपटिपत्तिपटिवेधवसेन विभत्तेसु तीसु सद्धम्मेसु परियत्तिसद्धम्मो नाम। तदेव च सासनट्ठितिया पमाणं, सतियेव हि तस्मिं इतरे उप्पज्जन्ति, नासति, वुत्तञ्हेतं **अंगुत्तरट्ठकथायं** —

"सुत्तन्तेसु असन्तेसु, पमुट्ठे विनयम्हि च।
तमो भविस्सति लोको, सूरिये अत्थङ्गते यथा॥
सुत्तन्ते रक्खिते सन्ते, पटिपत्ति होति रक्खिता।
पटिपत्तियं ठितो धीरो, योगक्खेमा न धंसती"ति॥

तेनेव च सद्धम्मचिरट्ठितिकामा थेरवरा महाकस्सपादयो परियत्तिसद्धम्मसङ्खातं तेपेटिकं बुद्धवचनं संगीतिमारोपेत्वा बुद्धसासनं संरक्खिंसु। तंकालिका च राजानो सद्धम्माभिवुद्धिकामा तेसं संगीतिकारानमनुबलप्पदानेन सहायत्तमुपागमुं।

तथा हि चतूहाधिकतिमासपरिनिब्बुते भगवति महाकस्सपत्थेरप्पमुखेहि पञ्चहि अरहन्तसतेहि राजगहे **पठमा धम्मसङ्गीति** कता रञ्ञो मागधस्स अजातसत्तुनो विसेसानुग्गहमादाय।

वस्ससतपरिनिब्बुते च भगवति महायसत्थेरप्पमुखेहि सत्तहि अरहन्तसतेहि वेसालियं **दुतिया धम्मसङ्गीति** कता, तदा च कालासोको महीपति तेसं सहायत्तमुपागतो।

तथागतपरिनिब्बानतो पन द्विन्नं वस्ससतानमुपरि पञ्चत्तिंसतिमेवस्से महामोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरप्पमुखेहि अरहन्तसहस्सेहि पाटलिपुत्ते **ततिया धम्मसङ्गीति** कता सकललोकपत्थटयसस्स धम्मासोकस्स भूपतिनो निरतिसयानुग्गहं लद्धान।

सम्मासबुद्धपरिनिब्बुतितो पन चतुन्नं वस्ससतानमुपरि पण्णासे वस्से लङ्कादीपे B. ख
वट्टगामणिराजिनो काले मातुलजनपदे आलोकलेणे **चतुत्थो धम्मसङ्गीति** कता पञ्चहि अरहन्तसतेहि महाधम्मरक्खितत्थेरप्पमुखेहि, या लोके "पोत्थकारोपनसङ्गीती"ति पाकटा।

बुद्धवस्से पन चतुस्सताधिकद्विसहस्सानमुपरि पन्नरसमसङ्ख्ये सम्पत्ते इमस्मिं पि मरम्मरट्ठे '**भिङ्गवुङ्ग**' नामस्स महाधम्मराजिनो काले मन्तले इति पाकटे रतनापुञ्जनगरे **पञ्चमी धम्मसङ्गीति** कता चतुसताधिकद्विसहस्सत्थेरेहि दक्खिणारामवासी

तिपिटकधर भदन्त जागरत्थेरप्पमुखेहि तस्सेव रञ्ञो अनवसेसानुग्गहमादाय, या लोके "सेलक्खरारोपनसङ्गीती"ति वुच्चति।

इत्थं सुदं बुद्धस्स भगवतो सासनं इद्धञ्चेव होति फीतञ्च वित्थारिकं बाहुजञ्ञं पुथुभूतं यावज्जतना।

चिरकालतो पनेतं बुद्धवचनं लेखपरम्पराय चेव मुद्दणपरम्पराय च अनेकक्खत्तुं परिवत्तियाभतं न सक्का दानि वत्तुं "पठमदुतियततियादिसङ्गीतिमारोपिताकारेनेव सब्बसो परिसुद्धं ति", अञ्ञदत्थु पनाधुनिकपोत्थकेसु संविज्जमानेहि केहिचि पमाद-लेखादिसञ्जातखलिताधिकपरिभट्ठपाठेहि मलीनमेवेतं, तथा हि नानादेसियपोत्थकेसु अञ्ञमञ्ञं संसन्दियमानेसु अनेका विसदिसपाठा दिस्सन्ति।

ततोयेव च बुद्धवचनस्स सुपरिसुद्धभावकामा महाथेरा ससत्थन्तरपिटकत्तयकोविदा धम्मविनयं वाचेन्तायेव ते खलिताधिकपरिभट्ठपाठे दिस्वा एवं समचिन्तेसुं कथेसुं च—

"अद्वयवादिनो सुपरिसुद्धवचनस्स तस्स भगवतो पावचनं अद्वयं सुपरिसुद्धं निम्मलमेवस्स, इमेसु पन पावचनपोत्थकेसु अञ्ञमञ्ञं विसदिसा चेव अपरिसुद्धा च पाठा दिस्सन्ति, निस्संसयं खो अयमेव मूलपाठो, यो नेसं युत्तिसम्पन्नो, तदञ्ञो पन पमादलेखपाठोयेव, तादिसा च दिस्सन्ति आधुनिकपावचनपोत्थकेसु किस्मिञ्चि किस्मिञ्चि ठाने।

कामञ्चेतेदानि न ताव बहुतरा, याव यथाभूतं पाळिया अत्थं पटिसेधेय्युं,
B. ग एतरहि पन असोधियमाना ते गच्छन्ते गच्छन्ते काले बहुतरा बहुतरा भवेय्युं, तंकालिका च पच्छिमा जना ते सोधेतुं असमत्था यथाधिप्पेतं पाळिया अत्थं न सम्मा जानेय्युं, एवमेते सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तेय्युं।

वुत्तं हेतं **अङ्गुत्तरनिकाये—**

"द्वेमे भिक्खवे धम्मा सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तन्ति, कतमे द्वे, दुन्निक्खित्तं च पदब्यञ्जनं अत्थो च दुन्नीतो, दुन्निक्खित्तस्स भिक्खवे पदब्यञ्जनस्स अत्थो पि दुन्नयो होति, इमे खो भिक्खवे द्वे धम्मा सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तन्ती"ति।

यंनून मयं ते सोधेत्वा निम्मलं परिसुद्धं बुद्धवचनं सम्पतिट्ठापेय्याम, तदस्स सद्धम्मचिरट्ठितिया बहुजनहिताय बहुजनसुखाय च, तं पन न सुकरं सम्पादेतुं अञ्ञत्र धम्मिकराजूनमनुग्गहेना"ति।

सा पनायं कथा पत्थटा साधुजनपरम्पराय, सुता च **ञोनु** नामधेय्यग्गमहा-मच्चप्पमुखेहि मरम्मरट्ठिस्सरेहि, सुत्वान ते एवं समचिन्तेसुं सम्मन्तयिंसु च "न खो पनेतं अम्हाकं पतिरूपं, ये मयं पुब्बकेहि धम्मिकेहि धम्मराजूहि समनुग्गहितस्स बुद्धसासनस्स परिहानिकारणं पस्समानायेव अज्झुपेक्खित्वा अप्पोस्सुक्का विहरेय्याम,

यंनून मयं सासनोपकारुपाये सम्पादेत्वा विसेसतो च आधुनिकपावचनपोत्थकेसु दिस्समाने संसयट्ठानीये पमादलेखपाठे संसोधेतुकामानं महाथेरानं अज्झासयं परिपूरेत्वा बुद्धसासनं अनुग्गण्हेय्यामा''ति, अथ ते सब्बेपि सासनानुग्गहाय कतसन्निट्ठाना अहेसुं।

अनुग्गहितुकामेहिपि च तेहि न सक्का आणाय कातुं विना महाजनच्छन्द-सञ्जातोपदेसेन, महाजनप्पतिनिधिभूता हि एतरहि मरम्मिका राजानो, उपदेसो च सन्थागारसमितियं महाजनप्पतिनिधिभूतानं मतिसजीवानं छन्देनेव समुप्पज्जति, तस्मा बुद्धसासनानुग्गहाय सन्थागारसमितियं एकं धम्मुपदेसं पञ्ञापेत्वा **बुद्धसासनसमिति** नाम महासमिति समुट्ठापिता। तस्सा खो पन समितिया सभापति होति सतोसिरीसु-धम्मोपाधिधारी **छाओत्वोन्वयो** महासेट्ठि, उपसभापति पन सतोसिरीसुधम्मोपाधि-धारीयेव **उतिमउ**व्हयो पधानड्ढविनिच्छयमन्दिरम्हि महाक्खदस्साधिपति, सब्बकम्म-विधायको पन हितधरो सतोमहासरेचेञ्ञसूपाधिको **उख्यानथोन**व्हयो पधानड्ढ-विनिच्छयमन्दिरम्हि महाक्खदस्सो, भण्डुप्पादको पन रट्ठिस्सरानं पतिनिधिभूतो **उविन्** नामधेय्यो सासनट्ठानिकमहामत्तो। B. घ

अथ ते बुद्धसासनसमितिका ''यायेव खो पनत्थाय समुट्ठापितायं समिति, तदत्थमिदानि विसेसतो काहामा''ति मरम्मरट्ठेभिपाकटगुणसमुदयसमुदिते तत्थ-तत्थ पधाननायकभूते परोपण्णासमहाथेरे दीघदस्सिनो निमन्तिय एवमारोचेसुं ''अयं भन्ते अम्हाकं बुद्धसासनमहासमिति बुद्धसासनानुग्गहत्थायेव रट्ठिस्सरानं धम्मुपदेसेन समुट्ठापिता, सचेदानि भन्ते पुब्बे विय धम्मसङ्गीतिं कत्वा सासनं पग्गण्हितुं युज्जेय्य, महाथेरा च तथा कातुमिच्छेय्युं, विस्सत्थाव भन्ते करोन्तु, मयं तत्थ कायञाणपच्चय-बलेहि निरवसेसं ब्यावटा भविस्साम''ति।

अथ खो ते महाथेरा ''धम्मसङ्गीतिं करिस्सामा''ति कतसन्निट्ठाना एवं पतिवेदेसुं ''कत्तब्बायेवेसा धम्मसङ्गीति, नेसा न कत्तब्बा, तस्मा मयं दानि पिटक-पोत्थकानि पञ्चमसङ्गीतिसिलालेखाय समानेत्वा तानियेव सरीरं कत्वा पाळिसंसोधन-पुब्बङ्गमं धम्मसङ्गीतिं करिस्साम, याय आधुनिकपोत्थकेसु परम्परापरिवत्तनवसेन सञ्जाता पमादलेखपाठा च निराकरीयिस्सन्ति, विसोधितञ्च सुपरिसुद्धं पावचनमूलं लभित्वा तं मुद्दापेत्वा सकललोके नानारट्ठेसु नानादेसेसु ब्यापनवसेन बुद्धसासनस्स चिरट्ठिति च साधियिस्सति, सब्बे च थेरवादिका रट्ठा मरम्मरट्ठसहिता एकतो हुत्वा बुद्धसासनं अभूतपुब्बपग्गहेन पग्गण्हितुं लभिस्सन्ति, सा च पुरिमिका पञ्च सङ्गीतियो उपनिधाय **छट्ठसङ्गीति** नाम भविस्सति, तञ्च सब्बं भविस्सति बहुजनहिताय बहुजन-सुखाय अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं। बहूनि पनेत्थ आवस्सककिच्चानि पटिकच्चेव समादपेतब्बानि तुम्हाकमायत्तानि, तस्मा सङ्गीतिकालववत्थानादिकिच्चं तुम्हाकं येव भारो होतू''ति।

अथ ते बुद्धसासनसमितिका सासनपालकानं महाथेरानं छन्दञ्च रुचिञ्च समादाय ओवादञ्च सिरसा सम्पटिच्छित्वा थेरानं चेव अत्तनो च कत्तब्बकिच्चानं परिनिट्ठानसमयं सल्लक्खेत्वा ''अयं छट्ठसङ्गीति सम्मासम्बुद्धपरिनिब्बानतो चतुस्स-

B. ङ ताधिकानं द्विन्नं वस्ससहस्सानमुपरि अट्ठनवुतिमे वस्से वेसाखपुण्णमितो पट्ठाय आरभितब्बा, द्वे च वस्सानि कत्तब्बा, पञ्चन्नं च सासनवस्ससहस्सानमुपड्ढवस्से वेसाखपुण्णमियंयेव परिनिट्ठापेतब्बा"ति सङ्गीतिकालं ववत्थपेसुं।

ततो पट्ठाय च ते पुनप्पुनं सन्निपतित्वा सम्मन्तयित्वा सङ्गीतिया पुब्बकिच्चेसु निरन्तरं ब्यवटा होन्ति, "महन्तं खो जिनसासनं महतियायेवेतं पूजाय पूजनीयं" ति मन्त्वा तेहि कारापितानि महन्तमहन्तानि सासनमन्दिरानि, तत्थ सङ्गीतिं कुरुमानस्स भिक्खुसंघस्स सुखसन्निसज्जत्थं सन्निपातट्ठानभूतं महन्तं सङ्गीतिमन्दिरं **रंगून** नाम राजधानियं **सिरीमङ्गल**तथले **कम्भाये** (लोकसाम) नामकस्स चेतियस्स आसन्ने सेलपब्बतगुहावेसेन कारापितं तिभूमकं पायसो सिलाइट्ठकायोमयं, एवं महन्तम्पेतं एकसंवच्छरेनेव परिनिट्ठापितं इद्धिया मञ्ञे निम्मितं, तञ्च बहि ठत्वा अपेक्खतं सयंजातसेलपब्बतो विय दिस्सति, अन्तो पविसित्वा ओलोकयतं पन ओलोकितोलोकितट्ठानतो दस्सनीयं पासादिकं रमणीयं अतित्तिकरमेव हुत्वा देवविमानमिव खायति। तस्स पनाविदूरे अड्ढतेय्यानं सङ्गीतिकारभिक्खुसहस्सानं निवासप्पहोनका चत्तारो इट्ठकमया महापासादा चेव इट्ठकमयायेव भोजनमहासाला च महासीमापासादादयो च मुद्दणयन्तसाला च तथेव कारापिता।

महाथेरापि च "सङ्गीतिकिच्चं नाम थेराधेय्यं, थेरानं ओवादेनेव कत्तब्बं, न विना तेन, तस्मा भिक्खुसंघस्स चेव उपासकानञ्च सब्बम्पि सङ्गीतिपटिबद्धमोवादं दातुं भवितब्बमेत्थ ओवाददायकसंघसभायपी"ति मरम्मरट्ठधजूपमे अग्गमहापण्डितोपाधिधारिनो च रट्ठोवादाचरियसम्मते च रट्ठविनयधरसम्मते च अञ्ञे चाभिपाकटगरुभावनीयादिगुणगणसमङ्गिनोति परोसतं नायकमहाथेरे उच्चिनित्वा "छट्ठसङ्गीतिओवादाचरियसंघनायकसभं" नामेकं पधानमहासंघसभं पतिट्ठापेसुं, ते च नायकमहाथेरा सम्बुद्धवचनरतनाकरपारगे विविधसत्थन्तरगहनासञ्चारिने थेरानुथेरे पञ्चवीसतिमत्ते समुच्चिनित्वा "छट्ठसङ्गीतिधुरन्धरसभा"ति च सम्मन्नित्वा तस्सा सभाय भारं निय्यातेसुं सब्बानि सङ्गीतिपटिबद्धकिच्चानि संविदहितुं। ते च सङ्गीतिधुरन्धरसभिका थेरा सकलमरम्मरट्ठे **ओंयाङ्गस्यातोति** अभिपाकटं "अग्गमहापण्डितो"-पाधिना चेव
B. च अभिधजमहारट्ठगुरू"पाधिना चाति द्वीहि मरम्मरट्ठिस्सरसमप्पितोपाधिहि विराजितं जातिया आसीतिवस्सिकं उपसम्पदाय सट्ठिवस्सं "भदन्तरेवतं" नाम महाथेरवरं सभापतिं कत्वा तेपिटके बुद्धवचने चेव नानासत्थेसु च कोविदे धम्माचरियकविपदप्पत्ते भिक्खू उच्चिनित्वा अट्ठदसादिवग्गवसेन परोसतं पाळिविसोधकवग्गे चेव सम्बहुले च पटिविसोधकवग्गे बन्धापेत्वा विसोधनप्पटिविसोधनेहि बुद्धवचनं सुपरिसुद्धत्तं पटिपापेत्वा धम्मसङ्गीतिमकंसु यथा तं पोराणकसङ्गीतिकारा।

एवं सङ्गीतिमारोपितस्स पन तेपिटकस्स बुद्धवचनस्स अत्थसंवण्णनाभूता या च अट्ठकथायो संविज्जन्ति या च तासं अत्थप्पकासनवसेन पवत्ता टीकायो संविज्जन्ति मनोरमाय तन्तिनयानुच्छविकाय भासाय **आचरियानन्द आचरियधम्मपालादीहि** थेरवरेहि कता।

तासम्पि अट्ठकथाटीकानं सदेसीयमूलेहि चेव विदेसीयमूलेहि च संसन्दित्वा तेपिटकस्स विय बुद्धवचनस्स विसोधनपटिविसोधनवसेन महाथेरा पावचनदस्सिनो संवण्णनाकोविदा पाठसोधनमकंसु ।

इच्चेवमट्ठकथाटीकायो पमादखलिताधिकपरिभट्ठपाठानं निराकरणवसेन विसोधिता चेव पटिविसोधिता च हुत्वा बुद्धसासनमुद्दणयन्तालये समप्पिता सुट्ठु मुद्दापणाय ।

मुद्दापणकाले च पिटकत्तयमुद्दापणे विय महाथेरवरा मूलसोधेय्यपत्तपाठकेहि गहट्ठपण्डितेहि चेव धम्माचरियभिक्खुपण्डितेहि च अनेकवारं परिसोधितं ओसानसोधेय्यपत्तं पटिविसोधितमूलपोत्थकेन चेव अञ्ञेहि सदेसदेसन्तरिकअट्ठकथाटीकापोत्थकेहि च विविधब्याकरणादिसत्थेहि च पुनप्पुनं संसन्देत्वा सुविसदपरिब्यत्त कण्डवारवाक्यच्छेदसङ्केतञ्च सम्पापेत्वा महता परिस्समेन ओसानसोधनमकंसु ।

एवमेतासम्पि च सुविसोधितानं अट्ठकथाटीकानं सङ्गीतिभारनित्थारका महाथेरा निखिलमरम्मरट्ठे **मचुइभस्याता** ति अभिपाकटं "अग्गमहापण्डितो"पाधिना चेव "अभिधजमहारट्ठगुरू"पाधिना चाति द्वीहि मरम्मरट्ठिस्सरसमप्पितोपाधीहि विराजितं जातिया छसत्ततिवस्सिकं उपसम्पदाय छपञ्ञासवस्सं "भदन्तसूरियाभिवंसं नाम महाथेरवरं सभापतिं कत्वा छट्ठसङ्गीतिकारकपरियापन्नेहि थेरानुथेरेहि सङ्गम्म पठनत्थाय समारभिंसु यथा तं छट्ठसङ्गीतिधम्मसङ्गायनाकाले । B. छ

एवमेतासं अट्ठकथाटीकानं संसोधन-मुद्दापणसम्पठनेसु करीयमानेसु रट्ठिस्सरगणे अग्गमहामच्चो **ऊनु** नामधेय्यो महासयो चेव बुद्धसासनसमितियं सम्पत्ति भण्डुप्पादको रट्ठिस्सरानं पतिनिधिभूतो **ऊभाचो** नामधेय्यो सासनट्ठानिकमहामत्तो चाति इमेपि तंकिच्चसम्पादनाय पाळिसङ्गीतिकाले विय महुस्साहेन ब्यावटा होन्ति ।

इच्चेवमेतापि अट्ठकथाटीकायो थेरवादीनेकायिकविबुधप्पमुखानं सत्थागमरतनालयसारगाहीनं वेय्याकरणकेसरीनं अच्चन्तनिम्मलञाणवारिना परिधोविता सङ्गम्म च पठिता, ता विबुधप्पवरेकगोचरा विमुत्तिरसस्साददायिनियो पिटकत्तयस्सत्थं परिब्यत्तं पकासेन्तियो चिरं विलसन्तियो लोकत्थसिद्धिं साधयन्तू ति ।

तेनेतं वुच्चति—

मूलकं परियत्तीव, सासनस्स महेसिनो ।
परियत्तिप्पमाणा हि, चिरं सद्धम्मसण्ठिति ॥ १ ॥

तस्मा तं रक्खितुं थेरा, धम्मसङ्गाहका पुरा ।
राजानो उपनिस्साय, अकंसु धम्मसङ्गहे ॥ २ ॥

पठमं धम्मसङ्गीतिं, **अजातसत्तु** राजिनो ।
अनुग्गहेन कत्वान, पालयुं जिनसासनं ॥ ३ ॥

दुतियं तु तथा कत्वा, **कालासोकस्स** राजिनो।
काले तमुपनिस्साय, पालयुं जिनसासनं ॥ ४ ॥

ततियं पि च कत्वान, **धम्मासोकस्स** राजिनो।
अनुग्गहेन बुद्धस्स, सासनं अभिपालयुं ॥ ५ ॥

चतुत्थिं पन लङ्कायं, **वट्टगामणि**राजिनो।
कालम्हि पोत्थकारूळहं, कत्वान पालयुं तथा ॥ ६ ॥

इमस्मिं मरम्मरट्ठेपि, **मिङ्गतु** नाम नराधिपं।
रज्जं समनुसासन्तं, रतनत्तयमामकं ॥ ७ ॥

B. ज सन्निस्साय महाथेरा, थिरसीला गुणाकरा।
पञ्चमिं धम्मसङ्गीतिं, करोन्ता सासनट्ठितिं ॥ ८ ॥

पत्थयन्ता लिखापेत्वा, सिलापट्टेसु पेटकं।
वायामेन महन्तेन, पालयुं जिनसासनं ॥ ९ ॥

इत्थं पुरा महाथेरा, राजानो चापि धम्मिका।
सासनं परिपालेसुं, जीवितं विय अत्तनो ॥ १० ॥

तथापि खलितादानि, दिस्सन्ति पिटकत्तये।
परम्पराय लेखाय, सञ्जाता मुद्दणेन च ॥ ११ ॥

दिस्वान ते महाथेरा, वाचेन्ताव तिपेटकं।
वुच्चमाननयेनेवं, चिन्तेसुं मन्तयिंसु च ॥ १२ ॥

"कत्वान साधुकं गन्थ-सुद्धिकं सासनायुकं।
यंनून धम्मसङ्गीतिं, करेय्याम मयं" इति ॥ १३ ॥

एतमत्थं सुणित्वान, **ऊनु** नाम महासयो।
मरम्मविसये **अग्ग-महामच्च**धुरन्धरो ॥ १४ ॥

"सासनायत्तकिच्चानि, सम्पादेन्ता विसेसतो।
सङ्गीतियञ्च थेरानं, सम्पूरेन्ता मनोरथं ॥ १५ ॥

यथा रक्खिंसु पोराणा, सुराजानो तथा मयं।
संरक्खेय्याम सम्बुद्ध-सासनं" इति चिन्तिय ॥ १६ ॥

महामच्चेहि अञ्ञेहि, सङ्घेहि च मन्तिय।
सुप्पतिट्ठापयित्वान, **बुद्धसासन**सङ्गमं ॥ १७ ॥

महाथेरानमादाय, छन्दं इध निवासिनं।
अञ्ञेसु सीहळादीसु, विदेसेसु च वासिनं ॥ १८ ॥

कारेत्वा धम्मसङ्गीतिं, सोधेत्वा सत्थुसासनं ।
सद्धम्मानुग्गहत्थाय, करं दळहपरक्कमं ॥ १९ ॥

सिरीमङ्गलविख्याते, थलस्मिं पवरे सुभे ।
चेतियस्साविदूरम्हि, **कम्भाये** इति सञ्ञिनो ॥ २० ॥

गुहावेसेन कारेत्वा, महासङ्गीतिमन्दिरं ।
आवासादिञ्च भिक्खूनं, कारेसि मुद्दणालयं ॥ २१ ॥

गन्थसंसोधनं धम्म-सङ्गीतिया तु पण्डिता । B. झ
महाथेरवराकंसु, सतिमन्ता पुनप्पुनं ॥ २२ ॥

मुद्दापेन्ते च पस्सित्वा, महाथेरेहि पञ्चहि ।
सोधेय्यपत्तमोसानं, निम्मलत्तं सुपापितं ॥ २३ ॥

कत्वा सुविसदं बुद्ध, भासितं पिटकत्तयं ।
यथा मुद्दापितं आसि, सासनत्थं महेसिनो ॥ २४ ॥

तथा अट्ठकथायो च, टीकायो च महारहा ।
सुट्ठु मुद्दापिता होन्ति, सब्बलोकत्थसिद्धिया ति ॥ २५ ॥

२५०४–बुद्धवस्से

संकेत सूची

अं० नि० भा० ३	—	अंगुत्तरनिकाय, भाग ३
सं० नि० भा० ३	—	संयुत्तनिकाय, भाग ३
खु० नि० भा० १	—	खुद्दकनिकाय, भाग १
अं० नि० भा० २,३	—	अंगुत्तरनिकाय भाग २,३
दी० ट्ठ० भा० १	—	दीघनिकायट्ठकथा भाग १
दी० — भा० २	—	दीघनिकाय भाग २
खु० — भा० ७	—	खुद्दकनिकाय भाग ७
दी० — भा० २	—	दीघनिकाय भाग २
सं० ट्ठ० ३	—	संयुत्तनिकायअट्ठकथा भाग ३
सं० भा० १	—	संयुत्तनिकाय भाग १
खु० ९	—	खुद्दकनिकाय भाग ९
वि० अट्ठ — १	—	विनयट्ठकथा भाग १
वि० — १	—	विनयपिटक भाग १
वि० — ३	—	विनयपिटक भाग ३
सं० — २	—	संयुत्तनिकाय भाग २
विशुद्धि० म० १-२	—	विशुद्धिमग्ग भाग १,२
म० — १,२	—	मज्झिमनिकाय भाग १,२
अभि० ट्ठ०	—	अभिधम्मट्ठकथा
धम्मपद ट्ठ०	—	धम्मपदट्ठकथा, भाग २
अभि० — २	—	अभिधम्मपिटक, भाग १,२
म० ट्ठ०	—	मज्झिमनिकायट्ठकथा
म० —	—	महावग्ग
खु० १०	—	खुद्दनिकाय, भाग १०
सुत्तनिपात ट्ठ० २	—	सुत्तनिपात अट्ठकथा भाग २
पटिसं० ट्ठ०	—	पटिसम्भिदामग्ग अट्ठकथा
उदान ट्ठ०	—	उदानट्ठकथा
खु० २	—	खुद्दनिकाय भाग २

——

सारत्थदीपनीटीकाय पठमभागे

सुद्धिपण्णं

पिट्ठे	पन्तियं	असुद्धपाठो	सुद्धपाठो
३	१२	बुद्धिप्पत्तो'स्मि	वुद्धिप्पत्तो'स्मि
६	१५	सम्पयोजनं	सप्पयोजनं
६	१९	ऐसा	एसा
९	२७	महाकारुणा	महाकरुणा
९	३३	थोमेत्व	थोमेत्वा
१४	२४	समन्नागमनवसन	समन्नागमनवसेन
१५	१७	अकम्यियट्ठेन	अकम्पियट्ठेन
२२	१०	पुनः	पुन
३०	१४	उपम्पज्ज	उपसम्पज्ज
३१	२३	चावमाने	चवमाने
५६	२६	भावनाफरणवुड्ढाढीहि	भावनाफरणवुड्ढादीहि
५८	९	भाविनत्ता	भावितत्ता
५९	१८	एकमेकस्मि ति	एकमेकस्मिं ति
६०	२६	असम्माहतो	असम्मोहतो
६३	१०	इमास्मि	इमस्मिं
६३	१२	इतिवादषमोक्खा	इतिवादप्पमोक्खा
६३	१६	मोचेसाभ	मोचेस्साम
६७	१०	देवानं	वेदानं
७२	१२	गाथावेय्यकरणङ्गद्वयसङ्गहितं	गाथावेय्याकरणङ्गद्वयसङ्गहितं
७९	२१	तिकेस	तिकेसु
८१	९	बद्धवचनं	बुद्धवचनं
८७	८	खाणासवा	खीणासवा
९३	१५	पापुणितब्बपि	पापुणितब्बापि
९५	३१	तं त	तं तं
९७	१६	पच्चेकबद्धो	पच्चेकबुद्धो
९७	२७	कुज्झित्वा	कुज्झित्वा
९८	७	पञ्चुप्पन्नहितेन	पच्चुपन्नहितेन
१०५	२६	वट्टांत	वट्टति
१०७	१९	अध	अथ

पिट्ठे	पन्तियं	असुद्धपाठो	सुद्धपाठो
१११	७	सञ्जी	सञ्ञी
१११	१२	अरूगो	अरोगो
११२	२	ढपनीयानं	ठपनीयानं
११२	८	ढपतितमातिकं	ठपितमातिकं
११२	१२	समन्तपसादिकाय	समन्तपासादिकाय
११३	१३	गुणमखनलक्खणं	गुणमक्खनलक्खणं
१३४	१५	विविधजपटाकं	विविधधजपटाकं
१३५	१६	खन्वो	खन्धो
१४४	१६	विविधो	तिविधो
१५९	२०	वच्चती ति	वुच्चती ति
२८८	१	आदीस	आदीसु
२८८	११	आत्तनो	अत्तनो
२८९	४	नीदरण	नीवरण
३००	१८	लोभानस्सन्दयुत्तत्ता	लोभनिस्सन्दयुत्तत्ता
३२१	१५	सारिपुत्तं	सारिपुत्त
३३३	२४	परिनिब्वनतो	परिनिब्बानतो
३४२	१६	नत्थां ति	नत्थी ति

———

भदन्तसारिपुत्तत्थेरेन कता

सारत्थदीपनी-टीका

(पठमो भागो)

सारत्थदीपनी-टीका

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।

गन्थारम्भकथा

महाकरुणिकं **बुद्धं**, **धम्मञ्च** विमलं वरं।
वन्दे **अरियसंघञ्च**, दक्खिणेय्यं निरङ्गणं॥

उळारपुञ्ञतेजेन, कत्वा सत्तुविमद्दनं।
पत्तरज्जाभिसेकेन, सासनुज्जोतनत्थिना॥

निस्साय सीहळिन्देन, यं **परक्कमबाहुना**।
कत्वा निकायसामग्गिं, सासनं सुविसोधितं॥

कस्सपं तं महाथेरं, संघस्स परिणायकं।
दीपस्मिं तम्बपण्णिम्हि, सासनोदयकारकं॥

पटिपत्तिपराधीनं, सदा रञ्ञनिवासिनं।
पाकटं गगने चन्द-मण्डलं विय सासने॥

संघस्स पितरं वन्दे, विनये सुविसारदं।
यं निस्साय वसन्तो'हं, बुद्धिप्पत्तो'स्मि सासने॥

अनुथेरं महापुञ्ञं[1], **सुमेधं** सुतिविस्सुतं[2]।
अविखण्डितसीलादि - परिसुद्धगुणोदयं॥

बहुस्सुतं सतिमन्तं, दन्तं सन्तं समाहितं।
नमामि सिरसा धीरं, गरुं मे गणवाचकं॥

आगतागमतक्केसु, सद्दसत्थनयञ्ञुसु। B 2
यस्सन्तेवासिभिक्खूसु, सासनं सुप्पतिट्ठितं॥

विनयट्ठकथाया'हं, **लीनसारत्थदीपनिं**।
करिस्सामि सुविञ्ञेय्यं, परिपुण्णमनाकुलं॥

---

१. महापञ्ञं (स्या०)।

२. सूतिविस्सुतं (सी०, स्या०)।

पोराणेहि कतं यं तु, लीनत्थस्स पकासनं ।
न तं सब्बत्थ भिक्खूनं, अत्थं साधेति सब्बसो ।।

दुविञ्ञेय्यसभावाय, सीहळाय निरुत्तिया ।
गण्ठिपदेस्वनेकेसु, लिखितं किञ्चि कत्थचि ।।

मागधिकाय भासाय, आरभित्वापि केनचि ।
भासन्तरेहि सम्मिस्सं, लिखितं किञ्चिदेव च ।।

असारगन्थभारोपि, तत्थेव बहु दिस्सति ।
आकुलञ्च कतं यत्थ, सुविञ्ञेय्यम्पि अत्थतो ।।

ततो अपरिपुण्णेन, तादिसेनेत्थ सब्बसो ।
कथमत्थं विजानन्ति, नानादेसनिवासिनो ।।

भासन्तरं ततो हित्वा, सारमादाय सब्बसो ।
अनाकुलं करिस्सामि, परिपुण्णविनिच्छयं ति ।।

गन्थारम्भकथावण्णना

विनयसंवण्णनारम्भे रतनत्तयं नमस्सितुकामो तस्स विसिट्ठगुणयोगसन्दस्सनत्थं "**यो कप्पकोटीहि** पी"ति आदिमाह । विसिट्ठगुणयोगेन हि वन्दनारहभावो, वन्दनारहे च कता वन्दना यथाधिप्पेतमत्थं साधेति । एत्थ च संवण्णनारम्भे रतनत्तयपणामकरणप्पयोजनं तत्थ तत्थ बहुधा पपञ्चेन्ति आचरिया । तथा हि वण्णयन्ति—

"संवण्णनारम्भे रतनत्तयवन्दना संवण्णेतब्बस्स धम्मस्स पभवनिस्सयविसुद्धिपटिवेदनत्थं, तं पन धम्मसंवण्णनासु विञ्ञूनं बहुमानुप्पादनत्थं, तं सम्मदेव तेसं उग्गहणधारणादिक्कमलद्धब्बाय सम्मापटिपत्तिया सब्बहितसुखनिप्फादनत्थं । अथ वा
B 3 मङ्गलभावतो, सब्बकिरियासु पुब्बकिच्चभावतो, पण्डितेहि समाचरितभावतो, आयतिं परेसं दिट्ठानुगतिआपज्जनतो च संवण्णनायं रतनत्तयपणामकिरिया" ति ।

मयं पन इधाधिप्पेतमेवपयोजनं दस्सयिस्साम, तस्मा संवण्णनारम्भे रतनत्तयपणामकरणं यथापटिञ्ञातसंवण्णनाय अनन्तरायेन परिसमापनत्थं ति वेदितब्बं । इदमेव हि पयोजनं आचरियेन इधाधिप्पेतं । तथा हि वक्खति—

"इच्चेवमच्चन्तनमस्सनेय्यं,
नमस्समानो रतनत्तयं यं ।
पुञ्ञाभिसन्दं विपुलं अलत्थं,
तस्सानुभावेन हतन्तरायो" ति ।

रतनत्तयपणामकरणेन चेत्थ यथा पटिञ्ञातसंवण्णनाय अनन्तरायेन परिसमापनं

रतनत्तयपूजाय पञ्ञापाटवभावतो[1], ताय पञ्ञापाटवञ्च रागादिमलविधमनतो[2]। वुत्तञ्हेतं—

"यस्मिं महानाम समये अरियसावको तथागतं अनुस्सरति; नेवस्स तस्मिं समये रागपरियुट्ठितं चित्तं होति, न दोसपरियुट्ठितं चित्तं होति, न मोहपरियुट्ठितं चित्तं होति, उजुगतमेवस्स तस्मिं समये चित्तं होती" ति आदि[3]। तस्मा रतनत्तयपूजनेन विक्खालितमलाय पञ्ञाय पाटवसिद्धि।

अथ वा रतनत्तयपूजनस्स पञ्ञापदट्ठानसमाधिहेतुत्ता पञ्ञापाटवं। वुत्तञ्हि तस्स समाधिहेतुत्तं—

"एवं उजुगतचित्तो खो महानाम अरियसावको लभति अत्थवेदं, लभति धम्मवेदं, लभति धम्मूपसंहितं पामोज्जं, पमुदितस्स पीति जायति, पीतिमनस्स कायो पस्सम्भति, पस्सद्धकायो सुखं वेदियति, सुखिनो चित्तं समाधियती" ति[4]।

समाधिस्स च पञ्ञाय पदट्ठानभावो वुत्तोयेव "समाहितो यथाभूतं पजानाती"ति[5]। ततो एवं[6] पटुभूताय पञ्ञाय पटिञ्ञामहत्तकतं[7] खेदमभिभुय्य अनन्तरायेन संवण्णनं समापयिस्सति। तेन वुत्तं "अनन्तरायेन परिसमापनत्थं"ति। B 4

अथ वा रतनत्तयपूजाय आयुवण्णसुखबलवड्ढनतो अनन्तरायेन परिसमापनं वेदितब्बं। रतनत्तयपणामेन हि आयुवण्णसुखबलानि वड्ढन्ति। वुत्तञ्हेतं—

"अभिवादनसीलिस्स, निच्चं वुड्ढापचायिनो।
चत्तारो धम्मा वड्ढन्ति, आयु वण्णो सुखं बलं, ति[8]॥

ततो आयुवण्णसुखबलवुड्ढिया होतेव कारियनिट्ठानमिति वुत्तं "अनन्तरायेन परिसमापनत्थं"ति।

अथ वा रतनत्तयगारवस्स पटिभानापरिहानावहत्ता। अपरिहानावहञ्हि तीसुपि रतनेसु गारवं। वुत्तञ्हेतं—

"सत्तिमे भिक्खवे अपरिहानिया धम्मा। कतमे सत्त? सत्थुगारवता, धम्मगारवता, संघगारवता, सिक्खागारवता, समाधिगारवता, कल्याणमित्तता, सोवचस्सता" ति[9]।

होतेव च ततो पटिभानापरिहानेन यथापटिञ्ञातपरिसमापनं।

---

१. पञ्ञापाटवतो (सी०, स्या०)
२. रागादिमलविगमनतो (सी०, स्या०)
३. अं० नि०, भा० ३, ८ पिट्ठे।
४. अं० नि०, भा० ३, ८ पिट्ठे।
५. सं० नि० भा० ३, २५२ पिट्ठे।
६. ततो एव (क०)
७. महत्तं गतं, स्या०।
८. खु० नि० भा० १-२७ पिट्ठे।
९. अं० नि० भा० २, १७५ पिट्ठे।

अथ वा पसादवत्थूसु पूजाय पुञ्ञातिसयभावतो। वुत्तञ्हि तस्स पुञ्ञातिसयत्तं—

"पूजारहे पूजयतो, बुद्धे यदि च सावके।
पपञ्चसमतिक्कन्ते, तिण्णसोकपरिद्दवे॥
ते तादिसे पूजयतो, निब्बुते अकुतोभये।
न सक्का पुञ्ञं सङ्खातुं, इमेत्तमपि केनची" ति[1]॥

पुञ्ञातिसयो च यथाधिप्पेतपरिसमापनुपायो। यथाह—

"एस देवमनुस्सानं, सब्बकामददो निधि।
यं यदेवाभिपत्थेन्ति, सब्बमेतेन लब्भती" ति[2]॥

उपायेसु च पटिपन्नस्स होतेव कारियनिट्ठानं। रतनत्तयपूजा हि निरतिसयपुञ्ञक्खेत्तसंबुद्धिया अपरिमेय्यप्पभवो पुञ्ञातिसयोति बहुविधन्तरायेपि लोकसन्निवासे अन्तराय-
B 5 निबन्धनसकलसंकिलेसविद्धंसनाय पहोति, भयादिउपद्दवञ्च निवारेति। तस्मा सुवुत्तं "संवण्णनारम्भे रतनत्तयपणामकरणं यथापटिञ्ञातसंवण्णनाय अनन्तरायेन परिसमापनत्थं ति वेदितब्बं" ति।

एवं पन सम्पयोजनं रतनत्तयवन्दनं कत्तुकामो पठमं ताव भगवतो वन्दनं कातुं तम्मूलकत्ता सेसरतनानं **"यो कप्प···पे०···महाकारुणिकस्स तस्सा"** ति आह। एत्थ पन यस्सा देसनाय संवण्णनं कत्तुकामो, सा यस्मा करुणाप्पधाना, न सुत्तन्तदेसना विय करुणापञ्ञाप्पधाना, नापि अभिधम्मदेसना विय पञ्ञाप्पधाना, तस्मा करुणाप्पधानमेव भगवतो थोमनं आरद्धं। ऐसा हि आचरियस्स पकति, यदिदं आरब्भानुरूपथोमना। तेनेव सुत्तन्त देसनाय संवण्णनारम्भे "करुणासीतलहदयं, पञ्ञापज्जोतविहतमोहतमं" ति करुणापञ्ञाप्पधानं, अभिधम्मदेसनाय संवण्णनारम्भे "करुणा विय सत्तेसु, पञ्ञा यस्य महेसिनो" ति पञ्ञाप्पधानञ्च थोमनं आरद्धं। करुणापञ्ञाप्पधाना हि सुत्तन्तदेसना तेसं तेसं सत्तानं आसयानुसयाधिमुत्तिचरियादिभेदपरिच्छिन्दनसमत्थाय पञ्ञाय सत्तेसु च महाकरुणाय तत्थ सातिसयप्पवत्तितो। सुत्तन्तदेसनाय हि महाकरुणासमापत्तिबहुलो वेनेय्य सन्तानेसु तदज्झासयानुलोमेन गम्भीरमत्थपदं पतिट्ठापेसि। अभिधम्मदेसना च केवलं पञ्ञाप्पधाना परमत्थधम्मानं यथासभावपटिवेधसमत्थाय पञ्ञाय तत्थ सातिसयप्पवत्तितो।

विनयदेसना पन आसयादिनिरपेक्खं केवलं करुणाय पाकतिकसत्तेनपि असोतब्बारहं सुणन्तो अपुच्छितब्बारहं पुच्छन्तो अवत्तब्बारहञ्च वदन्तो भगवा सिक्खापदं पञ्ञपेसीति करुणाप्पधाना। तथा हि उक्कंसपरियन्तगतहिरोत्तप्पोपि भगवा लोकिय-

---

१. खु० १-३६ पिट्ठे।
२. खु० १-११ पिट्ठे।

साधुजनेहिपि परिहरितब्बानि" सिखरणीसी"ति आदीनि वचनानि यथापराधञ्च गरहवचनानि विनयपिटकदेसनाय महाकरुणासञ्चोदितमानसो महापरिसमज्झे अभासि, तं तं सिक्खापदपञ्ञत्तिकारणापेक्खाय वेरञ्जादीसु सारीरिकञ्च खेदमनुभोसि। तस्मा किञ्चापि भूमन्तरपच्चयाकारसमयन्तरकथानं विय विनयपञ्ञत्तियापि समुट्ठापिका पञ्ञा अनञ्ञसाधारणताय अतिसयकिच्चवती, करुणाय किच्चं पन ततोपि अधिकं ति करुणाप्पधाना विनयदेसना। करुणाब्यापाराधिकताय हि देसनाय B 6
करुणाप्पधानता। तस्मा आरम्भानुरूपं करुणाप्पधानमेव एत्थ थोमनं कतं ति वेदितब्बं।

करुणाग्गहणेन च अपरिमेय्यप्पभावा सब्बेपि बुद्धगुणा सङ्गहिताति दट्ठब्बा तं मूलकत्ता सेसबुद्धगुणानं। महाकरुणाय वा छसु असाधारणञाणेसु अञ्ञतरत्ता तं सहचरितसेसासाधारणञाणानम्पि गहणसब्भावतो सब्बेपि बुद्धगुणा नयतो दस्सिताव होन्ति। एसोयेव हि निरवसेसतो बुद्धगुणानं दस्सनुपायो यदिदं नयग्गाहो। अञ्ञथा को नाम समत्थो भगवतो गुणे अनुपदं निरवसेसतो दस्सेतुं। तेनेवाह—

"बुद्धोपि बुद्धस्स भणेय्य वण्णं,
कप्पम्पि चे अञ्ञमभासमानो।
खीयेथ कप्पो चिरदीघमन्तरे,
वण्णो न खीयेथ तथागतस्सा"ति[1]॥

तेनेव च आयस्मता सारिपुत्तत्थेरेनपि बुद्धगुणपरिच्छेदनं पति अनुयुत्तेन "नो हेतं भन्ते"ति पटिक्खिपित्वा "अपि च मे भन्ते धम्मन्वयो विदितो"ति[2] वुत्तं। तस्मा "यो कप्पकोटीहिपी"ति आदिना करुणामुखेन सङ्खेपतो सकलसब्बञ्ञुगुणेहि भगवन्तं अभित्थवीति दट्ठब्बं। अयमेत्थ समुदायत्थो।

अयं पन अवयवत्थो—**यो** ति अनियमवचनं। तस्स "नाथो"ति इमिना सम्बन्धो। "कप्पकोटीहिपी"ति आदिना पन याय करुणाय सो "महाकारुणिको" ति वुच्चति, तस्सा वसेन कप्पकोटिगणनायपि अप्पमेय्यं कालं लोकहितत्थाय अतिदुक्करं करोन्तस्स भगवतो दुक्खानुभवनं दस्सेति। करुणाय बलेनेव हि सो भगवा हत्थगतम्पि निब्बानं पहाय संसारपङ्के निमुग्गं सत्तनिकायं ततो समुद्धरणत्थं चिन्तेतुम्पि असक्कुणेय्यं नयनजीवितपुत्तभरियदानादिकं अतिदुक्करमकासि। **कप्पकोटीहिपी अप्पमेय्यं कालं** ति कप्पकोटिगणनायपि "एत्तका कप्पकोटियो" ति पमेतुं असक्कुणेय्यं कालं, कप्पकोटिगणनवसेनपि परिच्छिन्दितुमसक्कुणेय्यत्ता अपरिच्छिन्नानि कप्पसतसहस्साधिकानि चत्तारि असङ्ख्येय्यानीति वुत्तं होति। कप्पकोटिवसेनेव B 7
हि सो कालो अप्पमेय्यो, असङ्ख्येय्यवसेन पन परिच्छिन्नोयेव। "कप्पकोटीहिपी"ति **अपि**-सद्दो कप्पकोटिवसेनपि ताव पमेतुं न सक्का, पगेव वस्सगणनायाति दस्सेति।

१. दी० ट्ठ १-२५७ दी० ट्ठ ३-६१, म-ट्ठ–३-२८९ पिट्ठादीसु।
२. दी० २-६७ पिट्ठे।

अप्पमेय्यं काल''ति अच्चन्तसंयोगेउपयोगवचनं ''मासमधीते, दिवसं चरती''ति आदीसु विय। **करोन्तो अतिदुक्करानी**ति पञ्चमहापरिच्चागादीनि अतिदुक्करानि करोन्तो। एवमतिदुक्करानि करोन्तो किं विन्दीति चे ? **खेदं गतो**, कायिकं खेदमुपगतो, परिस्समं पत्तो ति अत्थो। दुक्खमनुभवीति वुत्तं होति। दुक्खञ्हि खिज्जति सहितुमसक्कुणेय्यं ति ''खेदो'' ति वुच्चति। **लोकहितायाति** ''अनमतग्गे संसारे वट्टदुक्खेन अच्चन्त-पीळितं सत्तलोकं तम्हा दुक्खतो मेचेत्वा निब्बानसुखभागियं करिस्सामी''ति एवं सत्तलोकस्स हितकरणत्थायाति अत्थो। अस्स च ''अतिदुक्करानि करोन्तो'' ति इमिना सम्बन्धो। लोकहिताय खेदं गतोति योजनायपि नत्थि दोसो। **महागण्ठिपदे**पि हि ''अतिदुक्करानि करोन्तो खेदं गतो, किमत्थं ति चे ? लोकहिताया'' ति वुत्तं।

यं पन एवं योजनं असम्भावेन्तेन **केनचि** वुत्तं ''न हि भगवा लोकहिताय संसार-दुक्खमनुभवति। न हि कस्सचि दुक्खानुभवनं लोकस्स उपकारं आवहती'' ति, तं तस्स मतिमत्तं। एवं योजनायपि अतिदुक्करानि करोन्तस्स भगवतो दुक्खानुभवनं लोकहित-करणत्थाया ति अयमत्थो विञ्ञायति, न तु दुक्खानुभवनेनेव लोकहितसिद्धीति। पठमं वुत्तयोजनायपि हि न दुक्करकरणमत्तेन लोकहितसिद्धि। न हि दुक्करं करोन्तो कञ्चि सत्तं मग्गफलादीसु पतिट्ठापेति, अथ खो तादिसं अतिदुक्करं कत्वा सब्बञ्ञुभावं सच्छि-कत्वा निय्यानिकधम्मदेसनाय मग्गफलादीसु सत्ते पतिट्ठापेन्तो लोकस्स हितं साधेति।

कामञ्चेत्थ सत्तसङ्खारभाजनवसेन तिविधो लोको, हितकरणस्स पन अधिप्पेतत्ता तंविसयस्सेव सत्तलोकस्स वसेन अत्थो गहेतब्बो। सो हि लोकियं ति एत्थ पुञ्ञपापानि तंविपाको चाति ''लोको'' ति वुच्चति। कत्थचि पन सनरामरलोक-
B 8 गरु'' ति आदीसु समूहत्थोपि लोकसद्दो समुदायवसेन लोकीयति पञ्ञापीयतीति यं पनेत्थ केनचि वुत्तं ''इमिना सत्तलोकञ्च जातिलोकञ्च सङ्गण्हाति, तस्मा तस्स सत्तलोकस्स इधलोकपरलोकहितं, अतिक्कन्तपरलोकानं वा उच्छिन्नलोकसमुदयानं इध जातिलोके ओकासलोके वा दिट्ठधम्मसुखविहारसङ्खातञ्च हितं सम्पिण्डेत्वा लोकस्स, लोकानं, लोके वा हितं ति सरूपेकसेसं कत्वा लोकहितमिच्चेवाहा'' ति, न तं सारतो पच्चेतब्बं दिट्ठधम्मसुखविहारसङ्खातहितस्सपि सत्तलोक विसयत्ता, सत्तलोकग्ग-हणेनेव उच्छिन्नमूलानं खीणासवानम्पि सङ्गहितत्ता।

सब्बत्थ ''**केनचि**'' ति वुत्ते ''**वजिरबुद्धिटीकाकारेना**'' ति गहेतब्बं। ''**महा-गण्ठिपदे**'' ति वा ''**मज्झिमगण्ठिपदे**'' ति वा ''**चूळगण्ठिपदे**'' ति वा वुत्ते ''**सीहळ-गण्ठिपदेसू**'' ति गहेतब्बं। केवलं '**गण्ठिपदे**'' ति वुत्ते ''**मागधभासाय लिखिते** ''**गण्ठिपदे**'' ति गहेतब्बं।

नाथोति लोकपटिसरणो, लोकसामी लोकनायकोति वुत्तं होति। तथा हि सब्बानत्थपरिहारपुब्बङ्गमाय निरवसेसहितसुखविधानतप्पराय निरतिसयाय पयोग-सम्पत्तिया सदेवमनुस्साय पजाय अच्चन्तुपकारिताय अपरिमितनिरुपमप्पभावगुणविसेस-समङ्गिताय च सब्बसत्तुत्तमो भगवा अपरिमाणासु लोकधातूसु अपरिमाणानं सत्तानं

एकपटिसरणो पतिट्ठा। अथ वा नाथतीति **नाथो**, वेनेय्यानं हितसुखं मेत्तायनवसेन आसीसति पत्थेतीति अत्थो। अथवा नाथति वेनेय्यगते किलेसे उपतापेतीति अत्थो, नाथतीति वा याचतीति अत्थो। भगवा हि "साधु भिक्खवे भिक्खु कालेन कालं अत्तसम्पत्तिं पच्चवेक्खेय्या" ति आदिना[१] सत्तानं तं तं हितपटिपत्तिं याचित्वापि करुणाय समुस्साहितो ते तत्थ नियोजेति। परमेन वा चित्तिस्सरियेन समन्नागतो सब्बसत्ते ईसति अभिभवतीति परमिस्सरो भगवा "नाथो" ति वुच्चति। सब्बोपि चायमत्थो सद्दसत्थानुसारतो वेदितब्बो।

महाकारुणिकस्सा ति यो करुणाय कम्पितहदयत्ता लोकहितत्थं अतिदुक्करकिरियाय अनेकप्पकारं तादिसं संसारदुक्खमनुभवित्वा आगतो, तस्स महाकारुणिकस्साति अत्थो। तत्थ किरतीति **करुणा**, परदुक्खं विक्खिपति अपनेतीति अत्थो। दुक्खितेसु वा किरीयति पसारीयतीति करुणा। अथवा किणातीति करुणा, परदुक्खे सति कारुणिकं हिंसति विबाधेति, विनासेति वा परस्स दुक्खं ति अत्थो। परदुक्खे सति साधूनं कम्पनं हदयखेदं करोतीति वा करुणा। अथवा कमिति सुखं, तं रुन्धतीति करुणा। एसा हि परदुक्खापनयनकामतालक्खणा अत्तसुखनिरपेक्खताय कारुणिकानं सुखं रुन्धति विबाधेतीति। करुणाय नियुत्तोति कारुणिको यथा "दोवारिको"ति। यथा हि द्वारट्ठानतो अञ्ञत्थ वत्तमानोपि द्वारपटिबद्धजीविको पुरिसो द्वारानतिवत्तवुत्तिताय द्वारे नियुत्तोति "दोवारिको"ति वुच्चति, एवं भगवा मेत्तादिवसेन करुणाविहारतो अञ्ञत्थ वत्तमानोपि करुणानतिवत्तवुत्तिताय करुणाय नियुत्तोति "कारुणिको"ति वुच्चति। महाभिनीहारतो पट्ठाय हि याव महापरिनिब्बाना लोकहितत्थमेव लोकनाथा तिट्ठन्ति। महन्तो कारुणिकोति महाकारुणिको। सतिपि भगवतो तदञ्ञगुणानम्पि वसेन महन्तभावे कारुणिकसद्दसन्निधानेन वुत्तत्ता करुणावसेनेत्थ महन्तभावो वेदितब्बो यथा "महावेय्याकरणो" ति। एवञ्च कत्वा "महाकारुणिकस्सा" ति इमिना पदेन पुग्गलाधिट्ठानेन सत्थु महाकरुणा वुत्ता होति। B 9

अथ वा करुणा करुणायनं सीलं पकति एतस्साति **कारुणिको**, पथवीफस्सादयो विय कक्खळफुसनादिसभावा करुणायनसभावो सभावभूतकरुणोति अत्थो। सेसं पुरिमसदिसमेव। अथ वा महाविसयताय महानुभावताय महाबलताय च महती करुणाति **महाकरुणा**। भगवतो हि करुणा निरवसेसेसु सत्तेसु पवत्तति। पवत्तमाना च अनञ्ञसाधारणा पवत्तति, दिट्ठधम्मिकादिभेदञ्च महन्तमेव सत्तानं हितसुखं एकन्ततो निप्फादेति, महाकरुणाय नियुत्तोति **महाकारुणिको**ति सब्बं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। अथ वा महती पसत्था करुणा अस्स अत्थीति महाकारुणिको। पूजावचनो हेत्थ महन्तसद्दो "महापुरिसो" ति आदीसु विय। पसत्था च भगवतो करुणा महाकरुणासमापत्तिवसेनपि पवत्तितो अनञ्ञसाधारणत्ताति।

एवं करुणामुखेन सङ्खेपतो सकलसब्बञ्ञुगुणेहि भगवन्तं थोमेत्व इदानि B 10
सद्धम्मं थोमेतुं **"असम्बुधं"** ति आदिमाह। तत्थ **असम्बुधं** ति पुब्बकालकिरियानिद्देसो,

---

१. अं० ३-९ पिट्ठे।

तस्स असम्बुज्झनतो अप्पटिविज्झन्तोति अत्थो, यथासभावं अप्पटिविज्झनतोति वुत्तं होति। हेतुअत्थो हेत्थ अन्त सद्दो "पठन्तो निसीदती" ति आदीसु विय। **यं** ति पुब्बकालकिरियाय अनियमतो कम्मनिद्देसो। **बुद्धनिसेवितं** ति तस्स विसेसनं। तत्थ बुद्धसद्दस्स ताव "बुज्झिता सच्चानीति बुद्धो, बोधेता पजायाति बुद्धो" ति आदिना निद्देसनयेन[1] अत्थो वेदितब्बो। अथ वा सवासनाय अञ्ञाणनिद्दाय अच्चन्तविगमतो, बुद्धिया वा विकसितभावतो बुद्धवाति **बुद्धो** जागरणविकसनत्थवसेन। अथ वा कस्सचिपि ञेय्यधम्मस्स अनवबुद्धस्स अभावेन ञेय्यविसेसस्स कम्मभावेन अग्गहणतो कम्मवचनिच्छाय अभावेन अवगमनत्थवसेनेव कत्तुनिद्देसो लब्भतीति बुद्धवाति बुद्धो। अत्थतो पन पारमितापरिभावितो सयम्भूञाणेन सह वासनाय विहतविद्धंसितनिरवसेसकिलेसो महाकरुणासब्बञ्ञुतञ्ञाणादिअपरिमेय्यगुणगणाधारो खन्धसन्तानो बुद्धो। यथाह "बुद्धो'ति यो सो भगवा सयम्भू अनाचरियको पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु सामं सच्चानि अभिसम्बुज्झि, तत्थ च सब्बञ्ञुतं पत्तो बलेसु च वसीभावं" ति[2]। तेन एवं निरुपमप्पभावेन बुद्धेन निसेवितं गोचरासेवनाभावनासेवनाहि यथारहं निसेवितं अनुभूतं ति अत्थो।

तत्थ निब्बानं गोचरासेवनावसेनेव निसेवितं, मग्गो पन अत्तना भावितो च भावनासेवनावसेन सेवितो, परेहि उप्पादितानि पन मग्गफलानि चेतोपरियञाणादिना यदा परिजानाति, अत्तना उप्पादितानि वा पच्चवेक्खणञाणेन परिच्छिन्दति, तदा गोचरासेवनावसेनपि सेवितानि होन्तियेव। एत्थ च परियत्तिधम्मस्सपि परियायतो धम्मग्गहणेन गहणे सति सोपि देसनासम्मसनञाणगोचरताय गोचरासेवनाय सेवितोति सक्का गहेतुं। "अभिधम्मनयसमुद्दं अधिगच्छति, तीणि पिटकानि सम्मसी" ति च अट्ठकथायं वुत्तत्ता परियत्तिधम्मस्सपि सच्छिकिरियाय सम्मसनपरियायो लब्भतीति यं असम्बुधं असम्बुज्झन्तो असच्छिकरोन्तोति अत्थसम्भवतो सोपि इध वुत्तो एवाति
B 11 दट्ठब्बं। तम्पि च अप्पटिविज्झन्तो भवाभवं गच्छति परिञ्ञातधम्मविनयो पन तदत्थपटिपत्तिया सम्मापटिपन्नो न चिरस्सेव दुक्खस्सन्तं करिस्सति। वुत्तञ्हेतं—

"यो इमस्मिं धम्मविनये, अप्पमत्तो विहस्सति।
पहाय जातिसंसारं, दुक्खस्सन्तं करिस्सती" ति[3]॥

एत्थ च किञ्चापि मग्गफलनिब्बानानि पच्चेकबुद्धबुद्धसावकेहि पि गोचरासेवनादिना सेवितानि होन्ति, तथापि उक्कट्ठपरिच्छेदवसेन "बुद्धनिसेवितं" ति वुत्तं **केनचि** पन बुद्धसद्दस्स सामञ्ञतो बुद्धानुबुद्धपच्चेकबुद्धानम्पि एत्थेव सङ्गहो वुत्तो।

भवाभवं ति अपरकालकिरियाय कम्मनिद्देसो, भवतो भवं ति अत्थो। अथ वा **भवाभवं** ति सुगतिदुग्गतिवसेन हीनपणीतवसेन च खुद्दकं महन्तञ्च भवं ति अत्थो।

१, खु० ७-३६३ पिट्ठे।
२. खु० ७-३७३, खु० ८-१९७, खु० ९-१७२ पिट्ठेसु।
३. दी० २-१०१, सं० १-१९८ पिट्ठेसु।

बुद्धत्थो पि हि अ-कारो दिस्सति "असेक्खा धम्मा" ति आदीसु विय। तस्मा **अभवो** ति महाभवो वुच्चति। अथवा **भवो** ति वुद्धि, **अभवो** ति हानि। **भवो** ति वा सस्सतदिट्ठि, **अभवो** ति उच्छेददिट्ठि। वुत्तप्पकारो भवो च अभवो च **भवाभवो**। **तं भवाभवं**। **गच्छती**ति अपरकालकिरियानिद्देसो। **जीवलोको**ति सत्तलोको। जीवग्गहणेन हि सङ्खारभाजनलोकं निवत्तेति तस्स भवाभवगमनासम्भवतो। नमो अत्थू'ति पाठसेसो दट्ठब्बो।

अविज्जादिकिलेसजालविद्धंसिनो ति धम्मविसेसनं। तत्थ अविन्दियं विन्दतीति **अविज्जा**। पूरेतुं अयुत्तट्ठेन कायदुच्चरितादि अविन्दियं नाम, अलद्धब्बं ति अत्थो। तब्बिपरीततो कायसुचरितादि विन्दियं नाम, तं विन्दियं न विन्दतीति वा अविज्जा, खन्धानं रासट्ठं, आयतनानं आयतनट्ठं, धातूनं सुञ्ञतट्ठं, इन्द्रियानं अधिपतियट्ठं, सच्चानं तथट्ठं अविदितं करोतीति वा अविज्जा, दुक्खादीनं पीळनादिवसेन वुत्तं चतुब्बिधं अत्थं अविदितं करोतीतिपि अविज्जा, अन्तविरहिते संसारे सब्बयोनिगति-भवविञ्ञाणट्ठितिसत्तावासेसु सत्ते जवापेतीति वा अविज्जा, परमत्थतो अविज्जमानेसुपि इत्थिपुरिसादीसु जवति, विज्जमानेसुपि खन्धादीसु न जवतीति वा अविज्जा। सा आदि येसं तण्हादीनं ते अविज्जादयो, तेयेव किलिस्सन्ति एतेहि सत्ताति **किलेसा**, तेयेव च सत्तानं बन्धनट्ठेन जालसदिसा ति **जालं**, तं विद्धंसेति सब्बसो विनासेति सीलेनाति अविज्जादिकिलेसजालविद्धंसी। ननु चेत्थ सपरियत्तिको नवलोकुत्तरधम्मो अधिप्पेतो, तत्थ च मग्गोयेव किलेसे विद्धंसेति, नेतरेति चे? वुच्चते। मग्गस्सपि निब्बानमागम्म किलेसविद्धंसनतो निब्बानम्पि किलेसे विद्धंसेति नाम, मग्गस्स किलेसविद्धंसनकिच्चं फलेन निप्फन्नं ति फलम्पि "किलेसविद्धंसी"ति वुच्चति। परियत्तिधम्मोपि किलेसविद्धं-सनस्स पच्चयत्ता "किलेसविद्धंसी" ति वत्तुमरहतीति न कोचि दोसो। B 12

धम्मवरस्स तस्साति पुब्बे अनियमितस्स नियमवचनं। तत्थ यथानुसिट्ठं पटिपज्जमाने चतूसु अपायेसु अपतमाने धारेतीति **धम्मो**।

"ये केचि धम्मं सरणं गतासे, न ते गमिस्सन्ति अपायभूमिं।
पहाय मानुसं देहं, देवकायं परिपूरेस्सन्ती" ति[1]—

हि, वुत्तं। संसारदुक्खे वा अपतमाने कत्वा धारेतीति धम्मो, मग्गफलुप्पतिया सत्तक्खत्तुपरमतादिवसेन संसारस्स परिच्छिन्नत्ता। अपायादिनिब्बत्तककिलेसविद्धंस-नञ्चेत्थ धारणं। एवञ्च कत्वा अरियमग्गो तस्स तदत्थसिद्धिहेतुताय निब्बानञ्चाति उभयमेव निप्परियायतो धारेति, अरियफलं पन तं समुच्छिन्नकिलेसपटिप्पस्सम्भनेन तदनुगुणताय, परियत्तिधम्मो तदधिगमहेतुतायाति उभयं परियायतो धारेतीति वेदितब्बं। वुत्तप्पकारो धम्मोयेव अत्तनो उत्तरितराभावेन वरो पवरो अनुत्तरोति

१. दी० २-२०४, सं० १-२५ पिट्ठेसु।
२. दी० नि० भा० २–२०४, सं० नि० भा० १-२५ पिट्ठेसु।

धम्मवरो, तस्स धम्मवरस्स नमो अत्थूति सम्बन्धो। एत्तावता चेत्थ अम्हे हि सारत्थो पकासितो। यं पनेत्थ **केनचि** पपञ्चितं, अम्हेहि च इध न दस्सितं, न तं सारतो पच्चेतब्बं। इतो परेसुपि एवमेव दट्ठब्बं। तस्मा इतो पट्ठाय एत्तकम्पि अवत्वा सारत्थमेव दस्सयिस्साम। यत्थ पन **केनचि** अच्चन्तविरुद्धं लिखितं, तम्पि कत्थचि दस्सयिस्साम। एत्थ च "अविज्जादिकिलेसजालविद्धंसिनो" ति एतेन स्वाक्खाततादीहि धम्मं थोमेति, "धम्मवरस्सा" ति एतेन अञ्ञस्स विसिट्ठस्स अभावदीपनतो परिपुण्णताय। पठमेन वा पहानसम्पदं धम्मस्स दस्सेति, दुतियेन पभावसम्पदं।

B 13 एवं सङ्खेपेनेव सब्बधम्मगुणेहि सद्धम्मं थोमेत्वा इदानि अरियसंघं थोमेतुं "**गुणेही**"ति आदिमाह। "गुणेही"ति पदस्स "युत्तो" ति इमिना सम्बन्धो। इदानि येहि गुणेहि युत्तो, ते दस्सेन्तो "**सीलसमाधी**" ति आदिमाह। तत्थ चतुपारिसुद्धि-सीलादि "**सीलं**"ति वुच्चति। **समाधी**ति पठमज्झानादि। समाधिसीसेन हि पठमज्झा-नादयो वुत्ता। **पञ्ञा**ति मग्गपञ्ञा। विमुत्ति च विमुत्तिञाणञ्च विमुत्तिविमुत्तिञाणं ति वत्तब्बे एकदेससरूपेकसेसनयेन "विमुत्तिञाणं" ति वुत्तं। आदिसद्दपरियायेन पभुतिसद्देन वा विमुत्तिग्गहणं वेदितब्बं। तत्थ **विमुत्ती**ति फलं। **विमुत्तिञाणं** ति पच्चवेक्खणञाणं। **पभुति**–सद्देन छळभिञ्ञाचतुपटिसम्भिदादयो गुणा सङ्गहिताति दट्ठब्बं। एत्थ च सीलादयो गुणा लोकिया लोकुत्तरा च यथासम्भवं निद्दिट्ठाति वेदितब्बा। यं पनेत्थ **केनचि** वुत्तं "सीलादयो किञ्चापि लोकियलोकुत्तरा यथासम्भवं लब्भन्ति, तथापि अन्ते 'अरियसंघं' ति वचनतो सीलादयो चत्तारो धम्मक्खन्धा लोकुत्तरा वा"ति, तं तस्स मतिमत्तं। न हि अरियसंघस्स लोकियगुणेहि पि थोमनाय कोचि दोसो दिस्सति, सब्बञ्ञुबुद्धस्सपि ताव लोकियलोकुत्तरगुणेहि थोमना होति, किमङ्गं पन अरियसंघस्साति।

कुसलत्थिकानं जनानं पुञ्ञस्स वुद्धिया खेत्तसदिसत्ता खेत्तं ति आह "**खेत्तं जनानं कुसलत्थिकानं**" ति। खित्तं बीजं महप्फलभावकरणेन तायतीति हि खेत्तं, पुब्बण्णापरण्णविरुहनभूमि, तं सदिसत्ता अरियसंघोपि "खेत्तं" ति वुच्चति। इमिना अरियसंघस्स अनुत्तरपुञ्ञक्खेत्तभावं दीपेति। "अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा" ति हि वुत्तं। **तं** ति पुब्बे "यो" ति अनियमेन वुत्तस्स नियमवचनं **अरियसंघं** ति एत्थ आरकत्ता किलेसेहि, अनये न इरियनतो, अये च इरियनतो अरिया निरुत्तिनयेन। अथवा सदेवकेन लोकेन सरणं ति अरणीयतो उपगन्तब्बतो उपगतानञ्च तदत्थसिद्धितो अरिया। अरियानं संघो समूहोति **अरियसंघो**। अथ वा अरियो च सो यथावुत्तनयेन संघो च दिट्ठिसीलसामञ्ञेन संहतभावतोति अरियसंघो, अट्ठ अरियपुग्गला। तं अरियसंघं। भगवतो अपरभागे बुद्धधम्मरतनानम्पि समधिगमो संघरतनाधीनो ति अरियसंघस्स बहूपकारतं दस्सेतुं इधेव "**सिरसा नमामी**" ति वुत्तं ति दट्ठब्बं।

B 14 एवं गाथात्तयेन सङ्खेपतो सकलगुणसंकित्तनमुखेन रतनत्तयस्स पणामं कत्वा इदानि तं निपच्चकारं यथाधिप्पेते पयोजने परिणामेन्तो आह "**इच्चेव**" मिच्चादि।

इच्चेवं यथावुत्तनयेन **अच्चन्तं** एकन्तेन **नमस्सनेय्यं** नमस्सितब्बं रतनत्तयं **नमस्समानो** कायवाचाचित्तेहि वन्दमानो अहं विपुलं यं पुञ्ञाभिसन्दं अलत्थं ति सम्बन्धो। तत्थ बुद्धादयो रतिजननट्ठेन **रतनं**। तेसञ्हि "इति पि सो भगवा" ति आदिना यथा भूतगुणे आवज्जेन्तस्स अमताधिगमहेतुभूतं अनप्पकं पीतिपामोज्जं उप्पज्जति। यथाह—

"यस्मिं महानाम समये अरियसावको तथागतं अनुस्सरति, नेवस्स तस्मिं समये रागपरियुट्ठितं चित्तं होति, न दोसपरियुट्ठितं चित्तं होति, न मोहपरियुट्ठितं चित्तं होति, उजुगतमेवस्स तस्मिं समये चित्तं होति, उजुगतचित्तो खो पन महानाम अरियसावको लभति अत्थवेदं, लभति धम्मवेदं, लभति धम्मूपसंहितं पामोज्जं, पमुदितस्स पीति जायती" ति आदि[1]।

चित्तीकतादिभावो वा रतनट्ठो। वुत्तञ्हेतं—

"चित्तीकतं महग्घञ्च, अतुलं दुल्लभदस्सनं।
अनोमसत्तपरिभोगं, रतनं तेन वुच्चती" ति ॥[2]

चित्तीकतभावादयो च अनञ्ञसाधारणा बुद्धादीसुयेव लब्भन्ती ति।

"पुञ्ञाभिसन्दं ति पुञ्ञरासिं पुञ्ञप्पवत्तं वा" ति **महागण्ठिपदे** वुत्तं। **मज्झिमगण्ठिपदे** पन **चूलगण्ठिपदे** च "**पुञ्ञाभिसन्दं** ति पुञ्ञाभिनिसंसं" ति पि अत्थो वुत्तो। पुञ्ञाभिसन्दं ति पुञ्ञनदिं, पुञ्ञप्पवाहं ति एवं पनेत्थ अत्थो वेदितब्बो। अविच्छेदेन पवत्तियमानञ्हि पुञ्ञं अभिसन्दनट्ठेन "पुञ्ञाभिसन्दो" ति वुच्चति। तेनेव सारत्थपकासिनिया संयुत्तनिकायट्ठकथाय[3]—

"चत्तारोमे भिक्खवे पुञ्ञाभिसन्दा कुसलाभिसन्दा सुखस्साहारा। कतमे चत्तारो? इध भिक्खवे अरियसावको बुद्धे अवेच्चप्पसादेन समन्नागतो होति 'इति पि सो भगवा····पे०····बुद्धो भगवा' ति, अयं पठमो पुञ्ञाभिसन्दो कुसलाभिसन्दो सुखस्साहारो" ति[4]—एवमादिकाय पाळिया अत्थं दस्सेन्तो "पुञ्ञाभिसन्दा कुसलाभिसन्दाति पुञ्ञनदियो कुसलनदियो" ति वुत्तं। यं पन **गण्ठिपदे** वुत्तं "पुञ्ञाभिसन्दं ति पुञ्ञफलं" ति, तं न सुन्दरं। न हि रतनत्तयं नमस्समानो तस्मिं खणे पुञ्ञफलं अलत्थ, किन्तु अनप्पकं पुञ्ञरासिं तदा अलभि, तस्स च फलं परलोकभागी[5], दिट्ठधम्मे तु अन्तरायविघातो तस्स च पुञ्ञस्स आनिसंसमत्तकं, "तस्सानुभावेन हतन्तरायो" ति च वुत्तं, न च पुञ्ञफले अनुप्पन्ने तस्सानुभावेन हतन्तरायभावो न सिज्झति, न चेतं तस्मियेव खणे दिट्ठधम्मवेदनीयं अहोसि। तस्मा तस्स महतो पुञ्ञ- B 15

१. अं० नि० ३-८ पिट्ठे। २. दी०, ट्ठ० २-३५ पिट्ठे।
३. सं०-ट्ठ० ३-३१९ पिट्ठे। ४. सं० नि० ३-३४१-पिट्ठे।
५. परलोकभावे (सी०) परलोकभावि (स्या०)।

प्पवाहस्स आनुभावेन हतन्तरायोति अयमेव अत्थो युज्जति। अथापि पणामकिरियाय जनितत्ता पुञ्ञमेव पुञ्ञफलं ति तस्साधिप्पायो सिया, एवं सति युज्जेय्य। सो च पुञ्ञप्पवाहो न अप्पमत्तको, अथ खो महन्तोयेवा ति दस्सेन्तो आह "**विपुलं**" ति, महन्तं अनप्पकं ति वुत्तं होति। अलत्थं ति अलभिं; पापुणिं ति अत्थो।

तस्सानुभावेना ति तस्स यथावुत्तस्स पुञ्ञप्पवाहस्स आनुभावेन बलेन। **हतन्तरायो** ति तं तं सम्पत्तिया विबन्धनवसेन सत्तसन्तानस्स अन्तरे वेमज्झे एति आगच्छती ति अन्तरायो, दिट्ठधम्मिकादि अनत्थो। पणामपयोजने वुत्तविधिना हतो विद्धस्तो अन्तरायो उपद्दवो अस्साति हतन्तरायो। अस्स "वण्णयिस्सं विनयं" ति इमिना सम्बन्धो, हतन्तरायो हुत्वा विनयं वण्णयिस्सन्ति वुत्तं होति। एतेन तस्स पुञ्ञप्पवाहस्स अत्तनो पसादसम्पत्तिया रतनत्तयस्स च खेत्तभावसम्पत्तिया अत्थसंवण्णनाय उपघातकउपद्दवानं हनने समत्थतं दीपेति।

एवं रतनत्तयस्स निपच्चकारकरणे पयोजनं दस्सेत्वा इदानि यस्स विनयपिटकस्स अत्थं संवण्णेतुकामो, तस्स ताव भगवतो सासनस्स मूलपतिट्ठानभावं दस्सेत्वा तम्पि थोमेन्तो आह "यस्मिं ठिते" ति आदि। अट्ठितस्स सुसण्ठितस्स भगवतो सासनं।

B 16 यस्मिं ठिते पतिट्ठितं होती ति योजेतब्बं। तत्थ **यस्मिं** ति यस्मिं विनयपिटके। **ठिते**ति पाळितो च अत्थतो च अनूनं हुत्वा लज्जीपुग्गलेसु पवत्तनट्ठेन ठितेति अत्थो। **सासनं** ति अधिसीलअधिचित्तअधिपञ्ञासङ्खातसिक्खत्तयसङ्गहितं सासनं। **अट्ठितस्सा** ति कामसुखल्लिकत्तकिलमथानुयोगसङ्खाते अन्तद्वये अट्ठितस्साति अत्थो। "अप्पतिट्ठं ख्वाहं आवुसो अनायूहं ओघमतरिं ति[1] हि वुत्तं। अयञ्चत्थो तीसुपि **सीहळगण्ठिपदेसु** वुत्तोयेव। गण्ठिपदे पन "अट्ठितस्साति परिनिब्बुतस्सपि भगवतो "ति वुत्तं।

पतिट्ठितं होती ति तेसुयेव लज्जीपुग्गलेसु पवत्तनट्ठेन पतिट्ठितं होति। **सुसण्ठितस्सा** ति एत्थ ताव तीसुपि **गण्ठिपदेसु** इदं वुत्तं" द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणअसीति अनुब्यञ्जनेहि समन्नागमनवसेन सुसण्ठानस्साति अत्थो। अनेन अस्स रूपकायसम्पत्तिं निदस्सेतीति। **गण्ठिपदे** पन "यथाठाने पतिट्ठितेहि लक्खणेहि समन्नागतत्ता रूपकायेन सुसण्ठितो, कायवङ्कादिरहितत्ता तादिलक्खणसमन्नागतत्ता च नामकायेनपी ति वुत्तं। **केनचि** पन" चतुब्रह्मविहारवसेन सत्तेसु सुट्ठु सम्मा च ठितस्साति अत्थवसेन वा सुसण्ठितस्स। सुसण्ठितत्ता हेस केवलं सत्तानं दुक्खं अपनेतुकामो हितं उपसंहरितुकामो सम्पत्तिया च पमुदितो अपक्खपतितो च हुत्वा विनयं देसेति। तस्मा इमस्मिं विनयसंवण्णनाधिकारे सारुप्पाय थुतिया थोमेन्तो आह "सुसण्ठितस्सा ति" वत्वा "**गण्ठिपदेसु** वुत्तत्थो अधिप्पेताधिकारानुरूपो न होती" ति वुत्तं। अयं पनेत्थ अम्हाकं खन्ति—यथावुत्तकामसुखल्लिकादिअन्तद्वये अट्ठितत्तायेव मज्झिमाय पटिपदाय सम्मा ठितत्ता सुसण्ठितस्सा ति एवमत्थो गहेतब्बो ति। एवञ्हि सति

१. सं० १-१-पिट्ठे।

आरम्भानुरूपथोमना कता होति यथावुत्तअन्तद्वयं विवज्जेत्वा मज्झिमाय पटिपदाय विनयपञ्ञत्तियायेव येभुय्येन पकासनतो।

तं ति पुब्बे "यस्मिं" ति अनियमेत्वा वुत्तस्स नियमवचनं, तस्स "विनयं" ति इमिना सम्बन्धो। **असम्मिस्सं** ति भावनपुंसकनिद्देसो, निकायन्तरलद्धीहि असम्मिसं कत्वा अनाकुलं कत्वा वण्णयिस्सन्ति वुत्तं होति। सिक्खापदपञ्ञत्तिया अनुरूपस्स कालमत्तस्सपि धम्मसेनापतिसारिपुत्तत्थेरसदिसेनपि दुविञ्ञेय्यभावतो केवलं बुद्धविसयं विनयपिटकं अत्तनो बलेन वण्णयिस्सामीति वचनमत्तम्पि अञ्ञेहि वत्तुमसक्कुणेय्यत्ता B 17
"**निस्साय पुब्बाचरियानुभावं**" ति आह। पुब्बाचरियानुभावो नाम अत्थतो पुब्बाचरियेहि संवण्णिता अट्ठकथा, ततोयेव च "पुब्बाचरियानुभावो अट्ठकथा" ति सब्बत्थ **गण्ठिपदेसु** वुत्तं। तस्मा पुब्बाचरियेहि संवण्णितं अट्ठकथं निस्साय वण्णयिस्सं, न अत्तनोयेव बलं निस्साया ति वुत्तं होति।

अथ "पोराणट्ठकथासु विज्जमानासु पुन विनयसंवण्णनाय किं पयोजनं" ति यो वदेय्य, तस्स पोराणट्ठकथाय अनूनभावं अत्तनो च संवण्णनाय पयोजनं" दस्सेन्तो "**कामञ्चा**" ति आदिमाह। **कामं** ति एकन्तेन, यथिच्छकं वा, सब्बसो ति वुत्तं होति, तस्स "संवण्णितो" ति इमिना सम्बन्धो। कामं संवण्णितोयेव, नो न संवण्णितो ति अत्थो। केहि पन सो विनयो संवण्णितो ति आह "पुब्बाचरियासभेही" ति। महाकस्सपत्थेरादयो, पुब्बाचरिया एव अकम्पियट्ठेन उत्तमट्ठेन च आसभा, तेहि **पुब्बाचरियासभेही** ति वुत्तं होति। कीदिसा पनेते पुब्बाचरिया ति आह "**ञाणम्बू**" ति आदि। अग्गमग्गञाणसङ्खातेन **अम्बुना** सलिलेन **निद्धोतानि** निस्सेसतो आयतिं अनुप्पत्तिधम्मतापादनेन धोतानि विक्खालितानि विसोधितानि रागादीनि तीणि मलानि कामासवादयो च चत्तारो आसवा येहि ते **ञाणम्बुनिद्धोतमलासवा**, तेही ति अत्थो। इमिना च न केवलं एतेसु आचरियभावोयेव, अथ खो रागादिमलरहिता खीणासवा विसुद्धसत्ता एते ति दस्सेति।

खीणासवभावेपि न एते सुक्खविपस्सका, अथ खो एवरूपेहि पि आनुभावेहि समन्नागता ति दस्सेन्तो आह "**विसुद्धविज्जापटिसम्भिदेही**" ति। विसुद्धा अच्चन्तपरिसुद्धा विज्जा चतस्सो च पटिसम्भिदा येसं ते विसुद्धविज्जापटिसम्भिदा, तेहि। एकदेसेन पटिसम्भिदं अप्पत्तानं अरियानमेवं अभावतो एतेहि अधिगतपटिसम्भिदा पटुतरलद्धप्पभेदा ति दस्सेतुं **विसुद्धग्गहणं** कतं। **विज्जा** ति तिस्सो विज्जा, अट्ठ विज्जा वा। तत्थ दिब्बचक्खुञाणं पुब्बेनिवासञाणं, आसवक्खयञाणञ्चाति इमा तिस्सो विज्जा। अट्ठ विज्जा पन—

"विपस्सनाञाणमनोमयिद्धि, B 18
इद्धिप्पभेदोपि च दिब्बसोतं।
परस्स चेतोपरियायञाणं,
पुब्बेनिवासानुगतञ्च ञाणं।
दिब्बञ्च चक्खासवसङ्खयो च,
एतानि ञाणानि इधट्ठ विज्जा" ति॥

एवं विपस्सनाञाणमनोमयिद्धीहि सद्धिं परिग्गहिता[1] छ अभिञ्ञायेव। अत्थपटिसम्भिदा, धम्मपटिसम्भिदा, निरुत्तिपटिसम्भिदा, पटिभानपटिसम्भिदा ति चतस्सो पटिसम्भिदा। तत्थ सङ्खेपतो हेतुफले ञाणं अत्थपटिसम्भिदा, हेतुम्हि ञाणं धम्मपटिसम्भिदा, हेतुहेतुफलानुरूपं वोहारेसु ञाणं निरुत्तिपटिसम्भिदा। इदं ञाणं इममत्थं जोतयतीति इमिना आकारेन हेट्ठा वुत्तेसु तीसु ञाणेसु पवत्तञाणं पटिभानपटिसम्भिदा। एतासं पन वित्थारकथा अतिपपञ्चभावतो इध न वुच्चति। पटिसम्भिदाप्पत्तानं सद्धम्मेसु छेकभावतो आह "**सद्धम्मसंवण्णनकोविदेही**" ति। "पटिसम्भिदाप्पत्तानम्पि धम्मेसु अभियोगवसेन विसेसो होती ति लद्धपटिसम्भिदासु सातिसयतं दस्सेतुं आहा" ति पि वदन्ति। **सद्धम्मसंवण्णनकोविदेही** ति पिटकत्तयसङ्खातस्स सद्धम्मस्स संवण्णने सब्बसो अत्थप्पकासने कोविदेहि छेकेहि, कुसलेहीति अत्थो।

किलेसजालं परिक्खारबाहुल्लं वा संलिखति तनुं करोतीति **सल्लेखो**। इध पन खीणासवाधिकारत्ता परिक्खारबाहुल्लस्स सल्लिखनवसेनेव अत्थो गहेतब्बो, ततोयेव च **गण्ठिपदे** "सल्लेखियेपरिमितपरिक्खारवुत्तिया" ति अत्थो वुत्तो। सल्लेखस्स भावो **सल्लेखियं**, तस्मिं सल्लेखिये, सल्लेखपटिपत्तियं ति वुत्तं होति। **नोसुलभूपमेही** ति असुलभूपमेहि सल्लेखपटिपत्तिया असुकसदिसाति तेसं उपमाय अनुच्छविकपुग्गलानं दुल्लभत्ता नत्थि सुलभा उपमा एतेसं ति नोसुलभूपमा। **महाविहारस्सा** ति चित्तलपब्बतअभयगिरिसेसनिकायद्वयं[2] पटिक्खिपति। **धजूपमेही** ति रथस्स सञ्जाननहेतुकं
B 19 रथे बद्धधजं विय अजानन्तानं "असुकेहि च असुकेहि च थेरेहि निवासितो महाविहारो नामा" ति एवं महाविहारस्स सञ्जाननहेतुत्ता महाविहारस्स धजूपमेहि। **संवण्णितो** ति सम्मा अनूनं कत्वा वण्णितो। संवण्णितो अयं विनयो ति पदच्छेदो कातब्बो। **चित्ते हि नयेही**ति अनेकप्पभेदनयत्ता विचित्तेहि नयेहि। **सम्बुद्धवरन्वयेही** ति सब्बञ्ञुबुद्धवरं अनुगतेहि, भगवतो अधिप्पायानुगतेहि नयेहीति वुत्तं होति। अथ वा बुद्धवरं अनुगतेहि पुब्बाचरियासभेहीति सम्बन्धो कातब्बो।

एवं पोराणट्ठकथाय अनूनभावं दस्सेत्वा इदानि अत्तनो संवण्णनाय पयोजनविसेसं दस्सेतुं "**संवण्णना**" ति आदिमाह। इदं वुत्तं होति—किञ्चापि पुब्बाचरियासभेहि यथावुत्तगुणविसिट्ठेहि अयं विनयो सब्बसो वण्णितो, तथापि तेसं एसा संवण्णना सीहळदीपवासीनं भासाय सङ्खतत्ता रचितत्ता दीपन्तरे भिक्खुजनस्स सीहळदीपतो अञ्ञदीपवासिनो भिक्खुगणस्स किञ्चि अत्थं पयोजनं यस्मा नाभिसम्भुणाति न सम्पादेति न साधेति, तस्मा इमं संवण्णनं पाळिनयानुरूपं कत्वा बुद्धसिरित्थेरेन अज्झिट्ठो इदानि समारभिस्सन्ति। तत्थ संवण्णियति अत्थो एताया ति **संवण्णना**, अट्ठकथा। सा पन धम्मसङ्गाहकत्थेरेहि पठमं तीणि पिटकानि सङ्गायित्वा तस्स अत्थवण्णनानुरूपेनेव वाचनामग्गं आरोपितत्ता तिस्सो सङ्गीतियो अरुळ्हायेव बुद्धवचनस्स

---

१. परिग्गणिता (सी०, स्या०)

२. महाविहारस्साति सेसनिकायद्वयं (सी०, स्या०)।

अत्थसंवण्णनाभूतो कथामग्गो। सोयेव च महामहिन्दत्थेरेन तम्बपण्णिदीपं आभतो, पच्छा तम्बपण्णियेहि[1] महाथेरेहि निकायन्तरलद्धीहि सङ्करपरिहरणत्थं सीहळभासाय ठपितो। तेनाह "**सीहळदीपकेना**" ति आदि। सीहस्स लानतो गहणतो **सीहळो**, सीहकुमारो। तंवंसजातताय तम्बपण्णिदीपे खत्तियानं तेसं निवासताय तम्बपण्णिदीपस्सपि सीहळभावो वेदितब्बो, तस्मिं सीहळदीपे भूतत्ता **सीहळदीपकेन वाक्येन** वचनेन, सीहळभासाया ति वुत्तं होति।

पाळिनयानुरूपं ति पाळिनयस्स अनुरूपं कत्वा, मागधभासाय परिवत्तित्वा ति[2] वुत्तं होति। **अज्झेसनं** ति गरुट्ठानियं पयिरुपासित्वा गरुतरं पयोजनं उद्दिस्स अभिपत्थना अज्झेसना, तं अज्झेसनं, आयाचनं ति अत्थो। तस्स "समनुस्सरन्तो" ति इमिना सम्बन्धो। तस्स अज्झेसनं ति आह "**बुद्धसिरिव्हयस्स थेरस्सा**" ति। बुद्धसिरीति B 20
अव्हयो नामं यस्स सोयं **बुद्धसिरिव्हयो**, तस्स, इत्थनामस्स थेरस्स अज्झेसनं सम्मा आदरेन समनुस्सरन्तो हदये ठपेन्तो ति अत्थो।

इदानि अत्तनो संवण्णनाय करणप्पकारं दस्सेन्तो "**संवण्णनं तञ्चा**" ति आदिमाह। तत्थ तञ्च इदानि वुच्चमानं संवण्णनं समारभन्तो सकलायपि महाअट्ठकथाय इध गहेतब्बतो महाअट्ठकथं तस्सा इदानि वुच्चमानाय संवण्णनाय सरीरं कत्वा महापच्चरियं यो विनिच्छयो वुत्तो, तथेव कुरुन्दीनामादीसु विस्सुतासु अट्ठकथासु यो विनिच्छयो वुत्तो, ततोपि विनिच्छयतो युत्तमत्थं अपरिच्चजन्तो अन्तोगधत्थेरवादं कत्वा संवण्णनं समारभिस्सन्ति पदत्थसम्बन्धो वेदितब्बो। एत्थ च अत्थो कथियति एताया ति अत्थकथा, सायेव **अट्ठकथा** त्थकारस्स ट्ठकारं कत्वा "दुक्खस्स पीळनट्ठो ति आदीसु[3] विय। **महापच्चरियं** ति एत्थ **पच्चरी** ति उळुम्पं वुच्चति, तस्मिं निसीदित्वा कतत्ता तमेव नामं जातं। कुरुन्दिवल्लिविहारो नाम अत्थि, तत्थ कतत्ता **कुरुन्दी** ति नामं जातं ति वदन्ति। आदिसद्देन अन्धकट्ठकथं सङ्खेपट्ठकथञ्च सङ्गण्हाति। **विस्सुतासू** ति सब्बत्थ पत्थटासु, पाकटासूति वुत्तं होति।

युत्तमत्थं ति एत्थ ताव **मज्झिमगण्ठिपदे चूळगण्ठिपदे** च इदं वुत्तं "युत्तमत्थं ति संवण्णेतब्बट्ठानस्स युत्तमत्थं, न पन तत्थ अयुत्तम्पि अत्थोति वुत्तं होती"ति। **महागण्ठिपदे** पनेत्थ न किञ्चि वुत्तं। **केनचि** पन "महाअट्ठकथानयेन विनययुत्तिया वा युत्तमत्थं" ति वुत्तं, तं युत्तं विय दिस्सति महापच्चरि आदीसुपि कत्थचि अयुत्तस्सापि अत्थस्स उपरि विभावनतो। "अट्ठकथंयेव गहेत्वा संवण्णनं करिस्सामी" ति वुत्ते अट्ठकथासु वुत्तत्थेरवादानं बाहिरभावो सिया ति तेपि अन्तोकत्तुकामो "**अन्तोगधथेरवादं**" ति आह, थेरवादेपि अन्तोकत्वा ति वुत्तं होति। **संवण्णनं** ति अपरकालकिरियाय कम्मनिद्देसो। पुब्बे वुत्तं तु "संवण्णनं" ति वचनं तत्थेव "समारभन्तो" ति पुब्बकालकिरियाय कम्मभावेन योजेतब्बं। **सम्मा** ति वत्तब्बे गाथाबन्धवसेन रस्सभावो कतोति वेदितब्बो।

---

१. तम्बपण्णिदीपेहि (क)
२. परिवत्तेत्वाति (सी०, स्या०)
३. खु० ९-२०-२९३ पिट्ठेसु।

B 21 एवं करणप्पकारं दस्सेत्वा इदानि सोतूहि पटिपज्जितब्बविधिं दस्सेन्तो "**तं मे**" ति आदिमाह। इदं वुत्तं होति—इदानि वुच्चमानं तं मम संवण्णनं धम्मपदीपस्स तथागतस्स धम्मं सासनधम्मं पाळिधम्मं वा सक्कच्चं पटिमानयन्ता पूजेन्ता थिरेहि सीलक्खन्धादीहि समन्नागतत्ता थेरा, अचिरपब्बजितत्ता नवा, तेसं मज्झे भवत्ता मज्झिमा च भिक्खू पसन्नचित्ता यथावुत्तनयेन सप्पयोजनत्ता उपरि वक्खमानविधिना पमाणत्ता च सद्दहित्वा पीतिसोमनस्सयुत्तचित्ता इस्सापकता अहुत्वा निसामेन्तु सुणन्तूति। तत्थ **धम्मप्पदीपस्सा** ति धम्मोयेव सत्तसन्तानेसु मोहन्धकारविधमनतो पदीपसदिसत्ता पदीपो अस्साति धम्मपदीपो, भगवा। तस्स धम्मपदीपस्स।

इदानि अत्तनो संवण्णनाय आगमविसुद्धिं दस्सेत्वा पमाणभावं दस्सेन्तो "**बुद्धेना**" ति आदिमाह। यथेव बुद्धेन यो धम्मो च विनयो च वुत्तो, सो तस्स बुद्धस्स येहि पुत्तेहि धम्मसेनापतिआदीहि तथेव ञातो, तेसं बुद्धपुत्तानं मतिमच्चजन्ता सीहळट्ठ-कथाचरिया यस्मा पुरे अट्ठकथा अकंसूति अयमेत्थ सम्बन्धो। तत्थ **धम्मो** ति सुत्ताभिधम्मे सङ्गण्हाति, **विनयो** ति सकलं विनयपिटकं। एत्तावता च सब्बम्पि बुद्धवचनं निद्दिट्ठं होति। सकलञ्हि बुद्धवचनं धम्मविनयवसेन दुविधं होति। **वुत्तो** ति पाळितो च अत्थतो च बुद्धेन भगवता वुत्तो। न हि भगवता अब्याकतं नाम तन्तिपदं अत्थि, सब्बेसंयेव अत्थो कथितो, तस्मा सम्मासम्बुद्धेनेव तिण्णं पिटकानं अत्थवण्णनाक्क-मोपि भासितो ति दट्ठब्बं, **तत्थ तत्थ भगवता पवत्तिता पकिण्णकदेसनायेव हि अट्ठकथा। तथेव ञातो**ति यथेव बुद्धेन वुत्तो, तथेव एकपदम्पि एकक्खरम्पि अविनासेत्वा अधिप्पायञ्च अविकोपेत्वा ञातो विदितोति अत्थो। **तेसं मतिमच्चजन्ता** ति तेसं बुद्धपुत्तानं अधिप्पायं अपरिच्चजन्ता। **अट्ठकथा अकंसूति** अट्ठकथायो अकंसु। कत्थचि "अट्ठकथामकंसू" ति पाठो दिस्सति, तत्थापि सोयेवत्थो, म-कारो पन पदसन्धिवसेन आगतो ति दट्ठब्बो। "अट्ठकथा" ति बहुवचननिद्देसेन महापच्चरियादिकं सङ्गण्हाति।

तस्मा ति यस्मा तेसं बुद्धपुत्तानं अधिप्पायं अविकोपेत्वा पुरे अट्ठकथा अकंसु,
B 22 तस्मा ति अत्थो। **हि** ति निपातमत्तं हेतुअत्थस्स "तस्मा" ति इमिनायेव पकासितत्ता। यदि अट्ठकथासु वुत्तं सब्बम्पि पमाणं, एवं सति तत्थ पमादलेखापि पमाणं सिया ति आह "**वज्जयित्वान पमादलेखं**" ति। तत्थ **पमादलेखं** ति अपरभागे पोत्थकारुळ्हकाले पमज्जित्वा लिखनवसेन पवत्तं पमादपाठं। इदं वुत्तं होति—पमादेन सतिं अपच्चुपट्ठपेत्वा अदिन्नादानस्स पुब्बपयोगे "सच्चेपि अलिकेपि दुक्कटं" ति वुत्तवचनसदिसं यं लिखितं, तं वज्जयित्वा अपनेत्वा सब्बं पमाणं ति। वक्खति हि तत्थ—

"महाअट्ठकथायं पन सच्चेपि अलिकेपि दुक्कटमेव वुत्तं, तं पमादलिखितं ति वेदितब्बं। न हि अदिन्नादानस्स पुब्बपयोगे पाचित्तियट्ठाने दुक्कटं नाम अत्थी" ति[1]।

केसं पमाणं ति आह "**सिक्खासु सगारवानं इध पण्डितानं**" ति। **इधा** ति इमस्मिं सासने। पुन "यस्मा" ति वचनस्स को सम्बन्धो ति चे? एत्थ ताव **महागण्ठि-**

---

१. वि० अट्ठ—१-२७० पिट्ठे।

पदे गण्ठिपदे च न किञ्चि वुत्तं, **मज्झिमगण्ठिपदे** पन **चूळगण्ठिपदे** च इदं वुत्तं "यस्मा पमाणं, तस्मा निसामेन्तु पसन्नचित्ता" ति। एवमस्स सम्बन्धो दट्ठब्बो[1]। यस्मा अट्ठकथासु वुत्तं पमाणं, तस्मा इध वुत्तम्पि पमाणमेवाति पाठसेसं कत्वा **वजिरबुद्धित्थेरो** वदति। तत्थ **इधा** ति इमिस्सा समन्तपासादिकाया ति अत्थो गहेतब्बो।

तत्थ "यस्मा" ति वचनस्स पठमं वुत्तसम्बन्धवसेन अट्ठकथासु वुत्तं सब्बम्पि पमाणं ति साधितत्ता इदानि वुच्चमानापि संवण्णना केवलं वचनमत्तेनेव भिन्ना, अत्थतो पन अट्ठकथायेवा ति दस्सेतुं **"ततो च भासन्तरमेवा"** ति आदिमाह। पच्छा वुत्तसम्बन्धवसेन पन इध वुत्तम्पि कस्मा पमाणं ति चे? यस्मा वचनमत्तं ठपेत्वा एसापि अट्ठकथायेव, तस्मा पमाणं ति दस्सेतुं **"ततो च भासन्तरमेवा"** ति आदिमाह। एवमाकुलं दुब्बिञ्ञेय्यसभावञ्च कत्वा **गण्ठिपदेसु** सम्बन्धो दस्सितो, अनाकुलवचनो च भदन्तबुद्धघोसाचरियो। न हि सो एवमाकुलं कत्वा वत्तुमरहति, तस्मा यथाधिप्पेतमत्थमनाकुलं सुविञ्ञेय्यञ्च कत्वा यथाट्ठितस्स सम्बन्धवसेनेव दस्सयिस्साम। कथं? यस्मा अट्ठकथासु वुत्तं पमाणं, तस्मा सक्कच्चं अनुसिक्खितब्बाति एवमेत्थ सम्बन्धो दट्ठब्बो। यदि नाम अट्ठकथासु वुत्तं पमाणं, अयं पन इदानि वुच्चमाना कस्मा सक्कच्चं अनुसिक्खितब्बाति आह—**"ततो च भासन्तरमेव हित्वा"** ति आदि। B 23
इदं वुत्तं होति—यस्मा अट्ठकथासु वुत्तं पमाणं, यस्मा च अयं संवण्णनापि भासन्तरपरिच्चागादिमत्तविसिट्ठा, अत्थतो पन अभिन्नाव, ततोयेव च पमाणभूता हेस्सति, तस्मा सक्कच्चं आदरं कत्वा **अनुसिक्खितब्बा** ति। तथा हि पोराणट्ठकथानं पमाणभावो, इमिस्सा च संवण्णनाय भासन्तरपरिच्चागादिमत्तविसिट्ठाय अत्थतो ततो अभिन्नभावो ति उभयम्पेतं सक्कच्चं अनुसिक्खितब्बभावहेतूति दट्ठब्बं। न हि केवलं पोराणट्ठकथानं सतिपि पमाणभावे अयं संवण्णना ततो भिन्ना अत्थतो अञ्ञायेव च सक्कच्चं अनुसिक्खितब्बा ति वत्तुमरहति, नापि इमिस्सा संवण्णनाय ततो अभिन्नभावेपि पोराणट्ठकथानं असति पमाणभावे अयं संवण्णना सक्कच्चं अनुसिक्खितब्बा ति वत्तुं युत्तरूपा होति, तस्मा यथावुत्तनयेन उभयम्पेतं सक्कच्चं अनुसिक्खितब्बभावहेतूति दट्ठब्बं।

ततो ति अट्ठकथातो। **भासन्तरमेव हित्वा** ति कञ्चुकसदिसं सीहळभासं अपनेत्वा। **वित्थारमग्गञ्च समासयित्वाति** पोराणट्ठकथासु उपरि वुच्चमानम्पि आनेत्वा तत्थ तत्थ पपञ्चितं "ञत्तिचतुत्थेन कम्मेन अकुप्पेन ठानारहेन उपसम्पन्नोति भिक्खू" ति[2] एत्थ अपलोकनादीनं चतुन्नम्पि कम्मानं वित्थारकथा विय तादिसं वित्थारमग्गं सङ्खिपित्वा वण्णयिस्सामाति अधिप्पायो। तथा हि वक्खति—

"एत्थ च ञत्तिचतुत्थकम्मं एकमेव आगतं, इमस्मिं पन ठाने ठत्वा चत्तारि संघकम्मानि नीहरित्वा वित्थारतो कथेतब्बानीति सब्बअट्ठकथासु वुत्तं, तानि च 'अपलोकनकम्मं ञत्तिकम्मं ञत्तिदुतियकम्मं ञत्तिचतुत्थकम्मं' ति पटिपाटिया ठपेत्वा

1. दट्ठब्बोति (सी० स्या०)। 2. वि० १-२८ पिट्ठे

वित्थारेन खन्धकतो परिवारावसाने कम्मविभङ्गतो च पाळिं आहरित्वा कथितानि। तानि मयं परिवारावसाने कम्मविभङ्गेयेव वण्णयिस्साम। एवञ्हि सति पठमपाराजिकवण्णना च न भारिया भविस्सति, यथाठिताय च पाळिया वण्णना सुविञ्ञेय्या भविस्सति, तानि च ठानानि असुञ्ञानि भविस्सन्ति, तस्मा अनुपदवण्णनमेव करोमा'' ति[1]।

B 24 **विनिच्छयं सब्बमसेसयित्वा** ति तं तं अट्ठकथासु वुत्तं सब्बम्पि विनिच्छयं असेसयित्वा सेसं अकत्वा, किञ्चिमत्तम्पि अपरिच्चजित्वा ति वुत्तं होति। वण्णितं युत्तरूपं हुत्वा अनुक्कमेन आगतं पाळिं अपरिच्चजित्वा संवण्णनतो सीहळट्ठकथासु अयुत्तट्ठाने वण्णितं यथाट्ठानेयेव संवण्णनतो च वुत्तं ''**तन्तिक्कमं किञ्चि अवोक्कमित्वा**'' ति, किञ्चि पाळिक्कमं अनतिक्कमित्वा अनुक्कमेनेव वण्णयिस्सामा ति अधिप्पायो।

सुत्तन्तिकानं वचनानमत्थं ति सुत्तन्तपाळियं आगतानम्पि वचनानमत्थं। सीहळट्ठकथासु ''सुत्तन्तिकानं भारो'' ति वत्वा अवुत्तानम्पि वेरञ्जकण्डादीसु झानकथाआनापानस्सतिसमाधिआदीनं सुत्तन्तवचनानमत्थं तं तं सुत्तानुरूपं सब्बसो परिदीपयिस्सामीति अधिप्पायो। **हेस्सती** ति भविस्सति, करियिस्सतीति वा अत्थो। एत्थ च पठमस्मिं अत्थविकप्पे भासन्तरपरिच्चागादिकं चतुब्बिधं किच्चं निप्फादेत्वा सुत्तन्तिकानं वचनानमत्थं परिदीपयन्ती अयं वण्णना भविस्सतीति वण्णनाय वसेन समानकत्तुकता वेदितब्बा। पच्छिमस्मिं अत्थविकप्पे पन हेट्ठावुत्तभासन्तरपरिच्चागादिं कत्वा सुत्तन्तिकानं वचनानमत्थं परिदीपयन्ती अयं वण्णना अम्हेहि करियिस्सतीति एवं आचरियवसेन समानकत्तुकता वेदितब्बा। **वण्णनापी** ति एत्थ अपि सद्दं गहेत्वा ''तस्मापि सक्कच्चं अनुसिक्खितब्बाति योजेतब्बं'' ति **चूळगण्ठिपदे** वुत्तं। तत्थ पुब्बे वुत्तप्पयोजनविसेसं पमाणभावञ्च सम्पिण्डेतीति अधिप्पायो। मज्झिमगण्ठिपदे पन ''तस्मा सक्कच्चं अनुसिक्खितब्बापी'' ति सम्बन्धो वुत्तो। एत्थ पन न केवलं अयं वण्णना हेस्सति, अथ खो अनुसिक्खितब्बापीति इममत्थं सम्पिण्डेतीति अधिप्पायो। एत्थापि यथाठितवसेनेव अपि सद्दस्स अत्थो गहेतब्बो ति अम्हाकं खन्ति। इदं वुत्तं होति—यस्मा अट्ठकथासु वुत्तं पमाणं, यस्मा च अयं वण्णनापि ततो अभिन्नत्ता पमाणभूतायेव हेस्सति, तस्मा सक्कच्चं अनुसिक्खितब्बा ति।

गन्थारम्भकथावण्णना निट्ठिता।

---

१. वि०-ट्ठ-१-२०७ पिट्ठे।

बाहिरनिदानकथा

इदानि "तं वण्णयिस्सं विनयं" ति पटिञ्ञातत्ता यथापटिञ्ञातविनयसंवण्णनं B 25
कत्तुकामो संवरविनयपहानविनयादिवसेन विनयस्स बहुविधत्ता इध संवण्णेतब्बभावेन अधिप्पेतो ताव विनयो ववत्थपेतब्बो ति दस्सेन्तो आह "**तत्था**" ति आदि। तत्थ "**तत्था** ति तासु गाथासु। **ताव**—सद्दो पठमं ति इमस्मिं अत्थे दट्ठब्बो। तेन पठमं विनयं ववत्थपेत्वा पच्छा तस्स वण्णनं करिस्सामी ति दीपेति। **ववत्थपेतब्बो** ति नियमेतब्बो। **तेनेतं वुच्चतीति** यस्मा ववत्थपेतब्बो, तेन हेतुना एतं "विनयो नामा" ति आदिकं नियामकवचनं वुच्चतीति अत्थो। **अस्सा** ति विनयस्स। **मातिकाति** उद्देसो। सो हि निद्देसपदानं जननीठाने ठितत्ता माता विया ति मातिका ति वुच्चति।

इदानि वण्णेतब्बमत्थं मातिकं ठपेत्वा दस्सेन्तो आह "**वुत्तं येना**" ति आदि। इदं वुत्तं होति—एतं "तेन समयेन बुद्धो भगवा वेरञ्जायं विहरती" ति आदि निदानवचनपटिमण्डितं विनयपिटकं येन पुग्गलेन वुत्तं, यस्मिं काले वुत्तं, यस्मा कारणा वुत्तं, येन धारितं, येन च आभतं, येसु पतिट्ठितं, एतं यथावुत्तविधानं वत्वा ततो "तेन समयेना" ति आदि पाठस्स अत्थं अनेकप्पकारतो दस्सयन्तो विनयस्स अत्थवण्णनं करिस्सामीति। एत्थ च "वुत्तं येन यदा यस्मा" ति इदं वचनं "तेन समयेन बुद्धो भगवा" ति आदि निदानवचनमत्तं अपेक्खित्वा वत्तुकामोपि विसुं अवत्वा 'निदानेन आदिकल्याणं, 'इदमवोचा' ति निगमनेन परियोसानकल्याणं" ति च वचनतो निदाननिगमनानिपि सत्थुदेसनाय अनुविधानत्ता तदन्तोगधानेवा ति निदानस्सपि विनयपाळियंयेव अन्तोगधत्ता "वुत्तं येन यदा यस्मा" ति इदम्पि विनयपिटकसम्बन्धंयेव कत्वा मातिकं ठपेसि। मतिकाय हि "एतं" ति वुत्तं विनयपिटकंयेव सामञ्ञतो सब्बत्थ सम्बन्धमुपगच्छति।

इदानि पनं तं विसुं नीहरित्वा दस्सेन्तो "**तत्थ वुत्तं येना**" ति आदिमाह। तत्थ **तत्था** ति तेसु मतिकापदेसु। अथ कस्मा इदमेव वचनं सन्धाय वुत्तं ति आह "**इदञ्हो**" ति आदि। **इदं** ति "तेन समयेन बुद्धो भगवा" ति आदिवचनं। B 26
हि—सद्दो यस्माति अत्थो दट्ठब्बो, यस्मा बुद्धस्स भगवतो अत्तपच्चक्खवचनं न होति, तस्माति वुत्तं होति। **अत्तपच्चक्खवचनं न होतीति** अत्तनो[1] पच्चक्खं कत्वा वुत्तवचनं न होति, भगवता वुत्तवचनं न होतीति अधिप्पायो। "अत्तपच्चक्खवचनं न होती ति आहच्च भासितं न होती ति अधिप्पायो" ति **केनचि** वुत्तं। **गण्ठिपदे** पन "अत्तपच्चक्खवचनं न होतीति अत्तनो धरमानकाले वुत्तवचनं न होती" ति लिखितं। तदुभयम्पि अत्थतो समानमेव। इदानि पञ्हकरणं वत्वा अनुक्कमेन यथावुत्तपञ्ह-

---

१. अत्तना (स्या०)।

विस्सज्जनं करोन्तो "**आयस्मता**" ति आदिमाह। इमिना पुग्गलं नियमेति, "**तञ्चा**"ति आदिना कालं नियमेति। तञ्च उपालित्थेरेन वुत्तवचनं कालतो पठममहासङ्गीतिकाले वुत्तं ति अत्थो।

पठममहासङ्गीतिकथावण्णना

इदानि तं पठममहासङ्गीतिं दस्सेतुकामो तस्सा तन्ति आरुळ्हाय इध वचने कारणं दस्सेन्तो **पठममहासङ्गीति नाम चेसा**...पे०...**वेदितब्बा**" ति आह। **पठममहासङ्गीति नाम चेसा** ति **च**—सद्दो ईदिसेसु ठानेसु वत्तब्बसम्पिण्डनत्थो, तञ्च पठममहासङ्गीतिकाले वुत्तं। एसा च पठममहासङ्गीति एवं वेदितब्बाति वुत्तं होति। उपञ्ञासत्थो वा च-सद्दो। **उपञ्ञासोति** च वाक्यारम्भो वुच्चति। एसा हि गन्थकारानं पकति, यदिदं किञ्चि वत्वा पुन: परं वत्तुमारभन्तानं च सद्दप्पयोगो। यं पन **केनचि** वुत्तं "पठममहासङ्गीति नाम चाति एत्थ च-सद्दो अतिरेकत्थो, तेन अञ्ञापि अत्थीति दीपेती" ति। तदेव तस्स गन्थक्कमे अकोविदतं दस्सेति। न हेत्थ च सद्देन अतिरेकत्थो विञ्ञायति। यदि चेत्थ एतदत्थोयेव च-कारो अधिप्पेतो सिया, एवं सति न कत्तब्बोयेव पठमसद्देनेव अञ्ञासं दुतियादिसङ्गीतीनम्पि अत्थिभावस्स दीपितत्ता। दुतियादिं उपादाय हि पठमसद्दप्पयोगो दीघादिं उपादाय रस्सादिसद्दप्पयोगो विय। यथापच्चयं तत्थ तत्थ देसितत्ता पञ्ञत्तत्ता च विप्पकिण्णानं धम्मविनयानं सङ्गहेत्वा गायनं कथनं **सङ्गीति**। एतेन तं तं सिक्खापदानं सुत्तानञ्च आदिपरियो-
B 27 सानेसु अन्तरन्तरा च सम्बन्धवसेन ठपितं सङ्गीतिकारवचनं सङ्गहितं होति। महाविसयत्ता पूजनीयत्ता च महती सङ्गीति **महासङ्गीति**, पठमा महासङ्गीति **पठममहासङ्गीति**। "**निदानकोसल्लत्थं** ति निददाति देसनं देसकालादिवसेन अविदितं विदितं कत्वा निदस्सेतीति निदानं, तत्थ कोसल्लं निदानकोसल्लं, तदत्थं ति अत्थो।

सत्तानं दस्सनानुत्तरियसरणादिपटिलाभहेतुभूतासु विज्जमानासुपि अञ्ञासु भगवतो किरियासु "बुद्धो बोधेय्यं" ति पटिञ्ञाय अनुलोमनतो वेनेय्यानं मग्गफलुप्पत्तिहेतुभूता किरिया निप्परियायेन बुद्धकिच्चंति आह "**धम्मचक्कप्पवत्तनञ्हि आदिं कत्वा**" ति। तत्थ सद्धिन्द्रियादिधम्मोयेव पवत्तनट्ठेन चक्कं ति **धम्मचक्कं**। अथ वा चक्कं ति आणा, धम्मतो अनपेतत्ता धम्मञ्च तं चक्कञ्चाति धम्मचक्कं, धम्मेन ञायेन चक्कं ति पि धम्मचक्कं। यथाह—

"धम्मञ्च पवत्तेति चक्कञ्चाति धम्मचक्कं, चक्कञ्च पवत्तेति धम्मञ्चाति धम्मचक्कं, धम्मेन पवत्तेतीति धम्मचक्कं, धम्मचरियाय पवत्तेतीति धम्मचक्कं" ति आदि[१]।

कतबुद्धकिच्चेति कतं परिनिट्ठापितं बुद्धकिच्चं येन, तस्मिं कतबुद्धकिच्चे भगवति लोकनाथेति सम्बन्धो। एतेन बुद्धकत्तब्बस्स कस्सचिपि असेसितभाव दस्सेति।

---

१. अत्तना (स्या०)

१. खु० ९-३४३ पिट्ठे।

ततोयेव हि सो भगवा परिनिब्बुतो ति। ननु च सावकेहि विनीतापि विनेय्या भगवतायेव विनीता होन्ति, तथा हि सावकभासितं सुत्तं बुद्धवचनं ति वुच्चति, सावकविनेय्या च न ताव विनीता ति ? नायं दोसो तेसं विनयनूपायस्स सावकेसु ठपितत्ता। तेनेवाह—

"न तावाहं पापिम, परिनिब्बायिस्सामि, याव न भिक्खू वियत्ता विनीता विसारदा बहुस्सुता आगतागमा धम्मधरा विनयधरा मातिकाधरा उप्पन्नं परप्पवादं सहधम्मेन सुनिग्गहितं निग्गहेत्वा सप्पाटिहारियं धम्मं देसेस्सन्ती" ति आदि[1]।

"कुसिनारायं" ति आदिना भगवतो परिनिब्बुतदेसकालविसेसदस्सनं, "अपरिनिब्बुतो भगवा" ति गाहस्स मिच्छाभावदस्सनत्थं लोके जातसंवड्ढ- B 28 भावदस्सनत्थञ्च। तथा हि मनुस्सभावस्स सुपाकटकरणत्थं महाबोधिसत्ता चरिमभवे दारपरिग्गहादीनिपि करोन्तीति। **कुसिनारायं** ति एवं नामके नगरे। समीपत्थे चेतं भुम्मवचनं। **उपवत्तने मल्लानं सालवने** ति तस्स नगरस्स उपवत्तनभूतं मल्लराजूनं सालवनुय्यानं दस्सेति। तत्थ नगरं पविसितुकामा उय्यानतो उपेच्च वत्तन्ति गच्छन्ति एतेनाति उपवत्तनं ति सालवनं वुच्चति। यथा हि अनुराधपुरस्स थूपारामो दक्खिणपच्छिमदिसायं, एवं तं उय्यानं कुसिनाराय दक्खिणपच्छिमदिसाय होति। यथा च थूपारामतो दक्खिणद्वारेन नगरं पविसनमग्गो पाचीनमुखो गन्त्वा उत्तरेन निवत्तति, एवं उय्यानतो सालपन्ति पाचीनमुखा गन्त्वा उत्तरेन निवत्ता, तस्मा तं "उपवत्तनं" ति वुच्चति। **यमकसालानमन्तरे** ति यमकसालानं वेमज्झे। तत्थ किर भगवतो पञ्ञत्तस्स परिनिब्बानमञ्चस्स एका सालपन्ति सीसभागे होति, एका पादभागे, तत्रापि एको तरुणसालो सीसभागस्स आसन्नो होति, एको पादभागस्स, तस्मा "यमकसालानमन्तरे" ति वुत्तं। अपि च "यमकसाला नाम मूलक्खन्धविटपपत्तेहि अञ्ञमञ्ञं संसिब्बेत्वा ठितसाला" ति पि **महाअट्ठकथायं** वुत्तं।

अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया ति उपादीयते कम्मकिलेसेहीति उपादि, विपाकक्खन्धा कटत्ता च रूपं। सो पन उपादि किलेसाभिसङ्खारमारनिम्मथनेन निब्बानप्पत्तियं अनोस्सट्ठो, इध खन्धमच्चुमारनिम्मथनेन ओस्सट्ठो निसेसितो ति अयं अनुपादिसेसा निब्बानधातु नत्थि एतिस्सा उपादिसेसो ति कत्वा। **निब्बानधातू** ति चेत्थ निब्बुतिमत्तं अधिप्पेतं, इत्थम्भूतलक्खणे चायं करणनिद्देसो। **परिनिब्बाने** ति परिनिब्बानट्ठाने, निमित्तत्थे वा भुम्मवचनं, परिनिब्बानहेतुसन्निपतितानं ति अत्थो। संघस्स थेरो **संघत्थेरो**। सो पन संघो किं परिमाणो ति आह "**सत्तन्नं भिक्खुसतसहस्सानं** ति। निच्चसापेक्खत्ता हि ईदिसेसु समासो होतियेव यथा "देवदत्तस्स गरुकुलं" ति। "**सत्तन्नं भिक्खुसतसहस्सानं** ति च संघत्थेरानंयेव सत्तन्नं भिक्खुसतसहस्सानं। तदा हि "सन्निपतिता भिक्खू एत्तका" ति पमाणरहिता। तथा हि वेळुवगामे वेदनाविक्खम्भनतो पट्ठाय "न चिरेन भगवा परिनिब्बायिस्सती" ति सुत्वा ततो ततो आगतेसु भिक्खूसु

---

१. दी० २-८७ पिट्ठे।

B 29 एकभिक्खुपि पक्कन्तो नाम नत्थि, तस्मा गणनं वीतिवत्तो संघो अहोसि। आयस्मा महाकस्सपो धम्मविनयसङ्गायनत्थं भिक्खूनं उस्साहं जनेसीति सम्बन्धो।

तत्थ **महाकस्सपो** ति महन्तेहि सीलक्खन्धादीहि समन्नागतत्ता महन्तो कस्सपोति महाकस्सपो, अपि च कुमारकस्सपत्थेरं उपादाय अयं महाथेरो "महाकस्सपो" ति वुच्चति। अथ किमत्थं आयस्मा महाकस्सपो धम्मविनयसङ्गायनत्थं उस्साहं जनेसीति आह "**सत्ताहपरिनिब्बुते**" ति आदि। सत्त अहानि समाहटानि सत्ताहं, सत्ताहं परिनिब्बुतस्स अस्सा ति **सत्ताहपरिनिब्बुतो**, भगवा, तस्मिं सत्ताहपरिनिब्बुते भगवति, भगवतो परिनिब्बानदिवसतो पट्ठाय सत्ताहे वीतिवत्तेति वुत्तं होति। सुभद्देन वुड्ढपब्बजितेन वुत्तवचनं समनुस्सरन्तोति सम्बन्धो। तत्थ **सुभद्दो** ति तस्स नामं, वुड्ढकाले पन पब्बजितत्ता **वुड्ढपब्बजितो** ति वुच्चति। "**अलं आवुसो**" ति आदिना तेन वुत्तवचनं निदस्सेति। सो हि सत्ताहपरिनिब्बुते भगवति आयस्मता महाकस्सपत्थेरेन सद्धिं पावाय कुसिनारं अद्धानमग्गप्पटिपन्नेसु पञ्चमत्तेसु भिक्खुसतेसु अवीतरागे भिक्खू अन्तरामग्गे दिट्ठआजीवकस्स सन्तिका भगवतो परिनिब्बानं सुत्वा पत्तचीवरानि छड्डेत्वा बाहा पग्गय्ह नानप्पकारं परिदेवन्ते दिस्वा एवमाह।

कस्मा पन सो एवमाह? भगवति आघातेन। अयं किर सो **खन्धके**[1] आगते आतुमावत्थुस्मिं नहापितपुब्बको वुड्ढपब्बजितो भगवति कुसिनारतो निक्खमित्वा अड्ढतेळसेहि भिक्खुसतेहि सद्धिं आतुमं गच्छन्ते "भगवा आगच्छती" ति सुत्वा आगतकाले "यागुदानं करिस्सामी" ति सामणेरभूमियं ठिते द्वे पुत्ते एतदवोच "भगवा किर ताता आतुमं आगच्छति महता भिक्खुसंघेन सद्धिं अड्ढतेळसेहि भिक्खुसतेहि, गच्छथ तुम्हे ताता खुरभण्डं आदाय नाळियावापकेन अनुघरकं अनुघरकं आहिण्डथ, लोणम्पि तेलम्पि तण्डुलम्पि खादनीयम्पि संहरथ, भगवतो आगतस्स यागुदानं करिस्सामी" ति। ते तथा अकंसु। अथ भगवति आतुमं आगन्त्वा भुसागारकं पविट्ठे सुभद्दो सायन्हसमयं गामद्वारं गन्त्वा मनुस्से आमन्तेत्वा "हत्थकम्ममत्तं मे देथा" ति
B 30 हत्थकम्मं याचित्वा "किं भन्ते करोमा" ति वुत्ते "इदञ्चिदञ्च गण्हथा" ति सब्बूपकरणानि गाहापेत्वा विहारे उद्धनानि कारेत्वा एकं काळकं कासावं निवासेत्वा तादिसमेव पारुपित्वा "इदं करोथ, इदं करोथा" ति सब्बरत्तिं विचारेन्तो सतसहस्सं विस्सज्जेत्वा भोज्जयागुञ्च मधुगोळकञ्च पटियादापेसि। **भोज्जयागु** नाम भुञ्जित्वा पातब्बयागु, तत्थ सप्पिमधुफाणितमच्छमंसपुप्फफलरसादि यं किञ्चि खादनीयं नाम अत्थि, तं सब्बं पविसति, कीळितुकामानं सीसमक्खनयोग्गा होति सुगन्धगन्धा।

अथ भगवा कालस्सेव सरीरपटिजग्गनं कत्वा भिक्खुसंघपरिवुतो पिण्डाय चरितुं आतुमाभिमुखो पायासि। मनुस्सा तस्स आरोचेतुं "भगवा पिण्डाय गामं पविसति, तया तस्स यागु पटियादिता" ति। सो यथानिवत्थपारुतेहेव तेहि काळककासावेहि एकेन हत्थेन दब्बिञ्च कटच्छुञ्च गहेत्वा ब्रह्मा विय दक्खिणजाणुमण्डलं

१. वि० ३-३४७ पिट्ठे।

भूमियं पतिट्ठापेत्वा वन्दित्वा "पटिग्गण्हतु मे भन्ते भगवा यागुं" ति आह। ततो "जानन्तापि तथागता पुच्छन्ती" ति **खन्धके**[1] आगतनयेन भगवा पुच्छित्वा च सुत्वा च तं वुड्ढपब्बजितं विगरहित्वा तस्मिं वत्थुस्मिं अकप्पियसमादापनसिक्खापदं खुरभण्डपरिहरणसिक्खापदञ्चाति द्वे सिक्खापदानि पञ्ञपेत्वा "भिक्खवे अनेककप्पकोटियो भोजनं परियेसन्तेहेव वीतिनामिता, इदं पन तुम्हाकं अकप्पियं, अधम्मेन उप्पन्नभोजनं इमं परिभुञ्जित्वा अनेकानि अत्थभावसहस्सानि अपायेस्वेव निब्बत्तिस्सन्ति, अपेथ मा गण्हथा" ति भिक्खाचाराभिमुखो अगमासि, एकभिक्खुनापि न किञ्चि गहितं।

सुभद्दो अनत्तमनो हुत्वा "अयं 'सब्बं जानामी' ति आहिण्डति, सचे न गहेतुकामो पेसेत्वा आरोचेतब्बं अस्स, पक्काहारो नाम सब्बचिरं तिट्ठन्तो सत्ताहमत्तं तिट्ठेय्य, इदञ्च मम यावजीवं परियत्तं अस्स, सब्बं तेन नासितं, अहितकामो अयं मय्हं" ति भगवति आघातं बन्धित्वा दसबले धरमाने किञ्चि वत्तुं नासक्खि। एवं किरस्स अहोसि "अयं उच्चकुला पब्बजितो महापुरिसो, सचे किञ्चि वक्खामि, ममंयेव सन्तज्जेस्सती" ति। स्वायं अज्ज महाकस्सपत्थेरेन सद्धिं आगच्छन्तो "परिनिब्बुतो भगवा" ति सुत्वा लद्धस्सासो विय हट्ठतुट्ठो एवमाह। थेरो पन तं सुत्वा B 31
हदये पहारं विय मत्थके पतितसुक्कासनिं विय मञ्ञि, धम्मसंवेगो चस्स उप्पज्जि "सत्ताहमत्तपरिनिब्बुतो भगवा, अज्जापिस्स सुवण्णवण्णं सरीरं धरतियेव, दुक्खेन भगवता आराधितसासने नाम एवं लहुं महन्तं पापकसढं कण्टको[2] उप्पन्नो, अलं खो पनेस पापो वड्ढमानो अञ्ञेपि एवरूपे सहाये लभित्वा सासनं ओसक्कापेतुं" ति।

ततो थेरो चिन्तेसि "सचे खो पनाहं इमं महल्लकं इधेव पिलोतिकं निवासेत्वा छारिकाय ओकिरापेत्वा नीहरापेस्सामि, मनुस्सा 'समणस्स गोतमस्स सरीरे धरमानेयेव सावका विवदन्ती' ति अम्हाकं दोसं दस्सेस्सन्ति, अधिवासेमि ताव। भगवता हि देसितधम्मो असङ्गहितपुप्फरासिसदिसो, तत्थ यथा वातेन पहटपुप्फानि यतो वा ततो वा गच्छन्ति, एवमेव एवरूपानं वसेन गच्छन्ते गच्छन्ते काले विनये एकं द्वे सिक्खापदानि नस्सिस्सन्ति विनस्सिस्सन्ति, सुत्ते एको द्वे पञ्हवारा नस्सिस्सन्ति, अभिधम्मे एकं द्वे भूमन्तरानि नस्सिस्सन्ति, एवं अनुक्कमेन मूले नट्ठे पिसाचसदिसा भविस्साम, तस्मा धम्मविनयसङ्गहं करिस्सामि, एवं सति दळ्हसुत्तेन सङ्गहितपुप्फानि विय अयं धम्मविनयो निच्चलो भविस्सति। एतदत्थञ्हि भगवा मय्हं तीणि गावुतानि पच्चुग्गमनं अकासि, तीहि ओवादेहि उपसम्पदं अकासि, कायतो चीवरपरिवत्तनं अकासि, आकासे पाणिं चालेत्वा चन्दोपमपटिपदं कथेन्तो मञ्ञेव सक्खिं कत्वा कथेसि, तिक्खत्तुं सकलसासनरतनं पटिच्छापेसि, मादिसे भिक्खुम्हि तिट्ठमाने अयं पापो सासने वड्ढिं मा अलत्थु, याव अधम्मो न दिप्पति, धम्मो न पटिबाहीयति, अविनयो न दिप्पति, विनयो न पटिबाहीयति, अधम्मवादिनो न बलवन्तो होन्ति, धम्मवादिनो न दुब्बला

---

१. वि० ३-३४७ विट्ठे।　　　　२. पापकसटकण्टको (सी०)।

होन्ति, अविनयवादिनो न बलवन्तो होन्ति, विनयवादिनो न दुब्बला होन्ति, ताव धम्मञ्च विनयञ्च सङ्गायिस्सामि, ततो भिक्खू अत्तनो अत्तनो पहोनकं गहेत्वा कप्पियाकप्पिये कथेस्सन्ति, अथायं पापो सयमेव निग्गहं पापुणिस्सति, पुन सीसं उक्खिपितुं न सक्खिस्सति, सासनं इद्धञ्चेव फीतञ्च भविस्सती" ति। चिन्तेत्वा
B 32 सो "एवं नाम मय्हं चित्तं उप्पन्नं" ति कस्सचि अनारोचेत्वा भिक्खुसंघं समस्सासेत्वा अथ पच्छा धातुभाजन दिवसे धम्मविनयसङ्गायनत्थं भिक्खूनं उस्साहं जनेसि। तेन वुत्तं "आयस्मा महाकस्सपो सत्ताहपरिनिब्बुते····पे०····धम्मविनयसङ्गायनत्थं भिक्खूनं उस्साहं जनेसी" ति।

तत्थ **अलं** ति पटिक्खेपवचनं। **आवुसो** ति परिदेवन्ते भिक्खू आलपति। **मा सोचित्था** ति चित्ते उप्पन्नबलवसोकेन मा सोचित्थ। **मा परिदेवित्था** ति वाचाय मा परिदेवित्थ "परिदेवनं विलापो" ति वचनतो। इदानि असोचनादीसु कारणं दस्सेन्तो "**सुमुत्ता मयं**" ति आदिमाह। **तेन महासमणेना** ति निस्सक्के करणवचनं, ततो महासमणतो सुट्ठु मुत्ता मयं ति अत्थो, उपद्दुता च होम तदाति अधिप्पायो। **होमा** ति वा अतीतत्थे वत्तमानवचनं, अहुम्हा ति अत्थो, अनुस्सरन्तो धम्मसंवेग वसेनाति अधिप्पायो। धम्मसभावचिन्तावसेन पवत्तं सहोत्तप्पञाणं धम्मसंवेगो। वुत्तञ्हेतं—

"सब्बसङ्खतधम्मेसु, ओत्तप्पाकारसण्ठितं।
ञाणमोहितभारानं, धम्मसंवेगसञ्ञितं" ति।

ठानं खो पनेतं विज्जती ति तिट्ठति एत्थ फलं तदायत्तवुत्तितायाऽति ठानं, हेतु। **खो** ति अवधारणे, एतं कारणं विज्जतेव, नो न विज्जतीति अत्थो। किं तं कारणं ति आह "**यं पापभिक्खू**" ति आदि। एत्थ यं ति निपातमत्तं, कारणनिद्देसो वा, येन कारणेन अन्तरधापेय्युं, तदेतं कारणं विज्जतीति अत्थो। **पापभिक्खू** ति पापिकाय लामिकाय इच्छाय समन्नागता भिक्खू। अतोतो अतिक्कन्तो सत्था एत्थ, एतस्साति वा **अतीतसत्थुकं**, पावचनं। पधानं वचनं **पावचनं**, धम्मविनयं ति वुत्तं होति। **पक्खं लभित्वा** ति अलज्जीपक्खं लभित्वा। **न चिरस्सेवा** ति न चिरेनेव। **याव च धम्मविनयो तिट्ठती** ति यत्तकं कालं धम्मो च विनयो च लज्जीपुग्गलेसु तिट्ठति।

वुत्तञ्हेतं भगवता ति परिनिब्बानमञ्चके निपन्नेन भगवता भिक्खू ओवदन्तेन एतं वुत्तं ति अत्थो। **देसितो पञ्ञत्तो**ति धम्मोपि देसितो चेव पञ्ञत्तो च। सुत्ताभि-धम्मसङ्गहितस्स हि धम्मस्स अभिसज्जनं पबोधनं देसना, तस्सेव पकारतो ञापनं
B 33 विनेय्यसन्ताने ठपनं पञ्ञापनं, तस्मा धम्मोपि देसितो चेव पञ्ञत्तो चाति वुत्तो। **पञ्ञत्तो** ति च ठपितो ति अत्थो। विनयोपि देसितो चेव पञ्ञत्तो च। विनयतन्ति-सङ्गहितस्स हि अत्थस्स कायवाचानं विनयनतो विनयो ति लद्धाधिवचनस्स अतिसज्जनं पबोधनं देसना, तस्सेव पकारतो ञापनं असङ्करतो ठपनं पञ्ञापनं, तस्मा विनयोपि देसितो चेव पञ्ञत्तो चाति वुच्चति।

सो वो ममच्चयेना ति सो धम्मविनयो तुम्हाकं ममच्चयेन सत्था। इदं वुत्तं होति—मया वो ठितेनेव "इदं लहुकं, इदं गरुकं, इदं सतेकिच्छं, इदं अतेकिच्छं, इदं लोकवज्जं, इदं पण्णत्तिवज्जं। अयं आपत्ति पुग्गलस्स सन्तिके वुट्ठाति, अयं गणस्स, अयं संघस्स सन्तिके वुट्ठाती" ति सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं अवीतिक्कमनीयतावसेन ओतिण्णवत्थुस्मिं सखन्धकपरिवारो उभतोविभङ्गो महाविनयो नाम देसितो, तं सकलम्पि विनयपिटकं मयि परिनिब्बुते तुम्हाकं सत्थुकिच्चं साधेस्सति "इदं वो कत्तब्बं, इदं वो न कत्तब्बं" ति कत्तब्बाकत्तब्बस्स विभागेन अनुसासनतो। ठितेनेव च मया "इमे चत्तारो सतिपट्ठाना, चत्तारो सम्मप्पधाना, चत्तारो इद्धिपादा, पञ्चिन्द्रियानि, पञ्च बलानि, सत्त बोज्झङ्गानि, अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो" ति तेन तेन विनेय्यानं अज्झासयानुरूपेन पकारेन इमे सत्ततिंस बोधिपक्खियधम्मे विभजित्वा सुत्तन्तपिटकं देसितं, तं सकलम्पि सुत्तन्तपिटकं मयि परिनिब्बुते तुम्हाकं सत्थुकिच्चं साधेस्सति तं तंचरियानुरूपं सम्मापटिपत्तिया अनुसासनतो। ठितेनेव च मया "पञ्चक्खन्धा, द्वादसायतनानि, अट्ठारस धातुयो, चत्तारि सच्चानि, बावीसतिन्द्रियानि, नव हेतू, चत्तारो आहारा, सत्त फस्सा, सत्त वेदना, सत्त सञ्ञा, सत्त चेतना, सत्त चित्तानि, तत्रापि एत्तका धम्मा कामावचरा, एत्तका रूपावचरा, एत्तका अरूपावचरा, एत्तका परियापन्ना, एत्तका अपरियापन्ना, एत्तका लोकिया, एत्तका लोकुत्तरा" ति इमे धम्मे विभजित्वा अभिधम्मपिटकं देसितं, तं सकलम्पि अभिधम्मपिटकं मयि परिनिब्बुते तुम्हाकं सत्थुकिच्चं साधेस्सति, खन्धादिविभागेन ञायमानं चतुसच्चसम्बोधावहत्ता सत्थारा सम्मासम्बुद्धेन कत्तब्बकिच्चं निप्फादेस्सति। इति सब्बम्पेतं अभिसम्बोधितो याव परिनिब्बाना पञ्चचत्तालीस वस्सानि भासितं लपितं, तीणि पिटकानि, पञ्च निकाया नवङ्गानि चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानीति एवं महप्पभेदं होति। इति इमानि चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानि तिट्ठन्ति, अहं एकोव परिनिब्बायामि, B 34
अहञ्च पनिदानि एकोव ओवदामि अनुसासामि, मयि परिनिब्बुते इमानि चतुरासीति बुद्धसहस्सानि तुम्हे ओवदिस्सन्ति अनुसासिस्सन्ति ओवादानुसासनीकिच्चस्स निप्फादनतो ति।

सासनं ति परियत्तिपटिपत्तिपटिवेधवसेन तिविधं सासनं, निप्परियायतो पन सत्ततिंस बोधिपक्खियधम्मा। **अद्धनियं** ति अद्धानमग्गगामीति अद्धनियं, अद्धानक्खमं ति अत्थो। **चिरट्ठितिकं** ति चिरं ठिति एतस्साति चिरट्ठितिकं, सासनं, **अस्स** भवेय्याति सम्बन्धो। इदं वुत्तं होति—यथा येन पकारेन इदं सासनं दीघमद्धानं पवत्तितुं समत्थं, ततोयेव चिरट्ठितिकं अस्स, तथा तेन पकारेन धम्मञ्च विनयञ्च सङ्गायेय्यं ति।

इदानि सम्मासम्बुद्धेन अत्तनो कतं अनुग्गहविसेसं विभावेन्तो आह "**यञ्चाहं भगवता**" ति आदि। तत्थ "यञ्चाहं" ति एतस्स "अनुग्गहितो" ति एतेन सम्बन्धो। तत्थ **यं** ति यस्मा, येन कारणेनाति वुत्तं होति। किरियापरामसनं वा एतं, तेन "अनुग्गहितो" ति एत्थ अनुग्गण्हनं परामसति। **धारेस्ससी** ति आदिकं पन भगवा अञ्ञतरस्मिं रुक्खमूले महाकस्सपत्थेरेन पञ्ञत्तसङ्घाटियं निसिन्नो तं चीवरं विकसित-

पदुमपुप्फवण्णेन पाणिना अन्तरे परामसन्तो आह। वुत्तञ्हेतं **कस्सपसंयुत्ते**[1] महाकस्सपत्थेरेनेव आनन्दत्थेरं आमन्तेत्वा कथेन्तेन—

"अथ खो आवुसो भगवा मग्गा ओक्कम्म येन अञ्ञतरं रुक्खमूलं तेनुपसङ्कमि, अथ ख्वाहं आवुसो पटपिलोतिकानं सङ्घाटिं चतुग्गुणं पञ्ञापेत्वा भगवन्तं एतदवोचं 'इध भन्ते भगवा निसीदतु, यं ममस्स दीघरत्तं हिताय सुखाया' ति। निसीदि खो आवुसो भगवा पञ्ञत्ते आसने, निसज्ज खो मं आवुसो भगवा एतदवोच 'मुदुका खो त्यायं कस्सप पटपिलोतिकानं सङ्घाटी' ति। पटिग्गण्हातु मे भन्ते भगवा पटपिलोतिकानं सङ्घाटिं अनुकम्पं उपादाया ति। धारेस्ससि पन मे त्वं कस्सप साणानि पंसुकूलानि
B 35 निब्बसनानीति। धारेस्सामहं भन्ते भगवतो साणानि पंसुकूलानि निब्बसनानीति। सो ख्वायं आवुसो पटपिलोतिकानं सङ्घाटिं भगवतो पादासिं, अहं पन भगवतो साणानि पंसुकूलानि निब्बसनानि पटिपज्जिं" ति[2]।

तत्थ[3] **मुदुका खो त्यायं** ति मुदुका खो ते अयं। कस्मा भगवा एवमाहा ति? थेरेन सह चीवरं परिवत्तेतुकामताय। कस्मा परिवत्तेतुकामो जातोति? थेरं अत्तनो ठाने ठपेतुकामताय। किं सारिपुत्तमोग्गल्लाना नत्थीति? अत्थि, एवं पनस्स अहोसि "इमे न चिरं ठस्सन्ति, कस्सपो पन वीसवस्ससतायुको, 'सो मयि परिनिब्बुते सत्तपण्णिगुहायं वसित्वा धम्मविनयसङ्गहं कत्वा मम सासनं पञ्चवस्ससहस्सपरिमाणं कालं पवत्तनकं करिस्सती' ति अत्तनो नं ठाने ठपेमि, एवं भिक्खू कस्सपस्स सुस्सूसितब्बं मञ्ञिस्सन्ती" ति, तस्मा एवमाह। थेरो पन यस्मा चीवरस्स वा पत्तस्स वा वण्णे कथिते "इमं तुम्हाकं गण्हथा" ति चारित्तमेव, तस्मा "पटिग्गण्हातु मे भन्ते भगवता" ति आह। **धारेस्ससि पन मे त्वं कस्सपा** ति कस्सप त्वं इमानि परिभोगजिण्णानि पंसुकूलानि पारुपितुं सक्खिस्ससीति वदति। तञ्च खो न कायबलं सन्धाय, पटिपत्तिपूरणं पन सन्धाय एवमाह। अयञ्हेत्थ अधिप्पायो—अहं इमं चीवरं पुण्णं नाम दासिं पारुपित्वा आमकसुसाने छड्डितं तुम्बमत्तेहि पाणकेहि सम्परिकिण्णं ते पाणके विधुनित्वा महाअरियवंसे ठत्वा अग्गहेसिं, तस्स मे इमं चीवरं गहितदिवसे दससहस्सचक्कवाळे महापथवी महारवं विरवमाना कम्पित्थ, आकासं तटतटायि, चक्कवाळदेवता साधुकारं अदंसु "इमं चीवरं गण्हन्तेन भिक्खुना जातिपंसुकूलिकेन जातिआरञ्ञिकेन जातिएकासनिकेन जातिसपदानचारिकेन भवितुं वट्टति, त्वं इमस्स चीवरस्स अनुच्छविकं कातुं सक्खिस्ससी" ति। थेरोपि अत्तना पञ्चन्नं हत्थीनं बलं धारेति। सो तं अतक्कयित्वा "अहमेतं पटिपत्तिं पूरेस्सामी" ति उस्साहेन सुगतचीवरस्स अनुच्छविकं कातुकामो "धारेस्सामहं भन्ते" ति आह। **पटिपज्जिं** ति पटिपन्नोसिं[4]। एवं पन चीवरपरिवत्तनं कत्वा थेरेन पारुतचीवरं भगवा पारुपि, सत्थु चीवरं थेरो। तस्मिं समये महापथवी उदकपरियन्तं कत्वा उन्नदन्ती कम्पित्थ।

---

१. सं० १–४२० पिट्ठे। २. सं० १–४२० पिट्ठे।
३. सं० ट्ठ २–१८४ पिट्ठे। ४. पटिपन्नोस्मि (सी०, स्या०)।

साणानि पंसुकूलानी ति मतकळेवरं परिवेठेत्वा छड्डितानि तुम्बमत्ते किमी पप्फोटेत्वा गहितानि साणवाकमयानि पंसुकूलचीवरानि। रथिकसुसानसङ्कारकूटादीनं यत्थ कत्थचि पंसूनं उपरि ठितत्ता अब्भुग्गतट्ठेन तेसु पंसुकूलमिवाति **पंसुकूलं**। अथ वा पंसु विय कुच्छितभावं उलति गच्छतीति पंसुकूलं ति पंसुकूलसद्दस्स अत्थो दट्ठब्बो। **निब्बसनानी** ति निट्ठितवसनकिच्चानि, परिभोगजिण्णानीति अत्थो। एत्थ "किञ्चापि एकमेव तं चीवरं, अनेकावयवत्ता पन बहुवचनं कतं" ति **मज्झिमगण्ठिपदे** वुत्तं। **चीवरे साधारणपरिभोगेना** ति एत्थ अत्तना साधारणपरिभोगेनाति विञ्ञायमानत्ता विञ्ञायमानत्थस्स च—सद्दस्स पयोगे कामाचारत्ता[1] "अत्तना" ति न वुत्तं। धारेस्ससि पन मे त्वं कस्सप साणानि पंसुकूलानी" ति हि वुत्तत्ता अत्तनाव साधारण-परिभोगो विञ्ञायति, नाञ्ञेन। न हि केवलं सद्दतोयेव सब्बत्थ अत्थनिच्छयो भविस्सति अत्थपकरणादिनापि येभुय्येन अत्थस्स नियमेतब्बत्ता। **आचरिय धम्मपाल-त्थेरेन** पनेत्थ इदं वुत्तं "चीवरे साधारणपरिभोगेनाति एत्थ अत्तना समसमट्ठपनेनाति इध अत्तनासद्दं आनेत्वा चीवरे अत्तना साधारणपरिभोगेनाति योजेतब्बं। B 36

यस्स येन हि सम्बन्धो, दूरट्ठम्पि च तस्स तं।
अत्थतो ह्यसमानानं, आसन्नत्त'मकारणं" ति॥

अथ वा भगवता चीवरे साधारणपरिभोगेन भगवता अनुग्गहितोति योजनीयं एकस्सपि कारणनिद्देसस्स सहयोगकत्तुत्थजोतकत्तसम्भवतोति। सब्बत्थ "**आचरिय-धम्मपालत्थेरेना**" ति वुत्ते सुत्तन्तटीकाकारेनाति गहेतब्बं। समानं धारणमेतस्साति **साधारणो**, परिभोगो। साधारणपरिभोगेन चेव समसमट्ठपनेन च अनुग्गहितो ति सम्बन्धो।

इदानि[2]—

"अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरामि। कस्सपोपि भिक्खवे यावदे आकङ्खति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि B 37
सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति।

अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरामि। कस्सपोपि भिक्खवे यावदे आकङ्खति वितक्कविचारानं वूपसमा ··· पे० ···· दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरति।

अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि पीतिया च विरागा उपेक्खको च विहरामि, सतो च सम्पजानो सुखञ्च कायेन पटिसंवेदेमि, यं तं अरिया आचिक्खन्ति 'उपेक्खको सतिमा सुखविहारी' ति, ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरामि। कस्सपो पि भिक्खवे

---

१. कामाहरत्ता, स्या०। २. सं० २-४१२ पिट्ठे।

यावदे आकङ्ख्ति पीतिया च विरागा उपेक्खको च विहरति····पे०····ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरति ।

अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरामि। कस्सपोपि भिक्खवे यावदे आकङ्खति सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव····पे०····चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति ।

अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा पटिघ-सञ्ञानं अत्थङ्गमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा 'अनन्तो आकासो' ति आकासानञ्चाय-तनं उपसम्पज्ज विहारामि । कस्सपोपि भिक्खवे यावदे आकङ्खति सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा····पे०····आकासानञ्चायतनं उपसम्पज्ज विहरति ।

अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि सब्बसो आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म 'अनन्तं विञ्ञाणं' ति विञ्ञाणञ्चायतनं उपसम्पज्ज विहरामि । कस्सपोपि भिक्खवे यावदे आकङ्खति सब्बसो आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म····पे०····विञ्ञाणञ्चायतनं उपम्पज्ज विहरति ।

B 38 अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म 'नत्थि किञ्ची' ति आकिञ्चञ्ञायतनं उपसम्पज्ज विहरामि। कस्सपोपि भिक्खवे यावदे आकङ्खति····पे०····आकिञ्चञ्ञायतनं उपसम्पज्ज विहरति ।

अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि सब्बसो आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं उपसम्पज्ज विहरामि। कस्सपोपि भिक्खवे यावदे आकङ्खति····पे०····नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं उपसम्पज्ज विहरति ।

अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि सब्बसो नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं समतिक्कम्म सञ्ञावेदयितनिरोधं उपसम्पज्ज विहरामि। कस्सपोपि····पे० ···सञ्ञावेदयितनिरोधं उपसम्पज्ज विहरति ।

अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि अनेकविहितं इद्धिविधं पच्चनुभोमि, एकोपि हुत्वा बहुधा होमि, बहुधापि हुत्वा एको होमि, आविभावं तिरोभावं तिरोकुट्टं तिरोपा-कारं तिरोपब्बतं असज्जमानो गच्छामि सेय्यथापि आकासे, पथवियापि उम्मुज्ज-निमुज्जं करोमि सेय्यथापि उदके, उदकेपि अभिज्जमाने गच्छामि सेय्यथापि पथवियं, आकासेपि पल्लङ्केन कमामि सेय्यथापि पक्खी सकुणो, इमेपि चन्दिमसुरिये एवं महि-द्धिके एवं महानुभावे पाणिना परिमसामि परिमज्जामि, याव ब्रह्मलोकापि कायेन वसं वत्तेमि। कस्सपोपि भिक्खवे यावदे आकङ्खति अनेकविहितं इद्धिविधं पच्चनुभोति····पे०····याव ब्रह्मलोकापि कायेन वसं वत्तेति ।

अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि दिब्बाय सोतधातुया विसुद्धाय अतिक्कन्त-मानुसिकाय उभो सद्दे सुणामि दिब्बे च मानुसे च ये दूरे सन्तिके च। कस्सपोपि

भिक्खवे यावदे आकङ्खति दिब्बाय सोतधातुया····पे०···· ये दूरे सन्तिके च ।

अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि परसत्तानं परपुग्गलानं चेतसा चेतो परिच्च पजानामि, सरागं वा चित्तं 'सरागं चित्तं' ति पजानामि, वीतरागं वा चित्तं 'वीतरागं चित्तं' ति पजानामि, सदोसं वा चित्तं····पे०····वीतदोसं वा चित्तं ·· पे०···· समोहं वा चित्तं····पे०····वीतमोहं वा चित्तं····पे०····संखित्तं वा चित्तं····पे०····विक्खित्तं वा चित्तं····पे०····महग्गतं वा चित्तं····पे०···· अमहग्गतं वा चित्तं····पे० सउत्तरं वा चित्तं····पे०···· अनुत्तरं वा चित्तं····पे०····समाहितं वा चित्तं····पे०····असमाहितं वा चित्तं····पे०····विमुत्तं वा चित्तं····पे०····अविमुत्तं वा चित्तं 'अविमुत्तं चित्तं' ति पजानामि, कस्सपोपि भिक्खवे यावदे आकङ्खति परसत्तानं परपुग्गलानं चेतसा चेतो परिच्च पजानाति, सरागं वा चित्तं 'सरागं चित्तं' ति पाजानाति पे०····अविमुत्तं वा चित्तं 'अविमुत्तं चित्तं' ति पजानाति । B 39

अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरामि । सेय्यथिदं, एकम्पि जातिं द्वे पि जातियो तिस्सो पि जातियो चतस्सो पि जातियो पञ्च पि जातियो दस पि जातियो वीसम्पि जातियो तिंसम्पि जातियो चत्तालीसम्पि जातियो पञ्ञासम्पि जातियो जातिसतम्पि जातिसतसहस्सम्पि अनेके पि संवट्टकप्पे अनेके पि विवट्टकप्पे अनेके पि संवट्टविवट्टकप्पे 'अमुत्रासिं एवंनामो एवंगोत्तो एवंवण्णो एवमाहारो एवंसुखदुक्खप्पटिसंवेदी एवमायुपरियन्तो, सो ततो चुतो अमुत्र उदपादिं, तत्रापासिं एवंनामो एवंगोत्तो एवंवण्णो एवमाहारो एवंसुखदुक्खप्पटिसंवेदी एवमायुपरियन्तो, सो ततो चुतो इधूपपन्नो' ति । इति साकारं सउद्देसं अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरामि । कस्सपोपि भिक्खवे यावदे आकङ्खति अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति । सेय्यथिदं, एकम्पि जातिं····पे०···· इति साकारं सउद्देसं अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति ।

अहं भिक्खवे यावदे आकङ्खामि दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन सत्ते पस्सामि चावमाने उपपज्जमाने हीने पणीते सुवण्णे दुब्बण्णे सुगते दुग्गते, यथाकम्मूपगे सत्ते पजानामि 'इमे वत भोन्तो सत्ता कायदुच्चरितेन समन्नागता वचीदुच्चरितेन समन्नागता मनोदुच्चरितेन समन्नागता अरियानं उपवादका मिच्छादिट्ठिका मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना । इमे वा पन भोन्तो सत्ता कायसुचरितेन समन्नागता वचीसुचरितेन समन्नागता मनोसुचरितेन समन्नागता अरियानं अनुपवादका सम्मादिट्ठिका सम्मादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपन्ना'ति । इति दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्त मानुसकेन सत्ते पस्सामि चवमाने उपपज्जमाने हीने पणीते सुवण्णे दुब्बण्णे सुगते दुग्गते, यथाकम्मूपगे सत्ते पजानामि । कस्सपो पि भिक्खवे यावदे आकङ्खति दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन सत्ते पस्सति चवमाने उपपज्जमाने हीने पणीते सुवण्णे दुब्बण्णे सुगते दुग्गते, यथाकम्मूपगे सत्ते पजानाति । B 40

अहं भिक्खवे आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरामि । कस्सपो पि भिक्खवे आसवानं खया

अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरतीति—

एवं नवानुपुब्बविहारछळभिञ्ञाप्पभेदे उत्तरिमनुस्सधम्मे अत्तना समसमट्ठपनत्थाय भगवता वुत्तं कस्सपसंयुत्ते आगतं पाळिमिमं पेय्यालमुखेन आदिग्गहणेन च सङ्खिपित्वा दस्सेन्तो आह **"अहं भिक्खवे"** ति आदि।

तत्थ **यावदे आकङ्खामी** ति यावदेव इच्छामीति अत्थो। ततोयेव हि **मज्झिमगण्ठिपदे चूळगण्ठिपदे च** "यावदेति यावदेवाति वुत्तं होती" ति लिखितं।
B 41 **संयुत्तनिकायट्ठकथायम्पि**[1] "यावदे अकङ्खामीति यावदेव इच्छामी" ति अत्थो वुत्तो। तथा हि तत्थ लीनत्थपकासनियं **आचरियधम्मपालत्थेरेनेव** वुत्तं "यावदेवाति इमिना समानत्थं यावदेति इदं पदं" ति। पोत्थकेसु पन कत्थचि "यावदेवा" ति अयमेव पाठो दिस्सति। यानि पन इतो परं "विविच्चेव कामेही" ति आदिना नयेन चत्तारि रूपावचरकिरियझानानि, "सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा" ति आदिना नयेन चतस्सो अरूपसमापत्तियो, "सब्बसो नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं समतिक्कम्म सञ्ञावेदयितनिरोधं" ति आदिना नयेन निरोधसमापत्ति, "अनेकविहितं इद्धिविधं" ति अदिना नयेन अभिञ्ञा च वुत्ता। तत्थ यं वत्तब्बं सिया, तं अनुपदवण्णनाय चेव भावनाविधानेन च सद्धिं **विसुद्धिमग्गे**[2] सब्बसो वित्थारितं। इधापि च वेरञ्जकण्डे चत्तारि रूपावचरझानानि तिस्सो च विज्जा आवि भविस्सन्ति, तस्मा तत्थ यं वत्तब्बं, तं तत्थेव वण्णयिस्साम।

नवानुपुब्बविहारछळभिञ्ञाप्पभेदेति एत्थ **नवानुपुब्बविहारा** नाम अनुपटिपाटिया समापज्जितब्बभावतो एवं सञ्ञिता निरोधसमापत्तिया सह अट्ठ समापत्तियो। **छळभिञ्ञा** नाम आसवक्खयञाणेन सद्धिं पञ्चाभिञ्ञायो ति एवं लोकियलोकुत्तरभेदा सब्बा अभिञ्ञायो। **उत्तरिमनुस्सधम्मे** ति उत्तरिमनुस्सानं झायीनञ्चेव अरियानञ्च धम्मो उत्तरिमनुस्सधम्मो। अथ वा उत्तरि मनुस्सधम्मा ति उत्तरिमनुस्सधम्मो, मनुस्सधम्मो नाम दसकुसलकम्मपथधम्मो। सो हि विना भावनामनसिकारेन पकतियाव मनुस्सेहि निब्बतेतब्बतो मनुस्सत्तभावावहतो वा "मनुस्सधम्मो" ति वुच्चति, ततो उत्तरि पन झानादीनि "उत्तरि मनुस्सधम्मो" ति वेदितब्बानि। **अत्तना समसमट्ठपनेनाति** अहं यत्तकं कालं यत्तके वा समापत्तिविहारे अभिञ्ञायो च वळञ्जेमि, तथा कस्सपोपी ति एवं यथावुत्तउत्तरिमनुस्सधम्मे अत्तना समसमं कत्वा ठपनेन। इदञ्च नवानुपुब्बविहारछळभिञ्ञादिभावसामञ्ञेन पसंसामत्तं वुत्तं ति दट्ठब्बं। न हि आयस्मा महाकस्सपो भगवा विय देवसिकं चतुवीसतिकोटिसतसहस्ससङ्खा समापत्तियो समापज्जति, यमकपाटिहारियादिवसेन वा अभिञ्ञायो वळञ्जेति। एत्थ च "उत्तरिमनुस्सधम्मे अत्तना समसमट्ठपनेना" ति इदं निदस्सनमत्तं ति वेदितब्बं। तथा हि—

---

१. सं० ट्ठ १-१६२ पिट्ठे।

२. विसुद्धि म०-१-१३५, विसुद्धि म० २-३७ पिट्ठादीसु।

"ओवद कस्सप भिक्खू, करोहि कस्सप भिक्खूनं धम्मिं कथं, अहं वा कस्सप B 42
भिक्खू ओवदेय्यं त्वं वा, अहं वा कस्सप भिक्खूनं धम्मिं कथं करेय्यं त्वं वा" ति[१]।

एवम्पि अत्तना समसमट्ठाने ठपेतियेव, तस्स किमञ्ञं आणण्यं भविस्सति अञ्ञत्र धम्मविनयसङ्गायना ति अधिप्पायो। तत्थ "तस्सा ति तस्स अनुग्गहस्सा" ति **मज्झिमगण्ठिपदे** वुत्तं। तस्स मे ति वा अत्थो गहेतब्बो। पोत्थकेसु हि कत्थचि "तस्स मे" ति पाठोयेव दिस्सति, धम्मविनयसङ्गायनं ठपेत्वा अञ्ञं किन्नाम तस्स मे आणण्यं अणणभावो भविस्सतीति अत्थो। "**ननु मं भगवा**" ति आदिना वुत्तमेवत्थं उपमावसेन विभावेति। **सककवचइस्सरियानुप्पदानेनाति** एत्थ चीवरस्स निदस्सनवसेन कवचस्स गहणं कतं, समापत्तिया निदस्सनवसेन इस्सरियं गहितं **कुलवंसप्पतिट्ठापकं**ति कुलवंसस्स कुलप्पवेणिया पतिट्ठापकं। "मे सद्धम्मवंसप्पतिट्ठापको" ति निच्चसापेक्खत्ता समासो दट्ठब्बो, मे सद्धम्मवंसस्स पतिट्ठापको पवत्तको ति वुत्तं होति। वुत्तवचनमनुस्सरन्तो अनुग्गहेसीति चिन्तयन्तो धम्मविनयसङ्गायनत्थं भिक्खूनं उस्साहं जनेसीति सम्बन्धो, धातुभाजनदिवसे तत्थ सन्निपतितानं भिक्खूनं उस्साहं जनेसी ति अत्थो।

इदानि यथावुत्तमत्थं पाळिया विभावेन्तो आह "**यथाह**" ति आदि। तत्थ **एकमिदाहं** ति एत्थ **इदं** ति निपातमत्तं। **एकं समयं** ति च भुम्मत्थे उपयोगवचनं, एकस्मिं समये ति वुत्तं होति। **पावाया** ति पावानगरतो, तत्थ पिण्डाय चरित्वा कुसिनारं गमिस्सामी ति अद्धानमग्गप्पटिपन्नोति वुत्तं होति। **अद्धानमग्गो** ति च दीघमग्गो वुच्चति। दीघपरियायो हेत्थ अद्धानसद्दो। **महता भिक्खुसंघेन सद्धिं** ति गुणमहत्तेनपि सङ्ख्यामहत्तेनपि महता। भिक्खूनं संघेन भिक्खुसंघेन, समणगणेन सद्धिं एकतो ति अत्थो। "**पञ्चमत्तेहि**" ति आदिना संख्यामहत्तं विभावेति। **मत्त**—सद्दो चेत्थ पमाणवचनो "भोजने मत्तञ्ञुता" ति आदीसु विय। **सब्बं सुभद्दकण्डं वित्थारतो वेदितब्बं** ति सब्बं सुभद्दकण्डं इध आनेत्वा वित्थारतो दस्सेतब्बं ति अधिप्पायो।

'ततो परं ति ततो भिक्खूनं उस्साहजननतो परं" ति **आचरियधम्मपालत्थेरेन** B 43
वुत्तं। **महागण्ठिपदे** पन "ततो परं ति सुभद्दकण्डतो परं" ति वुत्तं। इदमेवेत्थ सारतो पच्चेतब्बं ति नो तक्को। अयमेव हि उस्साहजननप्पकारो, यदिदं "हन्द मयं आवुसो धम्मञ्च विनयञ्च सङ्गायेय्याम, पुरे अधम्मो दिप्पती" ति आदि, तस्मा उस्साहजननतो परं ति न वत्तब्बं हेट्ठा उस्साहजननप्पकारस्स पाळियं अवुत्तता। अयञ्हेत्थ पाळिक्कमो—

अथ खो आयस्मा महाकस्सपो भिक्खू आमन्तेसि, एकमिदाहं आवुसो समयं पावाय कुसिनारं अद्धानमग्गप्पटिपन्नो महता भिक्खुसंघेन सद्धिं पञ्चमत्तेहि भिक्खुसतेहि। अथ ख्वाहं आवुसो मग्गा ओक्कम्म अञ्ञतरस्मिं रुक्खमूले निसीदिं।

तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो आजीवको कुसिनाराय मन्दारपुप्फं गहेत्वा पावं अद्धानमग्गप्पटिपन्नो होति। अद्दसं खो अहं आवुसो तं आजीवकं दूरतोव

१. सं० १-४०६ पिट्ठे।

आगच्छन्तं, दिस्वान तं आजीवकं एतदवोचं "अपावुसो अम्हाकं सत्थारं जानासी" ति। आम आवुसो जानामि, अज्ज सत्ताहपरिनिब्बुतो समणो गोतमो, ततो मे इदं मन्दारपुप्फं गहितं ति। तत्रावुसो ये ते भिक्खू अवीतरागा, अप्पेकच्चे बाहा पग्गय्ह कन्दन्ति, छिन्नपातं पपतन्ति आवट्टन्ति विवट्टन्ति, "अतिखिप्पं भगवा परिनिब्बुतो, अतिखिप्पं सुगतो परिनिब्बुतो, अतिखिप्पं चक्खुं लोके अन्तरहितं" ति। ये पन ते भिक्खू वीतरागा, ते सता सम्पजाना अधिवासेन्ति "अनिच्चा सङ्खारा, तं कुतेत्थ लब्भा" ति।

अथ ख्वाहं आवुसो ते भिक्खू एतदवोचं "अलं आवुसो मा सोचित्थ मा परिदेवित्थ, नन्वेतं आवुसो भगवता पटिकच्चेव अक्खातं 'सब्बेहेव पियेहि मनापेहि नानाभावो विनाभावो अञ्ञथाभावो, तं कुतेत्थ आवुसो लब्भा, यं तं जातं भूतं सङ्खतं पलोकधम्मं, तं वत मा पलुज्जी' ति नेतं ठानं विज्जती" ति।

B 44 तेन खो पन समयेन आवुसो सुभद्दो नाम वुड्ढपब्बजितो तस्सं परिसायं निसिन्नो होति। अथ खो आवुसो सुभद्दो वुड्ढपब्बजितो ते भिक्खू एतदवोच "अलं आवुसो मा सोचित्थ मा परिदेवित्थ, सुमुत्ता मयं तेन महासमणेन, उपद्दुता च मयं होम 'इदं वो कप्पति, इदं वो न कप्पती' ति, इदानि पन मयं यं इच्छिस्साम, तं करिस्साम, यं न इच्छिस्साम, न तं करिस्सामा" ति। हन्द मयं आवुसो धम्मञ्च विनयञ्च सङ्गायेय्याम, पुरे अधम्मो दिप्पति, धम्मो पटिबाहीयति, अविनयो पुरे दिप्पति, विनयो पटिबाहीयति, पुरे अधम्मवादिनो बलवन्तो होन्ति, धम्मवादिनो दुब्बला होन्ति, पुरे अविनयवादिनो बलवन्तो होन्ति, विनयवादिनो दुब्बला होन्ती ति।

तेन हि भन्ते थेरो भिक्खू उच्चिनतू ति। अथ खो आयस्मा महाकस्सपो एकेनूनपञ्चअरहन्तसतानि उच्चिनि। भिक्खू आयस्मन्तं महाकस्सपं एतदवोचुं "अयं भन्ते आयस्मा आनन्दो किञ्चापि सेक्खो, अभब्बो छन्दा दोसा मोहा भया अगतिं गन्तुं, बहु चानेन भगवतो सन्तिके धम्मो च विनयो च परियत्तो, तेन हि भन्ते थेरो आयस्मन्तम्पि आनन्दं उच्चिनतू" ति आदि[1]।

तस्मा **ततो परं** ति एत्थ सुभद्दकण्डतो परं ति एवमत्थो दट्ठब्बो। "सब्बं सुभद्दकण्डं वित्थारतो वेदितब्बं" ति हि इमिना "यं न इच्छिस्साम, नं तं करिस्सामा" ति एतं परियन्तं सुभद्दकण्डपाळिं दस्सेत्वा इदानि अवसेसं उस्साहजननप्पकारप्पवत्तं पाळिमेव दस्सेन्तो "**हन्द मयं आवुसो**" ति आदिमाह।

तत्थ **पुरे अधम्मो दिप्पती** ति एत्थ अधम्मो नाम दसकुसलकम्मपथधम्मपटिपक्खभूतो अधम्मो। **पुरे दिप्पती** ति अपि नाम दिप्पति। अथ वा याव अधम्मो धम्मं पटिबाहितुं समत्थो होति, ततो पुरेतरमेवा ति अत्थो। आसन्ने हि अनागते[2] अयं पुरेसद्दो।

---

१. वि० ४–४८० पिट्ठादीसु।

२. अनधिप्पेतो (सी०, स्या०, क) वजिरबुद्धिटीका पस्सितब्बा।

दिप्पती ति दिप्पिस्सति। पुरे-सद्दयोगेन हि अनागतत्थे अयं वत्तमानपयोगो यथा B 45
"पुरा वस्सति देवो" ति। केचि पनेत्थ एवं वण्णयन्ति "पुरेति पच्छा अनागते यथा अद्धानं गच्छन्तस्स गन्तब्बमग्गो 'पुरे' ति वुच्चति, तथा इध दट्ठब्बं" ति। **अविनयो** ति पहानविनयसंवरविनयानं पटिपक्खभूतो अविनयो। "विनयवादिनो दुब्बला होन्ती" ति एवं इति-सद्दोपि एत्थ दट्ठब्बो, "ततो परं आहा" ति इमिना सम्बन्धो। पोत्थकेसु पन कत्थचि इति-सद्दो न दिस्सति, पाळियं पन दीघनिकायट्ठकथायञ्च अत्थेव इति-सद्दो।

तेन **हो** ति उय्योजनत्थे निपातो। **उच्चिननेत** उय्योजेन्ता हि तं महाकस्सपत्थेरं एवमाहंसु। **भिक्खू उच्चिनतू** ति सङ्गीतिया अनुरूपे भिक्खू उच्चिनित्वा गण्हातूति अत्थो। "सकलनवङ्ग पे०....परिग्गहेसी" ति एतेन सुक्खविपस्सकखीणासवपरियन्तानं यथावुत्तपुग्गलानं सतिपि आगमाधिगमसब्भावे सह पटिसम्भिदाहि तेविज्जादिगुणयुत्तानं आगमाधिगमसम्पत्तिया उक्कंसगतत्ता सङ्गीतिया बहूपकारतं दस्सेसि। तत्थ **सकलनवङ्गसत्थुसासनपरियत्तिधरे** ति सकलं सुत्तगेय्यादि नवङ्गं एत्थ, एतस्स वा अत्थीति सकलनवङ्गं, सत्थुसासनं। अत्थकामेन परियापुणितब्बतो दिट्ठधम्मिकादि-पुरिसत्थपरियत्तभावतो च परियत्तीति तीणि पिटकानि वुच्चन्ति। तं सकलनवङ्गसत्थु-सासनसङ्खातं परियत्तिं धारेन्तीति सकलनवङ्गसत्थुसासनपरियत्तिधरा, तादिसेति अत्थो। बहूनं नानप्पकारानं किलेसानं सक्कायदिट्ठिया च अविहतत्ता ता जनेन्ति, ताहि वा जनिता ति **पुथुज्जना**। दुविधा पुथुज्जना अन्धपुथुज्जना कल्याणपुथुज्जनाति। तत्थ येसं खन्धधातुआयतनादीसु उग्गहपरिपुच्छासवनधारणपच्चवेक्खणानि नत्थि, ते अन्धपुथुज्जना। येसं तानि अत्थि, ते कल्याणपुथुज्जना ते इध "पुथुज्जना" ति अधिप्पेता। समथभावनासिनेहाभावेन सुक्खा लूखा असिनिद्धा विपस्सना एतेसं ति सुक्खविपस्सका।

तिपिटकसब्बपरियत्तिप्पभेदधरे ति तिण्णं पिटकानं समाहारो तिपिटकं, तिपिटकसङ्खातं नवङ्गादिवसेन अनेकधा भिन्नं सब्बपरियत्तिप्पभेदं धारेन्तीति तिपिटकसब्बपरियत्तिप्पभेदधरा, तादिसेति अत्थो। अनु अनु तंसमङ्गीनं भावेति वड्ढेतीति अनुभावो, अनुभावो एव आनुभावो, पभावो[1]। महन्तो आनुभावो येसं ते B 46
महानुभावा। **तेविज्जादिभेदे** ति तिस्सो विज्जायेव तेविज्जा, ता आदि येसं छळभिञ्ञादीनं ते तेविज्जादयो, ते भेदा अनेकप्पकारा भिन्ना एतेसं ति तेविज्जादिभेदा, खीणासवा, तादिसेति अत्थो। अथ वा तिस्सो विज्जा एतस्स अत्थीति तेविज्जो, सो आदि येसं छळभिञ्ञादीनं ते तेविज्जादयो, ते भेदा येसं खीणासवानं ते तेविज्जादि-भेदा, तादिसेति अत्थो। **ये सन्धाय इदं वुत्तं** ति ये भिक्खू सन्धाय इदं "अथ खो आयस्मा" ति आदिवचनं **सङ्गीतिक्खन्धके**[2] वुत्तं ति अत्थो।

---

१. पतापो (सी०, स्या०)।
२. वि० ४-४८० पिट्ठे।

किस्स पनाति कस्मा पन। सिक्खतीति **सेक्खो**, अथ वा सिक्खनं सिक्खा, सायेव तस्स सीलं ति सेक्खो। सो हि अपरियोसितसिक्खत्ता च तदधिमुत्तत्ता च एकन्तेन सिक्खनसीलो न असेक्खो विय परिनिट्ठितसिक्खो तत्थ पटिपस्सद्धुस्साहो, नापि विस्सट्ठसिक्खो पचुरजनो विय तत्थ अनधिमुत्तो। अथ वा अरियाय जातिया तीसु सिक्खासु जातो, तत्थ वा भवो ति सेक्खो। अथ वा इक्खति एतायाति इक्खा, मग्गफल-सम्मादिट्ठि। सह इक्खायाति सेक्खो उपरिमग्गत्तयकिच्चस्स अपरियोसितत्ता सह करणीयेनाति **सकरणीयो। अस्साति** अनेन। **असम्मुखा पटिग्गहितं नाम नत्थी** ति ननु च—

"द्वासीति बुद्धतो गण्हिं, द्वे सहस्सानि भिक्खुतो।
चतुरासीति सहस्सानि, ये मे धम्मा पवत्तिनो"ति[१]॥–

वुत्तत्ता कथमेतं युज्जतीति? द्वे सहस्सानि भिक्खुतो ति वुत्तम्पि भगवतो सन्तिके पटिग्गहितमेवा ति कत्वा वुत्तं ति नायं विरोधो। **बहुकारत्ता** ति बहुउपकारत्ता। उपकारवचनो हेत्थ कारसद्दो। **अस्सा** ति भवेय्य।

अतिविय विस्सत्थो ति अतिविय विस्सासिको। **नं** ति आनन्दत्थेरं, "ओवदती"ति इमिना सम्बन्धो। आनन्दत्थेरस्स येभुय्येन नवकाय परिसाय विब्भमनेन महाकस्सपत्थेरो एवमाह **"न वायं कुमारको मत्तमञ्ञासी"** ति। तथा हि परिनिब्बुते सत्थरि महा-
B 47 कस्सपत्थेरो सत्थुपरिनिब्बाने सन्निपतितस्स भिक्खुसंघस्स मज्झे निसीदित्वा धम्मविनयसङ्गायनत्थं पञ्चसते भिक्खू उच्चिनित्वा "आवुसो राजगहे वस्सं वसन्ता धम्मविनयं सङ्गायेय्याम, तुम्हे "पुरे वस्सूपनायिकाय अत्तनो अत्तनो पलिबोधं पच्छिन्दित्वा राजगहे सन्निपतथा" ति वत्वा अत्तना राजगहं गतो। आनन्दत्थेरोपि भगवतो पत्तचीवरमादाय महाजनं सञ्ञापेन्तो सावत्थिं गन्त्वा ततो निक्खम्म राजगहं गच्छन्तो दक्खिणगिरिस्मिं चारिकं चरि। तस्मिं समये आनन्दत्थेरस्स तिंसमत्ता सद्धिविहारिका येभुय्येन कुमारभूता एकवस्सिकदुवस्सिकभिक्खू चेव अनुपसम्पन्ना च विब्भमिंसु। कस्मा पनेते पब्बजिता, कस्मा विब्भमिंसूति? तेसं किर मातापितरो चिन्तेसुं "आनन्दत्थेरो सत्थुविस्सासिको अट्ठ वरे याचित्वा उपट्ठहति, इच्छितिच्छितट्ठानं सत्थारं गहेत्वा गन्तुं सक्कोति, अम्हाकं दारके एतस्स सन्तिके पब्बाजेस्साम, सो सत्थारं गहेत्वा आगमिस्सति, तस्मिं आगते मयं महासक्कारं कातुं लभिस्सामा" ति इमिना ताव कारणेन नेसं ञातका ते पब्बाजेसुं। सत्थरि पन परिनिब्बुते तेसं सा पत्थना उपच्छिन्ना, अथ ने एकदिवसेनेव उप्पब्बाजेसुं।

अथ आनन्दत्थेरं दक्खिणगिरिस्मिं चारिकं चरित्वा राजगहमागतं दिस्वा महाकस्सपत्थेरो एवमाह "न वायं कुमारको मत्तमञ्ञासी" ति। वुत्तञ्हेतं कस्सपसंयुत्ते—

---

१. खु० २–३४७ पिट्ठे।

"अथ किञ्चरहि त्वं आवुसो आनन्द इमेहि नवेहि भिक्खूहि इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारेहि भोजने अमत्तञ्ञूहि जागरियं अननुयुत्तेहि सद्धिं चारिकं चरसि, सस्सघातं मञ्ञे चरसि, कुलूपघातं मञ्ञे चरसि, ओलुज्जति खो ते आवुसो आनन्द परिसा, पलुज्जन्ति खो ते आवुसो नवप्पाया, न वायं कुमारको मत्तमञ्ञासी ति।

अपि मे भन्ते कस्सप सिरस्मिं पलितानि जातानि, अथ च पन मयं अज्जापि आयस्मतो महाकस्सपस्स कुमारकवादा न मुच्चामाति। तथा हि पन त्वं आवुसो आनन्द इमेहि नवेहि भिक्खूहि इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारेहि भोजने अमत्तञ्ञूहि जागरियं अननुयुत्तेहि सद्धिं चारिकं चरसि, सस्सघातं मञ्ञे चरसि, कुलूपघातं मञ्ञे चरसि, ओलुज्जति खो ते आवुसो आनन्द परिसा, पलुज्जन्ति खो ते आवुसो नवप्पाया, न वायं कुमारको B 48
मत्तमञ्ञासी" ति[1]।

तत्थ[2] **सस्सघातं मञ्ञे चरसी** ति सस्सं घातेन्तो विय आहिण्डसि। **कुलूपघातं मञ्ञे चरसी** ति कुलानि उपघातेन्तो विय हनन्तो विय आहनन्तो विय आहिण्डसि। **ओलुज्जती** ति पलुज्जति भिज्जति। **पलुज्जन्ति खो ते आवुसो नवप्पाया** ति आवुसो एवं एते तुय्हं पायेन येभुय्येन नवका एकवस्सिकदुवस्सिकदहरा चेव सामणेरा च पलुज्जन्ति। **न वायं कुमारको मत्तमञ्ञासी** ति अयं कुमारको अत्तनो पमाणं न वत जानातीति थेरं तज्जेन्तो आह। **कुमारकवादा न मुच्चामा** ति कुमारकवादतो न मुच्चाम। **तथा हि पन त्वं** ति इदमस्स एवं वत्तब्बताय कारणदस्सनत्थं वुत्तं। अयञ्हेत्थ अधिप्पायो—यस्मा त्वं इमेहि नवकेहि भिक्खूहि इन्द्रियसंवररहितेहि सद्धिं विचरसि, तस्मा कुमारकेहि सद्धिं चरन्तो "कुमारको" ति वत्तब्बतं अरहसी ति।

"न वायं कुमारको मत्तमञ्ञासी" ति एत्थ **वा**—सद्दो पदपूरणे। **वा** सद्दो हि उपमानसमुच्चयसंसयववस्सग्गपदपूरणविकप्पादीसु बहूसु अत्थेसु दिस्सति। तथा हेस "पण्डितो वापि तेन सो" ति आदीसु[3] उपमाने दिस्सति, सदिसभावेति अत्थो। "तं वापि धीरा मुनि वेदयन्तो" ति आदीसु[4] समुच्चये। "के वा इमे कस्स वा" ति आदीसु[5] संसये। अयं वा इमेसं समणब्राह्मणानं सब्बबालो सब्बमूल्हो" ति आदीसु[6] ववस्सग्गे। "ये हि केचि भिक्खवे समणा वा ब्राह्मणा वा" ति आदीसु[7] विकप्पे ति। इध पन पदपूरणे दट्ठब्बो। तेनेव च **आचरियधम्मपालत्थेरेन वुत्तं** "वा सद्दस्स अत्थुद्धारं करोन्तेन 'न वायं कुमारको मत्तमञ्ञासी' ति आदीसु[8] पदपूरणे" ति अट्ठकथायम्पि[9] एत्तकमेव वुत्तं "न वायं कुमारको मत्तमञ्ञासीति अयं कुमारको अत्तनो पमाणं न वत जानातीति थेरं तज्जेन्तो आहा" ति। एत्थापि **वता** ति वचनसिलिट्ठताय वुत्तं। यं

---

१. सं० १–४१८ पिट्ठे। २. सं० ट्ठ० २–१६६ पिट्ठे।
३. खु० १–२२ पिट्ठे। ४. खु० १–३०९ पिट्ठे।
५. वि० १–१९७ पिट्ठे। ६. दा० १–५५ पिट्ठे।
७. म० १–१२२, सं० १–२५५ पिट्ठादीसु। ८. सं० १–४१८ पिट्ठे।
९. सं० ट्ठ० २–१६६ पिट्ठे।

पनेत्थ **केनचि** वुत्तं "न वायं ति एत्थ वा ति विभासा, अञ्ञासिपि न अञ्ञासि पी ति
B 49 अत्थो" ति। तं तस्स मतिमत्तं ति दट्ठब्बं। न हेत्थ अयमत्थो सम्भवति, तस्मा अत्तनो
पमाणं नाञ्ञासीति एवमत्थो वेदितब्बो। **तत्रा** ति एवं सति। **छन्दागमनं विया** ति
एत्थ छन्दा आगमनं विया ति पदच्छेदो कातब्बो, छन्देन आगमनं पवत्तनं वियाति
अत्थो, छन्देन अकत्तब्बकरणं विया ति वुत्तं होति। छन्दं वा आगच्छति सम्पयोगवसेना ति
छन्दागमनं, तथा पवत्तो अपायगमनीयो अकुसलचित्तुप्पादो। अथ वा अननुरूपं गमनं
अगमनं, छन्देन अगमनं छन्दागमनं, छन्देन सिनेहेन अननुरूपं गमनं पवत्तनं अकत्तब्ब-
करणं विया ति वुत्तं होति। **असेक्खपटिसम्भिदाप्पत्ते** ति असेक्खभूता पटिसम्भिदा
असेक्खपटिसम्भिदा, तं पत्ते, पटिलद्धअसेक्खपटिसम्भिदेति अत्थो। **अनुमतिया** ति
अनुञ्ञाय, याचनाया ति वुत्तं होति।

"किञ्चापि सेक्खो" ति इदं न सेक्खानं अगतिगमनसब्भावेन वुत्तं, असेक्खानंयेव
पन उच्चिनितत्ता ति दट्ठब्बं। पठममग्गेनेव हि चत्तारि अगतिगमनानि पहीयन्ति, तस्मा
किञ्चापि सेक्खो, तथापि थेरो आयस्मन्तम्पि आनन्दं उच्चिनतू ति एवमेत्थ सम्बन्धो
वेदितब्बो। न पन किञ्चापि सेक्खो, तथापि अभब्बो अगतिं गन्तुं ति योजेतब्बं।
"अभब्बो" ति आदिना पन धम्मसङ्गीतिया तस्स अरहभावं दस्सेन्तो विज्जमाने गुणे
कथेन्ति। तत्थ **छन्दा** ति छन्देन, सिनेहेनाति अत्थो। **अगतिं गन्तुं** ति अगन्तब्बं गन्तुं,
अकत्तब्बं कातुं ति वुत्तं होति। इमानि पन चत्तारि अगतिगमनानि भण्डभाजनीये च
विनिच्छयट्ठाने च लब्भन्ति। तत्थ भण्डभाजनीये ताव अत्तनो भारभूतानं भिक्खूनं
अमनापे भण्डे सम्पत्ते तं परिवत्तित्वा मनापं देन्तो छन्दागतिं गच्छति नाम। अत्तनो
पन अभारभूतानं मनापे भण्डे सम्पत्ते तं परिवत्तित्वा अमनापं देन्तो दोसागतिं गच्छति
नाम। भण्डेसु भाजनीयवत्थुञ्च ठितिकञ्च अजानन्तो मोहागतिं गच्छति नाम।
मुखरानं वा राजादिनिस्सितानं वा "इमे मे अमनापे भण्डे दिन्ने अनत्थं करेय्युं" ति
भयेन परिवत्तित्वा मनापं देन्तो भयागतिं गच्छति नाम। यो पन एवं न गच्छति,
सब्बेसं तुलाभूतो पमाणभूतो मज्झत्तोव हुत्वा यं यस्स पापुणाति, तदेव तस्स देति,
अयं चतुब्बिधम्पि अगतिं न गच्छति नाम। विनिच्छयट्ठाने पन अत्तनो भारभूतस्स
गरुकापत्तिं लहुकापत्तिं कत्वा कथेन्तो छन्दागतिं गच्छति नाम। इतरस्स लहुकापत्तिं
B 50 गरुकापत्तिं कत्वा कथेन्तो दोसागतिं गच्छति नाम। आपत्तिवुट्ठानं पन समुच्चयक्खन्ध-
कञ्च अजानन्तो मोहागतिं गच्छति नाम। मुखरस्स वा राजपूजितस्स वा "अयं मे
गरुकं कत्वा आपत्तिं कथेन्तस्स अनत्थम्पि करेय्या" ति गरुकमेव लहुकापत्तिं कथेन्तो
भयागतिं गच्छति नाम। यो पन सब्बेसं यथाभूतमेव कथेसि। अयं चतुविधम्पि
अगतिगमनं न गच्छति नाम। थेरो पि तादिसो चतुन्नम्पि अगतिगमनानं पठममग्गेनेव
पहीनत्ता, तस्मा सङ्गायनवसेन धम्मविनयम्पि विनिच्छये सम्पत्ते छन्दादिवसेन
अञ्ञथा अकथेत्वा यथाभूतमेव कथेतीति वुत्तं "**अभब्बो...पे०...अगतिं गन्तुं**" ति।
परियत्तो ति अधीतो, उग्गहितोति अत्थो।

उच्चिनितेना ति उच्चिनित्वा गहितेन। **एतदहोसी** ति एतं परिवितक्कनं
अहोसि। **राजगहं खो महागोचरं** ति एत्थ "राजगहं ति राजगहसामन्तं गहेत्वा वुत्तं"

ति **चूळगण्ठिपदे मज्झिमगण्ठिपदे** च वुत्तं। गावो चरन्ति एत्थाति गोचरो, गोचर विय गोचरो, भिक्खाचरणट्ठानं। सो महन्तो अस्स, एत्थाति वा महागोचरं, राजगहं। **थावरकम्मं** ति चिरट्ठायिकम्मं। **विसभागपुग्गलो** सुभद्दसदिसो **उक्कोटेय्या**ति निवारेय्याति अत्थो। **ञत्तिदुतियेन कम्मेन सावेसी** ति—

"सुणातु मे आवुसो संघो, यदि संघस्स पत्तकल्लं संघो इमानि पञ्च भिक्खुसतानि सम्मन्नेय्य 'राजगहे वस्सं वसन्तानि धम्मञ्च विनयञ्च सङ्गायितुं, न अञ्ञेहि भिक्खूहि राजगहे वस्सं वसितब्बं' ति, एसा ञत्ति।

सुणातु मे आवुसो संघो, संघो इमानि पञ्चभिक्खुसतानि सम्मन्नति 'राजगहे वस्सं वसन्तानि धम्मञ्च विनयञ्च सङ्गायितुं, न अञ्ञेहि भिक्खूहि राजगहे वस्सं वसितब्बं' ति, यस्सायस्मतो खमति इमेसं पञ्चन्नं भिक्खुसतानं सम्मुति 'राजगहे वस्सं वसन्तानं धम्मञ्च विनयञ्च सङ्गायितुं, न अञ्ञेहि भिक्खूहि राजगहे वस्सं वसितब्बं' ति, सो तुण्हस्स। यस्स नक्खमति, सो भासेय्य।

सम्मतानि संघेन इमानि पञ्चभिक्खुसतानि 'राजगहे वस्सं वसन्तानि धम्मञ्च विनयञ्च सङ्गायितुं, न अञ्ञेहि भिक्खूहि राजगहे वस्सं वसितब्बं' ति, खमति B 51
संघस्स, तस्मा तुण्ही, एवमेतं धारयामी" ति[1]—

एवं ञत्तिदुतियेन कम्मेन सावेति। इदं सन्धाय वुत्तं "तं सङ्गीतिक्खन्धके वुत्तनयेनेव ञातब्बं" ति।

अयं पन कम्मवाचा तथागतस्स परिनिब्बानतो एकवीसतिमे दिवसे कता। वुत्तञ्हेतं **दीघनिकायट्ठकथायं**[2] "अयं पन कम्मवाचा तथागतस्स परिनिब्बानतो एकवीसतिमे दिवसे कता। भगवा हि विसाखपुण्णमायं पच्चूसमये परिनिब्बुतो, अथस्स सत्ताहं सुवण्णवण्णं सरीरं गन्धमालादीहि पूजयिंसु। एवं सत्ताहं साधुकीळनदिवसा नाम अहेसुं। ततो सत्ताहं चितकाय अग्गिना झायि, सत्ताहं सत्तिपञ्जरं कत्वा सन्थागारसालायं धातुपूजं करिंसू ति एकवीसति दिवसा गता। जेट्ठमूलसुक्कपक्खपञ्चमियं पन धातुयो भाजयिंसु। एतस्मिं धातुभाजनदिवसे सन्निपतितस्स महाभिक्खुसंघस्स सुभद्देन वुड्ढपब्बजितेन कतं अनाचारं आरोचेत्वा वुत्तनयेनेव भिक्खू उच्चिनित्वा अयं कम्मवाचा कता। इमञ्च पन कम्मवाचं कत्वा थेरो भिक्खू आमन्तेसि 'आवुसो इदानी तुम्हाकं चत्तालीसदिवसा ओकासो, ततो परं अयं नाम नो पलिबोधो अत्थीति वत्तुं न लब्भा, तस्मा एत्थन्तरे यस्स रोगपलिबोधो वा आचरियुपज्झायपलिबोधो वा मातापितुपलिबोधो वा अत्थि, पत्तं वा पन पचितब्बं चीवरं वा कातब्बं, सो तं पलिबोधं छिन्दित्वा करणीयं करोतू' ति। एवञ्च पन वत्वा थेरो अत्तनो पञ्चसताय परिसाय परिवुतो राजगहं गतो, अञ्ञेपि महाथेरा अत्तनो अत्तनो परिवारं गहेत्वा सोकसल्ल-

१. वि॰ ४-८१ पिट्ठे॰।
२. दी॰ट्ठ १-७।

समप्पितं महाजनं अस्सासेतुकामा तं तं दिसं पक्कन्ता। पुण्णत्थेरो पन सत्तसतभिक्खुपरिवारो 'तथागतस्स परिनिब्बानट्ठानं आगतागतं महाजनं अस्सासेस्सामी' ति कुसिनारायमेव अट्ठासि। आयस्मा आनन्दो यथा पुब्बे अपरिनिब्बुतस्स, एवं परिनिब्बुतस्सपि भगवतो सयमेव पत्तचीवरमादाय पञ्चहि भिक्खुसतेहि सद्धिं येन सावत्थि तेन चारिकं पक्कामि। गच्छतो पनस्स परिवारा भिक्खू गणनपथं
B 52 वीतिवत्ता" ति। तस्मा तथागतस्स परिनिब्बानतो तीसु सत्ताहेसु अतिक्कन्तेसु एकवीसतिमे दिवसे इमं कम्मवाचं सावेत्वा थेरो राजगहं पक्कन्तो ति वेदितब्बं।

यदि एवं कस्मा पन इध **मङ्गलसुत्तट्ठकथायञ्च**[1] "सत्तसु साधुकीळनदिवसेसु सत्तसु च धातुपूजादिवसेसु वीतिवत्तेसू" ति वुत्तं? सत्तसु धातुपूजादिवसेसु गहितेसु तदविनाभावतो मज्झे चितकाय झापनसत्ताहम्पि गहितमेवा ति कत्वा विसुं न वुत्तं विय दिस्सति। यदि एवं अथ कस्मा "अड्ढमासो अतिक्कन्तो, दियड्ढमासो सेसो" ति च वुत्तं ति? नायं दोसो। अप्पकं[2] हि ऊनमधिकं वा गणनूपगं न होति, तस्मा समुदायो अप्पकेन अधिकोपि अनधिको विय होतीति कत्वा अड्ढमासतो अधिकेपि पञ्च दिवसे "अड्ढमासो अतिक्कन्तो" ति वुत्तं "द्वासीतिखन्धकवत्तानं कत्थचि असीतिखन्धकवत्तानी" ति वचनं विय। तथा अप्पकेन ऊनोपि च समुदायो अनूनो विय होतीति कत्वा "दियड्ढमासतो ऊनेपि पञ्च दिवसे दियड्ढमासो सेसो" ति च वुत्तं। **सतिपट्ठानविभङ्गट्ठकथायं**[3] हि छमासतो ऊनेपि अड्ढमासे "छ मासे सज्झायो कातब्बो" ति वुत्तवचनं विय। तत्थ हि तचपञ्चकादीसु चतूसु पञ्चकेसु द्वीसु च छक्केसु एकेकस्मिं अनुलोमतो पञ्चाहं, पटिलोमतो पञ्चाहं, अनुलोमपटिलोमतो पञ्चाहं, तथा पुरिमपुरिमेहि पञ्चकछक्केहि सद्धिं अनुलोमतो पञ्चाहं, पटिलोमतो पञ्चाहं, अनुलोमपटिलोमतो पञ्चाहं ति एवं विसुं तिपञ्चाहं एकतो तिपञ्चाहञ्च सज्झायं कत्वा छमासं सज्झायो कातब्बो ति वचनं विय। तत्थ हि वक्कपञ्चकादीसु तीसु पञ्चकेसु द्वीसु च छक्केसु विसुं हेट्ठिमेहि एकतो च सज्झाये पञ्चन्नं पञ्चन्नं[4] पञ्चकानं वसेन पञ्चमासपरिपुण्णा लब्भन्ति, तचपञ्चके पन विसुं तिपञ्चाहमेवाति अड्ढमासोयेवेको लब्भतीति अड्ढमासाधिकपञ्चमासा लब्भन्ति।

एवं सति यथा तत्थ अड्ढमासे ऊनेपि मासपरिच्छेदेन परिच्छिज्जमाने सज्झाये छ मासा परिच्छेदका होन्तीति परिच्छिज्जमानस्स सज्झायस्स सत्तमासादिमासन्तरगमननिवारणत्थं छमासग्गहणं कतं, न सकल छमासे सज्झायप्पवत्तिदस्सनत्थं, एवमिधापि मासवसेन काले परिच्छिज्जमाने ऊनेपि पञ्चदिवसे दियड्ढमासो
B 53 परिच्छेदको होती ति परिच्छिज्जमानस्स कालस्स द्विमासादिमासन्तरगमननिवारणत्थं "दियड्ढमासो सेसो" ति दियड्ढमासग्गहणं कतं ति एवमेत्थ अत्थो गहेतब्बो। अञ्ञथा च अट्ठकथावचनानं अञ्ञमञ्ञविरोधो आपज्जति। एकाहमेव वा भगवतो

---

१. खुद्दकपाठ-ट्ठ-७९ पिट्ठे। २. अप्पकेन, सी०।
३. अभि-ट्ठ-२—२३७ पिट्ठे। ४. छन्नं छन्नं, सी०, स्या०।

सरीरं चितकाय झायीति खुद्दकभाणकानं अधिप्पायो ति गहेतब्बं। एवञ्हि सति परिनिब्बानतो सत्तसु साधुकीळनदिवसेसु वीतिवत्तेसु अट्ठमियं चितकाय भगवतो सरीरं झापेत्वा ततो परं सत्तसु दिवसेसु धातुपूजं अकंसू ति अड्ढमासो अतिक्कन्तो, गिम्हानं दियड्ढो च मासो सेसो होति। परिनिब्बानसुत्तन्तपाळियम्पि हि चितकाय झापनसत्ताहं न आगतं, द्वेयेव सत्ताहानि आगतानि, उपपरिक्खित्वा पन यं रुच्चति, तं गहेतब्बं। इतो अञ्ञेन वा पकारेन यथा न विरुज्झति, तथा कारणं परियेसितब्बं। यं पनेत्थ **केनचि** वुत्तं "अड्ढमासो अतिक्कन्तो ति एत्थ एको दिवसो नट्ठो। सो पाटिपददिवसो कोलाहलदिवसो नाम, तस्मा इध न गहितो" ति। तं न सुन्दरं परिनिब्बानसुत्तन्तपाळियं पाटिपददिवसतोयेव पट्ठाय सत्ताहस्स वुत्तत्ता अट्ठकथायञ्च परिनिब्बानदिवसेनपि सद्धिं तिण्णं सत्ताहानं गहितत्ता। तथा हि परिनिब्बानदिवसेन सद्धिं तिण्णं सत्ताहानं गहितत्ता जेट्ठमूलसुक्कपञ्चमी एकवीसतिमो दिवसो होति।

सत्तसु साधुकीळनदिवसेसू ति एत्थ साधुकीळनं नाम संवेगवत्थुं कित्तेत्वा कित्तेत्वा अनिच्चतापटिसंयुत्तानि गीतानि गायित्वा पूजावसेन कीळनतो सुन्दरं कीळनं ति **साधुकीळनं**। अथ वा सपरहितसाधनट्ठेन साधु, तेसं संवेगवत्थुं कित्तेत्वा कित्तेत्वा कीळनं साधुकीळनं, उळारपुञ्ञपसवनतो सम्परायिकत्थाविरोधिकीळाविहारो ति अत्थो। एत्थ च पुरिमस्मिं सत्ताहे साधुकीळाय एकदेसेन कतत्ता साधुकीळनदिवसा नाम ते जाता। विसेसतो पन धातुपूजादिवसेसुयेव साधुकीळनं[1] अकंसु। ततोयेव च महापरिनिब्बानसुत्तन्तपाळियं[2]—

"अथ खो कोसिनारका मल्ला भगवतो सरीरानि सत्ताहं सन्थागारे सत्तिपञ्जरं करित्वा धनुपाकारं परिक्खिपापेत्वा नच्चेहि गीतेहि वादिकेहि मालेहि गन्धेहि सक्करिंसु गरुं करिंसु मानेसुं पूजेसुं" ति। B 54

एतस्स अट्ठकथायं[3] वुत्तं—

"कस्मा पनेते एवमकंसू ति? इतो पुरिमेसु द्वीसु सत्ताहेसु ते भिक्खुसंघस्स ठाननिसज्जोकासं करोन्ता खादनीयभोजनीयादीनि संविदहन्ता साधुकीळिकाय ओकासं न लभिंसु। ततो नेसं अहोसि 'इमं सत्ताहं साधुकीळितं कीळिस्साम, ठानं खो पनेतं विज्जति, यं अम्हाकं पमत्तभावं ञत्वा कोचिदेव आगन्त्वा धातुयो गण्हेय्य, तस्मा आरक्खं ठपेत्वा कीळिस्सामा' ति, तेन ते एवमकंसू" ति।

तस्मा विसेसतो साधुकीळिका धातुपूजादिवसेसुयेवा ति दट्ठब्बं। ते पन धातुपूजाय कतत्ता "धातुपूजादिवसा" ति पकटा जाता ति आह "**सत्तसु च धातुपूजादिवसेसु** ति। **उपकट्ठा** ति आसन्ना। वस्सं उपनेन्ति उपगच्छन्ति एत्था ति **वस्सूपनायिका**। **एकं मग्गं गतो** ति चारिकं चरित्वा महाजनं अस्सासेतुं एकेन मग्गेन गतो।

---

१. साधुकीळितं (क), २. दी० २-१३५ पिट्ठे।
३. दी०-ट्ठ २:१९७ पिट्ठे।

एवं अनुरुद्धत्थेरादयोपि तेसु तेसु जनपदेसु चारिकं चरित्वा महाजनं अस्सासेन्तो गताति दट्ठब्बं। **येन सावत्थि, तेन चारिकं पक्कामी** ति यत्थ सावत्थि, तत्थ चारिकं पक्कामि, येन वा दिसाभागेन सावत्थि पक्कमितब्बा होति, तेन दिसाभागेन चारिकं पक्कामी ति अत्थो।

तत्राति तस्सं सावत्थियं। **सुदं** ति निपातमत्तं। **अनिच्चतादिपटिसंयुत्ताया** ति "सब्बे सङ्खारा अनिच्चा" ति आदिनयप्पवत्ताय। असमुच्छिन्न तण्हानुसयत्ता आविज्जातण्हाभिसङ्खातेन कम्मुना भवयोनिगतिठितिसत्तावासेसु खन्धपञ्चकसङ्खातं अत्तभावं जनेति अभिनिब्बत्तती ति जनो, किलेसे जनेति, अजनि, जनिस्सतीति वा जनो, महन्तो जनो ति **महाजनो**, तं महाजनं, बहुजनं ति अत्थो। **सञ्ञापेत्वा** ति समस्सासेत्वा। **गन्धकुटिया द्वारं विवरित्वा**ति परिभोगचेतियभावतो गन्धकुटिं वन्दित्वा गन्धकुटिया द्वारं विवरीति वेदितब्बं। तेनेव दीघनिकायट्ठकथायं[1] गन्धकुटिं वन्दित्वा" ति वुत्तं। मिलातं मालाकचवरं[2] **मिलातमालाकचवरं**। **यथाठाने ठपेत्वा**
B 55 ति पठमठितट्ठानं अनतिक्कमित्वा यथाठितट्ठानेयेव ठपेत्वा ति अत्थो। **भगवतो ठितकाले करणीयं वत्तं सब्बमकासी** ति सेनासने कत्तब्बवत्तं सन्धाय वुत्तं। करोन्तो च न्हानकोट्ठके सम्मज्जनउदकूपट्ठानादिकालेसु गन्धकुटिं गन्त्वा "ननु भगवा अयं तुम्हाकं न्हानकालो, अयं धम्मदेसनाकालो, अयं भिक्खूनं ओवाददानकालो, अयं सीहसेय्यं कप्पनकालो, अयं मुखधोवनकालो" ति आदिना नयेन परिदेवमानोव अकासि। तमेनं अञ्ञतरा देवता "भन्ते आनन्द तुम्हे एवं परिदेवमाना कथं अञ्ञे अस्सासयिस्सथा" ति संवेजेसि। सो तस्सा वचनेन संविग्गहदयो सन्थम्भित्वा तथागतस्स परिनिब्बानतो पभुति ठाननिसज्जबहुलताय उस्सन्नधातुकं कायं समस्सासेतुं खीरविरेचनं पिवि। इदानि तं दस्सेन्तो "अथ थेरो" ति आदिमाह।

उस्सन्नधातुकं ति उपचितसेम्हादिधातुकं कायं। **समस्सासेतुं** ति सन्तप्पेतुं। **दुतियदिवसे**ति देवताय संवेजितदिवसतो। "जेतवन विहारं पविट्ठदिवसतो वा दुतियदिवसे" ति वदन्ति। विरिच्चति एतेनाति विरेचनं, ओसधपरिभावितं खीरमेव विरेचनं ति **खीरविरेचनं**। **यं सन्धाया**ति यं भेसज्जपानं सन्धाय। अङ्गसुभताय सुभो ति एवं लद्धनामत्ता **सुभेन माणवेन**। **पहितं माणवकं**ति "सत्था परिनिब्बुतो आनन्दत्थेरो किरस्स पत्तचीवरं गहेत्वा आगतो, महाजनो च तं दस्सनाय उपसङ्कमती"ति सुत्वा "विहारं खो पन गन्त्वा महाजनमज्झे न सक्का सुखेन पटिसन्थारं वा कातुं धम्मकथं वा सोतुं, गेहं आगतं येव नं दिस्वा सुखेन पटिसन्थारं करिस्सामि, एका च मे कङ्खा अत्थि, तम्पि पुच्छिस्सामी"ति चिन्तेत्वा सुभेन माणवेन पेसितं माणवकं। **एतदवोचा**ति एतं "अकालो खो"ति आदिकं आनन्दत्थेरो अवोच। **अकालो खो**ति अज्ज गन्तुं युत्तकालो न होति। कस्माति चे आह **"अत्थि मे अज्जा"** ति आदि। **भेसज्जमत्ता** ति अप्पमत्तकं भेसज्जं। अप्पत्थो हि अयं मत्तासद्दो "मत्तासुखपरिच्चागा" ति आदीसु विय।

१. दी० ट्ठ, १-८ पिट्ठे। २. माला एव कचवरं (सी०)।

दुतियदिवसे ति खीरविरेचनं पीतदिवसतो दुतियदिवसे। **चेतकत्थेरेना** ति चेतियरट्ठे जातत्ता "चेतको" ति एवं लद्धनामेन। **सुभेन माणवेन पुट्ठो** ति "येसु धम्मेसु भवं गोतमो इमं लोकं पतिट्ठापेसि, ते तस्स अच्चयेन नट्ठा नु खो, धरन्ति, सचे B 56
धरन्ति, आनन्दो जानिस्सति, हन्द नं पुच्छामी" ति एवं चिन्तेत्वा "येसं सो भवं गोतमो धम्मानं वण्णवादी अहोसि, यत्थ च इमं जनतं समादपेसि निवेसेसि पतिट्ठापेसि, कतमेसानं खो भो आनन्द धम्मानं सो भवं गोतमो वण्णवादी अहोसी" ति आदिना[1] सुभेन माणवेन पुट्ठो। अथस्स थेरो तीणि पिटकानि सीलक्खन्धादीहि तीहि खन्धेहि सङ्गहेत्वा दस्सेन्तो "तिण्णं खो माणव खन्धानं सो भगवा वण्णवादी" ति आदिना[1] सुभसुत्तमभासि। तं सन्धाय वुत्तं **"दीघनिकाये सुभसुत्तं नाम दसमं सुत्तमभासी"** ति।

खण्डफुल्लपटिसङ्खरणं ति एत्थ **खण्डं** ति छिन्नं, **फुल्लं** ति भिन्नं, **तेसं पटिसङ्खरणं** पुन सम्मा पाकतिककरणं, अभिनवकरणं ति वुत्तं होति। **राजगहं** ति एवं नामकं नगरं तञ्हि मन्धातुमहागोविन्दादीहि परिग्गहितत्ता "राजगहं" ति वुच्चति। **छड्डितपतितउक्लापा** ति छड्डिता च पतिता च उक्लापा च अहेसुं ति अत्थो। इदं वुत्तं होति—भगवतो परिनिब्बानट्ठानं गच्छन्तेहि भिक्खूहि छड्डिता विस्सट्ठा, ततोयेव च उपचितादीहि खादितत्ता इतो चितो च पतिता, सम्मज्जनाभावेन आकिण्णकचवरत्ता उक्लापा च अहेसुं ति। इममेवत्थं दस्सेन्तो आह **"भगवतो हि"** ति आदि। परिच्छेदवसेन वेणियति[2] दिस्सतीति **परिवेणं। तत्था** ति तेसु विहारेसु। खण्डफुल्लपटिसङ्खरणं ति इमिना सम्बन्धो। **पठमं मासं** ति वस्सानस्स पठमं मासं, अच्चन्तसंयोगे चेतं उपयोगवचनं। सेनासनवत्तानं पञ्ञत्तत्ता **सेनासनक्खन्धके** च सेनासनपटिबद्धानं बहूनं वचनतो "भगवता....पे०....वण्णितं" ति वुत्तं।

दुतियदिवसे ति "खण्डफुल्लपटिसङ्खरणं करोमा" ति चिन्तितदिवसतो दुतियदिवसे। सो च वस्सूपनायिकादिवसतो दुतियदिवसोति वेदितब्बो। ते हि थेरा आसाळ्हीपुण्णमाय उपोसथं कत्वा पटिपदे सन्निपतित्वा वस्सं उपगन्त्वा एवं चिन्तेसुं। **अजातसत्तु राजा** ति अजातो हुत्वा पितुना पच्चत्थिको जातोति "अजात सत्तू" ति लद्धवोहारो राजा। तस्मिं किर कुच्छिगते देविया एवरूपो दोहळो उप्पज्जि" अहो वताहं रञ्ञो दक्खिणबाहुतो लोहितं पिवेय्यं ति। B 57
अथ तस्सा कथेतुं असक्कोन्तिया किसभावं दुब्बण्णभावञ्च दिस्वा राजा सयमेव पुच्छित्वा ञत्वा च वेज्जे पक्कोसापेत्वा सुवण्णसत्थकेन बाहुं फलेत्वा सुवण्णसरकेन लोहितं गहेत्वा उदकेन सम्भिन्दित्वा पायेसि। नेमित्तका तं सुत्वा "एस गब्भो रञ्ञो सत्तु भविस्सति, इमिना राजा हञ्ञिस्सती" ति ब्याकरिंसु, तस्मा अजातोयेव रञ्ञो सत्तु भविस्सती" ति नेमित्तकेहि निद्दिट्ठत्ता अजातसत्तु नाम जातो। **किं** ति कारणपुच्छनत्थे निपातो, कस्माति अत्थो। **पटिवेदेसुं** ति निवेदेसुं, जानापेसुं ति अत्थो।

---

१. दी० १-१८९। १. दी० १–१८९ पिट्ठे। २. वेदियति (सी०, स्या०)।

विस्सत्था ति[1] निरासङ्कचित्ता। **आणाचक्कं** ति आणायेव अप्पटिहतवुत्तिया पवत्तनट्ठेन चक्कं ति आणाचक्कं। **सन्निसज्जट्ठानं** ति सन्निपतित्वा निसीदनट्ठानं।

राजभवनविभूतिं ति राजभवनसम्पत्तिं। **अवहसन्तमिवा** ति अवहासं कुरुमानं विय। **सिरिया निकेतमिवा** ति सिरिया वसनट्ठानमिव। **एकनिपाततित्थमिव च देवमनुस्सनयनविहङ्गानं** ति एकस्मिं पानीयतित्थे सन्निपतन्ता पक्खिनो विय सब्बेसं जनानं चक्खूनि मण्डपेयेव निपतन्तीति देवमनुस्सानं नयनसङ्खातविहङ्गानं एकनिपाततित्थमिव च। **लोकरामणेय्यकमिव सम्पिण्डितं** ति एकत्थ सम्पिण्डितं रासिकतं लोके रमणीयभावं विय। यदि लोके विज्जमानं रमणीयत्तं सब्बमेव आनेत्वा एकत्थ सम्पिण्डितं सिया, तं विया ति वुत्तं होति। "दट्ठब्बसारमण्डं ति फेग्गुरहितसारं विय कसटविनिमुत्तं पसन्नभूतं विय च दट्ठब्बेसु दट्ठुं अरहरूपेसु सारभूतं पसन्नभूतञ्चा"ति तीसुपि **गण्ठिपदेसु** वुत्तं। दट्ठब्बो दस्सनीयो सारभूतो विसिट्ठतरो मण्डो मण्डनं अलङ्कारो एतस्साति **दट्ठब्बसारमण्डो**, मण्डपो ति एवमेत्थ अत्थो गहेतब्बो ति अम्हाकं खन्ति, उपपरिक्खित्वा युत्ततरं गहेतब्बं। मण्डं सूरियरस्मिं पाति निवारेतीति **मण्डपो**। ....**विविध**....पे० **चारुवितानं** ति एत्थ कुसुमदामानि च तानि ओलम्बकानि चाति कुसुमदामओलम्बकानि। एत्थ च विसेसनस्स परनिपातो दट्ठब्बो, ओलम्बककुसुमदामानीति अत्थो। तानि विविधानि अनेकप्पकारानि विनिग्गलन्तं वमेन्तं निक्खामेन्तमिव चारु सोभनं वितानं एत्थाति **विविधकुसुमदामओलम्बकविनिग्गलन्तचारुवितानो**, मण्डपो, तं अलङ्करित्वा ति योजेतब्बं। **रतनविचित्तमणिकोट्टिमतलमिवा**ति
B 58 नानापुप्फूपहारविचित्तसुपरिनिट्ठितभूमिकम्मत्तायेव नानारतनेहि विचित्तभूतमणिकोट्टिमतलमिवाति अत्थो। एत्थ च रतनविचित्तग्गहणं नानापुप्फूपहारविचित्तताय निदस्सनं, मणिकोट्टिमतलग्गहणं सुपरिनिट्ठितभूमिपरिकम्मतायाति वेदितब्बं। मणियो कोट्टेत्वा कततलत्ता मणिकोट्टनेन निब्बत्ततलं ति मणिकोट्टिमतलं। **नं** ति मण्डपं। **पुप्फूपहारो** पुप्फपूजा। **उत्तराभिमुखं** ति उत्तरदिसाभिमुखं। **आसनारहं** ति निसीदनारहं। **दन्तखचितं** ति दन्तेहि रचितं, दन्तेहि कतं ति वुत्तं होति। **एत्था** ति आसने। **निट्ठितं भन्ते मम किच्चं** ति मया कत्तब्बकिच्चं निट्ठितं ति अत्थो।

तस्मिं पन दिवसे एकच्चे भिक्खू आयस्मन्तं आनन्दं सन्धाय एवमाहंसु "इमस्मिं भिक्खुसंघे एको भिक्खु विस्सगन्धं वायन्तो विचरती" ति। थेरो तं सुत्वा "इमस्मिं भिक्खुसंघे अञ्ञो विस्सगन्धं वायन्तो विचरणकभिक्खु नाम नत्थि, अद्धा एते मं सन्धाय वदन्तो" ति संवेगं आपज्जि। एकच्चे नं आहसुयेव "स्वे आवुसो सन्निपातो" ति आदि। इदानि तं दस्सेन्तो आह "**भिक्खू आयस्मन्तं आनन्दं आहंसू**" ति आदि। **तेना** ति तस्मा। **आवज्जेसी** ति उपनामेसि। **अनुपादाया** ति तण्हादिट्ठिवसेन कञ्चि धम्मं अगहेत्वा, येहि वा किलेसेहि सब्बेहि विमुच्चति, तेसं लेसमत्तम्पि अगहेत्वा ति अत्थो। **आसवेही** ति भवतो आभवग्गं धम्मतो वा आगोत्रभुं सवनतो पवत्तनतो आसवसञ्ञितेहि किलेसेहि। लक्खणवचनञ्चेतं आसवेहीति, तदेकट्ठताय पन

---

१. विसट्ठाति (क)।

सब्बेहिपि किलेसेहि, सब्बेहिपि पापधम्मेहि चित्तं विमुच्चतियेव। **चित्तं विमुच्ची** ति चित्तं अरहत्तमग्गक्खणे आसवेहि विमुच्चमानं कत्वा अरहत्तफलक्खणे विमुच्चीति अत्थो। **चङ्कमेना** ति चङ्कमनकिरियाय। विवट्टूपनिस्सयभूतं कतं उपचितं पुञ्ञं एतेनाति **कतपुञ्ञो**, अरहत्ताधिगमाय कताधिकारो ति अत्थो। **पधानमनुयुञ्जा** ति वीरियं अनुयुञ्ज, अरहत्ताधिगमाय अनुयोगं करोही ति अत्थो। **कथादोसो नाम नत्थी** ति कथाय अपरज्झं[1] नाम नत्थि। **अच्चारद्धं वीरियं** ति अतिविय आरद्धं वीरियं। **उद्धच्चाया** ति उद्धतभावाय। **वीरियसमतं योजेमी** ति चङ्कमनवीरियस्स अधिमत्तत्ता तस्स पहानवसेन समाधिना समरसतापादनेन वीरियसमतं योजेमि।

दुतियदिवसे ति थेरेन अरहत्तप्पत्तदिवसतो दुतियदिवसे। **धम्मसभायं सन्निपतिता** ति पक्खस्स पञ्चमियं सन्निपतिंसु। **अत्तनो अरहत्तपत्तिं ञापेतुकामो**ति 'सेक्खताय धम्मसङ्गीतिया गहेतुं अयुत्तम्पि बहुस्सुतत्ता गण्हिस्सामा'' ति चिन्तेत्वा निसिन्नानं थेरानं ''इदानि अरहत्तप्पत्तो'' ति सोमनस्सुप्पादनत्थं ''अप्पमत्तो होती'' ति दिन्न-ओवादस्स सफलतादीपनत्थं अत्तुपनायिकं अकत्वा अञ्ञब्याकरणस्स भगवता संवण्णि-तत्ता च थेरो अत्तनो अरहत्तप्पत्तिं ञापेतुकामो अहोसीति वेदितब्बं। **यथावुड्ढं** ति वुड्ढपटिपाटिं अनतिक्कमित्वा। **एके** ति मज्झिमभाणकानंयेव एके। पुब्बे वुत्तम्पि हि सब्बं मज्झिमभाणका वदन्तियेवा ति वेदितब्बं। दीघभाणका[2] पनेत्थ एवं वदन्ति— B 59

''अथ खो आयस्मा आनन्दो अरहा समानो सन्निपातं अगमासि। कथं अगमासि? 'इदानिम्हि सन्निपातमज्झं पविसनारहो' ति हट्ठतुट्ठचित्तो एकंसं चीवरं कत्वा बन्धना मुत्ततालपक्कं विय पण्डुकम्बले निक्खित्तजातिमणि विय विगतवलाहके नभे समुग्गतपुण्णचन्दो विय बालातपसम्फस्सविकसितरेणुपिञ्जरगब्भं पदुमं विय च परिसुद्धेन परियोदातेन सप्पभेन सस्सिरिकेन मुखवरेन अत्तनो अरहत्तपत्तिं आरोचय-मानो विय च अगमासि। अथ नं दिस्वा आयस्मतो महाकस्सपस्स एतदहोसि 'सोभति वत भो अरहत्तप्पत्तो आनन्दो, सचे सत्था धरेय्य, अद्धा अज्ज आनन्दस्स साधुकारं ददेय्य, हन्द इमस्साहं इदानि सत्थारा दातब्बं साधुकारं ददामी'ति तिक्खत्तुं साधु-कारमदासी'' ति।

आकासेन आगन्त्वा निसीदीतिपि एकेति एत्थ पन तेसं तेसं तथा तथा गहेत्वा आगतमत्तं ठपेत्वा विसुं विसुं वचने अञ्ञं विसेसकारणं नत्थीति वदन्ति। उपति-स्सत्थेरो पनाह ''सत्तमासं कताय धम्मसङ्गीतिया कदाचि पथवियं निमुज्जित्वा आगतत्ता तं गहेत्वा एके वदन्ति। कदाचि आकासेन आगतत्ता तं गहेत्वा एके[3] वदन्ती''ति।

भिक्खू आमन्तेसी ति भिक्खू आलपि अभासि सम्बोधेसी ति अयमेत्थ अत्थो। B 60
अञ्ञत्र पन ञापने पि होति। यथाह ''आमन्तयामि वो भिक्खवे[4] पटिवेदयामि वो

१. असच्चं (सी०, स्या०)।
२. दी०-ट्ठ १—११-पिट्ठे।
३. केचि (सी०, स्या०)।
४. दी० २-१२८ पिट्ठे।

भिक्खवे" ति[१]। पक्कोसनेपि दिस्सति। यथाह "एहि त्वं भिक्खु मम वचनेन सारिपुत्तं आमन्तेही"ति[२]। **आवुसो** ति आमन्तनाकारदीपनं। **कं धुरं कत्वा**ति कं जेट्ठकं कत्वा। **किं आनन्दो नप्पहोती** ति अट्ठकथाचरियेहि ठपितपुच्छा। **नप्पहोती** ति न सक्कोति। एतदग्गं ति एसो अग्गो। लिङ्गविपल्लासेन हि अयं निद्देसो। **यदिदं** ति च यो अयं ति अत्थो, यदिदं खन्धपञ्चकं ति वा योजेतब्बं। सम्मन्नीति सम्मतं अकासि। **उपालिं विनयं पुच्छेय्यं** ति पुच्छ धातुस्स द्विकम्मकत्ता वुत्तं। **बीजनिं गहेत्वा** ति एत्थ बीजनीगहणं धम्मकथिकानं धम्मताति वेदितब्बं। भगवापि हि धम्मकथिकानं धम्मतादस्सनत्थमेव विचित्तबीजनिं गण्हाति। न हि अञ्ञथा सब्बस्सपि लोकस्स अलङ्कारभूतं परमुक्कंसगतसिक्खासंयमानं बुद्धानं मुखचन्दमण्डलं पटिच्छादेतब्बं होति। "पठमं आवुसो उपालि पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तं" ति कस्मा वुत्तं, ननु तस्स सङ्गीतिया पुरिमकाले पठमभावो न युत्तोति ? नो न युत्तो भगवता पञ्ञत्तानुक्कमेन पातिमुक्खुद्देसानुक्कमेन च पठमभावस्स सिद्धत्ता। येभुय्येन हि तीणि पिटकानि भगवतो धरमानकाले ठितानुक्कमेनेव सङ्गीतानि, विसेसतो विनयाभिधम्मपिटकानीति दट्ठब्बं। **किस्मिं वत्थुस्मिं मेथुन धम्मे** ति च निमित्तत्थे भुम्मवचनं।

वत्थुम्पि पुच्छीति आदि "कत्थ पञ्ञत्तं" ति आदिना दस्सितेन सह ततो अवसिट्ठम्पि सङ्गहेत्वा दस्सनवसेन वुत्तं। किं पनेत्थ पठमपाराजिकपाळियं किञ्चि अपनेतब्बं वा पक्खिपितब्बं वा आसि नासीति ? बुद्धस्स भगवतो भासिते अपनेतब्बं नाम नत्थि। न हि तथागता एकब्यञ्जनम्पि निरत्थकं वदन्ति, सावकानं पन देवतानं वा भासिते अपनेतब्बम्पि होति, तं धम्मसङ्गाहकत्थेरा अपनयिंसु, पक्खिपितब्बं पन सब्बत्थापि अत्थि, तस्मा यं यत्थ पक्खिपितुं युत्तं, तं तत्थ पक्खिपिंसुयेव। किं पन तन्ति चे ? "तेन समयेना"ति वा "तेन खो पन समयेना" ति वा "अथ खो" इति वा "एवं वुत्ते"ति वा "एतदवोचा" ति वा एवमादिकं सम्बन्धवचनमत्तं। एवं
B 61 पक्खिपितब्बयुत्तं पक्खिपित्वा पन इदं पठमपाराजिकं ति ठपेसुं। पठमपाराजिके सङ्गहमारुळ्हे पञ्च अरहन्तसतानि सङ्गहं आरोपितनयेनेव गणसज्झायमकंसु। "तेन समयेन बुद्धो भगवा वेरञ्जायं विहरती"ति च नेसं सज्झायारम्भ कालेयेव साधुकारं ददमाना विय महापथवी उदकपरियन्तं कत्वा कम्पित्थ। ते एतेनेव नयेन सेसपाराजिकानिपि सङ्गहं आरोपेत्वा "इदं पाराजिक कण्डं" ति ठपेसुं। एवं तेरस संघादिसेसानि "तेरसकं"ति आदीनि वत्वा वीसाधिकानि द्वे सिक्खापदसतानि "महाविभङ्गो" ति कित्तेत्वा ठपेसुं। महाविभङ्गावसानेपि पुरिमनयेनेव महापथवी अकम्पित्थ। ततो भिक्खुनिविभङ्गे अट्ठ सिक्खापदानि "पाराजिककण्डं नामा" ति आदीनि वत्वा तीणि सिक्खापदसतानि चत्तारि च सिक्खापदानि "भिक्खुनिविभङ्गो"ति कित्तेत्वा "अयं उभतोविभङ्गो नाम चतुसट्ठिभाणवारो" ति ठपेसुं। उभतोविभङ्गावसानेपि वुत्तनयेनेव पथवी अकम्पित्थ। एतेनेवुपायेन असीतिभाणवारपरिमाणं खन्धकं पञ्चवीसतिभाणवारपरिमाणं परिवारञ्च सङ्गहं आरोपेत्वा इदं विनयपिटकं नामा" ति ठपेसुं।

---

१. अं २-४९५ पिट्ठे २. अं ३-१८१ पिट्ठे।

विनयपिटकावसानेपि वुत्तनयेनेव पथवीकम्पो अहोसि। तं आयस्मन्तं उपालित्थेरं पटिच्छापेसुं "आवुसो इदं तुय्हं निस्सितके वाचेही"ति एवमेत्थ अवुत्तोपि विसेसो वेदितब्बो।

एवं विनयपिटकं सङ्गहमारोपेत्वा सुत्तन्तपिटकं सङ्गायिंसु। इदानि तं दस्सेन्तो आह "**विनयं सङ्गायित्वा**" ति आदि। **महाकस्सपत्थेरो आनन्दत्थेरं धम्मं पुच्छी** ति एत्थ अयमनुक्कमो वेदितब्बो–आनन्दत्थेरे दन्तखचितं बीजनिं गहेत्वा धम्मासने निसिन्ने आयस्मा महाकस्सपत्थेरो भिक्खू पुच्छि "कतरं आवुसो पिटकं पठमं सङ्गायामा" ति। सुत्तन्तपिटकं भन्ते ति। सुत्तन्तपिटके चतस्सो सङ्गीतियो, तासु पठमं कतरं सङ्गीतिं ति। दीघसङ्गीतिं भन्तेति। दीघसङ्गीतियं चतुत्तिंस सुत्तानि, तयो वा वग्गा, तेसु पठमं कतरं वग्गं ति। सीलक्खन्धवग्गं भन्तेति। सीलक्खन्धवग्गे तेरस सुत्तन्ता, तेसु पठमं कतरं सुत्तं ति। ब्रह्मजालसुत्तं नाम भन्ते तिविधसीलालङ्कतं नानाविधमिच्छाजीवकुहनलपनादिविद्धंसनं द्वासट्ठिदिट्ठिजालविनिवेठनं दससहस्सिलोकधातुपकम्पनं, तं पठमं सङ्गायामा ति। अथ खो आयस्मा महाकस्सपो आयस्मन्तं आनन्दं एतदवोच "ब्रह्मजालं आवुसो आनन्द कत्थ भासितं " ति।

अन्तरा च भन्ते राजगहं अन्तरा च नाळन्दं ति एत्थ **अन्तरा** सद्दो कारणखण- B 62
चित्तवेमज्झविवरादीसु दिस्सति। तथा हि "तदन्तरं को जानेय्य अञ्ञत्र तथागता" ति[1] च, "जना सङ्गम्म मन्तेन्ति, मञ्च तञ्च किमन्तरं" ति[2] च आदीसु कारणे अन्तरासद्दो वत्तति। "अद्दस मं भन्ते अञ्ञतरा इत्थी विज्जन्तरिकाय भाजनं धोवन्ती" ति आदीसु[3] खणे। "यस्सन्तरतो न सन्ति कोपा" ति आदीसु[4] चित्ते। "अन्तरा वोसानमापादी" ति आदीसु[5] वेमज्झे। "अपि चायं तपोदा द्विन्नं महानिरयानं अन्तरिकाय आगच्छती" ति आदीसु[6] विवरे। स्वायमिध विवरे वत्तति, तस्मा राजगहस्स च नाळन्दाय च विवरे ति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो, अन्तरासद्देन पन युत्तत्ता उपयोगवचनं कतं। ईदिसेसु च ठानेसु अक्खरचिन्तका "अन्तरा गामञ्च नदिञ्च याती" ति एवं एकमेव अन्तरासद्दं पयुज्जन्ति, सो दुतियपदेनपि योजेतब्बो होति। अयोजियमाने उपयोगवचनं न पापुणाति सामिवचनप्पसङ्गे अन्तरासद्दयोगेन उपयोगवचनस्स इच्छितत्ता। इध पन योजेत्वा एवं वुत्तो। **राजागारके** ति तत्थ रञ्ञो कीळनत्थं पटिभानचित्तविचित्रं अगारं अकंसु, तं राजागारकं ति पवुच्चति, तस्मिं। **अम्बलट्ठिका** ति रञ्ञो उय्यानं। तस्स किर द्वारसमीपे तरुणो अम्बरुक्खो अत्थि, तं अम्बलट्ठिका ति वदन्ति। तस्स अविदूरभवत्ता उय्यानम्पि अम्बलट्ठिकात्वेव सङ्ख्यं गतं "वरुणानगरं" ति आदीसु विय।

---

१. अं० २–३०८, अं० ३-३६७ पिट्ठेसु। २. सं० १-२०३ पिट्ठे।
३. म० २-११२ पिट्ठे। ४. खु० १-१०० पिट्ठे।
५. म० १-२५१ पिट्ठे। ६. वि० १-१४९ पिट्ठे।

सुप्पियञ्च परिब्बाजकं ति एत्थ **सुप्पियो** ति तस्स नामं, **परिब्बाजको** ति सञ्जयस्स अन्तेवासी छन्नपरिब्बाजको। **ब्रह्मदत्तञ्च माणवकं** ति एत्थ **ब्रह्मदत्तो** ति तस्स नामं। **माणवो** ति सत्तोपि चोरोपि तरुणोपि वुच्चति। तथा हि—

"चोदिता देवदूतेहि, ये पमज्जन्ति माणवा।
ते दीघरत्तं सोचन्ति, हीनकायूपगा नरा" ति[1]—

आदीसु सत्तो माणवो ति वुत्तो। "माणवेहिपि समागच्छन्ति कतकम्मेहिपि अकतकम्मेहिपी" ति आदीसु[2] चोरो। "अम्बट्ठमाणवो अङ्गको माणवो" ति आदीसु[3] तरुणो
B 63 माणवो ति वुत्तो। इधापि अयमेव अधिप्पेतो। इदं वुत्तं होति "ब्रह्मदत्तं नाम तरुणपुरिसं आरब्भा" ति। **जीवकम्बवने** ति जीवकस्स कोमारभच्चस्स अम्बवने। अथ "कं आरब्भा" ति अवत्वा "केन सद्धिं" ति कस्मा वुत्तं? न एतं सुत्तं भगवता एव वुत्तं, रञ्ञापि "यथा नु खो इमानि पुथुसिप्पायतनानी" ति आदिना किञ्चि किञ्चि वुत्तं अत्थि, तस्मा एवं वुत्तं ति दट्ठब्बं। **वेदेहिपुत्तेना** ति अयं कोसलरञ्ञो धीताय पुत्तो, न विदेहरञ्ञो, "वेदेही" ति पन पण्डिताधिवचनमेतं। विदन्ति एतेनाति वेदो, ञाणस्सेतं अधिवचनं। वेदेन ईहति घटति वायमतीति वेदेहि, वेदेहिया पुत्तो वेदेहिपुत्तो, तेन।

एतेनेवुपायेन पञ्च निकाये पुच्छी ति एत्थ अयमनुक्कमो वेदितब्बो। वुत्तनयेन ब्रह्मजालस्स पुच्छाविसज्जनावसाने पञ्च अरहन्तसतानि सज्झायमकंसु। वुत्तनयेनेव च पथवीकम्पो अहोसि। एवं ब्रह्मजालं सङ्गायित्वा ततो परं "सामञ्ञफलं पनावुसो आनन्द कत्थ भासितं" ति आदिना पुच्छाविसज्जनानुक्कमेन सद्धिं ब्रह्मजालेन तेरस सुत्तन्तं सङ्गायित्वा "अयं सीलक्खन्धवग्गो नामा" ति कित्तेत्वा ठपेसुं। तदनन्तरं महावग्गं, तदनन्तरं पाथिकवग्गं ति एवं तिवग्गसङ्गहं चतुत्तिंससुत्तन्तपटिमण्डितं चतुसट्ठिभाणवारपरिमाणं तन्तिं सङ्गायित्वा "अयं दीघनिकायो नामा" ति वत्वा आयस्मन्तं आनन्दत्थेरं पटिच्छापेसुं "आवुसो इमं तुय्हं निस्सितके वाचेही" ति। ततो अनन्तरं असीतिभाणवारपरिमाणं मज्झिमनिकायं सङ्गायित्वा धम्मसेनापतिसारिपुत्तत्थेरस्स निस्सितके पटिच्छापेसुं "इमं तुम्हे परिहरथा" ति। तदनन्तरं भाणवारसतपरिमाणं संयुत्तनिकायं सङ्गायित्वा महाकस्सपत्थेरं पटिच्छापेसुं "भन्ते इमं तुम्हाकं निस्सितके वाचेथा" ति। तदनन्तरं वीसतिभाणवारसतपरिमाणं अङ्गुत्तरनिकायं सङ्गायित्वा अनुरुद्धत्थेरं पटिच्छापेसुं "इमं तुम्हाकं निस्सितके वाचेथा" ति।

तदनन्तरं—

"धम्मसङ्गणिं विभङ्गञ्च, कथावत्थुञ्च पुग्गलं।
धातुयमक पट्ठानं, अभिधम्मोति वुच्चती" ति—

B 64 एवं संवण्णितं सुखुमञाणगोचरं तन्तिं सङ्गायित्वा "इदं अभिधम्मपिटकं नामा" ति

---

१. म० ३-२२५, अं० १-१४१ पिट्ठेसु। २. म० २-११२ पिट्ठे।
३. दी० १-८४, ११६ पिट्ठेसु।

वत्वा पञ्च अरहन्तसतानि सज्झायमकंसु। वुत्तनयेनेव पथवीकम्पो अहोसि। ततो परं जातकं महानिद्देसो पटिसम्भिदामग्गो अपदानं सुत्तनिपातो खुद्दकपाठो धम्मपदं उदानं इतिवुत्तकं विमानवत्थु पेतवत्थु थेरगाथा थेरीगाथा ति इमं तन्तिं सङ्गायित्वा "खुद्दकगन्थो नाम अयं" ति च वत्वा अभिधम्मपिटकस्मिंयेव सङ्गहं आरोपयिंसू ति दीघभाणका वदन्ति। मज्झिमभाणका पन "चरियापिटकबुद्धवंसेहि सद्धिं सब्बम्पि तं खुद्दकगन्थं सुत्तन्तपिटके परियापन्नं" ति वदन्ति। अयमेत्थ अधिप्पायो—जातकादिके खुद्दकनिकायपरियापन्ने येभुय्येन च धम्मनिद्देसभूते तादिसे अभिधम्मपिटके सङ्गण्हितुं युत्तं, न पन दीघनिकायादिप्पकारे सुत्तन्तपिटके, नापि पञ्ञत्तिनिद्देसभूते विनयपिटके ति। दीघभाणका "जातकादीनं अभिधम्मपिटके सङ्गहो" ति वदन्ति। चरियापिटकबुद्धवंसानञ्चेत्थ अग्गहणं जातकगतिकत्ता। मज्झिमभाणका पन अट्ठुप्पत्तिवसेन देसितानं जातकादीनं यथानुलोमदेसनाभावतो तादिसे सुत्तन्तपिटके सङ्गहो युत्तो, न पन सभावधम्मनिद्देसभूते यथाधम्मसासने अभिधम्मपिटके ति जातकादीनं सुत्तपरियापन्नतं वदन्ति। तत्थ युत्तं विचारेत्वा गहेतब्बं। खुद्दकनिकायस्स सेसनिकायानं विय अपाकटत्ता सेसे ठपेत्वा खुद्दकनिकायं पाकटं कत्वा दस्सेन्तो "**तत्थ खुद्दकनिकायो नाम**" ति आदिमाह। **तत्था** ति तेसु निकायेसु। **तत्था** ति खुद्दकनिकाये।

एवं निमित्तपयोजनकालदेसकारककरणप्पकारेहि पठममहासङ्गीतिं दस्सेत्वा इदानि तत्थ ववत्थापितेसु धम्मविनयेसु नानप्पकारकोसल्लत्थं एकविधादिभेदे दस्सेतुं "**तदेतं सब्बम्पी**" ति आदिमाह। तत्थ **अनुत्तरं सम्मा सम्बोधिं** ति एत्थ **अनावरणञाणपदट्ठानं मग्गञाणं मग्गञाणपदट्ठानञ्च** अनावरणञाणं "सम्मासम्बोधी" ति वुच्चति। **पच्चवेक्खन्तेन वा** ति उदानादिवसेन पवत्तधम्मं सन्धायाह। **विमुत्तिरसं** ति अरहत्तफलस्सादं विमुत्तिसम्पत्तिकं वा अग्गफलनिप्फादनतो, विमुत्तिकिच्चं वा किलेसानं अच्चन्तविमुत्तिसम्पादनतो।

किञ्चापि अविसेसेन सब्बम्पि बुद्धवचनं किलेसविनयनेन विनयो, यथानुसिट्ठं पटिपज्जमाने अपायपतनादितो धारणेन धम्मो च होति, इधाधिप्पेते पन धम्मविनये B 65
निद्धारेतुं "**तत्थ विनयपिटकं**" ति आदिमाह। खन्धादिवसेन सभावधम्मदेसनाबाहुल्लतो आह "**अवसेसं बुद्धवचनं धम्मो**" ति। अथ वा यदिपि धम्मोयेव विनयो परियत्ति आदिभावतो, तथापि विनयसद्दसन्निधानो[1] अभिन्नाधिकरणभावेन पयुत्तो धम्मसद्दो विनयतन्तिविपरीतं तन्तिं दीपेति यथा "पुञ्ञञाणसम्भारो, गोबलीबद्धं" ति आदि।

अनेकजातिसंसारं ति अयं गाथा भगवता अत्तनो सब्बञ्ञुतञ्ञाणपदट्ठानं अरहत्तप्पत्तिं पच्चवेक्खन्तेन एकूनवीसतिमस्स पच्चवेक्खणञाणस्स अनन्तरं भासिता। तेनाह "**इदं पठमबुद्धवचनं**" ति। इदं किर सब्बबुद्धेहि अविजहितउदानं। अयमस्स सङ्खेपत्थो[2]—अहं इमस्स अत्तभावगेहस्स कारकं तण्हावड्ढकिं गवेसन्तो येन ञाणेन तं दट्ठुं सक्का, तस्स बोधिञाणस्सत्थाय दीपङ्करपादमूले कताभिनीहारो एत्तकं कालं

---

१. विनयसद्दसन्निधाने (स्या०)। २. धम्मपद-ट्ठ-२-८० पिट्ठेपि पस्सितब्बं।

अनेकजातिसंसारं अनेकजातिसतसहस्ससङ्ख्यं संसारवट्टं **अनिब्बिसं** अनिब्बिसन्तो तं ञाणं अविन्दन्तो अलभन्तोयेव **सन्धाविस्सं** संसरिं। यस्मा जराब्याधिमरणमिस्सताय जाति नामेसा पुनप्पुनं उपगन्तुं दुक्खा, न च सा तस्मिं अदिट्ठे निवत्तति, तस्मा तं गवेसन्तो सन्धाविस्सं ति अत्थो।

दिट्ठोसी ति इदानि मया सब्बञ्ञुतञ्ञाणं पटिविज्झन्तेन दिट्ठो असि। **पुन गेहं** ति पुन इमं अत्तभावसङ्खातं मम गेहं **न काहसि** न करिस्ससि। तव **सब्बा** अनवसेसा किलेस**फासुका** मया **भग्गा**। इमस्स तया कतस्स अत्तभावगेहस्स **कूटं** अविज्जासङ्खातं कण्णिकमण्डलं **विसङ्खतं** विद्धंसितं। **विसङ्खारं** निब्बानं आरम्मण-करणवसेन **गतं** अनुपविट्ठं इदानि मम **चित्तं**, अहञ्च तण्हानं खयसङ्खातं अरहत्तमग्गं अरहत्तफलं वा **अज्झगा** अधिगतो पत्तोस्मीति अत्थो। **गण्ठिपदेसु** पन "विसङ्खारगतं ति चित्तमेव तण्हानं खयसङ्खातं अरहत्तमग्गं अरहत्तफलं वा अज्झगा अधिगतो पत्तो ति एवम्पि अत्थो वुत्तो। अयं मनसा पवत्तितधम्मानं आदि। "यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा ति अयं पन वाचाय पवत्तितधम्मानं आदी" ति वदन्ति। अन्तोजप्पनवसेन किर भगवा "अनेकजातिसंसारं" ति आदिमाह।

B 66 **केची** ति खन्धकभाणका। पठमं वुत्तो पन धम्मपदभाणकानं अधिप्पायो ति वेदितब्बो। एत्थ च खन्धकभाणका वदन्ति "धम्मपदभाणकानं गाथा मनसा देसितत्ता तदा महतो जनस्स उपकाराय न होति, अम्हाकं पन गाथा वचीभेदं कत्वा देसितत्ता तदा सुणन्तानं देवब्रह्मानं उपकाराय अहोसि, तस्मा इदमेव पठमबुद्धवचनं" ति। धम्मपदभाणका पन "देसनाय जनस्स उपकारानुपकारभावो लक्खणं न होति, भगवता मनसा देसितत्तायेव इदं पठमबुद्धवचनं" ति वदन्ति, तस्मा उभयम्पि अञ्ञमञ्ञं विरुद्धं न होती ति वेदितब्बं। ननु च यदि "अनेकजातिसंसारं" ति मनसा देसितं, अथ कस्मा धम्मपदअट्ठकथायं[1] "अनेकजातिसंसारं" ति इमं धम्मदेसनं सत्था बोधि-रुक्खमूले निसिन्नो उदानवसेन उदानेत्वा अपरभागे आनन्दत्थेरेन पुट्ठो कथेसी" ति वुत्तं ति? तत्थापि मनसा उदानेत्वा ति एवमत्थो गहेतब्बो। अथवा[2] मनसाव देसितं ति एवं गहणे किं कारणं ति चे? यदि वचीभेदं कत्वा देसितं सिया, उदानपाळियं आरुळ्हं भवेय्य, तस्मा उदानपाळियं अनारुळ्हभावोयेव वचीभेदं अकत्वा मनसा देसितभावे कारणं ति वदन्ति।

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा ति एत्थ **इति** सद्दो आदि अत्थो। तेन "आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स, अथस्स कङ्खा वपयन्ति सब्बा। यतो पजानाति सहेतु धम्मं" ति आदिगाथात्तयं सङ्गण्हाति। **उदानगाथं** ति पन जातिया एकवचनं, तत्थापि पठमगाथं येव वा गहेत्वा वुत्तं ति वेदितब्बं। एत्थ पन यं वत्तब्बं, तं खन्धके आवि भविस्सति। **पाटिपददिवसे** ति इदं "सब्बञ्ञुभावप्पत्तस्सा" ति न एतेन सम्बन्धितब्बं, "पच्च-वेक्खन्तस्स उप्पन्ना" ति एतेन पन सम्बन्धितब्बं। विसाखपुण्णमायमेव हि भगवा पच्चूससमये सब्बञ्ञुतं पत्तो ति। **सोमनस्समयञाणेना** ति सोमनस्ससम्पयुत्तञाणेन।

१. धम्मपद-ट्ठ २-८० पिट्ठे। २. अथ तं (सी०, स्या०)।

आमन्तयामी ति निवेदयामि, बोधेमी ति अत्थो। **वयधम्मा ति** अनिच्चलक्खणमुखेन दुक्खानत्तलक्खणम्पि सङ्खारानं विभावेति "यदनिच्चं तं दुक्खं, यं दुक्खं तदनत्ता" ति वचनतो। लक्खणत्तयविभावननयेनेव तदारम्मणं विपस्सनं दस्सेन्तो सब्बतित्थियानं अविसयभूतं बुद्धावेणिकं चतुसच्चकम्मट्ठानाधिट्ठानं अविपरीतं निब्बानगामिनिं पटिपदं पकासेतीति दट्ठब्बं। इदानि तत्थ सम्मापटिपत्तियं नियोजेति "**अप्पमादेन** B 67
सम्पादेथा" ति। अथवा "वयधम्मा सङ्खारा" ति एतेन सङ्खेपेन संवेजेत्वा" अप्पमादेन सम्पादेथा ति सङ्खेपेनेव निरवसेसं सम्मापटिपत्तिं दस्सेति। अप्पमादपदञ्हि सिक्खत्तयसङ्गहितं केवलपरिपुण्णं सासनं परियादियित्वा तिट्ठतीति। **अन्तरे** ति अन्तराळे, वेमज्झे ति अत्थो।

सुत्तन्तपिटकं ति एत्थ यथा कम्ममेव कम्मन्तं, एवं सुत्तमेव सुत्तन्तंति वेदितब्बं। **असङ्गीतं**ति सङ्गीतिक्खन्धककथावत्थुप्पकरणादि। केचि पन "सुभसुत्तम्पि पठमसङ्गीतियं असङ्गीतं ति वदन्ति, तं न युज्जति। "पठमसङ्गीतितो पुरेतरमेव हि आयस्मता आनन्दत्थेरेन जेतवने विहरन्तेन सुभस्स माणवस्स देसितं" ति **आचरियधम्मपालत्थेरेन** वुत्तं। सुभसुत्तं पन "एव मे सुतं एकं समयं आयस्मा आनन्दो सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे अचिरपरिनिब्बुत्ते भगवती"ति आदिना[२]। तत्थ "एवं मे सुतं"ति आदिवचनं पठमसङ्गीतियं आयस्मता आनन्दत्थेरेनेव वत्तुं युत्तरूपं न होति। न हि आनन्दत्थेरो सयमेव सुभसुत्तं देसेत्वा "एवं मे सुतं" ति आदीनि वदति। एवं पन वत्तब्बं सिया "एकमिदाहं भन्ते समयं सावत्थियं विहरामि जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे"ति, तस्मा दुतियततियसङ्गीतिकारकेहि "एवं मे सुतं" ति आदिना सुभसुत्तं सङ्गीतिमारोपितं विय दिस्सति। अथ **आचरियधम्मपालत्थेरस्स** एवमधिप्पायो सिया "आनन्दत्थेरेनेव वुत्तम्पि सुभसुत्तं पठमसङ्गीतिं आरोपेत्वा तन्तिं ठपेतुकामेहि महाकस्सपत्थेरादीहि अञ्ञेसु सुत्तेसु आगतनयेनेव 'एवं मे सुतं' ति आदिना तन्ति ठपिता"ति, एवं सति युज्जेय्य। अथ वा आयस्मा आनन्दत्थेरो सुभसुत्तं सयं देसेन्तोपि सामञ्ञफलादीसु भगवता देसितनयेनेव देसेसीति भगवतो सम्मुखा लद्धनये ठत्वा देसितत्ता भगवता देसितं धम्मं अत्तनि अदहन्तो[३] "एवं मे सुतं"ति आदिमाहा ति एवमधिप्पायो वेदितब्बो।

उभयानि पातिमोक्खानीति भिक्खुभिक्खुनीपातिमोक्खवसेन। **द्वे विभङ्गानीति** भिक्खुभिक्खुनीविभङ्गवसेनेव द्वे विभङ्गानि। **द्वावीसति खन्धकानी**ति महावग्गचूळवग्गेसु आगतानि द्वावीसति खन्धकानि। **सोळसपरिवारा** ति सोळसहि परिवारेहि उपलक्खित- B 68
तत्ता सोळसपरिवारा ति वुत्तं। तथा हि परिवारपाळियं "यं तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन पठमं पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तं"ति आदिना[४] पञ्ञत्तिवारो, ततो परं "मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तो कति आपत्तियो आपज्जती" ति आदिना[५] कता-

१. सं० २-१९ पिट्ठे। २. दी० १-१८८ पिट्ठे।
३. आहरन्तो (क०)। ४. वि० ५-१ पिट्ठे।
५. वि० ५-५५ पिट्ठे।

पत्तिवारो, "मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो चतुन्नं विपत्तीनं कति विपत्तियो भजन्ती"ति आदिप्पभेदो[1] विपत्तिवारो, "मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतिहि आपत्तिक्खन्धेहि सङ्गहिता"ति आदिप्पभेदो[2] सङ्गहवारो, "मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठन्ती"ति आदिना[3] समुट्ठानवारो, "मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो चतुन्नं अधिकरणानं कतमं अधिकरणं"ति आदिना[3] अधिकरणवारो, "मेथुनं धम्मं पटिसेवन्तस्स आपत्तियो सत्तन्नं समथानं कतिहि समथेहि सम्मन्ती"ति आदिप्पभेदो [4]समथवारो, तदनन्तरं समुच्चयवारो चाति अट्ठ वारा वुत्ता। ततो परं "मेथुनं धम्मं पटिसेवनपच्चया पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्तं" ति आदिना[5] नयेन पुन पच्चयवसेन एको पञ्ञत्तिवारो, तस्स वसेन पुरिमसदिसा एव कतापत्तिवारादयो सत्त वारा ति एवं अपरेपि अट्ठ वारा वुत्ता। इति इमानि अट्ठ, पुरिमानिपि अट्ठाति महाविभङ्गे सोळस वारा दस्सिता। ततो परं तेनेव नयेन भिक्खुनिविभङ्गेपि सोळस वारा आगता ति इमेहि सोळसहि वारेहि उपलक्खितत्ता सोळसपरिवाराति वुच्चति। पोत्थकेसु पन कत्थचि "परिवारो"ति एत्तकमेव दिस्सति, बहूसु पन पोत्थकेसु दीघनिकायट्ठकथायं अभिधम्मट्ठकथायञ्च "सोळसपरिवारा"ति एवमेव वुत्तत्ता अयम्पि पाठो न सक्का पटिबाहितुं ति तस्सेवत्थो वुत्तो।

ब्रह्मजालादिचतुत्तिंससुत्तसङ्गहो ति ब्रह्मजालसुत्तादीनि चतुत्तिंस सुत्तानि सङ्गय्हन्ति एत्थ, एतेनाति वा ब्रह्मजालादिचतुत्तिंससुत्तसङ्गहो। वुत्तप्पमाणानं वा सुत्तानं सङ्गहो एतस्सा ति ब्रह्मजालादिचतुत्तिंससुत्तसङ्गहो ति। एवं सेसेसुपि वेदितब्बं।

B 69 **विविधविसेनयत्ता** ति इमिस्सा गाथाय अत्थं विभावेन्तो आह "**विविधाहो**"ति आदि। **दळहीकम्मसिथिलकरणप्पयोजना** ति यथाक्कमं लोकवज्जेसु सिक्खापदेसु दळहीकम्मप्पयोजना, पण्णत्तिवज्जेसु सिथिलकरणप्पयोजना ति वेदितब्बं। अज्झाचारनिसेधनतो ति सञ्ञमवेलं अभिभवित्वा पवत्तो आचारो अज्झाचारो, वीतिकम्मो, तस्स निसेधनतो ति अत्थो तेना ति विविधनयत्तादिहेतुना। **एतं** ति "विविधविसेसनयत्ता"ति आदिगाथावचनं। **एतस्सा** ति विनयस्स। **इतरं पना** ति सुत्तं।

इदानि **अत्थानं सूचनतो ति** आदिगाथाय अत्थं पकासेन्तो आह "**तञ्हि**"ति आदि **अत्तत्थपरत्थादिभेदे ति** यो तं सुत्तं सज्झायति सुणाति वाचेति चिन्तेति देसेति च, सुत्तेन सङ्गहितो सीलादि अत्थो तस्स पि होति, तेन परस्स साधेतब्बतो[5] परस्सपि होती ति तदुभयं[6] तं सुत्तं सूचेति दीपेति। तथा दिट्ठधम्मिकसम्परायिकत्थे लोकियलोकुत्तरत्थे चाति एवमादिभेदे अत्थे आदिसद्देन सङ्गण्हाति। **अत्थ** सद्दो चायं हितपरियाय-

---

१. वि० ५-७९ पिट्ठे। २. वि० ५-८० पिट्ठे।
३. वि० ५-८१ पिट्ठे। ४. वि० ५-८३ पिट्ठे।
५. सावेतब्बतो (सी०) ६. तदुभयत्थं (सी०)

वचनो, न भासितत्थवचनो। यदि सिया, सुत्तं अत्तनोपि भासितत्थं सूचेति परस्स पी ति अयमत्थो वुत्तो सिया, सुत्तेन च यो अत्थो पकासितो, सो तस्सेव होति, न तेन परत्थो सूचितो होती ति। तेन सूचेतब्बस्स परत्थस्स निवत्तेतब्बस्स अभावा अत्तत्थग्गहणञ्च[1] न कत्तब्बं। अत्तत्थपरत्थविनिमुत्तस्स भासितत्थस्स अभावा आदिग्गहणञ्च न कत्तब्बं, तस्मा यथावुत्तस्स हितपरियायस्स अत्थस्स सुत्ते असम्भवतो सुत्ताधारस्स पुग्गलस्स वसेन अत्तत्थपरत्था वुत्ता।

अथ वा सुत्तं अनपेक्खित्वा ये अत्तत्थादयो अत्थप्पभेदा "न ह'ञ्ञदत्थ'त्थि पसंसलाभा" ति एतस्स पदस्स **निद्देसे**[2] वुत्ता अत्तत्थो, परत्थो, उभयत्थो, दिट्ठधम्मिको अत्थो, सम्परायिको अत्थो, उत्तानो अत्थो, गम्भीरो अत्थो, गुल्हो अत्थो, पटिच्छन्नो अत्थो, नेय्यो अत्थो, नीतो अत्थो, अनवज्जो अत्थो, निक्किलेसो अत्थो, वोदानो अत्थो, परमत्थो ति, ते अत्थे सुत्तं सूचेती ति अत्थो गहेतब्बो। तथा हि किञ्चापि सुत्तनिरपेक्खं अत्तत्थादयो वुत्ता सुत्तत्थभावेन अनिद्दिट्ठत्ता, तेसु पन एकोपि अत्थप्पभेदो सुत्तेन दीपेतब्बतं नातिक्कमति, तस्मा ते अत्थे सुत्तं सूचेतीति वुच्चति। इमस्मिञ्च **अत्थ** विकप्पे अत्थ सद्दोयं भासितत्थपरियायोपि होति। एत्थ हि पुरिमका पञ्च अत्थप्पभेदा हितपरियाया, ततो परे छ भासितत्थभेदा, पच्छिमका पन उभयसभावा। तत्थ दुर-धिगमताय विभावने अगाधभावो गम्भीरो, न विवटो गुळ्हो, मूलुदकादयो विय पंसुना अक्खरसन्निवेसादिना तिरोहितो पटिच्छन्नो। निद्धारेत्वा ञापेतब्बो नेय्यो, यथारुतवसेन वेदितब्बो नीतो। अनवज्जनिक्किलेसवोदाना परियायवसेन वुत्ता, कुसलविपाककिरिय-धम्मवसेन वा। परमत्थो निब्बानं, धम्मानं अविपरीतसभावो एव वा। B 70

अथ वा अत्तना च अप्पिच्छो होती ति अत्तत्थं, अप्पिच्छाकथञ्च परेसं कत्ता होती ति परत्थं सूचेति। एवं "अत्तना च पाणातिपाता पटिविरता होती" ति आदीनि सुत्तानि[3] योजेतब्बानि। विनयाभिधम्मेहि च विसेसेत्वा सुत्तसद्दस्स अत्थो वत्तब्बो, तस्मा वेनेय्यज्झासयवसप्पवत्ताय देसनाय अत्तहितपरहितादीनि सातिसयं पकासितानि होन्ति तप्पधानभावतो, न आणाधम्मसभाववसप्पवत्तायाति इदमेव अत्थानं सूचनतो सुत्तं ति वुत्तं। एवञ्च कत्वा "एत्तकं तस्स भगवतो सुत्तागतं सुत्तपरियापन्नं" ति[4] च "सकवादे पञ्च सुत्तसतानी" ति[5] च एवमादीसु सुत्तसद्दो उपचरितो ति गहेतब्बो।

सुत्तेसु आणाधम्मसभावा च वेनेय्यज्झासयं अनुवत्तन्ति, न विनयाभिधम्मेसु विय वेनेय्यज्झासयो आणाधम्मसभावे, तस्मा वेनेय्यानं एकन्तहितपटिलाभ-संवत्तनिका सुत्तन्तदेसना होतीति "**सुवुत्ता चेत्थ अत्था**" ति आदि वुत्तं। "एकन्तहितपटिलाभ-संवत्तनिका सुत्तन्तदेसना" ति इदम्पि वेनेय्यानं हितसम्पापने सुत्तन्तदेसनाय तप्परभावं-

---

१. अत्थग्गहणञ्च (सी)
२. खु० ७-१३१ पिट्ठे।
३. अं० १-४१२ पिट्ठे।
४. वि० २-३६२ चिट्ठे।
५. अभि-द्व १-५ चिट्ठे।

येव सन्धाय वुत्तं। तप्परभावो च वेनेय्यज्झासयानुलोमतो दट्ठब्बो। तेनेवाह
B 71 "**वेनेय्यज्झासयानुलोमेन वुत्तत्ता**" ति। विनयदेसनं विय इस्सरभावतो आणापतिट्ठापनवसेन अदेसेत्वा वेनेय्यानं अज्झासयानुलोमेन चरियानुरूपं वुत्तत्ता देसितत्ता ति अत्थो।

अनुपुब्बसिक्खादिवसेन कालन्तरे अभिनिप्फत्तिं दस्सेन्तो आह "**सस्समिव फलं**" ति। **पसवतो**ति फलति, निप्फादेतीति अत्थो। उपायसमङ्गीनंयेव निप्फज्जनभावं दस्सेन्तो "**धेनु विय खीरं**" ति आह। धेनुतो पि हि उपायवन्तानंयेव खीरपटिलाभो होति। अनुपायेन हि अकाले अजातवच्छं धेनुं दोहन्तो कालेपि वा विसाणं गहेत्वा दोहन्तो नेव खीरं पटिलभति। "सुत्तागा" ति एतस्स अत्थं पकासेतुं "**सुट्ठु च ने तायतो**" ति वुत्तं।

सुत्तसभागं ति सुत्तसदिसं। सुत्तसभागतंयेव दस्सेन्तो आह "**यथा ही**" ति आदि। **तच्छकानं सुत्तं** ति वड्ढकीनं काळसुत्तं। **पमाणं होती** ति तदनुसारेन तच्छनतो। **एवमेतम्पि विञ्ञूनं** ति यथा काळसुत्तं पसारेत्वा सञ्ञाणे कते गहेतब्बं विस्सज्जेतब्बञ्च पञ्ञायति, एवं विवादेसु उप्पन्नेसु सुत्ते आनीतमत्ते "इदं गहेतब्बं, इदं विस्सज्जेतब्बं" ति विञ्ञूनं पाकटत्ता विवादो वुपसम्मती ति एतम्पि सुत्तं विञ्ञूनं पमाणं होतीति अत्थो। इदानि अञ्ञथापि सुत्तसभागतं दस्सेन्तो आह "**यथा चा**" ति आदि। सुत्तं विय पमाणत्ता सङ्गाहकत्ता च सुत्तमिव सुत्तं ति वुत्तं होति। एत्थ च अत्तत्थादिविधाने सुत्तस्स पमाणभावो अत्तत्थादीनंयेव च सङ्गाहकत्तं योजेतब्बं तदत्थप्पकासनपधानत्ता सुत्तस्स। विनयाभिधम्मेहि विसेसतञ्च[1] पुब्बे वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। **एतं** ति "अत्थानं सूचनतो" ति आदिकं अत्थवचनं। **एतस्सा** ति सुत्तस्स।

यं ति यस्मा। **एत्था** ति अभिधम्मे। **अभिक्कमन्ती** ति एत्थ **अभि**–सद्दो कमनकिरियाय वुड्ढिभावं अतिरेकतं दीपेती ति आह "**अभिक्कमन्ती ति आदीसु वुड्ढियं आगतो**" ति। **अभिञ्ञाता** ति अड्ढचन्दादिना केनचि सञ्ञाणेन ञाता पञ्ञाता[2] पाकटा ति अत्थो। अड्ढचन्दादिभावो हि रत्तिया उपलक्खणवसेन सञ्ञाणं[3] होति, यस्मा अड्ढो चन्दो, तस्मा अट्ठमी, यस्मा ऊनो, तस्मा चातुद्दसी, यस्मा पुण्णो,
B 72 तस्मा पन्नरसी ति। **अभिलक्खिता** ति एत्थापि अयमेवत्थो वेदितब्बो। अभिलक्खितसद्दपरियायो अभिञ्ञातसद्दो ति आह "**अभिञ्ञाता अभिलक्खिता** ति **आदीसु लक्खणे**" ति[4]। एत्थ च वाचकसद्दन्तरसन्निधानेन निपातानं तदत्थजोतकमत्तत्ता लक्खितसद्दत्थजोतको अभिसद्दो लक्खणे[5] वत्ततीति वुत्तो। **राजाभिराजा** ति राजूहि पूजेतुं अरहो राजा। **पूजिते** ति पूजारहे।

---

१. विसेसनञ्च (सी०, स्या०) २. सञ्ञाता (क०)
३. पञ्ञाणं (सी०) ४. संलक्खणे ति (स्या०) सलक्खणे (क०)
५. सलक्खणे (सी०) संलक्खणे (स्या०)

अभिधम्मे ति "सुपिनन्तेन सुक्कविस्सट्ठिया अनापत्तिभावेपि अकुसलचेतना उपलब्भती" ति आदिनाविनयपञ्ञत्तिया सङ्करविरहिते धम्मे। "पुब्बापरविरोधाभावतो धम्मानंयेव च अञ्ञमञ्ञसङ्करविरहिते धम्मे" ति पि वदन्ति। "पाणातिपातो अकुसलं" ति एवमादीसु च मरणाधिप्पायस्स जीवितिन्द्रियुपच्छेदकपयोगसमुट्ठापिता चेतना अकुसलं, न पाणसङ्खातजीवितिन्द्रियस्स उपच्छेदसङ्खातो अतिपातो, तथा अदिन्नस्स परसन्तकस्स आदानसङ्खाता विञ्ञत्ति अब्याकतो धम्मो, तं विञ्ञत्तिसमुट्ठापिका थेय्यचेतना अकुसलो धम्मो ति एवमादिना पि अञ्ञमञ्ञसङ्करविरहिते धम्मे ति अत्थो वेदितब्बो। **अभिविनये** ति एत्थ "जातरूपरजतं न पटिग्गहेतब्बं" ति वदन्तो विनये विनेति नाम। एत्थ "एवं पटिग्गण्हतो पचित्तियं, एवं दुक्कटं ति वदन्तो च अभिविनये विनेति नामा" ति वदन्ति। तस्मा जातरूपरजतं थेय्यचित्तेन परसन्तकं गण्हन्तस्स यथावत्थु पाराजिकथुल्लच्चयदुक्कटेसु अञ्ञतरं, भण्डागारिकसीसेन गण्हन्तस्स पाचित्तियं, अत्तत्थाय गण्हन्तस्स निस्सग्गियं पाचित्तियं। केवलं लोलताय गण्हन्तस्स अनामासदुक्कटं, रूपियछड्डकस्स सम्मतस्स अनापत्ती ति एवं अञ्ञमञ्ञसङ्करविरहिते विनये पटिबलो विनेतुं ति अत्थो वेदितब्बो। **अभिक्कन्तेना** ति एत्थ कन्तिया अधिकत्तं अभिसद्दो दीपेती ति आह "**अधिके**" ति।

ननु च "अभिक्कमन्ती"ति एत्थ अभिसद्दो कमनकिरियाय वुड्ढिभावं अतिरेकतं दीपेति, "अभिञ्ञाता अभिलक्खिता"ति एत्थ ञाणलक्खणकिरियानं सुपाकटत्ता विसेसं, "अभिक्कन्तेना"ति एत्थ कन्तिया अधिकत्तं विसिट्ठितं दीपेतीति इदं ताव युत्तं किरियाविसेसकत्ता उपसग्गस्स, "अभिराजा अभिविनयो"ति पन पूजितपरिच्छिन्नेसु राजविनयेसु अभिसद्दो वत्तती ति कथमेतं युज्जेय्याति चे? इधापि नत्थि दोसो पूजनपरिच्छेदनकिरियादीपनतो, ताहि च किरियादीपनतो, ताहि च किरियाहि राजविनयानं युत्तत्ता, तस्मा एत्थ अतिमालादीसु अतिसद्दो विय अभिसद्दो सह साधनेन किरियं वदतीति अभिराजअभिविनयसद्दा सिद्धा, एवं अभिधम्मसद्दे अभिसद्दो सह साधनेन वुड्ढियादिकिरियं दीपेतीति अयमत्थो दस्सितो ति दट्ठब्बं। B 73

एत्थ चा ति अभिधम्मे। **भावेतो** ति चित्तस्स वड्ढनं वुत्तं। **फरित्वा** ति आरम्मणस्स वड्ढनं वुत्तं। **वुड्ढिमन्तो** ति भावनाफरणवुड्ढीहि वुड्ढिमन्तोपि धम्मा वुत्ता ति अत्थो। **आरम्मणादीही** ति आरम्मणसम्पयुत्तकम्मद्वार पटिपदादीहि। **लक्खणीयत्ता** ति[३] सञ्जानितब्बत्ता। एकन्ततो लोकुत्तरधम्मानं येव पूजारहत्ता "सेक्खा धम्मा" ति आदिना लोकुत्तरायेव पूजितानि दस्सिता। **सभावपरिच्छिन्नत्ता** ति फुसनादिसभावेन परिच्छिन्नत्ता। **अधिकापि धम्मा वुत्ता** ति एत्थ कामावचरेहि महन्तभावतो महग्गता धम्मा पि अधिकानाम होन्ती ति तेहि सद्धिं अधिका धम्मा वुत्ता।

यं पन अविसिट्ठं ति एत्थ विनयादीसु तीसु अञ्ञमञ्ञविसिट्ठेसु यं अविसिट्ठं समानं, तं पिटकसद्दं ति अत्थो। विनयादयो हि तयो सद्दा अञ्ञमञ्ञं असाधारणत्ता

---

१. संलक्खणेति (स्या०) सलक्खणेति (सी०)। २. संलक्खणे (सी०) संलक्खणे (स्या०)।
३. सल्लक्खणीयत्ताति (सी०, स्या०)।

विसिट्ठा नाम, पिटकसद्दो पन तेहि तेहिपि साधारणत्ता अविसिट्ठो ति वुच्चति। **मा पिटकसम्पदानेना** ति पाळिसम्पदानवसेन मा गण्हथा ति वुत्तं होति। कुदालञ्च पिटकञ्च **कुदालपिटकं**। तत्थ कु वुच्चति पथवी, तस्सा दालनतो विदालनतो अयोमयो उपकरणविसेसो कुदालं नाम, तालपण्णवेत्तलतादीहि कतो भाजनविसेसो पिटकं नाम, तं आदाय गहेत्वा ति अत्थो। **यथावुत्तेनाति** "एवं दुविधत्थेना" ति आदिना वुत्तप्पकारेन।

देसनासासनकथाभेदं ति एत्थ कथेतब्बानं अत्थानं देसकायत्तेन आणादिविधिना अभिसज्जनं पबोधनं **देसना**। सासितब्बपुग्गलगतेन यथापराधादिना सासितब्बभावेन
B 74 अनुसासनं विनयनं **सासनं**। कथेतब्बस्स संवरासंवरादिनो अत्थस्स कथनं वचनपटिबद्धताकरणं **कथा** ति वुच्चति। तस्मा देसितारं भगवन्तमपेक्खित्वा देसना, सासितब्बपुग्गलवसेन सासनं, कथेतब्बस्स अत्थस्स वसेन कथा ति एवमेत्थ देसनादीनं नानाकरणं वेदितब्बं। एत्थ च किञ्चापि देसनादयो देसेतब्बानिरपेक्खा न होन्ति, आणादयो पन विसेसतो देसकादि अधीनाति तं तं विसेसयोगवसेन देसनादीनं भेदो वुत्तो। तथा हि आणाविधानं विसेसतो आणारहाधीनं तत्थ कोसल्लयोगतो। एवं वोहारपरमत्थविधानानि च विधायकाधीनानीति आणादिविधिना देसकायत्तता वुत्ता। अपराधज्झासयानुरूपं विय धम्मानुरूपम्पि सासनं विसेसतो, तथा विनेतब्बपुग्गलापेक्खं ति सासितब्बपुग्गलवसेन सासनं वुत्तं। संवरासंवरनामरूपानं विय विनिवेठेतब्बाय दिट्ठियापि कथनं सति वाचावत्थुस्मिं नासतीति विसेसतो तदधीनं ति कथेतब्बस्स अत्थस्स वसेन कथा वुत्ता। भेदसद्दो विसुं विसुं योजेतब्बो "देसनाभेदं सासनभेदं कथाभेदञ्च यथारहं परिदीपये" ति। **भेदं** ति च नानत्तं ति अत्थो। तेसु पिटकेसु सिक्खा च पहानानि च गम्भीरभावो च सिक्खापहानगम्भीरभावं, तञ्च यथारहं परिदीपये ति अत्थो। परियत्तिभेदञ्च विभावये ति सम्बन्धो।

परियत्तिभेदं ति च परियापुणनभेदं ति अत्थो। **यहिं** ति यस्मिं विनयादिके पिटके। यं सम्पत्तिञ्च विपत्तिञ्च यथा पापुणाति, तम्पि सब्बं विभावये ति सम्बन्धो। अथ वा यं परियत्तिभेदं सम्पत्तिञ्च विपत्तिञ्चापि यहिं यथा पापुणाति, तम्पि सब्बं विभावये ति योजेतब्बं। एत्थ **यथा** ति येहि उपारम्भादिहेतुपरियापुणनादिप्पकारेहि उपारम्भनिस्सरणधम्मकोसकरक्खणहेतुपरियापुणनं सुप्पटिपत्तिदुप्पटिपत्तीति एतेहि पकारेही ति वुत्तं होति।

परिदीपना विभावना चाति हेट्ठा वुत्तस्स अनुरूपतो वुत्तं, अत्थतो पन एकमेव। **आणारहेना** ति आणं ठपेतुं अरहतीति **आणारहो**, भगवा। सो हि सम्मासम्बुद्धताय महाकारुणिकताय च अविपरीतहितोपदेसकभावेन पमाणवचनत्ता आणं पणेतुं अरहति, वोहारपरमत्थानम्पि सम्भवतो आह "**आणाबाहुल्लतो**" ति। इतो परेसुपि एसेव नयो।

पठमं ति विनयपिटकं। पचुरापराधा सेय्यसकत्थेरादयो। ते हि दोसबाहुल्लतो B 75
"**पचुरापराधा**" ति वुत्ता। पचुरो बहुको[1] बहुलो अपराधो दोसो वीतिक्कमो येसं ते पचुरापराधा। **अनेकज्झासया** ति आदीसु आसयोव **अज्झासयो**। सो च अत्थतो दिट्ठि ञाणञ्च, पभेदतो पन चतुब्बिधं होति। तथा हि पुब्बचरियवसेन आयतिं सति पच्चये उप्पज्जमानारहा सस्सतुच्छेदसङ्खाता मिच्छादिट्ठि सच्चानुलोमिकञाणकम्मस्सकतञ्ञाणसङ्खाता सम्मादिट्ठि च "**आसयो**" ति वुच्चंति। वुत्तञ्हेतं—

"सस्सतुच्छेददिट्ठि च, खन्ति चेवानुलोमिका।
यथाभूतञ्च यं ञाणं, एतं आसयसञ्ञितं" ति[2]॥

इदञ्च चतुब्बिधं आसयं ति एत्थ सत्ता निवसन्तीति आसयो ति वुच्चति। **अनुसया** कामरागभवरागदिट्ठिपटिघविचिकिच्छामानाविज्जावसेन सत्त। मूसिकविसं विय कारणलोभ उप्पज्जनारहा अनागता किलेसा, अतीता पच्चुप्पन्ना च तथेव वुच्चन्ति। न हि कालभेदेन धम्मानं सभावभेदो अत्थीति। **चरिया** ति रागचरियादिका छ मूलचरिया, अन्तरभेदेन अनेकविधा, संसग्गवसेन पन तेसट्ठि होन्ति। अथ वा चारिया ति चरितं, तं सुचरितदुच्चरितवसेन दुविधं। "अधिमुत्ति नाम 'अज्जेव पब्बजिस्सामि, अज्जेव अरहत्तं गण्हिस्सामी' ति आदिना तन्निन्नभावेन पवत्तमानं सन्निट्ठानं" ति **गण्ठिपदेसु** वुत्तं। **आचरियधम्मपालत्थेरेन** पन "सत्तानं पुब्बचरियवसेन अभिरुची" ति वुत्तं। सा दुविधा हीनपणीतभेदेन। **यथानुलोमं** ति अज्झासयादीनं अनुरूपं। **अहं ममाति सञ्ञिनो** ति दिट्ठिमानतण्हावसेन अहं ममाति एवं पवत्तसञ्ञिनो। **यथाधम्मं**ति नत्थेत्थ अत्ता अत्तनियं वा, केवलं धम्ममत्तमेतं ति एवं धम्मसभावानुरूपं ति अत्थो।

संवरासंवरा ति एत्थ संवरणं संवरो, कायवाचाहि अवीतिक्कमो महन्तो संवरो असंवरो। वुड्ढि अत्थो हि अयं अ-कारो यथा "असेक्खा धम्मा" ति, तस्मा खुद्दको महन्तो च संवरोति अत्थो। **दिट्ठिविनिवेठना** ति दिट्ठिया विमोचनं। अधिसीलसिक्खादीनं विभागो परतो पठमपाराजिकसंवण्णनाय आवि भविस्सति। सुत्तन्तपाळियं "विविच्चेव कामेही" ति आदिना समाधिदेसनाबाहुल्लतो "**सुत्तन्तपिटके अधिचित्त-** B 76
सिक्खा" ति वुत्तं। **वीतिक्कमप्पहानं किलेसानं** ति संकिलेसधम्मानं कम्मकिलेसानं वा यो कायवचोद्वारेहि वीतिक्कमो, तस्स पहानं। अनुसयवसेन सन्ताने अनुवत्तन्तो किलेसा कारणलाभे परियुट्ठितापि सीलभेदवसेन वीतिक्कमितुं न लभन्तीति[3] आह "**वीतिक्कमपटिपक्खत्ता सीलस्सा** ति। **परियुट्ठानप्पहानं** ति ओकासदानवसेन किलेसानं चित्ते कुसलप्पवत्तिं परियादियित्वा उट्ठानं परियुट्ठानं, तस्स पहानं चित्तसन्तानेसु उप्पत्तिवसेन किलेसानं परियुट्ठानस्स पहानं ति वुत्तं होति। **अनुसयप्पहानं** ति अप्पहीनभावेन सन्ताने अनु अनु सयनका कारणलाभे उप्पत्ति अरहा अनुसया। ते पन

१. पहुतो (सी०)। २. आसयसण्ठितं ति (सी०, स्या०)।
३. न लब्भन्तीति (सी०)

अनुरूपं कारणं लद्धा उप्पज्जनारहा थामगता कामरागादयो सत्त किलेसा, तेसं पहानं अनुसयप्पहानं। ते च सब्बसो अरियमग्गपञ्ञाय पहीयन्तीति आह "**अनुसयपटिपक्खत्ता पञ्ञाया**" ति।

तदङ्गप्पहानं ति दीपालोकेनेव तमस्स दानादिपुञ्ञकिरियवत्थुगतेन तेन तेन कुसलङ्गेन तस्स तस्स अकुसलङ्गस्स पहानं "तदङ्गप्पहानं" ति वुच्चति। इध पन तेन तेन सुसीलयङ्गेन तस्स तस्स दुस्सीलयङ्गस्स पहानं "तदङ्गप्पहानं" ति वेदितब्बं। **विक्खम्भनसमुच्छेदप्पहानानी** ति एत्थ उपचारप्पनाभेदेन समाधिनापवत्तिनिवारणेन घटप्पहारेनेव जलतले सेवालस्स तेसं तेसं नीवरणानं धम्मानं[1] विक्खम्भनवसेन पहानं **विक्खम्भनप्पहानं**। चतुन्नं अरियमग्गानं भावितत्ता तं तं मग्गवतो सन्ताने समुदायपक्खिकस्स किलेसगणस्स अच्चन्तं अप्पवत्तिसङ्खातसमुच्छेदवसेन पहानं **समुच्छेदप्पहानं। दुच्चरितसंकिलेसस्स पहानं** ति कायदुच्चरितादि दुट्ठु चरितं, किलेसेहि वा दूसितं चरितं ति दुच्चरितं। तदेव यत्थ उप्पन्नं, तं सन्तानं सम्मा किलेसेति बाधयति उपतापेति चाति संकिलेसो, तस्स पहानं कायवचीदुच्चरितवसेन पवत्तसंकिलेसस्स तदङ्गवसेन पहानं ति वुत्तं होति। समाधिस्स कामच्छन्द पटिपक्खत्ता सुत्तन्तपिटके **तण्हासंकिलेसस्स पहान** वुत्तं। अत्तादि विनिमुत्तसभावधम्मप्पकासनतो अभिधम्मपिटके **दिट्ठिसंकिलेसस्स पहानं** वुत्तं।

B 77 **एकमेकस्मिञ्चेत्था** ति एतेसु तीसु पिटकेसु एकमेकस्मिं पिटके ति अत्थो दट्ठब्बो। **धम्मोति पाळी** ति एत्थ पकट्ठानं उक्कट्ठानं सीलादि अत्थानं बोधनतो सभावनिरुत्तिभावतो बुद्धादीहि भासितत्ता च पकट्ठानं वचनप्पबन्धानं आळी ति पाळि, परियत्तिधम्मो। धम्मोति पाळीति एत्थ भगवता वुच्चमानस्स अत्थस्स वोहारस्स च दीपनो सद्दोयेव पाळि नामा" ति **गण्ठिपदेसु** वुत्तं। अभिधम्मट्ठकथाय लिखिते **सीहळगण्ठिपदे** पन इदं वुत्तं—सभावत्थस्स सभाववोहारस्स च अनुरूपवसेन भगवता मनसा ववत्थापिता पण्णत्ति पाळीति वुच्चति। यदि सद्दोयेव पाळि सिया, पाळिया देसनाय च नानत्तेन भवितब्बं। मनसा ववत्थपिताय च पाळिया वचीभेदकरणमत्तं ठपेत्वा देसनाय नानत्तं नत्थि। तथा हि देसनं दस्सेन्तेन मनसा ववत्थपिताय पाळिया देसनाति वचीभेदकरणमत्तं विना पाळिया सह देसनाय अनञ्ञथा वुत्ता। तथा च उपरि "देसनाति पञ्ञत्ती" ति वुत्तत्ता देसनाय अनञ्ञभावेन पाळिया पण्णत्तिभावो कथितो होति। अपि च यदि पाळिया अञ्ञायेव देसना सिया, "पाळिया च पाळि अत्थस्स च देसनाय च यथाभूतावबोधो" ति वत्तब्बं सिया, एवं पन अवत्वा "पाळिया च पाळि अत्थस्स च यथाभूतावबोधो" ति वुत्तत्ता पाळिया देसनाय च अनञ्ञभावो दस्सितो होति। एवञ्च कत्वा उपरि "देसना नाम पञ्ञत्ती" ति दस्सेन्तेन देसनाय अनञ्ञभावतो पाळिया पण्णत्तिभावो कथितोव होती ति।

एत्थ च "सद्दोयेव पाळि नामा" ति इमस्मिं पक्खे धम्मस्सपि सद्दसभावत्ता धम्मदेसनानं को बिसेसोति चे? तेसं तेसं अत्थानं बोधकभावेन ञातो उग्गहणादिवसेन

१. नीवरणादिधम्मानं (स्या०)

च पुब्बे ववत्थापितो सद्दप्पबन्धो **धम्मो**, पच्छा परेसं अवबोधनत्थं **पवत्तितो** तदत्थप्पकासको सद्दो **देसना** ति वेदितब्बं। अथ वा यथावुत्त सद्दसमुट्ठापको चित्तुप्पादो **देसना** "देसीयति समुट्ठापीयति सद्दो एतेना" ति कत्वा मुसावादादयो विय। तत्थापि हि मुसावादादिसमुट्ठापिका चेतना मुसावादादिसद्देन वोहरीयति।

तीसुपि चेतेसु एते धम्मत्थदेसनापटिवेधा ति एत्थ पाळिअत्थो पाळिदेसना पाळिअत्थपटिवेधो चाति इमे तयो पाळिविसया होन्तीति विनयपिटकादीनं अत्थस्स B 78
देसनाय पटिवेधस्स च आधारभावो युत्तो, पिटकानि पन पाळियोयेवा ति तेसं धम्मस्स आधारभावो कथं युज्जेय्याति चे ? पाळिसमुदायस्स अवयवपाळिया आधारभावतो[1]। अवयवस्स हि समुदायो आधारभावेन वुच्चति यथा "रुक्खे साखा" ति। एत्थ च धम्मादीनं दुक्खोगाहभावतो तेहि धम्मादीहि विनयादयो गम्भीरा ति विनयादीनम्पि चतुब्बिधो गम्भीरभावो वुत्तोयेव, तस्मा धम्मादयो एव दुक्खोगाहत्ता गम्भीरा, न विनयादयो ति न चोदेतब्बमेतं सम्मुखेन विसयविसयीमुखेन च विनयादीनंयेव गम्भीरभावस्स वुत्तत्ता। धम्मो हि विनयादयो, तेसं विसयो अत्थो, धम्मत्थविसया च देसनापटिवेधा ति। तत्थ पटिवेधस्स दुक्करभावतो धम्मत्थानं, देसनाञाणस्स दुक्करभावतो देसनाय च दुक्खोगाहभावो वेदितब्बो। पटिवेधस्स पन उप्पादेतुं असक्कुणेय्यत्ता तं विसयञाणुप्पत्तिया च दुक्करभावतो दुक्खोगाहत्ता वेदितब्बा। दुक्खेन ओगय्हन्तीति **दुक्खोगाहा**। एकदेसेन ओगाहन्तेहिपि मन्दबुद्धीहि पतिट्ठा लद्धुं न सक्का ति आह "**अलब्भनेय्यपतिट्ठा चा**" ति। **एकमेकस्मि** ति एकेकस्मिं पिटके। **एत्था** ति एतेसु पिटकेसु। निद्धारणे चेतं भुम्मवचनं।

इदानि हेतुहेतुफलादीनं वसेनपि गम्भीरभावं दस्सेन्तो आह "**अपरो नयो**" ति आदि। **हेतू** ति पच्चयो। सो हि अत्तनो फलं दहति विदहतीति धम्मोति वुच्चति। धम्मसद्दस्स चेत्थ हेतुपरियायता कथं विञ्ञायतीति आह "**वुत्तञ्हेतं**" ति आदि। ननु च "**हेतुम्हि ञाणं धम्मपटिसम्भिदा**" ति एतेन वचनेन धम्मस्स हेतुभावो कथं विञ्ञायतीति चे ? धम्मपटिसम्भिदा ति एतस्स समासपदस्स अवयवपदत्थं दस्सेन्तेन "हेतुम्हि ञाणं" ति वुत्तत्ता। "धम्मे पटिसम्भिदा धम्मपटिसम्भिदा" ति एत्थ हि "धम्मे" ति एतस्स अत्थं दस्सेन्तेन "हेतुम्ही" ति वुत्तं, "पटिसम्भिदा" ति एतस्स अत्थं दस्सेन्तेन "ञाणं" ति, तस्मा हेतुधम्मसद्दा एकत्था ञाणपटिसम्भिदासद्दा चाति इममत्थं वदन्तेन साधितो धम्मस्स हेतुभावो। **हेतुफले ञाणं** अत्थपटिसम्भिदा ति एतेन वचनेन साधितो अत्थस्स हेतुफलभावोपि एवमेव दट्ठब्बो। हेतुनो फलं हेतुफलं। तञ्च यस्मा हेतुअनुसारेन अरीयति अधिगमीयति सम्पापुणीयति, तस्मा अत्थोति B 79
वुच्चति।

यथाधम्मं ति एत्थ **धम्म**सद्दो हेतुं हेतुफलञ्च सब्बं सङ्गण्हाति। सभाववाचको हेस धम्मसद्दो, न परियत्तिहेतुभाववाचको, तस्मा **यथाधम्मं** ति यो यो अविज्जादि-

१. आधेय्यआधारभावतो (सी०)

सङ्खारादिधम्मो, तस्मिं तस्मिं ति अत्थो। धम्मानुरूपं वा यथाधम्मं। देसनापि हि पटिवेधो विय अविपरीतविसयविभावनतो धम्मानुरूपं पवत्तति, ततोयेव च अविपरीताभिलापोति वुच्चति। **धम्माभिलापो** ति अत्थब्यञ्जनको अविपरीताभिलापो। एत्थ च अभिलप्पतीति अभिलापो ति सद्दो वुच्चति। एतेन "तत्र धम्मनिरुत्ताभिलापे ञाणं निरुत्तिपटिसम्भिदा" ति[1] एत्थ वुत्तं धम्मनिरुत्तिं दस्सेति सद्दसभावत्ता देसनाय। तथा हि निरुत्तिपटिसम्भिदाय परित्तारम्मणादिभावो **पटिसम्भिदाविभङ्गपाळियं** वुत्तो। **अट्ठकथायञ्च**[2] "तं सभावनिरुत्तिं सद्दं आरम्मणं कत्वा" ति आदिना सद्दारम्मणता दस्सिता। तथा हि इमस्स अत्थस्स अयं सद्दो वाचकोति वचनवचनत्थे ववत्थपेत्वा तं तं वचनत्थविभावनवसेन पवत्तितो सद्दो देसनाति वुच्चति। **अधिप्पायो** ति एतेन "देसनाति पञ्ञत्ती" ति एतं वचनं धम्मनिरुत्ताभिलापं सन्धाय वुत्तं, न ततो विनिमुत्तं पञ्ञत्तिं सन्धायाति अधिप्पायं दस्सेति। देसीयति अत्थो एतेनाति हि **देसना**, पकारेन ञापीयति एतेन, पकारतो ञापेतीति वा **पञ्ञत्ती** ति धम्मनिरुत्ताभिलापो वुच्चति। एवं "देसना नाम सद्दो" ति इमस्मिं पक्खे अयमत्थो वेदितब्बो। "देसनाति पञ्ञत्ती" ति एत्थ पञ्ञत्तिवादिनो पन एवं वदन्ति—किञ्चापि "धम्माभिलापो" ति एत्थ अभिलप्पतीति अभिलापो ति सद्दो वुच्चति, न पण्णत्ति, तथापि सद्दे वुच्चमाने तदनुरूपं वोहारं गहेत्वा तेन वोहारेन दीपितस्स अत्थस्स जाननतो सद्दे कथिते तदनुरूपा पण्णत्तिपि कारणूपचारेन कथितायेव होति। अथ वा "धम्माभिलापो ति अत्थो" ति अवत्वा "धम्माभिलापोति अधिप्पायो" ति वुत्तत्ता देसना नाम सद्दो न होती ति दीपितमेवा ति।

इदानि पटिवेधं निद्दिसन्तो आह "**पटिवेधोति अभिसमयो**" ति। पटिविज्झतीति ञाणं पटिवेधो ति वुच्चति। पटिविज्झन्ति एतेनाति वा पटिवेधो, अभिसमेती ति
B 80 अभिसमयो, अभिसमेन्ति एतेनाति वा अभिसमयो। इदानि अभिसमयप्पभेदतो अभिसमयप्पकारतो आरम्मणतो सभावतो च पाकटं कातुं "**सो च लोकियलोकुत्तरो**" ति आदिमाह। विसयतो असम्मोहतो च अवबोधोति सम्बन्धो। तत्थ **विसयतो** अत्थादि अनुरूपं धम्मादीसु अवबोधो नाम अविज्जादिधम्मारम्मणो सङ्खारादि अत्थारम्मणो तदुभयपञ्ञापनारम्मणो लोकियो अवबोधो। **असम्मोहतो** अत्थादि अनुरूपं धम्मादीसु अवबोधो पन निब्बानारम्मणो मग्गयुत्तो यथावुत्तधम्मत्थपञ्ञत्तीसु सम्मोहविद्धंसनो लोकुत्तरो अभिसमयो। तथा हि "अयं हेतु, इदमस्स फलं, अयं तदुभयानुरूपो वोहारो" ति एवं आरम्मणकरणवसेन लोकियञाणं विसयतो पटिविज्झति, लोकुत्तरञाणं पन हेतुहेतुफलादीसु सम्मोहस्स मग्गञाणेन समुच्छिन्नत्ता असम्मोहतो पटिविज्झति। **अत्थानुरूपं धम्मेसू** ति अविज्जाहेतु, सङ्खारा हेतुसमुप्पन्ना, सङ्खारे उप्पादेति अविज्जाति एवं कारियानुरूपं कारणेसू ति अत्थो। अथ वा पुञ्ञाभिसङ्खारअपुञ्ञाभिसङ्खारआनेञ्जाभिसङ्खारेसु तीसु अपुञ्ञाभिसङ्खारस्स सम्पयुतअविज्जा पच्चयो, इतरेसं यथानुरूपं ति आदिना कारियानुरूपं कारणेसु

---

१. अभि० २-३१५ पिट्ठे। २. अभि–ट्ठ २-३७० पिट्ठे।

पटिवेधोति अत्थो। **धम्मानुरूपं अत्थेसू** ति "अविज्जा पच्चयासङ्खारा" ति आदिना कारणानुरूपं कारियेसु अवबोधो ति अत्थो। **पञ्ञत्तिपथानुरूपं पञ्ञत्तीसू** ति पञ्ञत्तिया वुच्चमानधम्मानुरूपं पण्णत्तीसु अवबोधो ति अत्थो।

यथावुत्तेहि धम्मादीहि पिटकानं गम्भीरभावं दस्सेतुं **"इदानि यस्मा एतेसु पिटकेसू"** ति आदिमाह। **धम्मजातं** ति कारणप्पभेदो कारणमेव वा। **अत्थजातं** ति कारियप्पभेदो कारियमेव वा। या चायं देसना ति सम्बन्धो। **यो चेत्था** ति एतासु तं तं पिटकगतासु धम्मत्थदेसनासु यो पटिवेधो ति अत्थो। **दुक्खोगाहं** ति एत्थ अविज्जासङ्खारादीनं धम्मत्थानं दुप्पटिविज्झताय दुक्खोगाहता। तेसं पञ्ञापनस्स दुक्करभावतो देसनाय पटिवेधनसङ्खातस्स पटिवेधस्स च उप्पादनविसयीकरणानं असक्कुणेय्यताय दुक्खोगाहता वेदितब्बा। **एवम्पीति पि** सद्दो पुब्बे वुत्तप्पकारन्तरं सम्पिण्डेति। **एत्था**ति एतेसु तीसु पिटकेसु। **वुत्तत्ता** ति वुत्तो संवण्णितो अत्थो अस्साति वुत्तत्ता।

तीसु पिटकेसू ति एत्थ "एकेकस्मिं" ति अधिकारतो पकरणतो वा वेदितब्बं। B 81
परियत्तिभेदो ति परियापुणनं परियत्ति। परियापुणनवाचको हेत्थ परियत्तिसद्दो, न पाळिपरियायो, तस्मा एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो "तीसु पिटकेसु एकेकस्मिं परियापुणनप्पकारो दट्ठब्बो' ञातब्बो"ति। ततोयेव च "परियत्तियो परियापुणनप्पकारा" ति तीसुपि **गण्ठिपदेसु** वुत्तं। अथ वा तीहि पकारेहि परियापुणितब्बा पाळियो एव परियत्तीति वुच्चन्ति, ततोयेव च "परियत्तियो पाळिक्कमा" ति अभिधम्मट्ठकथाय लिखिते **सीहळगण्ठिपदे** वुत्तं। एवम्पि हि अलगद्दूपमापरियापुणनयोगतो अलगद्दूपमा परियत्तीति पाळिपि सक्का वत्तुं, एवञ्च कत्वा "दुग्गहिता उपारम्भादिहेतु परियापुटा अलगद्दूपमा" ति परतो निद्देसवचनम्पि उपपन्नं होति। तत्थ हि पाळियेव दुग्गहिता परियापुटाति वत्तुं वट्टति। **अलगद्दूपमा**ति अलगद्दो अलगद्दग्गहणं उपमा एतिस्साति अलगद्दूपमा। अलगद्दस्स गहणं हेत्थ अलगद्दसद्देन वुत्तं ति दट्ठब्बं। "आपूपिको"ति एत्थ अपूपसद्देन अपूपखादनं विय अलगद्दग्गहणेन गहितपरियत्ति उपमीयति, न पन अलगद्देन। "अलगद्दग्गहणूपमा" ति वा वत्तब्बे मज्झेपदलोपं कत्वा "अलगद्दूपमा" ति वुत्तं "ओट्ठमुखो" ति आदीसु विय। अलगद्दो ति चेत्थ आसीविसो वुच्चति। गदो ति हि विसस्स नामं। तञ्च तस्स अलं परिपुण्णं अत्थि, तस्मा अलं परियत्तो परिपुण्णो गदो अस्सा ति अनुनासिकलोपं दकारागमञ्च कत्वा "अलगद्दो"ति वुच्चति। अथ वा अलं जीवितहरणे समत्थो गदो अस्सा ति अलगद्दो। **निस्सरणत्था**ति वट्टदुक्खतो निस्सरणं अत्थो पयोजनं एतिस्साति निस्सरणत्था। **भण्डागारिकपरियत्ती** ति एत्थ भण्डागारे नियुत्तो भण्डागारिको, भण्डागारिको विय भण्डागारिको, धम्मरतनानुपालको। अञ्ञं अत्थं अनपेक्खित्वा भण्डागारिकस्सेव सतो परियत्ति भण्डागारिकपरियत्ति।

दुग्गहिता ति दुट्ठु गहिता। दुग्गहितभावमेव विभावेन्तो आह " **"उपारम्भादिहेतु परियापुटा"** ति, उपारम्भा इतिवादप्पमोक्खादिहेतु उग्गहिता ति अत्थो।

लाभसक्कारादिहेतु परियापुणनम्पि एत्थेव सङ्गहितं ति दट्ठब्बं। वुत्तञ्हेतं अलगद्द-सुत्तट्ठकथायं[1]—

B 82 "यो हि बुद्धवचनं 'एवं चीवरादीनि वा लभिस्सामि, चतुपरिसमज्झे वा मं जानिस्सन्ती' ति लाभसक्कारादिहेतु परियापुणाति, तस्स सा परियत्ति अलगद्दपरियत्ति नाम। एवं परियापुणनतो हि बुद्धवचनं अपरियापुणित्वा निद्दोक्कमनं वरतरं" ति।

ननु च अलगद्दग्गहणूपमा परियत्ति अलगद्दूपमा ति वुच्चति। एवञ्च सति सुग्गहितापि परियत्ति अलगद्दूपमाति वत्तुं वट्टति तत्थापि अलगद्दग्गहणस्स उपमा-भावेन पाळियं वुत्तत्ता। वुत्तञ्हेतं—

"सेय्यथापि भिक्खवे पुरिसो अलगद्दत्थिको अलगद्दगवेसी अलगद्दपरियेसनं चरमानो, सो पस्सेय्य महन्तं अलगद्दं, तमेनं अजपदेन दण्डेन सुनिग्गहितं निग्गण्हेय्य, अजपदेन दण्डेन सुनिग्गहितं निग्गहेत्वा गीवाय सुग्गहितं गण्हेय्य। किञ्चापि सो भिक्खवे अलगद्दो तस्स पुरिसस्स हत्थं वा बाहुं वा अञ्ञतरं वा अङ्गपच्चङ्गं भोगेहि पलिवेठेय्य, अथ खो सो नेव ततोनिदानं मरणं वा निगच्छेय्य मरणमत्तं वा दुक्खं। तं किस्स हेतु, सुग्गहितत्ता भिक्खवे अलगद्दस्स, एवमेव खो भिक्खवे इधेकच्चे कुलपुत्ता धम्मं परियापुणन्ति सुत्तं गेय्यं" ति आदि।[2]

तस्मा इध दुग्गहिता एवं परियत्ति अलगद्दूपमा ति अयं विसेसो कुतो विञ्ञायति, येन दुग्गहिता उपारम्भादिहेतु परियापुटा अलगद्दूपमा ति वुच्चती ति? सच्चमेतं, इदं पन पारिसेसञ्ञायेन वुत्तं ति दट्ठब्बं। तथा हि निस्सरणत्थभण्डागारिक-परियत्तीनं विसुं गहितत्ता पारिसेसतो अलगद्दस्स दुग्गहणूपमा परियत्ति अलगद्दूपमाति विञ्ञायति। सुग्गहणूपमा हि परियत्ति निस्सरणत्था वा होति भण्डागारिकपरियत्ति वा, तस्मा सुवुत्तमेतं "दुग्गहिता उपारम्भादिहेतु परियापुटा अलगद्दूपमा" ति। **यं सन्धाया** ति यं परियत्तिदुग्गहणं सन्धाय। **वुत्तं** ति अलगद्दसुत्ते वुत्तं।

अलगद्दत्थिको ति आसीविसत्थिको। अलगद्दं गवेसति परियेसति सीलेना ति **अलगद्दगवेसी। अलगद्दपरियेसनं चरमानो** ति अलगद्दपरियेसनत्थं चरमानो। **भोगे**ति सरीरे। **हत्थे वा बाहाय वा** ति एत्थ मणिबन्धको याव अग्गनखा "हत्थो" ति

B 83 वेदितब्बो, सद्धिं अग्गबाहाय अवसेसा "बाहा" ति। कत्थचि पन "कप्परतो पट्ठाय पि याव अग्गनखा हत्थो ति वुच्चति। **अञ्ञतरस्मिं वा अङ्गपच्चङ्गे** ति वुत्तलक्खणं हत्थञ्च बाहुञ्च ठपेत्वा अवसेसं सरीरं "अङ्गपच्चङ्गं" ति वेदितब्बं। **ततोनिदानं** ति तंनिदानं, तं कारणा ति वुत्तं होति। पुरिमपदे हि विभत्ति अलोपं कत्वा निद्देसो। तं हत्थादीसु डंसनं निदानं कारणं एतस्साति तं निदानं ति हि वत्तब्बे "ततो निदानं ति पुरिमपदे पच्चत्ते निस्सक्कवचनं कत्वा तस्स च लोपं अकत्वा निद्देसो। **तं किस्स हेतू** ति यं वुत्तं हत्थादीसु डंसनं तं निदानञ्च मरणादि उपगमनं, तं किस्स हेतु केन

१. म० ट्ठ ३-२-१३ पिट्ठे १. म० नि-१, १८७ पिट्ठे।

कारणेना ति चे। **इधा** ति इमस्मिं सासने। **एकच्चे मोघपुरिसा** ति एकच्चे तुच्छपुरिसा। **धम्मं** ति पाळिधम्मं। **परियापुणन्ती** ति उग्गण्हन्ती ति अत्थो, सज्झायन्ति चेव वाचुग्गता करोन्ता धारेन्ति चाति वुत्तं होति। **अत्थं** ति यथाभूतं भासितत्थं पयोजनत्थञ्च। **न उपपरिक्खन्ती** ति न परिग्गण्हन्ति न विचारेन्ति। इदं वुत्तं होति—"इमस्मिं ठाने सीलं कथितं, इध समाधि, इध पञ्ञा कथिता, मयञ्च तं पूरेस्सामा"ति एवं भासितत्थं पयोजनत्थञ्च "सीलं समाधिस्स कारणं, समाधि विपस्सनाया" ति आदिना न परिग्गण्हन्ती ति। **अनुपपरिक्खतं** ति अनुपपरिक्खन्तानं। **न निज्झानं खमन्ती** ति निज्झानपञ्ञं नक्खमन्ति, निज्झायित्वा पञ्ञाय दिस्वा रोचेत्वा गहेतब्बा न होन्ती ति अधिप्पायो। तेन इममत्थं दीपेति "तेसं पञ्ञाय अत्थं अनुपपरिक्खन्तानं ते धम्मा न उपट्ठहन्ति, 'इमस्मिं ठाने सीलं, समाधि, विपस्सना, मग्गो, फलं, वट्टं, विवट्टं कथितं' ति एवं जानितुं न सक्का होन्ती" ति।

ते उपारम्भानिसंसा चेवाति ते परेसं वादे दोसारोपनानिसंसा हुत्वा परियापुणन्ती ति अत्थो। **इतिवादप्पमोक्खानिसंसा चा**ति इति एवं एताय परियत्तिया वादप्पमोक्खानिसंसा, अत्तनो उपरि परेहि आरोपितवादस्स निग्गहस्स पमोक्खप्पयोजना हुत्वा धम्मं परियापुणन्तीति अत्थो। इदं वुत्तं होति—परेहि सकवादे दोसे आरोपिते तं दोसं एवञ्च एवञ्च मोचेसामा ति इमिना च कारणेन परियापुणन्ती ति। अथ वा सो सो वादो इतिवादो, इतिवादस्स पमोक्खो इतिवादप्पमोक्खो, इतिवादप्पमोक्खो आनिसंसो एतेसं ति इतिवादप्पमोक्खानिसंसा, तं तं वादप्पमोचनानिसंसा चाति अत्थो। **यस्स चत्थाय धम्मं परियापुणन्ती** ति यस्स च सीलादिपूरणस्स मग्गफल- B 84
निब्बानस्स वा अत्थाय इमस्मिं सासने कुलपुत्ता धम्मं परियापुणन्ति। **तञ्चस्स अत्थं नानुभोन्ती** ति तञ्च अस्स धम्मस्स सीलादिपरिपूरणसङ्खातं अत्थं एते दुग्गहितगाहिनो नानुभोन्ति न विन्दन्ति।

अथ वा यस्स उपारम्भस्स इतिवादप्पमोक्खस्स वा अत्थाय यो मोघपुरिसा धम्मं परियापुणन्ति, ते परेहि "अयमत्थो न होती" ति वुत्ते दुग्गहितत्तायेव सोयेवत्थोति पटिपादनक्खमा न होन्ती ति परस्स वादे उपारम्भं आरोपेतुं अत्तनो वादा तं मोचेतुञ्च असक्कोन्ता पि तं अत्थं नानुभोन्तियेवा ति एवमत्थो दट्ठब्बो। **दीघरत्तं अहिताय दुक्खाय संवत्तन्तीो**ति तेसं ते धम्मा दुग्गहितत्ता उपारम्भमानदप्पमक्खपलासादिहेतुभावेन दीघरत्तं अहिताय दुक्खाय संवत्तन्ति। एत्थ हि कारणे फलवोहारेन "ते धम्मा अहिताय दुक्खाय संवत्तन्तो" ति वुत्तं। तथा हि किञ्चापि न ते धम्मा अहिताय दुक्खाय संवत्तन्ति, तथापि वुत्तनयेन परियापुणन्तानं सज्झायकाले विवादसमये च तंमूलकानं उपारम्भादीनं अनेकेसं अकुसलानं उप्पत्तिसब्भावतो" ते धम्मा अहिताय दुक्खाय संवत्तन्ती" ति कारणे फलवोहारेन वुत्तं। **तं किस्स हेतू** ति एत्थ **तं** ति यथावुत्तस्सत्थस्स अनभिसम्भुणनं तेसञ्च धम्मानं अहिताय दुक्खाय संवत्तनं परामसति।

सीलक्खन्धादिपारिपूरियेवा ति एत्थ आदिसद्देन समाधिविपस्सनादीनं सङ्गहो वेदितब्बो। यो हि बुद्धवचनं उग्गण्हित्वा सीलस्स आगतट्ठाने सीलं पूरेत्वा समाधिनो

आगतट्ठाने समाधिगब्भं गण्हापेत्वा विपस्सनाय आगतट्ठाने विपस्सनं पट्ठपेत्वा मग्गा फलानं आगतट्ठाने मग्गं भावेस्सामी, फलं सच्छिकरिस्सामी ति उग्गण्हाति, तस्सेव सा परियत्ति निस्सरणत्था नाम होति। **यं सन्धाय वुत्तं** ति यं परियत्तिसुग्गहणं सन्धाय अलगद्दसुत्ते वुत्तं। **दीघरत्तं हिताय सुखाय संवत्तन्ती** ति सीलादीनं आगतट्ठाने सीलादीनि पूरेन्तानम्पि अरहत्तं पत्वा परिसमज्झे धम्मं देसेत्वा धम्मदेसनाय पसन्नेहि उपनीते चत्तारो पच्चये परिभुञ्जन्तानम्पि परेसं वादे सहधम्मेन उपारम्भं आरोपेन्तानम्पि सकवादतो दोसं हरन्तानम्पि दीघरत्तं हिताय सुखाय संवत्तन्ति। तथा
B 85 हि न केवलं सुग्गहितपरियत्तिं निस्साय मग्गभावनाफलसच्छिकिरियादीनेव, परवादनिग्गहसकवादपतिट्ठापनानिपि इज्झन्ति। तथा च वुत्तं "उप्पन्नं परप्पवादं सहधम्मेन सुनिग्गहितं निग्गहेत्वा" ति आदि[1]।

परिञ्ञातक्खन्धो ति दुक्खपरिजाननेन परिञ्ञातक्खन्धो। **पहीनकिलेसो** ति समुदयप्पहानेन पहीनकिलेसो। **पटिविद्धाकुप्पो** ति पटिविद्धअरहत्तफलो। न कुप्पतीति **अकुप्पं** ति हि अरहत्तफलस्सेतं नामं। सतिपि हि चतुन्नं मग्गानं चतुन्नञ्च फलानं अकुप्पसभावे सत्तन्नं सेक्खानं सकसकनामपरिच्चागेन उपरूपरि नामन्तरप्पत्तितो तेसं मग्गफलानि "अकुप्पानी" ति न वुच्चन्ति, अरहा पन सब्बदापि अरहायेव नामा ति तस्सेव फलं "अकुप्पं" ति वुत्तं। इमिना च इममत्थं दस्सेति "खीणासवस्सेवपरियत्ति भण्डागारिकपरियत्ति नामा" ति। तस्स हि अपरिञ्ञातं अप्पहीनं अभावितं असच्छिकतं वा नत्थि, तस्मा बुद्धवचनं परियापुणन्तो तन्तिधारको पवेणीपालको वंसानुरक्खको च हुत्वा उग्गण्हाति। तेनेवाह "**पवेणीपालनत्थाया**" ति आदि। तत्थ **पवेणी** ति धम्मसन्तति, धम्मस्स अविच्छेदेन पवत्तीति अत्थो। **वंसानुरक्खणत्थाया** ति बुद्धस्स भगवतो वंसानुरक्खणत्थं। तस्स वंसो पि अत्थतो पवेणीयेवा ति वेदितब्बं।

ननु च यदि पवेणीपालनत्थाय बुद्धवचनस्स परियापुणनं भण्डागारिकपरियत्ति, कस्मा "खीणासवो" ति विसेसेत्वा वुत्तं। एकच्चस्स पुथुज्जनस्सपि हि अयं नयो लब्भति। तथा हि एकच्चो भिक्खु छातकभयादीसु गन्थधरेसु एकस्मिं ठाने वसितुं असक्कोन्तेसु सयं भिक्खाचारेन अकिलममानो अतिमधुरं बुद्धवचनं मा नस्सतु, तन्तिं धारेस्सामि, वंसं ठपेस्सामि, पवेणिं पालेस्सामीति परियापुणाति, तस्मा तस्सपि परियत्ति भण्डागारिकपरियत्ति नाम कस्मा न होती ति? वुच्चते—एवं सन्तेपि पुथुज्जनस्स परियत्ति भण्डागारिकपरियत्ति नाम न होति। किञ्चापि हि पुथुज्जनो "पवेणिं पालेस्सामी" ति अज्झासयेन परियापुणाति, अत्तनो[2] पन भवकन्तारतो अनित्तिण्णत्ता तस्स परियत्ति निस्सरणपरियत्ति नाम होति, तस्मा पुथुज्जनस्स परियत्ति अलगद्दूपमा वा होति निस्सरणत्था वा, सत्तन्नं सेक्खानं निस्सरणत्थाव, खीणासवानं
B 86 भण्डागारिकपरियत्तियेवा ति वेदितब्बं। खीणासवो च भण्डागारिकसदिसत्ता **भण्डागारिको** ति वुच्चति। यथा हि भण्डागारिको अलङ्कारभण्डं पटिसामेत्वा पसाधनकाले तदुपियं अलङ्कारभण्डं रञ्ञो उपनामेत्वा अलङ्करोति, एवं खीणासवोपि धम्मरतनभण्डं

---

१. दी० २-८७ पिट्ठे। २. अत्तना (सी०)।

सम्पटिच्छित्वा मोक्खाधिगमस्स भब्बरूपे सहेतुके सत्ते पस्सित्वा तदनुरूपं धम्मदेसनं वड्ढेत्वा मग्गङ्गबोज्झङ्गादिसङ्खातेन लोकुत्तरेन अलङ्कारेन अलङ्करोती ति भण्डागारिको ति वुच्चति ।

एवं तिस्सो परियत्तियो विभजित्वा इदानि तीसुपि पिटकेसु यथारहं सम्पत्तिविपत्तियो वित्थारेत्वा दस्सेन्तो आह "**विनये पना**" ति आदि । **सीलसम्पत्तिं निस्साय तिस्सो विज्जा पापुणाती** ति आदीसु यस्मा सीलं विसुज्झमानं सतिसम्पजञ्ञबलेन कम्मस्सकतञ्ञाणबलेन च संकिलेसमलतो विसुज्झति, पारिपूरिञ्च गच्छति, तस्मा सीलसम्पदा सिज्झमाना उपनिस्सयसम्पत्तिभावेन सतिबलं ञाणबलञ्च पच्चुपट्ठपेती ति तस्सा विज्जत्तयूपनिस्सयता वेदितब्बा सभागहेतुसम्पदानतो । सतिबलेन हि पुब्बेनिवासविज्जासिद्धि, सम्पजञ्ञेन सब्बकिच्चेसु सुदिट्ठकारितापरिचयेन चुतूपपातञाणानुबद्धाय दुतियविज्जाय सिद्धि, वीतिक्कमाभावेन संकिलेसप्पहानसब्भावतो विवट्टूपनिस्सयतावसेन अज्झासयसुद्धिया ततियविज्जासिद्धि । पुरेतरसिद्धानं समाधिपञ्ञानं पारिपूरिं विना सीलस्स आसवक्खयञाणूपनिस्सयता सुखविपस्सकखीणासवेहि दीपेतब्बा । "समाहितो यथाभूतं पजानातीति"[1] वचनतो समाधिसम्पदा छळभिञ्ञताय उपनिस्सयो । "योगा वे जायति भूरी" ति[2] वचनतो पुब्बयोगेन गरुवासदेसभासाकोसल्लउग्गहणपरिपुच्छादीहि च परिभाविता पञ्ञासम्पत्ति पटिसम्भिदाप्पभेदस्स उपनिस्सयो । एत्थ च "सीलसम्पत्तिं निस्साया" ति वुत्तत्ता यस्स समाधिविजम्भनभूता अनवसेसा छ अभिञ्ञा न इज्झन्ति, तस्स उक्कट्ठपरिच्छेदवसेन न समाधिसम्पदा अत्थी ति सतिपि विज्जानं अभिञ्ञेकदेसभावे सीलसम्पत्तिसमुदागता एव तिस्सो विज्जा गहिता । यथा हि पञ्ञासम्पत्तिसमुदागता चतस्सो पटिसम्भिदा उपनिस्सयसम्पन्नस्स मग्गेनेव इज्झन्ति मग्गक्खणे एव तासं पटिलभितब्बतो । एवं सीलसम्पत्तिसमुदागता तिस्सो विज्जा समाधिसम्पत्तिसमुदागता च छ अभिञ्ञा उपनिस्सयसम्पन्नस्स मग्गेनेव B 87
इज्झन्ती ति मग्गाधिगमेनेव तासं अधिगमो वेदितब्बो । पच्चेकबुद्धानं सम्मासम्बुद्धानञ्च पच्चेकबोधिसम्मासबोधिधम्मसमधिगमसदिसा हि इमेसं अरियानं इमे विसेसाधिगमा ति ।

तासंयेव च तत्थ पभेदवचनतो ति एत्थ **तासंयेवा** ति अवधारणं पापुणितब्बानं छळभिञ्ञाचतुपटिसम्भिदानं विनये पभेदवचनाभावं सन्धाय वुत्तं । वेरञ्जकण्डे हि तिस्सो विज्जाव विभत्ता ति । दुतिये **तासंयेवा** ति अवधारणं चतस्सो पटिसम्भिदा अपेक्खित्वा कतं, न तिस्सो विज्जा । ता हि छसु अभिञ्ञासु अन्तोगधत्ता सुत्ते विभत्तायेवा ति । **तासञ्चा** ति एत्थ च—सद्देन सेसानम्पि तत्थ अत्थिभावं दीपेति । अभिधम्मपिटके हि तिस्सो विज्जा छ अभिञ्ञा चतस्सो च पटिसम्भिदा वुत्तायेव । पटिसम्भिदानं पन अञ्ञत्थ पभेदवचनाभावं तत्थेव च सम्मा विभत्तभावं दीपेतुकामो हेट्ठा वुत्तनयेन अवधारणं अकत्वा "**तत्थेवा**" ति परिवत्तेत्वा अवधारणं ठपेसि ।

१. सं० २-३०२, सं० ३-३६३, खु० १०-५०, खु० ११-३८ पिट्ठेसु ।
२. खु० १-५३ पिट्ठे ।

इदानि "विनये दुप्पटिपन्नो 'मुदुकानं अत्थरणादीनं सम्फस्सो विय इत्थिसम्फस्सो पि वट्टती' ति मेथुनवीतिक्कमे दोसं अदिस्वा सीलविपत्तिं पापुणाती" ति दस्सेन्तो आह "**विनये पन दुप्पटिपन्नो**" ति आदि। तत्थ सुखो सम्फस्सो एतेसं ति **सुखसम्फस्सानि**, अत्थरणपावुरणादीनि। **उपादिन्नफस्सो** इत्थिफस्सो, मेथुनधम्मो ति वुत्तं होति। **वुत्तम्पि हेतं** ति अरिट्ठेन भिक्खुना वुत्तं। सो हि बहुस्सुतो धम्मकथिको कम्मकिलेसविपाकउपवादआणावीतिक्कमवसेन पञ्चविधेसु अन्तरायिकेसु सेसन्तरायिके जानाति, विनये पन अकोविदत्ता पण्णत्तिवीतिक्कमन्तरायिके न जानाति, तस्मा रहोगतो एवं चिन्तेसि "इमे अगारिका पञ्च कामगुणे परिभुञ्जन्ता सोतापन्नापि सकदागामिनोपि अनागामिनो पि होन्ति। भिक्खूपि मनापिकानि चक्खुविञ्ञेय्यानि रूपानि पस्सन्ति.... पे०....कायविञ्ञेय्य फोट्ठब्बे फुसन्ति, मुदुकानि अत्थरणपावुरणादीनि परिभुञ्जन्ति, एतं सब्बं वट्टति, कस्मा इत्थीनंयेव रूपसद्दगन्धरसफोट्ठब्बा न वट्टन्ति, एते पि वट्टन्ती" ति अनवज्जेन पच्चयपरिभुञ्जनरसेन सावज्जकामगुणपरिभोगरसं संसन्दित्वा सच्छन्दरागपरिभोगञ्च निच्छन्दरागपरिभोगञ्च एकं कत्वा थूलवाकेहि सद्धिं अतिसुखुमसुत्तं
B 88 घटेन्तो विय सासपेन सद्धिं सिनेरुनो सदिसतं उपसंहरन्तो विय पापकं दिट्ठिगतं उप्पादेत्वा "किं भगवता महासमुद्दं बन्धन्तेन विय महता उस्साहेन पठमपाराजिकं पञ्ञत्तं, नत्थि एत्थ दोसो" ति सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन सद्धिं पटिविरुज्झन्तो वेसारज्जञाणं पटिबाहन्तो अरियमग्गे खाणुकण्टकादीनि पक्खिपन्तो "मेथुनधम्मे दोसो नत्थी" ति जिनस्स आणाचक्के पहारमदासि। तेनाह "**तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामी**" ति आदि।

तत्थ **अन्तरायिका** ति तं तं सम्पत्तिया विबन्धनवसेन सत्तसन्तानस्स अन्तरे वेमज्झे एति आगच्छती ति अन्तरायो, दिट्ठधम्मिकादिअनत्थो। अनतिक्कमनट्ठेन तस्मिं अन्तराये नियुत्ता, अन्तरायं वा फलं अरहन्ति, अन्तरायस्स वा करणसीला ति अन्तरायिका, सग्गमोक्खानं अन्तरायकरा ति वुत्तं होति। ते च कम्मकिलेसविपाकउपवादआणावीतिक्कमवसेन पञ्चविधा। तेसं वित्थारकथा परतो **अरिट्ठसिक्खापदे**[1] आवि भविस्सति। अयं पनेत्थ पदत्थसम्बन्धो—ये इमे धम्मा अन्तरायिका अन्तरायकरा ति भगवता वुत्ता देसिता चेव पञ्ञत्ता च, ते धम्मे पटिसेवतो पटिसेवन्तस्स यथा येन पकारेन ते धम्मा अन्तरायाय सग्गमोक्खानं अन्तरायकरणत्थं नालं समत्था न होन्ति, तथा तेन पकारेनाहं भगवता देसितं धम्मं आजानामी ति। **ततो दुस्सीलभावं पापुणाती**ति ततो अनवज्जसञ्ञीभावहेतुतो वीतिक्कमित्वा दुस्सीलभावं पापुणाति।

चत्तारोमे भिक्खवे ति आदिना—

"चत्तारोमे भिक्खवे पुग्गला सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं। कतमे चत्तारो, अत्तहिताय पटिपन्नो होति, नो परहिताय, परहिताय पटिपन्नो होति, नो अत्तहिताय, नेव अत्तहिताय पटिपन्नो होति नो परहिताय, अत्तहिताय चेव पटिपन्नो होति पर-

१. वि०—२-१७५ पिट्ठे।

हिताय चा"ति[1]— आदिना पुग्गलदेसनापटिसंयुत्तसुत्तन्तपाळिं निदस्सेति। **अधिप्पायं-अजानन्तो** ति" अयं पुग्गलदेसना वोहारवसेन, न परमत्थतो"ति एवं भगवतो अधिप्पायं अजानन्तो। बुद्धस्स हि भगवतो दुविधा देसना सम्मुतिदेसना परमत्थदेसना B 89
चाति। तत्थ "पुग्गलो सत्तो इत्थि पुरिसो खत्तियो ब्राह्मणो देवो मारो"ति एवरूपा **सम्मुतिदेसना**।" अनिच्चं दुक्खं अनत्ता खन्धा धातुयो आयतनानि सतिपट्ठाना"ति एवरूपा **परमत्थदेसना**। तत्थ भगवा ये सम्मुतिवसेन देसनं सुत्वा अत्थं पटिविज्झित्वा मोहं पहाय विसेसमधिगन्तुं समत्था, तेसं सम्मुतिदेसनं देसेति। ये पन परमत्थवसेन देसनं सुत्वा अत्थं पटिविज्झित्वा मोहं पहाय विसेसमधिगन्तुं समत्था तेसं परमत्थ-देसनं देसेति।

तत्रायं उपमा—यथा हि देसभासाकुसलो तिण्णं देवानं अत्थसंवण्णको आचरियो ये दमिळभासाय वुत्ते अत्थं जानन्ति, तेसं दमिळभासाय आचिक्खति, ये अन्धकभासा-दीसु अञ्ञतराय, तेसं ताय भासाय, एवं ते माणवा छेकं ब्यत्तं आचरियमागम्म खिप्पमेव सिप्पं उग्गण्हन्ति। तत्थ आचरियो विय बुद्धो भगवा, तयो वेदा विय कथे-तब्बभावे ठितानि तीणि पिटकानि, देसभासाय कोसल्लमिव सम्मुतिपरमत्थकोसल्लं, नानादेसभासामाणवका विय सम्मुतिपरमत्थ वसेन पटिविज्झनसमत्था वेनेय्यसत्ता, आचरियस्स दमिळभासादिआचिक्खनं विय भगवतो सम्मुतिपरमत्थवसेनपि देसना वेदितब्बा। आह चेत्थ—

"दुवे सच्चानि अक्खासि, सम्बुद्धो वदतं वरो।
सम्मुतिं परमत्थञ्च, ततियं नूपलब्भति॥
सङ्केतवचनं सच्चं, लोकसम्मुतिकाराणा।
परमत्थवचनं सच्चं, धम्मानं भूतकारणा॥
तस्मा वोहारकुसलस्स, लोकनाथस्स सत्थुनो।
सम्मुतिं वोहरन्तस्स, मुसावादो न जायती"ति॥[2]

अपि च अट्ठहि कारणेहि भगवा पुग्गलकथं कथेति— हिरोतप्पदीपनत्थं कम्मस्सकतादीप-नत्थं पच्चत्तपुरिसकारदीपनत्थं आनन्तरियदीपनत्थं ब्रह्मविहारदीपनत्थं पुब्बेनिवासदीप-नत्थं दक्खिणाविसुद्धिदीपनत्थं लोकसम्मुतिया अप्पहानत्थञ्चाति। "खन्धा धातुयो आयतनानि हिरियन्ति ओत्तप्पन्ती"ति वुत्ते महाजनो न जानाति, सम्मोहमापज्जति, पटिसत्तु होति "किमिदं खन्धा धातुयो आयतनानि हिरियन्ति ओत्तप्पन्ति नामा"ति। B 90
"इत्थी हिरियति ओत्तप्पत्ति, पुरिसो खत्तियो ब्राह्मणो देवो मारो"ति वुत्ते महाजनो जानाति, न सम्मोहमापज्जति, न पटिसत्तु होति, तस्मा भगवा **हिरोतप्पदीपनत्थं** पुग्गलकथं कथेति। "खन्धा कम्मस्सका धातुयो आयतनानी"ति वुत्तेपि एसेव नयो। कस्मा भगवा **कम्मस्सकतादीपनत्थं** पुग्गलकथं कथेति। "वेळुवनादयो महाविहारा

१. अं० १–४०८, अभि, ३–१०६ पिट्ठेसु।
२. म-ट्ठ १-१४२, अं-ट्ठ-१-७४ पिट्ठेसु।

खन्धेहि कारापिता धातूहि आयतनेही''ति वुत्तेपि एसेव नयो। तस्मा भगवा **पच्चत्त-पुरिसकारदीपनत्थं** पुग्गलकथं कथेति। ''खन्धा मातरं जीविता वोरोपेन्ति, पितरं अरहन्तं, रुहिरुप्पादकम्मं संघभेदं करोन्ति, धातुयो आयतनानी''ति वुत्तेपि एसेव नयो। तस्मा भगवा **आनन्तरियदीपनत्थं** पुग्गलकथं कथेति।

''खन्धा मेत्तायन्ति, धातुयो आयतनानी'' ति वुत्तेपि एसेव नयो। तस्मा भगवा **ब्रह्मविहारदीपनत्थं** पुग्गलकथं कथेति। ''खन्धा पुब्बेनिवासं अनुस्सरन्ति, धातुयो आयतनानी''ति वुत्तेपि एसेव नयो। तस्मा भगवा **पुब्बेनिवासदीपनत्थं** पुग्गलकथं कथेति। ''खन्धा दानं पटिग्गण्हन्ति, धातुयो आयतनानी''ति वुत्तेपि महाजनो न जानाति, सम्मोहमापज्जति, पटिसत्तु होति ''किमिदं खन्धा धातुयो आयतनानि पटिग्गण्हन्ति नामा''ति। ''पुग्गला पटिग्गण्हन्ति सीलवन्तो कल्याणधम्मा''ति वुत्ते पन जानाति, न सम्मोहमापज्जति, न पटिसत्तु होति। तस्मा भगवा **दक्खिणाविसुद्धि-दीपनत्थं** पुग्गलकथं कथेति। लोकसम्मुतिञ्च बुद्धा भगवन्तो न विजहन्ति, लोक-समञ्ञाय, लोकनिरुत्तिया लोकाभिलापे ठितायेव धम्मं देसेन्ति। तस्मा भगवा **लोकसम्मुतियाअप्पहानत्थम्पि** पुग्गलकथं कथेति, तस्मा इमिना च अधिप्पायेन भगवतो पुग्गलदेसना, न परमत्थदेसना ति एवं अधिप्पायं अजानन्तो ति वुत्तं होति।

दुग्गहितं गण्हाती ति ''तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा तदेविदं विञ्ञाणं सन्धावति संसरति, अनञ्ञं'' ति आदिना दुग्गहितं कत्वा गण्हाति, विपरीतं गण्हाती ति वुत्तं होति। **दुग्गहितं** ति हि भावनपुंसकनिद्देसो। **यं सन्धाया** ति यं दुग्गहितगाहं सन्धाय। अत्तना दुग्गहितेन धम्मेना ति पाठसेसो वेदितब्बो। अथ
B 91 वा दुग्गहणं दुग्गहितं। **अत्तना** ति च सामिअत्थे करणवचनं, तस्मा अत्तनो दुग्गहणेन विपरीतगाहेना ति वुत्तं होति। **अम्हे चेव अब्भाचिक्खती** ति अम्हाकञ्च अब्भाचिक्खनं करोति। **अत्तानञ्च खनती** ति अत्तनो कुसलमूलानि खनन्तो अत्तानं खनति नाम।

धम्मचिन्तं ति धम्मसभावविजाननं। **अतिधावन्तो** ति ठातब्बमरियादायं अठत्वा ''चित्तुप्पादमत्तेन दानं होति, सयमेव चित्तं अत्तनो आरम्मणं होति, सब्बं चित्तं असभावधम्मारम्मणं'' ति एवमादिना अतिधावन्तो अतिक्कमित्वा पवत्तमानो। **चत्तारी**ति बुद्धविसयइद्धिविसयकम्मविपाकलोकविसयसङ्खातानि चत्तारि। वुत्तञ्हेतं—

''चत्तारिमानि भिक्खवे अचिन्तेय्यानि न चिन्तेतब्बानि, यानि चिन्तेन्तो उम्मादस्स विघातस्स भागी अस्स। कतमानि चत्तारि? बुद्धानं भिक्खवे बुद्धविसयो अचिन्तेय्यो न चिन्तेतब्बो। यं चिन्तेन्तो उम्मादस्स विघातस्स भागी अस्स। झायिस्स भिक्खवे झानविसयो अचिन्तेय्यो न चिन्तेतब्बो...पे०...कम्मविपाको भिक्खवे अचिन्तेय्यो न चिन्तेतब्बो...पे०...लोकचिन्ता भिक्खवे अचिन्तेय्या न चिन्तेतब्बा...पे०...इमानि भिक्खवे चत्तारि अचिन्तेय्यानि न चिन्तेतब्बानि, यानि चिन्तेन्तो उम्मादस्स विघातस्स भागी अस्सा'' ति।[१]

---

१. अं० १-३९२ पिट्ठे।

तत्थ "अचिन्तेय्यानी" ति तेसं सभावनिदस्सनं। "न चिन्तेतब्बानी" ति तत्थ कत्तब्बतानिदस्सनं। तत्थ **अचिन्तेय्यानी**ति चिन्तेतुमसक्कुणेय्यानि, चिन्तेतुं अरहरूपानि न होन्ती ति अत्थो। अचिन्तेय्यत्ता एव न चिन्तेतब्बानि, कामं अचिन्तेय्यानिपि छ असाधारणादीनि अनुस्सरन्तस्स कुसलुप्पत्तिहेतुभावतो तानि चिन्तेतब्बानि, इमानि पन एवं न होन्ती ति अफलभावतो न चिन्तेतब्बानी ति अधिप्पायो। तेनेवाह "**यानि चिन्तेन्तो उम्मादस्स विघातस्स भागी अस्सा**" ति। **तेसं** ति तेसं पिटकानं।

एतं ति एतं बुद्धवचनं **तिवग्गसङ्गहानी** ति सीलक्खन्धवग्गमहावग्गपाथिकवग्गसङ्खातेहि तीहि वग्गेहि सङ्गहो एतेसं ति तिवग्गसङ्गहानि। **चतुत्तिंसेव सुत्तन्ता** ति गाथाय एवमत्थयोजना वेदितब्बा—यस्स निकायस्स सुत्तगणनातो चतुत्तिंसेव च सुत्तन्ता वग्गसङ्गहवसेन तयो वग्गा अस्स सङ्गहस्साति तिवग्गो सङ्गहो। एस पठमो निकायो दीघनिकायो ति **अनुलोमिको** अपच्चनीको, अत्थानुलोमनतो अन्वत्थनामो ति वुत्तं होति। B 92

अत्थानुलोमनतो अनुलोमिको, अनुलोमिकत्तंयेव विभावेतुं "कस्मा पना" ति आदिमाह। एकनिकायम्पीति एकसमूहम्पि। एवं चित्तं" ति एवं विचित्तं। यथयिदं ति यथा इमे। पोणिका चिक्खल्लिका च खत्तिया, तेसं निवासो पोणिकनिकायो चिक्खल्लिकनिकायो ति वुच्चति। एवमादीनि चेत्थ साधकानि सासनतो च लोकतो चा ति एवमादीनि उदाहरणानि एत्थ निकायसद्दस्स समूह निवासानं वाचकभावे सासनतो च वोहारतो च साधकानि पमाणानी ति अत्थो। एत्थ पठममुदाहरणं सासनतो साधकवचनं, दुतियं लोकतो ति वेदितब्बं।

पञ्चदसवग्गसङ्गहानी ति मूलपरियायवग्गादीहि पञ्चदसहि वग्गेहि सङ्गहो एतेसं ति पञ्चदसवग्गसङ्गहानि। दियड्ढसतं द्वे च सुत्तानीति अड्ढेन दुतियं दियड्ढं, एकं सतं द्वे पञ्ञाससुत्तानि चा ति अत्थो। यत्था ति यस्मिं निकाये। पञ्चदसवग्गपरिग्गहो ति पञ्चदसहि वग्गेहि परिग्गहितो सङ्गहितो ति अत्थो।

सुत्तन्तानं सहस्सानि सत्तसुत्तसतानि चा ति पाठे सुत्तन्तानं सत्त सहस्सानि सत्त सतानि चा ति योजेतब्बं। कत्थचि पन "सत्तसुत्तसहस्सानि सत्त सुत्तसतानि चा" ति पि पाठो। संयुत्तसङ्गहो ति संयुत्तनिकायस्स संगहो।

पुब्बे निदस्सिता ति सुत्तन्तपिटकनिद्देसे निदस्सिता। वुत्तमेव पकारन्तरेन सङ्खिपित्वा दस्सेतुं "**ठपेत्वा चत्तारो निकाये अवसेसं बुद्धवचनं**" ति वुत्तं। **सकलं विनयपिटकं** ति आदिना निद्दिट्ठमेव हि इमिना पकारन्तरेन सङ्खिपित्वा वुत्तं। तेनेवाह "ठपेत्वा चतुरोपेते" ति आदि। तदञ्ञं ति तेहि चतूहि निकायेहि अञ्ञं अवसेसं ति अत्थो।

सब्बमेव हिदं ति सब्बमेव इदं बुद्धवचनं। नवप्पभेदं ति एत्थ कथं पनेतं नवप्पभेदं होति। हि तथा नवहि अङ्गेहि ववत्थितेहि अञ्ञमञ्ञसङ्कररहितेहि

B 93 भवितब्बं, तथा च सति असुत्तसभावानेव गेय्यङ्गादीनि सियुं, अथ सुत्तसभावानेव गेय्यङ्गादीनि, एवं सति सुत्तं ति विसुं सुत्तङ्गमेव न सिया, एवं सन्ते अट्ठङ्गं सासनं ति आपज्जति। अपि च "सगाथकं सुत्तं गेय्यं, निग्गाथकं सुत्तं वेय्याकरणं ति अट्ठकथायं वुत्तं। सुत्तञ्च नाम सगाथकं वा सिया निग्गाथकं वा ति अङ्गद्वयेनेव तदुभयं सङ्गहितं ति तदुभयविनिमुत्तञ्च सुत्तं उदानादिविसेससञ्ञारहितं नत्थि, यं सुत्तङ्गं सिया, अथापि कथञ्चि विसुं सुत्तङ्गं सिया, मङ्गलसुत्तादीनं सुत्तसङ्गहो वा न सिया गाथाभावतो धम्मपदादीनं विय, गेय्यङ्गसङ्गहो वा सिया सगाथकत्ता सगाथकवग्गस्स विय, तथा उभतोविभङ्गादीसु सगाथकप्पदेसानं ति ? वुच्चते—

सुत्तं ति सामञ्ञविधि, विसेसविधयो परे।
सनिमित्ता निरुळ्हत्ता, सहताञ्ञेन[२] नाञ्ञतो ॥
यथावुत्तस्स दोसस्स, नत्थि एत्थावगाहणं।
तस्मा असङ्करंयेव, नवङ्गं सत्थुसासनं ॥

सब्बस्सपि हि बुद्धवचनस्स सुत्तं ति अयं **सामञ्ञविधि**। तथा हि "एत्तकं तस्स भगवतो सुत्तागतं सुत्तपरियापन्नं, सावत्थिया सुत्तविभङ्गे, सकवादे पञ्च सुत्तसतानी" ति आदिवचनतो विनयाभिधम्मपरियत्तिविसेसुपि सुत्तवोहारो दिस्सति। तेनेव च आयस्मा महाकच्चानो नेत्तियं[३] आह "नवविधसुत्तन्तपरियेट्ठी" ति। तत्थ हि सुत्तादिवसेन नवङ्गस्स सासनस्स परियेट्ठि परियेसना अत्थविचारणा "नवविध सुत्तन्तपरियेट्ठी" ति वुत्ता। तदेकदेसेसु पन गेय्यादयो **विसेसविधयो** तेन तेन निमित्तेन पतिट्ठिता। तथा हि गेय्यस्स सगाथकत्तं तब्भावनिमित्तं। लोके पि हि ससिलोकं सगाथकं वा चुण्णियगन्थं "गेय्यं" ति वदन्ति। गाथा विरहे पन सति पुच्छं कत्वा विसज्जनभावो वेय्याकरणस्स तब्भावनिमित्तं। पुच्छाविसज्जनञ्हि "व्याकरणं" ति वुच्चति। व्याकरणमेव वेय्याकरणं। एवं सन्ते सगाथकादीनम्पि पुच्छं कत्वा विसज्जनवसेनपवत्तानं वेय्याकरणभावो आपज्जतीति ? नापज्जति। गेय्यादिसञ्ञानं अनोकासभावतो सओ-
B 94 कासतो अनोकासविधि बलवा ति "गाथाविरहे सती" ति विसेसितत्ता च। तथा हि धम्मपदादीसु केवलं गाथाबन्धेसु सगाथकत्ते पि सोमनस्सञाणमयिकगाथायुत्तेसु "वुत्तञ्हेतं" ति आदिवचनसम्बन्धेसु अब्भुतधम्मपटिसंयुत्तेसु च सुत्तविसेसेसु यथाक्कमं गाथाउदानइतिवुत्तकअब्भुतधम्मसञ्ञा पतिट्ठिता। एत्थ हि सति पि सञ्ञन्तरनिमित्तयोगे अनोकाससञ्ञानं बलवभावेनेव गाथादिसञ्ञा पतिट्ठिता, तथा सति पि गाथाबन्धभावे भगवतो अतीतासु जातीसु चरियानुभावप्पकासकेसु जातकसञ्ञा पतिट्ठिता, सति पि पञ्हाविसज्जनभावे सगाथकत्ते च केसुचि सुत्तन्तेसु वेदस्स लभापनतो वेदल्लसञ्ञा पतिट्ठिता ति एवं तेन तेन सगाथकत्तादिना निमित्तेन तेसु तेसु सुत्तविसेसेसु गेय्यादिसञ्ञा पतिट्ठिता ति विसेसविधयो सुत्तङ्गतो परे गेय्यादयो।

---

१. अथ वा (सी०)
२. सङ्गताञ्ञेन (सी०) नेत्ति-ट्ठ १३ पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।
३. खु० १०-१ पिट्ठे।

यं पनेत्थ गेय्यङ्गादिनिमित्तरहितं, तं सुत्तङ्गं विसेससञ्ञापरिहारेन सामञ्ञसञ्ञाय पवत्तनतो।

ननु च एवं सन्ते पि सगाथकं सुत्तं गेय्यं, निग्गाथकं सुत्तं वेय्याकरणं ति सुत्तङ्गं न सम्भवतीति चोदना तदवत्था एवा ति? न तदवत्था। सोधितत्ता। सोधितञ्हि पुब्बे गाथाविरहे सति पुच्छाविसज्जनभावो वेय्याकरणस्स तब्भावनिमित्तं ति। यञ्च वुत्तं "गाथाभावतो मङ्गलसुत्तादीनं सुत्तङ्गसङ्गहो न सिया" ति। तं न, निरुळ्हत्ता ति। निरुळ्हो हि मङ्गलसुत्तादीनं सुत्तभावो। न हि तानि धम्मपदबुद्धवंसादयो विय गाथाभावेन पञ्ञातानि, अथ खो सुत्तभावेनेव। तेनेव हि अट्ठकथायं सुत्तनामकं ति नामग्गहणं कतं। यं पन वुत्तं "सगाथकत्ता गेय्यङ्गसङ्गहो सिया" ति, तम्पि नत्थि। यस्मा सहताञ्ञेन। सहभावो हि नाम अत्थतो[1] अञ्ञेन होति, सह गाथाही ति च सगाथकं। न च मङ्गलसुत्तादीसु गाथाविनिमुत्तो कोचि सुत्तप्पदेसो अत्थि, यो "सहगाथाही" ति वुच्चेय्य। ननु च गाथासमुदायो गाथाहि अञ्ञो होति, तथा च तस्स वसेन सह गाथाही ति सगाथकं ति सक्का वत्तुं ति? तं न। न हि अवयवविनिमुत्तो समुदायो नाम कोचि अत्थि। यम्पि वुत्तं "उभतोविभङ्गादीसु सगाथकप्पदेसानं गेय्यङ्गसङ्गहो सिया" ति, तम्पि न अञ्ञतो। अञ्ञायेव हि ता गाथा जातकादिपरियापन्नत्ता। अथो न ताहि उभतोविभङ्गादीनं गेय्यङ्गभावो ति एवं सुत्तादीनं अङ्गानं अञ्ञमञ्ञसङ्करभावो वेदितब्बो।

इदानि सुत्तादीनि नवङ्गानि विभजित्वा दस्सेन्तो आह "**तत्थ उभतोविभङ्गनिद्देसखन्धकपरिवारा**" ति आदि। तत्थ निद्देसो नाम सुत्तनिपाते— B 95

"कामं कामयमानस्स, तस्स चेतं समिज्झति।
अद्धा पीतिमनो होति, लद्धा मच्चो यदिच्छती" ति[2]—

आदिना आगतस्स अट्ठकवग्गस्स,

"केनस्सु निवुतो लोको, (इच्चायस्मा अजितो।)
केनस्सु नप्पकासति।
किस्साभिलेपनं ब्रूसि,
किंसु तस्स महब्भयं" ति[3]—

आदिना आगतस्स पारायनवग्गस्स,

"सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डं,
अविहेठयं अञ्ञतरम्पि तेसं।
न पुत्तमिच्छेय्य कुतो सहायं,
एको चरे खग्गविसाणकप्पो" ति[4]—

---

१. अत्तनो (सी०)　　२. खु० १-३९९ पिट्ठे।
३. खु० १-४३४ पिट्ठे।　　४. खु० १-२८४ पिट्ठे।

आदिना आगतस्स खग्गविसाणसुत्तस्स च तदत्थविभागवसेन सत्थुकप्पेन आयस्मता धम्मसेनापति **सारिपुत्तत्थेरेन** कतो निद्देसो महानिद्देसो चूळनिद्देसो ति च वुच्चति। एवमिध निद्देसस्स सुतङ्गसङ्गहो **भदन्तबुद्धघोसाचरियेन** दस्सितो ति वेदितब्बो। अञ्ञत्था पि च दीघनिकायट्ठकथादीसु सब्बत्थ उभतोविभङ्गनिद्देसखन्धकपरिवारा ति निद्देसस्स सुत्तङ्गसङ्गहो एव दस्सितो। **आचरिय धम्मपालत्थेरेन** पि नेत्तिपकरणट्ठकथायं एवमेतस्स सुत्तङ्गसङ्गहो व कथितो। केचि पन निद्देसस्स गाथावेय्याकरणङ्गेसु द्वीसु सङ्गहं वदन्ति। वुत्तञ्हेतं निद्देस अट्ठकथायं **उपसेनत्थेरेन**––

"तदेतं विनयपिटकं सुत्तन्तपिटकं अभिधम्मपिटकं ति तीसु पिटकेसु सुत्तन्तपिटकपरियापन्नं, दीघनिकायो मज्झिमनिकायो संयुत्तनिकायो अङ्गुत्तरनिकायो खुद्दकनिकायो ति पञ्चसु महानिकायेसु खुद्दकमहानिकाये परियापन्नं, सुत्तं गेय्यं
B 96 वेय्याकरणं गाथा उदानं इतिवुत्तकं जातकं अब्भुतधम्मं वेदल्लं ति नवसु सत्थुसासनङ्गेसु यथासम्भवं गाथावेय्यकरणङ्गद्वयसङ्गहितं" ति।[१]

एत्थ ताव कत्थचि पुच्छाविसज्जनसभावतो निद्देसेकदेसस्स वेय्याकरणङ्गसङ्गहो युज्जतु नाम, गाथङ्गसङ्गहो पन कथं युज्जेय्या ति इदमेत्थ वीमंसितब्बं। धम्मपदादीनं विय हि केवलं गाथाबन्धभावो गाथङ्गस्स तब्भावनिमित्तं। धम्मपदादीसु हि केवलं गाथाबन्धेसु गाथासमञ्ञा पतिट्ठिता, निद्देसे च न कोचि केवलो गाथाबन्धप्पदेसो उपलब्भति। सम्मासम्बुद्धेन भासितानं येव हि अट्ठकवग्गादिसङ्गहितानं गाथानं निद्देसमत्तं धम्मसेनापतिना कतं। अत्थविभजनत्थं आनीतापि हि ता अट्ठकवग्गादिसङ्गहिता निद्दिसितब्बा मूलगाथायो सुत्तनिपातपरियापन्नत्ता अञ्ञायेवाति न निद्देससङ्ख्यं गच्छन्ति उभतोविभङ्गादीसु आगतभावेपि तं वोहारं अलभमाना जातकादिगाथापरियापन्ना गाथायो विय, तस्मा कारणन्तरमेत्थ गवेसितब्बं, युत्ततरं वा गहेतब्बं।

नालकसुत्ततुवट्टकसुत्तानी ति एत्थ **नालकसुत्तं** नाम पदुमुत्तरस्स भगवतो सावकं मोनेय्यपटिपदं पटिपन्नं दिस्वा तदत्थं अभिकङ्खमानेन ततो पभुति कप्पसतसहस्सं पारमियो पूरेत्वा आगतेन असितस्स इसिनो भागिनेय्येन नालकत्थेरेन धम्मचक्कप्पवत्तितदिवसतो सत्तमे दिवसे "अञ्ञातमेतं" ति आदीहि द्वीहि गाथाहि मोनेय्यपटिपदं पुट्ठेन भगवता "मोनेय्यं ते उपञ्ञिस्सं" ति आदिना[२] नालकत्थेरस्स भासितं मोनेय्यपटिपदापरिदीपकं सुत्तं। **तुवट्टकसुत्तं**[३] पन महासमयसुत्तन्तदेसनाय सन्निपतितेसु देवेसु" का नु खो अरहत्तप्पत्तिया पटिपत्ती" ति उप्पन्नचित्तानं एकच्चानं देवतानं तमत्थं पकासेतुं "पुच्छामि तं आदिच्चबन्धू" ति आदिना[४] निम्मितबुद्धेन अत्तानं पुच्छापेत्वा "मूलं पपञ्चसङ्खाया" ति आदिना[५] भासितं सुत्तं। एवमिध सुत्त-

१. महानिद्देस- ट्ठ-८ पिट्ठे। २. खु० १-३८८ पिट्ठे।
३. तुवटकसुत्तं (सी०) ४. खु० १-४२१ खु० ७-२६३ पिट्ठेसु।
५. खु० १-४२१ पिट्ठे।

निपाते आगतानं मङ्गलसुत्तादीनं सुत्तङ्गसङ्गहो दस्सितो, तत्थेव आगतानं असुत्तनामिकानं सुद्धिकगाथानं गाथङ्गसङ्गहञ्च दस्सयिस्सति, एवं सति सुत्तनिपातट्ठकथारम्भे[1]—

"गाथासतसमाकिण्णो, गेय्यव्याकरणङ्कितो । B 97
कस्मा सुत्तनिपातोति, सङ्खमेस गतोति चे" ति—

सकलस्सपि सुत्तनिपातस्स गेय्यवेय्याकरणङ्गसङ्गहो कस्मा चोदितो ति ? नायं विरोधो। केवलञ्हि तत्थ चोदकेन सगाथकत्तं कत्थचि पुच्छाविसज्जनमत्तञ्च गहेत्वा चोदनामत्तं कतं" ति गहेतब्बं। अञ्ञथा सुत्तनिपाते निग्गाथकस्स सुत्तस्सेव अभावतो वेय्याकरणङ्गसङ्गहो न चोदेतब्बो सिया ति। सगाथावग्गो गेय्यं ति योजेतब्बं। "अट्ठहि अङ्गेहि असङ्गहितं नाम पटिसम्भिदादी" ति तीसुपि गण्ठिपदेसु वुत्तं। केचि पन पटिसम्भिदामग्गस्स गेय्यवेय्याकरणङ्गद्वयसङ्गहं वदन्ति। वुत्तञ्हेतं पटिसम्भिदामग्गट्ठकथायं[2] "नवसु सत्थुसासनङ्गेसु यथासम्भवं गेय्यवेय्याकरणङ्गद्वयसङ्गहितं" ति।

नोसुत्तनामिका ति असुत्तनामिका। "सुद्धिकगाथा नाम वत्थुगाथा" ति तीसु गण्ठिपदेसु वुत्तं। तत्थ वत्थुगाथा ति—

"कोसलानं पुरा रम्मा, अगमा दक्खिणापथं।
आकिञ्चञ्ञं पत्थयानो, ब्राह्मणो मन्तपारगू" ति[3]—

आदिना पारायनवग्गस्स निदानं आरोपेन्तेन आयस्मता आनन्दत्थेरेन सङ्गीतिकाले वुत्ता छपञ्ञास च गाथायो, आनन्दत्थेरेनेव सङ्गीतिकाले नालकसुत्तस्स निदानं आरोपेन्तेन वुत्ता—

"आनन्दजाते तिदसगणे पतीते,
सक्कञ्च इन्दं सुचिवसने च देवे।
दुस्सं गहेत्वा अतिरिव थोमयन्ते,
असितो इसि अद्दस दिवाविहारे" ति[4]—

आदिका वीसतिमत्ता गाथायो च वुच्चन्ति। तत्थ "नालकसुत्तस्स वत्थुगाथायो नालकसुत्तसङ्ख्यंयेव गच्छन्ती" ति अट्ठकथायं वुत्तं। वुत्तञ्हेतं सुत्तनिपातट्ठकथायं[5]—

"परिनिब्बुते पन भगवति सङ्गीतिं करोन्तेन आयस्मता महाकस्सपेन आयस्मा आनन्दो तमेव मोनेय्यपटिपदं पुट्ठो येन यदा च समादपितो नालको भगवन्तं पुच्छि, B 98
तं सब्बं पाकटं कत्वा दस्सेतुकामो 'आनन्दजाते' ति आदिका वीसति वत्थुगाथायो वत्वा अभासि। तं सब्बम्पि नालकसुत्तं ति वुच्चती" ति।

१. सुत्तनिपात-ट्ठ-१-१-पिट्ठे। २. पटिसं-ट्ठ-१-८-पिट्ठे।
३. खु० १-४२९ पिट्ठे। ४. खु० १-३८५ पिट्ठे।
५. सुत्तनिपात-ट्ठ-२-२०२ पिट्ठे।

तस्मा नालकसुत्तस्स वत्थुगाथायो नालकसुत्तग्गहणेनेव सङ्गहितं ति पारायनिकवग्गस्स वत्थुगाथायो इध सुद्धिकगाथा ति गहेतब्बं। तत्थेव पनस्स पारायनियवग्गे अजितमाणवकादीनं सोळसन्नं ब्राह्मणानं पुच्छागाथा भगवतो विसज्जन गाथा च इध सुद्धिकगाथा ति एवम्पि वत्तुं युज्जति। तापि हि पाळियं सुत्तनामेन अवत्वा "अजितमाणवकपुच्छा तिस्समेत्तय्यमाणवकपुच्छा" ति आदिना[1] आगतत्ता चुण्णियगन्थेहि अमिस्सत्ता च नोसुत्तनामिका सुद्धिकगाथा नामा ति वत्तुं वट्टति।

इदानि उदानं सरूपतो ववत्थपेन्तो आह **"सोमनस्सञाणमयिकगाथापटिसंयुत्ता"** ति आदि। केनट्ठेन[2] पनेतं **"उदानं"** ति वुच्चति? उदाननट्ठेन। किमिदं उदानं नाम? पीतिवेग समुट्ठापितो उदाहारो। यथा हि यं तेलादि मिनितब्बवत्थु मानं गहेतुं न सक्कोति, विस्सन्दित्वा गच्छति, तं "अवसेको" ति वुच्चति, यं च जलं तळाकं गहेतुं न सक्कोति, अज्झोत्थरित्वा गच्छति, तं "महोघो" ति वुच्चति, एवमेव यं पीतिवेगसमुट्ठापितं वितक्कविप्फारं हदयं संधारेतुं न सक्कोति, सो अधिको हुत्वा अन्तो असण्ठहित्वा बहि वचीद्वारेन निक्खन्तो पटिग्गाहकनिरपेक्खो उदाहारविसेसो **"उदानं"** ति वुच्चति। धम्मसंवेगवसेनपि अयमाकारो लब्भतेव। तयिदं कत्थचि गाथाबन्धवसेन कत्थचि वाक्यवसेन पवत्तं। तथा हि—

"तेन खो पन समयेन भगवा भिक्खू निब्बानपटिसंयुत्ताय धम्मिया कथाय सन्दस्सेति समादपेति समुत्तेजेति सम्पहंसेति। ते च भिक्खू अट्ठिं कत्वा मनसि कत्वा सब्बं चेतसा समन्नाहरित्वा ओहितसोता धम्मं सुणन्ति। अथ खो भगवा एतमत्थं
B 99 विदित्वा तायं वेलायं इमं उदानं उदानेसि 'अत्थि भिक्खवे तदायतनं, यत्थ नेव पथवी न आपो' ति"[3]—

आदीसु सोमनस्सञाणसमुट्ठितवाक्यवसेन पवत्तं।

ननु च उदानं नाम पीतिसोमनस्ससमुट्ठापितो धम्मसंवेगसमुट्ठापितो वा धम्मपटिग्गाहकनिरपेक्खो उदाहारो तथा चेव सब्बत्थ आगतं, इध कस्मा भगवा उदानेन्तो भिक्खू आमन्तेसी ति? तेसं भिक्खूनं सञ्ञापनत्थं। निब्बानपटिसंयुत्तञ्हि भगवा तेसं भिक्खूनं धम्मं देसेत्वा निब्बानगुणानुस्सरणेन उप्पन्नपीतिसोमनस्सेन उदानं उदानेन्तो "इध निब्बानवज्जो सब्बो सभावधम्मो पच्चयायतवुत्तिकोव उपलब्भति, न पच्चयनिरपेक्खो, अयं पन निब्बानधम्मो कथमप्पच्चयो उपलब्भती" ति तेसं भिक्खूनं चेतोपरिवितक्कमञ्ञाय तेसं ञापेतुकामो "अत्थि भिक्खवे तदायतनं" ति[4] आदिमाह। न एकन्ततो ते पटिग्गाहके कत्वा ति वेदितब्बं।

"सचे भायथ दुक्खस्स, सचे वो दुक्खमप्पियं।
माकत्थ पापकं कम्मं, आवि वा यदि वा रहो" ति[5]—

एवमादिकं पन धम्मसंवेगवसप्पवत्तं उदानं ति वेदितब्बं।

---

१. खु० १-४३४-पिट्ठे। २. उदान-ट्ठ २-पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।
३. खु० १-१७७ पिट्ठे उदाने। ४. खु० १-१७७ पिट्ठे। ५. खु १-१३७ पिट्ठे।

"सुखकामानि भूतानि, यो दण्डेन विहिंसति।
अत्तनो सुखमेसानो, पेच्च सो न लभते सुखं" ति[1]—

इदम्पि धम्मसंवेगवसप्पवत्तं उदानं ति वदन्ति। तथा हि एकस्मिं समये सम्बहुला गोपालका अन्तरा च सावत्थिं अन्तरा च जेतवनं अहिं दण्डेहि हनन्ति। तेन च समयेन भगवा सावत्थिं पिण्डाय गच्छन्तो अन्तरामग्गे ते दारके अहिं दण्डेन हनन्ते दिस्वा "कस्मा कुमारका इमं अहिं दण्डेन हनथा" ति पुच्छित्वा "डंसभयेन भन्ते" ति च वुत्ते "इमे 'अत्तनो सुखं करिस्सामा' ति इमं पहरन्ता निब्बत्तट्ठाने दुक्खं अनुभविस्सन्ति, अहो अविज्जाय निकतिकोसल्लं" ति धम्मसंवेगं उप्पादेसि। तेनेव च धम्मसंवेगेन इमं उदानं उदानेसि। एवमेतं कत्थचि गाथाबन्धवसेन कत्थचि वाक्यवसेन कत्थचि सोमनस्सवसेन कत्थचि धम्मसंवेगवसेन पवत्तं ति वेदितब्बं। तस्मा अट्ठकथायं B 100
"सोमनस्सञाणमयिकगाथापटिसंयुत्तानी" ति यं उदानलक्खणं वुत्तं, तं येभुय्यवसेन वुत्तं ति गहेतब्बं। येभुय्येन हि उदानं गाथाबन्धवसेन भासितं पीतिसोमनस्ससमुट्ठापितञ्च।

तयिदं सब्बञ्ञुबुद्धभासितं पच्चेकबुद्धभासितं सावकभासितं ति तिविधं होति। तत्थ पच्चेकबुद्धभासितं—

"सब्बेसु भूतेसु निधायदण्डं
अविहेठयं अञ्ञतरम्पि तेसं" ति—

आदिना **खग्गविसाणसुत्ते**[2] आगतमेव। सावकभासितानिपि—

"सब्बो रागो पहीनो मे,
सब्बो दोसो समूहतो।
सब्बो मे विहतो मोहो,
सीतिभूतोस्मि निब्बुतो" ति—

आदिना **थेरगाथासु**[3],

"कायेन संवुता आसिं, वाचाय उद चेतसा।
समूलं तण्हमब्भुय्ह, सीतिभूताम्हि निब्बुता" ति—

थेरिगाथासु[4] च आगतानि। अञ्ञानिपि सक्कादीहि देवेहि भासितानि "अहो दानि परमदानं कस्सपे सुपतिट्ठितं" ति आदीनि[5], सोणदण्ड ब्राह्मणादीहि मनुस्सेहि च भासितानि 'नमो तस्स भगवतो" ति आदीनि[6] तिस्सो सङ्गीतियो आरुळ्हानि उदानानि सन्ति एव, न तानि इध अधिप्पेतानि। यानि पन सम्मासम्बुद्धेन सामं

१. खु० १-३३, ८९ पिट्ठेसु। २. खु० १-२८४ पिट्ठे।
३. खु० २-२३७ पिट्ठे। ४. खु० २-३७९ पिट्ठे।
५. खु० १-१११ पिट्ठे। ६. दी० २-२३०, म० १-२३५ पिट्ठेसु।

आहच्चभासितानि जिनवचनभूतानि, तानेव च धम्मसङ्गाहकेहि "उदानं" ति सङ्गीतं। एतानियेव च सन्धाय भगवतो परियत्तिधम्मं नवविधा विभजित्वा उद्दिसन्तेन उदानं ति वुत्तं।

या पन "अनेकजातिसंसारं" ति आदि गाथा भगवता बोधिया मूले उदानवसेन पवत्तिता अनेकसतसहस्सानं सम्मासम्बुद्धानं उदानभूता च, ता अपरभागे धम्मभण्डा-
B 101 गारिकस्स भगवता देसितत्ता धम्मसङ्गाहकेहि उदानपाळियं सङ्गहं अनारोपेत्वा धम्मपदे सङ्गहिता। यञ्च "अञ्ञासि वत भो कोण्डञ्ञो" ति उदानवचनं दससहस्सिलोकधातुया देवमनुस्सानं पवेदनसमत्थनिग्घोसविप्फारं भगवता भसितं, तदपि पठमबोधियं सब्बेसं एव भिक्खूनं सम्मापटिपत्तिपच्चवेक्खणहेतुकं "आराधयिंसु वत मं भिक्खू एकं समयं" ति आदिवचनं[1] विय धम्मचक्कप्पवत्तनसुत्तदेसनापरियोसाने अत्तना अधिगतधम्मेकदेसस्स यथादेसितस्स अरियमग्गस्स सावकेसु सब्बपठमं थेरेन अधिगतत्ता अत्तनो परिस्समस्स सफलभावपच्चवेक्खणहेतुकं पीतिसोमनस्सजनिकं उदाहारमत्तं, न "यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा" ति आदिवचनं[2] विय पवत्तिया निवत्तिया वा पकासनं ति न धम्मसङ्गाहकेहि उदानपाळियं सङ्गीतं ति दट्ठब्बं।

उदानपाळियञ्च बोधिवग्गादीसु अट्ठसु वग्गेसु दस दस कत्वा असीतियेव सुत्तन्ता सङ्गीता, ततोयेव च **उदानट्ठकथायं**[3] **आचरियधम्मपालत्थेरेन** वुत्तं—

"असीति एव सुत्तन्ता, वग्गा अट्ठ समासतो।
गाथा च पञ्चनवुति, उदानस्स पकासिता॥
अड्ढूननवमत्ता[4] च, भाणवारा पमाणतो।
एकाधिका तथासीति, उदानस्सानुसन्धयो॥
एकवीससहस्सानि, सतमेव विचक्खणो।
पदानेकानुदानस्स, गणितानि विनिद्दिसे॥

गाथापादतो पन—

अट्ठसहस्समत्तानि, चत्तारेव सतानि च।
पदानेतानुदानस्स, तेवीसति च निद्दिसे॥
अक्खरानं सहस्सानि, सट्ठि सत्त सतानि च।
तीणि द्वासीति च तथा, उदानस्स पवेदिता" ति॥

इध पन "द्वासीति सुत्तन्ता" ति वुत्तं, तं न समेति, तस्मा "असीति सुत्तन्ता" ति पाठेन भवितब्बं।

B 102 वुत्तं हेतं भगवता "वुत्तमरहताति मे सुतं। एकधम्मं भिक्खवे पजहथ, अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। कतम एकधम्मं? लोभं भिक्खवे एकधम्मं पजहथ, अहं वो

१. म० १-१७५ पिट्ठे।
२. वि० ३-२, खु० १-७८ पिट्ठेसु।
३. उदान-ट्ठ-४ पिट्ठे।
४. अड्ढुनवममत्ता (सी० स्या०)

पाटिभोगो अनागामिताया" ति एवमादिना एककदुकतिकचतुक्कवसेन इतिवुत्तकपाळियं[1] सङ्गहमारोपितानि द्वादसुत्तरसतसुत्तन्तानि इतिवुत्तकं नामा ति दस्सेन्तो आह "वुत्तञ्हेतं" ति आदि। **दसुत्तरसतसुत्तन्ता** ति एत्थापि "द्वादसुत्तरसतसुत्तन्ता" ति पाठेन भवितब्बं। तथा हि एककनिपाते ताव सत्तवीसति सुत्तानि, दुकनिपाते द्वावीसति, तिकनिपाते पञ्ञास, चतुक्कनिपाते तेरसाति द्वादसुत्तरसतसुत्तन्तानेव इतिवुत्तकपाळियं आगतानि। ततोयेव च पाळियं—

"लोभो दोसो च मोहो च, कोधो मक्खेन पञ्चमं।
मानो सब्बं पुन मानो, लोभो दोसेन तेरस॥
मोहो कोधो पुन मक्खो, नीवरणा तण्हाय पञ्चमं।
द्वे सेक्खभेदा सामग्गी, पदुट्ठनिरयेन तेरस॥
पसन्ना एकमाभायि, पुग्गलं अतीतेन पञ्चमं।
एवञ्चे ओपधिकं पुञ्ञं, सत्तवीस पकासिता" ति॥

एवमादिना उदानगाथाहि द्वादसुत्तरसतसुत्तानि गणेत्वा दस्सितानि। तेनेव च **अट्ठकथायम्पि**[2]—

"सुत्ततो एककनिपाते ताव सत्तवीसति सुत्तानि, दुकनिपाते द्वावीसति, तिकनिपाते पञ्ञास, चतुक्कनिपाते तेरसा ति द्वादसाधिकसतसुत्तसङ्गहं" ति—वुत्तं। कामञ्चेत्थ अप्पकं ऊनमधिकं वा गणनूपगं न होती ति कत्वा "द्वासीति खन्धकवत्तानी" ति वत्तब्बे "असीति खन्धकवत्तानी" ति वुत्तवचनं विय "द्वादसुत्तरसतसुत्तन्ता" ति वत्तब्बे "दसुत्तरसतसुत्तन्ता" ति वुत्तं ति पि सक्का वत्तुं, तथापि B 103
ईदिसे ठाने पमाणं दस्सेन्तेन याथावतो व नियमेत्वा दस्सेतब्बं ति "द्वादसुत्तरसतसुत्तन्ता" इच्चेव पाठेन भवितब्बं।

जातं भूतं पुरावुत्थं भगवतो पुब्बचरितं कायति कथेति पकासेती ति **जातकं**।

"चत्तारोमे भिक्खवे अच्छरिया अब्भुता धम्मा आनन्दे। कतमे चत्तारो? सचे भिक्खवे भिक्खुपरिसा आनन्दं दस्सनाय उपसङ्कमति, दस्सनेन पि सा अत्तमना होति। तत्थ चे आनन्दो धम्मं भासति, भासितेन पि सा अत्तमना होति, अतित्ताव भिक्खवे भिक्खुपरिसा होति, अथ आनन्दो तुण्ही भवति। सचे भिक्खुनीपरिसा....पे०.... उपासकपरिसा....पे०....उपासिका परिसा आनन्दं दस्सनाय उपसङ्कमति, दस्सनेन पि सा अत्तमना होति। तत्थ चे आनन्दो धम्मं भासति, भासितेन पि सा अत्तमना होति, अतित्ताव भिक्खवे उपासिकापरिसा होति, अथ आनन्दो तुण्ही भवति। इमे खो भिक्खवे चत्तारो अच्छरिया अब्भुता धम्मा आनन्दे"[3] ति एवमादिनयप्पवत्ता सब्बे पि अच्छरियअब्भुतधम्मपटिसंयुत्ता सुत्तन्ता **अब्भुतधम्मं** नामा ति दस्सेन्तो आह "**चत्तारोमे भिक्खवे**" ति आदि।

---

१. खु० १-१९५ पिट्ठे। २. इतिवुत्तक-ट्ठ-२ पिट्ठे। ३. अं० १-४४८ पिट्ठे।

चूळवेदल्लादोसु[1] विसाखेन नाम उपासकेन पुट्ठाय धम्मदिन्नाय नाम भिक्खुनिया भासितं सुत्तं **चूळवेदल्लं** ति वेदितब्बं। **महावेदल्लं**[2] पन महाकोट्ठिकत्थेरेन पुच्छितेन आयस्मता सारिपुत्तत्थेरेन भासितं। **सम्मादिट्ठिसुत्तम्पि**[3] भिक्खूहि पुट्ठेन तेनेवायस्मता सारिपुत्तत्थेरेन भासितं। एतानि मज्झिमनिकायपरियापन्नानि। **सक्कपञ्हं**[4] पन सक्केन पुट्ठो भगवा अभासि, तञ्च दीघनिकायपरियापन्नं ति वेदितब्बं। **महापुण्णमसुत्तम्पि**[5] तदहुपोसथे पन्नरसे पुण्णमाय रत्तिया अञ्ञतरेन भिक्खुना पुट्ठेन भगवता भासितं, तं पन मज्झिमनिकायपरियापन्नं ति वेदितब्बं। **वेदं** ति ञाणं। **तुट्ठिं** ति यथाभासितधम्मदेसनं विदित्वा "साधु अय्ये, साधावुसो" ति आदिना अब्भनुमोदनवसप्पवत्तं पीतिसोमनस्सं। **लद्धा लद्धा** ति लभित्वा लभित्वा, पुनप्पुनं लभित्वा ति वुत्तं होति।

B 104 एवं अङ्गवसेन सकलम्पि बुद्धवचनं विभजित्वा इदानि धम्मक्खन्धवसेन विभजित्वा कथेतुकामो आह "कथं **धम्मक्खन्धवसेना**" ति आदि। तत्थ **धम्मक्खन्धवसेना** ति धम्मरासिवसेन। द्वासीति सहस्सानि बुद्धतो गण्हिं, द्वे सहस्सानि भिक्खुतो गण्हिं ति सम्बन्धो। तत्थ **बुद्धतो गण्हिं** ति सम्मासम्बुद्धतो उग्गण्हिं, द्वेसहस्साधिकानि असीति धम्मक्खन्धसहस्सानि सत्थु सन्तिका अधिगण्हिं ति अत्थो। **द्वे सहस्सानि भिक्खुतो** ति द्वे धम्मक्खन्धसहस्सानि भिक्खुतो उग्गण्हिं, धम्मसेनापति आदीनं भिक्खूनं सन्तिका अधिगण्हिं। सारिपुत्तत्थेरादीहि भासितानं सम्मादिट्ठिसुत्तन्तादीनं वसेन हि "द्वे सहस्सानि भिक्खुतो" ति वुत्तं। **चतुरासीति सहस्सानी** ति तदुभयं समोधानेत्वा चतुसहस्साधिकानि असीति सहस्सानि। **ये मे धम्मा पवत्तिनो** ति ये धम्मा मम पवत्तिनो पवत्तमाना पगुणा वाचुग्गता जिव्हग्गे परिवत्तन्ति, ते धम्मा चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानीति वुत्तं होति। केचि पन "ये इमे" ति पदच्छेदं कत्वा "ये इमे धम्मा बुद्धस्स भगवतो भिक्खूनञ्च पवत्तिनो, तेहि पवत्तिता, तेस्वाहं द्वासीति सहस्सानि बुद्धतो गण्हिं, द्वे सहस्सानि भिक्खुतो ति एवं चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानी" ति एवमेत्थ सम्बन्धं वदन्ति।

एत्थ च **सुभसुत्तं**[6] **गोपकमोग्गल्लानसुत्तञ्च**[7] परिनिब्बुते भगवति आनन्दत्थेरेन वुत्तत्ता चतुरासीतिधम्मक्खन्धसहस्सेसु अन्तोगधं होति, न होतीति? तत्थ **पटिसम्भिदागण्ठिपदे** ताव इदं वुत्तं "सयं वुत्तधम्मक्खन्धानं भिक्खुतो गहितेयेव सङ्गहेत्वा एवमाहाति दट्ठब्बं" ति। भगवता पन दिन्ननये ठत्वा भासितत्ता सयं वुत्तधम्मक्खन्धानम्पि "बुद्धतो गण्हिं" ति एत्थ सङ्गहं कत्वा वुत्तं ति एवमेत्थ वत्तुं युत्ततरं विय दिस्सति। भगवतायेव हि दिन्ननये ठत्वा सावका धम्मं देसेन्ति। तेनेव हि ततिय-

१. म० १-३७३ पिट्ठे। २. म० १-३६५ पिट्ठे।
३. म० १-५७ पिट्ठे। ४. दी० २-२११ पिट्ठे।
५. म० ३-६६ पिट्ठे। ६. दी० १-१८८ पिट्ठे।
७. म० ३-५८ पिट्ठे।

सङ्गीतियञ्च मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरेन भासितम्पि कथावत्थुप्पकरणं बुद्धभासितं नाम जातं, ततोयेव च अत्तना भासितम्पि सुभसुत्तादि सङ्गीतिं आरोपेन्तेन आयस्मता आनन्दत्थेरेन "एवं मे सुतं" ति वुत्तं।

एवं परिदीपितधम्मक्खन्धवसेना ति गोपकमोग्गल्लानेन ब्राह्मणेन "त्वं बहुस्सुतोति बुद्धसासने पाकटो, कित्तका धम्मा ते सत्थारा भासिता, तया धारिता"ति पुच्छिते तस्स पटिवचनं देन्तेन आयस्मता आनन्दत्थेरेन एवं "द्वासीति बुद्धतो गण्हिं"ति B 105
आदिना परिदीपितधम्मक्खन्धानं वसेन। **एकानुसन्धिकं सुत्तं** सतिपट्ठानादि। सतिपट्ठानसुत्तञ्हि "एकायनो अयं भिक्खवे मग्गो सत्तानं विसुद्धिया"ति आदिना[1] चत्तारो सतिपट्ठाने आरभित्वा तेसंयेव विभागदस्सनवसेन पवत्तत्ता "एकानुसन्धिकं"ति वुच्चति। "**अनेकानुसन्धिकं**" ति नानानुसन्धिकं परिनिब्बानसुत्तादि। परिनिब्बानसुत्तञ्हि नानाठानेसु नानाधम्मदेसनानं वसेन पवत्तत्ता "अनेकानुसन्धिकं" ति वुच्चति। **गाथाबन्धेसुपञ्हपुच्छनं** ति—

"कति छिन्दे कति जहे, कति चुत्तरि भावये।
कति सङ्गातिगो भिक्खु, 'ओघतिण्णो' ति वुच्चती'ति[2]—

एवमादिनयप्पवत्तं पञ्हपुच्छनं एको धम्मक्खन्धो ति अत्थो।

"पञ्च छिन्दे पञ्च जहे, पञ्च चुत्तरि भावये।
पञ्च सङ्गातिगो भिक्खु, 'ओघतिण्णो'ति वुच्चती' ति—

एवमादिनयप्पवत्तं विसज्जनं ति वेदितब्बं। **तिकदुकभाजनं** निक्खेपकण्डअट्ठकथाकण्डवसेन वेदितब्बं। तस्मा "कुसला धम्मा, अकुसला धम्मा, अब्याकता धम्मा, सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा, दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा, अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा' ति एवमादीसु तिकेस कुसलत्तिकस्स विभजनवसेन यं वुत्तं निक्खेपकण्डे[3]—

"कतमे धम्मा कुसला। तीणि कुसलमूलानि अलोभो अदोसो अमोहो, तं सम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो सञ्ञाक्खन्धो सङ्खारक्खन्धो विञ्ञाणक्खन्धो, तं समुट्ठानं कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं इमे धम्मा कुसला।

कतमे धम्मा अकुसला। तीणि अकुसलमूलानि लोभो दोसो मोहो, तदेकट्ठा च किलेसा, तं सम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो…पे०…मनोकम्मं। इमे धम्मा अकुसला।

कतमे धम्मा अब्याकता। कुसलाकुसलानं धम्मानं विपाका कामावचरा रूपावचरा अरूपावचरा अपरियापन्ना वेदनाक्खन्धो…पे०…विञ्ञाणक्खन्धो, ये च B 106

---

१. दी० २-२३१ पिट्ठे।　　२. सं० १-३ पिट्ठे।
३. अभि० १-२०५ पिट्ठे।

धम्मा किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका सब्बञ्च रूपं असङ्खता च धातु। इमे धम्मा अब्याकता" ति। अयमेको धम्मक्खन्धो। एवं सेसत्तिकानम्पि एकेकस्स तिकस्स विभजनं एकेको धम्मक्खन्धो ति वेदितब्बं।

तथा "हेतू धम्मा" ति एवमादिकेसु दुकेसु एकेकस्स दुकस्स विभजनवसेन यं वुत्तं।

"कतमे धम्मा हेतू। तयो कुसला हेतू, तयो अकुसला हेतू, तयो अब्याकता हेतू" ति[१]—आदि, तत्थापि एकेकस्स दुकस्स विभजनं एकेको धम्मक्खन्धो। पुन अट्ठकथाकण्डे[२]—

"कतमे धम्मा कुसला। चतूसु भूमीसु कुसलं। इमे धम्मा कुसला। कतमे धम्मा अकुसला। द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा। इमे धम्मा अकुसला। कतने धम्मा अब्याकता। चतूसु भूमीसु विपाको तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं रूपञ्च निब्बानञ्च। इमे धम्मा अब्याकता" ति—

एवमादिना कुसलत्तिकादिविभजनवसेन पवत्तेसु तिकभाजनेसु एकेकस्स तिकस्स भाजनं एकेको धम्मक्खन्धो। तथा—

"कतमे धम्मा हेतू। तयो कुसला हेतु, तयो अकुसला हेतू, तयो अब्याकता हेतू" ति[३]—

आदिनयप्पवत्तेसु दुकभाजनेसु एकमेकं दुकभाजनं एकेको धम्मक्खन्धो ति एवमेत्थ तिकदुकभाजनवसेन धम्मक्खन्धविभागो वेदितब्बो।

एकमेकञ्च चित्तवारभाजनं ति एत्थ पन—

"यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा पे०....तस्मिं समये फस्सो होति....पे०....अविक्खेपो होती"ति—

B 107 एवमादिनयप्पवत्ते चित्तुप्पादकण्डे एकमेकं चित्तवारभाजनं एकेको धम्मक्खन्धोति गहेतब्बं। **एको धम्मक्खन्धो** ति एत्थ "एकेकतिकदुकभाजनं एकमेकं चित्तवार-भाजनं"ति वुत्तत्ता एकेको धम्मक्खन्धो ति अत्थो वेदितब्बो। "एकेको"ति अवुत्तेपि हि अयमत्थो अत्थतो विञ्ञायमानोव होतीति "एको धम्मक्खन्धो"ति वुत्तं। **अत्थि वत्थूति** आदीसु **वत्थु** नाम सुदिन्नकण्डादि। **मातिका** ति "योपन भिक्खु भिक्खूनं सिक्खासाजीवसमापन्नो'ति आदिना[४] तस्मिं तस्मिं अज्झाचारे पञ्ञत्तसिक्खापदं। **पदभाजनीयं** ति तस्स तस्स सिक्खापदस्स "यो पना ति यो यादिसो"ति आदिनयप्पवत्तं[५]

---

१. अभि० १-२१४ पिट्ठे। २. अभि० १-२६६ पिट्ठे। ३. अभि० १-२७४ पिट्ठे।
४. वि० १-२८ पिट्ठे। ५. वि० १-२८ पिट्ठादीसु।

विभजनं। **अन्तरापत्ती** ति "पटिलातं उक्खिपति, आपत्ति दुक्कटस्सा" ति[१] एवमादिना सिक्खापदन्तरेसु पञ्ञत्ता अपत्ति। **अनापत्ती** ति "अनापत्ति अजानन्तस्स असादियन्तस्स उम्मत्तकस्स खित्तचित्तस्स वेदनाट्टस्स आदिकम्मिकस्सा" ति आदिनयप्पवत्तो[२] अनापत्तिवारो। **तिकच्छेदो** ति "दसाहातिक्कन्ते अतिक्कन्तसञ्ञी निस्सग्गियं पाचित्तियं, दसाहातिक्कन्ते वेमतिको निस्सग्गियं पाचित्तियं, दसाहातिक्कन्ते अनतिक्कन्तसञ्ञी निस्सग्गियं पाचित्तियं" ति[३] एवमादिनयप्पवत्तो तिकपाचित्तिय-तिकदुक्कटादिभेदो तिकपरिच्छेदो।

इदानि **एवमेतं अभेदतो रसवसेन एकविधं** ति आदिना "अयं धम्मो, अयं विनयो....पे०....इमानि चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानी" ति बुद्धवचनं धम्मविनयादि-भेदेन ववत्थपेत्वा सङ्गायन्तेन महाकस्सपपमुखेन वसीगणेन अनेकच्छरियपातुभावपटि-मण्डिताय सङ्गीतिया इमस्स पिटकस्स विनयभावो मज्झिमबुद्धवचनादिभावो च ववत्थापितो ति दस्सेति। न केवलं इममेविमस्स यथावुत्तप्पभेदं ववत्थपेत्वा सङ्गीतं, अथ खो अञ्ञम्पी ति दस्सेन्तो आह "**न केवलञ्च इममेवा**" ति आदि। तत्थ **उद्दानसङ्गहो** पठमपाराजिकादीसु आगतानं विनीतवत्थुआदीनं सङ्खेपतो सङ्गहदस्सन-वसेन धम्मसङ्गाहकेहि कथिता—

"मक्कटी वज्जिपुत्ता च, गिही नग्गोच तित्थिया।
दारिकुप्पलवण्णा च, ब्यञ्जनेहिपरे दुवे" ति[४]—

आदिका गाथायो। सीलक्खन्धवग्गमूलपरियायवग्गादिवसेन सङ्गहो **वग्गसङ्गहो**। B 108
उत्तरिमनुस्सधम्मपेय्यालनीलचक्कपेय्यालादिववत्थापनवसेन **पेय्यालसङ्गहो**। अङ्गुत्तर-निकायादीसु **एककनिपातादिसङ्गहो**। संयुत्तनिकाये देवतासंयुत्तादिवसेन **संयुत्त-सङ्गहो**। मज्झिमनिकायादीसु मूलपण्णासकादिवसेन **पण्णासकसङ्गहो**।

अस्स बुद्धवचनस्स सङ्गीतिपरियोसाने साधुकारं ददमाना विया ति सम्बन्धो। **सङ्कम्पी** ति उद्धं उद्धं गच्छन्ती सुट्ठु कम्पि। **सम्पकम्पी** ति उद्धं अधो च गच्छन्ती सम्पकम्पि। **सम्पवेधी** ति चतूसु दिसासु गच्छन्ती सुट्ठु पवेधि। अच्छरं पहरितुं युत्तानि **अच्छरियानि**, पुप्फवस्सचेलुक्खेपादीनि। या पठममहासङ्गीति धम्मसङ्गाहकेहि महाकस्सपादीहि पञ्चहि सतेहि येन कता सङ्गीता, तेन पञ्चसतानि एतिस्सा अत्थीति "**पञ्चसता**" ति च, थेरेहेव कतत्ता थेरा महाकस्सपादयो एतिस्सा अत्थीति "थेरिका" ति च लोके वुच्चति, अयं पठममहासङ्गीति नामा ति सम्बन्धो।

एवं पठममहासङ्गीतिं दस्सेत्वा यदत्थं सा इध निदस्सिता, तं निगमनवसेन दस्सेन्तो "इमिस्सा" ति आदिमाह। आयस्मता उपालित्थेरेन वुत्तं ति 'तेन समयेना" ति आदि वक्खमानं सब्बं निदानवचनं वुत्तं। किमत्थं पनेत्थ धम्मविनयसङ्गहे

१. वि० २–१५४ पिट्ठे। २. वि० १-४१ पिट्ठादीसु।
३. वि० १-२९६ पिट्ठे। ४. वि० १-४८ पिट्ठे।

कथियमाने[1] निदानवचनं वुत्तं, ननु च भगवता भासितवचनस्सेव सङ्गहो कातब्बो ति ? वुच्चते—देसनाय ठितिअसम्मोससद्धेय्यभावसम्पादनत्थं। कालदेसदेसकपरिसापदेसेहि उपनिबन्धित्वा ठपिता ति देसना चिरट्ठितिता होति असम्मोसधम्मा सद्धेय्या च, देसकालकत्तुहेतुनिमित्तेहि उपनिबन्धो विय वोहारविनिच्छयो। तेनेव च आयस्मता महाकस्सपेन 'पठमपाराजिकं आवुसो उपालि कत्थ पञ्ञत्तं'' ति आदिना देसादिपुच्छासु कतासु तासं विसज्जनं करोन्तेन आयस्मता उपालित्थेरेन "तेन समयेना" ति आदिना पठमपाराजिकस्स निदानं भासितं।

अपि च सासनसम्पत्तिपकासनत्थं निदानवचनं। ञाणकरुणापरिग्गहितसब्ब-
B 109 किरियस्स हि भगवतो नत्थि निरत्थका पटिपत्ति अत्तहितत्था वा, तस्मा परेसंयेवत्थाय पवत्तसब्बकिरियस्स सम्मासम्बुद्धस्स सकलम्पि कायवचोमनोकम्मं यथापवत्तं वुच्चमानं दिट्ठधम्मिकसम्परायिकपरमत्थेहि यथारहं सत्तानं अनुसासनट्ठेन सासनं, न कब्बरचना। तयिदं सत्थुरचितं कालदेसदेसकपरिसापदेसेहि सद्धिं तत्थ तत्थ निदानवचनेहि यथारहं पकासीयति।

अपि च सत्थुनो पमाणभावप्पकासनेन सासनस्स पमाणभावदस्सनत्थं निदानवचनं, तञ्चस्स पमाणभावदस्सनं "बुद्धो भगवा" ति इमिना पदद्वयेन विभावितं ति वेदितब्बं। बुद्धो ति हि इमिना तथागतस्स अनञ्ञसाधारणपरिसुद्धञाणादिगुणविसेस-योगपरिदीपनेन, भगवा ति च इमिना रागदोसमोहादिसब्बकिलेसमलदुच्चरितादि-दोसप्पहानदीपनेन, ततो एव च सब्बसत्तुत्तमभावदीपनेन अयमत्थो सब्बथा पकासितो होती ति इदमेत्थ निदानवचनप्पयोजनस्स मुखमत्तनिदस्सनं।

तत्रायं आचरियपरम्परा ति तस्मिं जम्बुदीपे अयं आचरियानं परम्परा पवेणी पटिपाटि। उपालि दासको ति आदीसु उपालित्थेरो पाकटोयेव, दासकत्थेरादयो पन एवं वेदितब्बा। वेसालियं किर एको दासको नाम ब्राह्मणमाणवो तिण्णं अन्तेवासिक-सभानं जेट्ठन्तेवासिको हुत्वा आचरियस्स सन्तिके सिप्पं उग्गण्हन्तो द्वादसवस्सिकोयेव तिण्णं वेदानं पारगू आहोसि। सो एकदिवसं अन्तेवासिकपरिवुतो धम्मविनयं सज्झायित्वा वालिकारामे निवसन्तं आयस्मन्तं उपालित्थेरं उपसङ्कमित्वा अत्तनो वेदेसु सब्बानि गण्ठिट्ठानानि थेरं पुच्छि। थेरो पि सब्बं ब्याकरित्वा सयम्पि एकं पञ्हं पुच्छन्तो नामं सन्धाय इमं पञ्हं पुच्छि "एकधम्मो खो माणव सब्बेसु धम्मेसु अनुपतति, सब्बेपि माणव धम्मा एकधम्मस्मिं ओसरन्ति, कतमो नु खो सो माणवक धम्मो" ति। सो पि खो माणवो पञ्हस्स अत्थं अजानन्तो "किमिदं भो पब्बजिता" ति आह। बुद्धमन्तोयं माणवा ति। सक्का पनायं भो मय्हम्पि दातुं ति। सक्का माणव अम्हेहि गहितपब्बज्जं गण्हन्तस्स दातुं ति। "साधु खो भो पब्बजिता" ति माणवो सम्पटिच्छित्वा अत्तनो
B 110 मातरं पितरं आचरियञ्च अनुजानापेत्वा तीहि अन्तेवासिकसतेहि सद्धिं थेरस्स सन्तिके पब्बजित्वा परिपुण्णवीसतिवस्सो उपसम्पदं लभित्वा अरहत्तं पापुणि। थेरो तं धुरं कत्वा खीणासवसहस्सस्स पिटकत्तयं वाचेसि।

---

१. करियमाने (स्या०)

सोणको पन दासकत्थेरस्स सद्धिविहारको। सो किर कासीसु एकस्स वाणिजकस्स पुत्तो हुत्वा पञ्चदसवस्सुद्देसिको एकं समयं मातापितूहि सद्धिं वाणिज्जाय गिरिब्बजं गतो। ततो पञ्चपञ्ञासदारकेहि सद्धिं वेळुवनं गन्त्वा तत्थ दासकत्थेरं सपरिसं दिस्वा अतिविय पसन्नो पब्बज्जं याचित्वा थेरेन मातापितरो अनुजानापेत्वा "पब्बजाही"ति वुत्तो मातापितुसन्तिकं गन्त्वा तमत्थं आरोचेत्वा तेसु अनिच्छन्तेसु छिन्नभत्तो हुत्वा मातापितरो अनुजानापेत्वा पञ्चपञ्ञासाय दारकेहि सद्धिं थेरस्स सन्तिके पब्बजित्वा लद्धूपसम्पदो अरहत्तं पापुणि। तं थेरो सकलं बुद्धवचनं उग्गण्हापेसि। सोपि गणपामोक्खो हुत्वा बहूनं धम्मविनयं वाचेसि।

सिग्गवत्थेरो पन सोणकत्थेरस्स सद्धिविहारिको अहोसि। सो किर पाटलिपुत्ते सिग्गवो नाम अमच्चपुत्तो हुत्वा तिण्णं उतूनं अनुच्छविकेसु तीसु पासादेसु सम्पत्तिं अनुभवमानो एकदिवसं अत्तनो सहायेन चण्डवज्जिना सेट्ठिपुत्तेन सद्धिं सपरिवारो कुक्कुटारामं गन्त्वा तत्थ सोणकत्थेरं निरोधसमापत्तिं समापज्जित्वा निसिन्नं दिस्वा वन्दित्वा अत्तना सद्धिं अनालपन्तं ञत्वा गन्त्वा तं कारणं भिक्खुसंघं पुच्छित्वा भिक्खूहि "समापत्तिं समापन्ना नालपन्ती"ति वुत्तो "कथं भन्ते समापत्तितो वुट्ठहन्ती"ति पुन पुच्छित्वा तेहि च भिक्खूहि "सत्थुनो चेव संघस्स च पक्कोसनाय यथापरिच्छिन्नकालतो आयुसङ्खया च वुट्ठहन्ती"ति वत्वा तस्स सपरिवारस्स उपनिस्सयं दिस्वा संघस्स वचनेन निरोधा वुट्ठापितं सोणकत्थेरं दिस्वा "कस्मा भन्ते मया सद्धिं नालपित्था"ति पुच्छित्वा थेरेन "भुञ्जितब्बकं कुमार भुञ्जिम्हा"ति वुत्ते "सक्का नु खो भन्ते अम्हेहि पि तं भोजेतुं" ति पुच्छित्वा "सक्का कुमार अम्हादिसे कत्वा भोजेतुं"ति वुत्ते तमत्थं मातापितूनं आरोचेत्वा तेहि अनुञ्ञातो अत्तनो सहायेन चण्डवज्जिना तेहि च पञ्चहि पुरिससतेहि सद्धिं सोणकत्थेरस्स सन्तिके पब्बजित्वा उपसम्पन्नो अहोसि। तत्थ
सिग्गवो च चण्डवज्जी च द्वे उपज्झायस्सेव सन्तिके धम्मविनयं परियापुणित्वा अपर- B 111
भागे छळभिञ्ञा अहेसुं।

तिस्सस्स पन मोग्गलिपुत्तस्स अनुपुब्बकथा परतो आवि भविस्सति। **विजिताविनो** ति विजितसब्बकिलेसपटिपक्खत्ता विजितवन्तो। **परम्पराया** ति पटिपाटिया, अनुक्कमेना ति वुत्तं होति। **जम्बुसिरिव्हये** ति जम्बुसदिसनामे, जम्बुनामके ति वुत्तं होति। महन्तेन हि जम्बुरुक्खेन अभिलक्खितत्ता दीपो पि "जम्बू" ति वुच्चति। **अच्छिज्जमानं** अविनस्समानं कत्वा।

विनयवंसं ति आदीहि तीहि विनयपाळियेव कथिता परियायवचनत्ता। **पकतञ्ञुतं** ति वेय्यत्तियं, पटुभावं ति वुत्तं होति। **धुरग्गाहो अहोसीति** पधानग्गाही अहोसि, सब्बेसं पामोक्खो हुत्वा गण्हीति वुत्तं होति। भिक्खूनं समुदायो समूहो **भिक्खुसमुदायो**, समणगणो ति अत्थो।

इति समन्तपासादिकाय विनयट्ठकथाय सारत्थदीपनियं
पठममहासङ्गीतिकथावण्णना समत्ता॥

दुतियसङ्गीतिकथावण्णना

"यदा निब्बायिंसू" ति सम्बन्धो। **जोतयित्वा च सब्बधी**ति तमेव सद्धम्मं सब्बत्थ पकासयित्वा। "जुतिमन्तो"ति वतब्बे गाथाबन्धवसेन "**जुतीमन्तो**"ति वुत्तं, पञ्ञाजोतिसम्पन्ना ति अत्थो, तेजवन्तो ति वा, महानुभावा ति वुत्तं होति। **निब्बायिंसू**ति अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बायिंसु। पहीनसब्बकिलेसत्ता नत्थि एतेसं कत्थचि आलयो तण्हा ति **अनालया**, वीतरागा ति वुत्तं होति।

वस्ससतपरिनिब्बुते भगवती ति वस्ससतं परिनिब्बुतस्स अस्सा ति वस्ससतपरिनिब्बुतो, भगवा, तस्मिं परिनिब्बानतो वस्ससते अतिक्कन्ते ति वुत्तं होति। **वेसालिका** ति वेसालीनिवासिनो। **वज्जिपुत्तका** ति वज्जिरट्ठे वेसालियं कुलानं पुत्ता। **कप्पति सिङ्गीलोणकप्पो** ति सिङ्गेन लोणं परिहरित्वा अलोणकपिण्डपातेन सद्धिं
B 112 भुञ्जितुं कप्पति, न सन्निधिं करोतीति अधिप्पायो। **कप्पति द्वङ्गुलकप्पो** ति द्वङ्गुलं अतिक्कन्ताय छायाय विकाले भोजनं भुञ्जितुं कप्पतीति अत्थो। **कप्पति गामन्तरकप्पो** ति "गामन्तरं गमिस्सामी"ति पवारितेन अनतिरित्तभोजनं भुञ्जितुं कप्पतीति अत्थो। **कप्पति आवासकप्पो** ति एकसीमायं नानासेनासनेसु विसुं विसुं उपोसथादीनि संघकम्मानि कातुं वट्टतीति अत्थो। **कप्पति अनुमतिकप्पो** ति "अनागतानं आगतकाले अनुमतिं गहेस्सामी"ति तेसु अनागतेसुयेव वग्गेन संघेन कम्मं कत्वा पच्छा अनुमतिं गहेतुं कप्पति, वग्गकम्मं न होती ति अधिप्पायो। **कप्पति आचिण्णकप्पो** ति आचरियुपज्झायेहि आचिण्णो कप्पती ति अत्थो। सो पन एकच्चो कप्पति धम्मिको, एकच्चो न कप्पति अधम्मिको ति वेदितब्बो। **कप्पति अमथितकप्पो** ति यं खीरं खीरभावं विजहितं दधिभावं असम्पत्तं, तं भुत्ताविना पवारितेन अनतिरित्तं भुञ्जितुं कप्पतीति अत्थो। **कप्पति जलोगिं[1] पातुं** ति एत्थ जलोगीति तरुणसुरा। यं मज्जसम्भारं एकतो कतं मज्जभावमसम्पत्तं, तं पातुं वट्टतीति अधिप्पायो। **जातरूपरजतं** ति सरसतो विकारं अनापज्जित्वा सब्बदा जातं रूपमेव होतीति जातं रूपमेतस्साति जातरूपं, सुवण्णं। धवलसभावताय राजतीति रजतं, रूपियं। **सुसुनागपुत्तो** ति सुसुनागस्स पुत्तो।

काकण्डकपुत्तो ति काकण्डकब्राह्मणस्स पुत्तो। **वज्जीसू** ति जनपदवचनत्ता बहुवचनं कतं। एकोपि हि जनपदो रुळ्हीसद्दत्ता बहुवचनेन वुच्चति। **येन वेसाली, तदवसरी** ति येन दिसाभागेन वेसाली अवसरितब्बा, यस्मिं वा पदेसे वेसाली, तदवसरि, तं पत्तो ति अत्थो। **महावने कूटागारसालायं** ति एत्थ **महावनं** नाम सयंजातमरोपिमं सपरिच्छेदं महन्तं वनं। कपिलवत्थुसामन्ता पन महावनं हिमवन्तेन सह एकाबद्धं अपरिच्छेदं हुत्वा महासमुद्दं आहच्च ठितं, इदं तादिसं न होतीति सपरिच्छेदं महन्तं वनं ति महावनं। **कूटागारसाला** पन महावनं निस्साय कते आरामे कूटागारं अन्तो कत्वा हंसवट्टकच्छन्नेन हंसमण्डलाकारेन कता।

---

१. जलोगि (सी०)।

तदहुपोसथे ति एत्थ **तदहू** ति तस्मिं अहनि, तस्मिं दिवसे ति अत्थो। उपवसन्ति एत्था ति **उपोसथो**, उपवसितब्बदिवसो। **उपवसन्तो** ति च सीलेन वा सब्बसो आहारस्स च अभुञ्जनसङ्खातेन अनसनेन वा खीरपानमधुपानादिमत्तेन वा उपेतो हुत्वा वसन्तीति B 113
अत्थो। सो पनेस दिवसो अट्ठमीचातुद्दसीपन्नरसीभेदेन तिविधो। कत्थचि पन पातिमोक्खेपि सीले पि उपवासे पि पञ्ञत्तियम्पि उपोसथसद्दो आगतो। तथा हेस "आयामावुसो कप्पिन उपोसथं गमिस्सामा"ति आदीसु पातिमोक्खुद्देसे आगतो। "एवं अट्ठङ्गसमन्नागतो खो विसाख उपोसथो उपवुत्तो" ति आदीसु[1] सीले। "सुद्धस्स वे सदा फेग्गु, सुद्धस्सुपोसथो सदा" ति आदीसु[2] उपवासे। "उपोसथो नाम नागराजा" ति आदीसु[3] पञ्ञत्तियञ्च आगतो। तत्थ उपेच्च वसितब्बो उपोसथो पातिमोक्खुद्देसो। उपेतेन समन्नागतेन हुत्वा वसितब्बतो सन्ताने वासेतब्बतो उपोसथो सीलं। असनादिसंयमादिं वा उपेच्च वसन्ती ति उपोसथो उपवासो। तथारूपे हत्थिअस्सविसेसे उपोसथो ति समञ्ञामत्ततो उपोसथो पञ्ञत्ति। इध पन "न भिक्खवे तदहुपोसथे सभिक्खुका आवासा"ति[4] आदीसु विय उपोसथदिवसो अधिप्पेतो, तस्मा तदहुपोसथेति तस्मिं उपोसथदिवसे ति अत्थो। **कंसपातिं** ति सुवण्णपातिं। **कहापणम्पी** ति आदीसु कहापणस्स समभागो **अड्ढो**। **पादो** चतुत्थभागो। मासकोयेव मासकरूपं। **सब्बं ताव वत्तब्बं** ति इमिना सत्तसतिकक्खन्धके[5] आगता सब्बापि पाळि इध आनेत्वा वत्तब्बा ति दस्सेति। सा कुतो वतब्बा ति आह "**याव इमाय पन विनय सङ्गीतिया**"ति आदि। सङ्गायितसदिसमेव सङ्गायिंसू ति सम्बन्धो।

पुब्बे कतं उपादाया ति पुब्बे कतं पठमसङ्गीतिमुपादाय। सा पनायं सङ्गीतीति सम्बन्धो। तेसू ति तेसु सङ्गीतिकारकेसु थेरेसु। **विस्सुता** ति गणपामोक्खताय विस्सुता सब्बत्थ पाकटा। तस्मिञ्हि सन्निपाते अट्ठेव गणपामोक्खा महाथेरा अहेसुं, तेसु च वासभगामी सुमनो ति द्वे थेरा अनुरुद्धत्थेरस्स सद्धिविहारिका, अवसेसा छ आनन्दत्थेरस्स। एते पन सब्बेपि अट्ठ महाथेरा भगवन्तं दिट्ठपुब्बा। इदानि ते थेरे सरूपतो दस्सेन्तो आह "**सब्बकामी चा**" ति आदि। **साणसम्भूतो** ति साणदेसवासी सम्भूतत्थेरो। दुतियो सङ्गहो ति सम्बन्धो। **पन्नभारा** ति पतितक्खन्धभारा। "भारा हवे-पञ्चक्खन्धा"ति[6] हि वुत्तं। **कतकिच्चा ति** चतूसु सच्चेसु चतूहि मग्गेहि कत्तब्बस्स परिञ्ञापहानसच्छिकिरियाभावनासङ्खातस्स सोळसविधस्सपि किच्चस्स परिनिट्ठितत्ता कतकिच्चा। B 114

अब्बुदं ति उपद्दवं वदन्ति चोरकम्मम्पि भगवतो वचनं थेनेत्वा अत्तनो वचनस्स दीपनतो। **गण्ठिपदे** पन "अब्बुदं गण्डो" ति वुत्तं। **इमं** ति[7] वक्खमान-

---

१. अं० ३, ८४ पिट्ठे। २. म० १, ४८ पिट्ठे।
३. दी० २, १४२, म० २१२, पिट्ठेसु। ४. वि० ३, १८७ पिट्ठे।
५. वि० ४, ४९१ पिट्ठे। ६. सं० २-२२ पिट्ठे।
७. इदं ति (सी० स्या०)।

निदस्सनं। सन्दिस्समाना मुखा **सम्मुखा**। **उपरि ब्रह्मलोकूपपत्तिया भावितमग्गं** ति उपरिब्रह्मलोके उपपत्तिया उप्पादितज्झानं। झानञ्हि तत्रूपपत्तिया उपायभावतो इध "मग्गो" ति वुत्तं। उपायो हि "मग्गो" ति वुच्चति। वचनत्थो पनेत्थ—तं तं उपपत्तिं मग्गति गवेसति जनेति निप्फादेतीति मग्गो ति एवं वेदितब्बो। अत्थतो चायं मग्गो नाम चेतना पि होति चेतनासम्पयुत्तधम्मा पि तदुभयम्पि। "निरयञ्चाहं सारिपुत्त जानामि निरयगामिञ्च मग्गं"ति[1] हि एत्थ चेतना मग्गो नाम।

"सद्धा हिरियं कुसलञ्च दानं,
धम्मा एते सप्पुरिसानुयाता।
एतं हि मग्गं दिवियं वदन्ति,
एतेन हि गच्छति देवलोकं"ति ॥[2]

एत्थ चेतनासम्पयुत्तधम्मा मग्गो नाम। "अयं भिक्खवे मग्गो अयं पटिपदा"ति **सङ्खारूपपत्तिसुत्तादीसु**[3] चेतना पि चेतनासम्पयुत्तधम्मा पि मग्गो नाम। इमस्मिं ठाने झानस्स अधिप्पेतत्ता चेतनासम्पयुत्तधम्मा गहेतब्बा।

मोग्गलिब्राह्मणस्सा ति लोकसम्मतस्स अपुत्तकस्स मोग्गलिनामब्राह्मणस्स। ननु च कथमेतं नाम वुत्तं "मोग्गलिब्राह्मणस्स गेहे पटिसन्धिं गहेस्सती"ति। किं उपरूपपत्तिया पटिलद्धसमापत्तीनम्पि कामावचरे उप्पत्ति होति? होती ति। सा च कताधिकारानं महापुञ्ञानं चेतोपणिधिवसेन होति, न सब्बेसं ति दट्ठब्बं। अथ महग्गतस्स गरुककम्मस्स विपाकं पटिबाहित्वा परित्तकम्मं कथमत्तनो विपाकस्स
B 115 ओकासं करोती ति? एत्थ च ताव तीसुपि **गण्ठपदेसु** इदं वुत्तं "निकन्तिबलेनेव झाना परिहायति, ततो परिहीनज्झाना निब्बत्तन्ती"ति। केचि पन "अनीवरणावत्थाय निकन्तिया झानस्स परिहानिं वीमंसित्वा गहेतब्बा"ति वत्वा एवमेत्थ कारणं वदन्ति "सति पि महग्गतकम्मुनो विपाकपटिबाहनसमत्थस्स परित्तकम्मस्सपि अभावे 'इज्झति भिक्खवे सीलवतो चेतोपणिधि विसुद्धत्ता'ति[4] वचनतो कामभवे चेतोपणिधि महग्गतकम्मस्स विपाकं पटिबाहित्वा परित्तकम्मुनो विपाकस्स ओकासं करोती"ति।

साधु सप्पुरिसा ति एत्थ **साधू** ति आयाचनत्थे निपातो, तं याचामा ति अत्थो। **हट्ठपहट्ठो** ति चित्तपीणनवसेन पुनप्पुनं सन्तुट्ठो। **उदग्गुदग्गो** ति सरीरविकारुप्पादनपीतिवसेन उदग्गुदग्गो। पीतिमा हि पुग्गलो काय चित्तानं उग्गतत्ता अब्भुगतत्ता "उदग्गो" ति वुच्चति। **साधू ति पटिस्सुणित्वा** ति "साधू" ति पटिवचनं दत्वा। **तीरेत्वा** ति निट्ठपेत्वा। **पुन पच्चागमिंसू** ति पुन आगमिंसु। तेन खो पन समयेना ति यस्मिं समये दुतियसङ्गीतिं अकंसु, तस्मिं समये ति अत्थो। **नवका** ति वुत्तमेवत्थं

१. म० १-१०६ पिट्ठे। २. अं० ३-६८, अभि० ४-२५५ पिट्ठेसु।
३. म. ३-१४१ पिट्ठे। ४. दी० ३-२१४, अं० ३-७१, सं० २-४९१ पिट्ठेसु।

विभावेतुं "दहरभिक्खू"ति वुत्तं। तं अधिकरणं न सम्पापुणिंसू ति तं वज्जिपुत्तकेहि उप्पादितं अधिकरणं विनिच्छिनितुं न सम्पापुणिंसु नागमिंसु। नो अहुवत्था ति सम्बन्धो। **इदं दण्डकम्मं** ति इदानि वत्तब्बं सन्धाय वुत्तं। यावतायुकं ठत्वा परिनिब्बुता ति सम्बन्धो, याव अत्तनो आयुपरिमाणं, ठत्वा परिनिब्बुता ति अत्थो।

किं पन कत्वा ते थेरा परिनिब्बुता ति आह "**दुतियं सङ्गहं कत्वा**" ति आदि। अनागते पि सद्धम्मवुड्ढिया हेतुं कत्वा परिनिब्बुता ति सम्बन्धो। इदानि "ते पि नाम एवं महानुभावा थेरा अनिच्चताय वसं गता, किमङ्गं पन अञ्ञे"ति संवेजेत्वा ओवदन्तो आह "**खीणासवा**" ति आदि। **अनिच्चतावसं** ति अनिच्चतावसत्तं, अनिच्चतायत्तभावं अनिच्चताधीनभावं ति वुत्तं होति। जम्मि लामकं **दुरभिसम्भवं** अनभिभवनीयं अतिक्कमितुं असक्कुणेय्यं अनिच्चतं एवं ञत्वा ति सम्बन्धो। केचि पन "दुरभिसम्भवं"ति एत्थ "पापुणितुं असक्कुणेय्यं" ति इममत्थं गहेत्वा "यं दुरभिसम्भवं निच्चं अमतं पदं, तं पत्तुं वायमे धीरो" ति सम्बन्धं वदन्ति। **सब्बाकारेना** ति B 116
सब्बप्पकारेन वत्तब्बं किञ्चिपि असेसेत्वा दुतियसङ्गीति संवण्णिता ति अधिप्पायो।

इति समन्तपासादिकाय विनयट्ठकथाय सारत्थदीपनियं
दुतियसङ्गीतिकथावण्णना समत्ता।

ततियसङ्गीतिकथा वण्णना

इमिस्सा पन सङ्गीतिया धम्मसङ्गाहकत्थेरेहि निक्कड्ढिता ते दससहस्सा वज्जिपुत्तका भिक्खू पक्खं परियेसमाना अत्तनो अत्तनो अनुरूपं दुब्बलपक्खं लभित्वा विसुं महासंघिकं आचरियकुलं नाम अकंसु, ततो भिज्जित्वा अपरानि द्वे आचरियकुलानि जातानि गोकुलिका च एकब्योहारिका[1] च। गोकुलिकनिकायतो भिज्जित्वा अपरानि द्वे आचरियकुलानि जातानि पण्णत्तिवादा च बाहुलिया च। बहुस्सुतिका ति पि तेसंयेव नामं, तेसंयेव अन्तरा चेतियवादा नाम अपरे आचरिवादा उप्पन्ना। एवं महासंघिकाचरियकुलतो दुतिये वस्ससते पञ्चाचरियकुलानि उप्पन्नानि, तानि महासंघिकेहि सद्धिं छ होन्ति।

तस्मियेव दुतिये वस्ससते थेरवादतो भिज्जित्वा द्वे आचरियवादा उप्पन्ना महिसासका[2] च वज्जिपुत्तका च। तत्थ वज्जिपुत्तकवादतो भिज्जित्वा अपरे चत्तारो आचरियवादा उप्पन्ना धम्मुत्तरिका भद्दयानिका छन्नागारिका समितिका ति[3]। पुन तस्मियेव दुतिये वस्ससते महिसासकवादतो भिज्जित्वा सब्बत्थिवादा धम्मगुत्तिका ति

---

१. एकब्बोहारिका (सी०) (२) महिंसासका (सी०)
३. सम्मितियाति (सी०) सम्मतियाति (स्या०)

द्वे आचरियवादा उप्पन्ना। पुन सब्बत्थिवादकुलतो भिज्जित्वा कस्सपिका नाम जाता, कस्सपिकेसुपि भिन्नेसु अपरे सङ्कन्तिका नाम जाता, सङ्कन्तिकेसु भिन्नेसु सुत्तवादा नाम जाता ति थेरवादतो भिज्जित्वा इमे एकादस आचरियवादा उप्पन्ना, ते थेरवादेन सद्धिं द्वादस होन्ति। इति इमे च द्वादस महासंघिकानञ्च छ आचारियवादा
B 117 ति सब्बे अट्ठारस आचरियवादा दुतिये वस्ससते उप्पन्ना। अट्ठारस निकाया ति पि अट्ठारसाचरियकुलानी ति पि एतेसंयेव नामं। एतेसु पन सत्तरस वादा भिन्नका, थेरवादोवेको असम्भिन्नको ति वेदितब्बो। वुत्तम्पि चेतं दीपवंसे[1]—

"निकड्ढिता पापभिक्खू, थेरेहि वज्जिपुत्तका।
अञ्ञं पक्खं लभित्वान, अधम्मवादी बहू जना॥

दससहस्सा समागन्त्वा, अकंसु धम्मसङ्गहं।
तस्मायं धम्मसङ्गीति, महासङ्गीति वुच्चति॥

महासङ्गीतिका भिक्खू, विलोमं अकंसु सासने।
भिन्दित्वा मूलसङ्गहं, अञ्ञं अकंसु सङ्गहं॥

अञ्ञत्र सङ्गहितं सुत्तं, अञ्ञत्र अकरिंसु ते।
अत्थं धम्मञ्च भिन्दिंसु, विनये निकायेसु च पञ्चसु॥

परियायदेसितञ्चापि, अथो निप्परियायदेसितं।
नीतत्थञ्चेव नेय्यत्थं, अजानित्वान भिक्खवो॥

अञ्ञं सन्धाय भणितं, अञ्ञं अत्थं ठपयिंसु ते।
ब्यञ्जनच्छायाय ते भिक्खू, बहुं अत्थं विनासयुं॥

छड्डेत्वानं एकदेसं, सुत्तं विनय गम्भीरं।
पतिरूपं सुत्तं विनयं, तञ्च अञ्ञं[2] करिंसु ते॥

परिवारं अत्थुद्धारं, अभिधम्मं छप्पकरणं।
पटिसम्भिदञ्च निद्देसं, एकदेसञ्च जातकं॥

एत्तकं विस्सज्जेत्वान, अञ्ञानि अकरिंसु ते॥

नामं लिङ्गं परिक्खारं, आकप्प करणानि च।
पकतिभावं विजहित्वा, तञ्च अञ्ञं अकंसु ते॥

पुब्बङ्गमा भिन्नवादा, महासङ्गीति कारका।
तेसञ्च अनुकारेन, भिन्नवादा बहू अहु॥

ततो अपरकालम्हि, तस्मिं भेदो अजायथ।
१८ गोकुलिका एक ब्योहारि, द्विधा भिज्जित्थ भिक्खवो॥

१. पञ्चमपरिच्छेदे आचरियवादे पस्सितब्बं।

२. तन्तिञ्च (स्या०)

गोकुलिकानं द्वे भेदा, अपरकालम्हि जायथ। B 118
बहुस्सुतिका च पञ्ञत्ति, द्विधा भिज्जित्थ भिक्खवो॥

चेतिया च पुनवादी, महासङ्गीतिभेदका।
पञ्च वादा इमे सब्बे, महासङ्गीतिमूलका॥

अत्थं धम्मञ्च भिन्दिंसु, एकदेसञ्च सङ्गहं।
गन्थञ्च एकदेसम्हि, छड्डेत्वा अञ्ञं अकंसु ते॥

नाम लिङ्गं परिक्खारं, आकप्पकरणानि च।
पकतिभावं विजहित्वा, तञ्च अञ्ञं अकंसु ते॥

विसुद्धत्थेरवादम्हि, पुन भेदो अजायथा।
महिसासका वज्जिपुत्तका, द्विधा भिज्जित्थ भिक्खवो॥

वज्जिपुत्तकवादम्हि, चतुधा भेदो अजायथ।
धम्मत्तुरिका भद्दयानिका, छन्नागारिका च समिति॥

महिसासकानं द्वे भेदा, अपरकालम्हि अजायथ।
सब्बत्थिवादा धम्मगुत्ता, द्विधा भिज्जित्थ भिक्खवो॥

सब्बत्थिवादानं कस्सपिका, सङ्कन्ति कस्सपिकेन च।
सङ्कन्तिकानं सुत्तवादी,[1] अनुपुब्बेन भिज्जथ॥

इमे एकादस वादा, पभिन्ना थेरवादतो।
अत्थं धम्मञ्च भिन्दिंसु, एकदेसञ्च सङ्गहं॥
गन्थञ्च एकदेसम्हि, छड्डेत्वा अञ्ञं अकंसु ते॥

नामं लिङ्गं परिक्खारं, आकप्पकरणानि च।
पकतिभावं विजहित्वा, तञ्च अञ्ञं अकंसु ते॥

सत्तरस भिन्नवादा, एकवादो अभिन्नको।
सब्बेवट्ठारस होन्ति, भिन्नवादेन ते सह॥
निग्रोधोव महारुक्खो, थेरवादानमुत्तमो॥
अनूनं अनधिकञ्च, केवलं जिनसासनं।
कण्टका[2] विय रुक्खम्हि, निब्बत्ता वादसेसका॥
पठमे वस्ससते नत्थि, दुतिये वस्ससतन्तरे॥ B 119
भिन्ना सत्तरस वादा, उप्पन्ना जिनसासने" ति॥

अपरापरं पन हेमवता राजगिरिका सिद्धत्थिका पुब्बसेलिया अपरसेलिया वाजिरिया ति[3] अञ्ञेपि छ आचरियवादा उप्पन्ना। पुरिमकानं पन अट्ठारसन्नं

१. सङ्कन्तिया सुत्तवादो (सी०) २. सन्तका (स्या०, अभि-ट्ठ ३-१०९ पिट्ठे पि)।
३. राजिरिया ति (स्या०)

आचरियवादानं वसेन पवत्तमाने सासने असोको धम्मराजा पटिलद्धसद्धो दिवसे दिवसे बुद्धपूजाय सतसहस्सं, धम्मपूजाय सतसहस्सं सङ्घपूजाय सतसहस्सं, अत्तनो आचरियस्स निग्रोधत्थेरस्स सतसहस्सं, चतूसु द्वारेसु भेसज्जत्थाय सतसहस्सं ति पञ्च सतसहस्सानि परिच्चजन्तो सासने उळारं लाभसक्कारं पवत्तेसि। तदा हतलाभ-सक्कारेहि तित्थियेहि उप्पादितं अनेकप्पकारं सासनमलं विसोधेत्वा मोग्गलिपुत्त-तिस्सत्थेरो तिपिटकपरियत्तिधरानं पभिन्नपटिसम्भिदानं भिक्खूनं सहस्समेकं गहेत्वा यथा महाकस्सपत्थेरो च यसत्थेरो च धम्मञ्च विनयञ्च सङ्गायिंसु, एवमेव सङ्गायन्तो ततियसङ्गीतिं अकासि। इदानि तं ततियसङ्गीतिं मूलतो पभुति वित्थारेत्वा दस्सेन्तो आह "**तिस्सोपि खो महाब्रह्मा ब्रह्मलोकतो चवित्वा मोग्गलिब्राह्मणस्स गेहे पटिसन्धिं अग्गहेसी**" ति आदि।

तत्थ **गेहे पटिसन्धिं अग्गहेसी** ति मोग्गलिब्राह्मणस्स गेहे ब्राह्मणिया कुच्छिम्हि पटिसन्धिं अग्गहेसी ति अत्थो। गेहस्स पन तन्निस्सयत्ता निस्सिते निस्सयवोहारवसेन "गेहे पटिसन्धिं अग्गहेसी" ति वुत्तं यथा "मञ्चा उक्कुट्ठिं करोन्ति, सब्बो गामो आगतो" ति। **सत्तवस्सानी** ति अच्चन्तसंयोगे उपयोगवचनं। **अतिच्छथा** ति अतिक्कमित्वा इच्छथ, इध भिक्खा न लब्भति, इतो अञ्ञत्थ गन्त्वा भिक्खं परियेसथा ति अधिप्पायो। "**भो पब्बजिता**" ति आदि ब्राह्मणो अत्तनो गेहे भिक्खा-लाभं अनिच्छन्तो आह। **पटियादितभत्ततो** ति सम्पादेत्वा ठपितभत्ततो। **तदुपियं** ति तदनुरूपं। **उपसमं दिस्वा** ति थेरस्स कायचित्तवूपसमं पुनप्पुनं दिस्वा, ञत्वा ति अत्थो। इरियापथवूपसमसन्दस्सनेन हि तन्निबन्धिनो चित्तस्स योनिसो पवत्ति-
B 120 उपसमो पि विञ्ञायति। **भिय्योसो मत्ताय पसीदित्वा** ति पुनप्पुनं विसेसतो अधिकतरं पसीदित्वा। **भत्तविस्सग्गकरणत्थाया** ति भत्तकिच्चकरणत्थाय। **अधिवासेत्वा** ति सम्पटिच्छित्वा।

सोळसवस्सुद्देसिको ति सोळसवस्सो ति उद्दिसितब्बो वोहरितब्बो ति सोळसव-स्सुद्देसो, सोयेव सोळसवस्सुद्देसिको। सोळसवस्सो ति वा उद्दिसितब्बतं अरहतीति सोळसवस्सुद्देसिको, सोळसवस्सानि वा उद्दिसितब्बानि अस्साति सोळसवस्सुद्देसिको; सोळसवस्सो ति उद्देसो वा अस्स अत्थी ति सोळसवस्सुद्देसिको, अत्थतो पन सोळसव-स्सिको ति वुत्तं होति। **तिण्णं वेदानं पारगू** ति इरुवेदयजुवेदसामवेदसङ्खातानं तिण्णं वेदानं पगुणकरणवसेन पारं गतो ति पारागू। पारगू ति चेत्थ निच्चसापेक्खताय समासादिकं वेदितब्बं। **लग्गेत्वा** ति ओलम्बेत्वा। **न च काची** ति एत्थ **च**—सद्दो अवधारणे, काचि कथा नेव उप्पज्जतो ति अत्थो। **पल्लङ्कं** ति निसीदितब्बासनं। **उप्प-ज्जिस्सती** ति एत्था पि "कथा" ति इदं आनेत्वा सम्बन्धितब्बं। **कुपितो अनत्तमनो** ति कोपने कुपितो, अनत्तमनो दोमनस्सेन। दोमनस्ससमङ्गी हि पुग्गलो पीतिसुखेहि न अत्तमनो न अत्तचित्तो ति अनत्तमनो ति वुच्चति। न सकमनो ति वा अनत्तमनो अत्तनो वसे अट्ठितचित्तत्ता।

चण्डिक्कभावे ति चण्डिको वुच्चति चण्डो थद्धपुग्गलो, तस्स भावो चण्डिक्कं, थद्धभावो ति अत्थो। इध पन "चण्डिक्कभावे" ति वुत्तत्ता चण्डिकोयेव चण्डिक्कं ति

गहेतब्बं, तेन "चण्डिक्कभावे" ति एत्थ थद्धभावे ति अत्थो वेदितब्बो। **किञ्चि मन्तं** ति किञ्चि वेदं। **अञ्ञे के जानिस्सन्तो** ति न केचि जानिस्सन्ती ति अधिप्पायो। **पुञ्छित्वा सक्का जानितुं** ति अत्तनो पदेसञाणे ठितत्ता थेरो एवमाह। सब्बञ्ञु बुद्धा एव हि "पुच्छ माणव यदाकङ्खसी"ति आदिना पच्चेकबुद्धादीहि असाधारणं सब्बञ्ञु-पवारणं पवारेन्ति। सावका पन पदेसञाणे ठितत्ता "सुत्वा वेदिस्सामा" ति वा पुच्छित्वा सक्का जानितुं" ति वा वदन्ति।

तीसु वेदेसू ति आदीसु तयो वेदा पुब्बे वुत्तनया एव। **निघण्डू** ति नामनिघण्डु-रुक्खादीनं वेवचनप्पकासकं सत्थं, **वेवचनप्पकासकं** ति च परियायसद्दीपकं ति अत्थो, एकेकस्स अत्थस्स अनेकपरियायवचनविभावकं ति वुत्तं होति। निदस्सनमत्तञ्चेतं B 121
अनेकेसं अत्थानं एकसद्दस्स वचनीयताविभावनवसेनपि तस्स गन्थस्स पवत्तत्ता। वचनीय-वाचकभावेन अत्थं सद्दञ्च निखण्डेति भिन्दति विभज्ज दस्सेतीति निखण्डु, सो एव इध खकारस्स घकारं कत्वा निघण्डूति वुत्तो। **केटुभं** ति किरियाकप्पविकप्पो कवीनं उपकारसत्थं। एत्थ च **किरियाकप्पविकप्पो** ति वचीभेदादिलक्खणा किरिया कप्पीयति विकप्पीयति एतेना ति किरियाकप्पो, सो पन वण्णपदबन्धपदत्थादिविभागतो बहु-विकप्पो ति किरियाकप्पविकप्पो ति वुच्चति। इदञ्च मूलकिरियाकप्पगन्थं सन्धाय वुत्तं। सो हि सतसहस्सपरिमाणो नयादिचरियादिकं पकरणं। वचनत्थतो पन किटति गमेति किरियादिविभागं, तं वा अनवसेसपरियादानतो गमेन्तो पूरेतीति केटुभं ति वुच्चति, सह निघण्डुना केटुभेन च **सनिघण्डुकेटुभा,** तयो वेदा। तेसु सनिघण्डुकेटुभेसु। ठानकरणादिविभागतो निब्बचनविभागतो च अक्खरा पभेदीयन्ति एतेना ति अक्खरप्प-भेदो, सिक्खा च निरुत्ति च। सह अक्खरप्पभेदेना ति **साक्खरप्पभेदा,** तेसु साक्खरप्प-भेदेसु। **इतिहासपञ्चमेसू** ति अथब्बनवेदं चतुत्थं कत्वा "इतिह आस इतिह आसा" ति ईदिसवचनपटिसंयुत्तो पुराणकथासङ्खातो इतिहासो पञ्चमो एतेसं ति इतिहासपञ्चमा, तयो वेदा। तेसु इतिहासपञ्चमेसु। **नेव अत्तना पस्सती** ति नेव सयं पस्सति, नेव जानाती ति अत्थो। **पुच्छ, ब्याकरिस्सामी** ति "सब्बा पि पुच्छा वेदेसुयेव अन्तोगधा" ति सल्लक्खेन्तो एवमाह।

यस्स चित्तं ति आदिपञ्हद्वयं चुतिचित्तसमङ्गिनो खीणासवस्स चुतिचित्तस्स उप्पादक्खणं सन्धाय वुत्तं। तत्थ पठमपञ्हे **उप्पज्जती** ति उप्पादक्खणसमङ्गिताय उप्पज्जति। **न निरुज्झती** ति निरोधक्खणं अप्पत्तताय न निरुज्झति। **तस्स चित्तं** ति तस्स पुग्गलस्स ततो पट्ठाय चित्तं निरुज्झिस्सति नुप्पज्जिस्सती ति पुच्छति। **यस्स वा पना** ति आदिके पन दुतियपञ्हे **निरुज्झिस्सती** ति यस्स चित्तं भङ्गक्खणं पत्वा निरु-ज्झिस्सति। नुप्पज्जिस्सती ति भङ्गतो परभागे सयं वा अञ्ञं वा नुप्पज्जिस्सति, तस्स पुग्गलस्स चित्तं उप्पज्जति न निरुज्झती ति पुच्छति। इमेसं पन पञ्हानं पठमो पञ्हो विभज्जब्याकरणीयो, तस्मा "यस्स चित्तं उप्पज्जति न निरुज्झति, तस्स चित्तं निरु-ज्झिस्सति नुप्पज्जिस्सती" ति[१], एवं पुट्ठेन सता एवमयं पञ्हो च विस्सज्जेतब्बो B 122

१. अभि ६—३०१ पिट्ठे।

पच्छिमचित्तस्स[1] उप्पादक्खणे तेसं चित्तं उप्पज्जति न निरुज्झति निरुज्झिस्सति न उप्पज्जिस्सति, इतरेसं चित्तस्स उप्पादक्खणे तेसं चित्तं उप्पज्जति न निरुज्झति, निरुज्झिस्सति चेव उप्पज्जिस्सति चा" ति[2]। येसञ्हि परिच्छिन्नवट्टदुक्खानं खीणासवानं सब्बपच्छिमस्स चुतिचित्तस्स उप्पादक्खणे[3] वत्तति, तेसं तदेव चुतिचित्तं निरुज्झिस्सति नुपज्जिस्सती ति। उप्पादप्पत्तताय उप्पज्जति नाम, भङ्गं अप्पत्तताय न निरुज्झति। भङ्गं, पन पत्वा तं तेसं चित्तं निरुज्झिस्सति, ततो अप्पटिसन्धिकत्ता अञ्ञं न उप्पज्जिस्सति। ठपेत्वा पन पच्छिमचित्तसमङ्गिखीणासवं इतरेसं सेक्खासेक्खपुथुज्जनानं उप्पादक्खणसमङ्गिचित्तं उप्पादप्पत्तताय उप्पज्जति नाम, भङ्गं अप्पत्तताय न निरुज्झति। भङ्गं पन पत्वा निरुज्झिस्सतेव, अञ्ञं पन तस्मिं वा अञ्ञस्मिं वा अत्तभावे उप्पज्जिस्सति चेव निरुज्झिस्सति च। दुतियो पन पञ्हो अरहतो चुतिचित्तस्स उप्पादक्खणे नियमितत्ता एकंसब्याकरणीयो, तस्मा "यस्स वा पन चित्तं निरुज्झिस्सति न उप्पज्जिस्सति, तस्स चित्तं उप्पज्जति न निरुज्झती" ति पुट्ठेन "आमन्ता" ति वत्तब्बं। खीणासवस्स हि उप्पादक्खणसमङ्गिचुतिचित्तं भङ्गं पत्वा निरुज्झिस्सति नाम, ततो परं नुप्पज्जिस्सति। उप्पादक्खणसमङ्गिताय पन उप्पज्जति चेव भङ्गं अप्पत्तताय न निरुज्झति चा ति वुच्चति।

अयं पन माणवो एवमिमे पञ्हे विस्सज्जेतुमसक्कोन्तो विघातं पापुणि, तस्मा वुत्तं "**माणवो उद्धं वा अधो वा हरितुं असक्कोन्तो**" ति आदि। तत्थ **उद्धं वा अधो वा हरितुं असक्कोन्तो** ति उपरिमपदे वा हेट्ठिमपदं, हेट्ठिमपदे वा उपरिमपदं अत्थतो समन्नाहरितुं असक्कोन्तो ति अत्थो, पुब्बेनापरं योजेत्वा पञ्हस्स अत्थं परिच्छिन्दितुं असक्कोन्तो ति वुत्तं होति। **द्वत्तिसाकारकम्मट्ठानं ताव आचिक्खी** ति "अत्थि इमस्मिं काये" ति आदिकं द्वत्तिसाकारकम्मट्ठानं "मन्तस्स उपचारो अयं" ति पठमं आचिक्खि। सोतापन्नानं सीलेसु परिपूरकारिताय समादिन्नसीलतो नत्थि परिहानी ति आह "**अभब्बो दानि सासनतो निवत्तितुं**" ति। **वड्ढेत्वा** ति उपरिमग्गत्थाय कम्मट्ठानं
B 123 वड्ढेत्वा। **अप्पोस्सुक्को भवेय्य बुद्धवचनं गहेतुं** ति अरहत्तपत्तिया कतकिच्चभावतो ति अधिप्पायो। वोहारविधिम्हि[4] छेकभावत्थं "**उपज्झायो मं भन्ते तुम्हाकं सन्तिकं पहिणी**" ति आदि वुत्तं।

उदकदन्तपोनं उपट्ठापेसी ति परिभोगत्थाय उदकञ्च दन्तकट्ठञ्च पटियादेत्वा ठपेसि। दन्ते पुनन्ति विसोधेन्ति एतेना ति दन्तपोनं वुच्चति दन्तकट्ठं। गुणवन्तानं सङ्गहेतब्बभावतो थेरो सामणेरस्स च खन्तिविरियउपट्ठानादिगुणे पच्चक्खकरणत्थं विनाव अभिञ्ञाय पकतिया वीमंसमानो पुन सम्मज्जनादिं अकासि।

"सामणेरस्स चित्तदमनत्थं अकासी" ति वदन्ति। **बुद्धवचनं पट्ठपेसी** ति बुद्धवचनं उग्गण्हापेतुं आरभि। **ठपेत्वा विनयपिटकं** ति एत्थ "सामणेरानं विनयपरि-

१. अरहन्तानं पच्छिमचित्तस्स (सी०, स्या०, क०)
२. अभि ६—३०१ पिट्ठे।
३. उप्पादक्खणो (सी०, स्या०)
४. उपचारविधिम्हि (सी०, स्या०)।

यापुणनं चारित्तं न होती ति ठपेत्वा विनयपिटकं अवसेसं बुद्धवचनं उग्गण्हापेसी" ति तीसुपि **गण्ठिपदेसु** वुत्तं। अवस्सिकोव समानो ति उपसम्पदतो पट्ठाय अपरिपुण्ण एकवस्सो ति अधिप्पायो। मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरस्स हदये पतिट्ठापितम्पि बुद्धवचनं वोहारवसेन तस्स हत्थे पतिट्ठापितं नाम होती ति कत्वा वुत्तं **"हत्थेसकलं बुद्धवचनं पतिट्ठापेत्वा"** ति। **यावतायुकं ठत्वा परिनिब्बायिंसू** ति मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरस्स हत्थे सकलसासनपतिट्ठापनेन दुतियसङ्गीतिकारकारोपितदण्डकम्मतो मुत्ता हुत्वा यावतायुकं ठत्वा परिनिब्बायिंसु।

बिन्दुसारस्स रञ्ञो एकसतपुत्ता ति एत्थ **बिन्दुसारो** नाम सक्यकुलप्पसुतो चन्दगुत्तस्स नाम रञ्ञो पुत्तो। तथा हि विटटूभसङ्गामे कपिलवत्थुतो निक्खन्तसक्यपुत्तेहि मापिते मोरियनगरे खत्तियकुलसम्भवो चन्दगुत्तकुमारो पाटलिपुत्ते राजा अहोसि। तस्स पुत्तो बिन्दुसारो नाम राजकुमारो पितु अच्चयेन राजा हुत्वा एकसतपुत्तकानं जनको अहोसि। **एकसतं** ति एकञ्च एकसतं, एकेनाधिकं सतं ति अत्थो। एकाव माता अस्सा ति **एकमातिकं**, अत्तना[१] सहोदरं ति वुत्तं होति। **न** ताव एकरज्जं कतं ति आह **"अनभिसित्तोव रज्जं कारेत्वा"** ति। **एकरज्जाभिसेकं** ति सकलजम्बुदीपे एकाधिपच्चवसेन करियमानं अभिसेकं। पुञ्ञप्पभावेन पापुणितब्ब पि राजिद्धियो अरहत्तममग्गेन आगता पटिसम्भिदादयो अवसेसविसेसा विय पयोगसम्पत्तिभूता अभिसेकानुभावेनेव आगता ति आह **"अभिसेकानुभावेन चस्स इमा राजिद्धियो आगता"** ति। B 124

तत्थ **राजिद्धियो** ति राजभावानुगतप्पभावा। **यतो** ति यतो सोळसघटतो। **सासने उप्पन्नसद्धो** ति बुद्धसासने पटिलद्धसद्धो। **असन्धिमित्ता** ति तस्साव नामं। तस्सा किर सरीरे सन्धयो न पञ्ञायन्ति, तस्मा एवंनामिका जाता ति पि वदन्ति। देवता एव दिवसे दिवसे आहरन्तीति सम्बन्धो। देवसिकं ति दिवसे दिवसे। अगदामलकं ति अप्पकेनेव सरीरसोधनादिसमत्थं सब्बदोसहरणं ओसधामलकं। अगदहरीतकम्पि तादिसमेव हरीतकं। तेसु किर द्वीसु यथाकाममेकं परिभुञ्जति। **छद्दन्त दहतो** ति छद्दन्तदहसमीपे ठितदेवविमानतो कप्परुक्खतो वा। "छद्दन्तदहे तादिसा रुक्खविसेसा सन्ति, ततो आहरन्ती" ति पि वदन्ति। **दिब्बञ्च पानकं** ति दिब्बफलरसपानकञ्च। असुत्तमयिकं ति कप्परुक्खतो निब्बत्तदिब्बदुस्सत्ता सुत्तेहि न कतं ति असुत्तमयिकं। **सुमनपुप्फपटं** ति सब्बत्थ सुखुमं हुत्वा उग्गतपुप्फानं अत्थिताय सुमनपुप्फपटं नाम जातं। **उट्ठितस्स सालिनो** ति सयंजातसालिनो। समुदायापेक्खञ्चेत्थ एकवचनं, सालीनं ति अत्थो। **नव वाहसहस्सानी** ति एथ "चतस्सो मुट्ठियो एको कुडुवो, चत्तारो कुडुवा एको पत्थो, चत्तारो पत्था एको आल्हको, चत्तारो आल्हका एकं दोणं, चत्तारो दोणा एकमानिका, चतस्सो मानिका एकखारी, वीसति खारिया एको वाहो, तदेव एकं सकटं" ति सुत्तनिपातट्ठकथादीसु [२]वुत्तं। इध पन "द्वे सकटानि एको वाहो" ति

१. अत्तनो (सी०, स्या०)

२. सुत्तनिपात–ट्ठ–२-१९७, सं–ट्ठ १-२००, अं० ट्ठ-३-३२९ पिट्ठेसु।

वदन्ति। **नित्थुसकणंकरोन्ती** ति थुसकुण्डकरहिते करोन्ति। **मधुं करोन्ती** ति आगन्त्वा समीपट्ठाने मधुं करोन्ति। **बलिकम्मं करोन्ती** ति सब्बत्थ बलिकम्मकारका रट्ठवासिनो विय मधुरसरं विकूजन्ता बलिं करोन्ति। "आगन्त्वा आकासेयेव सद्दं कत्वा अत्तानं अजानापेत्वा गच्छन्ती" ति वदन्ति।

सुवण्णसङ्खलिकायेव बन्धनं **सुवण्णसङ्खलिकबन्धनं। चतुन्नं बुद्धानं** ति ककुसन्धादीनं चतुन्नं बुद्धानं। **अधिगतरूपदस्सनं** ति पटिलद्धरूपदस्सनं। अयं किर
B 125 कप्पायुकत्ता चतुन्नम्पि बुद्धानं रूपसम्पत्तिं पच्चक्खतो अद्दक्खि। **काळं नाम नागराजानं आनयित्वा** ति एत्थ सो पन नागराजा गङ्गायं निक्खित्तसुवण्णसङ्खलिकाय गन्त्वा अत्तनो पादेसु पतितसञ्ञाय आगतो ति वेदितब्बो। ननु च असोकस्स रञ्ञो आणा हेट्ठा योजनतो उपरि पवत्तति, इमस्स च विमानं योजनपरिच्छेदतो हेट्ठा पतिट्ठितं, तस्मा कथं अयं नागराजा रञ्ञो आणाय आगतो ति? किञ्चापि अत्तनो विमानं योजनपरिच्छेदतो हेट्ठा पतिट्ठितं, तथापि रञ्ञो आणापवत्तिट्ठानेन सह एकाबद्धताय तस्स आणं अकासि। यथा हि रज्जसीमन्तरवासिनो मनुस्सा तेहि तेहि राजूहि निप्पीळियमाना तेसं तेसं आणाय पवत्तन्ति, एवं सम्पदमिदं ति वदन्ति।

आपाथं करोही ति सम्मुखं करोहि, गोचरं करोही ति अत्थो। तेन निम्मितं बुद्धरूपं पस्सन्तो ति सम्बन्धो। कीदिसं तं बुद्धरूपं ति आह "**सकलसरीरविप्पकिण्णा**"ति आदि। तत्थ **पुञ्ञप्पभावनिब्बत्त**ग्गहणं तेन निम्मितानम्पि असीतिअनुब्यञ्जनपटिमण्डितानं द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणानं भगवतो पुञ्ञप्पभावनिब्बत्तअसीतिअनुब्यञ्जनादीहि सदिसत्ता कतं ति दट्ठब्बं। न हि तेन तदा निम्मितं अनेकाकारपरिपुण्णं बुद्धरूपं भगवतो पुञ्ञप्पभावेन निब्बत्तं ति सक्का वत्तुं। **असीतिअनुब्यञ्जनं** तम्बनखतुङ्गनासादि। **द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणं** सुप्पतिट्ठितपादतादि। **विकसित** ...पे०... **सलिलतलं**ति सूरियरस्मिसम्फस्सेन विकसितेहि विकासमुपगतेहि कं अलङ्करोतीति "कमलं" ति लद्धनामेहि रत्तपदुमेहि नीलुप्पलादिभेदेहि उप्पलेहि चेव सेतपदुमसङ्खातेहि पुण्डरीकेहि च पटिमण्डितं समन्ततो सज्जितं जलतलमिव। **तारागण** ...पे०... **गगनतलं** ति सब्बत्थ विप्पकिण्णतारकगणस्स रस्मिजालाविसदेहि[1] विप्फारिताय भासमानाय सोभाय कन्तिया समुज्जलं सम्मा भासमानं गगनतलमिव आकासतलमिव। सञ्झाप्पभा... पे०... कनकगिरिसिखरं ति सञ्झाकालसञ्जातप्पभानुरागेहि इन्दचापेहि विज्जुलताहि च परिक्खित्तं समन्ततो परिवारितं कनकगिरिसिखरमिव सुवण्णपब्बतकूटमिव। **विमलकेतुमाला**ति एत्थ "केतुमाला नाम सीसतो निक्खमित्वा उपरि मुद्धनि पुञ्जो हुत्वा दिस्समानरस्मिरासी"ति वदन्ति। मुद्धनिमज्झे पञ्ञायमानो उन्नतप्पदेसो
B 126 ति पि वदन्ती"ति तीसुपि **गण्ठिपदेसु** वुत्तं। यस्मा पन असोको धम्मराजा सञ्जातपीतिसोमनस्सो सत्ताहं निराहारो हुत्वा यथाठितोव अविक्खित्तचित्तो पसादसोम्मेहि चक्खूहि निरन्तरं बुद्धरूपमेव ओलोकेसि। तस्मा अक्खीहि पूजा

---

१. रस्मिजालविसरेहि (सी०, स्या०)

कता नाम होती ति आह "**अक्खिपूजं नाम अकासी**" ति। अथ वा चक्खूनं तादिसस्स इट्ठारम्मणस्स उपट्ठापनेन अक्खीनं पूजा कता नाम होतीति वुत्तं "अक्खिपूजं नाम अकासी"ति।

इद्धिविभावनाधिकारप्पसङ्गेन चेतं वत्थु वुत्तं, नानुक्कमेन। अयं हेत्थ अनुक्कमो—असोको किर महाराजा उपरि वक्खमानानुक्कमेन सीहपञ्जरेन ओलोकेन्तो निग्रोधसामणेरं इरियापथसम्पन्नं नागरजननयनानि आकड्ढन्तं युगमत्तं पेक्खमानं दिस्वा पसीदित्वा सञ्जातपेमो सबहुमानो[1] आमन्तापेत्वा सेतच्छत्तस्स हेट्ठा सीहासने निसीदापेत्वा भोजेत्वा सामणेरस्स वचनादासे दिस्समानं दसबलस्स धम्मकायं दिस्वा रतनत्तये पसीदित्वा सपरिसो सरणसीलेसु पतिट्ठाय ततो पट्ठाय अभिवड्ढमानसद्धो पुब्बे भोजियमानानि तित्थियसट्ठिसहस्सानि नीहरित्वा भिक्खूनं सट्ठिसहस्सानं सुवकाहतसालिसम्पादितभत्तं पट्ठपेत्वा देवतोपनीतं अनोतत्तसलिलं नागलतादन्तकट्ठञ्च उपनामेत्वा निच्चसंघुपट्ठानं करोन्तो एकदिवसं सुवण्णसङ्खलितबन्धनं विस्सज्जेत्वा काळं नागराजानं आनयित्वा तेन निम्मितं वुत्तप्पकारं सिरीसोभग्गसम्पन्नं बुद्धरूपं पस्सन्तो दीघपुथुलनिच्चलनयनप्पभाहि सत्ताहं अक्खिपूजमकासि।

इदानि पन यथानुसन्धिं घटेत्वा अनुक्कमेन तस्स सासनावतारं दस्सेन्तो आह "**राजा किर अभिसेकं पापुणित्वा**"ति आदि। **बाहिरकपासण्डं** ति बाहिरकप्पवेदितं समयवादं। बाहिरकप्पवेदिता हि समयवादा सत्तानं तण्हापासं दिट्ठिपासञ्च डेन्ति ओड्डेन्ती ति "पासण्डा" ति वुच्चन्ति। **परिगण्हि** ति वीमंसमानो परिग्गहेसि। **बिन्दुसारो ब्राह्मणभत्तो अहोसी** ति अत्तनो पितु चन्दगुत्तस्स कालतो पट्ठाय ब्राह्मणेसु सम्भत्तो अहोसि। चन्दकेन नाम किर ब्राह्मणेन समुस्साहितो चन्दगुत्तकुमारो तेन दिन्ननये ठत्वा सकलजम्बुदीपे एकरज्जमकासि, तस्मा तस्मिं ब्राह्मणे सञ्जातबहुमानवसेन चन्दगुत्तकालतो पट्ठाय सट्ठिसहस्समत्ता ब्राह्मणजातिका तस्मिं राजकुले निच्चभत्तिका अहेसुं। B 127 **ब्राह्मणानं** ति पण्डरङ्गपरिब्बाजकादिभावमनुपगते दस्सेति। पण्डरङ्गपरिब्बाजकादयो च ब्राह्मणजातिवन्तो ति आह "**ब्राह्मणजातियपासण्डानं**" ति। एत्थ पन दिट्ठिपासादीनं ओड्डनतो पण्डरङ्गादयोव "पासण्डा"ति वुत्ता। **सीहपञ्जरे** ति महावातपाने। **उपसमपरिबाहिरेना** ति उपसमतो परिबाहिरेन, उपसमरहितेना ति अत्थो। **अन्तेपुरं अतिहरथा** ति अन्तेपुरं पवेसेथ, आनेथा ति वुत्तं होति।

अमा सह भवन्ति किच्चेसू ति **अमच्चा**, रज्जकिच्चवोसापनका। **देवा** ति राजानं आलपन्ति। राजानो हि दिब्बन्ति कामगुणेहि कीळन्ति, तेसु वा विहरन्ति विजयसमत्थतायोगेन पच्चत्थिके विजेतुं इच्छन्ति, इस्सरियट्ठानादिसक्कारदानगहणं तं तं अत्थानुसासनं वा करोन्ति वोहरन्ति, पुञ्ञानुभावप्पत्ताय जुतिया जोतन्तीति वा "देवा" ति वुच्चन्ति। तथा हि ते चतूहि सङ्गहवत्थूहि जनं रञ्जेन्ता सयं यथावुत्तेहि विसेसेहि राजन्ति दिप्पन्ति सोभन्तीति "राजानो" ति च वुच्चन्ति। निगण्ठादयो

---

१. सम्बहुमानो (स्या०)

ति एत्थ **निगण्ठो** नाम "अम्हाकं गण्ठनकिलेसो संसारे पलिबुद्धनकिच्चो रागादिकिलेसो खेत्तवत्थुपुत्तदारादिविसयो नत्थि, किलेसगण्ठिरहिता मयं" ति एवं वादिताय "निगण्ठा"ति लद्धनामा तित्थिया।

उच्चावचानी ति उच्चानि च अवचानि च, महन्तानि चेव खुद्दकानि च अथ वा विसिट्ठानि चेव लामकानि चाति अत्थो। **भद्दपीठकेसू** ति वेत्तमयपीठेसु। **सारो** ति सीलादिगुणसारो। **राजङ्गणेना** ति राजनिवेसनद्वारे विवटेन भूमिप्पदेसेन। अङ्गणं ति हि कत्थचि किलेसा वुच्चन्ति "रागो अङ्गणं" ति आदीसु[1]। रागादयो हि अङ्गं ति एतेहि तंसमङ्गीपुग्गला निहीनभावं गच्छन्तीति अङ्गणानीति वुच्चन्ति। कत्थचि मलं वा पङ्को वा "तस्सेव रजस्स वा अङ्गणस्स वा पहानाय वायमती"ति आदीसु[2]। अञ्जति सम्मक्खेतीति हि अङ्गणं, मलादि। कत्थचि तथारूपो विवटप्पदेसो "चेतियङ्गणं बोधियङ्गणं"ति आदीसु। अञ्जति तत्थ ठितं अतिसुन्दरताय अभिब्यञ्जेतीति हि अङ्गणं, विवटोभूमिप्पदेसो। इधापि सोयेव अधिप्पेतो। **दन्तं** ति
B 128 आदीसु किलेसविप्फन्दरहितचित्तताय **दन्तं**, निच्चं पच्चुपट्ठितसतारक्खताय **गुत्तं**, चक्खादिइन्द्रियानं सन्तताय **सन्तिन्द्रियं**, पासादिकेन इरियापथेन समन्नागतत्ता **सम्पन्नइरियापथं**। इदानि निग्रोधसामणेरं सरूपतो विभावेतुकामो आह "**को पनायं निग्रोधो नामा**"ति आदि।

तत्रायं अनुपुब्बिकथा ति एत्थ बिन्दुसारस्स किर एकसतपुत्तेसु मोरियवंसजाय धम्मदेविया असोकतिस्सनामानं द्विन्नं पुत्तानं मज्झे जेट्ठो असोककुमारो अवन्ति रट्ठं भुञ्जति। पितरा पेसितो पाटलिपुत्ततो पञ्ञासयोजन मत्थके विटटूभभयागतानं साकियानमावासं वेटिसं[3] नाम नगरं पत्वा तत्थ वेटिसं सेट्ठिधीतरं आदाय उज्जेनीराजधानियं रज्जं करोन्तो महिन्दं नाम कुमारं संघमित्तञ्च कुमारिकं लभित्वा तेहि सद्धिं रज्जसुखमनुभवन्तो पितुनो गिलानभावं सुत्वा उज्जेनिं पहाय सीघं पाटलिपुत्तं उपगन्त्वा पितु उपट्ठानं कत्वा तस्स अच्चयेन रज्जं अग्गहेसि। तं सुत्वा युवराजा सुमनाभिधानो कुज्झित्वा "अज्ज मे मरणं वा होतु रज्जं वा" ति अट्ठनवुतिभातिकपरिवुतो संवट्टसागरे जलतरङ्गसङ्घातो विय अज्झोत्थरन्तो उपगच्छति। ततो असोको उज्जेनीराजा सङ्गामं पक्खन्दित्वा सत्तुमद्दनं करोन्तो सुमनं नाम राजकुमारं गहेत्वा घातेसि। तेन वुत्तं "**बिन्दुसाररञ्ञो किर दुब्बलकालेयेव असोककुमारो अत्तना लद्धं उज्जेनीरज्जं पहाय आगन्त्वा सब्बनगरं अत्तनो हत्थगतं कत्वा सुमनं नाम राजकुमारं अग्गहेसी**"ति।

परिपुण्णगब्भा ति परिपक्कगब्भा। **एकं सालं** ति सब्बपरिच्छन्नं एक पासादं। "देवताय पन आनुभावेन तस्मिं पासादे महाजनेन अदिस्समाना हुत्वा वासं कप्पेसी" ति वदन्ति। **निबद्धवत्तं** ति "एकस्स दिवसस्स एत्तकं"ति नियामेत्वा ठपितवत्तं।

---

१. अभि० २-३८२ पिट्ठे। २. म० १-१४४ पिट्ठे।
३. वेदिसं (क)

हेतुसम्पदं ति अरहत्तूपनिस्सयपुञ्ञसम्पदं। **खुरग्गेयेवा** ति खुरकम्मपरियोसानेयेव, तचपञ्चककम्मट्ठानं गहेत्वा तं परिग्गण्हन्तो अन्तिमाय केसवट्टिया वोरोपनाय समकालमेव च अरहत्तं पापुणी ति वुत्तं होति। **सरीरं जग्गित्वा** ति दन्तकट्ठखादनमुखधोवनादीहि सरीरपरिकम्मं कत्वा।

सीहपञ्जरे चङ्कमती ति सीहपञ्जरसमीपे अपरापरं चङ्कमति। **तङ्खणञ्ञेवा** ति तस्मिं खणेयेव। **अयं जनो** ति राजङ्गणे चरमानं जनं दिस्वा वदति। **भन्तमिगप्पटिभागो** ति अनवट्ठितत्ता कायचापल्लेन समन्नागतत्ता भन्तमिगसदिसो। अतिविय B 129
सोभतीति सम्बन्धो। **आलोकितविलोकितं** ति एत्थ **आलोकितं** नाम पुरतोपेक्खनं। अभिमुखोलोकनञ्हि "आलोकितं" ति वुच्चति। **विलोकितं** ति अनुदिसापेक्खनं, यं दिसाभिमुखं ओलोकेति, तदनुगतदिसापेक्खनं ति अत्थो। **समिञ्जनं** पब्बसङ्कोचनं। **पसारणञ्च** तेसंयेव पसारणं। **लोकुत्तरधम्मो** ति सेसजनेसु अविज्जमानो विसिट्ठधम्मो। **पेमंसण्ठही** ति पेमं पतिट्ठासि, उप्पज्जती ति अत्थो। **वाणिजको अहोसी** ति मधुवाणिजको अहोसि।

अतीते किर तयो भातरो मधुवाणिजका अहेसुं। तेसु कनिट्ठो मधुं विक्किणाति, इतरे अरञ्ञतो आहरन्ति। तदा एको पच्चेकबुद्धो पण्डुकरोगातुरो[1] अहोसि। अपरो पन पच्चेकबद्धो तदत्थं मधुभिक्खाय चरमानो नगरं पाविसि। पविट्ठञ्च तं एका कुम्भदासी उदकहरणत्थं तित्थं गच्छमाना अद्दस। दिस्वा च पुच्छित्वा आगतकारणञ्च ञत्वा "एत्थ भन्ते मधुवाणिजका वसन्ति, तत्थ गच्छथा" ति हत्थं पसारेत्वा मधुआपणं दस्सेसि। सो च तत्थ अगमासि। तं दिस्वा कनिट्ठो मधुवाणिजो सञ्जातपीतिसोमनस्सो "केनागतात्थ भन्ते" ति पुच्छित्वा तमत्थं विदित्वा पत्तं गहेत्वा मधुनो पूरेत्वा ददमानो पत्तपुण्णं मधुं उग्गन्त्वा मुखतो विस्सन्दित्वा भूमियं पतमानं दिस्वा पसन्नमानसो "इमिनाहं भन्ते पुञ्ञकम्मेन जम्बुदीपे एकरज्जं करेय्यं, आणा च मे आकासे पथवियञ्च योजनप्पमाणे ठाने फरतू" ति पत्थनमकासि। पच्चेकबुद्धो च "एवं होतु उपासका" ति वत्वा गन्धमादनं गन्त्वा पच्चेकबुद्धस्स भेसज्जमकासि।

कनिट्ठो पन मधुवाणिजो मधुं दत्वा गेहे निसिन्नो इतरे अरञ्ञतो आगते दिस्वा एवमाह "तुम्हाकं भातरो चित्तं पसादेथ. ममञ्च तुम्हाकञ्च मधुं गहेत्वा ईदिसस्स नाम पच्चेकबुद्धस्स पत्तं पूरेत्वा अदासिं" ति। तेसु जेट्ठो कुज्झित्वा एवमाह "चण्डालापि कासावनिवासिनो होन्ति, ननु तव हत्थतो मधुं पटिग्गहेत्वा गतो चण्डालो भविस्सती" ति। मज्झिमो पन कुज्झित्वा "तव पच्चेकबुद्धं गहेत्वा परसमुद्दे निक्खिपाही" ति आह। पच्छा पन ते पि द्वे भातरो कनिट्ठेन वुच्चमानं दानानिसंसपटिसंयुत्तकथं सुत्वा अनुमोदिंसुयेव। सापि च कुम्भदासी "तस्स मधुदायकस्स अग्गमहेसी B 130
भवेय्यं" ति पत्थनमकासि। तेसु कनिट्ठो असोको धम्मराजा अहोसि, सा च कुम्भदासी अतिविय रूपसोभग्गप्पत्ता असन्धिमित्ता नाम तस्स अग्गमहेसी अहोसि। परसमुद्दवादी

१. वणरोगातुरो (सी०)

पन मज्झिमो इमस्मियेव तम्बपण्णिदीपे देवानंपियतिस्सो नाम महानुभावो राजा अहोसि। जेट्ठो पन चण्डालवादिताय चण्डालगामे जातो निग्रोधो नाम सामणेरो अहोसि। तेन वुत्तं "**पुब्बे हि[1] किर पुञ्ञकरणकाले एस रञ्ञो जेट्ठभाता वाणिजको अहोसी**" ति।

पुब्बे व सन्निवासेना ति एत्थ[2] गाथाबन्धवसेन **वा**-सद्दस्स रस्सत्तं कतं ति वेदितब्बं, पुब्बे सन्निवासेन वा ति वुत्तं होति। तत्थ **पुब्बे** ति अतीतजातियं। **सन्निवासेना** ति सहवासेन। सहसद्दत्थो हि अयं सं सद्दो। **पच्चुप्पन्नहितेन वा**ति पच्चुप्पन्ने वत्तमानभवे हितचरणेन वा। एवं इमेहि द्वीहि कारणेहि सिनेहसङ्खातं पेमं जायते उप्पज्जति। इदं वुत्तं होति—पेमं नामेतं द्वीहिपि कारणेहि जायति, पुरिमभवे माता वा पिता वा धीता वा पुत्तो वा भाता वा भगिनी वा पति वा भरिया वा सहायो वा मित्तो वा हुत्वा यो येन सद्धिं एकट्ठाने निवुत्थपुब्बो, तस्स इमिना पुब्बे वा सन्निवासेन भवन्तरेपि अनुबन्धन्तो सो सिनेहो न विजहति, इमस्मिं अत्तभावे कतेन पच्चुप्पन्नेन हितेन वा ति एवं इमेहि द्वीहि कारणेहि तं पेमं नाम जायती ति। किं विया ति आह "**उप्पलं व यथोदके**"ति। एत्थापि **वा**-सद्दस्स वुत्तनयेनेव रस्सत्तं कतं ति दट्ठब्बं। अवुत्तसम्पिण्डनत्थो चेत्थ वा सद्दो। तेन पदुमादयो सङ्गण्हाति। **यथा**—सद्दो उपमायं। इदं वुत्तं होति—यथा उप्पलञ्च सेसञ्च पदुमादि उदके जायमानं द्वे कारणानि निस्साय जायति उदकञ्चेव कललञ्च, तथा एतेहि द्वीहि कारणेहि पेमं जायती ति।

रञ्ञो हत्थे ति सन्तिकं उपगतस्स रञ्ञो हत्थे। **रञ्ञो अनुरूपं** ति एकूनसतभातुकानं घातितत्ता चण्डपकतिताय रज्जे ठितत्ता च "पमादविहारी अयं" ति
B 131 मञ्ञमानो तदनुरूपं धम्मपदे अप्पमादवग्गं देसेतुं आरभि। तत्थ[3] **अप्पमादो** ति सतिया अविप्पवासो, निच्चं उपट्ठिताय सतिया एवं अधिवचनं। **अमतपदं** ति अमतं वुच्चति निब्बानं। तञ्हि अजातत्ता न जीयति न मीयति, तस्मा "अमतं" ति वुच्चति। अमतस्स पदं अमतपदं, अमतस्स अधिगमुपायो ति वुत्तं होति। पमादो ति पमज्जनभावो, मुट्ठसच्चसङ्खातस्स सतिया वोस्सग्गस्सेतं नामं। **मच्चुनो** ति मरणस्स। **पदं** ति उपायो मग्गो। पमत्तो हि जातिं नातिवत्तति, जातो पन जीयति चेव मीयति चाति पमादो मच्चुनो पदं नाम होति, मरणं उपनेती ति वुत्तं होति।

अञ्ञातं तात, परियोसापेही ति इमिना "सदा अप्पमादेन हुत्वा वत्तितब्बं ति एत्तकेनेव मया ञातं, तुम्हे धम्मदेसनं निट्ठपेथा" ति तस्मिं धम्मे अत्तनो पटिपज्जितुकामतं दीपेन्तो धम्मदेसनाय परियोसानं पापेत्वा कथने उस्साहं जनेति। केचि पन "अभासीति एत्थ 'भासिस्सामि वितक्केमी'ति अत्थं गहेत्वा 'सब्बं अप्पमादवग्गं भासिस्सामी'ति सल्लक्खितत्ता अभासी ति वुत्तं, रञ्ञा पन अड्ढगाथं सुत्वाव 'अञ्ञातं

---

१. पुब्बेपि (सी०, स्या०) २. जातक-ट्ठ—२-२१५ पिट्ठेपि पस्सितब्बं।
३. धम्मपद-ट्ठ-१-१४६-पिट्ठेपि पस्सितब्बं।

तात, परियोसापेही' ति वुत्तत्ता 'उपरि न कथेसी' ति" वदन्ति। "तं पन युत्तं न होती" ति तीसुपि **गण्ठिपदेसु** वुत्तं। **धुवभत्तानी** ति निच्चभत्तानि[1]। वज्जावज्जं उपनिज्झायती ति उपज्झायो ति आह "**वज्जावज्जं दिस्वा चोदेता सारेता चा**" ति। तत्थ **वज्जावज्जं** ति खुद्दकं महन्तञ्च वज्जं। **चोदेता** ति "इदं तया दुक्कटं, इदं दुब्भासितं" आदीनि वत्वा चोदेता। **सारेता** ति अत्तनो वज्जं अस्सरन्तस्स सतिं उप्पादेता, सम्मापटिपत्तियं वा सारेता, पवत्तेता ति अत्थो।

"एवं तया बुद्धवचनं सज्झायितब्बं, एवं अभिक्कमितब्बं, एवं पटिक्कमितब्बं" ति आदिना आचारस्स सिक्खापनतो आचरियो नामा ति आह "**इमस्मिं सासने सिक्खितब्बकधम्मेसु पतिट्ठापेता**" ति। तत्थ **सिक्खितब्बधम्मो** नाम सकलं बुद्धवचनं सीलादयो च धम्मा। "**पब्बज्जा च उपसम्पदा चा**" ति इदं लब्भमानवसेन वुत्तं[2]। B 132
आचरियुपज्झायानं ति इमिना पब्बज्जा उपसम्पदा च योजेतब्बा, **मम चा** ति इमिना पन पब्बज्जाव। तदा सामणेरभूमियं ठितत्ता निग्रोधस्स भाविनिं वा उपसम्पदं सन्धाय उभयम्पि योजेतब्बं। सरणगमन वसेन पब्बज्जासिद्धितो भिक्खुसंघस्सपि पब्बज्जाय निस्सयभावो वेदितब्बो। भण्डुकम्मवसेनपि निस्सयभावो लब्भतेवा ति गहेतब्बं। **दिवसे दिवसे वड्ढापेन्तो** ति वुत्तनयेनेव दिवसे दिवसे ततो ततोदिगुणं कत्वा वड्ढापेन्तो। **पोथुज्जनिकेना** ति पुथुज्जनभावानुरूपेन। निग्रोधत्थेरस्स आनुभावकित्तनाधिकारत्ता पुब्बे वुत्तम्पि पच्छा वत्तब्बम्पि सम्पिण्डेत्वा आह "**पुन राजा असोकारामं नाम महाविहारं कारेत्वा**" ति आदि। **चेतियपटिमण्डितानी** ति एत्थ चयितब्बं पूजेतब्बं ति **चेतियं**, इट्ठकादीहि चितत्ता वा चेतियं, चेतियेहि पटिमण्डितानि विभूसितानी ति चेतियपटिमण्डितानि। **धम्मेना** ति धम्मतो अनपेतेन।

वुत्तमेवत्थं वित्थारतो विभावेन्तो आह "**एकदिवसं किरा**" ति आदि। **असोकारामे महादानं दत्वा** ति एत्थ कते आरामे पच्छा कारापकस्स रञ्ञो नामवसेन निरुल्हं नामपण्णत्तिं सन्धाय वुत्तं "असोकारामे" ति। केचि पन "तस्मिं दिवसे राजा अत्तनो घरेयेव सब्बं भिक्खुसंघं निसीदापेत्वा भोजेत्वा इमं पञ्हं पुच्छी" ति वदन्ति। **महादानं दत्वा** ति भोजेत्वा सब्बपरिक्खारदानवसेन महादानं दत्वा। वुत्तञ्हेतं दीपवंसे[3]—

"निवेसनं पवेसेत्वा, निसीदापेत्वान आसने।
यागुं नानाविधं खज्जं,[4] भोजनञ्च महारहं॥

---

१. धुरभत्तानीति निच्चभत्तानि, पणीतताय विसिट्ठानि भत्तानि धुरभत्तानि, तं पधानं कत्वा दातब्बभत्तानीति वा धुरभत्तानि, तुम्हे धुरं कत्वा अट्ठ भत्तानि दम्मीति वुत्तं होति (सी० स्या०)।

२. गहेतब्बं (सी०, स्या०) ३. छट्ठपरिच्छेदे।

४. यागुदानं पूवखज्जं (सी०, स्या०)

अदासि पयतपाणि, यावदत्थं यदिच्छकं"।
भुत्ताविभिक्खुसंघस्स, ओनीतपत्तपाणिनो ॥
एकमेकस्स भिक्खुनो, अदासि युगसाटकं।
पादअब्भञ्जनं तेलं, छत्तञ्चापि उपाहनं।
सब्बं समणपरिक्खारं, [1]अदासि फाणितं मधुं ॥
अभिवादेत्वा निसीदि, असोकधम्मो महीपति।
B 133 निसज्ज राजा पवारेसि, भिक्खुसंघस्स पच्चयं ॥
यावता भिक्खू इच्छन्ति, ताव देमि यदिच्छकं।
सन्तप्पेत्वा परिक्खारेन, पवारेत्वान पच्चये।
ततो अपुच्छि गम्भीरं, धम्मक्खन्धं सुदेसितं"ति ॥

अङ्गतो महाराज नव अङ्गानी ति आदि मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरेन वुत्तं ति वदन्ति। **नवकम्माधिट्ठायकं अदासी** ति चतुरासीतिविहारसहस्सेसु कत्तब्बस्स नवकम्मस्स अधिट्ठायकं विधायकं कत्वा अदासि। **एकदिवसमेव सब्बनगरेहिपण्णानि आगमिंसू** ति सब्बविहारेसु किर राहुना चन्दस्स गहणदिवसे नवकम्मं आरभित्वा पुन राहुना चन्दस्स गहणदिवसेयेव निट्ठापेसुं, तस्मा एकदिवसमेव पण्णानि आगमिंसू ति वदन्ति। **अट्ठ सीलङ्गानी** ति अट्ठ उपोसथङ्गसीलानि। "सब्बालङ्कारविभूसिताया"ति इदं असमादिन्नुपोसथङ्गानं वसेन वुत्तं। **अमरवतियाराजधानिया** ति तावतिंसदेवनगरे। **अलङ्कतपटियत्तं** ति अलङ्कतकरणवसेन सब्बसज्जितं।

अधिकं कारं **अधिकारं**, अधिकं किरियं ति वुत्तं होति। **लोकविवरणं नाम पाटिहारियं अकंसू** ति एत्थ अनेकसहस्ससङ्ख्यस्स ओकासलोकस्स तन्निवासीसत्तलोकस्स च विवटभावकरणपाटिहारियं लोकविवरणं नाम। तं पन करोन्तो इद्धिमा अन्धकारं वा आलोकं करोति, पटिच्छन्नं वा विवटं, अनापाथं वा आपाथं करोति। कथं? अयञ्हि यथा पटिच्छन्नो पि दूरे ठितो पि अत्ता वा परो वा दिस्सति, एवं अत्तानं वा परं वा पाकटं कातुकामो पादकज्झानतो वुट्ठाय "इदं अन्धकारट्ठानं आलोकजातं होतू" ति वा "इदं पटिच्छन्नं विवटं होतू" ति वा "इदं अनापाथं आपाथं होतू" ति वा आवज्जेत्वा पुन पादकज्झानं समापज्जित्वा वुट्ठाय अधिट्ठाति। सह अधिट्ठानेन यथाधिट्ठितमेव होति। अपरे दूरे ठिता पि पस्सन्ति, सयम्पि पस्सितुकामो पस्सति भगवा विय देवोरोहणे। भगवा हि देवलोके अभिधम्मदेसनं निट्ठपेत्वा सङ्कस्सनगरं ओतरन्तो सिनेरुमुद्धनि ठत्वा पुरत्थिमं लोकधातुं
B 134 ओलोकेसि, अनेकानि चक्कवाळसहस्सानि विवटानि विय हुत्वा एकङ्गणं विय हुत्वा पकासिंसु[2]। यथा च पुरत्थिमेन, एवं पच्छिमेनपि उत्तरेनापि दक्खिणेनपि सब्बं विवटमद्दस। हेट्ठापि याव अवीचि उपरि च याव अकनिट्ठभवनं, ताव अद्दस

१. सामणकं परिक्खारं (स्या०) २. पकासयिंसु (सी०, क०)

मनुस्सापि देवे पस्सन्ति, देवापि मनुस्से। तत्थ नेव मनुस्सा उद्धं उल्लोकेन्ति, न देवा अधो ओलोकेन्ति, सब्बे सम्मुखसम्मुखाव अञ्ञमञ्ञं पस्सन्ति, तं दिवसं लोकविवरणं नाम अहोसि।

अपि च तम्बपण्णिदीपे तळङ्गरवासी[1] धम्मदिन्नत्थेरो पि इमं पाटिहारियं अकासि। सो किर एकदिवसं तिस्समहाविहारे चेतियङ्गणम्हि निसीदित्वा "तीहि भिक्खवे धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अपण्णकपटिपदं पटिपन्नो होती"ति **अपण्णकसुत्तं**[2] कथेन्तो हेट्ठामुखं बीजनिं अकासि, याव अवीचितो एकङ्गणं अहोसि, ततो उपरिमुखं अकासि, याव ब्रह्मलोका एकङ्गणं अहोसि। थेरो निरयभयेन तज्जेत्वा सग्गसुखेन च पलोभेत्वा धम्मं देसेसि। केचि सोतापन्ना अहेसुं, केचि सकदागामी अनागामी अरहन्तो ति एवं तस्मि दिवसेपि लोकविवरणं नाम अहोसि। इमे पन भिक्खू यथा असोको धम्मराजा असोकारामे ठितो चतुद्दिसा अनुविलोकेन्तो समन्ततो समुद्दपरियन्तं जम्बुदीपं पस्सति, चतुरासीति च विहारसहस्सानि उळाराय विहारमहपूजाय विरोचमानानि, एवं अधिट्ठहित्वा लोकविवरणं नाम पाटिहारियं अकंसु।

विहारमहपूजाया ति विहारमहसङ्खाताय पूजाय। **विभूति** ति सम्पत्ति। **एवरूपं पीतिपामोज्जं** ति ईदिसं परिच्चागमूलकं पीतिपामोज्जं। **मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरस्स भारमकासी** ति थेरस्स महानुभावत्ता "उत्तरिपि चे कथेतब्बं अत्थि, तम्पि सोयेव कथेस्सती"ति मञ्ञमानो भिक्खुसंघो रञ्ञा पुच्छितपञ्हस्स विसज्जनं थेरस्स भारमकासि। **सासनस्स दायादो होमि, न होमी**ति सासनस्स ञातको अब्भन्तरो होमि, न होमीति अत्थो। येसं सासने पब्बजिता पुत्तधीतरो न सन्ति, न ते सासने कतब्बकिच्चं अत्तनो भारं कत्वा वहन्ती ति इममत्थं सन्धाय थेरो एवमाह **"न खो महाराज एत्तावता सासनस्स दायादो होती"** ति **कथञ्चरहि भन्ते सासनस्स दायादो होती** ति एत्थ चरही ति निपातो अक्खन्ति दीपेति। इदं वुत्तं होति— B 135
यदि एवरूपं परिच्चागं कत्वापि सासनस्स दायादो न होति, अयं किं नाम कत्वा होती ति।

तिस्सकुमारस्स पब्बजितकालतो पभुती ति यदा च तिस्सकुमारो पब्बजितो, येन च कारणेन पब्बजितो, तं सब्बं वित्थारतो उत्तरि आवि भविस्सति। **सक्खसी** ति सक्खिस्ससि। **पामोज्जजातो** ति सञ्जातपामोज्जो। **पुत्तानं मनं लभित्वा** ति एत्थ पुत्तीपि सामञ्ञतो पुत्तसद्देन वुत्ता ति वेदितब्बा, पुत्तो च धीता च पुत्ता ति एवं एकसेसनयेन वा एवं वुत्तं ति दट्ठब्बं। धीतुसद्देन सह पयुज्जमानो हि पुत्तसद्दो एकोव अवसिस्सति, धीतुसद्दो निवत्तती ति सद्दसत्थविदू वदन्ति। सिक्खाय पतिट्ठापेसुं ति तस्मियेव सीममण्डले सिक्खासम्मुतिं दत्वा पाणातिपातावेरमणि आदीसु विकालभोजनावेरमणि परियोसानासु छसु सिक्खासु समादपनवसेन सिक्खाय पतिट्ठापेसुं। सट्ठिवस्साय पि हि सामणेरिया "पाणातिपातावेरमणिं द्वे वस्सानि अवीतिक्कम्म समादानं

१. बाळङ्गरवासी (क) २. अं०, १-१११ पिट्ठे।

समादियामी''ति आदिना[1] छ सिक्खायो समादियित्वा सिक्खितब्बायेव। न हि एतासु छसु सिक्खापदेसु द्वे वस्सानि असिक्खितसिक्खं सामणेरिं उपसम्पादेतुं वट्टति। छ वस्सानि अभिसेकस्स अस्सा ति **छब्बस्साभिसेको**, अभिसेकतो पट्ठाय अतिक्कन्त-छवस्सो ति वुत्तं होति।

सब्बं थेरवादं ति द्वे सङ्गीतियो आरुळ्हा पाळियेवेत्थ "थेरवादो''ति वेदितब्बा। सा हि महाकस्सपपभुतीनं महाथेरानं वादत्ता "थेरवादो''ति वुच्चति। **कोन्त पुत्ततिस्सत्थेरो** ति[2] एत्थ कोन्तसकुणियो नाम किन्नरजातियो। "तासु एकिस्सा कुच्छियं सयितो मनुस्सजातिको रञ्ञा पोसितो कोन्तपुत्ततिस्सत्थेरो नामा''ति तीसुपि **गण्ठिपदेसु** वुत्तं। **महावंसे**[3]पि चेतं वुत्तं—

"पुरे पाटलिपुत्तम्हा, वने वनचरो चरं।
कोन्तकिन्नरिया[4] सद्धिं, संवासं किर कप्पयि॥
तेन संवासमन्वाय, सा पुत्ते जनयी दुवे।
तिस्सो जेट्ठो कनिट्ठो तु, सुमित्तो नाम नामतो॥
महावरुणत्थेरस्स, काले पब्बजि सन्तिके।
B 136 अरहत्तं पापुणिंसु, छळभिञ्ञागुणं उभो'' ति॥

केचि पन एवं वदन्ति "कोन्ता[5] नाम कट्ठवाहनरञ्ञो वंसे जाता एका राजधीता। तं गरुळयन्तेन अरञ्ञगतं एको वनचरको आनेत्वा ताय सद्धिं संवासं कप्पेसि। सा तस्स उभो पुत्ते विजायि। तत्रायं जेट्ठको मातुनामेन कोन्तपुत्तो नाम जातो''ति। कट्ठवाहनरञ्ञो किर नगरे सब्बे पि विभवसम्पन्ना नदीपब्बतकीळादीसु गरुळसकुणसदिसं यन्तं कारेत्वा कट्ठवाहनराजा विय गरुळवाहनेन विचरन्ति।

ब्याधिपटिकम्मत्थं भिक्खाचारवत्तेन आहिण्डन्तो पसतमत्तं सप्पिं अलभित्वाति तदा किर जेट्ठस्स कोन्तपुत्ततिस्सत्थेरस्स कुच्छिवातो समुट्ठासि। तं[6] वाळ्हाय दुक्खवेदनाय पीळितं कनिट्ठो सुमित्तो नाम थेरो दिस्वा "किमेत्थ भन्ते लद्धुं वट्टती'' ति पुच्छि। तिस्सत्थेरो "आवुसो पसतमत्तं सप्पि लद्धुं वट्टती'' ति वत्वा रञ्ञो निवेदनं[7] तस्स गिलानपच्चयं पच्छाभत्तं सप्पिअत्थाय चरणञ्च पटिक्खिपित्वा "भिक्खाचारवेलायमेव पिण्डाय चरन्तेन तया यदि सक्का लद्धुं, एवं विचरित्वा यं लद्धं, तं आहरा'' ति आह। कनिट्ठो पि वुत्तनयेनेव भिक्खाचारवत्तेन चरन्तो पसतमत्तम्पि सप्पिं नालत्थ। सो पन कुच्छिवातो बलवतरो सप्पिघटसतेनापि वूपसमेतुं असक्कुणेय्यो अहोसि। थेरो तेनेव ब्याधिबलेन कालमकासि। केचि पन "विच्छिकनामकेन कीट-

१. वि० २-४२० पिट्ठे।
२. कुन्तपुत्ततिस्सत्थेरोति (सी०)
३. पञ्चमपरिच्छेदे।
४. कुन्तकिन्नरिया (सी०)
५. कुन्ता (सी०)
६. तङ्खणञ्ञेव (सी०)।
७. निवेसनं (क्व)।

विसेन डट्ठो थेरो तस्स विसवेगेन अधिमत्ताय दुक्खवेदनाय समन्नागतो तं वूपसमेतुं वुत्तनयेनेव पसतमत्तं सप्पिं अलभित्वा परिनिब्बुतो" ति वदन्ति। वुत्तञ्हेतं **महावंसे**[1]—

"पादे कीटविसेनासि, डट्ठो[2] जेट्ठो सवेदनो।
आह पुट्ठो कनिट्ठेन, भेसज्जं पसतं घतं॥
रञ्ञो निवेदनं[3] थेरो, गिलानपच्चयेपि च[4]।
सप्पिअत्थञ्च चरणं, पच्छाभत्तं पटिक्खिपि॥
पिण्डाय चे चरं सप्पिं, लभसे त्वं तमाहर। B 137
इच्चाह तिस्सत्थेरो सो, सुमित्तं थेरमुत्तमं॥
पिण्डाय चरता तेन, न लद्धं पसतं घतं।
सप्पिकुम्भसतेनापि, ब्याधि जातो असाधियो॥
तेनेव ब्याधिना थेरो, पत्तो आयुक्खयन्तिकं।
ओवदित्वप्पमादेन, निब्बातुं मानसं अका॥
आकासम्हि निसीदित्वा, तेजोधातुवसेन सो।
यथारुचि अधिट्ठाय, सरीरं परिनिब्बुतो॥
जाला सरीरा निक्खम्म, निमंसछारिकं डहि।
थेरस्स सकलं कायं, अट्ठिकानि तु नो डही" ति॥

अप्पमादेन ओवदित्वा ति "अम्हादिसानम्पि एवं पच्चया दुल्लभा, तुम्हे लभमानेसु पच्चयेसु अप्पमज्जित्वा समणधम्मं करोथा" ति एवं अप्पमादेन ओवदित्वा। **पल्लङ्केना** ति समन्ततो ऊरुबद्धासनेन। इत्थम्भूतलक्खणे चेतं करणवचनं। **तेजोधातुं समापज्जित्वा** ति तेजोधातुकसिणारम्मणं झानं समापज्जित्वा। **थेरस्स सक्कारं कत्वा** ति थेरस्स धातुसक्कारं कत्वा। **चतूसु द्वारेसु पोक्खरणियो कारापेत्वा भेसज्जस्स** पूरापेत्वा ति एकस्मिं द्वारे चतस्सो पोक्खरणियो कारापेत्वा तत्थ एकं पोक्खरणिं सप्पिस्स पूरापेत्वा एकं मधुनो, एकं फाणितस्स, एकं सक्कराय पूरापेसि। सेसद्वारेसु पि एवमेव कारापेसी ति वदन्ति।

सभायं सतसहस्सं ति नगरमज्झे विनिच्छयसालायं सतसहस्सं। इमिना सकलनगरतो समुट्ठितं आयं निदस्सेति। **पञ्चसतसहस्सानि रञ्ञो उप्पज्जन्ती** ति च रट्ठतो[5] उप्पज्जनकं आयं ठपेत्वा वुत्तं। **ततो** ति यथावुत्तपञ्चसतसहस्सतो। **निग्रोधत्थेरस्स देवसिकं सतसहस्सं विसज्जेसी** ति कथं पन थेरस्स सतसहस्सं विस्सज्जेसि? राजा किर दिवसस्स तिक्खत्तुं साटके परिवत्तेन्तो "थेरस्स चीवरं नीतं" ति पुच्छित्वा "आम नीतं" ति सुत्वाव परिवत्तेति। थेरो पि दिवसस्स तिक्खत्तुं तिचीवरं परिवत्तेति।

---

१. पञ्चमपरिच्छेदे
२. फुट्ठो (सी०)।
३. निवेसनं (क०)।
४. गिलानवत्ततोपि च (सी०)।
५. पररट्ठतो (स्या०)।

B 138 तस्स हि तिचीवरं हत्थिक्खन्धे ठपेत्वा पञ्चहि च गन्धसमुग्गसतेहि पञ्चहि च मालासमुग्गसतेहि सद्धिं पातोव आहरीयित्थ, तथा दिवा चेव सायञ्च। थेरो पि न भण्डिकं बन्धित्वा ठपेसि, सम्पत्तसब्रह्मचारीनं अदासि। तदा किर जम्बुदीपे भिक्खुसंघस्स येभुय्येन निग्रोधत्थेरस्सेव सन्तकं चीवरं अहोसि। एवं थेरस्स दिवसे दिवसे सतसहस्सं विसज्जेसि। **उळारो लाभसक्कारो** ति एत्थ लब्भति पापुणीयती ति लाभो, चतुन्नं पच्चयानमेतं अधिवचनं। सक्कच्चं कातब्बो दातब्बो ति सक्कारो, चत्तारो पच्चयायेव। पच्चया एव हि पणीतपणीता सुन्दरसुन्दरा अभिसङ्खरित्वा कता "सक्कारो" ति वुच्चन्ति। अथ वा परेहि कातब्बगारवकिरिया पुप्फादीहि पूजा वा सक्कारो।

दिट्ठिगतानी ति एत्थ दिट्ठियेव दिट्ठिगतं "गूथगतं मुत्तगतं[1], सङ्खारगतं" ति आदीसु[2] विय। गन्तब्बाभावतो वा दिट्ठिया गतमत्तं दिट्ठिगतं, दिट्ठिया गहणमत्तं ति अत्थो। दिट्ठिप्पकारो वा दिट्ठिगतं, दिट्ठिभेदो ति वुत्तं होति। लोकिया हि विधयुत्तगतप्पकारसद्दे समानत्थे इच्छन्ति। **न खो पनेतं सक्का इमेसं मज्झे वसन्तेन वूपसमेतुं** ति तेसञ्हि मज्झे वसन्तो तेसुयेव अन्तोगधत्ता आदेय्यवचनो न होति, तस्मा एवं चिन्तेसि। तदा तस्मिं ठाने वसन्तस्स सुखविहाराभावतो तं पहाय इच्छितब्बसुखविहारमत्तं गहेत्वा वुत्तं **"अत्तना फासुकविहारेन विहरितुकामो"** ति। **अहोगङ्गपब्बतं** ति[3] एवंनामकं पब्बतं। **धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेना** ति एत्थ **धम्मो** ति भूतं वत्थु। **विनयो** ति चोदना सारणा च। **सत्थुसासनं**ति ञत्तिसम्पदा अनुसावनसम्पदा च, तस्मा भूतेन वत्थुना चोदेत्वा सारेत्वा ञत्तिसम्पदाय अनुसावनसम्पदाय च उक्खेपनीयादिकम्मवसेन निग्गय्हमानापी ति वुत्तं होति। **अब्बुदं** थेननट्ठेन, **मलं** किलिट्ठभावकरणट्ठेन, **कण्टकं** विज्झनट्ठेन। **अग्गिं परिचरन्तो** ति अग्गिहुत्तका विय अग्गिं पूजेन्ति। **पञ्चातपे तप्पन्तो** ति चतूसु ठानेसु अग्गिं कत्वा मज्झे ठत्वा सूरियातपेन तप्पन्ति। **आदिच्चं अनुपरिवत्तन्तो** ति उदयकालतो पभुति सूरियं ओलोकयमाना यावत्थङ्गमना सूरियाभिमुखाव परिवत्तन्ति। **वोभिन्दिस्सामा ति पग्गण्हिंसू** ति विनासेस्सामा ति उस्साहमकंसु। **अविसहन्तो** ति असक्कोन्तो।

B 139 **सत्तदिवसेन रज्जं सम्पटिच्छा** ति सत्तदिवसे रज्जसुखं ताव अनुभव। **तमत्थं सञ्ञापेसी** ति कुक्कुच्चायितमत्थं बोधेसि। कथं सञ्ञापेसी ति आह "सो किरा" ति आदि। **चित्तरूपं** ति चित्तानुरूपं, यथाकामं ति वुत्तं होति। **किस्सा** ति केन कारणेन। **अरे त्वं नाम परिच्छिन्नमरणं** ति सत्तहि दिवसेहि परिच्छिन्नमरणं। **विस्सत्थो** ति[4] निरासङ्कचित्तो, मरणसङ्कारहितो निब्भयो ति वुत्तं होति। **अस्सासपस्सासनिबद्धं[5] मरणं पेक्खमाना** ति "अहो वताहं तदन्तरं जीवेय्यं, यदन्तरं अस्ससित्वा पस्ससामि पस्ससित्वा वा अस्ससामि, भगवतो सासनं मनसि करेय्यं, बहु वत मे कतं अस्सा" ति एवं मरणस्सतिया अनुयुञ्जनतो अस्सासपस्सासप्पवत्तिकालपटिबद्धं मरणं पेक्खमाना।

---

१. म० २-८७ पिट्ठे। २. खु० ७-९६ पिट्ठे।
३. अधोगङ्गं पब्बतं ति (स्या०)। ४. विस्सट्ठो ति (क)।
५. अस्सासपस्सासूपनिबद्धं (सी०, स्या०)।

तत्थ **अस्सासो** ति बहिनिक्खमननासवातो। **पस्सासो** ति अन्तोपविसनवातो। वुत्तविपरियायेनपि वदन्ति।

मिगवं निक्खमित्वा ति मिगमारणत्थाय "अरञ्ञे मिगपरियेसनं चरिस्सामी" ति निक्खमित्वा। (तत्थ मिगवं ति मिगानं वाननतो हेसनतो बाधनतो "मिगवं" ति लद्धसामञ्ञं मिगवं।)[1]**योनकमहाधम्मरक्खितत्थेरं** ति योनकविसये जातं इधागन्त्वा पब्बजितं धम्मरक्खितनामधेय्यं महाथेरं। **हत्थिनागेना** ति महाहत्थिना। महन्तपरियायो पि हि नागसद्दो ति वदन्ति। अहिनागादितो वा विसेसनत्थं "हत्थिनागेना" ति वुत्तं। **तस्सासयं** तस्स अज्झासयं। **तस्स पस्सन्तस्सेवा** ति अनादरे सामिवचनं, तस्मिं पस्सन्तेयेवा ति अत्थो। **आकासे उप्पतित्वा** ति एत्थ अयं विकुब्बनिद्धि न होती ति गिहिस्सपि इमं इद्धिपाटिहारियं दस्सेसि। सा हि "पकतिवण्णं विजहित्वा कुमारकवण्णं वा दस्सेति नागवण्णं वा, विविधम्पि सेनाब्यूहं दस्सेती" ति एवं आगता इद्धि पकतिवण्णविजहनविकारवसेन पवत्तत्ता विकुब्बनिद्धि नाम। अधिट्ठानिद्धिया पन पटिक्खेपो नत्थि। तथा च वक्खति **खुद्दकवत्थुक्खन्धकवण्णनायं**[2] "इद्धिपाटिहारियं ति एत्थ विकुब्बनिद्धिपाटिहारियं पटिक्खित्तं, अधिट्ठानिद्धि पन अप्पटिक्खित्ता ति वेदितब्बा" ति। **लग्गेत्वा** ति आकासे कायबन्धनं पसारेत्वा तत्थ चीवरं लग्गेत्वा।

छणवेसं ति तुट्ठिजननवेसं, उस्सववेसं ति अत्थो। **पटियादेसुं** ति "आगतकाले चीवरादीनं परियेसनं भारियं" ति पठममेव पत्तचीवरानि सम्पादेसुं। **पधानघरं** ति B 140
भावनानुयोगवसेन वीरियारम्भस्स अनुरूपं विवित्तसेनासनं। सोपी ति रञ्ञो भागिनेय्यं सन्धाय वुत्तं। **अनुपब्बजितो** ति उळारविभवेन खत्तियजनेन अनुगन्त्वा पब्बजितो। **गन्त्वा** ति इद्धिया गन्त्वा। **कुसलाधिप्पायो** ति मनापज्झासयो। **द्वेळ्हकजातो** ति "इमे भिक्खू न एकमग्गेन कथेन्ता" ति संसयमापन्नो। **एकेकं भिक्खु सहस्सपरिवारं** ति एकेकस्स एकेकसहस्सपरिच्छिन्नं भिक्खुपरिवारञ्च। **गण्हित्वा आगच्छथा** ति वुत्तेपि "सासनं पग्गण्हितुं समत्थो" ति वुत्तत्ता थेरा भिक्खू "धम्मकम्मं" ति मञ्ञमाना गता। ईदिसेसु हि ठानेसु कुक्कुच्चं न कातब्बं। कप्पियसासनञ्हेतं न गिहिकम्मपटिसंयुत्तं। **थेरो नागच्छी** ति किञ्चापि "राजा पक्कोसती" ति वुत्तेपि धम्मकम्मत्थाय आगन्तुं वट्टति, द्विक्खत्तुं पन पेसिते पि न आगतो किर। थेरो हि[3] सब्बत्थ विख्यातवसेन सम्भावनुप्पत्तितो सम्भावितस्स च उद्धं कत्तब्बकिच्चसिद्धितो असारुप्पवचनलेसेन न आगच्छी ति। **महल्लको नु खो भन्ते थेरो** ति किञ्चापि राजा थेरं दिट्ठपुब्बो, नामं पन सल्लक्खेतुं असक्कोन्तो एवं पुच्छी ति वदन्ति। वय्हं ति उपरि मण्डपसदिसं पदरच्छन्नं, सब्बपलिगुण्ठिमं वा छादेत्वा कतं सकटविसेसं वय्हं ति वदन्ति। **नावासङ्घाटं बन्धित्वा** ति एत्थ **नावा** ति पोतो। सो हि ओरतो पारं पकति गच्छतीति पोतो, सत्ते नेतीति नावा ति च वुच्चति। एकतो सङ्घटिता नावा नावसङ्घाटं तथा तं बन्धित्वा ति अत्थो।

---

१. (　　) नत्थि स्यामपोत्थके। २. वि० ट्ठ-४-४६ पिट्ठे। ३. किर थेरो ति (सी०)

सासनपच्चत्थिकानं बहुभावतो आह **"आरक्खं संविधाया"** ति। यं ति यस्मा, येन कारणेना ति अत्थो। "आगुं न करोतीति नागो" ति[1] वचनतो पापकरणाभावतो समणो इध नागो नामा ति मञ्ञमाना **"एको तं महाराज समणनागो दक्खिणहत्थे गण्हिस्सती"** ति ब्याकरिंसु। **अब्बाहिंसू** ति आकड्ढिंसु। "रञ्ञो हत्थग्गहणं लीळावसेन कतं विय होती ति कस्मा ति आदि चोदनं कतं" ति वदन्ति। बाहिरतो ति उय्यानस्स बाहिरतो। पस्सन्तानं अतिदुक्करं हुत्वा पञ्ञायतीति आह **"पदेसपथवीकम्पनं दुक्करं"** ति। अधिट्ठाने पनेत्थ विसुं दुक्करता नाम नत्थि। **सीमं अक्कमित्वा**

B 141 ति अन्तोसीमं सीमाय अब्भन्तरं अक्कमित्वा। अभिञ्ञापादकं ति अभिञ्ञाय पतिट्ठाभूतं। विकुब्बनिद्धिया एव पटिक्खित्तत्ता पथवीचलनं अधिट्ठहि। **रथस्स अन्तोसीमाय ठितो पादोव चली** ति एत्थ **पादो** ति रथचक्कं सन्धाय वुत्तं। तञ्हि रथस्स गमनकिच्चसाधनतो पादसदिसत्ता इध "पादो" ति वुत्तं। **सक्खती** ति सक्खिस्सति। **एतमत्थं** ति विना चेतनाय पापस्स असम्भवसङ्खातं अत्थं। **चेतनाहं** ति एत्थ "चेतनं अहं" ति पदच्छेदो कातब्बो। **चेतयित्वा** ति चेतनं पवत्तयित्वा। **दीपकतित्तिरो** ति अत्तनो निसिन्नभावस्स दीपनतो एवं लद्धनामो तित्तिरो। यं अरञ्ञं नेत्वा साकुणिको तस्स सद्देन आगतागते तित्तिरे गण्हाति।

तापसं पुच्छी ति अतीते किर एकस्मिं पच्चन्तगामे एको साकुणिको एकं दीपकतित्तिरं गहेत्वा सुट्ठु सिक्खापेत्वा पञ्जरे पक्खिपित्वा पटिजग्गति। सो तं अरञ्ञं नेत्वा तस्स सद्देन आगतागते तित्तिरे गण्हाति। तित्तिरो "मं निस्साय बहु मम ञातका नस्सन्ति, मय्हेतं पापं" ति निस्सद्दो अहोसि। सो तस्स निस्सद्दभावं ञत्वा वेळुपेसिकाय तं सीसे पहरति। तित्तिरो दुक्खातुरताय सद्दं करोति। एवं सो साकुणिको तं निस्साय तित्तिरे गहेत्वा जीविकं कप्पेसि। अथ सो तित्तिरो चिन्तेसि "इमे मरन्तू ति मय्हं चेतना नत्थि, पटिच्च कम्मं पन मं फुसति। मयि सद्दं अकरोन्ते हि एते नागच्छन्ति, करोन्तेयेवागच्छन्ति, आगतागते अयं गहेत्वा जीवितक्खयं पापेति, अत्थि नु खो एत्थ मय्हं पापं, नत्थी" ति। सो ततो पट्ठाय "को नु खो मे इमं कङ्खं छिन्देय्या" ति तथारूपं पण्डितं उपधारेन्तो चरति। अथेकदिवसं सो साकुणिको बहुके तित्तिरे गहेत्वा पच्छिं पूरेत्वा "पानियं पिविस्सामि" ति बोधिसत्तस्स तापसपब्बज्जाय पब्बजित्वा झानाभिञ्ञायो निब्बत्तेत्वा अरञ्ञे वसन्तस्स अस्समं गन्त्वा तं पञ्जरं बोधिसत्तस्स सन्तिके ठपेत्वा पानीयं पिवित्वा वालिकातले निपन्नो निद्दं ओक्कमि। तित्तिरो तस्स निद्दमोक्कन्तभावं ञत्वा "मम कङ्खं इमं तापसं पुच्छिस्सामि, जानन्तो मे कथेस्सती" ति पञ्जरे निसिन्नोयेव—

"ञातको नो निसिन्नो ति, बहु आगच्छते जनो।
पटिच्च कम्मं फुसति, तस्मिं मे सङ्कते मनो" ति[2]—

---

१. खु०, ८, ८३ पिट्ठे। २. खु० ५-१० पिट्ठे जातके।

तापसं पुच्छि। तस्सत्थो—भन्ते सचाहं सद्दं न करेय्यं, अयं तित्तिरजनो न आगच्छेय्य, B 142
मयि पन सद्दं करोन्ते "ञातको नो निसिन्नो" ति अयं बहुजनो आगच्छति, तं आगतागतं लुद्दो गहेत्वा जीवितक्खयं पापेन्तो मं पटिच्च मं निस्साय एतं पाणातिपात-कम्मं फुसति पटिलभति विन्दति, तस्मिं मं पटिच्च कते पापे "मम नु खो एतं पापं" ति एवं मे मनो सङ्कति परिसङ्कति कुक्कुच्चं आपज्जती ति।

न पटिच्च कम्मं फुसती ति आदिकाय पन तापसेन वुत्तगाथाय अयमत्थो–यदि तव पापकिरियाय मनो न पदुस्सति, तन्निन्नो तप्पोणो न होति, एवं सन्ते लुद्देन तं पटिच्च कतम्पि पापकम्मं तं न फुसति न अल्लीयति। पापकिरियाय हि अप्पोस्सुक्कस्स निरालयस्स भद्रस्स परिसुद्धस्स सतो तव पाणातिपातचेतनाय अभावा तं पापं न उपलिम्पति, तव चित्तं न अल्लीयती ति।

समयं उग्गण्हापेसी ति अत्तनो सम्मासम्बुद्धस्स लद्धिं उग्गण्हापेसि। **साणिपाकारं परिक्खिपापेत्वा** ति एत्थ **साणिपाकारं** ति करणत्थे उपयोगवचनं, अत्तानञ्च थेरञ्च यथा ते भिक्खू न पस्सन्ति, एवं साणिपाकारेन समन्ततो परिक्खिपापेत्वा ति अत्थो, साणिपाकारं वा समन्ततो परिक्खिपापेत्वा ति एवमेत्थ अत्थो गहेतब्बो। **साणिपा-कारन्तरे** ति साणिपाकारस्स अब्भन्तरे। **एकलद्धिके** ति समानलद्धिके। किं वदति सीलेना ति **किं वादी**। अथ वा को कतमो वादो किं वादो, सो एतस्स अत्थीति **किं वादी** सस्सतं अत्तानञ्च लोकञ्च वदन्ति पञ्ञपेन्ति सीलेना ति **सस्सतवादिनो**। अथ वा वदन्ति एतेना ति वादो, दिट्ठिया एतं अधिवचनं। सस्सतो वादो सस्सतवादो, सो एतेसं अत्थीति **सस्सतवादिनो**, सस्सतदिट्ठिनो ति अत्थो। अथ सस्सतो वादो एतेसमत्थी ति कस्मा वुत्तं, तेसञ्हि अत्ता लोको च सस्सतो ति अधिप्पेतो, न वादो ति? सच्चमेतं। सस्सतसहचरितताय पन वादो पि सस्सतो ति वुत्तो यथा "कुन्ता पचरन्ती" ति। सस्सतो ति वादो एतेसं ति वा इतिसद्दलोपो दट्ठब्बो। ये रूपादीसु अञ्ञतरं अत्ता ति च लोको ति च गहेत्वा तं सस्सतं अमतं निच्चं धुवं पञ्ञपेन्ति, ते सस्सतवादिनो ति वेदितब्बा। वुत्तञ्हेतं **निद्देसे**[1] **पटिसम्भिदायञ्च**—

"रूपं अत्ता चेव लोको च सस्सतो चा ति अत्तानञ्च लोकञ्च पञ्ञपेन्ति। वेदनं, सञ्ञं, B 143
सङ्खारे, विञ्ञाणं अत्ता चेव लोको च सस्सतो चा ति अत्तानञ्च लोकञ्च पञ्ञपेन्ती" ति।

अयं च अत्थो "रूपं अत्ततो समनुपस्सति, वेदनं, सञ्ञं, सङ्खारे, विञ्ञाणं अत्ततो समनुपस्सती" ति इमिस्सा पञ्चविधाय सक्कायदिट्ठिया वसेन वुत्तो। "रूपवन्तं अत्तानं ति आदिकाय पन पञ्चदसविधाय सक्कायदिट्ठिया वसेन चत्तारो चत्तारो खन्धे "अत्ता" ति गहेत्वा तदञ्ञो लोको ति पञ्ञपेन्ती ति अयं च अत्थो लब्भति। तथा एकं खन्धं 'अत्ता" ति गहेत्वा अञ्ञो अत्तनो उपभोगभूतो लोको ति, ससन्ततिपतिते

१. जातक-ट्ठ-३-६० पिट्ठे पि पस्सितब्बं।

वा खन्धे "अत्ता" ति गहेत्वा तदञ्ञो लोको ति पञ्ञपेन्ती ति एवमेत्थ अत्थो वेदितब्बो। सत्तेसु सङ्खारेसु वा एकच्चं सस्सतं एतस्सा ति एकच्चसस्सतो, एकच्चसस्सतवादो। सो एतेसमत्थीति **एकच्चसस्सतिका**। एकच्चसस्सतवादिनो। ते दुविधा होन्ति सत्तेकच्चसस्सतिका सङ्खारेकच्चसस्सतिका ति। तत्थ "इस्सरो निच्चो, अञ्ञे सत्ता अनिच्चा" ति एवं पवत्तवादा **सत्तेकच्चसस्सतिका** सेय्यथापि इस्सरवादा "निच्चो ब्रह्मा, अञ्ञे सत्ता अनिच्चा" ति एवं पवत्तवादापि सत्तेकच्चसस्सतिका ति वेदितब्बा। "परमाणवो निच्चा, द्विअणुकादयो अनिच्चा" ति एवं पवत्तवादा **सङ्खारेकच्चसस्सतिका** सेय्यथापि कणादवादादयो[1]। "चक्खादयो अनिच्चा, विञ्ञाणं निच्चं" ति एवं वादिनो पि सङ्खारेकच्चसस्सतिका ति वेदितब्बा।

ननु "एकच्चे धम्मा सस्सता, एकच्चे असस्सता" ति एतस्मिं वादे चक्खादीनं असस्सतभावसन्निट्ठानं यथासभावावबोधो एव, तयिदं कथं मिच्छादस्सनं ति? को वा एवमाह "चक्खादीनं असस्सतभावसन्निट्ठानं मिच्छादस्सनं" ति। असस्सतेसुयेव पन केसञ्चि धम्मानं सस्सतभावाभिनिवेसो इध मिच्छादस्सनं। तेन पन एकवारे पवत्तमानेन चक्खादीनं असस्सतभावावबोधो विदूसितो संसट्ठभावतो,[2] विसंसट्ठो विय
B 144 सब्बो सप्पिमण्डो[3] सकिच्चकरणासमत्थताय सम्मादस्सनपक्खे ठपेतब्बतं नारहती ति। असस्सतभावेन निच्छिता पि वा चक्खुआदयो समारोपितजीवसभावा एव दिट्ठिगतिकेहि गय्हन्ती ति तदवबोधस्स मिच्छादस्सनभावो न सक्का निवारेतुं। एवञ्च कत्वा असङ्खताय च सङ्खताय च धातुया वसेन यथाक्कमं एकच्चे धम्मा सस्सता, एकच्चे असस्सता ति एवं पवत्तो विभज्जवादा पि एकच्चसस्सतवादो आपज्जतीति एवं पकारा चोदना अनवकासा होति अविपरीतधम्मसभावसम्पटिपत्तिभावतो। कामञ्चेत्थ पुरिमसस्सतवादेपि असस्सतानं धम्मानं सस्सता ति गहणं विसेसतो मिच्छादस्सनं, सस्सतानं पन सस्सता ति गाहो न मिच्छादस्सनं यथा सभावग्गहणभावतो। असस्सतेसुयेव पन केचिदेव धम्मा सस्सता ति गहेतब्बधम्मेसु विभागप्पवत्तिया इमस्स वादस्स वादन्तरता वुत्ता। न चेत्थ समुदायन्तोगधत्ता एकदेसस्स सप्पदेससस्सतग्गाहो निप्पदेससस्सतग्गाहे समोधानं गच्छतीति सक्का वत्तुं वादितब्बिसयविसेसवसेन[4] वादद्वयस्स पवत्तत्ता। अञ्ञे एव हि दिट्ठिगतिका "सब्बे धम्मा सस्सता" ति अभिनिविट्ठा, अञ्ञे एकच्चसस्सता ति सङ्खारानं अनवसेसपरियादानं एकदेसपरिग्गहो च वादद्वयस्स परिब्यत्तोयेवा ति।

अन्तानन्तिका ति एत्थ अमति गच्छति एत्थ सभावो ओसानं ति अन्तो, मरियादा। तप्पटिसेधेन अनन्तो। कस्स पनायं अन्तानन्तो ति? लोकीयति संसार-

---

१. कणादा (सी०) अञ्ञाणवादा (स्या०) काणादि (क०) उपरिपण्णासके पञ्चत्तयसुतटीकायं पस्सितब्बं।

२. असंसट्ठभावतो (सी०, क०)

३. सप्पिपिण्डो (सी०, क०)

४. वादीतब्बिसयविसेसवसेन (क), वादिनो तब्बिसयविसेसवसेन (?)

निस्सरणत्थिकेहि दिट्ठिगतिकेहि, लोकीयति वा एत्थ तेहि पुञ्ञापुञ्ञं तब्बिपाको चाति लोको ति सङ्खयं गतस्स पटिभागनिमित्तादिसभावस्स अत्तनो। अन्तो च अनन्तो च नेवन्तनानन्तो चाति अन्तानन्तो सामञ्ञनिद्देसेन, एकसेसेन वा "नामरूपपच्चया सळायतनं" ति आदीसु विय। अन्तानन्तसहचरितो वादो अन्तानन्तो यथा "कुन्ता पचरन्ती" ति। अन्तानन्तसन्निस्सयो वा यथा "मञ्चा उक्कुट्ठिं करोन्ती" ति। सो एतेसमत्थीति अन्तानन्तिका, अन्तानन्तवादिनो। "अन्तवा अयं लोको, अनन्तो अयं लोको, अन्तवा च अयं लोको अनन्तो च, नेवायं लोको अन्तवा न पनानन्तो" ति एवं अन्तं वा अनन्तं वा अन्तानन्तं वा नेवन्तनानन्तं वा आरब्भ पवत्तवादा ति अत्थो। चतुब्बिधा हि अन्तानन्तवादिनो अन्तवादी अनन्तवादी अन्तानन्तवादी नेवन्तना- B 145
नन्तवादी ति। तथा हि कोचि पटिभागनिमित्तं चक्कवाळपरियन्तं आवड्ढेत्वा तं "लोको" ति गहेत्वा अन्तसञ्ञी लोकस्मिं होति। चक्कवाळपरियन्तं कत्वा वड्ढितकसिणे पन अनन्तसञ्ञी होति। उद्धमधो अवड्ढेत्वा पन तिरियं वड्ढेत्वा उद्धमधो अन्तसञ्ञी तिरियं अनन्तसञ्ञी होति। कोचि पन यस्मा लोकसञ्ञितो अत्ता अधिगतविसेसेहि महेसीहि कदाचि अनन्तो सक्खिदिट्ठो अनुसुय्यति, तस्मा नेवन्तवा। यस्मा पन तेहियेव कदाचि अन्तवा सक्खिदिट्ठो अनुसुय्यति, तस्मा न पन अनन्तो ति एवं नेवन्तनानन्तसञ्ञी लोकस्मिं होति। केचि पन यदि पनायं अत्ता अन्तवा सिया, दूरदेसे उपपज्जमानानुस्सरणादिकिच्चनिप्फत्ति न सिया। अथ अनन्तो इध ठितस्स देवलोकनिरयादीसु सुखदुक्खानुभवनम्पि सिया। सचे पन अन्तवा च अनन्तो च, तदुभयपटिसेधदोससमायोगो, तस्मा अन्तवा अनन्तो ति च अब्याकरणीयो अत्ता ति एवं तक्कनवसेन नेवन्तनानन्तसञ्ञी होती ति वण्णयन्ति।

एत्थ च युत्तं ताव पुरिमानं तिण्णं वादीनं अन्तञ्च अनन्तञ्च अन्तानन्तञ्च आरब्भ पवत्तवादत्ता अन्तानन्तिकत्तं, पच्छिमस्स पन तदुभयपटिसेधनवसेन पवत्तवादत्ता कथं अन्तानन्तिकत्तं ति ? तदुभयपटिसेधनवसेन पवत्तवादत्ता एव। यस्मा अन्तानन्त-पटिसेधवादो पि अन्तानन्तविसयो एव तं आरब्भ पवत्तत्ता। एतदत्थमेव हि आरब्भ "पवत्तवादा" ति हेट्ठा वुत्तं, एवं सन्तेपि युत्तं ताव पच्छिमवादद्वयस्स अन्तानन्तिकत्तं, अन्तानन्तानं वसेन उभयविसयत्ता एतेसं वादस्स, पुरिमपादद्वयस्स पन कथं विसुं अन्तानन्तिकत्तं ति ? उपचारवुत्तिया। समुदितेसु हि अन्तानन्तवादेसु पवत्तमानो अन्तानन्तिकसद्दो तत्थ निरुळ्हताय पच्चेकम्पि अन्तानन्तवादीसु पवत्तति यथा अरूपज्झानेसु पच्चेकं अट्ठविमोक्खपरियायो, यथा च लोके सत्तिसयो ति।

अमराविक्खेपिका ति एत्थ न मरति न उपच्छिज्जतीति अमरा। का सा ? "एवं ति पि मे नो, तथातिपि मे नो, अञ्ञथातिपि मे नो, नोतिपि मे नो, नो नोतिपि मे नो" ति[1] एवं पवत्तवादवसेन परियन्तरहिता दिट्ठिगतिकस्स दिट्ठि चेव वाचा च। "एवं ति पि मे नो" ति आदिना विविधो नानप्पकारो खेपो परवादीनं खिपनं विक्खेपो, अमराय दिट्ठिया वाचाय वा विक्खेपो अमराविक्खेपो, सो एतेसमत्थी ति B 146
अमराविक्खेपिका। अथ वा अमराय दिट्ठिया वाचाय विक्खिपन्तीति अमराविक्खेपिनो,

अमराविक्खेपिनो एव **अमराविक्खेपिका**। अथ वा अमरा नाम पच्छजाति, सा उम्मुज्जननिमुज्जनादिवसेन उदके सन्धावमाना गहेतुं न सक्का, एवमेव अयम्पि वादो एकस्मिं सभावे अनवट्ठानतो इतो चितो च सन्धावति, गाहं न उपगच्छतीति अमराय विक्खेपो विया ति अमराविक्खेपो ति वुच्चति। अयञ्हि अमराविक्खेपिको "इदं कुसलं" ति वा "अकुसलं" ति वा पुट्ठो न किञ्चि ब्याकरोति। "इदं कुसलं" ति वा पुट्ठो "एवं ति पि मे नो" ति वदति। ततो "किं अकुसलं" ति वुत्ते "तथातिपि मे नो"ति वदति। "किं उभयतो अञ्ञथा"ति पि वुत्ते "अञ्ञथातिपि मे नो"ति वदति। ततो "तिविधेनपि न होति, किं ते लद्धी"ति वुत्ते "नो तिपि मे नो"ति वदति। ततो "किं नो नो ते लद्धी"ति वुत्ते "नो नोतिपि मे नो"ति वदति। एवं विक्खेपमेव आपज्जति, एकमेकस्मिम्पि पक्खे न तिट्ठति। ततो "अत्थि परो लोको"ति आदिना पुट्ठोपि एवमेव विक्खिपति, न एकस्मिं पक्खे तिट्ठति। सो वुत्तप्पकारो अमराविक्खेपो एतेसमत्थीति अमराविक्खेपिका।

ननु चायं सब्बोपि अमराविक्खेपिको कुसलादयो धम्मे परलोकत्थिकादीनि च यथाभूतं अनवबुज्झमानो तत्थ तत्थ पञ्हं पुट्ठो पुच्छाय विक्खेपनमत्तं आपज्जति, तस्स कथं दिट्ठिगतिकभावो। न हि अवत्तुकामस्स विय पुच्छितं अजानन्तस्स विक्खेपकरणमत्तेन दिट्ठिगतिकता युत्ता ति? वुच्चते—न हेव खो पुच्छाय विक्खेपकरणमत्तेन तस्स दिट्ठिगतिकता, अथ खो मिच्छाभिनिवेसवसेन सस्सताभिनिवेसतो मिच्छाभिनिविट्ठोयेव हि पुग्गलो मन्दबुद्धिताय कुसलादिधम्मे परलोकत्थिकादीनि च याथावतो असम्पटिपज्जमानो अत्तना अविञ्ञातस्स अत्थस्स परं विञ्ञापेतुं असक्कुणेय्यताय मुसावादादिभयेन च विक्खेपं आपज्जतीति। तथा च वुत्तं "सत्तेव उच्छेददिट्ठिया, सेसा सस्सतदिट्ठियो" ति। अथ वा पुञ्ञपापानं तब्बिपाकानञ्च अनवबोधेन असद्दहनेन च तब्बिसयाय पुच्छाय विक्खेपकरणंयेव सुन्दरं ति खन्ति रुचिं उप्पादेत्वा अभिनिविसन्तस्स उप्पन्ना विसुंयेव चेसा एका दिट्ठि सत्तभङ्गदिट्ठि वियाति दट्ठब्बं। ततोयेव च वुत्तं "परियन्तरहिता दिट्ठिगतिकस्स दिट्ठि चेव वाचा चा"ति।

B 147 **अधिच्चसमुप्पन्निका** ति एत्थ अधिच्च यदिच्छकं यं किञ्चि कारणं विना समुप्पन्नो अत्ता च लोको चाति दस्सनं अधिच्चसमुप्पन्नं। अत्तलोकसञ्ञितानञ्हि खन्धानं अधिच्चुप्पत्तिआकारारम्मणं दस्सनं तदाकारसन्निस्सयवसेन पवत्तितो तदाकारसहचरितताय च अधिच्चसमुप्पन्नं ति वुच्चति यथा "मञ्चा घोसन्ति, कुन्ता पचरन्ती"ति च। तं एतेसमत्थीति अधिच्चसमुप्पन्निका।

सञ्ञीवादा ति सञ्ञी वादो एतेसमत्थीति सञ्ञीवादा "बुद्धं अस्स अत्थीति बुद्धो"ति यथा। अथ वा सञ्ञीति पवत्तो वादो सञ्ञी सहचरणनयेन। सञ्ञी वादो येसं ते सञ्ञीवादा। "रूपी अत्ता होति अरोगो परं मरणा, सञ्ञीति नं पञ्ञपेन्ति, अरूपी अत्ता होति, रूपी च अरूपी च अत्ता होति, नेव रूपी नारूपी च अत्ता होति। अन्तवा अत्ता होति, अनन्तवा अत्ता होति, अन्तवा च अनन्तवा च अत्ता होति,

नेवन्तवा नानन्तवा अत्ता होति। एकत्तसञ्ञी अत्ता होति, नानत्तसञ्ञी अत्ता होति, परित्तसञ्ञी अत्ता होति, अप्पमाणसञ्ञी अत्ता होति। एकन्तसुखी अत्ता होति, एकन्तदुक्खी अत्ता होति। सुखदुक्खी अत्ता होति, अदुक्खमसुखी अत्ता होति अरोगो परं मरणा, सञ्ञीति नं पञ्ञपेन्ती"ति[१] एवं सोळसविधेन विभत्तवादानमेतं अधिवचनं।

असञ्ञीवादा नेवसञ्ञीनासञ्ञीवादा च सञ्ञीवादे वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। केवलञ्हि "सञ्ञी अत्ता"ति गण्हन्तानं वसेन सञ्ञीवादा वुत्ता, "असञ्ञी"ति च नेवसञ्ञीनासञ्ञी"ति च गण्हन्तानं वसेन असञ्ञीवादा च नेवसञ्ञीनासञ्ञीवादा च वुत्ता ति वेदितब्बा। तत्थ असञ्ञीवादा रूपी अत्ता होति आरोगो परं मरणा, असञ्ञीति नं पञ्ञपेन्ति, अरूपी अत्ता होति, रूपी च अरूपी च अत्ता होति, नेवरूपीनारूपी अत्ता होति, अन्तवा अत्ता होति, अनन्तवा अत्ता होति, अन्तवा च अनन्तवा च अत्ता होति, नेवन्तवा नानन्तवा अत्ता होति अरूगो परं मरणा, असञ्ञीति नं पञ्ञपेन्ती"ति एवं अट्ठविधेन विभत्ता। नेवसञ्ञीनासञ्ञीवादापि एवमेव "रूपी अत्ता होति आरोगो परं मरणा, नेवसञ्ञीनासञ्ञीति नं पञ्ञपेन्ती"ति आदिना[२] अट्ठविधेन विभत्ताति वेदितब्बा।

उच्छेदवादा ति "अयं अत्ता रूपी चातुमहाभूतिको मातापेत्तिकसम्भवो कायस्स भेदा उच्छिज्जति विनस्सति, न होति परं मरणा" ति[३] एवमादिना नयेन पवत्तं उच्छेददस्सनं उच्छेदो सहचरणनयेन। उच्छेदो वादो येसं ते उच्छेदवादा, उच्छेदं वदन्तीति वा उच्छेदवादा। वा एतेसमत्थीति उच्छेदं वदन्तीति वा उच्छेदवादा। B 148

दिट्ठधम्मनिब्बानवादा ति एत्थ दिट्ठधम्मो नाम दस्सनभूतेन ञाणेन उपलद्धधम्मो, पच्चक्खधम्मोति अत्थो। तत्थ तत्थ पटिलद्धत्तभावस्सेतं अधिवचनं। दिट्ठधम्मे निब्बानं दिट्ठधम्मनिब्बानं, इमस्मिं येव अत्तभावे दुक्खवूपसमन्ति अत्थो। तं वदन्तीति दिट्ठधम्मनिब्बानवाद। ते पन "यतो खो भो अयं अत्ता पञ्चहि कामगुणेहि समप्पितो समङ्गीभूतो परिचारेति, एत्तावता खो भो अयं अत्ता परमदिट्ठधम्मनिब्बानप्पत्तो होती"ति[४], एवमादिना नयेन दिट्ठेव धम्मे निब्बानं पञ्ञपेन्ति। ते हि मन्धातुकामगुण सदिसे मानुसके कामगुणे, परनिम्मितवसवत्तिदेवराजस्स कामगुणसदिसे दिब्बे च कामगुणे उपगतानं दिट्ठेव धम्मे निब्बानप्पत्तिं वदन्ति।

विभज्जवादीति वेरञ्जकण्डे आगतनयेनेव वेनयिकादिभावं विभज्ज वदतीति विभज्जवादी। तत्थ हि भगवता "अहञ्हि ब्राह्मण विनयाय धम्मं देसेमि रागस्सा"ति आदिं वत्वा "नो च खो यं त्वं सन्धाय वदेसी"ति आदिना वेरञ्जब्राह्मणस्स अत्तनो वेनयिकादिभावो विभज्जवुत्तो ति। अपि च सोमनस्सादीनं[५] चीवरादीनञ्च सेवितब्बा-

१. दी० १-२९ पिट्ठे। २. दी० १-३० पिट्ठे।
३. दी० १-३० पिट्ठे। ४. दी० १-३३ पिट्ठे।
५. अपि च खो मनुस्सादीनं (सो०), अपि च सो मनुस्सादीणं (स्या०)

सेवितब्बभावं विभज्ज वदतीति **विभज्जवादी**, सस्सतुच्छेदवादे वा विभज्जवदतीति विभज्जवादी, 'सस्सतो अत्ता च लोको चा" ति आदीनं ठपनीयानं पञ्हानं ठपनतो रागादिखयसङ्खातस्स सस्सतस्स रागादिकायदुच्चरितादिउच्छेदस्स वचनतो विभज्ज-वादी, सस्सतुच्छेदभूते उभो अन्ते अनुपगम्म मज्झिमपटिपदाभूतस्स पटिच्चसमुप्पादस्स देसनतो विभज्जवादी, भगवा। परप्पवादं मद्दन्तोति तस्मिं ततियसङ्गीतिकाले उप्पन्नं वादं, ततो पट्ठाय याव सद्धम्मन्तरधाना आयतिं उप्पज्जनकवादञ्च सन्धाय वुत्तं। तस्मिञ्हि समागमे अयं थेरो यानि च तदा उप्पन्नानि वत्थूनि, यानि च आयतिं
B 149 उप्पज्जिस्सन्ति, सब्बेसम्पि तेसं पटिबाहनत्थं सत्थारा दिन्ननयवसेनेव तथागतेन ठपित-मातिकं विभजन्तो सकवादे पञ्च सुत्तसतानि, परवादे पञ्चाति सुत्तसहस्सं आहरित्वा तदा उप्पन्नवादस्स मद्दनतो परप्पवादमद्दनं आयतिं उप्पज्जनकवादानं पटिसेधनलक्खण-भावतो आयतिं पटिसेधलक्खणं[1] कथावत्थुप्पकरणं अकासि।

इति समन्तपसादिकाय विनयट्ठकथाय सारत्थदीपनियं ततियसङ्गीति-कथावण्णना समत्ता।

आचरियपरम्परकथावण्णना

"केनाभतं" ति पञ्हं विभज्जेन्तेन जम्बुदीपे ताव आचरियपरम्परा याव ततियसङ्गीति, ताव दस्सेत्वा इदानि सीहळदीपे आचरियपरम्परं दस्सेतुं "**ततियसङ्ग-हतोपन उद्धं**" ति आदि आरद्धं। **इमं दीपं** ति इमं तम्बपण्णिदीपं। कञ्चि कालं ति किस्मिञ्चि काले। **पोराणा** ति अट्ठकथाचरिया। **भद्दनामो** ति भद्दसालत्थेरो। नामस्स एकदेसेनपि हि वोहारो दिस्सति "देवदत्तो दत्तो" ति यथा। आगुं न करोन्तीति **नागा**। विनयपिटकं वाचयिंसूति सम्बन्धो। **तम्बपण्णिया** ति भुम्मवचनं। निकाये पञ्च वाचेसुं ति विनयाभिधम्मवज्जे दीघनिकायादिके पञ्च निकाये च वाचेसुं। **सत्त चेव पकरणे** ति धम्मसङ्गणीविभङ्गादिके सत्त अभिधम्मप्पकरणे च वाचेसुं ति अत्थो। असनि विय सिलुच्चये किलेसे मेधति हिंसती ति मेधा। खिप्पं गहणधारणट्ठेन वा मेधा, पञ्ञा, सा एतस्स अत्थीति **मेधावी**। तिपेटको ति तीणि पिटकानि एतस्स अत्थी ति तिपेटको, तेपिटको ति वुत्तं होति, तिपिटकपरियत्तिधरो ति अत्थो। तारकानं राजा ति **तारकराजा**, चन्दिमा। **अतिरोचथा** ति अतिविय विरोचित्थ। **पुप्फनामो** ति महा-पदुमत्थेरो। **सद्धम्मवंसकोविदो** ति सद्धम्मतन्तिया कोविदो। **पुप्फनामो** ति सुमन-त्थेरो। **जम्बुदीपे पतिट्ठितो** ति सुमनत्थेरो किर एकस्मिं समये सीहळदीपम्हि सासने ओसक्कमाने जम्बुदीपं गन्त्वा उग्गण्हित्वा सासनं अनुरक्खन्तो तत्थेव पतिट्ठासि। **मग्गकोविदा** ति सग्गमग्गमोक्खमग्गेसु कोविदा।

---

१. उप्पज्जनलक्खणं (स्या०)

भारं कत्वा ति तेसं भिक्खूनं सासनं भारं कत्वा, पटिबद्धं कत्वा ति अत्थो। B 150
"ते ते भिक्खू तत्थ तत्थ पेसेसी" ति सङ्खेपतो वुत्तमेवत्थं वित्थारेत्वा दस्सेन्तो आह **"मज्झन्तिकत्थेरं कस्मीरगन्धाररट्ठं पेसेसी"** ति आदि। **महिंसकमण्डलं ति**[1] अन्धकरट्ठं वदन्ति। **वनवासिं** ति वनवासिरट्ठं। अत्ता पञ्चमो एतेसं ति **अत्तपञ्चमा,** तं तं दिसाभागं पञ्च पञ्चेव भिक्खू अगमंसू ति वुत्तं होति।

इदानि तत्थ तत्थ गतानं थेरानं किच्चानुभावं दस्सेतुकामो मज्झन्तिकत्थेरस्स गतट्ठाने किच्चं ताव दस्सेन्तो **"तेन खो पन समयेन कस्मीरगन्धाररट्ठे"** ति आदिमाह। करकवस्सं ति हिमपातनकवस्सं। **हरापेत्वा** ति उदकोघेन हरापेत्वा। **अरवाळदहपिट्ठियं** ति अरवाळदहस्स उदकपिट्ठियं। **छिन्नभिन्नपटधरो** ति सत्थकेन छिन्नं रङ्गेन भिन्नं वण्णविकारमापन्नं पटं धारेती ति छिन्नभिन्नपटधरो। अथ वा सत्थकेन छिन्नानं गिहिवत्थविसभागानं कासावानं धारणतो **छिन्नभिन्नपटधरो। भण्डू** ति मुण्डको। **कासाववसनो** ति कासाववत्थनिवत्थो। **मक्खं असहमानो** ति थेरं पटिच्च अत्तनो सन्ताने उप्पन्नं परेसं गुणम.खनलक्खणं मक्खं असहमानो सन्धारेतुं अधिसहितुं वूपसमेतुं असक्कोन्तो। **भिंसकानी** ति भेरवारम्मणानि। तानि दस्सेतुं **"ततो ततो भुसा वाता वायन्ती"** ति आदिमाह। **भुसावाता** ति रुक्खभेदनपब्बतकूटनिपातनसमत्था बलववाता। **असनियो फलन्ती** ति असनियो भिज्जन्ति, पतन्ती ति वुत्तं होति। **पहरणवुट्ठियो** ति अनेकप्पकारा आवुधवुट्ठियो। **निद्धमथा** ति गहेत्वा अपनेथ। भिंसनकं ति नागराजस्स कायिकवाचसिकपयोगजनितभयनिमित्तं विप्पकारं।

मे भयभेरवं जनेतुं पटिबलो न अस्स न भवेय्या ति सम्बन्धो। तत्थ **भयभेरवं** नाम खुद्दानुखुद्दकं भयं। अथ वा भयं ति चित्तुत्रासभयं, पटिघभयस्सेतं अधिवचनं। भेरवं ति भयजनकमारम्मणं। **सचे पि त्वं महिं सब्बं** ति सचे पि त्वं महानाग सब्बं महिं समुद्देन सह **ससमुद्दं** पब्बतेन सह **सपब्बतं** उक्खिपित्वा **ममूपरि** मय्हं सीसोपरि खिपेय्यासी ति अत्थो। मे भयभेरवं जनेतुं नेव सक्कुणेय्यासी ति सम्बन्धो। **अञ्ञदत्थु** ति एकंसेन। **तवेवस्स विघातो उरगाधिपा** ति उरगानं नागानं अधिपति राज तव एव B 151
विघातो दुक्खं विहिंसा अस्स भवेय्या ति अत्थो।

धम्मिया कथाय सन्दस्सेत्वा ति आदीसु तङ्खणानुरूपाय[2] धम्मदेसनाय दिट्ठधम्मसम्परायिकं अत्थं सन्दस्सेत्वा कुसले धम्मे **समादपेत्वा** गण्हापेत्वा तत्थ च नं **समुत्तेजेत्वा** सउस्साहं कत्वा ताय च सउस्साहताय अञ्ञेहि च विज्जमानगुणेहि **सम्पहंसेत्वा** तोसेत्वा ति अत्थो। थेरेन कतं नागानुसासनं दस्सेन्तो **"अथायस्मा"** ति आदिमाह। तत्थ **इतो उद्धं यथा पुरे** ति यथा तुम्हे इतो पुरे सद्धम्मसवनुप्पत्तिविरहितकाले परस्स कोधं उप्पादयित्थ, इदानि इतो पट्ठाय उद्धं अनागते कोधञ्च मा जनयित्थ, विजातमातुया पि पुत्ते सिनेहच्छेदनं सब्बविनासमूलकं

१. महिसकमण्डलं ति (स्या०)　　२. तस्सानुरूपाय (सी०)

सस्सघातकञ्च मा करित्था ति अत्थो। **सुखकामा हि पाणिनो** ति एत्थ हि-सद्दो कारणोपदेसे, यस्मा सब्बे सत्ता सुखकामा, तस्मा हितसुखउपच्छेदकरं सस्सघातञ्च मा करोथा ति वुत्तं होति।

यथानुसिट्ठं ति यं यं अनुसिट्ठं यथानुसिट्ठं, अनुसिट्ठं अनतिक्कम्म वा यथानुसिट्ठं थेरेन दिन्नोवादं अनतिक्कम्मा ति वुत्तं होति। **धम्माभिसमयो अहोसी** ति पठममग्गफलाधिगमो अहोसी ति वदन्ति। कुलसतसहस्सं ति इमिना पुरिसानं सतसहस्सं दस्सेति। **कस्मीरगन्धारा** ति कस्मीरगन्धाररट्ठवासिनो। **कासावपज्जोता** ति भिक्खूनं निवत्थपारुतकासाववत्थेहि ओभासिता। **इसिवातपटिवाता** ति भिक्खूनं निवासनपारुपनवातेन चेव हत्थपादानं समिञ्जनपसारणादिवातेन च समन्ततो बीजियमाना[1] अहेसुं। **दुट्ठं** ति कुपितं। **बन्धना** ति संसारबन्धनतो।

धम्मचक्खुं हेट्ठामग्गत्तये ञाणं। केचि पनेत्थ "पठममग्गञाणमेव ते पटिलभिंसू" ति वदन्ति। **चोदेत्वा देवदूतेही**[2] ति **देवदूतसुत्तन्तदेसनावसेन**[3] दहरकुमारो जराजिण्णसत्तो[4] गिलानसत्तो कम्मकारणा कम्मकारणिका वा मतसत्तो ति इमेहि पञ्चहि
B 152 देवदूतेहि चोदेत्वा ओवदित्वा, संवेगं उप्पादेत्वा ति अत्थो। दहरकुमारादयो हि तत्थ "देवदूता" ति वुच्चन्ति। तथा हि दहरकुमारो अत्थतो एवं वदति नाम "पस्सथ भो मय्हम्पि तुम्हाकं विय हत्थपादा अत्थि, सके पनम्हि मुत्तकरीसे पलिपन्नो, अत्तनो धम्मताय उट्ठहित्वा नहायितुं न सक्कोमि, 'अहं किलिट्ठो, नहापेथ मं ति वत्तुम्पि न सक्कोमि, जातितोम्हि अपरिमुत्तताय एदिसो जातो, न खो पनाहमेव, तुम्हेपि जातितो अपरिमुत्ताव। यथेव हि मय्हं, एवं तुम्हाकम्पि जाति आगमिस्सति, इति तस्सा पुरे आगमनाव कल्याणं करोथा" ति। तेनेस देवदूतो नाम जातो।

जराजिण्णसत्तो पि अत्थतो एवं वदति नाम "पस्सथ भो अहम्पि तुम्हे विय तरुणो अहोसिं ऊरुबलबाहुबलजवसम्पन्नो, तस्स मे ता बलजवसम्पत्तियो अन्तरहिता, हत्थपादा हत्थपादकिच्चञ्च न करोन्ति, जरायम्हि अपरिमुत्तताय एदिसो जातो, न खो पनाहमेव, तुम्हेपि जराय अपरिमुत्ताव। यथेव हि मय्हं, एवं तुम्हाकम्पि जरा आगमिस्सति, इति तस्सा पुरे आगमनाव कल्याणं करोथा" ति। तेनेस देवदूतो नाम जातो।

गिलानसत्तो पि अत्थतो एवं वदति नाम "पस्सथ भो अहम्पि तुम्हे विय निरोगो अहोसिं, सोम्हि एतरहि ब्याधिना अभिहतो[5] सके मुत्तकरीसे पलिपन्नो, उट्ठातुम्पि न सक्कोमि, विज्जमानापि मे हत्थपादा हत्थपादकिच्चं न करोन्ति, ब्याधितोम्हि अपरिमुत्तताय एदिसो जातो, न खो पनाहमेव, तुम्हेपि ब्याधितो अपरिमुत्ताव। यथेव

---

१. बीजयमाना (सी०, क०)
२. म. ट्ठ. ४–१६४ पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बा।
३. म. ३–२१६ पिट्ठे।
४. जराजिण्णप्पत्तो (क०)
५. अभिभूतो (सी०)

हि मय्हं, एवं तुम्हाकम्पि ब्याधि आगमिस्सति, इति तस्स पुरे आगमनाव कल्याणं करोथा'' ति। तेनेस देवदूतो नाम जातो।

कम्मकारणा कम्मकारणिका वा चतुत्थो देवदूतो ति वेदितब्बा। तत्थ कम्मकारणपक्खे द्वत्तिस ताव कम्मकारणा अत्थतो एवं वदन्ति नाम ''मयं निवत्तमाना न रुक्खे वा पासाणे वा निब्बत्ताम; तुम्हादिसानं सरीरे निब्बत्ताम, इति अम्हाकं पुरे निब्बत्तितोव कल्याणं करोथा'' ति। तेनेता देवदूता नाम जाता। कम्मकारणिकापि अत्थतो एवं वदन्ति नाम ''मयं द्वत्तिस कम्मकारणा करोन्ता न रुक्खादीसु करोम, B 153 तुम्हादिसेसु सत्तेसुयेव करोम, इति अम्हाकं तुम्हेसु पुरे कम्मकारणाकारणतोव कल्याणं करोथा'' ति तेनेते पि देवदूता नाम जाता।

मतकसत्तो पि अत्थतो एवं वदति नाम ''पस्सथ भो मं आमकसुसाने छड्डितं उद्धुमातकादिभावं पत्तं, मरणतोम्हि अपरिमुत्तताय एदिसो जातो, न खो पनाहमेव, तुम्हेपि मरणतो अपरिमुत्ताव। यथेव हि मय्हं, एवं तुम्हाकम्पि मरणं आगमिस्सति, इति तस्स पुरे आगमनाव कल्याणं करोथा'' ति। तेनेस देवदूतो नाम जातो। तस्मा दहरकुमारादयो एत्थ ''देवदूता'' ति वेदितब्बा।

अनमत्तग्गियं ति अनमतग्गसंयुत्तं[1]। **धम्मामतं पायेसो** ति लोकुत्तरधम्मामतं पानं पटिलाभकरणवसेन पायेसी ति अत्थो। **समधिकानी** ति सहाधिकानि। सहत्थो हेत्थ संसद्दो। **इसी** ति सीलक्खन्धादयो धम्मक्खन्धे एसि गवेसि परियेसी ति इसी ति वुच्चति। **पञ्च रट्ठानी** ति पञ्चविध चीनरट्ठानि। हिमवन्तं गन्त्वा धम्मचक्कप्पवत्तनं पकासेन्तो यक्खसेनं पसादयी ति योजेतब्बं।

तेन च समयेना ति तस्मि समये तेसं गमनतो पुब्बभागकाले। **लद्धं भविस्सती** ति वेस्सवणसन्तिका लद्धं भविस्सति। **वेगसा** ति वेगेन। **समन्ततो आरक्खं ठपेसी** ति ''इतो पट्ठाय मा पविसन्तू''ति अधिट्ठानवसेन समन्ता आरक्खं ठपेसि। **अड्ढुड्ढानिसहस्सानी** ति अड्ढेन चतुत्थानि अड्ढुड्ढानि, अतिरेकपञ्चसतानि तीणि सहस्सानी ति वुत्तं होति। **दियड्ढसहस्सं** ति अड्ढेन दुतियं दियड्ढं, अतिरेकपञ्चसतं एकं सहस्सं ति अत्थो। **सोणुत्तरा** ति सोणो च उत्तरो च सोणुत्तरा। **निद्धमेत्वाना** ति पलापेत्वान। अदेसिसुं ति अदेसयुं।

अज्झिट्ठो ति आणत्तो। **पुन दानी** ति एत्थ **दानी** ति निपातमत्तं, पुन आगच्छेय्याम वा न वा ति अत्थो। **राजगहनगरपरिवत्तकेना** ति राजगहनगरं परिवज्जेत्वा[2] ततो बहि तं पदक्खिणं कत्वा गतमग्गेन गमनेन वा। इदानि थेरमातुया वेटिसनगरे निवासकारणं दस्सेतुं तस्स नगरस्स तस्सा जातिभूमिभावं थेरस्स च अट्ठुप्पत्तिं दस्सेन्तो ''**असोको किर कुमारकाले**'' ति आदिमाह।

---

१. सं० १-३८७ पिट्ठे।　　२. परिवत्तेत्वा (स्या०)।

B 154 अयं पनेत्थ अनुपुब्बिकथा—पुब्बे किर मोरियवंसे जातस्स चन्दगुत्तस्स नाम रञ्ञो पुत्तो बिन्दुसारो नाम कुमारो पितु अच्चयेन पाटलिपुत्तम्हि नगरे राजा अहोसि। तस्स द्वे पुत्ता सउदरिया अहेसुं, तेसं एकूनसतमत्ता वेमातिकभातरो अहेसुं। राजा पन तेसं सब्बजेट्ठकस्स असोककुमारस्स उपरज्जट्ठानञ्च अवन्तिरट्ठञ्च दत्वा अथेकदिवसं अत्तनो उपट्ठानं आगतं दिस्वा" तात उपराज तव रट्ठं गन्त्वा तत्थ उज्जेनीनगरे वसाही"ति आणापेसि। सो पितु वचनेन तं उज्जेनिं गच्छन्तो अन्तरामग्गे वेटिसगिरिनगरे वेटिसनामकस्स[1] सेट्ठिस्स घरे निवासं उपगन्त्वा तस्स सेट्ठिस्स धीतरं लक्खणसम्पन्नं योब्बनप्पत्तं वेटिसगिरिं नाम कुमारिं दिस्वा ताय पटिबद्धचित्तो मातापितूनं कथापेत्वा तं तेहि दिन्नं पटिलभित्वा ताय सद्धिं संवासं कप्पेसि। सा तेन संवासेन सञ्जातगब्भा हुत्वा ततो उज्जेनिं नीता महिन्दकुमारं जनयि। ततो वस्सद्वये अतिक्कन्ते संघमित्तञ्च धीतरं उपलभित्वा उपराजेन सद्धिं तत्थ वसति। उपराजस्स पन पिता बिन्दुसारो मरणमञ्चे निपन्नो पुत्तं असोककुमारं सरित्वा तं पक्कोसापेतुं उज्जेनिं मनुस्से पेसेसि। ते ततो उज्जेनिं गन्त्वा असोकस्स तं पवत्तिं आरोचेसुं। तेसं वचनेन सो पितु सन्तिकं तुरितगमनेनागच्छन्तो अन्तरामग्गे वेटिसगिरिनगरम्हि पुत्तदारे ठपेत्वा पितुसन्तकं पाटलिपुत्तनगरं गन्त्वा गतसमनन्तरमेव कालकतस्स पितुनो सरीरकिच्चं कारापेत्वा ततो एकूनसतमत्ते वेमातिकभातरो च घातापेत्वा विहतकण्टको हुत्वा तत्थ छत्तं उस्सापेत्वा अभिसेकं गण्हि। तदापि थेरमाता दारके रञ्ञो सन्तिकं पेसेत्वा सयं तत्थेव वेटिसगिरिनगरे वसि। तेन वुत्तं "**सा तस्स माता तेन समयेन ञातिघरे वसी**"ति।

आरोपेसी ति पटिपादेसि। **अम्हाकं इध कत्तब्बकिच्चं निट्ठितं** ति मातु दस्सनस्स कतभावं सन्धायाह। **अनुभवतु ताव मे पितरा पेसितं अभिसेकं** ति आदीसु अभिसेकपेसनादिकथा वित्थारेन उत्तरतो आवि भविस्सति। **छणत्थं** ति छणनिमित्तं, छणहेतू ति अत्थो, सयं छणकीळं अकातुकामो ति वुत्तं[2] होति। तदा किर देवानंपिय-
B 155 तिस्सो जेट्ठमूलमासपुण्णमियं नक्खत्तं घोसापेत्वा "सलिलकीळाछणं करोथा"ति अमच्चे आणापेत्वा सयं मिगवं कीळितुकामो मिस्सकपब्बतं अगमासि। **मिस्सकपब्बतं** ति पंसुपासाणमिस्सकत्ता एवंलद्धनामं पब्बतं। **दिट्ठसच्चो ति** अनागामिमग्गेन पटिविद्धसच्चो, अनागामिफलं पत्तो ति वुत्तं होति। सो किर थेरेन अत्तनो मातुदेविया देसितं धम्मं सुत्वा अनगामिफलं सच्छाकासि, सो च थेरस्स भागिनेय्यो ति वेदितब्बो। तथा हि थेरस्स मातुदेविया भगिनी तस्सा धीता, तस्सा अयं पुत्तो। वुत्तञ्हेतं **महावंसे**[3]—

"देविया भगिनी धीतु, पुत्तो भण्डुकनामको।
थेरेन देविया धम्मं, सुत्वा देसितमेव तु।
अनागामिफलं पत्वा, वसि थेरस्स सन्तिके" ति॥

---

१. देवनामकस्स (सी०) २. कातुकामो ति (सी०, क०)
३. तेरसमपरिच्छेदे।

सम्मासम्बुद्धेन च तुम्हे ब्याकता ति बोधिमूले एव बुद्धचक्खुना लोकं वोलोकेत्वा तम्बपण्णिदीपं दिस्वा अनागते तस्स दीपस्स सम्पत्तिं दिट्ठेन सम्मासम्बुद्धेन "अनागते महिन्दो नाम भिक्खु तम्बपण्णिदीपं पसादेस्सती"ति तुम्हे ब्याकता। तत्थ **तम्बपण्णिदीपं** ति दीपवासिनो वुत्ता। इन्द्रियपरोपरियत्तञाणं आसयानुसयञाणञ्च "**बुद्धचक्खू**" ति वुच्चति। तेन पन इन्द्रियपरोपरादिं विना अञ्ञं न सक्का दट्ठुं ति "वोलोकेन्तो" ति अवत्वा "**वोलोकेत्वा**" ति वुत्तं। **एतमत्थं** ति "अनागते महिन्दो नाम भिक्खु तम्बपण्णिदीपं पसादेस्सती"ति इममत्थं।

वेटिसगिरिम्हि राजगहे ति[1] देविया कतविहारे। कालोव गमनस्स, गच्छाम दीपमुत्तमं ति योजेतब्बं। इदञ्च तेसं परिवितक्कनिदस्सनं। **पळिना** ति आकासं पक्खन्दिंसु। **अम्बरे** ति आकासे। एवमाकासं पक्खन्दित्वा किं ते अकंसू ति चेतियपब्बते निपतिंसू ति दस्सेन्तो आह "**एवमुप्पतिता थेरा, निपतिंसु नगुत्तमे**" ति। इदानि तस्स पब्बतस्स पतिट्ठितट्ठानं थेरानञ्च तत्थ निपतितट्ठानं दस्सेतुं "**पुरतो पुरसेट्ठस्सा**" ति आदिगाथमाह। **पुरतो** ति पाचीनदिसाभागे। **पुरसेट्ठस्सा** ति अनुराधपुरसङ्खातस्स पुरवरस्स। **मेघसन्निभे** ति समन्ततो नीलवण्णता नीलमहामेघसदिसे। **सीलकूटम्ही** ति[2] एवंनामके पब्बतकूटे। **हंसाव नगमुद्धनी** ति पब्बतमुद्धनि हंसा विय।

तत्थ पन पतिट्ठहन्तो कदा पतिट्ठही ति आह "**एवं इट्ठियादिहि सद्धिं**" ति आदि। **परिनिब्बानतो** ति परिनिब्बानवस्सतो तं अवधिभूतं मुञ्चित्वा ततो उद्धं द्विन्नं वस्ससतानं उपरि छत्तिंसतिमे वस्से ति अत्थो गहेतब्बो। कथं वेदितब्बो ति आह "**अजातसत्तुस्स हि**" ति आदि। **तस्मिं येव वस्से** ति एत्थ यस्मिं संवच्छरे यस्मिञ्च दिवसे भगवा परिनिब्बुतो, तस्मिं संवच्छरे तस्मिं येव च दिवसे विजयकुमारो इमं दीपमागतो ति वदन्ति। वुत्तञ्हेतं— B 156

"लङ्कायं विजयसनामको कुमारो,
ओतिण्णो थिरमति तम्बपण्णिदीपे।
सालानं यमकगुणानमन्तरस्मिं,
निब्बातुं सयितदिने तथागतस्सा"ति[3]।

सीहकुमारस्स पुत्तो ति एत्थ कालिङ्गराजधीतु कुच्छिस्मिं सीहस्स जातो कुमारो सीहकुमारो ति वेदितब्बो, पुब्बे अमनुस्सावासत्ता आह "**मनुस्सावासं अकासी** ति। **चुद्दसमे वस्से** ति चुद्दसमे वस्से सम्पत्ते। **इध विजयो कालमकासी** ति इमस्मिं तम्बपण्णिदीपे विजयराजकुमारो अट्ठतिंस वस्सानि रज्जं कारेत्वा कालमकासि। तथाहि अजातसत्तु राजा द्वतिंस वस्सानि रज्जं कारेसि, उदयभद्दो सोळस वस्सानि, तस्मा अजातसत्तुस्स अट्ठमवस्सं इध विजयस्स पठमवस्सं ति कत्वा ततो उद्धं अजातसत्तुस्स चतुवीसति वस्सानि उदयभद्दस्स चुद्दस वस्सानी ति विजयस्स अट्ठतिंस वस्सानि परिपूरिंसु। तथा च वुत्तं—

---

१. वेटिसगिरिम्हीति (स्या०) वेदिसगिरिम्हि (क०)।
२. पिलकूटम्हीति (सी०), पिळकूटम्हीति (स्या०)
३. महावंसे छट्ठपरिच्छेदे।

"विजयो लङ्कमागम्म, सत्थु निब्बानवासरे।
अट्ठतिस समाकासि, रज्जं यक्खविमद्दको ति।[१]

"उदयभद्दस्स पञ्चदसमे वस्से पण्डुवासुदेवो नाम इमस्मिं दीपे रज्जं पापुणी" ति वुत्तत्ता उदयभद्दस्स चुद्दसमवस्ससङ्खातं एकं वस्सं इमस्मिं दीपे विजयस्स पण्डुवासुदेवस्स च अन्तरे सीहळं अराजिकं हुत्वा ठितं ति वेदितब्बं। तस्मिञ्हि वस्से विजयराजस्स अमच्चा उपतिस्सं नाम अमच्चं जेट्ठकं कत्वा तस्स नामेन कते उपतिस्सगामे वसन्ता अराजिकं रज्जमनुसासिंसु। वुत्तञ्हेतं—

B157 "तस्मिं मते अमच्चा ते, पेक्खन्ता खत्तियागमं।
उपतिस्सगामे ठत्वान, रट्ठं समनुसासिसुं।
मते विजयराजम्हि, खत्तियागमना पुरा।
एकं वस्सं अयं लङ्का-दीपो आसि अराजिको" ति॥[२]

तत्था ति जम्बुदीपे। **इध पण्डुवासुदेवो कालमकासी** ति इमस्मिं सीहळदीपे पण्डुवासुदेवो तिंस वस्सानि रज्जमनुसासित्वा कालमकासि। तथा हि उदयभद्दस्स अनन्तरं अनुरुद्धो च मुण्डो च अट्ठवस्सानि रज्जमनुसासिंसु, तदनन्तरं नागदासको चतुवीसति वस्सानि, तस्मा उदयभद्दस्स पञ्चदसमसोळसमवस्सेहि सद्धिं अनुरुद्धस्स च मुण्डस्स च अट्ठ वस्सानि, नागदासकस्स च चतुवीसतिवस्सेसु वीसति वस्सानी ति पण्डुवासुदेवस्स रञ्ञो तिंस वस्सानि परिपूरिंसु। तेनेव वुत्तं—

"ततो पण्डुवासुदेवो, रज्जं तिंस समा अका" ति[३]।

तत्था ति जम्बुदीपे। **सत्तरसमे वस्से** ति सत्तरसमे वस्से सम्पत्ते। तथाहि नागदासकस्स अनन्तरा सुसुनागो अट्ठारस वस्सानि रज्जं कारेसि, तस्मा नागदासकस्स चतुवीसतिवस्सेसु वीसतिवस्सानि ठपेत्वा सेसेहि चतूहि वस्सेहि सद्धिं सुसुनागस्स अट्ठारससु वस्सेसु सोळस वस्सानी ति इध अभयरञ्ञो वीसति वस्सानि परिपूरिंसु। वुत्तञ्हेतं—

"अभयो वीसति वस्सानि, लङ्कारज्जमकारयी" ति[४]।

दामरिको ति युद्धकारको चोरो। पण्डुकाभयो पन अभयस्स[५] भागिनेय्यो राजायेव, न चोरो, बलक्कारेन पन रज्जस्स गहितत्ता "दामरिको" ति वुत्तं। **रज्जं अग्गहेसी** ति एकदेसस्स गहितत्ता वुत्तं। अभयस्स हि वीसतिमे वस्से न ताव सब्बं

१. गवेसितब्बं। २. महावंसे अट्ठमपरिच्छेदे।
३. गवेसितब्बं। ४. गवेसितब्बं।
५. पकुण्डकाभयो (सब्बत्थ) एवमुपरिपि "मातामहस्स नामञ्च, जेट्ठस्स मातुलस्स च। एकं कत्वा तमकरुं, पण्डुकाभयनामकं" ति महावंसे नवमपरिच्छेदे सत्तवीसतिम गाथा च "एकं कत्वा तमकरुं ति तेसं उभिन्नं पितुपुत्तानं नामसंयोगं कत्वा तं कुमारं पण्डुकाभयनामकं अकरुं ति अत्थो" ति तट्टीका च पस्सितब्बा।

रज्जमग्गहेसी ति। तथा हि वीसतिमवस्सतो पट्ठाय अभयस्स नव भातिके अत्तनो मातुले B 158
तत्थ तत्थ युद्धं कत्वा घातेन्तस्स अनभिसित्तस्सेव सत्तरस वस्सानि अतिक्कमिंसु; ततोयेव च तानि राजसुञ्ञानि नाम अहेसुं। तथा च वुत्तं—

"पण्डुकाभयरञ्ञो च, अभयस्स च अन्तरे।
राजसुञ्ञानि वस्सानि, अहेसुं दस सत्त चा" ति।

तत्था ति जम्बुदीपे। **पण्डुकस्सा** ति पण्डुकाभयस्स। भवति हि एकदेसेनपि वोहारो "देवदत्तो दत्तो" ति यथा। **सत्तरस वस्सानि परिपूरिंसू** ति अनभिसित्तस्सेव परिपूरिंसु। एत्थ च काळासोकस्स सोळसमवस्सं ठपेत्वा पन्नरस वस्सानि हेट्ठा सुसुनागस्स सत्तरसमअट्ठारसमवस्सानि च द्वे गहेत्वा सत्तरस वस्सानि गणितब्बानि। **तानि हेट्ठा एकेन वस्सेन सह अट्ठारस होन्ती** ति तानि राजसुञ्ञानि सत्तरस वस्सानि हेट्ठा विजयपण्डुवासुदेवराजूनमन्तरे अराजिकेन एकेन वस्सेन सद्धिं अट्ठारस राजसुञ्ञवस्सानि नाम होन्ति।

चन्दगुत्तस्स चुद्दसमे वस्से इध पण्डुकाभयो कालमकासी ति चन्दगुत्तस्स चुद्दसमे वस्से इमस्मिं तम्बपण्णिदीपे पण्डुकाभयो नाम राजा सत्तति वस्सानि रज्जमनुसासित्वा कालमकासि। तथा हि सुसुनागस्स पुत्तो काळासोको अट्ठवीसति वस्सानि रज्जं कारेसि। ततो तस्स पुत्ता दसभातुका द्वेवीसति वस्सानि रज्जं कारेसुं, तेसं पच्छा नव नन्दा द्वेवीसति, चन्दगुत्तो चतुवीसति वस्सानि रज्जं कारेसि। तत्थ काळासोकस्स अट्ठवीसति-वस्सेसु पन्नरस वस्सानि हेट्ठा गहितानी ति तानि ठपेत्वा सेसानि तेरस वस्सानि, दसभातुकानं द्वेवीसति, तथा नवनन्दानं द्वेवीसति, चन्दगुत्तस्स चुद्दसमवस्सं ठपेत्वा तेरस वस्सानी ति पण्डुकाभयस्स सत्तति वस्सानि परिपूरिंसु। तथा च वुत्तं—

"पण्डुकाभयनामस्स, रञ्ञो वस्सानि सत्तती" ति[1]।

तत्थ असोकधम्मराजस्स सत्तरसमे वस्से इध मुटसिवराजा कालमकासी ति तस्मिं जम्बुदीपे असोकधम्मराजस्स सत्तरसमे वस्से इध मुटसिवो नाम राजा सट्ठि
वस्सानि रज्जमनुसासित्वा कालमकासि। तथा हि चन्दगुत्तस्स पुत्तो बिन्दुसारो अट्ठ- B 159
वीसति वस्सानि रज्जं कारेसि, ततो तस्स पुत्तो असोकधम्मराजा रज्जं पापुणि, तस्मा चन्दगुत्तस्स हेट्ठा वुत्तेसु चतुवीसति वस्सेसु तेरस वस्सानि गहितानी ति तानि ठपेत्वा सेसानि एकादस वस्सानि, बिन्दुसारस्स अट्ठवीसति वस्सानि, असोकस्स अनभिसित्तस्स चत्तारि वस्सानि, अभिसित्तस्स सत्तरस वस्सानी ति एवं सट्ठि वस्सानि इध मुटसिवस्स परिपूरिंस। तथा च वुत्तं—

"मुटसिवो सट्ठि वस्सानि, लङ्कारज्जमकारयी" ति[2]।

देवानंपियतिस्सो रज्जं पापुणी ति असोकधम्मराजस्स अट्ठारसमे वस्से पापुणि। इदानि परिनिब्बुत्ते भगवति अजातसत्तु आदीनं वस्सगणनावसेन परिनिब्बानतो द्विन्नं

१. गवेसितब्बं।
२. महावंसे एकादसमपरिच्छेदे।

वस्ससतानं उपरि छत्तिंसति वस्सानि एकतो गणेत्वा दस्सेन्तो आह "**परिनिब्बुते च सम्मासम्बुद्धे**" ति आदि। तत्थ **अजातसत्तुस्स चतुवीसती** ति परिनिब्बानवस्ससङ्खातं अट्ठमवस्सं मुञ्चित्वा वुत्तं। **असोकस्स पुत्तका दस भातुकराजानो** ति काळासोकस्स पुत्ता भद्दसेनो कोरण्डवण्णो मङ्कुरो[1] सब्बञ्जहो जालिको उभको सञ्जयो कोरब्यो नन्दिवड्ढनो पञ्चमको ति इमे दस भातुकराजानो ति वेदितब्बा। उग्गसेननन्दो पण्डुकनन्दो पण्डुगतिनन्दो भूतपालनन्दो रट्ठपालनन्दो गोविसाणकनन्दो सविद्धकनन्दो[2] केवट्टकनन्दो धननन्दो ति इमे **नव नन्दा** ति वेदितब्बा। **एतेन राजवंसानुसारेना** ति एतेन जम्बुदीपवासिराजूनं वंसानुसारेन वेदितब्बमेतं ति अत्थो।

तम्बपण्णिदीपवासीनम्पि पुन राजूनं वसेन एवं गणना वेदितब्बा—सम्मासम्बुद्धस्स परिनिब्बानवस्सं इध विजयस्स पठमं वस्सं ति कत्वा तं अपनेत्वा परिनिब्बानवस्सतो उद्धं विजयस्स सत्ततिंस वस्सानि, ततो अराजिकमेकवस्सं, पण्डुवासुदेवस्स तिंस वस्सानि, अभयस्स वीसति वस्सानि, पण्डुकाभयस्स अभिसेकतो पुब्बे सत्तरस वस्सानि, अभिसित्तस्स सत्तति वस्सानि, मुटसिवस्स सट्ठि वस्सानि, देवानंपियतिस्सस्स पठमं वस्सं ति एवं परिनिब्बानतो द्विन्नं वस्ससतानं उपरि छत्तिंस वस्सानि वेदितब्बानि।

B 160 जेट्ठमासस्स पुण्णमियं जेट्ठनक्खत्तं मूलनक्खत्तं वा होती ति आह "**जेट्ठमूलनक्खत्तं नाम होती**"ति। तस्मिं पन नक्खत्ते कत्तब्बछणम्पि तन्निस्सयत्ता तमेव नामं लभती ति वेदितब्बं। **मिगवं** ति मिगानं वाननतो हेसनतो बाधनतो मिगवं ति लद्धसमञ्ञं मिगवं[3]। **रोहितमिगरूपं** ति गोकण्णमिगवेसं। **जियं** ति धनुजियं। **अनुबन्धन्तो** ति पदसा अनुधावन्तो। **ममंयेव राजा पस्सतू** ति एत्थ" अम्हेसु बहूसु दिट्ठेसु राजा अतिविय भायिस्सती"ति इमिना कारणेन अत्तानमेव दस्सेतुं "ममंयेव पस्सतू"ति अधिट्ठासी ति वेदितब्बं। "**चिन्तेसी**"ति वत्वा तस्स चिन्तनाकारं दस्सेन्तो आह "**इमस्मिं दीपे जातो**"ति आदि। थेरो तस्स परिवितक्कं जानित्वा अत्तनो सभावं कथेत्वा तं अस्सासेतुकामो "**समणा मयं महाराजा**" ति आदिमाह। महाराज मयं समणा नाम, त्वं परिवितक्कं मा अकासी ति वुत्तं होति। **तवेव अनुकम्पाया** ति तव अनुकम्पत्थाय एव आगता, न विमुखभावत्थाया ति अधिप्पायो। "इमे समणा नामा" ति अजानन्तस्स "समणा मयं महाराजा"ति कस्मा थेरो आहा ति चे? असोकधम्मराजेन पेसितसासने नेव पुब्बे गहितसमणसञ्ञं सारेतुं एवमाहा ति। इममत्थं विभावेतुं "**तेन च समयेना**"ति आदि वुत्तं।

अदिट्ठा हुत्वा सहायका ति[4] **अदिट्ठसहायका**, अञ्ञमञ्ञं अदिस्वाव सहायकभावं उपगता ति वुत्तं होति। **छातपब्बतपादे** ति छातवाहस्स नाम पब्बतस्स पादे। तं

---

१. मङ्कुरो (स्या०)।
२. सविन्धकनन्दो (सी०) दससित्थकनन्दो। (स्या०)
३. मिगवधं (सी०)
४. अदिट्ठो सहायो एतेही ति (स्या०)

किर पब्बतं अनुराधपुरा पुब्बदक्खिणदिसाभागे अतिरेकयोजनद्वयमत्थके तिट्ठति। तम्हि ठाने पच्छा सद्धातिस्सो नाम महाराजा विहारं कारापेसि, तं "छातविहारं"ति वोहरिंसु।" **रथयट्ठिप्पमाणा** ति आयामतो च आवट्टतो च रथपतोदेन समप्पमाणा"ति तीसुपि **गण्ठिपदेसु** वुत्तं। **महावंसे** पि[1] वुत्तं—

"छातपब्बतपादम्हि, तिस्सो च वेळुयट्ठियो।
जाता रथपतोदेन, समाना परिमाणतो"ति।

गण्ठिपदे पन "रथयट्ठिप्पमाणा ति रथस्स धजयट्ठिप्पमाणा"ति वुत्तं। उप्पज्जिंसू ति तस्स अभिसेकसमकालमेव उप्पज्जिंसु। एवमुत्तरिपि वक्खमानानं अच्छरियानं B 161
पातुभावो वेदितब्बो। तथा च वुत्तं **महावंसे**—

"देवानंपियतिस्सो सो, राजासि पितु अच्चये।
तस्साभिसेकेन समं, बहूनच्छरियानहू"ति॥

एका लतायट्ठि नामा ति कञ्चनलताय पटिमण्डितत्ता एवंलद्धनामा एका यट्ठि अहोसि। **तं अलङ्करित्वा उप्पन्नलता** ति तं रजतवण्णं यट्ठिं अलङ्करित्वा तत्थेव चित्तकम्मकता विय उप्पन्नलता। **खायती** ति दिस्सति। किञ्जक्खानी ति केसरानि। एतानि च पुप्फयट्ठियं नीलपुप्फादीनि सकुणयट्ठियञ्च नानप्पकारा मिगपक्खिनो तत्थेव चित्तकम्मकता विय पञ्ञायन्ती ति दट्ठब्बं। **सेता रजतयट्ठीवा** ति रजतमययट्ठि विय एका यट्ठि सेतवण्णा ति अत्थो। **लता** ति तत्थेव चित्तकम्मकता विय दिस्समानलता। **नीलादि यादिसं पुप्फं** ति यादिसं लोके नीलादिपुप्फं अत्थि, तादिसं पुप्फयट्ठिम्हि खायती ति अत्थो।

अनेकविहितं रतनं उप्पज्जी ति अनेकप्पकारं रतनं समुद्दतो सयमेव तीरं आरुहित्वा वेलन्ते ऊमिवेगाभिजातमरियादवट्टि विय उपज्जि, उट्ठहित्वा अट्ठासी ति अत्थो। **तम्बपण्णियं पन अट्ठ मुत्ता उप्पज्जिंसू** ति एत्थापि तम्बपण्णियं समुद्दतो सयमेव उट्ठहित्वा जातितो अट्ठ मुत्ता समुद्दतीरे वुत्तनयेनेव ठिता ति वेदितब्बा। वुत्तञ्हेतं **महावंसे**[2]—

"लङ्कादीपम्हि सकले, निधयो रतनानि च।
अन्तोठितानि उग्गन्त्वा, पथवीतलमारुहुं॥

लंकादीपसमीपम्हि, भिन्ननावागतानि च।
तत्र जातानि च थलं, रतनानि समारुहुं॥

हयगजा रथामलका, वलयङ्गुलिवेठका।
ककुधफला पाकतिका, इच्चेता अट्ठ जातितो॥

मुत्ता समुद्दा उग्गन्त्वा, तीरे वट्टि विय ठिता।
देवानंपियतिस्सस्स, सब्बपुञ्ञविजम्भितं"ति॥

---

१. एकादसमपरिच्छेदे। २. एकादसमपरिच्छेदे।

B 162 **हयमुत्ता** ति अस्सरूपसण्ठानमुत्ता। **गजमुत्ता** ति हत्थिरूपसण्ठाना। एवं सब्बत्थ तं तं सण्ठानवसेन मुत्ताभेदो वेदितब्बो। **अङ्गुलिवेठकमुत्ता** ति अङ्गुलीयकसण्ठाना, मुद्दिकासण्ठाना ति अत्थो। **ककुधफलमुत्ता** ति ककुधरुक्खफलाकारा बहू असामुद्दिका मुत्ता। **राजककुधभण्डानी** ति[1] राजारहउत्तमभण्डानि। तानि सरूपेन दस्सेन्तो आह "**छत्तं चामरं**" ति आदि। अञ्ञञ्च बहुविधं पण्णाकारं पहिणी ति सम्बन्धो। **सङ्खं** ति अभिसेकासिञ्चनकं सामुद्दिकं दक्खिणावट्टं सङ्खं। अनोतत्तोदकमेव "**गङ्गोदकं**" ति वुत्तं। **वड्ढमानं** ति अलङ्कारचुण्णं। "नहानचुण्णं"ति केचि। **वटंसकं** ति कण्णपीळन्धनवटंसकं ति वुत्तं होति। "वटंसकं कण्णचूळिकट्ठाने ओलम्बकं" ति पि वदन्ति। **भिङ्गारं** ति[2] सुवण्णमयं महाभिङ्गारं।' मकरमुखसण्ठाना बलिकम्मादिकरणत्थं कता भाजनविकती"ति पि वदन्ति। **नन्दियावट्टं** ति काकपदसण्ठानं मङ्गलत्थं कता सुवण्णभाजनविकति। **कञ्ञं** ति खत्तियकुमारिं। **अधोविमं दुस्सयुगं** ति किलिट्ठे जाते अग्गिम्हि पक्खित्तमत्ते परिसुद्धभावमुपगच्छन्तं अधोविमं दुस्सयुगं। **हत्थपुञ्छनं** ति पीतवण्णं महग्घं हत्थपुञ्छनपटं। **हरिचन्दनं** ति हरिवण्णचन्दनं, सुवण्णवण्णचन्दनं ति अत्थो। लोहितचन्दनं वा, गोसितचन्दनं ति अत्थो। तं किर उद्धने कुथिततेलम्हि[3] पक्खित्तमत्तं सकलम्पि तेलं अग्गिञ्च निब्बापनसमत्थं चन्दनं। तेनेव "गोसितचन्दनं" ति वुच्चति। गो सद्देन हि जलं वुच्चति, तं विय सितं चन्दनं गोसितचन्दनं। नागभवनसम्भवं **अरुणवण्णमत्तिकं**। **हरीतकं आमलकं** ति अगदहरीतकं अगदामलकं। तं खिप्पमेव सरीरमलसोधनादिकरणसमत्थं होति।

उण्हीसं ति उण्हीसपटं। **वेठनं** ति सीसवेठनं। सारपामङ्गं ति उत्तमं रतनपामङ्गसुत्तं। **वत्थकोटिकं** ति वत्थयुगमेव। **नागमहटं** ति नागेहि आहटं। म-कारो पदसन्धिकरो। **अमतोसधं** ति एवंनामिका गुळिकजाति, अमतसदिसकिच्चत्ता एवं वुच्चति। तं किर परिपन्थं[4] विधमेत्वा सब्बत्थ साधेन्तेहि अगदोसधसम्भारेहि योजेत्वा वट्टेत्वा कतं गुळिकं। तं पन राजूनं मुखसोधननहानपरियोसाने महता परिहारेन उपनेन्ति। तेन ते अङ्गरागं नाम करोन्ति, करोन्ता च यथारहं द्वीहि तीहि अगदोसधरङ्गतिलकाहि
B 163 नलाटकअंसकूटउरमज्झसङ्खातं अङ्गं सज्जेत्वा अङ्गरागं करोन्ती ति वेदितब्बं। सा पन गुळिका अहिविच्छिकादीनम्पि विसं हनति, तेनपि तं वुच्चति" अमतोसधं" ति।

अहं बुद्धञ्चा ति आदीसु सब्बधम्मे याथावतो अबुज्झि पटिबुज्झो ति बुद्धो ति सङ्ख्यं गतं सम्मासम्बुद्धञ्च, अधिगतमग्गे सच्छिकतनिरोधे यथानुसिट्ठं पटिपज्जमाने च अपायेसु अपतमाने धारेती ति धम्मो ति सङ्ख्यं गतं परियत्तिया सद्धिं नव लोकुत्तरधम्मञ्च, दिट्ठिसीलसामञ्ञेन संहतत्ता संघो ति सङ्ख्यं गतं अरियसावकसंघञ्च अहं सरणं गतो परायणं ति उपगतो, भजिं सेविं ति अत्थो। अथ वा हिंसति तप्पसादतग्गरुकताहि विहतकिलेसेन तप्परायणताकारप्पवत्तेन चित्तुप्पादेन सरणगतानं तेनेव सरण-

---

१. बहू अंसामुत्ता (सी०-स्या०)
२. भिङ्कारं ति (सी०)
३. पक्कुट्ठिततेलम्हि (सी०-स्या०)
४. परिमट्ठ (क०)

गमनेन भयं सन्तासं दुक्खं दुग्गतिं परिकिलेसं हनति विनासेती ति **सरणं;** रतनत्तयस्सेतं अधिवचनं। अपि च सम्मासम्बुद्धो हिते पवत्तनेन अहिता च निवत्तनेन सत्तानं भयं हिंसती ति सरणं ति वुच्चति। धम्मो पि भवकन्तारा उत्तारणेन अस्सासदानेन च सत्तानं भयं हिंसती ति सरणं ति वुच्चति। संघो पि अप्पकानम्पि कारानं विपुलफलपटिलाभकरणेन सत्तानं भयं हिंसती ति सरणं ति वुच्चति। इमिना अत्थेन सरणभूतं रतनत्तयं तेनेव कारणेन सरणं ति गतो अवगतो, जानन्ति अत्थो। **उपासकत्तं देसेसि** ति रतनत्तयं उपासती ति उपासको ति एवं दस्सितं उपासकभावं मयि अभिनिविट्ठं वाचाय[१] पकासेसिं ति अत्थो, "उपासकोहं अज्जतग्गे पाणुपेतं सरणं गतो"ति एवं उपासकत्तं पटिवेदेसिं ति वुत्तं होति। **सक्यपुत्तस्स सासने** ति सक्यस्स सुद्धोदनस्स पुत्तो सो भगवा सक्यपुत्तो, तस्स सक्यपुत्तस्स सासने ति अत्थो। **सद्धा** ति सद्धाय, "सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा"ति आदीसु विय यकारलोपो दट्ठब्बो। **उपेहि** ति उपगच्छ।

असोकरञ्ञा पेसितेन अभिसेकेना ति असोकरञ्ञा पेसितेन अभिसेकुपकरणेन। यदा हि देवानंपियतिस्सो महाराजा अत्तनो सहायस्स धम्मासोकरञ्ञो इतो वेळुयट्ठियादयो महारहे पण्णाकारे पेसेसि। तदा सोपि ते दिस्वा पसीदित्वा अतिविय तुट्ठो "इमेहि अतिरेकतरं किं नाम महग्घं पटिपण्णाकारं सहायस्स मे पेसेस्सामी"ति अमच्चेहि सद्धिं मन्तेत्वा लङ्कादीपे अभिसेकपरिहारं पुच्छित्वा "न तत्थ ईदिसो अभिसेकपरिहारो अत्थी"ति सुत्वा" साधु वत मे सहायस्स अभिसेकपरिहारं पेसेस्सामी"ति वत्वा सामुद्दिकसङ्खादीनि तीणि सङ्खानि च गङ्गोदकञ्च अरुणवण्णमत्तिकञ्च अट्ठट्ठ खत्तियब्राह्मणगहपतिकञ्ञायो च सुवण्णरजतलोहमत्तिकामयघटे च अट्ठहि सेट्ठिकुलेहि सद्धिं अट्ठ अमच्चकुलानि चाति एवं सब्बट्ठकं नाम इध पेसेसि "इमेहि मे सहायस्स पुन अभिसेकं करोथा"ति, अञ्ञञ्च अभिसेकत्थाय[२] बहुं पण्णाकारं पेसेसि। तेन वुत्तं "असोकरञ्ञा पेसितेन" अभिसेकेना"ति। एको मासो अभिसित्तस्स अस्सा ति **एकमासाभिसित्तो**। कथं पन तस्स तदा एकमासाभिसित्तता विञ्ञायती ति आह "**विसाखपुण्णमायं हिस्स अभिसेकमकंसू**"ति, पुब्बे कताभिसेकस्स पि असोकरञ्ञा पेसितेन अनग्घेन परिहारेन विसाखपुण्णमायं पुन अभिसेकमकंसू ति अत्थो। वुत्तञ्हेतं **महावंसे**— B 164

"ते मिगसिरमासस्स, आदिचन्दोदयं दिने।
अभिसितञ्च लङ्किन्दं, अमच्चा सामिभत्तिनो॥

धम्मासोकस्स वचनं, सुत्वा सामिहिते रता।
पुनापि अभिसेचिंसु, लङ्काहितसुखे रतं" ति॥

दीपवंसे पि[३] चेतं वुत्तं—

"विसाखमासे द्वादसियं,[४] जम्बुदीपा इधागता।
अभिसेकं सपरिवारं, असोकधम्मेन पेसितं॥

---

१. अभिनिविट्ठवाचाय (स्या०) २. एकादसमपरिच्छेदे। ३. एकादसमपरिच्छेदे।
४. विसाखे द्वादसपक्खे (सी०) विसाखमासे द्वादसपक्खे (स्या०, क०)।

दुतियं अभिसिञ्चित्थ, राजानं देवानंपियं ।
अभिसित्तो दुतियाभिसेकेन, विसाखमासे उपोसथे ॥

ततो मासे अतिक्कम्म[1], जेट्ठमासे उपोसथे ।
महिन्दो सत्तमो हुत्वा, जम्बुदीपा इधागतो" ति ॥

तदा पन तस्स रञ्ञो विसाखपुण्णमाय अभिसेकस्स कतत्ता ततो पभुति याव-ज्जतना विसाखपुण्णमायमेव अभिसेककरणमाचिण्णं । अभिसेकविधानञ्चेत्थ एवं वेदि-
B 165 तब्बं—अभिसेकमङ्गलत्थं अलङ्कतप्पटियत्तस्स मण्डपस्स अन्तो कतस्स उदुम्बरसाखमण्डपस्स मज्झे सुप्पतिट्ठिते उदुम्बरभद्दपीठम्हि अभिसेकारहं अभिजच्चं खत्तियं निसीदापेत्वा पठमं ताव मङ्गलाभरणभूसिता जातिसम्पन्ना खत्तियकञ्ञा गङ्गोदकपुण्णं सामुद्दिकं दक्खिणावट्टसङ्खं उभोहि हत्थेहि सक्कच्चं गहेत्वा सीसोपरि उस्सापेत्वा तेन तस्स मुद्धनि अभिसेकोदकं अभिसिञ्चति, एवञ्च वदेति "देव तं सब्बे पि खत्तियगणा अत्तानमारक्खणत्थं इमिना अभिसेकेन अभिसेकिकं[2] महाराजं करोन्ति, त्वं राजधम्मेसु ठितो धम्मेन समेन रज्जं कारेहि, एतेसु खत्तियगणेसु त्वं पुत्तसिनेहानुकम्पाय सहितचित्तो हितसममेत्तचित्तो च भव, रक्खावरणगुत्तिया तेसं रक्खितो च भवाही" ति ।

ततो पुन पुरोहितो पि पुरोहिच्चट्ठानानुरूपालङ्कारेहि अलङ्कतप्पटियत्तो गङ्गोदकपुण्णं रजतमयसङ्खं उभोहि हत्थेहि सक्कच्चं गहेत्वा तस्स सीसोपरि उस्सापेत्वा तेन तस्स मुद्धनि अभिसेकोदकं अभिसिञ्चति, एवञ्च वदेति "देव तं सब्बे पि ब्राह्मणगणा अत्तानमारक्खणत्थं इमिना अभिसेकेन अभिसेकिकं महाराजं करोन्ति, त्वं राजधम्मेसु ठितो धम्मेन समेन रज्जं कारेहि, एतेसु ब्राह्मणेसु त्वं पुत्तसिनेहानुकम्पायसहितचित्तो हितसममेत्तचित्तो च भव, रक्खावरणगुत्तिया तेसं रक्खितो च भवाही" ति ।

ततो पुन सेट्ठि पि सेट्ठिट्ठानानुरूपभूसनभूसितो गङ्गोदकपुण्णं रतनमयसङ्खं उभोहि हत्थेहि सक्कच्चं गहेत्वा तस्स सीसोपरि उस्सापेत्वा तेन तस्स मुद्धनि अभिसेकोदकं अभिसिञ्चति, एवञ्च वदेति "देव तं सब्बे पि गहपतिगणा अत्तानमारक्खणत्थं इमिना अभिसेकेन अभिसेकिकं महाराजं करोन्ति, त्वं राजधम्मेसु ठितो धम्मेन समेन रज्जं कारेहि, एतेसु गहपतिगणेसु त्वं पुत्तसिनेहानुकम्पाय सहितचित्तो हितसममेत्तचित्तो च भव, रक्खावरणगुत्तिया तेसं रक्खितो च भवाही" ति ।

ते पन तस्स एवं वदन्ता[3] "सचे त्वं अम्हाकं वचनानुरूपेन रज्जं कारेस्ससि, इच्चेतं कुसलं नो चे कारेस्ससि, तव मुद्धा सत्तधा फलतू" ति एवं रञ्ञो अभिसपन्ति
B 166 विया ति दट्ठब्बं । इमस्मिं पन दीपे देवानंपियतिस्सस्स मुद्धनि धम्मासोकेनेव इध पेसिता खत्तियकञ्ञायेव अनोतत्तोदकपुण्णेन सामुद्दिकदक्खिणावट्टसङ्खेन अभि-

---

१. अतिगय्ह (सी० स्या०, क०) । २. अभिसेकितं (सी०) ।
३. वदन्ति (क०) ।

सेकोदकं अभिसिञ्ची ति वदन्ति। इदञ्च यथावुत्तं अभिसेकविधानं मज्झिमनिकाये **चूळसीहनादसुत्तवण्णनायं** सीहळट्ठकथायम्पि "पठमं ताव अभिसेकं गण्हन्तानं राजूनं सुवण्णमयादीनि तीणि सङ्खानि च गङ्गोदकञ्च खत्तियकञ्ञञ्च लद्धुं वट्टती" ति आदिना वुत्तं ति वदन्ति।

सम्मोदनीयं कथं कथयमानो ति पीतिपामोज्जसङ्खातसम्मोदजननतो सम्मोदितुं युत्तभावतो च सम्मोदनीयं "कच्चि भन्ते खमनीयं, कच्चि यापनीयं, कच्चि वो अप्पाबाधं अप्पातङ्कं लहुट्ठानं बलं फासुविहारो" ति एवमादिकथं कथयमानो। **छ जने दस्सेसी** ति रञ्ञा सद्धिं आगतानं "न इमे यक्खा, मनुस्सा इमे" ति सञ्ञाननत्थं भण्डुकस्स उपासकस्स आनीतत्ता तेन सद्धिं छ जने दस्सेसि। **तेविज्जा** ति पुब्बेनिवासदिब्बचक्खुआसवक्खयसङ्खाताहि तीहि विज्जाहि समन्नागता। **इद्धिप्पत्ता** ति इद्धिविधञाणं पत्ता। **चेतोपरियकोविदा** ति परेसं चित्ताचारे कुसला। एवमेत्थ पञ्च अभिञ्ञा सरूपेन वुत्ता, दिब्बसोतं पन तासं वसेन आगतमेव होति। **बहू** ति एवरूपा छळभिञ्ञा बुद्धसावका बहू गणनपथं अतिक्कन्ता सकलजम्बुदीपं कासावपज्जोतं कत्वा विचरन्ती ति। केचि पन "तेविज्जा इद्धिप्पत्ता च खीणासवा चेतोपरियकोविदा केचि खीणासवा ति विसुं योजेत्वा 'अरहन्तो' ति इमिना सुक्खविपस्सका वुत्ता" ति वदन्ति।

पञ्ञावेय्यत्तियं ति पञ्ञापाटवं, पञ्ञाय तिक्खविसदभावं ति अत्थो। **आसन्नं** ति आसन्ने ठितं। **साधु महाराज पण्डितोसी** ति राजानं पसंसति। पुन वीमंसन्तो **"अत्थि पन ते महाराजा"** ति आदिमाह। **चूळहत्थिपदोपमसुत्तन्तं कथेसी** ति "अयं राजा 'इमे समणा नाम ईदिसा, सीलादिपटिपत्ति च तेसं ईदिसी' ति च न जानाति, हन्द नं इमाय चूळहत्थिपदोपमसुत्तन्तदेसनाय समणभावूपगमनं समणपटिपत्तिञ्च विञ्ञापेस्सामी' ति चिन्तेत्वा पठमं **चूळहत्थिपदोपमसुत्तन्तं** कथेसि। तत्थ हि—

"एवमेव खो ब्राह्मण इध तथागतो लोके उप्पज्जति अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो....पे०....सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेति, तं धम्मं सुणाति गहपति वा गहपतिपुत्तो वा अञ्ञतरस्मिं वा कुले पच्चाजातो, सो B 167
तं धम्मं सुत्वा तथागते सद्धं पटिलभति, सो तेन सद्धापटिलाभेन समन्नागतो इति पटिसञ्चिक्खति "सम्बाधो घरावासो रजोपथो, अब्भोकासो पब्बज्जा, नयिदं सुकरं अगारं अज्झावसता एकन्तपरिपुण्णं एकन्तपरिसुद्धं सङ्खलिखितं ब्रह्मचरियं चरितुं, यन्नूनाहं केसमस्सुं ओहारेत्वा कासायानि वत्थानि अच्छादेत्वा अगारस्मा अनगारियं" पब्बजेय्यं ति। सो अपरेन समयेन अप्पं वा भोगक्खन्धं पहाय महन्तं वा भोगक्खन्धं पहाय अप्पं वा ञातिपरिवट्टं पहाय महन्तं वा ञातिपरिवट्टं पहाय केसमस्सुं ओहारेत्वा कासायानि वत्थानि अच्छादेत्वा अगारस्मा अनगारियं पब्बजति।

सो एवं पब्बजितो समानो भिक्खूनं सिक्खासाजीवसमापन्नो पाणातिपातं पहाय पाणातिपाता पटिविरतो होति निहितदण्डो निहितसत्थो, लज्जी दयापन्नो सब्बपाणभूतहितानुकम्पी विहरति।

अदिन्नादानं पहाय अदिन्नादाना पटिविरतो होति दिन्नादायी दिन्नपाटिकङ्खी, अथेनेन सुचिभूतेन अत्तना विहरती ति[1]—एवमादिना सासने सद्धापटिलाभं पटिलद्धसद्धेहि च पब्बज्जुपगमनं पब्बजितेहि च पटिपज्जितब्बा सीलक्खन्धादयो धम्मा पकासिता।

राजा सुत्तन्तं सुणन्तोयेव अञ्ञासी ति "सो बीजगामभूतगामसमारम्भा पटिविरतो होति, एकभत्तिको होति रत्तूपरतो विरतो विकालभोजना" ति एवं तस्मिं सुत्तन्ते[2] आगतत्ता तं सुणन्तोयेव अञ्ञासि। **इधेव वसिस्सामा** ति न ताव रत्तिया उपट्ठितत्ता अनागतवचनमकासि। **आगतफलो** ति अनागामिफलं सन्धायाह, सम्पत्तअनागामिफलो ति अत्थो। ततोयेव च विसेसतो अविपरीतविदितसत्थुसासनत्ता **विञ्ञातसासनो। इदानि पब्बजिस्सती** ति गिहिलिङ्गेन आनीतकिच्चस्स निट्ठितत्ता एवमाह।
B 168 **अचिरपक्कन्तस्स रञ्ञो** ति रञ्ञे अचिरपक्कन्ते ति अत्थो। **अधिट्ठहित्वा** ति अन्तोतम्बपण्णिदीपे समागता सुणन्तू ति अधिट्ठहित्वा।

भूमत्थरणसङ्खेपेना ति भूमत्थरणाकारेन। **उप्पातपाठका** ति निमित्तपाठका, नेमित्तका ति अत्थो। **गहिता दानि इमेहि पथवी** ति आसनानं पथवियं अत्थतत्ता एवमाहंसु। **पतिट्ठहिस्सतो ति चिन्तेन्तो** ति एत्थ तेन कारणेन सासनपतिट्ठानस्स अभावतो अवस्सं पतिट्ठहन्तस्स सासनस्स पुब्बनिमित्तमिदं ति एवं पुब्बनिमित्तभावेन सल्लक्खेसी ति वेदितब्बं। **पणीतेना** ति उत्तमेन। सहत्था ति सहत्थेन सन्तप्पेत्वा ति सुट्ठु तप्पेत्वा, परिपुण्णं सुहितं यावदत्थं कत्वा ति अत्थो। **पेतवत्थुं विमानवत्थुं सच्चसंयुत्तञ्च कथेसी** ति देसनाविधिकुसलो थेरो जनस्स संवेगं जनेतुं पठमं पेतवत्थुं कथेत्वा तदनन्तरं संवेगजातं जनं अस्सासेतुं सग्गकथावसेन विमानवत्थुञ्च कथेत्वा तदनन्तरं पटिलद्धस्सासानं[1] "मा एत्थ अस्सादं करोथ निब्बानं विना न अञ्ञं किञ्चि सङ्खारगतं धुवं नाम अत्थि, तस्मा परमस्सासकं निब्बानमधिगन्तुं वायमथा" ति सच्चपटिवेधत्थाय उस्साहं जनेन्तो अन्ते सच्चसंयुत्तं कथेसी ति वेदितब्बं।

तेसं सुत्वा ति तेसं सन्तिका थेरानं गुणकथं सुत्वा। रञ्ञो संविदितं कत्वा ति रञ्ञो निवेदनं कत्वा, राजानं पटिवेदयित्वा ति अत्थो। **अलं गच्छामा** ति पुरस्स अच्चासन्नत्ता सारुप्पं न होती ति पटिपक्खिपन्तो आह। **मेघवनं नाम उय्यानं** ति महामेघवनुय्यानं। तस्स किर उय्यानस्स भूमिग्गहणदिवसे अकालमहामेघो उट्ठहित्वा सब्बतळाकपोक्खरणियो पूरेन्तो गिम्हाभिहतरुक्खलतादीनं अनुग्गण्हन्तोव पावस्सि, तेन कारणेन तं महामेघवनं नाम उय्यानं जातं। वुत्तञ्हेतं महावंसे[3]—

"उय्यानट्ठानग्गहणे,[4] महामेघो अकालजो।
पावस्सि तेन उय्यानं, महामेघवनं अहू" ति॥

---

१. म० १-२३६ पिट्ठादीसु। २. पटिलद्धस्सादानं (स्या०)
३. एकादसमपरिच्छेदे। ४. उय्यानभूमिगहणे (स्या०)

सुखसयितभावंपुच्छित्वा ति "कच्चि भन्ते इध सुखं सयित्थ, तुम्हाकं इध निवासो सुखं" ति एवं सुखसयितभावं पुच्छित्वा ततो थेरेन "सुखसयितम्हि महाराज, भिक्खूनं फासुकमिदं उय्यानं" ति वुत्ते "एवं सति इदं नो उय्यानं दस्सामी" ति चिन्तेत्वा B 169
"**कप्पति भन्ते भिक्खुसंघस्स आरामो**" ति पुच्छि। **इमं सुत्तं** ति वेळुवनारामपटिग्गहणे वुत्तमिमं सुत्तं। **उदकं** ति दक्खिणोदकं। **महामेघवनुय्यानं अदासी** ति इमं महामेघवनुय्यानं संघस्स दम्मी" ति वत्वा जेट्ठमासस्स काळपक्खे दुतियदिवसे अदासि। महाविहारस्स दक्खिणोदकपातेनेव सद्धिं पतिट्ठितभावे पि न ताव तत्थ विहारकम्मं निट्ठितं ति आह "**इदञ्च पठमं विहारट्ठानं भविस्सती**" ति। **पुनदिवसे पी** ति काळपक्खस्स दुतियदिवसेयेव। **अड्ढनवमानं पाणसहस्सानं** ति अड्ढेन नवमानं पाणसहस्सानं, पञ्चसताधिकानं अट्ठसहस्सानं ति अत्थो। **जोतिपातुभावट्ठानं** ति ञाणालोकस्स पातुभावट्ठानं। **अप्पमादसुत्तं** ति अङ्गुत्तरनिकाये **महाअप्पमादसुत्तं**,[1] राजोवादसुत्तं ति वुत्तं होति।

महच्चं ति करणत्थे पच्चत्तवचनं, महता राजानुभावेना ति अत्थो। तुम्हे जाननत्थं ति सम्बन्धो। **अरिट्ठो नाम अमच्चो** ति रञ्ञो भागिनेय्यो अरिट्ठो नाम अमच्चो। **पञ्चपण्णासाया** ति एत्थ "चतुपण्णासाया" ति वत्तब्बं। एवञ्हि सति उपरि वच्चमानं "द्वासट्ठि अरहन्तो" ति वचनं समेति। तेनेव च सीहळभासाय लिखिते **महावंसे** "चतुपण्णासाय सद्धिं" ति वुत्तं। **दसभातिकसमाकुलं राजकुलं** ति मुटसिवस्स पुत्तेहि अभयो देवानंपियतिस्सो महानागो उत्तियो मत्ताभयो सूरतिस्सो ति एवमादीहि दसहि भातिकेहि समाकिण्णं राजकुलं। **चेतियगिरिम्हि वस्सं वसिंसू** ति आसाळ्हीपुण्णमदिवसे रञ्ञा दिन्नविहारेयेव पटिग्गहेत्व पटिपददिवसे वस्सं वसिंसु। **पवारेत्वा** ति महापवारणाय पवारेत्वा। कत्तिकपुण्णमायं ति अपरकत्तिकपुण्णमायं। महामहिन्दत्थेरो हि पुरिमिकायं उपगन्त्वा वुत्थवस्सो महापवारणाय पवारेत्वा ततो एकमासं अतिक्कम्म चातुमासिनियं पुण्णमदिवसे अरियगणपरिवुत्तो राजकुलं गन्त्वा भोजनावसाने "महाराज अम्हेहि चिरदिट्ठो सम्मासम्बुद्धो" ति आदिवचनमब्रवि। एवञ्च कत्वा वक्खति "पुण्णमायं महावीरो, चातुमासिनिया इधा" ति। यं पनेत्थ **केनचि** वुत्तं "वुत्थवस्सो पवारेत्वा ति चातुमासिनिया पवारणाया ति अत्थो, पठमपवारणाय वा पवारेत्वा एकमासं तत्थेव वसित्वा कत्तिकपुण्णमियं अवोच, अञ्ञथा 'पुण्णमायं महावीरो' ति वुत्तत्ता न सक्का गहेतुं" ति, तत्थ चातुमासिनिया पवारणाया B 170
ति अयमत्थविकप्पो न युज्जति। न हि पुरिमिकाय वस्सूपगता चातुमासिनियं पवारेन्ति। **चिरदिट्ठो सम्मासम्बुद्धो** ति सत्थुस्स सरीरावयवो च सम्मासम्बुद्धोयेवा ति कत्वा अवयवे समुदायवोहारवसेन एवमाहा ति दट्ठब्बं यथा "समुद्दो दिट्ठो" ति।

थेरेन वुत्तम्पि गमनकारणं ठपेत्वा इध वासे पयोजनमेव दस्सेत्वा गमनं पटिसेधेतुकामो आह "**अहं भन्ते तुम्हे**" ति आदि। **अभिवादनादीसु** आचरियं दिस्वा

---

१. अं० २-३२९ पिट्ठे।

अभिवादनकरणं **अभिवादनं** नाम। यस्मिं वा दिसाभागे आचरियो वसति इरियापथे कप्पेन्तो, ततो अभिमुखोव वन्दित्वा गच्छति, वन्दित्वा तिट्ठति, वन्दित्वा निसीदति, वन्दित्वा निपज्जति, इदं अभिवादनं नाम। आचरियं[1] पन दूरतोव दिस्वा पच्चुट्ठाय पच्चुग्गमनकरणं पच्चुट्ठानं नाम। आचरियं पन दिस्वा अञ्जलिं पग्गय्ह सीसे ठपेत्वा आचरियं[2] नमस्सति, यस्मिं दिसाभागे सो वसति, तदभिमुखो पि तथेव नमस्सति, गच्छन्तो पि ठितो पि निसिन्नो पि अञ्जलिं पग्गय्ह नमस्सतियेवा ति इदं **अञ्जलिकम्मं** नाम। अनुच्छविककम्मस्स पन करणं **सामीचिकरणं** नाम। चीवरादीसु हि चीवरं देन्तो न यं वा तं वा देति, महग्घं सतमूलग्घम्पि[3] पञ्चसतमूलग्घम्पि सतसहस्स-मूलग्घम्पि[4] देतियेव। पिण्डपातादीसुपि एसेव नयो। इदं सामीचिकरणं नाम। **सरीरधातुयो** ति सरीरावयवा। **अञ्ञातं** ति अञ्ञातं, विदितं मया ति अत्थो। **कुतो लच्छामा** ति कुतो लभिस्साम। **सुमनेन सद्धिं भन्तेहि** ति पठममेव सामणेरस्स कथितत्ता वा "जानाति एस अम्हाकमधिप्पायं" ति ञत्वा वा एवमहा ति दट्ठब्बं।

अप्पोस्सुक्को त्वं महाराजा ति महाराज त्वं धातूनं पटिलाभे मा उस्सुक्कं करोहि, मा त्वं तत्थ बावटो भव, अञ्ञं तया कत्तब्बं करोही ति अधिप्पायो। इदानि तदेव रञ्ञा कत्तब्बकिच्चं दस्सेन्तो "**वीथियो सोधापेत्वा**" ति आदिमाह। **सब्बताळा-वचरे उपट्ठापेत्वा** ति कंसताळादिताळं अवचरति एत्था ति ताळावचरं वुच्चति
B 171 आततविततादि सब्बं तूरियभण्डं। तेनेव **परिनिब्बानसुत्तट्ठकथायं**[5] "सब्बञ्च ताळा-वचरं सन्निपातेथा ति एत्थ सब्बञ्च ताळावचरं ति सब्बं तूरियभण्डं" ति वुत्तं। एत्थ पन सहचरणनयेन सब्बतूरियभण्डानं वादका पि गहेतुं वट्टन्ती ति ते सब्बे उपट्ठापेत्वा सन्निपातेत्वा ति वुत्तं होति। लच्छसी ति लभिस्ससि। **थेरा चेतियगिरिमेव** अगमंसू ति राजनिवेसनतो निक्खमित्वा पुन चेतियगिरिमेव अगमंसु।

तावदेवा ति तं खणंयेव। **पाटलिपुत्तद्वारे** ति पाटलिपुत्तनगरद्वारे। **किं भन्ते सुमन आहिण्डसी** ति सुमन त्वं समणधम्मं अकत्वा कस्मा विचरसी ति पुच्छति। **चेतियगिरिम्हियेव पतिट्ठापेत्वा** ति पच्छा तत्थ विहारत्थाय आकङ्खितब्बभावतो चेतियगिरिम्हियेव पतिट्ठापेत्वा[6]। **वड्ढमानकच्छायाया** ति पच्छाभत्तं ति अत्थो। पच्छाभत्तमेव हि छाया वड्ढति। **अथस्स एतदहोसी** ति धातुचङ्कोटकं दिस्वा एवं चिन्तेसि। **छत्तं अपनमतू** ति इदं सेतच्छत्तं सयमेव मे सीसोपरितो धातुचङ्कोटकाभिमुखं हुत्वा नमतू ति अत्थो। **मय्हं मत्थके पतिट्ठातू** ति इदं धातुचङ्कोटकं थेरस्स हत्थतो धातुया सह आगन्त्वा सिरस्मिं मे पतिट्ठातू ति अत्थो। **पोक्खरवस्सं** नाम पोक्खर-पत्तप्पमाणं वलाहकमज्झे उट्ठहित्वा कमेन फरित्वा तेमेतुकामेयेव तेमयमानं महन्तं हुत्वा

---

१. गरुट्ठानियं (सी०) २. गरुट्ठानियं (सी०) ३. सतमूलियम्पि (सी०, स्या०)
४. सहस्समूलियम्पि (सी०, स्या०) ५. दी०-ट्ठ० २, २२७ पिट्ठे।
६. पच्छा कत्तब्बेसु सब्बविहारेसु इतो धातुयो गहेत्वा पतिट्ठापेतब्बा ति अधिप्पायेन चेतिय-गिरिम्हियेव ता धातुयो पतिट्ठापेत्वा (सी०)

वस्सति। **महावीरो** ति महापरक्कमो। महावीरावयवत्ता चेव सत्थुवोहारेन धातुयो एव निद्दिट्ठा। धातुसरीरेनागमनं हि सन्धाय अयं गाथा वुत्ता।

पच्छिमदिसाभिमुखोव हुत्वा अपसक्कन्तो ति पिट्ठितो पिट्ठितोयेव पच्छिमदिसाभिमुखो हुत्वा ओसक्कन्तो, गच्छन्तो ति अत्थो। किञ्चापि एस पच्छिमदिसं न ओलोकेति, तथापि पच्छिमदिसं सन्धाय गच्छती ति "पच्छिमदिसाभिमुखो" ति वुत्तं। **पुरत्थिमेनद्वारेन नगरं पविसित्वा** ति एत्थ पिट्ठितो पिट्ठितोयेव आगन्त्वा द्वारे सम्पत्ते परिवत्तेत्वा उजुकेनेव नगरं पाविसी ति वेदितब्बं। **महेजवत्थु नाम** ति महेजनामकेन[१] B 172 यक्खेन परिग्गहितं एकं देवट्ठानं ति वेदितब्बं। **परिभोगचेतियट्ठानं** ति एत्थ परिभुत्तूपकरणानि निदहित्वा कतं चेतियं परिभोगचेतियं ति दट्ठब्बं। तिविधञ्हि चेतियं वदन्ति परिभोगचेतियं धातुचेतियं धम्मचेतियं ति। तत्थ **परिभोगचेतियं** वुत्तनयमेव। **धातुचेतियं** पन धातुयो निदहित्वा कतं। पटिच्चसमुप्पादादि लिखितपोत्थकं निदहित्वा कतं पन **धम्मचेतियं नाम**। सारीरिकं परिभोगिकं उद्दिस्सकं ति एवम्पि तिप्पभेदं चेतियं वदन्ति। अयं पन पभेदो पटिमारूपस्सपि उद्दिस्सकचेतियेनेव सङ्गहितत्ता सुट्ठुतरं युज्जति।

कथं पन इदं ठानं तिण्णं बुद्धानं परिभोगचेतियट्ठानं अहोसी ति आह "**अतीते किरा**" ति आदि। **पज्जरकेना** ति एत्थ पज्जरको नाम रोगो[२] वुच्चति। सो च यक्खानुभावेन समुप्पन्नो ति वेदितब्बो। तदा किर पुण्णकाळो नाम यक्खो अत्तनो आनुभावेन मनुस्सानम्पि सरीरे पज्जरकं नाम रोगं समुट्ठापेसि। वुत्तञ्हेतं **महावंसे**[३]—

"रक्खसेहि जनस्सेत्थ[४], रोगो पज्जरको अहू" ति। **दीपवंसे** पि चेतं वुत्तं—

"रक्खसा च बहू तत्थ, पज्जरा च समुट्ठिता।
पज्जरेन बहू सत्ता, नस्सन्ति दीपमुत्तमे" ति[५]।

अनयब्यसनं ति एत्थ **अनयो** ति अवड्ढि। कायिकं चेतसिकञ्च सुखं विक्खिपति विनासेती ति **ब्यसनं** ति दुक्खं वुच्चति। किञ्चापि "बुद्धचक्खुना लोकं ओलोकेन्तो" ति वुत्तं, तथापि "ते सत्ते अनयब्यसनमापज्जन्ते दिस्वा" ति वचनतो पठमं बुद्धचक्खुना लोकं ओलोकेत्वा पच्छा सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन लोकं ओलोकेन्तो ते सत्ते अनयब्यसनमापज्जन्ते दिस्वा ति[६] गहेतब्बं। न हि आसयानुसयादिबुद्धचक्खुस्स ते सत्ता अनयब्यसनं आपज्जन्ता दिस्सन्ति। **दुब्बुट्ठिका** ति विसमवस्सादिवसेन दुट्ठा असोभना वुट्ठिमेव दुब्बुट्ठिका, सस्सुप्पत्तिहेतुभूता कायसुखुप्पत्तिसप्पाया[७] सत्तुपकारा सम्मा वुट्ठि तत्थ न

१. महेजवत्थु नाम महेजनामकेन (सी०)
२. जररोगो (सी०) जरो (स्या०)
३. पज्जरसमपरिच्छेदे।
४. जनयेत्थ (क०)।
५. गवेसितब्बं।
६. अद्दसा ति (स्या०)।
७. सस्सुप्पत्तिहेतुभूतवुट्ठिकाय अभावा सुखुप्पत्तिसप्पाया (सी०)।

B 173 होती ति अधिप्पायो। ततो येव च "**दुब्भिक्खं दुस्सस्सं**" ति वुत्तं। भिक्खाय अभावो, दुल्लभभावो वा **दुब्भिक्खं**, सुलभा तत्थ भिक्खा न होती ति वुत्तं होति। सस्सानं अभावो, असम्पन्नता वा **दुस्सस्सं**। **देवो** ति मेघस्सेतं नामं। **सम्माधारमनुपवेच्छी** ति उदकधारं सम्मा विमुञ्चि, सम्मा अनुपवस्सी ति वुत्तं होति।

महाविवादो होती ति तस्मिं किर काले जयन्तमहाराजेन च तस्स रञ्ञो कनिट्ठभातुकेन समिद्धकुमारनामकेन उपराजेन च सद्धिं इमस्मिं दीपे महायुद्धं उपट्ठितं। तेनेतं वुत्तं "तेन खो पन समयेन मण्डदीपे महाविवादो होती" ति। **होती** ति किरिया कालमपेक्खित्वा वत्तमानपयोगो, विवादस्स पन अतीतकालिकत्तं "तेन खो पन समयेना"ति इमिनाव विञ्ञायति। सद्दन्तरसन्निधानेन हेत्थ अतीतकालावगमो यथा "भासते वड्ढते[1] तदा" ति। एवं सब्बत्थ ईदिसेसु ठानेसु वत्तमानपयोगो दट्ठब्बो। **कलहविग्गहजाता** ति एत्थ कलहो नाम मत्थकप्पत्तो कायकलहो पि वाचाकलहो पि। तत्थ हत्थपरामासादिवसेन कायेन कातब्बो कलहो **कायकलहो**। मम्मघट्टनादिवसेन[2] वाचाय कातब्बो कलहो **वाचाकलहो**। विपच्चनीकगहणं **विग्गहो**। कलहस्स पुब्बभागे उप्पन्नो अञ्ञमञ्ञविरुद्धगाहो। अथ वा कलहो नाम **वाचाकलहो**। अञ्ञमञ्ञं हत्थपरामासादिवसेन विरूपं विरुद्धं वा गहणं विग्गहो **कायकलहो**। यथावुत्तो कलहो च विग्गहो च जातो सञ्जातो एतेसं ति कलहविग्गहजाता, सञ्जातकलहविग्गहा ति अत्थो।

तानि सासनन्तरधानेन नस्सन्ती ति परियत्तिपटिवेधपटिपत्तिसङ्खातस्स तिविधस्सपि सासनस्स अन्तरधानेन धातुपरिनिब्बाने सति तानि चेतियानि विनस्सन्ति। तीणि[3] हि परिनिब्बानानि किलेसपरिनिब्बानं खन्धपरिनिब्बानं धातुपरिनिब्बानं ति, तानि पन अम्हाकं भगवतो वसेन एवं वेदितब्बानि। तस्स हि **किलेसपरिनिब्बानं** बोधिपल्लङ्के अहोसि, **खन्धपरिनिब्बानं** कुसिनारायं। **धातुपरिनिब्बानं** अनागते
B 174 भविस्सति। सासनस्स किर ओसक्कनकाले इमस्मिं तम्बपण्णिदीपे धातुयो सन्निपतित्वा महाचेतियं गमिस्सन्ति, महाचेतियतो नागदीपे राजायतनचेतियं, ततो महाबोधिपल्लङ्कं गमिस्सन्ति, नागभवनतो पि देवलोकतो पि ब्रह्मलोकतो पि धातुयो महाबोधिपल्लङ्कमेव गमिस्सन्ति, सासपमत्ता पि धातु न अन्तरा नस्सिस्सति। सब्बा धातुयो महाबोधिपल्लङ्के रासिभूता सुवण्णक्खन्धो विय एकग्घना हुत्वा छब्बण्णरस्मियो विस्सज्जेस्सन्ति, ता दससहस्सिलोकधातुं फरिस्सन्ति। ततो दससहस्सचक्कवाळेदेवता सन्निपतित्वा "अज्ज सत्था परिनिब्बाति, अज्ज सासनं ओसक्कति, पच्छिमदस्सनं दानि इदं अम्हाकं" ति दसबलस्स परिनिब्बुतदिवसतो महन्ततरं कारुञ्ञं करिस्सन्ति, ठपेत्वा अनागामिखीणासवे अवसेसा सकभावेन सण्ठातुं न सक्खिस्सन्ति। धातूसु तेजोधातु उट्ठहित्वा याव ब्रह्मलोका उग्गच्छिस्सति, सासपमत्तिया पि धातुया सति एक-

---

१. राघवो (सी०)। २. ओट्ठघट्टनादिवसेन (स्या०)।

३. दी०-ट्ठ-३-८३, अभि-ट्ठ-२-४१३ पिट्ठेसुपि पस्सितब्बं।

जालाव भविस्सति, धातूसु परियादानं गतासु परिच्छिज्जिस्सति। एवं महन्तं आनुभावं दस्सेत्वा धातूसु अन्तरहितासु सासनं अन्तरहितं नाम होति।

दिवा बोधिरुक्खट्ठाने हत्थिसालायं तिट्ठती ति दिवा वत्थुविचिननाय ओकासं कुरुमानो ततो धातुं गहेत्वा कुम्भे ठपेत्वा सधातुकोव हुत्वा तिट्ठती ति वदन्ति। वुत्तञ्हेतं **महावंसे**[1]—

"रत्तिं नागोनुपरियाति, तं ठानं सो सधातुकं।
बोधिट्ठानम्हि सालायं, दिवा ठाति सधातुको" ति॥

थूपपतिट्ठानभूमिं परियायती ति मत्थकतो धातुं तत्थ पतिट्ठापेत्वा सधातुकं थूपपतिट्ठानभूमिं रत्तिभागे परियायति, समन्ततो विचरती ति अत्थो। **जङ्घप्पमाणं** ति पुप्फट्ठानप्पमाणं[2]। थूपकुच्छितो हेट्ठाभागञ्हि थूपस्स जङ्घा ति वदन्ति। **धातुओरोपनत्थाया** ति हत्थिकुम्भतो धातुकरण्डकस्स ओरोपनत्थाय। **सकलनगरञ्च जनपदो चा** ति नगरवासिनो जनपदवासिनो च अभेदतो नगरजनपदसद्देहि वुत्ता "सब्बो गामो आगतो, मञ्चा उक्कुट्ठिं करोन्ती" ति आदीसु विय। **महाजनकाये** ति महाजनसमूहे। समूहपरियायो हेत्थ कायसद्दो। एकेकधातुप्पदेसतो तेजोदकनिक्खमनादिवसेन यमकयमकं हुत्वा पवत्तं पाटिहारियं **यमकपाटिहारियं**। छन्नं वण्णानं रस्मियो चाति सम्बन्धो B 175
कातब्बो। छन्नं वण्णानं उदकधारा चाति एवम्पेत्थ सम्बन्धं वदन्ति। परिनिब्बुते पि भगवति तस्सानुभावेन एवरूपं पाटिहारियमहोसियेवा ति दस्सेतुं **"एवं अचिन्तिया"** ति आदिगाथमाह। **बुद्धधम्मा** ति एत्थ **बुद्धगुणा**।

धरमानकाले पि तिक्खत्तुं आगमासी ति भगवा किर अभिसम्बोधितो नवमे मासे फुस्सपुण्णमदिवसे यक्खाधिवासं लङ्कादीपमुपगन्त्वा लङ्कामज्झे तियोजनायते योजनवित्थते महानागवनुय्याने महायक्खसमागमे उपरिआकासे ठत्वा कप्पुट्ठानसमये समुट्ठितवुट्ठिवातनिब्बिसेसवस्सवायुना च लोकन्तरिकनिरयन्धकारसदिसघोरन्धकारनिकायेन च सीतनरकनिब्बिसेसबहलसीतेन च संवट्टकालसञ्जातवातसङ्खुभितेहि मेघनभगज्जितसदिसेन गगनमेदनीनिन्नादेन च यक्खानं भयं सन्तासं जनेत्वा तेहि याचिताभयो "देथ मे समग्गा निसीदनट्ठानं"ति वत्वा "देम ते सकलदीपं, देहि नो मारिस अभयं"ति वुत्ते सब्बं तं उपद्दवं अन्तरधापेत्वा यक्खदत्तभूमिया चम्मखण्डं पत्थरित्वा तत्थ निसिन्नो समन्ततो जलमानं चम्मखण्डं पसारेत्वा कप्पुट्ठानग्गिसदिसदहनाभिभूतानं जलधिसलिलभीतानं समन्ता वेलन्ते भमन्तानं यक्खानं गिरिदीपं दस्सेत्वा तेसु तत्थ पतिट्ठितेसु तं यथाट्ठाने पतिट्ठापेत्वा चम्मखण्डं सङ्खिपित्वा निसिन्नो तदा समागते अनेकदेवतासन्निपाते धम्मं देसेत्वा अनेकपाणकोटीनं धम्माभिसमयं कत्वा सुमनकूटवासिना महासुमनदेवराजेन समधिगतसोतापत्तिफलेन याचितपूजनीयो सीसं परामसित्वा मुट्ठिमत्ता नीलामलकेसधातुयो तस्स दत्वा जम्बुदीपमगमासि।

---

१. सत्तरसमपरिच्छेदे। २. पुप्फाधानप्पमाणं (सी॰)।

दुतियं अभिसम्बोधितो पञ्चमे संवच्छरे चूळोदरमहोदरानं जलथलनिवासीनं मातुलभागिनेय्यानं नागराजूनं मणिपल्लङ्कं निस्साय उपट्ठितमहासङ्गामे नागानं महाविनासं दिस्वा चित्तमासकाळपक्खस्स उपोसथदिवसे पातोव समिद्धसुमनेन नाम रुक्खदेवपुत्तेन छत्तं कत्वा धारितराजायतनो नागदीपं समागन्त्वा सङ्गाममज्झे आकासे पल्लङ्केन निसिन्नो घोरन्धकारेन नागे सन्तासेत्वा अस्सासेन्तो आलोकं दस्सेत्वा सञ्जातपीतिसोमनस्सानं उपगतनागानं सामग्गिकरणीयं धम्मं देसेत्वा मातुलभागिनेय्येहि
B 176 द्वीहि नागराजूहि पूजिते पथवीतलगते मणिपल्लङ्के निसिन्नो नागेहि दिब्बन्नपानेहि सन्तप्पितो जलथलनिवासिनो असीतिकोटिनागे सरणेसु च सीलेसु च पतिट्ठापेत्वा तेहि नमस्सितुं पल्लङ्कञ्च राजायतनपादपञ्च तत्थ पतिट्ठापेत्वा जम्बुदीपमगमासि ।

ततियम्पि अभिसम्बोधितो अट्ठमे संवच्छरे महोदरमातुलेन मणिअक्खिकनागराजेनाभियाचितो विसाखपुण्णमदिवसे पञ्चभिक्खुसतपरिवुतो कल्याणीपदेसे मणिअक्खिकस्स भवनमुपगन्त्वा तत्थ मापितरुचिररतनमण्डपे मनोहरवरपल्लङ्के निसिन्नो नागराजेन दिब्बन्नपानेहि सन्तप्पेत्वा नागमाणविकगणपरिवुतेन दिब्बमालागन्धादीहि पूजितो तत्थ धम्मं देसेत्वा वुट्ठायासना सुमनकूटे पदं दस्सेत्वा पब्बतपादे दिवाविहारं कत्वा दीघवापिचेतियट्ठाने च मुतियङ्गणचेतियट्ठाने च कल्याणीचेतियट्ठाने च महाबोधिट्ठाने च थूपारामट्ठाने च महाचेतियट्ठाने च ससावको निसीदित्वा निरोधसमापत्तिं समापज्जित्वा सिलाचेतियट्ठानेयेव ठत्वा देवनागे समनुसासित्वा जम्बुदीपमगमासि । एवं भगवा धरमानकाले पि इमं दीपं तिक्खत्तुं अगमासी ति वेदितब्बं ।

इदानि तदेव तिक्खत्तुमागमनं सङ्खेपतो विभावेन्तो आह **"पठमं यक्खदमनत्थं"** ति आदि । **रक्खं करोन्तो** ति यक्खानं पुन अपविसनत्थाय रक्खं करोन्तो । आविज्जी ति[1] समन्ततो विचरि । **मातुलभागिनेय्यानं** ति चूळोदरमहोदरानं । एत्थ पन किञ्चापि भगवा समिद्धसुमनेन नाम देवपुत्तेन सद्धिं आगतो, तथापि पच्छासमणेन एकेन पि भिक्खुना सद्धिं अनागतत्ता "एककोव आगन्त्वा"ति वुत्तं । तदनुरूपस्स परिपन्थस्स विहतत्ता **"परिळाहं वूपसमेत्वा"** ति वुत्तं । **रञ्ञो भाता** ति रञ्ञो कनिट्ठभाता । **अभयो** ति मत्ताभयो ।

अनुळा देवी ति रञ्ञो जेट्ठभातुजाया अनुळा देवी । **पुरिमकानं तिण्णं सम्मासम्बुद्धानं बोधि पतिट्ठासी** ति यदा हि सो ककुसन्धो नाम भगवा इमस्मिं दीपे मनुस्से पज्जरकाभिभूते अनयव्यसनमापज्जन्ते दिस्वा करुणाय सञ्चोदितहदयो इमं दीपमा-
B 177 गतो, तदा तं रोगभयं वूपसमेत्वा सन्निपतितानं धम्मं देसेन्तो चतुरासीतिया पाणसहस्सानं धम्माभिसमयं कत्वा सायन्हसमये बोधिपतिट्ठानारहट्ठानं गन्त्वा तत्थ समापत्तिं समापज्जित्वा वुट्ठाय "मम सिरीसमहाबोधितो दक्खिणमहासाखमादाय रुचनन्दा भिक्खुनी इधागच्छतू" ति अधिट्ठासि । सा सत्थु चित्तं ञत्वा तङ्खणञ्ञेव खेमवती-

---

१. आविञ्जीति (सी० स्या०)

राजधानिया खेमराजानमादाय महाबोधिमुपगन्त्वा दक्खिणमहासाखाय मनोसिलालेखं खेमराजेन दापेत्वा तं सयं छिज्जित्वा सुवण्णकटाहे ठितं बोधिसाखमादाय पञ्चसतभिक्खुनीहि चेव देवताहि च परिवारिता इद्धिया इधानेत्वा तथागतेन पसारिते दक्खिणहत्थे ससुवण्णकटाहं महबोधिं ठपेसि। तं तथागतो अभयस्स नाम रञ्ञो दत्वा तेन तस्मिं समये "महातित्थवनं" ति पञ्ञाते महामेघवनुय्याने पतिट्ठापेसि।

कोणागमनो च भगवा दुब्बुट्ठिपीळिते दीपवासिनो दिस्वा इमं दीपमागतो तं भयं वूपसमेत्वा धम्मं देसेन्तो चतुरासीति पाणसहस्सानि मग्गफलेसु पतिट्ठापेत्वा पुब्बबोधिट्ठानं गन्त्वा समापत्तिपरियोसाने "मम उदुम्बरमहाबोधितो दक्खिणमहासाखमादाय करकनत्ता[1] भिक्खुनी इधागच्छतू"ति चिन्तेसि। सा भगवतो अधिप्पायं विदित्वा तङ्खणञ्ञेव सोभराजधानिया सोभराजानमादाय महाबोधिमुपगन्त्वा दक्खिणमहासाखाया मनोसिलालेखं सोभराजेन दापेत्वा तं सयं छिज्जित्वा हेमकटाहे पतिट्ठितं बोधिसाखमादाय पञ्चसतभिक्खुनीहि सद्धिं सुरगणपरिवुता इद्धिया इधाहरित्वा सत्थारा पसारितदक्खिणपाणितले सहेमकटाहं महाबोधिं ठपेसि। तं तथागतो समिद्धस्स रञ्ञो दत्वा तेन तस्मिं समये "महानागवनं" ति सङ्ख्यं गते महामेघवनुय्याने महाबोधिं पतिट्ठापेसि।

कस्सपो पि च भगवा उपट्ठितराजूपराजयुद्धेन पाणिनो विनासं दिस्वा करुणाय चोदितो इमं दीपमागन्त्वा तं कलहं वूपसमेत्वा धम्मं देसेन्तो चतुरासीति पाणसहस्सानि मग्गफलं पापेत्वा महाबोधिट्ठानं गन्त्वा तत्थ समापत्तिं समापज्जित्वा वुट्ठाय "मम निग्रोधमहाबोधितो दक्खिणमहासाखमादाय सुधम्मा भिक्खुनी इधागच्छतू" ति अधिट्ठासि। सा भगवतो चित्तं विदित्वा तङ्खणञ्ञेव वाराणसीराजधानिया ब्रह्मदत्त- B 178
राजानमादाय महाबोधिमुपगन्त्वा दक्खिणमहासाखाय मनोसिलालेखं ब्रह्मदत्तेन दापेत्वा तं सयं छिज्जित्वा कनककटाहे ठितं बोधिसाखमादाय पञ्चसतभिक्खुनीपरिवारा देवगणपरिवुता इद्धिया एत्थ आनेत्वा मुनिन्देन पसारिते दक्खिणकरतले ससुवण्णकटाहं महाबोधिं ठपेसि। तं भगवा जयन्तरञ्ञो दत्वा तेन तस्मिं समये "महासालवनं" ति सङ्ख्यं गते महामेघवनुय्याने महाबोधिं पतिट्ठापेसि। एवं इमस्मिं दीपे पुरिमकानं तिण्णं सम्मासम्बुद्धानं बोधिं पतिट्ठापेसि। तं सन्धाय एवमाह "इमस्मिञ्च महाराज दीपे पुरिमकानं तिण्णं सम्मासम्बुद्धानं बोधि पतिट्ठासी"ति।

सरसरंसिजालविस्सज्जनकेना ति सिनिद्धताय रसवन्तं ओजवन्तं अभिनवरंसिजालं विस्सज्जेन्तेन। अथ वा इतो चितो च संसरणतो सरसं सजीवं जीवमानं विय रंसिजालं विस्सज्जेन्तेन। अथ वा सरस काले धरमानकाले बुद्धेन विय रंसिजालं मुञ्चन्तेना ति एवमेत्थ अत्थं वण्णयन्ति। एकदिवसेनेव अगमासी ति सम्बन्धो। **पञ्चहि कञ्ञासतेही** ति अत्तनो परिचारिकेहि पञ्चहि कञ्ञासतेहि। **उपस्सयं कारापेत्वा** ति भिक्खुनुपस्सयं कारापेत्वा। **अप्पेसी** ति लेखसासनं पतिट्ठापेसि। **एवञ्च अवोचा** ति

---

१. कनकदत्ता (सी०) कणकदत्ता (स्या०)

राजसन्देसं अप्पेत्वा थेरस्स मुखसासनं विञ्ञापेन्तो एवं अवोच। उदिक्खती ति अपेक्खति पत्थेति[१]।

छिन्नहत्थं विया ति छिन्नहत्थवन्तं विय। छिन्ना हत्था एतस्सा ति छिन्नहत्थो-ति अञ्ञपदत्थसमासो दट्ठब्बो। **पब्बज्जापुरेक्खारा** ति पब्बज्जाभिमुखा। पब्बज्जाय सञ्जाताभिलासा "कदा नु खो पब्बजिस्सामी"ति तत्थ उस्सुक्कमापन्ना ति वुत्तं होति। **मं पटिमानेतो** ति मं उदिक्खति। सत्थेन घातं न अरहती ति **असत्थघातारहं**। **हिमवलाहकगब्भं** ति हिमपुण्णवलाहकगब्भं। पाटिहारियवसेन जातं हिममेव "वलाहकगब्भं"ति पि वदन्ति। दोणमत्ता ति मगधनाळिया सोळसनाळिप्पमाणा।

मग्गं ति सत्तयोजनिकं मग्गं। **पटिजग्गापेत्वा** ति सोधापेत्वा, खाणुकण्टकादीनि हरापेत्वा तत्थ बहलविपुलवालुकं ओकिरापेत्वा ति वुत्तं होति। कम्मारवण्णं ति रञ्ञो पकतिसुवण्णकारवण्णं। **नवहत्थपरिक्खेपं** ति नवहत्थप्पमाणो परिक्खेपो अस्सा ति नव-
B 179 हत्थपरिक्खेपं, परिक्खेपतो नवहत्थप्पमाणं ति वुत्तं होति। "**पञ्चहत्थुब्बेधं** ति आदीसु पि इमिनाव नयेन अत्थो वेदितब्बो। **तिहत्थविक्खम्भं** ति तिहत्थप्पमाणवित्थारं। **समुस्सितधजपटाकं** ति उस्सापितनीलपीतादिविविधजपटाकं। **नानारतनविचित्त** ति तत्थ तत्थ रचितनानारतनेहि सुविचित्तं। **अनेकालङ्कारपटिमण्डितं** ति पसन्नजन-पूजितेहि[२] हत्थूपगादीहि नानालङ्कारेहि सज्जितं। **नानाविधकुसुमसमाकिण्णं** ति उपहारवसेन उपनीतेहि नानप्पकारेहि वण्णगन्धसम्पन्नेहि जलथलपुप्फेहि आकिण्णं। **अनेकतूरियसंयुट्ठं** पि आततविततादि पञ्चङ्गिकतूरियसंघोसितं। **अवसेसं अदस्सनं अगमासी** ति एत्थ "हन्द महाराज तया गहेतब्बा अयं साखा, तस्स उपनिस्सयभूतो अयं खन्धो, न मयं तया गहेतब्बा"ति वदन्ता विय अवसेसा साखा सत्थु तेजसा अदस्सनमग-मंसू ति वदन्ति। **गवक्खजालसदिसं** ति भावनपुंसकं, जालकवाटसदिसं कत्वा ति अत्थो। **चेलुक्खेपसतसहस्सानि पवत्तिंसु** ति तेसं तेसं जनानं सीसोपरि भमन्तानं उत्तरासङ्ग-चेलानं उक्खेपसतसहस्सानि पवत्तिंसु ति अत्थो। **मूलसतेना** ति दससु लेखासु एकेकाय दस दस हुत्वा निक्खन्तमूलसतेन। **दसमहामूला** ति पठमलेखाय निक्खन्तदसमहा-मूलानि।

देवदुन्दुभियो फलिंसु ति देवदुन्दुभियो थनिंसु। **देवदुन्दुभी** ति च न एत्थ काचि भेरी अधिप्पेतो, अथ खो उप्पातभावेन आकासगतो निग्घोससद्दो। **देवो** ति हि मेघो। तस्स हि अच्छभावेन आकासवण्णस्स देवस्साभावेन सुक्खगज्जितसञ्ञिते सद्दे निच्छरन्ते देवदुन्दुभी ति समञ्ञा, तस्मा देवदुन्दुभियो फलिंसू ति देवो सुक्खगज्जितं गज्जी ति वुत्तं होति। **पब्बतानं नच्चेही** ति पथवीकम्पेन इतो चितो च भमन्तानं पब्बतानं नच्चेहि। **यक्खानं हिङ्कारेही** ति विम्हयजातानं यक्खानं विम्हयप्पकासनवसेन पवत्ते-हि हिङ्कारसद्देहि। यक्खा हि विम्हयजाता "हिं हिं" ति सद्दं निच्छारेन्ति। **थुति-**

---

१. पत्थेतीति अत्थो (स्या०) २. पसन्नजनपूजेन्ते तेहि (सी०)

जप्पेही ति पसंसावचनेहि। **ब्रह्मानं अप्फोटनेही** ति पीतिसोमनस्सजातानं ब्रह्मानं बाहायं पहरणसङ्घातेहि अप्फोटनेहि। पीतिसोमनस्सजाता हि ब्रह्मानो वामहत्थं समिञ्जित्वा दक्खिणेन हत्थेन बाहायं पहारं देन्ति। **एककोलाहलं** ति एकतो पवत्त- B 180
कोलाहलं। **एकनिन्नादं** ति एकतो पवत्तनिग्घोसं। फलतो निक्खन्ता छब्बण्णरस्मियो उजुकं उग्गन्त्वा ओनमित्वा चक्कवाळपब्बतमुखवट्टिं आहच्च तिट्ठन्ती ति आह **सकलचक्कवाळं रतनगोपानसीविनद्धं विय कुरुमाना**" ति। **तङ्खणतो च पन पभुती-** ति वुत्तनयेन सुवण्णकटाहे पतिट्ठितस्स महाबोधिस्स छब्बण्णरस्मीनं विस्सज्जितकालतो पभुति। **हिमवलाहकगब्भं पविसित्वा अट्ठासी** ति सुवण्णकटाहेनेव सद्धिं उग्गन्त्वा हिमोदकपुण्णं वलाहकगब्भं पविसित्वा अट्ठासि। पठमं सुवण्णकटाहे पतिट्ठितोयेव हि बोधि पच्छा वुत्तप्पकारअच्छरियपटिमण्डितो हुत्वा हिमवलाहकगब्भं पविसित्वा अट्ठासि। तेनेव वक्खति "पठमं सुवण्णकटाहे पतिट्ठहि। ततो हिमगब्भसत्ताहं अभि-सेकसत्ताहञ्च वीतिनामेत्वा" ति आदि। ततोयेव च **महावंसे** पि[1] वुत्तं—

"एवं सतेन मूलानं, तत्थेसा गन्धकद्दमे।
पतिट्ठासि महाबोधि, पसादेन्ती महाजनं॥

तस्सा खन्धो दसहत्थो, पञ्च साखा मनोरमा।
चतुहत्था चतुहत्था, दसड्ढफलमण्डिता॥

सहस्संतु पसाखानं, साखानं तासमासि च।
एवं आसि महाबोधि, मनोहरसिरिन्धरा॥

कटाहम्हि महाबोधि, पतिट्ठितक्खणे मही।
अकम्पि पाटिहीरानि, अहेसुं विविधानि च॥

सयं नादेहि तूरियानं, देवेसु मानुसेसु च।
साधुकारनिन्नादेहि, देवब्रह्मगणस्स च॥

मेघानं मिगपक्खीनं, यक्खादीनं रवेहि च।
रवेहि च महीकम्पे, एककोलाहलं अहु॥

बोधिया फलपत्तेहि, छब्बण्णरंसियो सुभा।
निक्खमित्वा चक्कवाळं, सकलं सोभयिंसु च॥

सकटाहा महाबोधि, उग्गन्त्वान ततो नभं।
अट्ठासि हिमगब्भम्हि, सत्ताहानि अदस्सना" ति॥

तस्मा सुवण्णकटाहे पतिट्ठितोयेव बोधि कटाहेनेव सद्धिं उग्गन्त्वा हिमवलाहक- B 181
गब्भं पविसित्वा अट्ठासी ति वेदितब्बं।

---

१. अट्ठारसमपरिच्छेदे।

हेट्ठा पन भगवतो अधिट्ठानक्कमं दस्सेन्तेन यं वुत्तं—

"भगवा किर महापरिनिब्बानमञ्चे निपन्नो लङ्कादीपे महाबोधिपतिट्ठापनत्थाय असोकमहाराजा महाबोधिग्गहणत्थं गमिस्सति, तदा महाबोधिस्स दक्खिणसाखा सयमेव छिज्जित्वा सुवण्णकटाहे पतिट्ठातू ति अधिट्ठासि, इदमेकमधिट्ठानं।

तत्थ पतिट्ठानकाले च 'महाबोधि हिमवलाहकगब्भं पविसित्वा तिट्ठतू' ति अधिट्ठासि, इदं दुतियमधिट्ठानं।

सत्तमे दिवसे हिमवलाहकगब्भतो ओरुय्ह सुवण्णकटाहे पतिट्ठहन्तो पत्तेहि च फलेहि च छब्बण्णरस्मियो मुञ्चतू ति अधिट्ठासि, इदं ततियमधिट्ठानं" ति।

तं इमिना न समेति। तत्थ हि पठमं हिमवलाहकगब्भं पविसित्वा पच्छा सत्तमे दिवसे हिमवलाहकगब्भतो ओरुय्ह छब्बण्णरंसिविस्सज्जनं सुवण्णकटाहे पतिट्ठहनञ्च वुत्तं, तस्मा अट्ठकथाय पुब्बेनापरं न समेति। **महावंसे** पन अधिट्ठाने पि पठमं सुवण्णकटाहे पतिट्ठहनं पच्छायेव छब्बण्णरंसिविस्सज्जनं हिमवलाहकगब्भपविसनञ्च। वुत्तञ्हेतं—

"परिनिब्बानमञ्चम्हि, निपन्नेन जिनेन हि।
कतं महाअधिट्ठानं, पञ्चकं पञ्चचक्खुना॥

गय्हमाना महाबोधि-साखा' सोकेन दक्खिणा।
छिज्जित्वान सयंयेव, पतिट्ठातु कटाहके॥

पतिट्ठहित्वा सा साखा, छब्बण्णरस्मियो सुभा।
राजयन्ती दिसा सब्बा, फलपत्तेहि मुञ्चतु॥

ससुवण्णकटाहा सा, उग्गन्त्वान मनोरमा।
अदिस्समाना सत्ताहं, हिमगब्भम्हि तिट्ठतू" ति[1]॥

B 182 **बोधिवंसे** पि च अयमेव अधिट्ठानक्कमो वुत्तो, तस्मा अट्ठकथायं वुत्तो अधिट्ठानक्कमो यथा पुब्बेनापरं न विरुज्झति, तथा वीमंसित्वा गहेतब्बो।

हिमञ्च छब्बण्णरंसियो च आवत्तित्वा महाबोधिमेव पविसिंसू ति महाबोधिं पटिच्छादेत्वा ठितं हिमञ्च बोधितो निक्खन्त छब्बण्णरस्मियो च आवत्तित्वा पदक्खिणं कत्वा बोधिमेव पविसिंसु, बोधिपविट्ठा विय हुत्वा अन्तरहिता ति वुत्तं होति। एत्थ पन "हिमञ्च रंसियो चा" ति अयमेव पाठो सतसोधितसम्मते पोराणपोत्थके सेसेसु च सब्बपोत्थकेसु दिस्सति। **महावंसे** पि चेतं वुत्तं—

"अतीते तम्हि सत्ताहे, सब्बे हिमवलाहका।
पविसिंसु महाबोधिं, सब्बा ता रंसियो पि चा" ति॥

---

१. सत्तरसमपरिच्छेदे।

केनचि पन 'पञ्च रंसियो'' ति पाठं परिकप्पेत्वा यं वुत्तं ''सब्बदिसाहि पञ्च रस्मियो आवत्तित्वा ति पञ्चहि फलेहि निक्खन्तत्ता पञ्च, ता पन छब्बण्णावा'' ति, तं तस्स सम्मोहविजम्भितमत्तं ति दट्ठब्बं। **परिपुण्णखन्धसाखापसाखपञ्चफलपटिमण्डितो** ति परिपुण्णखन्धसाखापसाखाहि चेव पञ्चहि च फलेहि पटिमण्डितो, समन्ततो विभूसितो ति अत्थो। **अभिसेकं दत्वा** ति अनोतत्तोदकेन अभिसेकं दत्वा। **महाबोधिट्ठानेयेव अट्ठासी** ति बोधिसमीपेयेव वसि।

पुब्बकत्तिकपवरणादिवसे ति अस्सयुजमासस्स जुण्हपक्खपुण्णमियं। चातुद्दसी उपोसथत्ता द्विसत्ताहे जाते उपोसथो सम्पत्तो ति आह ''**काळपक्खस्स उपोसथदिवसे**'' ति, अस्सयुजमासकाळपक्खस्स चातुद्दसी उपोसथे ति अत्थो। **पाचीनमहासालमूले ठपेसी** ति नगरस्स पाचीनदिसाभागे जातस्स महासालरुक्खस्स हेट्ठा मण्डपं कारेत्वा तत्थ ठपेसि। **सत्तरसमे दिवसे** ति पाटिपददिवसतो दुतियदिवसे। **कत्तिकछणपूजं अद्दसा** ति कत्तिकछणवसेन बोधिस्स करियमानं पूजं सुमनसामणेरो अद्दस, दिस्वा च आगतो सब्बं तं पवत्तिं आरोचेसि। तं सन्धायेव च थेरो बोधिं आहरणत्थं पेसेसि।

अट्ठारस देवताकुलानी ति महाबोधिं परिवारेत्वा ठितनागयक्खादिदेवताकुलानि दत्वा ति सम्बन्धो। अमच्चकुलानि बोधिस्स कत्तब्बविचारणत्थाय अदासि। B 183
ब्राह्मणकुलानि लोकसम्मतत्ता उदकासिञ्चनत्थाय अदासि। कुटुम्बियकुलानि बोधिस्स कतब्बपूजोपकरणगोपनत्थाय अदासि। ''गोपका राजकम्मिनो तथा तरच्छा'' ति **महागण्ठिपदे** वुत्तं। **गण्ठिपदे** पन ''गोपककुलानि बोधिसिञ्चनत्थं खीरधेनुपालनत्थाय तरच्छकुलानि कालिङ्गकुलानि विस्सासिकानि पधानमनुस्सकुलानी'' ति वुत्तं। **कालिङ्गकुलानी** ति एत्थ ''उदकादिगाहका[1] कालिङ्गा'' ति **महागण्ठिपदे** वुत्तं। ''कलिङ्गेसु जनपदे जातिसम्पन्नकुलं कालिङ्गकुलं'' ति केचि। **इमिना परिवारेना** ति सहत्थे करणवचनं, इमिना वुत्तप्पकारपरिवारेन सद्धिं ति अत्थो। **विञ्झाटविं समतिक्कम्मा** ति राजा सयम्पि महाबोधिस्स पच्चुग्गमनं करोन्तो सेनङ्गपरिवुतो थलपथेन गच्छन्तो विञ्झाटविं नाम अटविं अतिक्कमित्वा। **तामलित्तिं[2] अनुप्पत्तो** ति तामलित्तिं[2] नाम तित्थं सम्पत्तो। **इदमस्स ततियं** ति सुवण्णकटाहे पतिट्ठितमहाबोधिस्स रज्जसम्पदानं सन्धाय वुत्तं। ततो पुब्बे पनेस एकवारं सद्धाय सकलजम्बुदीपरज्जेन महाबोधिं पूजेसियेव। तस्मा तेन सद्धिं चतुत्थमिदं रज्जसम्पदानं। महाबोधिं पन यस्मिं यस्मिं दिवसे रज्जेन पूजेसि, तस्मिं तस्मिं दिवसे सकलजम्बुदीपरज्जतो उप्पन्नं आयं गहेत्वा महाबोधिपूजं कारेसि।

मागसिरमासस्सा ति मिगसिरमासस्स[3]। **पठमपाटिपददिवसे** ति सुक्कपक्खपाटिपददिवसे। तञ्हि कण्हपक्खपाटिपददिवसं अपेक्खित्वा ''पठमपाटिपददिवसं'' ति वुच्चति। इदञ्च इमस्मिं दीपे पवत्तमानवोहारं गहेत्वा वुत्तं। तत्थ पन पुण्णमितो

१. उदकादिवाहका (सी०-स्या०) २. ताम्बलित्तिं (स्या०)
३. मग्गसिरस्साति मग्गसिरमासस्स (सी०) मिगसिरस्साति मिगसिरमासस्स(स्या०)

पट्ठाय याव अपरा पुण्णमी, ताव एको मासो ति वोहारस्स पवत्तत्ता तेन वोहारेन "दुतियपाटिपददिवसे" ति वत्तब्बं सिया। तत्थ हि कण्हपक्खपाटिपददिवसं "पठमपाटिपदं" ति वुच्चति। **उक्खिपित्वा** ति महासालमूले दिन्नेहि सोळसहि जातिसम्पन्नकुलेहि सद्धिं उक्खिपित्वा ति वदन्ति। **गच्छति वतरे** ति एत्थ **अरे** ति खेदे। तेनेवाह "कन्दित्वा" ति, बोधिया अदस्सनं असहमानो रोदित्वा परिदेवित्वा ति अत्थो। **सरसरंसिजालं** ति एत्थ पन हेट्ठा वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो। **महाबोधिसमारुळ्हो** ति महाबोधिना समारुळ्हा। **पस्सतो पस्सतो** ति अनादरे सामिवचनं, पस्सन्तस्सेवा ति
B 184 अत्थो। **महासमुद्दतलं पक्खन्ता** ति[1] महासमुद्दस्स उदकतलं पक्खन्दि। **समन्ता योजनं** ति समन्ततो एकेकेन पस्सेन योजनप्पमाणे पदेसे। अच्चन्तसंयोगे चेतं उपयोगवचनं। **वीचियो वूपसन्ता**ति वीचियो न उट्ठहिंसु, नाहेसुं ति वुत्तं होति। **पवज्जिंसू** ति विरविंसु, नादं पवत्तयिंसू ति अत्थो। **रुक्खादिसन्निस्सिताहो** ति एत्थ **आदि**-सद्देन पब्बतादिसन्निस्सिता देवता सङ्गण्हाति।

सुपण्णरूपेना ति सुपण्णसदिसेन रूपेन। **नागकुलानि सन्तासेसी** ति महाबोधिग्गहणत्थं आगतानि नागकुलानि सन्तासेसि, तेसं भयं उप्पादेत्वा पलापेसी ति वुत्तं होति। तदा हि समुद्दवासिनो नागा महाबोधिं गहेतुं वातवस्सन्धकरादीहि महन्तं विकुब्बनं अकंसु। ततो संघमित्तत्थेरो गरुळवण्णं मापेत्वा तेन गरुळरूपेन आकासं पूरयमाना सिखामरीचिजालेन गगनं एकन्धकारं कत्वा पक्खप्पहारवातेन महासमुद्दं आलोळेत्वा संवट्टजलधिनादसदिसेन रवेन नागानं हदयानि भिन्दन्ती विय तासेत्वा नागे पलापेसि। **ते च उत्रस्तरूपा नागा आगन्त्वा** ति ते च वुत्तनयेन उत्तासिता नागा पुन आगन्त्वा। **तं विभूतिं** ति तं इद्धिपाटिहारियसङ्खातं विभूतिं, तं अच्छरियं ति वुत्तं होति। **थेरिं याचित्वा** ति "अय्ये अम्हाकं भगवा मुचलिन्दनागराजस्स भोगावलिं अत्तनो गन्धकुटिं कत्वा सत्ताहं तस्स सङ्गहं अकासि। अभिसम्बुज्झनदिवसे नेरञ्जरानदीतीरे अत्तनो उच्छिट्ठपत्तं महाकाळनागस्स विस्सज्जेसि। उरुवेलनागेन मापितं विसधूमदहनं अगणेत्वा तस्स सरणसीलाभरणमदासि। महामोग्गल्लानत्थेरं पेसेत्वा नन्दोपनन्दनागराजानं दमेत्वा निब्बिसं अकासि। एवं सो लोकनायको अम्हाकं उपकारको, त्वम्पि नो दोसमस्सरित्वा मुहुत्तं महाबोधिं विस्सज्जेत्वा नागलोकस्स सग्गमोक्खमग्गं सम्पादेही" ति एवं याचित्वा। **महाबोधिवियोगदुक्खितो** ति महाबोधिवियोगेन दुक्खितो सञ्जातमानसिकदुक्खो। **कन्दित्वा** ति इमस्स परियायवचनमत्तं **रोदित्वा** ति, गुणकित्तनवसेन वा पुनप्पुनं रोदित्वा, विलापं कत्वा ति अत्थो।

उत्तरद्वारो ति अनुराधपुरस्स उत्तरद्वारतो। **मग्गं सोधापेत्वा** ति खाणुकण्टका-
B 185 दीनं उद्धरापनवसेन मग्गं सोधापेत्वा। **अलङ्कारापेत्वा** ति वालुकादीनं ओकिरापनादिवसेन सज्जेत्वा। **समुद्दसालवत्थुस्मिं** ति समुद्दासन्नसालाय वत्थुभूते पदेसे। तस्मिं किर पदेसे ठितेहि समुद्दस्स दिट्ठत्ता तं अच्छरियं पकासेतुं तत्थ एका साला कता। सा नामेन

---

१. पक्खन्दाति (क०)

"समुद्दासन्नसाला" ति पाकटा जाता। वुत्तञ्हेतं—

"समुद्दासन्नसालाय, ठाने ठत्वा महण्णवे।
आगच्छन्तं महाबोधिं, महाथेरिद्धियाद्दस॥

तस्मिं ठाने कता साला, पकासेतुं तमब्भुतं।
'समुद्दासन्नसाला' ति, नामेनासिध पाकटा" ति॥

ताय विभूतिया ति ताय वुत्तप्पकाराय पूजासक्कारादिसम्पत्तिया। **थेरस्सा** ति महामहिन्दत्थेरस्स। मग्गस्स किर उभोसु पस्सेसु अन्तरन्तरा पुप्फेहि कूटागारसदिससण्ठानानि पुप्फचेतियानि कारापेसि। तं सन्धायेतं वुत्तं "**अन्तरन्तरे पुप्फअग्घियानि ठपेन्तो**" ति। **आगतो वतरे** ति एत्थ **अरे** ति पसंसायं, साधु वता ति अत्थो। **सोळसहि जातिसम्पन्नकुलेही** ति अट्ठहि अमच्चकुलेहि अट्ठहि च ब्राह्मणकुलेही ति एवं सोळसहि जातिसम्पन्नकुलेहि। **समुद्दतीरे महाबोधिं ठपेत्वा** ति समुद्दवेलातले अलङ्कतप्पटियत्ते रमणीये मण्डपे महाबोधिं ठपेत्वा। एवं पन कत्वा सकलतम्बपण्णिरज्जेन महाबोधिं पूजेत्वा सोळसन्नं कुलानं रज्जं निय्यातेत्वा सयं दोवारिकट्ठाने ठत्वा तयो दिवसे अनेकप्पकारं पूजं कारापेसि। तं दस्सेन्तो "**तीणिदिवसानी**" ति आदिमाह। **रज्जं विचारेसी** ति रज्जं विचारेतुं विस्सज्जेसि, सोळसहि वा जातिसम्पन्नकुलेहि रज्जं विचारापेसीति अत्थो। **चतुत्थे दिवसे** ति मिगसिरमासस्स सुक्कपक्खदसमियं। **अनुपुब्बेन अनुराधपुरं सम्पत्तो** ति दसमियं अलङ्कतप्पटियत्तरथे महाबोधिं ठपेत्वा उळारपूजं कुरुमानो पाचीनपस्सविहारस्स पतिट्ठातब्बट्ठानमानेत्वा तत्थ संघस्स पातरासं पवत्तेत्वा महिन्दत्थेरेन भासितं नागदीपे दसबलेन कतं नागदमनं सुत्वा "सम्मासम्बुद्धेन निसज्जादिना परिभुत्तट्ठानेसु थूपादीहि सक्कारं करिस्सामी" ति सञ्ञाणं कारेत्वा ततो आहरित्वा तवक्कब्राह्मणस्स गामद्वारे ठपेत्वा पूजेत्वा एवं तस्मिं तस्मिं ठाने पूजं कत्वा इमिना अनुक्कमेन अनुराधपुरं सम्पत्तो। **चातुद्दसीदिवसे** ति मिगसिरमासस्सेव सुक्कपक्ख B 186
चातुद्दसे। **वड्ढमानकच्छायाया** ति छायाय वड्ढमानसमये, सायन्हसमये ति वुत्तं होति। **समापत्ति** ति फलसमापत्ति। **तिलकभूते** ति अलङ्कारभूते। **राजवत्थुद्वारकोट्ठकट्ठाने** ति राजुय्यानस्स द्वारकोट्ठकट्ठाने। "सकलरज्जं महाबोधिस्स दिन्नपुब्बत्ता उपचारत्थं राजा दोवारिकवेसं गण्ही" ति वदन्ति।

अनुपुब्बविपस्सनं ति उदयवयादिअनुपुब्बविपस्सनं। **पट्ठपेत्वा** ति आरभित्वा। **अत्थङ्गमिते** ति अत्थङ्गते। "सह बोधिपतिट्ठानेना" ति वत्तब्बे विभत्तिविपरिणामं कत्वा "**सह बोधिपतिट्ठाना** ति निस्सकवचनं कतं। सति हि सहयोगे करणवचनेन भवितब्बं। **महापथवी अकम्पी** ति च इदं मुखमत्तनिदस्सनं, अञ्ञानिपि अनेकानि अच्छरियानि अहेसुं येव। तथा हि सह बोधिपतिट्ठानेन उदकपरियन्तं कत्वा महापथवी अकम्पि। तानि मूलानि कटाहमुखवट्टितो उग्गन्त्वा तं कटाहं विनन्धन्ता पथवीतलमोतरिंसु। समन्ततो दिब्बकुसुमानि वस्सिंसु, आकासे दिब्बतूरियानि

वज्जिसु, महामेघो उट्ठहित्वा वुट्ठिधारमकासि।[1] आकासपदेसा विरविंसु, विज्जुलता- निच्छरिंसु। देवता साधुकारमदंसु, समागता सकलदीपवासिनो गन्धमालादीहि पूजयिंसु, गहितमकरन्दा मन्दमारुता वायिंसु, समन्ततो घनसीतलहिमवलहका महाबोधिं छादयिंसु। एवं बोधि पथवियं पतिट्ठहित्वा हिमगब्भे सन्निसीदित्वा सत्ताहं लोकस्स अदस्सनं अगमासि। **हिमगब्भेसन्निसीदी** ति हिमगब्भस्स अन्तो अट्ठासि। **विप्फुरन्ता** ति विप्फुरन्ता इतो चितो च संसरन्ता। **निच्छरिंसू** ति निक्खमिंसु। **दस्सिसू** ति[2] पञ्ञायिंसु। **सब्बे दीपवासिनो** ति सब्बे तम्बपण्णिदीपवासिनो। **उत्तरसाखतो एकं फलं** ति उत्तरसाखाय ठितं एकं फलं। "पाचीनसाखाय एकं फलं" ति पि केचि। **महा-आसनट्ठाने** ति[3] पुब्बपस्से महासिलासनेन पतिट्ठितट्ठाने। **इस्सरनिम्मानविहारे** ति इस्सरनिम्मानसङ्खाते कस्सपगिरिविहारे। "इस्सरनिम्मानविहारे" ति हि पुब्बसङ्केत-वसेन वुत्तं, इदानि पन सो विहारो "कस्सपगिरी" ति पञ्ञातो। "इस्सरसमणारामे" ति पि केचि पठन्ति। तथा च वुत्तं—

B 187 "तवक्कब्राह्मणगामे, थूपारामे तथेव च।
इस्सरसमणारामे, पठमे चेतियङ्गणे" ति॥

योजनीय आरामेसू ति अनुराधपुरस्स समन्ता योजनस्स अन्तो कतआरामेसु। समन्ता पतिट्ठिते महाबोधिम्ही ति सम्बन्धो। अनुराधपुरस्स समन्ता एवं पुत्तनत्तु-परम्पराय महाबोधिम्हि पतिट्ठिते ति अत्थो। **लोहपासादट्ठानं पूजेसी** ति लोहपासा-दस्स कत्तब्बट्ठानं पूजेसि। "किञ्चापि लोहपासादं देवानंपियतिस्सोयेव महाराजा कारेस्सति, तथापि तस्मिं समये अभावतो 'अनागते' ति वुत्तं" ति तीसुपि **गण्ठिपदेसु** वुत्तं। केचि पन "दुट्ठगामणिअभयेनेव कारितो लोहपासादो" ति वदन्ति। **मूलानि पनस्स न ताव ओतरन्ती** ति इमिना महाराज इमस्मिं दीपे सत्थुसासनं पतिट्ठितमत्तमेव अहोसि, न ताव सुप्पतिट्ठितं ति दस्सेति, अस्स सत्थुसासनस्स मूलानि पन न ताव ओकिण्णानी ति एवमेत्थ अत्थो वेदितब्बो। **ओतरन्ती** ति हि अतीतत्थे वत्तमानवचनं। तेनेवाह "**कदा पन भन्ते मूलानि ओकिण्णानि नाम भविस्सन्ती**" ति। यो अमच्चो चतुपण्णासाय जेट्ठकनिट्ठभातुकेहि सद्धिं चेतियगिरिम्हि पब्बजितो, तं सन्धाय वुत्तं "**महाअरिट्ठो भिक्खू**" ति। **मेघवण्णाभयस्स अमच्चस्स परिवेणट्ठाने** ति मेघवण्णा-भयस्स रञ्ञो अमच्चेन कत्तब्बस्स परिवेणस्स वत्थुभूते ठाने। **मण्डपप्पकारं** ति मण्डप-सदिसं। सदिसत्थम्पि हि पकारसद्दं वण्णयन्ति। सासनस्स मूलानि ओतरन्तानि पस्सिस्सामी ति इमिना सासनस्स सुट्ठु पतिट्ठानाकारं पस्सिस्सामी ति दीपेति।

मेघविरहितस्स निम्मलस्सेव आकासस्स विरवितत्ता "**आकासं महाविरवं रवी**" ति वुत्तं। **पच्चेकगणीही** ति विसुं विसुं गणाचरियेहि। पच्चेकं गणं एतेसं अत्थीति

---

१. वुट्ठिपातमकंसु (सी०) वुट्ठिपातमकासि (स्या०)। २. पस्सिंसूति (क०)।
३. महाबोधिआसन्नट्ठाने ति (स्या०, क०)।

पच्चेकगणिनो । यथा वेज्जो गिलानेसु करुणाय तिकिच्छनमेव पुरक्खत्वा विगतच्छन्ददोसो जिगुच्छनीयेसु वणेसु गुय्हट्ठानेसु च भेसज्जलेपनादिना तिकिच्छनमेव करोति, एवं भगवा पि किलेसब्याधिपीळितेसु सत्तेसु करुणाय ते सत्ते किलेसब्याधिदुक्खतो मोचेतुकामो अवत्तब्बारहानि गुय्हट्ठाननिस्सितानि पि असप्पायानि[1] वदन्तो विनयपञ्ञत्तिया सत्तानं किलेसब्याधिं तिकिच्छति । तेन वुत्तं "**सत्थु करुणागुणपरिदीपकं**" ति । **अनुसिट्ठिकरानं** ति अनुसासनीकरानं, ये भगवतो अनुसासनिं सम्मा पटिपज्जन्ति, तेसं ति अत्थो । **कायकम्मवचीकम्मविप्फन्दित विनयनं** ति कायवचीद्वारेसु अज्झाचारवसेन पवत्तस्स किलेसविप्फन्दितस्स विनयनकरं । B 183

राजिनो ति उपयोगत्थे सामिवचनं, राजानमनुसासिंसू ति अत्थो । **आलोकं** ति ञाणालोकं । **निब्बायिंसु**[2] **महेसयो** ति एत्थ महामन्दित्थेरो द्वादसवस्सिको हुत्वा तम्बपण्णिदीपं सम्पत्तो । तत्थ द्वे वस्सानि वसित्वा विनयं पतिट्ठपेसि । द्वासट्ठिवस्सिको हुत्वा परिनिब्बुतो ति वदन्ति ।

तेसं थेरानं अन्तेवासिका ति तेसं महामहिन्दत्थेरप्पमुखानं थेरानं अन्तेवासिका । तिस्सदत्तादयो पन महाअरिट्ठत्थेरस्स अन्तेवासिका, तस्मा तिस्सदत्तकाळसुमनदीघसुमनादयो महाअरिट्ठत्थेरस्स अन्तेवासिका चाति योजेतब्बं । **अन्तेवासिकानं अन्तेवासिका** ति उभयथा वुत्त अन्तेवासिकानं अन्तेवासिका । **पुब्बे वुत्तप्पकारा** ति—

"ततो महिन्दो इट्टियो, उत्तियो सम्बलो तथा ।
भद्दनामो च पण्डितो ।

एते नागा महापञ्ञा, जम्बुदीपा इधागता ।
विनयं ते वाचयिंसु, पिटकं तम्बपण्णिया ॥

निकाये पञ्च वाचेसुं, सत्त चेव पकरणे ।
ततो अरिट्ठो मेधावी, तिस्सदत्तो च पण्डितो ॥

विसारदो काळसुमनो, थेरो च दीघनामको" ति—

एवमादिना पुब्बे वुत्तप्पकारा आचरियपरम्परा ।

आचरियपरम्परकथावण्णना निट्ठिता ॥

---

१. असब्भानि (सी०, स्या०) २. परिनिब्बिंसु (सी०, स्या)

B 189 **विनयानिसंसकथावण्णना**

एत्तवता च "केनाभतं" ति इमं पञ्हं वित्थारतो विभजित्वा इदानि "कत्थ पतिट्ठितं" ति इमं पञ्हं विस्सज्जेन्तो आह "**कत्थ पतिट्ठितं**" ति आदि। तत्थ **तेलमिवा** ति सीहतेलमिव। **अधिमत्तसतिगतिधीतिमन्तेसू** ति एत्थ **सती** ति बुद्धवचनं उग्गहेत्वा धारणकसति। **गतो** ति उग्गण्हनकगति। धीती ति सन्निट्ठानं कत्वा गण्हनकञाणं। **गती** ति वा पञ्ञागति। **धीती** ति बुद्धवचनं उग्गण्हनवीरियं सज्झायनवीरियं धारणवीरियञ्च। **लज्जीसू** ति पापजिगुच्छनकलक्खणाय लज्जाय समन्नागतेसु। **कुक्कुच्चकेसू** ति अणुमत्तेसुपि वज्जेसु दोसदस्साविताय कप्पियाकप्पियं निस्साय कुक्कुच्चकारीसु। **सिक्खाकामेसू** ति अधिसीलअधिचित्तअधिपञ्ञावसेन तिस्सो सिक्खा कामयमानेसु सम्पियायित्वा सिक्खन्तेसु।

अकत्तब्बतो निवारेत्वा कत्तब्बेसु पतिट्ठापनतो **मातापितुट्ठानियो** ति वुत्तं। **आचारगोचरकुसलता** ति वेळुदानादिमिच्छाजीवस्स कायपागब्भियादीनञ्च अकरणेन सब्बसो अनाचारं वज्जेत्वा "कायिको अवीतिक्कमो वाचसिको अवीतिक्कमो" ति[1] एवं वुत्तभिक्खुसारुप्पआचारसम्पत्तिया वेसियादिअगोचरं वज्जेत्वा पिण्डपातादि अत्थं उपसङ्कमितुं युत्तट्ठानसङ्खातगोचरेन च सम्पन्नत्ता समणाचारेसु चेव समणगोचरेसु च कुसलता। अपि च[2] यो भिक्खु सत्थरि सगारवो सप्पतिस्सो सब्रह्मचारीसु सगारवो सप्पतिस्सो हिरोत्तप्पसम्पन्नो सुनिवत्थो सुपारुतो पासादिकेन अभिक्कन्तेन पटिक्कन्तेन आलोकितेन विलोकितेन समिञ्जितेन पसारितेन ओक्खित्तचक्खु इरियापथसम्पन्नो इन्द्रियेसु गुत्तद्वारो भोजने मत्तञ्ञू जागरियमनुयुत्तो सतिसम्पजञ्ञेन समन्नागतो अप्पिच्छो सन्तुट्ठो आरद्धवीरियो पविवित्तो असंसट्ठो आभिसमाचारिकेसु सक्कच्चकारी गरुचित्तीकारबहुलो विहरति, अयं वुच्चति **आचारो**।

गोचरो[3] पन उपनिस्सयगोचरो आरक्खगोचरो उपनिबन्धगोचरो ति तिविधो। तत्थ दसकथावत्थुगुणसमन्नागतो कल्याणमित्तो, यं निस्साय अस्सुतं सुणाति, सुतं
B 190 परियोदापेति, कङ्खं वितरति, दिट्ठिं उजुं करोति, चित्तं पसादेति, यस्स वा पन अनुसिक्खमानो सद्धाय वड्ढति, सीलेन सुतेन, चागेन, पञ्ञाय वड्ढति, अयं **उपनिस्सयगोचरो**। यो पन भिक्खु अन्तरघरं पविट्ठो वीथिपटिपन्नो ओक्खित्तचक्खु युगमत्तदस्सावी संवुतो गच्छति, न हत्थिं ओलोकेन्तो, न अस्सं, न रथं, न पत्तिं, न इत्थिं, न पुरिसं ओलोकेन्तो, न उद्धं ओलोकेन्तो, न अधो ओलोकेन्तो, न दिसाविदिसम्पि पेक्खमानो गच्छति, अयं **आरक्खगोचरो**। उपनिबन्धगोचरो पन चत्तारो सतिपट्ठाना, यत्थ

---

१. अभि० २-२५५ पिट्ठे।

२. महानिद्देस—ट्ठ. २९५, पिट्ठेपि पस्सितब्बं।

३. महानिद्देस—ट्ठ. २९६, पिट्ठेपि पस्सितब्बं।

भिक्खु अत्तनो चित्तं उपनिबन्धति। वुत्तञ्हेतं भगवता "को च भिक्खवे भिक्खुनो गोचरो सको पेत्तिको विसयो, यदिदं चत्तारो सतिपट्ठाना" ति[1]। अयं **उपनिबन्धगोचरो**। इति इमिना च आचारेन इमिना च गोचरेन समन्नागतत्ता आचारगोचरकुसलता। एवं अनाचारं अगोचरञ्च वज्जेत्वा सद्धापब्बजितानं यथावुत्तआचारगोचरेसु कुसलभावो विनयधरायत्तो ति अयमानिसंसो विनयपरियत्तिया दस्सितो ति वेदितब्बो।

विनयपरियत्तिं निस्साया ति विनयपरियापुणनं निस्साय। **अत्तनो सीलक्खन्धो सुगुत्तो होति सुरक्खितो** ति कथमस्स अत्तनो सीलक्खन्धो सुगुत्तो होति सुरक्खितो? आपत्तिञ्हि आपज्जन्तो छहाकारेहि आपज्जति अलज्जिता, अञ्ञाणता, कुक्कुच्चपकतता, अकप्पिये कप्पियसञ्ञिता, कप्पिये अकप्पियसञ्ञिता, सतिसम्मोसा ति। विनयधरो पन इमेहि छहाकारेहि आपत्तिं नापज्जति।

कथं **अलज्जिताय** नापज्जति? सो हि "पस्सथ भो, अयं कप्पियाकप्पियं जानन्तोयेव पण्णत्तिवीतिक्कमं करोती" ति इमं परूपवादं रक्खन्तोपि अकप्पियभावं जानन्तोयेव मद्दित्वा वीतिक्कमं न करोति। एवं अलज्जिताय नापज्जति। सहसा आपन्नम्पि देसनागामिनिं देसेत्वा वुट्ठानगामिनिया वुट्ठहित्वा सुद्धन्ते पतिट्ठाति, ततो—

"सञ्चिच्च आपत्तिं नापज्जति, आपत्तिं न परिगूहति।
अगतिगमनञ्च न गच्छति, एदिसो वुच्चति लज्जिपुग्गलो" ति॥[2]

—इमस्मिं लज्जिभावे पतिट्ठितोव होति।

कथं **अञ्ञाणताय** नापज्जति? सो हि कप्पियाकप्पियं जानाति, तस्मा कप्पियंयेव करोति, अकप्पियं न करोति। एवं अञ्ञाणताय नापज्जति। B 191

कथं **कुक्कुच्चपकतताय** नापज्जति? कप्पियाकप्पियं निस्साय कुक्कुच्चे उप्पन्ने वत्थुं ओलोकेत्वा मातिकं पदभाजनं अन्तरापत्तिं अनापत्तिं ओलोकेत्वा कप्पियं चे होति, करोति, अकप्पियं चे, न करोति। उप्पन्नं पन कुक्कुच्चं अविनिच्छिनित्वाव "वट्टती" ति मद्दित्वा न वीतिक्कमति। एवं कुक्कुच्चपकतताय नापज्जति।

कथं **अकप्पिये कप्पियसञ्ञिता**दीहि नापज्जति? सो हि कप्पियाकप्पियं जानाति, तस्मा अकप्पिये कप्पियसञ्ञी न होति, कप्पिये अकप्पियसञ्ञी न होति, सुपतिट्ठिता चस्स सति होति, अधिट्ठातब्बं अधिट्ठेति, विकप्पेतब्बं विकप्पेति। इति इमेहि छहाकारेहि आपत्तिं नापज्जति, आपत्तिं अनापज्जन्तो अखण्डसीलो होति परिसुद्धसीलो। एवमस्स अत्तनो सीलक्खन्धो सुगुत्तो होति सुरक्खितो।

कुक्कुच्चपकतानं ति कप्पियाकप्पियं निस्साय उप्पन्नेन कुक्कुच्चेन अभिभूतानं। कथं पन कुक्कुच्चपकतानं पटिसरणं होति? तिरोरट्ठेसु तिरोजनपदेसु च उप्पन्न-

१. सं०-३-१२८ पिट्ठे। २. वि०-५-२७९ पिट्ठे।

कुक्कुच्चा भिक्खू "असुकस्मिं किर विहारे विनयधरो वसती" ति दूरतो पि तस्स सन्तिकं आगन्त्वा कुक्कुच्चं पुच्छन्ति। सो तेहि कतकम्मस्स वत्थुं ओलोकेत्वा आपत्तानापत्ति गरुकलहुकादिभेदं सल्लक्खेत्वा देसनागामिनिं देसापेत्वा वुट्ठानगामिनिया वुट्ठापेत्वा सुद्धन्ते पतिट्ठापेति। एवं कुक्कुच्चपकतानं पटिसरणं होति।

विसारदो संघमज्झे वोहरती ति विगतो सारदो भयं एतस्सा ति[1] विसारदो, अभीतो ति अत्थो। अविनयधरस्स हि संघमज्झे कथेन्तस्स भयं सारज्जं ओक्कमति, विनयधरस्स तं न होति। कस्मा ? "एवं कथेन्तस्स दोसो होति, एवं न दोसो" ति ञत्वा कथनतो।

B 192 **पच्चत्थिके सहधम्मेन सुनिग्गहितं निग्गण्हाती** ति एत्थ द्विधा पच्चत्थिका नाम अत्तपच्चत्थिका च सासनपच्चत्थिका च। तत्थ मेत्तियभुम्मजका च भिक्खू वड्ढो च लिच्छवी अमूलकेन अन्तिमवत्थुना चोदेसुं, इमे **अत्तपच्चत्थिका** नाम। ये वा पनञ्ञेपि दुस्सीला पापधम्मा, सब्बे ते अत्तपच्चत्थिका। विपरीतदस्सना पन अरिट्ठभिक्खुकण्टकसामणेरवेसालिकवज्जिपुत्तका महासंघिकादयो च अबुद्धसासनं "बुद्धसासनं" ति वत्वा कतपग्गहा **सासनपच्चत्थिका** नाम। ते सब्बेपि सहधम्मेन सहकारणेन वचनेन यथा तं असद्धम्मं पतिट्ठापेतुं न सक्कोन्ति, एवं सुनिग्गहितं कत्वा निग्गण्हाति।

सद्धम्मट्ठितिया पटिपन्नो होती ति एत्थ पन विविधो सद्धम्मो परियत्तिपटिपत्तिअधिगमवसेन। तत्थ तिपिटकं बुद्धवचनं **परियत्तिसद्धम्मो** नाम। तेरस धुतङ्गगुणा चुद्दस खन्दकवत्तानि द्वेअसीति महावत्तानी ति अयं **पटिपत्तिसद्धम्मो** नाम। चत्तारो मग्गा च चत्तारि फलानि च, अयं **अधिगमसद्धम्मो** नाम। तत्थ केचि थेरा "यो वो आनन्द मया धम्मो च विनयो च देसितो पञ्ञत्तो, सो वो ममच्चयेन सत्था" ति इमिना सुत्तेन[2] "सासनस्स परियत्ति मूलं" ति वदन्ति। केचि थेरा "इमे च सुभद्दभिक्खू सम्मा विहरेय्युं, असुञ्ञो लोको अरहन्तेहि अस्सा" ति इमिना सुत्तेन[3] "सासनस्स पटिपत्ति मूलं" ति वत्वा "याव पञ्च भिक्खू सम्मा पटिपन्ना संविज्जन्ति, ताव सासनं ठितं होती" ति आहंसु। इतरे पन थेरा "परियत्तिया अन्तरहिताय सुप्पटिपन्नस्सपि धम्माभिसमयो नत्थी" ति वत्वा आहंसु। सचे पि पञ्च भिक्खू चत्तारि पाराजिकानि रक्खणका होन्ति, ते सद्धे कुलपुत्ते पब्बाजेत्वा पच्चन्तिमे जनपदे उपसम्पादेत्वा दसवग्गगणं पूरेत्वा मज्झिमजनपदेपि उपसम्पदं करिस्सन्ति। एतेनुपायेन वीसतिवग्गसंघं पूरेत्वा अत्तनो पि अब्भान कम्मं कत्वा सासनं वुड्ढिं विरुळ्हिं गमयिस्सन्ति। एवमयं विनयधरो तिविधस्सपि सद्धम्मस्स चिरट्ठितिया पटिपन्नो होती ति। एवमयं विनयधरो इमे पञ्चानिसंसे पटिलभती ति वेदितब्बो।

विनयो संवरत्थाया ति आदीसु[4] **विनयो** ति विनयस्स परियापुणनं, **विनयो** ति
B 193 वा विनयपञ्ञत्ति वुत्ता, तस्मा सकलापि विनयपञ्ञत्ति विनयपरियापुणनं वा काय-

---

१. एतस्माति (सी०)।
२. दी० २-१२६ पिट्ठे।
३. दी० २-१२५ पिट्ठे।
४. वि-ट्ठ-४-२०८ पिट्ठेपि पस्सितब्बं।

वचीद्वारसंवरत्थाया ति अत्थो, आजीवपारिसुद्धिपरियोसानस्स सीलस्स उपनिस्सयपच्चयो होती ति वुत्तं होति। **अविप्पटिसारो** ति पापपुञ्ञानं कताकतानुसोचनवसेन पवत्त-चित्तविप्पटिसाराभावो। **पामोज्जं** ति दुब्बला तरुणपीति। **पीति** ति बलवपीति। **पस्सद्धी** ति कायचित्तदरथपटिप्पसद्धि। **सुखं** ति कायिकं चेतसिकञ्च सुखं। तञ्हि दुविधम्पि समाधिस्स उपनिस्सयपच्चयो होति। **समाधी** ति चित्तेकग्गता। **यथाभूतञाणदस्सनं** ति सप्पच्चयनामरूपपरिग्गहो। **निब्बिदा** ति विपस्सना। अथ वा यथाभूत-ञाणदस्सनं तरुणविपस्सना, उदयब्बयञाणस्सेतं अधिवचनं। चित्तेकग्गता ति तरुण-विपस्सनाय उपनिस्सयपच्चयो होति। **निब्बिदा** ति सिखाप्पत्ता वुट्ठानगामिनिबलव-विपस्सना। **विरागो** ति अरियमग्गो। **विमुत्ती** ति अरहत्तफलं। चतुब्बिधोपि हि अरियमग्गो अरहत्तस्स उपनिस्सयपच्चयो होति। **विमुत्तिञाणदस्सनं** ति पच्चवेक्खण-ञाणं। **अनुपादापरिनिब्बानत्थाया** ति कञ्चि धम्मं अग्गहेत्वा अनवसेसेत्वा परिनिब्बा-नत्थाय, अप्पच्चयपरिनिब्बानत्थाया ति अत्थो। अपच्चयपरिनिब्बानस्स हि विमुत्ति-ञाणदस्सनं पच्चयो होति तस्मिं अनुप्पत्ते अवस्सं परिनिब्बायितब्बतो, न च पच्चवे-क्खणञाणे अनुप्पन्ने अन्तरा परिनिब्बानं होति।

एतदत्था कथा ति अयं विनयकथा नाम एतदत्थाय, अनुपादापरिब्बानत्थाया ति अत्थो। एवं सब्बत्थ पि। **मन्तना पि** विनयमन्तना एव। "एवं करिस्साम, न करिस्सामा" ति विनयपटिबद्धसंसन्दना। **एतदत्था उपनिसा** ति उपनिसीदति एत्थ फलं तप्पटिबद्धवुत्तिताया ति उपनिसा वुच्चति कारणं पच्चयो ति। "विनयो संवरत्थाया" ति आदिका कारणपरम्परा एतदत्था ति अत्थो। **एतदत्थं सोतावधानं** ति इमिस्सा परम्परपच्चयकथाय सोतावधानं इमं कथं सुत्वा यं उप्पज्जति ञाणं, तम्पि एतदत्थं। **यदिदं अनुपादाचित्तस्स विमोक्खो** ति **यदिदं** ति निपातो। सब्बलिङ्गविभत्तिवचनेसु तादिसोव तत्थ तत्थ अत्थतो परिणामेतब्बो, तस्मा एवमेत्थ अत्थो वेदितब्बो—यो अयं चतूहि उपादानेहि अनुपादियित्वा चित्तस्स अरहत्तफलसङ्खातो विमोक्खो, सोपि एतदत्थाय अनुपादापरिनिब्बानत्थाया ति एवमेत्थ सम्बन्धो वेदितब्बो। यो अयं अनुपादाचित्तस्स विमोक्खसङ्खातो मग्गो, हेट्ठा वुत्तं सब्बम्पि एतदत्थमेवा ति। एवञ्च सति इमिना महुस्साहतो साधितब्बं नियतप्पयोजनं दस्सितं होति। हेट्ठा "विरागो B 194
....पे०.... निब्बानत्थाया" ति इमिना पन लब्भमानानिसंसफलं दस्सितं ति वेदितब्बं। **आयोगो** ति उग्गहणचिन्तनादिवसेन पुनप्पुनं अभियोगो।

विनयानिसंसकथावण्णना निट्ठिता।

इति समन्तपासादिकाय विनयट्ठकथाय सारत्थदीपनियं
बाहिरनिदानवण्णना समत्ता॥

——

वेरञ्जकण्डवण्णना

B 195

१॥ **सेय्यथिदं** ति तं कतमं, तं कथं ति वा अत्थो। **अनियमनिद्देसवचनं** ति नत्थि एतस्स नियमो ति अनियमो, निद्दिसीयति अत्थो एतेना ति निद्देसो, वुच्चति एतेना ति वचनं, निद्देसोयेव वचनं निद्देसवचनं, अनियमस्स निद्देसवचनं अनियमनिद्देस-वचनं, पठमं अनियमितस्स समयस्स निद्देसवचनं ति अत्थो। "येना ति अवत्वा तेना ति वुत्तत्ता अनियमं कत्वा निद्दिट्ठवचनं अनियमनिद्देसवचनं" ति पि वदन्ति। यं तं सद्दानं निच्चसम्बन्धभावतो आह **"तस्स सरूपेन अवुत्तेन पी"** ति आदि। तत्थ **तस्सा** ति "तेना" ति एतस्स। **सरूपेन अवुत्तेनपी** ति "येना" ति एवं सरूपतो पाळियं अवुत्तेन पि। **अत्थतो सिद्धेना** ति परभागे सारिपुत्तत्थेरस्स उप्पज्जनकपरिवितक्कसङ्खात अत्थतो सिद्धेन। परिवितक्के हि सिद्धे येन समयेन परिवितक्को उदपादी ति इदं अत्थतो सिद्धमेव होति। तेनेवाह **"अपरभागे हि विनयपञ्ञत्तियाचनहेतुभूतो आयस्मतो सारिपुत्तस्स परिवितक्को सिद्धो"** ति आदि। "तेना" ति वत्वा ततो तदत्थमेव "येना" ति अत्थतो वुच्चमानत्ता "येना" ति अयं "तेना" ति एतस्स पटिनिद्देसो नाम जातो। **पटिनिद्देसो** ति च वित्थारनिद्देसो ति अत्थो।

अपरभागेही ति एत्थ हि—सद्दो हेतुम्हि, यस्मा ति अत्थो। **विनयपञ्ञत्तिया-चनहेतुभूतो** ति "एतस्स भगवा कालो, एतस्स सुगत कालो, यं भगवा सावकानं सिक्खापदं पञ्ञपेय्य, उद्दिसेय्य पातिमोक्खं। यथयिदं ब्रह्मचरियं अद्धनियं अस्स चिरट्ठितिकं" ति एवं पवत्तस्स विनयपञ्ञत्तियाचनस्स कारणभूतो ति अत्थो। **परिवितक्को** ति "कतमेसानं खो बुद्धानं भगवन्तानं ब्रह्मचरियं न चिरट्ठितिकं अहोसि, कतमेसानं बुद्धानं भगवन्तानं ब्रह्मचरियं चिरट्ठितिकं अहोसी" ति एवं पवत्तो परिवितक्को। यं तं सद्दानं निच्चसम्बन्धो ति आह **"तस्मा येन समयेना"** ति आदि। **पुब्बे वा पच्छा वा अत्थतो सिद्धेना** ति पुब्बे वा पच्छा वा उप्पन्नअत्थतो सिद्धेन। **पटिनिद्देसो कत्तब्बो** ति एतस्स "यदिदं" ति इमिना सम्बन्धो। "पटिनिद्देसो कत्तब्बो" ति यदिदं यं इदं विधानं, अयं सब्बस्मिं विनये युत्ती ति अत्थो। अथ वा "पटिनिद्देसो कत्तब्बो" ति यदिदं या अयं युत्ति, अयं सब्बस्मिं विनये युत्ती ति अत्थो।

B 196 **तत्रिदं मुखमत्तनिदस्सनं** ति तस्सा यथावुत्तयुत्तिया परिदीपने इदं मुखमत्तनिद-स्सनं, उपायमत्तनिदस्सनं ति अत्थो। मुखं द्वारं उपायो ति हि अत्थतो एकं। **"तेन हि भिक्खवे भिक्खूनं सिक्खापदं पञ्ञपेस्सामी"** ति पाळि दस्सेत्वा तत्थ पटिनिद्देसमाह **"येन सुदिन्नो"** ति आदिना। तेना ति हेतुअत्थे करणवचनत्ता तस्स पटिनिद्देसोपि तादिसोयेवा ति आह **"यस्मा पटिसेवो"** ति। **पुब्बे अत्थतो सिद्धेना** ति पुब्बे उप्पन्न-मेथुनधम्मपटिसेवनसङ्खातअत्थतो सिद्धेन। **पच्छा अत्थतो सिद्धेना** ति रञ्ञा अदिन्नं दारूनं आदियनसङ्खातपच्छाउप्पन्नअत्थतो सिद्धेन। **समयसद्दो** ति एतस्स "दिस्सती" ति इमिना सम्बन्धो।

समवाये ति पच्चयसामग्गियं, कारणसमवाये ति अत्थो। **खणे** ति ओकासे। **अस्सा** ति अस्स समयसद्दस्स समवायो अत्थो ति सम्बन्धो। **अप्पेव नाम स्वेपि उपसङ्कमेय्याम कालञ्च समयञ्च उपादाया** ति एत्थ **कालो** नाम उपसङ्कमनस्स युत्तपयुत्तकालो। **समयो** नाम तस्सेव पच्चयसामग्गी, अत्थतो तदनुरूपं सरीरबलञ्चेव तप्पच्चयपरिस्सयाभावो च। उपादानं नाम ञाणेन तेसं गहणं सल्लक्खणं, तस्मा कालञ्च समयञ्च पञ्ञाय गहेत्वा उपधारेत्वा ति अत्थो। इदं वुत्तं होति—सचे अम्हाकं स्वे गमनस्स युत्तकालो भविस्सति, काये बलमत्ता चेव फरिस्सति, गमनपच्चया च अञ्ञो अफासुविहारो न भविस्सति, अथेतं कालञ्च गमनकारणसमवायसङ्खातं समयञ्च उपधारेत्वा अपि एव नाम स्वे आगच्छेय्यामा ति।

खणो ति ओकासो। तथागतुप्पादादिको हि मग्गब्रह्मचरियस्स ओकासो तप्पच्चयपटिलाभहेतुत्ता, खणो एव च समयो। यो खणो ति च समयो ति च वुच्चति, सो एको वा ति हि अत्थो। **महासमयो** ति महासमूहो। पवुद्धं वन पवनं, तस्मिं पवनस्मिं, वनसण्डे ति अत्थो। **समयो पि खो ते भद्दालि अप्पटिविद्धो अहोसी** ति एत्थ **समयो** ति सिक्खापदपूरणस्स हेतु। भद्दाली ति तस्स भिक्खुनो नामं। इदं वुत्तं होति—भद्दालि तया पटिविज्झितब्बयुत्तकं एतं कारणं अत्थि, तम्पि तेन पटिविद्धं न सल्लक्खितं ति। किं तं कारणं ति आह "**भगवा खो**" ति आदि।

उग्गाहमानो ति आदीसु **मानो** ति तस्स परिब्बाजकस्स पकतिनामं, किञ्चि B 197
किञ्चि पन उग्गहेतुं समत्थताय "उग्गाहमानो" ति नं सञ्जानन्ति, तस्मा "उग्गाहमानो" ति वुच्चति। समणमुण्डिकाय पुत्तो **समणमुण्डिकापुत्तो**[1]। सो किर देवदत्तस्स उपट्ठाको। समयं दिट्ठिं पवदन्ति एत्था ति **समयप्पवादको**, तस्मिं समयप्पवादके, दिट्ठिप्पवादके ति अत्थो। तस्मिं किर ठाने चङ्किभारुक्खपोक्खरसातिपभुतयो ब्राह्मणा निगण्ठाचेलकपरिब्बाजकादयो च परिब्बाजका सन्निपतित्वा अत्तनो अत्तनो समयं दिट्ठिं पवदन्ति कथेन्ति दीपेन्ति, तस्मा सो आरामो "समयप्पवादको" ति वुच्चति, स्वेव तिन्दुकाचीरसङ्खाताय तिम्बरुक्खपन्तिया परिक्खित्तत्ता "तिन्दुकाचीरं" ति वुच्चति। एका साला एत्था ति एकसालको। यस्मा पनेत्थ पठमं एका साला कता अहोसि, पच्छा महापुञ्ञं पोट्ठपादपरिब्बाजकं निस्साय बहू साला कता, तस्मा तमेव एकं सालमुपादाय लद्धनामवसेन "एकसालको" ति वुच्चति। मल्लिकाय पन पसेनदिरञ्ञो देविया उय्यानभूतो सो पुप्फफलसञ्छन्नो आरामो ति कत्वा "मल्लिकाय आरामो" ति सङ्ख्यं गतो। तस्मिं समयप्पवादके तिन्दुकाचीरे एकसालके मल्लिकाय आरामे। **पटिवसती** ति तस्मिं वासफासुताय वसति।

दिट्ठे धम्मे ति पच्चक्खे अत्तभावे। **अत्थो** ति वुड्ढि। **सम्परायिको** ति कम्मकिलेसवसेन सम्परेतब्बतो सम्पापुणितब्बतो सम्परायो, परलोको। तत्थ नियुत्तो सम्परायिको, परलोकत्थो। **अत्थाभिसमया** ति यथावुत्तउभयत्थसङ्खातहितपटिलाभा।

---

१. समणमण्डिकाय पुत्तो समणमण्डिकापुत्तो (सी०)

सम्परायिको पि हि अत्थो कारणस्स निप्फन्नत्ता पटिलद्धो नाम होती ति तमत्थद्वयं एकतो कत्वा "अत्ताभिसमया" ति वुत्तं। धिया पञ्ञाय राति गण्हाती ति **धीरो**। अथ वा धी पञ्ञा एतस्स अत्थी ति **धीरो**।

सम्मा मानाभिसमया ति मानस्स सम्मा पहानेन। सम्मा ति इमिना मानस्स अग्गमग्गञाणेन समुच्छेदप्पहानं वुत्तं। दुक्खस्स पीळनट्ठो ति आदीसु दुक्खसच्चस्स पीळनं तंसमङ्गिनो हिंसनं अविप्फारिकताकरणं, पीळनमेव अत्थो पीळनट्ठो, त्थकारस्स ट्ठकारं कत्वा वुत्तं। एवं सेसेसुपि। समेच्च पच्चयेहि कतभावो सङ्खतट्ठो। **सन्तापो**
B 198 दुक्खदुक्खतादिवसेन सन्तापनं परिदहनं। **विपरिणामो** जराय मरणेन चाति द्विधा विपरिणामेतब्बता। अभिसमेतब्बो पटिविज्झितब्बो ति अभिसमयो, अभिसमयोव अत्थो **अभिसमयट्ठो**, पीळनादीनि। तानि हि अभिसमेतब्बभावेन एतीभावं उपनेत्वा "अभिसमयट्ठो" ति वुत्तानि, अभिसमयस्स वा पटिवेधस्स विसयभूतो अत्थो अभिसमयट्ठो ति तानेव पीळनादीनि अभिसमयस्स विसयभावूपगमनसामञ्ञतो एकत्तेन वुत्तानि।

एत्थ च उपसग्गानं जोतकमत्तत्ता तस्स तस्स अत्थस्स वाचको समयसद्दो एवा ति समयसद्दस्स अत्थुद्धारेपि सउपसग्गो अभिसमयसद्दो वुत्तो। तत्थ सहकारीकारणसन्निज्झं समेति समवेती ति **समयो**, समवायो। समेति समागच्छति मग्गब्रह्मचरियं एत्थ तदाधारपुग्गलेही ति **समयो**, खणो। समेन्ति एत्थ, एतेन वा संगच्छन्ति धम्मा सहजातधम्मेहि उप्पादादीहि वा ति **समयो**, कालो। धम्मप्पवत्तिमत्तताय अत्थतो अभूतो पि हि कालो धम्मप्पवत्तिया अधिकरणं कारणं विय च परिकप्पनामत्तसिद्धेन रूपेन वोहरीयति। समं, सह वा अवयवानं अयनं पवत्ति अवट्ठानं ति **समयो**, समूहो यथा "समुदायो" ति। अवयवेन सहावट्ठानमेव हि समूहो। पच्चयन्तरसमागमे एति फलं एतस्मा उप्पज्जति पवत्तति चा ति **समयो**, हेतु यथा "समुदायो" ति। समेति संयोजनभावतो सम्बन्धो एति अत्तनो विसये पवत्तति, दळ्हग्गहणभावतो वा तं संयुत्ता अयन्ति पवत्तन्ति सत्ता यथाभिनिवेसं एतेना ति **समयो**, दिट्ठि। दिट्ठिसंयोजनेन हि सत्ता अतिविय बज्झन्ति। समिति सङ्गति समोधानं ति **समयो**, पटिलाभो। समस्स निरोधस्स यानं, सम्मा वा यानं अपगमो अप्पवत्ती ति **समयो**, पहानं। ञाणेन अभिमुखं सम्मा एतब्बो अधिगन्तब्बो ति **अभिसमयो**, धम्मानं अविपरीतो सभावो। अभिमुखभावेन सम्मा एति गच्छति बुज्झती ति **अभिसमयो**, धम्मानं यथाभूतसभावावबोधो। एवं तस्मिं तस्मिं अत्थे समयसद्दस्स पवत्ति वेदितब्बा।

ननु च अत्थमत्तं पटिच्च सद्दा अभिनिविसन्ति, न एकेन सद्देन अनेके अत्था अभिधीयन्ती ति ? सच्चमेतं सद्दविसेसे अपेक्खिते। सद्दविसेसे हि अपेक्खियमाने एकेन सद्देन अनेकत्थाभिधानं न सम्भवति। न हि यो कालत्थो समयसद्दो, सोयेव समूहादि
B 199 अत्थं वदति। एत्थ पन तेसं तेसं अत्थानं समयसद्दवचनीयतासामञ्ञमुपादाय अनेकत्थता समयसद्दस्स वुत्ता। एवं सब्बत्थ अत्थुद्धारे अधिप्पायो वेदितब्बो। **इध पनस्स कालो अत्थो** ति अस्स समयसद्दस्स इध कालो अत्थो समवायादीनं अत्थानं इध असम्भवतो देसदेसकादीनं विय निदानभावेन कालस्स अपदिसितब्बतो च।

उपयोगवचनेन भुम्मवचनेन च निद्देसमकत्वा इध करणवचनेन निद्देसे पयोजनं निद्धारेतुकामो परम्मुखेन चोदनं समुट्ठापेति "**एत्थाहा**" ति आदि। एत्थ "तेन समयेना" ति इमस्मिं ठाने वितण्डवादी आहा ति अत्थो। **अथा** ति चोदनाय कत्तुकामतं दीपेति, ननू ति इमिना समानत्थो। कस्मा करणवचनेन निद्देसो कतो ति सम्बन्धो। भुम्मवचनेन निद्देसो कतो ति योजेतब्बं। एत्था पि "यथा" ति इदं आनेत्वा सम्बन्धितब्बं। **तत्था** ति तेसु सुत्ताभिधम्मेसु। **तथा** ति उपयोगभुम्मवचनेहि। **इधा** ति इमस्मिं विनये। **अञ्ञथा** ति करणवचनेन। **अच्चन्तमेवा** ति आरम्भतो पट्ठाय याव देसनानिट्ठानं, ताव अच्चन्तमेव, निरन्तरमेवा ति अत्थो। **करुणा विहारेना** ति परहितपटिपत्तिसङ्खातेन करुणाविहारेन। तथा हि करुणानिदानत्ता देसनाय इध परहितपटिपत्ति "करुणाविहारो" ति वुत्ता, न पन करुणासमापत्तिविहारो। न हि देसनाकाले देसेतब्बधम्मविसयस्स देसनाञाणस्स सत्तविसयाय महाकरुणाय सहुप्पत्ति सम्भवति भिन्नविसयत्ता, तस्मा करुणावसेन पवत्तो परहितपटिपत्तिसङ्खातो विहारो इध करुणाविहारो ति वेदितब्बो। **तदत्थजोतनत्थं** ति अच्चन्तसंयोगत्थदीपनत्थं उपयोगनिद्देसो कतो यथा "मासं अज्झेती" ति।

अधिकरणत्थो ति आधारत्थो। भावो नाम किरिया, किरियाय किरियन्तरलक्खणं भावेनभावलक्खणं, सोयेवत्थो **भावेनभावलक्खणत्थो**। कथं पन अभिधम्मे यथावुत्त अत्थद्वयसम्भवो ति आह "अधिकरणञ्ही" ति आदि। तत्थ कालसङ्खातो अत्थो **कालत्थो**, समूहसङ्खातो अत्थो **समूहत्थो**। अथ वा कालसद्दस्स अत्थो **कालत्थो**, समूहसद्दस्स अत्थो समूहत्थो। को सो ? समयो। इदं वुत्तं होति—कालत्थो समूहत्थो च समयो तत्थ अभिधम्मे वुत्तानं फस्सादिधम्मानं अधिकरणं आधारो ति यस्मिं काले धम्मपुञ्जे वा कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति, तस्मिं येव काले पुञ्जे च फस्सादयो पि होन्ती ति अयञ्हि तत्थ अत्थो।

ननु चायं उपादाय पञ्ञत्तो कालो समूहो च वोहारमत्तको, सो कथं आधारो B 200
तत्थ वुत्तधम्मानं ति ? नायं दोसो। यथा हि कालो सभावधम्मपरिच्छिन्नो सयं परमत्थतो अविज्जमानोपि आधारभावेन पञ्ञत्तो तङ्खणप्पवत्तानं ततो पुब्बे परतो च अभावतो "पुब्बण्हे जातो सायन्हे गच्छती" ति आदीसु। समूहो च अवयवविनिमुत्तो अविज्जमानो पि कप्पनामत्तसिद्धो अवयवानं आधारभावेन पञ्ञपीयति "रुक्खे साखा, यवरासिम्हि सम्भूतो" ति आदीसु, एवमिधा पी ति दट्ठब्बं।

अभिधम्मे आधारत्थसम्भवं दस्सेत्वा इदानि भावेनभावलक्खणत्थसम्भवं दस्सेन्तो आह "**खणसमवायहेतुसङ्खातस्सा**" ति आदि। तत्थ **खणो** नाम अट्ठक्खणविनिमुत्तो नवमो बुद्धुप्पादसङ्खातो खणो, यानि वा पनेतानि "चत्तारिमानि भिक्खवे चक्कानि येहि समन्नागतानं देवमनुस्सानं चतुचक्कं पवत्तती" ति[1] एत्थ पतिरूपदेस-

---

१. अं० १-३४१ पिट्ठे।

वासो, सप्पुरिसूपनिस्सयो, अत्तसम्मापणिधि, पुब्बे च कतपुञ्ञता ति चत्तारि चक्कानि वुत्तानि, तानि एकज्झं कत्वा ओकासट्ठेन खणो ति वेदितब्बो। तानि हि कुसलुप्पत्तिया ओकासभूतानि। **समवायो** नाम "चक्खुञ्च पटिच्च रूपे च उप्पज्जति चक्खुविञ्ञाणं" ति[1] एवमादिना निद्दिट्ठा चक्खुविञ्ञाणादिसङ्खातसाधारणफलनिप्फादकत्तेन सण्ठिता चक्खुरूपादिपच्चयसामग्गी। चक्खुरूपादीनञ्हि चक्खुविञ्ञाणादिसाधारणफलं। **हेतू** ति जनकहेतु। यथावुत्तखणसङ्खातस्स समवायसङ्खातस्स हेतुसङ्खातस्स च समयस्स भावेन सत्ताय तेसं फस्सादिधम्मानं भावो सत्ता लक्खीयति विञ्ञायती ति अत्थो। इदं वुत्तं होति—यथा "गावीसु दुय्हमानासु गतो, दुद्धासु आगतो" ति दोहनकिरियाय गमनकिरिया लक्खीयति, एवमिधा पि "यस्मिं समये, तस्मिं समये" ति च वुत्ते "सत्ती" ति अयमत्थो विञ्ञायमानो एव होति अञ्ञकिरियाय सम्बन्धाभावे पदत्थस्स सत्ताविरहाभावतो ति समयस्स सत्ताकिरियाय चित्तस्स उप्पादकिरिया फस्सादिभवनकिरिया च लक्खीयती ति। अयञ्हि तत्थ अत्थो यस्मिं यथावुत्ते खणे पच्चयसमवाये हेतुम्हि च सति कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति, तस्मिं येव खणे पच्चयसमवाये
B 201 हेतुम्हि च सति फस्सादयो पि होन्ती ति। **तदत्थजोतनत्थं** ति अधिकरणत्थस्स भावेनभावलक्खणत्थस्स च दीपनत्थं।

इध पना ति इमस्मिं विनये। **हेतु अत्थो करणत्थो च सम्भवती** ति "अन्नेन वसति, विज्जाय वसती" ति आदीसु विय हेतु अत्थो "फरसुना छिन्दति, कुदालेन खणती" ति आदीसु विय करणत्थो च सम्भवति। कथं सम्भवती ति आह **"यो हि सो"** ति आदि। **तेन समयेन हेतुभूतेन करणभूतेना** ति एत्थ पन तं तं वत्थुवीतिक्कमोव सिक्खापदपञ्ञत्तिया हेतु चेव करणञ्च। तथा हि यदा भगवा सिक्खापदपञ्ञत्तिया पठममेव तेसं तेसं तत्थ तत्थ तं तं-सिक्खापदपञ्ञत्तिहेतुभूतं वीतिक्कमं अपेक्खमानो विहरति, तदा तं तं वीतिक्कमं अपेक्खित्वा तदत्थं वसती ति सिद्धो वत्थुवीतिक्कमस्स हेतुभावो "अन्नेन वसति, अन्नं अपेक्खित्वा तदत्थाय वसतो" ति आदोसु विय। सिक्खापदपञ्ञत्तिकाले पन तेनेव पुब्बसिद्धेन वीतिक्कमेन सिक्खापदं पञ्ञपेती ति सिक्खापदपञ्ञत्तिया साधकतमत्ता करणभावोपि वीतिक्कमस्सेव सिद्धो "असिनाछिन्दती" ति आदीसु विय। वीतिक्कमं पन अपेक्खमानो तेनेव सद्धिं तन्निस्सयकालम्पि अपेक्खित्वा विहरती ति कालस्सपि इध हेतुभावो वुत्तो, सिक्खापदं पञ्ञपेन्तो च तं तं वीतिक्कमकालं अनतिक्कमित्वा तेनेव कालेन सिक्खापदं पञ्ञपेन्ती ति वीतिक्कमनिस्सयस्स कालस्सपि करणभावो वुत्तो, तस्मा इमिना परियायेन कालस्सपि हेतुभावो करणभावो च लब्भती ति वुत्तं "तेन समयेन हेतुभूतेन करणभूतेना" ति। निप्परियायतो पन वीतिक्कमोयेव हेतुभूतो करणभूतो च। सो हि वीतिक्कमक्खणे हेतु हुत्वा पच्छा सिक्खापदपञ्ञापने करणम्पि होती ति।

सिक्खापदानि पञ्ञापयन्तो ति वीतिक्कमं पुच्छित्वा भिक्खुसंघं सन्निपातापेत्वा ओतिण्णवत्थुकं पुग्गलं पटिपुच्छित्वा विगरहित्वा च तं तं वत्थुं ओकिण्णकालं

---

१. म० १-१५८, म० ३-३२८, सं० २-२६१ पिट्ठादोसु।

अनतिक्कमित्वा तेनेव कालेन करणभूतेन सिक्खापदानि पञ्ञापयन्तो। **सिक्खापदपञ्ञत्तिहेतुञ्च अपेक्खमानो** ति ततियपाराजिकादीसु विय सिक्खापदपञ्ञत्तिया हेतुभूतं तं तं वत्थुं वीतिक्कमसमयं अपेक्खमानो तेन समयेन हेतुभूतेन भगवा तत्थ तत्थ विहासी ति अत्थो। "सिक्खापदानि पञ्ञापयन्तो सिक्खापदपञ्ञत्तिहेतुञ्च अपेक्खमानो" ति वचनतो "तेन समयेन करणभूतेन हेतुभूतेना" ति एवं वत्तब्बे पि पठमं "हेतुभूतेना" ति वचनं इध हेतुअत्थस्स अधिप्पेतत्ता वुत्तं। भगवा हि वेरञ्जायं विहरन्तो थेरस्स सिक्खापदपञ्ञत्तियाचनहेतुभूतं परिवितक्कसमयं अपेक्खमानो तेन समयेन हेतुभूतेन विहासी ति तीसुपि **गण्ठिपदेसु** वुत्तं। किं पनेत्थ युत्तिचिन्ताय, आचरियस्स इध कमवचनिच्छा नत्थी ति एवमेतं गहेतब्बं। तेनेव **दीघनिकायट्ठकथायम्पि**[1] "तेन समयेन हेतुभूतेन करणभूतेना" ति आदिना अयमेव अनुक्कमो वुत्तो। न हि तत्थ पठमं "हेतुभूतेना" ति वचनं इध "तेन समयेन वेरञ्जायं विहरती" ति एत्थ हेतुअत्थस्स अधिप्पेतभावदीपनत्थं वुत्तं। सिक्खापदानि पञ्ञापयन्तो हेतुभूतेन करणभूतेन समयेन विहासि, सिक्खापदपञ्ञत्तिहेतुञ्च अपेक्खमानो हेतुभूतेन समयेन विहासी ति एवमेत्थ सम्बन्धो कातब्बो" ति पि वदन्ति। **तदत्थजोतनत्थं** ति हेतुअत्थस्स करणत्थस्स वा दीपनत्थं। **इधा** ति इमस्मिं विनये। **होति चेत्था** ति एत्थ इमस्मिं पदेसे यथावुत्तत्थसङ्गहवसेन अयं गाथा होति। **अञ्ञत्रा** ति सुत्ताभिधम्मेसु। B 202

पोराणा ति अट्ठकथाचरिया। **अभिलापमत्तभेदो** ति वचनमत्तेन विसेसो। तेन सुत्तविनयेसु विभत्तिविपरिणामो कतो ति दस्सेति। **परतो अत्थं वण्णयिस्सामा** ति परतो "इति पि सो भगवा" ति आदिना आगतट्ठाने वण्णयिस्साम। **वेरञ्जायं** ति एत्थ "बलिकरग्गहणेन जनस्स पीळाभावतो निद्दोसत्ता विगतो रजो अस्सा ति **वेरञ्जा,** सेरिवाणिजजातके देवदत्तस्स वेरुप्पन्नपदेसे कतत्ता वेरं एत्थ जातं ति वेरञ्जा, पविट्ठपविट्ठे नटसमज्जादीहि खादनीयभोजनीयालङ्कारादीहि च विविधेहि उपकरणेहि रञ्जन्तोविविधेहि रञ्जयती ति वेरञ्जा, पटिपक्खे अभिभवित्वा कतभावतो वेरं अभिभवित्वा जाता ति वेरञ्जा, वेरञ्जस्स नाम इसिनो अस्समट्ठाने कतत्ता वेरञ्जा" ति एवमादिना केचि वण्णयन्ति। किं इमिना, नाममत्तमेतं तस्स नगरस्सा ति दस्सेन्तो आह **"वेरञ्जा ति अञ्ञतरस्स नगरस्सेतं अधिवचनं"** ति। समीपत्थे भुम्मवचनं ति "गङ्गायं गावो चरन्ति, कूपे गग्गकुलं" ति आदीसु विय। **अविसेसेना** ति "पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरति। पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति। मेत्तासहगतेन चेतसा एकं दिसं फरित्वा विहरति। सब्बनिमित्तानं अमनसिकारा अनिमित्तं चेतोसमाधिं समापज्जित्वा विहरती" ति आदीसु विय सद्दन्तरसन्निधानसिद्धेन विसेसपरामसनेन विना। अथ वा **अविसेसेना** ति न विसेसेन, विहारभावसामञ्ञेना ति अत्थो। B 203

इरियापथ....पे०....**विहारेसू** ति इरियापथविहारो दिब्बविहारो ब्रह्मविहारो अरियविहारो ति एतेसु चतूसु विहारेसु। तत्थ इरियनं पवत्तनं इरिया, कायप्पयोगो

---

१. दी-ट्ठ १-३४ पिट्ठे।

कायिककिरिया। तस्सा पवत्तनुपायभावतो इरियाय पथो ति इरियापथो, ठाननिसज्जादि। न हि ठाननिसज्जादीहि अवत्थाहि विना कञ्चि कायिककिरियं पवत्तेतुं सक्का। ठानसमङ्गी वा हि कायेन किञ्चि करेय्य गमनादीसु अञ्ञतरसमङ्गी वा ति। विहरणं, विहरति एतेनाति वा विहारो, इरियापथोव विहारो **इरियापथविहारो**, सो च अत्थतो ठाननिसज्जादिआकारप्पवत्तो चतुसन्ततिरूपप्पबन्धोव। दिवि भावो दिब्बो, तत्थ बहुलप्पवत्तिया ब्रह्मपारिसज्जादिदेवलोकभवो ति अत्थो। तत्थ यो दिब्बानुभावो तदत्थाय संवत्तती ति वा दिब्बो, अभिञ्ञाभिनीहारवसेन महागतिकत्ता वा दिब्बो, दिब्बो च सो विहारो चा ति **दिब्बविहारो**, दिब्बभावावहो वा विहारो दिब्बविहारो, महग्गतज्झानानि। आरुप्पसमापत्तियो हि एत्थेव सङ्गहं गच्छन्ति। **नेत्तियं** पन "चतस्सो आरुप्पसमापत्तियो आनेञ्जविहारो" ति वुत्तं, तं मेत्ताझानादीनं ब्रह्मविहारता विय तासं भावनाविसेसभावं सन्धाय वुत्तं। अट्ठकथासु पन दिब्बभावावहसामञ्ञतो ता पि "दिब्बविहारा" त्वेव वुत्ता। ब्रह्मानं विहारा **ब्रह्मविहारा**, ब्रह्मानो वा विहारा ब्रह्मविहारा, हितूपसंहरादिवसेन पवत्तिया ब्रह्मभूता सेट्ठभूता विहारा ति अत्थो, मेत्ताझानादिका चतस्सो अप्पमञ्ञायो। अरिया उत्तमा विहारा ति **अरियविहारा**, अनञ्ञसाधारणत्ता अरियानं वा विहारा अरियविहारा, चतस्सो फलसमापत्तियो। विसेसतो पन रूपावचरचतुत्थज्झानं चतस्सो अप्पमञ्ञायो चतुत्थज्झानिकफलसमापत्ति च भगवतो दिब्बब्रह्मअरियविहारो।

B 204 **अञ्ञतरविहारसमङ्गीपरिदीपनं** ति यथावुत्तविहारेसु अञ्ञतरविहारसमङ्गीभावपरिदीपनं। भगवा हि लोभदोसमोहुस्सन्नकाले लोके तस्स सकाय पटिपत्तिया विनयनत्थं दिब्बब्रह्मअरियविहारे उपसम्पज्ज विहरति। तथा हि यदा सत्ता कामेसु विप्पटिपज्जन्ति, तदा किर भगवा दिब्बेन विहारेन विहरति तेसं अलोभकुसलमूलुप्पादनत्थं "अप्पेव नाम इमं पटिपत्तिं दिस्वा एत्थ रुचिं उप्पादेन्ता कामेसु विरज्जेय्युं ति। यदा पन इस्सरियत्थं सत्तेसु विप्पटिपज्जन्ति, तदा पन ब्रह्मविहारेन विहरति तेसं अदोसकुसलमूलुप्पादनत्थं "अप्पेव नाम इमं पटिपत्तिं दिस्वा एत्थ रुचिं उप्पादेत्वा अदोसेन दोसं वुपसमेय्युं" ति। यदा पन पब्बजिता धम्माधिकरणं विवदन्ति, तदा अरियविहारेन विहरति तेसं अमोहकुसलमूलुप्पादनत्थं "अप्पेव नाम इमं पटिपत्तिं दिस्वा तत्थ रुचिं उप्पादेत्वा अमोहेन मोहं वूपसमेय्युं" ति। एवञ्च कत्वा इमेहि दिब्बब्रह्मअरियविहारेहि सत्तानं विविधं हितसुखं हरति उपहरति उपनेति जनेति उप्पादेती ति "विहरती" ति वुच्चति।

इरियापथविहारेन पन न कदाचि न विहरति तं विना अत्तभावपरिहरणाभावतो, ततोयेव च दिब्बविहारादीनम्पि साधारणो इरियापथविहारो ति आह "इध पना" ति आदि। **इरियापथसमायोगपरिदीपनं** ति इतरविहारसमायोगपरिदीपनस्स विसेसवचनस्स अभावतो इरियापथसमायोगपरिदीपनस्स च अत्थसिद्धत्ता वुत्तं। अस्मिं पन पक्खे **विहरती** ति एत्थ-**वि**-सद्दो विच्छेदत्थजोतनो, **हरती** ति नेति पवत्तेती ति अत्थो, विच्छिन्दित्वा हरती ति वुत्तं होति। तत्थ कस्स केन विच्छिन्दनं, कथं कस्स

पवत्तनं ति अन्तोलीनचोदनं सन्धायाह "**सो ही**" ति आदि। **सो** ति भगवा। यदिपि भगवा एकेन पि इरियापथेन चिरतरं कालं अत्तभावं पवत्तेतुं सक्कोति, तथापि उपादिन्नकसरीरस्स नाम अयं सभावो ति दस्सेतुं "**एकं इरियापथबाधनं**" ति आदि वुत्तं। **अपरिपतन्तं** ति अपतन्तं। यस्मा पन भगवा यत्थ कत्थचि वसन्तो विनेय्यानं धम्मं देसेन्तो नानासमापत्तीहि च कालं वीतिनामेन्तो वसती ति सत्तानं अत्तनो च विविधं हितसुखं हरति उपनेति, तस्मा विविधं हरती ति विहरतीति एवम्पेत्थ अत्थो वेदितब्बो।

नळेरुपुचिमन्दमूले ति एत्थ वण्णयन्ति—**नळेरु** ति तस्मिं रुक्खे अधिवत्थ- B 205
यक्खस्सेतं अधिवचनं, तस्मा तेन अधिवत्थो पुचिमन्दो "नळेरुस्स पुचिमन्दो नळेरुपुचिमन्दो" ति वुच्चति। अथ वा नळे रुहत्ता जातत्ता नळेरु। सुसिरमेत्थ नळसद्देन वुच्चति, तस्मा रुक्खसुसिरे जातत्ता नळेरु च सो पुचिमन्दो चा ति नळेरुपुचिमन्दो ति वुच्चति। नळवने रुहत्ता जातत्ता वा नळेरु। नळवने किर सो पुचिमन्दरुक्खो जातो। उरुनळो पुचिमन्दो नळेरुपुचिमन्दो। उरुसद्दो चेत्थ महन्तपरियायो, नळसद्दो सुसिरपरियायो, तस्मा महन्तेन सुसिरेन समन्नागतो पुचिमन्दो नळेरुपुचिमन्दो ति वुच्चती ति। आचरियो पन किमेत्थ बहुभासितेना ति एकमेवत्थं दस्सेन्तो "**नळेरु नाम यक्खो**" ति आदिमाह।

मूल-सद्दो एत्थ समीपवचनो अधिप्पेतो, न मूलमूलादीसु वत्तमानो ति दस्सेन्तो आह "**मूलं ति समीपं** ति आदि। निप्परियायेन साखादिमतो सङ्घातस्स सुप्पतिट्ठितभावसाधने अवयवविसेसे पवत्तमानो मूलसद्दो यस्मा तं सदिसेसु तन्निस्सये पदेसे च रुळ्हीवसेन परियायतो पवत्तति, तस्मा "मूलानि उद्धरेय्या" ति एत्थ निप्परियायतो मूलं अधिप्पेतं ति एकेन मूलसद्देन विसेसेत्वा आह "**मूलमूले दिस्सती**" ति यथा "दुक्खदुक्खं, रूपरूपं" ति च। **असाधारणहेतुम्ही** ति असाधारणकारणे। लोभो हि लोभसहगतअकुसलचित्तुप्पादस्सेव हेतुत्ता असाधारणो, तस्मा लोभसहगतचित्तुप्पादानमेव आवेणिके नेसं सुप्पतिट्ठितभावसाधनतो मूलट्ठेन उपकारके पच्चयधम्मविसेसे ति अत्थो। अथ वा यथा अलोभादयो कुसलाब्याकतसाधारणा, लोभादयो पन तथा न होन्ति अकुसलस्सेव साधारणत्ता ति असाधारणकारणं। अथ वा **आदीसू** ति एत्थ **आदि**-सद्देन अलोभादीनम्पि कुसलाब्याकतमूलानं सङ्गहो दट्ठब्बो। तेसुपि हि अलोभादिकुसलमूलं अकुसलाब्याकतेहि असाधारणत्ता असाधारणकारणं, तथा अलोभादि अब्याकतमूलम्पि इतरद्वयेहि असाधारणत्ता ति। **निवाते** ति वातरहिते पदेसे, वातस्स अभावे वा। **पतन्तो** ति निपतन्ति, अयमेव वा पाठो। **रमणीयो** ति मनुञ्ञो। **पासादिको** ति पसादावहो, पसादजनको ति अत्थो। आधिपच्चं कुरुमानो विया ति सम्बन्धो।

तत्था ति "तेन समयेन बुद्धो भगवा वेरञ्जायं विहरति नळेरुपुचिमन्दमूले" B 206
ति यं वुत्तं, तत्थ। **सिया** ति कस्सचि एवं परिवितक्को सिया, वक्खमानाकारेन कदाचि चोदेय्य वा ति अत्थो। **यदि ताव भगवा** ति आदीसु चोदकस्सायमधिप्पायो—

"पाटलिपुत्ते पासादे वसती" ति आदीसु विय अधिकरणाधिकरणं यदि भवेय्य, तदा "वेरञ्जायं विहरति नळेरुपुचिमन्दमूले" ति अधिकरणद्वयनिद्देसो युत्तो सिया, इमेसं पन भिन्नदेसत्ता न युत्तो उभयनिद्देसो ति। **अथ तत्थ विहरती** ति यदि नळेरुपुचिमन्दमूले विहरति। **न वत्तब्बं** ति नानाट्ठानभूतत्ता वेरञ्जा नळेरुपुचिमन्दमूलानं" तेन समयेना" ति च वुत्तत्ता ति अधिप्पायो। इदानि चोदको तमेव अत्तनो अधिप्पायं "**न हि सक्का**" ति आदिना विवरति। वेरञ्जानळेरुपुचिमन्दमूलानं भूमिभागवसेन भिन्नत्तायेव हि न सक्का उभयत्थ तेनेव समयेन विहरितुं, 'उभयत्थ तेनेव समयेना" ति च वुत्तत्ता नानासमये विहारो अवारितो ति वेदितब्बो।

इतरो सब्बमेतं अविपरीतमत्थं अजानन्तेन तया वुत्तं ति दस्सेन्तो "**न खो पनेतं एवं दट्ठब्बं**" ति आदिमाह। तत्थ **एतं** ति "वेरञ्जायं विहरति नळेरुपुचिमन्दमूले" ति एतं वचनं। **एवं** ति "यदि ताव भगवा" ति आदिना यं तं भगवा चोदितं, तं अत्थतो एवं न खो पन दट्ठब्बं, न उभयत्थ अपुब्बं अचरिमं विहारदस्सनत्थं ति अत्थो। इदानि अत्तना यथाधिप्पेतं अविपरीतमत्थं तस्स च पटिकच्चेव[1] वुत्तभावं तेन च अप्पटिविद्धतं पकासेन्तो "**ननु अवोचुम्ह समीपत्थे भुम्मवचनं**" ति अदिमाह। **गोयूथानी** ति गोमण्डलानि। एवम्पि नळेरुपुचिमन्दमूले विहरतिच्चेव वत्तब्बं, न वेरञ्जायं ति, तस्मा समीपाधिकरणत्थवसेन उभयथा निदानकित्तने किं पयोजनं ति चोदनं मनसि निधायाह "**गोचरगामनिदस्सनत्थं**" ति आदि। **अस्सा** ति भगवतो।

अवस्सञ्चेत्थ गोचरगामकित्तनं कत्तब्बं। यथा हि नळेरुपुचिमन्दमूलकित्तनं पब्बजितानुग्गहकरणादिअनेकप्पयोजनं, एवं गोचरगामकित्तनम्पि गहट्ठानुग्गहकरणादिविविधप्पयोजनं ति दस्सेन्तो "**वेरञ्जाकित्तनेना**" ति आदिमाह। तत्थ **गहट्ठानुग्गहकरणं** ति तेसं तत्थ पच्चयग्गहणेन उपसङ्कमनपयिरुपासनादीनं ओकासदानेन धम्मदेसनाय सरणेसु सीलेसु च पतिट्ठापनेन यथूपनिस्सयं उपरिविसेसाधिगमावहनेन च
B 207 गहट्ठानं अनुग्गहकरणं। **पब्बजितानुग्गहकरणं** ति उग्गहपरिपुच्छानं कम्मट्ठानानुयोगस्स च अनुरूपवसनट्ठानपरिग्गहेनेत्थ पब्बजितानं अनुग्गहकरणं।

पच्चयग्गहणेनेव पच्चयपरिभोगसिद्धितो आह **तथा पुरिमेन**....पे०.. **विवज्जनं** ति। तत्थ **पुरिमेना** ति वेरञ्जावचनेन। आहितो अहंमानो एत्था ति अत्ता, अत्तभावो। तस्स किलमथो किलन्तभावो अत्तकिलमथो, अत्तपीळा अत्तदुक्खं ति वुत्तं होति, तस्स अनुयोगो करणं अत्तकिलमथानुयोगो, उपवासकण्टकापस्सयसेय्यादिना अत्तनो दुक्खुप्पादनं ति वुत्तं होति। तस्स विवज्जनं **अत्तकिलमथानुयोगविवज्जनं।** अन्तोगामे वसन्तानं अनिच्छन्तानम्पि विसभागरूपादिआरम्मणदस्सनादिसम्भवतो बहिगामे पतिरूपट्ठाने वसन्तानं तदभावतो आह "**पच्छिमेन वत्थुकामप्पहानतो**" ति आदि। तत्थ **पच्छिमेना** ति नळेरुपुचिमन्दमूलवचनेन। किलेसकामस्स वत्थुभूतत्ता रूपादयो पञ्च कामगुणा वत्थुकामो, तस्स पहानं **वत्थुकामप्पहानं**। **कामसुखल्लिकानुयोगविवज्ज-**

---

१. पटिगच्चेव (सी०)

नुप्पायदस्सनं ति वत्थुकामेसु किलेसकामसंयुत्तस्स सुखस्स योगो अनुयोगो[1] अनुभवो, तस्स परिवज्जने उपायदस्सनं।

सयमेव गोचरगामं उपसङ्कमित्वा अत्तनो धम्मस्सवनानुरूपभब्बपुग्गलानं दस्सनतो धम्मदेसनाय कालो सम्पत्तो नाम होती ति धम्मदेसनाय अभियोगो विञ्ञायती ति आह "**पुरिमेन च धम्मदेसनाभियोगं**" ति। धम्मदेसनाय सउस्साहभावो **धम्मदेसनाभियोगो**। बहिगामे विवित्तोकासे वसन्तस्स आकिण्णविहाराभावतो कायविवेकादीसु अधिमुत्ति तप्पोणता विञ्ञायती ति आह "**पच्छिमेनविवेकाधिमुत्ति**" ति।

धम्मदेसनाभियोगविवेकाधिमुत्तीनं हेतुभूता एव करुणापञ्ञाधम्मदेसनाय उपगमनस्स ततो अपगमनस्स कारणभूता होन्ती ति आह "**पुरिमेन करुणाय उपगमनं**" ति आदि। करुणापञ्ञायेव हि अनन्तरदुकस्स हेतू होन्ति। एतेन च करुणाय उपगमनं न लाभादिनिमित्तं, पञ्ञाय अपगमनं न विरोधादिनिमित्तं ति B 208
उपगमनापगमनानं निरुपत्तिलेसतं विभावितं ति दट्ठब्बं। **अधिमुत्ततं** ति तन्निन्नभावं। **निरुपलेपनं** अनुपलेपनं अनल्लीयनं।

धम्मिकसुखापरिच्चागनिमित्तं ति एत्थ धम्मिकसुखं नाम अनवज्जसुखं। तञ्हि धम्मिकं लाभं पटिच्च उप्पन्नत्ता "धम्मिकसुखं" ति वुच्चति। उत्तरिमनुस्सधम्माभियोगनिमित्तं फासुविहारं ति सम्बन्धो। **मनुस्सानं उपकारबहुलतं** ति पच्चयपटिग्गहणधम्मदेसनादिवसेन उपकारबहुलतं। **देवतानं** उपकारबहुलतं जनविवित्तताय। पचुरजनविवित्तञ्हि ठानं देवा उपसङ्कमितब्बं मञ्ञन्ति। **लोके संवड्ढभावं** ति आमिसोपभोगेन संवड्ढितभावं।

एकपुग्गलो ति एत्थ[2] **एको** ति दुतियादिपटिक्खेपत्थो गणनपरिच्छेदो। **पुग्गलो** ति सम्मुतिकथा, न परमत्थकथा। बुद्धस्स हि भगवतो दुविधा देसना सम्मुतिदेसना परमत्थदेसना चाति। अयमत्थो पन हेट्ठा वित्थारितो वा ति इध न वुच्चति। एको च सो पुग्गलो चा ति एकपुग्गलो। केनट्ठेन एकपुग्गलो? असदिसट्ठेन गुणविसिट्ठट्ठेन असमसमट्ठेन। सो हि दसन्नं पारमीनं पटिपाटिया आवज्जनं आदिं कत्वा बोधिसम्भारगुणेहि चेव बुद्धगुणेहि च सेसमहाजनेन असदिसो ति **असदिसट्ठेनपि** एकपुग्गलो। ये चस्स ते गुणा, तेपि अञ्ञसत्तानं गुणेहि विसिट्ठा ति **गुणविसट्ठेनपि** एकपुग्गलो। पुरिमका सम्मासम्बुद्धा सब्बसत्तेहि असमा, तेहि सद्धिं अयमेव एको रूपकायगुणेहि चेव नामकायगुणेहि च समो ति **असमसमट्ठेन** पि एकपुग्गलो। **लोके** ति सत्तलोके।

उप्पज्जमानो उप्पज्जती ति इदं पन उभयम्पि विप्पकतवचनमेव। उप्पज्जन्तो बहुजनहितत्थाय उप्पज्जति, न अञ्ञेन कारणेना ति एवं पनेत्थ अत्थो वेदितब्बो।

---

१. सुखस्स यो अनुयोगो (सी०) सुखस्स अनुयोगो ?

२. अं० ट्ठ १–७३ पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।

एवरूपञ्चेत्थ लक्खणं न सक्का एतं अञ्ञेन सद्दलक्खणेन पटिबाहितुं। अपि च उप्प-ज्जमानो नाम, उप्पज्जति नाम, उप्पन्नो नामा ति अयमेत्थ भेदो वेदितब्बो। एस हि दीपङ्करपादमूलतो लद्धब्याकरणो बुद्धकारकधम्मे परियेसन्तो दस पारमियो दिस्वा
B 209 "इमे धम्मा मया पूरेतब्बा" ति कतसन्निट्ठानो दानपारमिं पूरेन्तो पि **उप्पज्जमानो** नाम। सीलपारमिं ......पे०...... उपेक्खापारमिं ति इमा दस पारमियो पूरेन्तो पि, दस उपपारमियो पूरेन्तो पि उप्पज्जमानो नाम। दस परमत्थपारमियो पूरेन्तो पि उप्पज्जमानो नाम। पञ्च महापरिच्चागे परिच्चजन्तो पि उप्पज्जमानो नाम। ञातत्थचरियं लोकत्थचरियं बुद्धत्थचरियं[1] पूरयमानो पि उप्पज्जमानो नाम। कप्पसतसहस्साधिकानि चत्तारि असङ्ख्येय्यानि बुद्धकारके धम्मे मत्थकं पापेन्तो पि उप्पज्जमानो नाम। वेस्सन्तरत्तभावं पहाय तुसितपुरे पटिसन्धिं गहेत्वा सट्ठिवस्ससतसहस्साधिका सत्तपण्णास वस्सकोटियो तिट्ठन्तो पि उप्पज्जमानो नाम। देवताहि याचितो पञ्च महाविलोकनानि विलोकेत्वा मायादेविया कुच्छिस्मिं पटिसन्धिं गण्हन्तो पि, अनूनाधिके दस मासे गब्भवासं वसन्तो पि उप्पज्जमानो नाम। एकूनतिंस वस्सानि अगारमज्झे तिट्ठन्तो पि उप्पज्जमानो नाम। कामेसु आदीनवं नेक्खम्मे च आनिसंसं दिस्वा राहुलभद्दस्स जातदिवसे छन्नसहायो कण्डकं[2] अस्सवर-मारुय्ह निक्खमन्तो पि उप्पज्जमानो नाम। तीणि रज्जानि अतिक्कमन्तो अनोमनदितीरे पब्बजन्तो पि उप्पज्जमानो नाम। छब्बस्सानि महापधानं करोन्तो पि उप्पज्जमानो नाम। परिपाकगते ञाणे ओळारिकं आहारं आहरन्तो पि उप्पज्जमानो नाम। सायन्हसमये विसाखपुण्णमायं महाबोधिमण्डं आरुय्ह मारबलं विधमेत्वा पठमयामे पुब्बेनिवासं अनुस्सरित्वा मज्झिमयामे दिब्बचक्खुं परिसोधेत्वा पच्छिमयामसमनन्तरे द्वादसङ्गं पटिच्चसमुप्पादं अनुलोमपटिलोमतो सम्मसित्वा सोतापत्तिमग्गं पटिविज्झन्तो पि उप्पज्जमानो नाम। सोतापत्तिफलक्खणे पि सकदागामिफलक्खणे पि अनागामिफलक्खणे पि उप्पज्जमानो नाम। अरहत्तमग्गक्खणे पन **उप्पज्जति** नाम। अरहत्तफलक्खणे **उप्पन्नो** नाम। बुद्धानञ्हि सावकानं विय न पटिपाटिया इद्धिविधञाणादीनि उप्पज्जन्ति, सहेव पन अरहत्तमग्गेन सकलो पि सब्बञ्ञुतञ्ञाणादि गुणरासि आगतोव नाम होति, तस्मा निब्बत्तसब्बकिच्चत्ता अरहत्तफलक्खणे उप्पन्नो नाम होति। इमस्मिम्पि सुत्ते अरहत्तफलक्खणंयेव सन्धाय "उप्पज्जती" ति वुत्तं। उप्पन्नो होती ति अयञ्हेत्थ अत्थो।

बहुजनहिताया ति महाजनस्स हितत्थाय उप्पज्जति। **बहुजनसुखाया** ति
B 210 महाजनस्स सुखत्थाय उप्पज्जति। **लोकानुकम्पाया** ति सत्तलोकस्स अनुकम्पं पटिच्च उप्पज्जति। कतरसत्तलोकस्साति? यो तथागतस्स धम्मदेसनं सुत्वा अमतपानं पिवि, धम्मं पटिविज्झि, तस्स। भगवता हि महाबोधिमण्डे सत्तसत्ताहं वीतिनामेत्वा बोधिमण्डा इसिपतनं आगम्म "द्वे मे भिक्खवे अन्ता पब्बजितेन न सेवितब्बा" ति

---

१. बुद्धचरियं (सी०)   २. कन्थकं (सी०)।

धम्मचक्कप्पवत्तनसुत्तन्ते[1] देसिते आयस्मता अञ्ञासिकोण्डञ्ञत्थेरेन सद्धिं अट्ठारसकोटिसङ्खा ब्रह्मानो अमतपानं पिविंसु, एतस्स सत्तलोकस्स अनुकम्पाय उप्पन्नो। पञ्चमदिवसे अनत्तलक्खणसुत्तन्तपरियोसाने पञ्चवग्गियत्थेरा अरहत्ते पतिट्ठहिंसु, एतस्सपि सत्तलोकस्स अनुकम्पाय उप्पन्नो। ततो यसदारकप्पमुखे पञ्चपण्णास पुरिसे अरहत्ते पतिट्ठापेसि, ततो कप्पासिकवनसण्डे तिंस भद्दवग्गिये तयो मग्गे च फलानि च सम्पापेसि, एतस्सपि सत्तलोकस्स अनुकम्पाय उप्पन्नो। गयासीसे आदित्तपरियायपरियोसाने[2] जटिलसहस्सं अहरत्ते पतिट्ठापेसि, ततो लट्ठिवने बिम्बिसारप्पमुखा एकादस नहुता ब्राह्मण-गहपतिका सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा सोतापत्तिफले पतिट्ठहिंसु, एकं नहुतं सरणेसु पतिट्ठितं। तिरोकुड्डअनुमोदनावसाने[3] चतुरासीतिया पाणसहस्सेहि अमतपानं पीतं। सुमनमालाकारसमागमे चतुरासीतिया, धनपालसमागमे दसहि पाणसहस्सेहि, खदिरङ्गा-रजातकसमागमे चतुरासीतिया पाणसहस्सेहि, जम्बुकआजीवकसमागमे चतुरासीतियाव, आनन्दसेट्ठिसमागमे चतुरासीतियाव पाणसहस्सेहि अमतपानं पीतं। पासाणकचेतिये पारायनसुत्तकथादिवसे[4] चुद्दस कोटियो अमतपानं पिविंसु। यमकपाटिहारियदिवसे वीसति पाणकोटियो, तावतिंसभवने पण्डुकम्बलसिलायं निसीदित्वा मातरं कायसक्खिं कत्वा सत्तप्पकरणं अभिधम्मं देसेन्तस्स असीति पाणकोटियो, देवोरोहणे तिंस पाण-कोटियो, सक्कपञ्हसुत्तन्ते[5] असीति देवसहस्सानि अमतपानं पिविंसु। महासमय-सुत्तन्ते[6] मङ्गलसुत्ते[7] चूळराहुलोवादे[8] समचित्तपटिपदाया ति[9] इमेसु चतूसु ठानेसु अभिसमयप्पत्तसत्तानं परिच्छेदो नत्थि, एतस्सपि सत्तलोकस्स अनुकम्पाय उप्पन्नो ति। यावज्जदिवसा इतो परम्पि अनागते इमं सासनं निस्साय सग्गमोक्खमग्गे पतिट्ठहन्तानं वसेन पि अयमत्थो वेदितब्बो। B 211

देवमनुस्सानं ति न केवलं देवमनुस्सानंयेव, अवसेसानं नागसुपण्णादीनम्पि अत्थाय हिताय सुखायेव उप्पन्नो। सहेतुकपटिसन्धिके पन मग्गफलसच्छिकिरियाय भब्बे पुग्गले दस्सेतुं एवं वुत्तं। तस्मा एतेसम्पि अत्थत्थाय हितत्थाय सुखत्थायेव उप्पन्नो ति वेदितब्बो।

कतमो एकपुग्गलो ति कथेतुकम्यतापुच्छा। इदानि ताय पुच्छाय पुट्ठं एक-पुग्गलं विभावेन्तो "**तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो**" ति आह। **तदत्थपरिनिप्फादनं** ति लोकत्थनिप्फादनं, बुद्धकिच्चसम्पादनं ति अत्थो। **पठमं लुम्बिनीवने दुतियं बोधिमण्डे** ति लुम्बिनीवने रूपकायेन जातो, बोधिमण्डे धम्मकायेन। **एवमादिना** ति आदि-

१. सं० ३-३६८, वि० ३-१४ पिट्ठेसु।
२. सं० २-२५१, वि० ३-४४ पिट्ठेसु।
३. खु० १-८ पिट्ठे।
४. खु० १-४२९ पिट्ठे।
५. दी० २-३११ पिट्ठे।
६. दी० २-२०३ पिट्ठे।
७. खु० १-३, ३१८ पिट्ठेसु।
८. म० ३-३२४ पिट्ठे।
९. अं० १-६२ पिट्ठे।

सद्देन वेरञ्जा कित्तनतो रूपकायस्स अनुग्गण्हनं दस्सेति, नळेरुपुचिमन्दमूलकित्तनतो धम्मकायस्स। तथा पुरिमेन पराधीनकिरियाकरणं, दुतियेन अत्ताधीनकिरिया करणं। पुरिमेन वा करुणाकिच्चं, इतरेन पञ्ञाकिच्चं, पुरिमेन चस्स परमाय अनुकम्पाय समन्नागमं, पच्छिमेन परमाय उपेक्खाय समन्नागमं ति एवमादिं सङ्गण्हाति।

पच्छिमको ति गुणेन पच्छिमको। आनन्दत्थेरं सन्धायेतं वुत्तं। **सङ्ख्यायपी** ति गणनतो पि। दिट्ठिसीलसामञ्ञेन संहतत्ता संघो ति इममत्थं विभावेन्तो आह "**दिट्ठिसीलसामञ्ञसङ्घातसंघातेन समणगणेना**" ति। एत्थ पन "यायं दिट्ठि अरिया निय्यानिका निय्याति तक्करस्स सम्मा दुक्खक्खयाय, तथारूपाय दिट्ठिया दिट्ठि सामञ्ञगतो विहरती" ति[1] एवं वुत्ताय दिट्ठिया, यानि तानि सीलानि अखण्डानि अच्छिद्दानि असबलानि अकम्मासानि भुजिस्सानि विञ्ञुप्पसत्थानि अपरामट्ठानि समाधिसंवत्तनिकानि, तथारूपेसु सीलेसु[2] सीलसामञ्ञगतो विहरती" ति[3] एवं वुत्तानञ्च सीलानं सामञ्ञसङ्घातेन सङ्घतो सङ्घटितो समेतो ति **दिट्ठिसीलसामञ्ञसङ्घातसङ्घातो**, समणगणो। दिट्ठिसीलसामञ्ञेन संहतो ति वुत्तं होति। तथा हि "अट्ठानमेतं भिक्खवे अनवकासो,
B 212 यं दिट्ठिसम्पन्नो पुग्गलो सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेय्य, नेतं ठानं विज्जती" ति आदिवचनतो दिट्ठिसीलानं नियतसभावत्ता सोतापन्ना पि अञ्ञमञ्ञं दिट्ठिसीलसामञ्ञेन संहता, पगेव सकदागामिआदयो। अरियपुग्गला हि यत्थ कत्थचि दूरे ठिता पि अत्तनो गुणसामग्गिया संहतायेव। "तथारूपाय दिट्ठिया दिट्ठिसामञ्ञगतो विहरति।[4] तथारूपेसु सीलेसु सीलसामञ्ञगतो विहरती"[5] ति वचनतो पुथुज्जनानम्पि दिट्ठिसीलसामञ्ञेन संहतभावो लब्भतियेव, इध पन अरियसंघोयेव अधिप्पेतो" यो तत्थ पच्छिमको, सो सोतापन्नो" ति वचनतो। **एतेना** ति पञ्चमत्तेहि भिक्खुसतेही" ति एतेन वचनेन। **अस्सा** ति पञ्चमत्तस्स भिक्खुसतस्स। **निरब्बुदो** ति आदीनं वचनत्थो परतो एव आविभविस्सति।

अस्सोसी ति एत्थ सवनमुपलब्भो ति आह "**अस्सोसी ति सुणि उपलभी**" ति, अञ्ञासी ति अत्थो। सो चायमुपलब्भो सवनवसेनेवा ति इममत्थं दस्सेन्तो आह "**सोतद्वारसम्पत्तवचननिग्घोसानुसारेन अञ्ञासी**" ति। अवधारणफलत्ता सद्दप्पयोगस्स सब्बम्पि वाक्यं अन्तोगधावधारणं ति आह "**खो ति पदपूरणमत्ते निपातो**" ति। अवधारणत्थे ति पन इमिना अन्तोगधावधारणे पि सब्बस्मिं वाक्ये इट्ठतोवधारणत्थं खो सद्दग्गहणं ति दस्सेति। तमेव इट्ठतोवधारणं दस्सेन्तो आह "**तत्थ अवधारणत्थेना**" ति आदि। अथ पदपूरणत्थेन खो सद्देन किं पयोजनं ति आह "**पदपूरणेन**

---

१. दी० ३-२०४, २३७, म० १-३९७, म० ३-३९ पिट्ठेसु।
२. तथरूपेहि सीलेहि (सब्बत्थ)
३. दी० ३-२०३, २३७, म० १-३९७, म० ३-३९ पिट्ठेसु।
४. दी० ३-२०४, २३७, म० ३, ३९ पिट्ठेसु।
५. दी० ३-२०३, २३७, म० ३-२९।

पन ब्यञ्जनसिलिट्ठतामत्तमेवा" ति। "अस्सोसी" ति हि पदं खो सद्दे गहिते तेन फुल्लितमण्डितविभूसितं विय होन्तं पूरितं नाम होति, तेन च पुरिमपच्छिमपदानि सिलिट्ठानि होन्ति, न तस्मिं अग्गहिते, तस्मा पदपूरणेन ब्यञ्जनसिलिट्ठतामत्तमेव पयोजनं। **मत्त**-सद्दो चेत्थ विसेसनिवत्तिअत्थो, तेनस्स अनत्थन्तरदीपनतं[1] दस्सेति, **एव**-सद्देन पन ब्यञ्जनसिलिट्ठताय एकं ति कतं।

वेरञ्जो ति एत्थ सद्दलक्खणानुसारेन अत्थं दस्सेन्तो आह "वेरञ्जायं जातो" ति आदि। **ब्रह्मं अणतो** ति एत्थ **ब्रह्मं** ति वेदो वुच्चति, सो पन मन्तब्रह्मकप्पवसेन तिविधो। तत्थ मन्ता पधानमूलभावतोयेव अट्ठकादीहि पवुत्ता, इतरे पन तन्निस्सयेन जाता, तेन पधानस्सेव गहणं। **मन्ते सज्झायतो** ति इरुवेदादिके मन्तसत्थे सज्झायती ति अत्थो। इरुवेदादयो हि गुत्तभासितब्बताय "मन्ता" ति वुच्चन्ति। **इदमेव हो** ति अवधारणेन ब्रह्मतो जातो ति आदिकं निरुत्तिं पटिक्खिपति। **जातिब्राह्मणानं** ति इमिना अञ्ञेपि ब्राह्मणा अत्थी ति दस्सेति। दुविधा हि ब्राह्मणा जातिब्राह्मणा विसुद्धिब्राह्मणा चाति। इदानि तत्थ विसुद्धिब्राह्मणानं निरुत्तिं दस्सेन्तो आह "**अरिया पना**" ति आदि। B 213

समितपापत्ता ति अच्चन्तं अनवसेसतो सवासनं समितपापत्ता। एवञ्हि बाहिरकअवीतरागसेक्खासेक्खपापसमणतो भगवतो पापसमणं विसेसितं होति। वुत्तमेवत्थं उदाहरणेन विभावेन्तो आह "**वुत्तञ्हेतं**" ति आदि। एत्थ पन **बाहितपापो ति ब्राह्मणो, समितपापत्ता समणो ति वुच्चती** ति इदं भिन्नगाथासन्निस्सितपदद्वयं एकतो गहेत्वा वुत्तं" ति वदन्ति। वुत्तञ्हेतं तीसुपि **गण्ठिपदेसु** "समितत्ता हि पापानं, समणो ति पवुच्चती ति इदं वचनं गहेत्वा 'समितत्ता समणो ति वुच्चती' ति वुत्तं। बाहितपापो ति ब्राह्मणो ति इदं पन अञ्ञस्मिं गाथाबन्धे वुत्तवचनं" ति। अनेकत्थत्ता निपातानं इध अनुस्सवनत्थे[2] अधिप्पेतो ति आह "**खलू ति अनुस्सवनत्थे निपातो**" ति। **जातिसमुदागतं** ति जातिया आगतं, जातिसिद्धं ति वुत्तं होति। आलपनमत्तं ति पियालापवचनमत्तं। पियसमुदाहारा हेते भो ति वा आवुसो ति वा देवानम्पिया ति वा। **भोवादी नाम सो होती** ति यो आमन्तनादीसु "भो भो" ति वदन्तो विचरति, सो भोवादी नाम होती ति अत्थो। **सकिञ्चनो** ति रागादीहि किञ्चनेहि सकिञ्चनो। रागादयो हि सत्ते किञ्चेन्ति मद्दन्ति पलिबुद्धन्ती ति[3] "किञ्चनानी" ति वुच्चन्ति। मनुस्सा किर गोणेहि खलं मद्दापेन्ता "किञ्चेहि कपिल, किञ्चेहि काळका" ति वदन्ति, तस्मा मद्दनट्ठो किञ्चनट्ठो ति वेदितब्बो।

गोत्तवसेना ति एत्थ गं[4] तायती ति गोत्तं। गोत्तसद्देन चेत्थ अभिधानं बुद्धि च वुच्चति, तस्मा एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो। गोतमो ति पवत्तमानं अभिधानं बुद्धिञ्च एकंसिकविसयताय[5] तायति रक्खतो ति गोत्तं। यथा हि बुद्धि आरम्मणभूतेन अत्थेन

१. अत्थन्तरदीपनतं (सी०, स्या०)
२. अनुस्सवनत्थो (स्या०)
३. पलिबोधेन्तीति (सी०)।
४. गवं (सी०)।
५. एकन्तिकविसयताय (सी०)।

B 214 विना न वत्तति, एवं अभिधानं अभिधेय्यभूतेन, तस्मा सो गोत्तसङ्खातो अत्थो तानि बुद्धिअभिधानानि तायति रक्खती ति वुच्चति। सो पन अञ्ञकुलपरम्पराय असाधारणं तस्स कुलस्स आदिपुरिससमुदागतं तंकुलपरियापन्नसाधारणं सामञ्ञरूपं ति दट्ठब्बं। एत्थ च **समणो** ति इमिना सरिक्खकजनेहि भगवतो बहुमतभावो दस्सितो समितपापताकित्तनतो, **गोतमो** ति इमिना लोकियजनेहि उळारकुलसम्भूततादीपनतो। सक्यस्स सुद्धोदनमहाराजस्स पुत्तो **सक्यपुत्तो**। इमिना च उदितोदितविपुलखत्तियकुलविभावनतो वुत्तं "**इदं पन भगवतो उच्चाकुलपरिदीपनं**" ति। सब्बखत्तियानञ्हि आदिभूतमहासम्मतमहाराजतो पट्ठाय असम्भिन्नं उळारतमं सक्यराजकुलं। **केनचि पारिजुञ्ञेन अनभिभूतो** ति ञातिपारिजुञ्ञभोगपारिजुञ्ञादिना केनचि पारिजुञ्ञेन परिहानिया अनभिभूतो अनज्झोत्थटो। तथा हि लोकनाथस्स अभिजातियं तस्स कुलस्स न किञ्चि पारिजुञ्ञं, अथ खो वड्ढियेव। अभिनिक्खमने च ततो समिद्धतमभावो लोके पाकटो पञ्ञातो। तेन "**सक्यकुला पब्बजितो**" ति इदं वचनं भगवतो सद्धापब्बजितभावपरिदीपनत्थं[1] वुत्तं महन्तं ञातिपरिवट्टं महन्तञ्च भोगक्खन्धं पहाय पब्बजितभावसिद्धितो। **ततो परं** ति "वेरञ्जायं विहरती" ति आदि।

इत्थम्भूताख्यानत्थे उपयोगवचनं ति इत्थं इमं पकारं भूतो आपन्नो ति इत्थम्भूतो, तस्स आख्यानं इत्थम्भूताख्यानं, सोयेव अत्थो इत्थम्भूताख्यानत्थो। अथ वा इत्थं एवं पकारो भूतो जातो ति एवं कथनत्थो इत्थम्भूताख्यानत्थो, तस्मिं उपयोगवचनं ति अत्थो। एत्थ च **अब्भुग्गतो** ति एत्थ अभि-सद्दो इत्थम्भूताख्यानत्थजोतको अभिभवित्वा उग्गमनप्पकारस्स दीपनतो। तेन योगतो "तं खो पन भवन्तं गोतमं" ति इदं उपयोगवचनं सामिअत्थे पि समानं इत्थम्भूताख्यानदीपनतो "इत्थम्भूताख्यानत्थे" ति वुत्तं। तेनेवाह "**तस्स खो पन भोतो गोतमस्सा ति अत्थो** ति। इदं वुत्तं होति—यथा "साधु देवदत्तो मातरमही" ति एत्थ अभिसद्दयोगतो इत्थम्भूताख्याने उपयोगवचनं कतं, एवमिधा पि तं खो पन भवन्तं गोतमं अभि एवं कल्याणो कित्ति-
B 215 सद्दो उग्गतो ति अभिसद्दयोगतो इत्थम्भूताख्याने उपयोगवचनं ति। "साधु देवदत्तो मातरमही" ति एत्थ हि "देवदत्तो मातरमहि मातरि विसये मातुया वा साधू" ति एवं अधिकरणत्थे सामिअत्थे वा भुम्मवचनस्स वा सामिवचनस्स वा पसङ्गे इत्थभूताख्यानत्थजोतकेन अभिसद्देन योगे उपयोगवचनं कतं। यथा चेत्थ "देवदत्तो मातु विसये मातुसम्बन्धी वा साधुत्तप्पकारप्पत्तो" ति अयमत्थो विञ्ञायति, एवमिधा पि "भोतो गोतमस्स सम्बन्धी कित्तिसद्दो अब्भुग्गतो अभिभवित्वा उग्गमनप्पकारप्पत्तो" ति अयमत्थो विञ्ञायति। तत्थ हि देवदत्तग्गहणं विय इध कित्तिसद्दग्गहणं, तथा तत्थ "मातरं" ति वचनं विय इध "तं खो पन भवन्तं गोतमं" ति वचनं, तत्थ साधुसद्दग्गहणं विय इध उग्गतसद्दग्गहणं वेदितब्बं।

---

१. सद्धापब्बजितभावपरिदीपनं (स्या०, क०)

कल्याणो ति भद्दको। कल्याणभावो चस्स कल्याणगुणविसयताया ति आह "**कल्याणगुणसमन्नागतो**" ति, कल्याणेहि गुणेहि समन्नागतो तंविसयताय युत्तो ति अत्थो। तं विसयता हेत्थ समन्नागमो कल्याणगुणविसयताय तन्निस्सितो ति अधिप्पायो। **सेट्ठो** ति एत्थापि एसेव नयो। सेट्ठगुणविसयताय एव हि कित्तिसद्दस्स सेट्ठता "भगवा ति वचनं सेट्ठं" ति आदीसु विय। "भगवा अरहं" ति आदिना गुणानं संकित्तनतो सद्दनीयतो च कित्तिसद्दो वण्णो ति आह "**कित्तिसद्दो ति कित्ति एवा**" ति। वण्णोयेव हि कित्तेतब्बतो कित्तिसद्दनीयतो सद्दो ति वुच्चति। कित्तिपरियायो हि सद्दसद्दो यथा "उळारसद्दा इसयो, गुणवन्तो तपस्सिनो"। अभित्थवनवसेन पवत्तो सद्दो थुतिघोसो, अभित्थवुदाहारो।

"अब्भुग्गतो" ति पन एतस्स अत्थो अट्ठकथायं न दस्सितो, तस्मा तस्सत्थो एवं वेदितब्बो—**अब्भुग्गतो** ति अभिभवित्वा उग्गतो, अनञ्ञसाधारणगुणे आरब्भ पवत्तत्ता सदेवकं लोकं अज्झोत्थरित्वा पवत्तो ति वुत्तं होति। किन्ति सद्दो अब्भुग्गतो ति आह "**इतिपि सो भगवा**" ति आदि। इतो परं पन ईदिसेसु ठानेसु यत्थ यत्थ पाळिपाठस्स अत्थो वत्तब्बो सिया, तत्थ तत्थ "पाळियं पना" ति वत्वा अत्थं दस्सयिस्साम, इदानि तत्थ पदयोजनापुब्बकं अत्थं दस्सेन्तो आह "**इति पि सो भगवा ति आदीसु पन अयं ताव योजना**" ति आदि। **सो भगवा** ति यो सो समतिंस पारमियो पूरेत्वा सब्बकिलेसे भञ्जित्वा अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो देवानं अतिदेवो सक्कानं अतिसक्को ब्रह्मानं अतिब्रह्मा लोकनाथो भाग्यवन्ततादीहि कारणेहि भगवा ति लद्धनामो, सो भगवा। भगवा ति हि इदं सत्थु नामकित्तनं। तेनाह आयस्मा धम्मसेनापति" भगवा ति नेतं नामं मातरा कतं" ति आदि[1]। परतो पन भगवा ति गुणकित्तनमेव। यथा कम्मट्ठानिकेन "अरहं" ति आदीसु नवसु ठानेसु पच्चेकं इति पि सद्दं योजेत्वा बुद्धगुणा अनुस्सरीयन्ति, एवं बुद्धगुणसंकित्तकेनपी ति दस्सेन्तो "**इति पि अरहं इति पि सम्मासम्बुद्धो····पे०····इति पि भगवा**" ति आह। एवञ्हि सति "अरहं" ति आदीहि नवहि पदेहि ये सदेवके लोके अतिविय पाकटा पञ्ञाता बुद्धगुणा, ते नानप्पकारतो विभाविता होन्ति। "इतिपेतं भूतं, इतिपेतं तच्छं" ति आदीसु[2] विय हि इध **इति**-सद्दो आसन्नपच्चक्खकारणत्थो, **पि**-सद्दो सम्पिण्डनत्थो, तेन च तेसं गुणानं बहुभावो दीपितो, तानि च गुणसल्लक्खणकारणानि सद्धासम्पन्नानं विञ्ञुजातिकानं पच्चक्खानि होन्ती- ति तानि संकित्तेन्तेन विञ्ञुना चित्तस्स सम्मुखीभूतानेव कत्वा संकित्तेतब्बानी ति दस्सेन्तो "**इमिना च इमिना च कारणेना ति वुत्तं होती**" ति आह। B 216

"सुत्तन्तिकानं वचनानमत्थं, सुत्तानुरूपं परिदीपयन्ती" ति हेट्ठा वुत्तत्ता **विसुद्धिमग्गे**[3] सब्बाकारतो संवण्णितम्पि अत्थं इधापि वित्थारेत्वा दस्सेतुकामो तत्थ पयोजनमाह "**इदानि विनयधरानं**" ति आदि। तत्थ **चित्तसम्पहंसनत्थं** चित्तसन्तोसनत्थं,

---

१. खु०—७–१६२, विसुद्धि १-१९२ पिट्ठे। २. दी० १, ३ पिट्ठे।
३. विसुद्धि १-१९२ पिट्ठे।

चित्तप्पसादजननत्थं ति वुत्तं होति। "आरकत्ता" ति आदीसु **आरकत्ता** ति सुवि-
दूरत्ता। **अरीनं** ति किलेसारीनं। **अरानं** ति संसारचक्कस्स अरानं। **हतत्ता** ति विद्धंसि-
तत्ता। **पच्चयादीनं** ति चीवरादिपच्चयानञ्चेव पूजाविसेसानञ्च।

इदानि यथावुत्तमेवत्थं विभावेन्तो आह "**आरका हि सो**" ति आदि। दूरता
नाम आसन्नता विय उपादायुपादाय वुच्चती ति परमुक्कंसगतं दूरभावं दस्सेन्तो
"**सुविदूरविदूरे ठितो**" ति आह, सुट्ठुविदूरभावेनेव विदूरे ठितो ति अत्थो। सो
B 217 पनस्स किलेसेहि दूरे ठितभावो, न पदेसवसेन, अथ खो तेसं सब्बसो पहीनत्ता ति
दस्सेन्तो आह "**मग्गेन किलेसानं विद्धंसितत्ता**" ति। ननु अञ्ञेसम्पि खीणासवानं ते
पहीना एवा ति अनुयोगं मनसि कत्वा वुत्तं "**सवासनानं**" ति। न हि ठपेत्वा भगवन्तं
अञ्ञे सह वासनाय किलेसे पहातुं सक्कोन्ति। एतेन अञ्ञे ति असाधारणं भगवतो
अरहत्तं ति दस्सितं होति। का पनायं वासना नाम? पहीनकिलेसस्स पि अप्पहीन-
किलेसस्स पयोगसदिसपयोगहेतुभूतो किलेसनिस्सितो[१] सामत्थियविसेसो आयस्मतो
पिलिन्दवच्छस्स वसलसमुदाचारनिमित्तं विय। कथं पन "आरका" ति वुत्ते "किले-
सेही" ति अयमत्थो लब्भती ति सामञ्ञचोदनाय विसेसे अवट्ठानतो विसेसत्थिना च
विसेसस्स अनुपयुज्जितब्बतो "आरकास्स होन्ति पापका अकुसला धम्मा" ति आदीनि[२]
सुत्तपदानेत्थ उदाहरितब्बानि। **आरका** ति चेत्थ **आकारस्स** रस्सत्तं, **ककारस्स** च
हकारं सानुसारं कत्वा निरुत्तिनयेन "अरहं" ति पदसिद्धि वेदितब्बा। यथा-
वुत्तस्सेवत्थस्स सुखग्गहणत्थं इदमेत्थ वुच्चति—

"सो ततो आरका नाम, यस्स येनासमङ्गिता।
असमङ्गी च दोसेहि, नाथो तेनारहं मतो" ति[३]॥

अनत्थचरणेन किलेसा एव अरयो ति **किलेसारयो**। अरीनं हतत्ता अरिहा ति
वत्तब्बे निरुत्तिनयेन "अरहं" ति वुत्तं। एत्थापि यथावुत्तस्सत्थस्स सुखग्गहणत्थं इदं
वेदितब्बं—

"यस्मा रागादिसङ्खाता, सब्बेपि अरयो हता।
पञ्ञासत्थेन नाथेन, तस्मापि अरहं मतो" ति॥

यञ्चेतं संसारचक्कं ति सम्बन्धो। रथचक्कस्स नाभि विय मूलावयवभूतं अन्तो
बहि च समवट्ठितं अविज्जाभवतण्हाद्वयं ति वुत्तं "**अविज्जाभवतण्हामयनाभी**" ति।
नाभिया नेमिया च सम्बद्धअरसदिसा पच्चयफलभूतेहि अविज्जातण्हाजरामरणेहि सम्बद्धा
पुञ्ञाभिसङ्खार अपुञ्ञाभिसङ्खार आनेञ्जाभिसङ्खारा ति वुत्तं '**पुञ्ञादि अभि-
सङ्खारारं**" ति। तत्थ तत्थ भवे परियन्तभावेन पाकटं जरामरणं ति तं नेमिट्ठानियं
B 218 कत्वा आह "**जरामरणनेमी**" ति। यथा रथचक्कप्पवत्तिया पधानकारणं अक्खो, एवं

१. किलेसनिहितो (स्या०)
२. म० १-३४८ पिट्ठे।
३. विसुद्धि १-१९२ पिट्ठेपि।

संसारचक्कप्पवत्तिया आसवसमुदयो ति आह "**आसवसमुदयमयेन अक्खेन विज्झित्वा**" ति। आसवा एव अविज्जादीनं कारणत्ता आसवसमुदयो। यथाह "आसवसमुदया अविज्जासमुदयो"ति[१]। विपाककटत्तारूपप्पभेदो कामभवादिको तिभवो एव रथो, तस्मिं **तिभवरथे**। अत्तनो पच्चयेहि समं, सब्बसो वा आदितो पट्ठाय योजितं ति **समायोजितं**। आदिरहितं कालं पवत्तती ति कत्वा **अनादिकालप्पवत्तं**।

"खन्धानञ्च पटिपाटि, धातुआयतनान च।
अब्बोच्छिन्नं वत्तमाना, संसारो ति पवुच्चती" ति[२]॥

एवं वुत्तसंसारोव **संसारचक्कं**। **अनेना** ति भगवता। **बोधिमण्डे** ति बोधिसङ्खातस्स ञाणस्स मण्डभावप्पत्ते ठाने काले वा। **बोधी ति** पञ्ञा, सा एत्थ मण्डा पसन्ना जाता ति **बोधिमण्डो**। **वीरियपादेहि** ति संकिलेसवोदानपक्खियेसु सन्निरुम्भनसन्निक्खिपनकिच्चताय द्विधा पवत्तेति अत्तनो वीरियसङ्खातेहि पादेहि। **सीलपथवियं** ति पतिट्ठानट्ठेन सीलमेव पथवी, तस्सं। **पतिट्ठाया** ति सम्पादनवसेन पतिट्ठहित्वा। **सद्धाहत्थेना** ति अनवज्जधम्मादानसाधनतो सद्धाव हत्थो, तेन। **कम्मक्खयकरं** ति कायकम्मादिभेदस्स सब्बस्सपि कम्मस्स खयकरणतो कम्मक्खयकरं। **ञाणफरसुं** ति समाधिसिलायं सुनिसितं मग्गञाणफरसुं गहेत्वा।

एवं "अरानं हतत्ता" ति एत्थ वुत्तं अरसङ्खातं संसारं चक्कं विय चक्कं ति गहेत्वा अत्थयोजनं कत्वा इदानि पटिच्चसमुप्पाददेसनाक्कमेन पि तं दस्सेतुं "**अथ वा**" ति आदि वुत्तं। तत्थ **अनमतग्गसंसारवट्टं** ति अनु अनु अमतग्गं अविञ्ञातपुब्बकोटिकं संसारमण्डलं। **सेसा दस धम्मा** ति सङ्खारादयो जातिपरियोसाना दस धम्मा। कथं तेसं सङ्खारादीनं अरभावो ति आह "**अविज्जा मूलकत्ता जरामरणपरियन्तत्ता चा**" ति। तत्थ अविज्जा मूलं पधानकारणं येसं सङ्खारादीनं ते अविज्जामूलका, तेसं भावो **अविज्जामूलकत्तं**। जरामरणं परियन्तं परियोसानभूतं एतेसन्ति जरामरणपरियन्ता, B 219
सङ्खारादयो दस धम्मा। तेसं भावो **जरामरणपरियन्तत्तं**। सङ्खारादिजातिपरियोसानानं दसधम्मानं अविज्जामूलकत्ता जरामरणपरियोसानत्ता चा ति अत्थो, नाभिभूताय अविज्जाय मूलतो नेमिभूतेन जरामरणेन अन्ततो सङ्खारादीनं सम्बन्धत्ता ति अधिप्पायो।

दुक्खादीसू ति दुक्खसमुदयनिरोधमग्गेसु। **अञ्ञाणं** ति ञाणप्पटिपक्खत्ता मोहो अञ्ञाणं, न पन ञाणतो अञ्ञं, नपि ञाणस्स अभावमत्तं। तत्थ दुक्खादीसु अञ्ञाणं यथासभावप्पटिवेधाप्पदानतो तप्पटिच्छादनवसेनेव। एत्थ हि किञ्चापि ठपेत्वा लोकुत्तरसच्चद्वयं सेसट्ठानेसु आरम्मणवसेनपि अविज्जा उप्पज्जति, एवं सन्तेपि पटि-

१. म० १-६७ पिट्ठे।
२. विसुद्धि० २-१७६, दी०-ट्ठ २-८६, सं० ट्ठ-२-८९, अं-ट्ठ २-३८६ पिट्ठादीसु।

च्छादनवसेनेव इध अधिप्पेता। सा हि उप्पन्ना दुक्खसच्चं पटिच्छादेत्वा तिट्ठति, याथावसरसलक्खणं पटिविज्झितुं न देति, तथा समुदयं निरोधं मग्गं ति।

दुक्खं ति चेत्थ दुक्खं अरियसच्चं अधिप्पेतं ति तं कामभवादिवसेन तिधा भिन्दित्वा तथा तप्पटिच्छादिकञ्च अविज्जं तिधा कत्वा अविज्जादिपच्चये तीसु भवेसु सङ्खारादिके पटिपाटिया दस्सेन्तो "**कामभवे च अविज्जा**" ति आदिमाह। तत्थ **कामभवे च अविज्जा** ति कामभवे आदीनवपटिच्छादिका अविज्जा। **रूपभवे अविज्जा अरूपभवे अविज्जा** ति एत्थापि एसेव नयो। **कामभवे सङ्खारानं** ति कामभूमिपरियापन्नानं पुञ्ञापुञ्ञसङ्खारानं, कामभवे वा निप्फादेतब्बा[1] ये पुञ्ञापुञ्ञसङ्खारा, तेसं कामभवूपपत्तिनिब्बत्तकसङ्खारानं ति अत्थो। **सङ्खारा** ति चेत्थ लोकियकुसलाकुसलचेतना वेदितब्बा। पच्चयो होती ति पुञ्ञाभिसङ्खारानं ताव आरम्मणपच्चयेन चेव उपनिस्सयपच्चयेन चाति द्विधा पच्चयो होति, अपुञ्ञाभिसङ्खारेसु सहजातस्स सहजातादिवसेन, असहजातस्स अनन्तरसमनन्तरादिवसेन, अनानन्तरस्स पन आरम्मणवसेन चेव उपनिस्सयवसेन च पच्चयो होति। **अरूपभवे सङ्खारानं** ति आनेञ्जाभिसङ्खारानं। **पच्चयो होती** ति उपनिस्सयपच्चयवसेनेव। इमस्मिञ्च पनत्थे एत्थ वित्थारियमाने अतिप्पपञ्चो होति, तस्मा तं नयिध वित्थारयिस्साम। **इतरेसू** ति रूपारूपभवेसु।

B 220 **तिण्णं आयतनानं** ति चक्खुसोतमनायतनानं घानादित्तयस्स तत्थ असम्भवतो। **एकस्सा** ति मनायतनस्स इतरेसं तत्थ असम्भवतो। इमिना नयेन **तिण्णं फस्सानं** ति आदीसु पि अत्थो वेदितब्बो। **छब्बिधस्स फस्सस्सा** ति चक्खुसम्फस्ससोतसम्फस्सघानसम्फस्सजिव्हासम्फस्सकायसम्फस्समनोसम्फस्सानं वसेन छब्बिधस्स फस्सस्स। **छन्नं वेदनानं** ति चक्खुसम्फस्सजा वेदना, तथा सोतसम्फस्सजा घानसम्फस्सजाजिव्हासम्फस्सजा कायसम्फस्सजा मनोसम्फस्सजा वेदना ति इमासं छन्नं वेदनानं। **छन्नं तण्हाकायानं** ति रूपतण्हा, सद्दतण्हा, गन्धतण्हा, रसतण्हा, फोट्ठब्बतण्हा, धम्मतण्हा ति इमेसं छन्नं तण्हाकायानं। **तत्थ तत्थ सा सा तण्हा** ति रूपतण्हादिभेदा तत्थ तत्थ कामभवादीसु उप्पज्जनकतण्हा।

सा तण्हादिमूलिका कथा अतिसंखित्ता ति तं उपादानभवे च विभजित्वा वित्थारेत्वा दस्सेतुं "**कथं**" ति आदि वुत्तं। तत्थ **कामे परिभुञ्जिस्सामी** ति इमिना कामतण्हापवत्तिमाह, तथा **सग्गसम्पत्तिं अनुभविस्सामी** ति आदीहि। सा पन तण्हा यस्मा भुसमादानवसेन पवत्तमाना कामुपादानं नाम होति, तस्मा वुत्तं "**कामुपादानपच्चया**" ति। **तथेवा** ति कामुपादानपच्चया एव। **ब्रह्मलोकसम्पत्ती** ति रूपीब्रह्मलोके सम्पत्ति। "सब्बे पि तेभूमका धम्मा कामनीयट्ठेन कामा" ति वचनतो भवरागो पि कामुपादानमेवा ति कत्वा "**कामुपादानपच्चया एव मेत्तं भावेती**" ति आदि वुत्तं। तत्थ

---

१. निप्फादेतब्बे (सी०, क०)

मेत्तं भावेती ति मिज्जति सिनिय्हती ति मेत्ता, तं भावेति वड्ढेती ति अत्थो। अथ वा मेत्ता एतस्स अत्थी ति मेत्तं, चित्तं, तं सम्पयुत्तं झानं वा, तं भावेति वड्ढेति उप्पादेति वा ति अत्थो। करुणं भावेती ति आदीसु पि इमिनाव नयेन अत्थो वेदितब्बो।

सेसुपादानमूलिकासुपी ति दिट्ठुपादानसीलब्बतुपादानअत्तवादुपादानमूलिकासुपि योजनासु एसेव नयो ति अत्थो। तत्थायं योजना—इधेकच्चो "नत्थि परलोको" ति नत्थिकदिट्ठिं गण्हाति, सो दिट्ठुपादानपच्चया कायेन दुच्चरितं चरती ति आदि वुत्तनयेन योजेतब्बं। अपरो "असुकस्मि सम्पत्तिभवे अत्ता उच्छिज्जती" ति उच्छेददिट्ठिं गण्हाति, सो तत्रूपपत्तिया कायेन सुचरितं चरती ति आदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। अपरो "रूपी मनोमयो हुत्वा अत्ता उच्छिज्जती" ति रूपूपत्तिया मग्गं भावेति भावनापारि- B 221
पूरिया ति सब्बं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। अपरो पि "अरूपभवे उप्पज्जित्वा अत्ता उच्छिज्जती" ति अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति भावनापारिपूरिया ति सब्बं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। एताहियेव अत्तवादुपादानमूलिका पि योजना संवण्णिता ति दट्ठब्बं। एवं दिट्ठधम्मनिब्बानवादवसेनपि योजना वेदितब्बा। अपरो "सीलेन सुद्धि, वतेन सुद्धी" ति असुद्धिमग्गं "सुद्धिमग्गो" ति परामसन्तो सीलब्बतुपादानपच्चया कायेन दुच्चरितं चरती ति आदि सब्बं वुत्तनयेनेव योजेतब्बं।

इदानि य्वायं संसारचक्कं दस्सेन्तेन "कामभवे अविज्जा कामभवे सङ्खारानं पच्चयो होती" ति आदिना अविज्जादीनं पच्चयभावो सङ्खारादीनं पच्चयुप्पन्नभावो च दस्सितो, तमेव **पटिसम्भिदामग्गपाळिं** आनेत्वा निगमनवसेन दस्सेन्तो "एवमयं" ति आदिमाह। तत्थ यथा सङ्खारा हेतुनिब्बत्ता, एवं अविज्जा पि कामासवादिना सहेतुका एवा ति आह "**उभोपेते हेतुसमुप्पन्ना**" ति। **पच्चयपरिग्गहे** ति नामरूपस्स पच्चयानं अविज्जादीनं परिच्छिज्ज गहणे। निप्फादेतब्बे भुम्मं। **पञ्ञा** ति कङ्खावितरणविसुद्धि-सङ्खाता पकारतो जानना। **धम्मट्ठितिञाणं** ति तिट्ठन्ति एत्थ फलधम्मा तदायत्तवुत्तिताया ति ठिति, कारणं, धम्मानं ठिति धम्मट्ठिति, धम्मट्ठितिया ञाणं धम्मट्ठितिञाणं, पच्चय-ञाणं ति अत्थो, पटिच्चसमुप्पादावबोधो ति वुत्तं होति। कामञ्चेत्थ पच्चयपरिग्गहे पञ्ञायेव धम्मट्ठितिञाणं, सङ्खारेसु पन अदिट्ठेसु अविज्जाय सङ्खारानं पच्चयभावो न सक्का दट्ठुं ति "**सङ्खारा हेतुसमुप्पन्ना**" ति पच्चयुप्पन्नधम्मानम्पि गहणं कतं ति वेदितब्बं। **उभोपेते हेतुसमुप्पन्ना** ति इदं पन उभिन्नम्पि पच्चयुप्पन्नभावं दस्सेतुकाम-ताय वुत्तं। इदञ्च धम्मट्ठितिञाणं यस्मा अद्धत्तये कङ्खामलवितरणवसेन पवत्तति, तस्मा "**अतीतम्पि अद्धानं**" ति आदि वुत्तं। **एतेन नयेन सब्बपदानि वित्थारेतब्बानी** ति एतेन नयेन "अविज्जा हेतू" ति आदिना अविज्जायं वुत्तनयेन "सङ्खारा हेतु, विञ्ञाणं हेतुसमुप्पन्नं" ति आदिना सब्बपदानि वित्थारेतब्बानि।

संखिप्पन्ति एत्थ अविज्जादयो विञ्ञाणादयो चाति **सङ्खेपो**, हेतु विपाको च[1]। अथ वा हेतुविपाको ति संखिप्पती ति सङ्खेपो, अविज्जादयो विञ्ञाणादयो च।

---

१. हेतुविपाकोव (सी०)

B 222 सङ्खेपभावसामञ्ञेन पन एकवचनं कतं ति दट्ठब्बं। ते पन सङ्खेपा अतीते हेतु, एतरहि विपाको, एतरहि हेतु, आयतिं विपाको ति एवं कालविभागेन चत्तारो जाता, तेनाह **"पुरिमसङ्खेपो चेत्थ अतीतो अद्धा"** ति आदि। पच्चुप्पन्नो अद्धा ति सम्बन्धो। **तण्हुपादानभवा गहिताव होन्ती** ति एत्थ अविज्जागहणेन किलेसभावसामञ्ञतो तण्हुपादाना गहिता, सङ्खारग्गहणेन कम्मभावसामञ्ञतो भवो गहितो, अविज्जासङ्खारानं तेहि विना सकिच्चाकरणतो च तण्हुपादानभवा गहिताव होन्ति। अथ वा अविद्वा परितस्सति, परितसितो उपादियति, तस्सुपादानपच्चया भवो, तस्मा तण्हुपादानभवा पि गहिता होन्ति। तथा च वुत्तं—

"पुरिमकम्मभवस्मिं मोहो अविज्जा, आयूहना सङ्खारा। निकन्ति तण्हा, उपगमनं उपादानं, चेतना भवो, इति इमे पञ्चधम्मा पुरिमकम्मभवस्मिं इध पटिसन्धिया पच्चया" ति[१]।

तत्थ[२] **पुरिमकम्मभवस्मिं** ति पुरिमे कम्मभवे, अतीतजातियं कम्मभवे करियमाने ति अत्थो। **मोहो अविज्जा** ति यो तदा दुक्खादीसु मोहो येन मूळ्हो कम्मं करोति, सा अविज्जा। **आयूहना सङ्खारा** ति तं कम्मं करोतो या पुरिमचेतनायो, यथा "दानं दस्सामी" ति चित्तं उप्पादेत्वा मासम्पि संवच्छरम्पि दानूपकरणानि सज्जेन्तस्स उप्पन्ना पुरिमचेतनायो, पटिग्गाहकानं पन हत्थे दक्खिणं पतिट्ठापयतो चेतना भवो ति वुच्चति। एकावज्जनेसु वा छसु जवनेसु चेतना आयूहनसङ्खारा नाम, सत्तमा भवो। या काचि वा पन चेतना भवो, सम्पयुत्ता आयूहनसङ्खारा नाम। **निकन्ति तण्हा** ति या कम्मं करोन्तस्स तस्स फले उपपत्तिभवे निकामना पत्थना, सा तण्हा नाम। **उपगमनं उपादानं** ति यं कम्मभवस्स पच्चयभूतं "इदं कत्वा असुकस्मिं नाम ठाने कामे सेविस्सामि उच्छिज्जिस्सामी" ति आदिना नयेन पवत्तं उपगमनं गहणं परामसनं, इदं उपादानं नाम। **चेतना भवो** ति "तं कम्मं करोतो या पुरिमा चेतनायो" ति आदिना हेट्ठा वुत्तेसु तीसु अत्थविकप्पेसु या चेतना भवो ति वुत्ता, सा चेतना भवो ति एवमत्थो वेदितब्बो।

B 223 इदानि सब्बेपेते अविज्जादयो धम्मे द्वीहि वट्टेहि सङ्गहेत्वा दस्सेतुकामो आह **इमे पञ्च धम्मा अतीते कम्मवट्टं** ति। एत्थ च निप्परियायतो सङ्खारा भवो च कम्मं, अविज्जादयो पन कम्मसहायताय कम्मसरिक्खका तदुपकारका चाति कम्मं ति वुत्ता। अविज्जादयो हि विपाकधम्मधम्मताय कम्मसरिक्खका सहजातकोटिया उपनिस्सयकोटिया च कम्मस्स च उपकारका। कम्ममेव च अञ्ञमञ्ञसम्बन्धं हुत्वा पुनप्पुनं परिवत्तनट्ठेन कम्मवट्टं। **विञ्ञाणादयो पञ्चा** ति विञ्ञाणादयो वेदनापरियन्ता पञ्च एतरहि इदानि इमस्मिं अत्तभावे ति वुत्तं होति। **अविज्जासंखारा गहिताव होन्ती** ति एत्थापि पुब्बे विय किलेसकम्मभावसामञ्ञतो तण्हुपादानग्गहणेन अविज्जा गहिता,

---

१. खु० ९-५० पिट्ठे।

२. अभि-ट्ठ २-१८२, पटिसं-ट्ठ १-२२३ पिट्ठेसु पि पस्सितब्बं।

भवग्गहणेन सङ्खारा गहिता ति दट्ठब्बं । अथ वा भवे गहिते तस्स पुब्बभागा तंसम्पयुत्ता वा सङ्खारा गहिताव होन्ति, तण्हुपादानग्गहणेन च तंसम्पयुत्ता याय वा मूळ्हो कम्मं करोति, सा अविज्जाव होती ति तण्हुपादानभवग्गहणेन अविज्जासङ्खारा गहिताव होन्ति । तेनेव वुत्तं—

"इध परिपक्कत्ता आयतनानं मोहो अविज्जा, आयूहना सङ्खारा, निकन्ति तण्हा, उपगमनं उपादानं, चेतना भवो, इति इमे पञ्च धम्मा इध कम्मभवस्मिं आयतिं पटिसन्धिया पच्चया" ति[१] ।

तत्थ **इध परिपक्कत्ता आयतनानं** ति परिपक्कायतनस्स कम्मकरणकाले सम्मोहो दस्सितो । सेसं हेट्ठा वुत्तनयमेव ।

विञ्ञाणनामरूपसळायतनफस्सवेदनानं जातिजराभङ्गावत्था जातिजरामरणं ति वुत्ता ति अवत्थानं गहणेन अवत्थावन्ता गहिताव होन्ति तदविनाभावतो ति आह **"जातिजरामरणापदेसेन विञ्ञाणादीनं निद्दिट्ठत्ता"** ति । **अपदेसेना** ति जातिजरामरणानं कथनेन । **इमे** ति विञ्ञाणादयो । **आयतिं विपाकवट्टं** ति पच्चुप्पनहेतुतो भावीनं अनागतानं गहितत्ता । **ते** ति अविज्जादयो । **आकारतो** ति सरूपतो अवुत्तापि तस्मिं तस्मिं सङ्गहे आकिरीयन्ति अविज्जासङ्खारादिग्गहणेहि पकासीयन्तीति आकारा, अतीत हेतुआदीनं वा पकारा आकारा । ततो आकारतो । **वीसतिविधा होन्ती** ति अतीते हेतु- B 224
पञ्चकादिभेदतो वीसतिविधा होन्ति ।

सङ्खारविञ्ञाणानं चेत्थ अन्तरा एको सन्धी ति हेतुतो फलस्स अविच्छेदप्पवत्तिभावतो हेतुफलस्स सम्बन्धभूतो एको सन्धि, तथा भवजातीनमन्तरा । वेदनातण्हानमन्तरा पन फलतो हेतुना अविच्छेदप्पवत्तिभावतो फलहेतुसम्बन्धभूतो एको सन्धि । फलभूतो पि हि धम्मो अञ्ञस्स हेतुसभावस्स धम्मस्स पच्चयो होती ति ।

इती ति वुत्तप्पकारपरामसनं । तेनाह "चतुसङ्खेप"ति आदि । **सब्बाकारतो** ति इध वुत्तेहि च अवुत्तेहि च पटिच्चसमुप्पादविभङ्गे अनन्तनयसमन्तपट्ठानादीसु च आगतेहि सब्बेहि आकारेहि । **जानाती** ति अवबुज्झति । **पस्सती** ति दस्सनभूतेन ञाणचक्खुना पच्चक्खतो पस्सति । **अञ्ञाति पटिविज्झती** ति तेसंयेव वेवचनं । तं ति तं जाननं । **ञातट्ठेना** ति यथासभावतो जाननट्ठेन । **पजाननट्ठेना** ति अनिच्चादीहि पकारेहि पटिविज्झनट्ठेन ।

इदानि यदत्थमिदं भवचक्कं इधानीतं,[२] तं दस्सेतुं **"इमिना"** ति आदि वुत्तं । तत्थ ते धम्मे ति ते अविज्जादिके धम्मे । **यथाभूतं ञत्वा** ति महावजिरञाणेन याथावतो

१. खु० ९-५० पिट्ठे ।
२. भवचक्कं इदानि तं (सब्बत्थ) विसुद्धिमग्गटीकायं छ अनुस्सतिनिद्देसे बुद्धानुस्सतिकथावण्णनायं पस्सितब्बं ।

जानित्वा। **निब्बिन्दन्तो** ति बलवविपस्सनाय निब्बिन्दन्तो। **विरज्जन्तो विमुच्चन्तो** ति अरियमग्गेहि विरज्जन्तो विमुच्चन्तो। अरे हनी ति सम्बन्धो। तत्थ यदा भगवा विरज्जति विमुच्चति, तदा अरे हनति नाम। ततो परं पन अभिसम्बुद्धक्खणं गहेत्वा वुत्तं "हनि विहनि विद्धंसेसी" ति। **एवम्पि अरानं हतत्ता अरहं** ति एवं इमिना पि पकारेन यथावुत्तसंसारचक्कस्स सङ्खारादि अरानं हतत्ता अरहं। एत्थेदं वुच्चति—

"अरा संसारचक्कस्स, हता ञाणासिना यतो।
लोकनाथेन तेनेस, **अरहं** ति पवुच्चती" ति[1]॥

अग्गदक्खिणेय्यत्ता ति उत्तमदक्खिणेय्यभावतो। चक्कवत्तिनो अचेतने चक्करतने उप्पन्ने तत्थेव लोको पूजं करोति, अञ्ञत्थ पूजाविसेसा पच्छिज्जन्ति, किमङ्गं पन
B 225 सम्मासम्बुद्धे उप्पन्ने ति दस्सेन्तो "**उप्पन्ने तथागते**" ति आदिमाह। एकेकं धम्मक्खन्धं एकेकविहारेन पूजेस्सामी" ति वुत्तेपि सत्थारंयेव उद्दिस्स कतत्ता "भगवन्तं उद्दिस्सा" ति आदि वुत्तं। **को पन वादो अञ्ञेसं पूजाविसेसानं** ति यथावुत्ततो अञ्ञेसं अमहेसक्खेहि देवमनुस्सेहि करियमानानं नातिउळारानं पूजाविसेसानं अरहभावे का नाम कथा। **पच्चयादीनं अरहत्तापि अरहं** ति यथावुत्तचीवरादिपच्चयानं पूजाविसेस्स च अग्गदक्खिणेय्यभावेन अनुच्छविकत्ता पि अरहं। इमस्सपि अत्थस्स सुखग्गहणत्थं इदं वुच्चति—

पूजाविसेसं सह पच्चयेहि,
यस्मा अयं अरहति लोकनाथो।
अत्थानुरूपं **अरहं** ति लोके,
तस्मा जिनो अरहति नाममेतं" ति[2]।

असिलोकभयेना ति अकित्तिभयेन, अयसभयेन गरहाभयेना ति वुत्तं होति। **रहो पापं करोन्ती** ति "मा नं कोचि जञ्ञा" ति रहसि पापं करोन्ति। **एवमेव न कदाचि करोती** ति एस भगवा पापहेतूनं बोधिमण्डेयेव सुप्पहीनत्ता कदाचि पि एवं न करोति। होति चेत्थ—

"यस्मा नत्थि रहो नाम, पापकम्मेसु तादिनो।
रहाभावेन तेनेस, **अरहं** इति विस्सुतो" ति[3]।

इदानि सुखग्गहणत्थं यथावुत्तमत्थं सब्बम्पि सङ्गहेत्वा दस्सेन्तो आह "**होति चेत्था**" ति आदि। **किलेसारीन सो मुनी** ति एत्थ गाथाबन्धसुखत्थं निग्गहीतलोपो दट्ठब्बो, किलेसारीनं हतत्ता ति अत्थो। **पच्चयादीन चारहो** ति एत्थापि निग्गहीतलोपो वुत्तनयेनेव दट्ठब्बो।

---

१. विसुद्धि १-१९४ पिट्ठेपि। २. विसुद्धि-१-१९५ पिट्ठेपि।
३. विसुद्धि-१-४२० पिट्ठे।

अरहं ति एत्थ अयमपरो पि नयो दट्ठब्बो—आरका ति **अरहं**, सुविदूरभावतो इच्चेव अत्थो। कुतो पन सुविदूरभावतो ति? ये अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा, ततो एव अप्पहीनरागदोसमोहा अरियधम्मस्स अकोविदा अरियधम्मे अविनीता अरियधम्मस्स अदस्साविनो अप्पटिपन्ना मिच्छापटिपन्ना च, ततो सुविदूरभावतो। वुत्तञ्हेतं भगवता—

"सङ्घाटिकण्णे चेपि भिक्खवे भिक्खु गहेत्वा पिट्ठितो पिट्ठितो अनुबन्धो अस्स पादे पादं निक्खिपन्तो, सो च होति अभिज्झालु कामेसु तिब्बसारागो ब्यापन्नचित्तो पदुट्ठमनसङ्कप्पो मुट्ठस्सति असम्पजानो असमाहितो विब्भन्तचित्तो पाकतिन्द्रियो, अथ खो सो आरकाव मय्हं, अहञ्च तस्स। तं किस्स हेतु? धम्मञ्हि सो भिक्खवे भिक्खु न पस्सति, धम्मं अपस्सन्तो न मं पस्सती" ति[1]। B 226

यथावुत्तपुग्गला हि सचे पि सायंपातं सत्थु सन्तिकावचराव सियुं[2], न ते तावता "सत्थु सन्तिका" ति वत्तब्बा, तथा सत्था पि नेसं। इति असप्पुरिसानं आरका दूरे ति अरहं। तेनेदं वुच्चति—

"सम्मा न पटिपज्जन्ति, ये निहीनासया नरा।
आरका तेहि भगवा, दूरे तेनारह मतो" ति[3]॥

तथा आरका ति **अरहं**, आसन्नभावतो ति अत्थो। कुतो पन आसन्नभावतो ति? ये भावितकाया भावितसीला भावितचित्ता भावितपञ्ञा, ततो एव पहीनरागदोसमोहा अरियधम्मस्स कोविदा अरियधम्मे सुविनीता अरियधम्मस्स दस्साविनो सम्मापटिपन्ना, ततो आसन्नभावतो। वुत्तम्पि चेतं भगवता—

"योजनसते चेपि मे भिक्खवे भिक्खु विहरेय्य, सो च होति अनभिज्झालु कामेसु न तिब्बसारागो अब्यापन्नचित्तो अप्पदुट्ठमनसङ्कप्पो उपट्ठितस्सति सम्पजानो समाहितो एकग्गचित्तो संवुतिन्द्रियो, अथ खो सो सन्तिकेव मय्हं, अहञ्च तस्स। तं किस्स हेतु? धम्मञ्हि सो भिक्खवे भिक्खु पस्सति, धम्मं पस्सन्तो मं पस्सती" ति[4]।

तथारूपा हि पुग्गला सत्थु योजनसतन्तरिका पि होन्ति, न तावता ते "सत्थु दूरचारिनो' ति वत्तब्बा, तथा सत्था पि नेसं। इति सप्पुरिसानं आरका आसन्ने ति अरहं। तेनेदं वुच्चति—

"ये सम्मा पटिपज्जन्ति, सुप्पणीताधिमुत्तिका।
आरका[5] तेहि आसन्ने, तेनापि **अरहं** जिनो" ति।

---

१. खु० १-२५६ पिट्ठे। २. सन्तिकावचरा वसिंसु (सी०)
३. विसुद्धि, महा टीका-४२० पिट्ठेपि पस्सितब्बं। ४. खु० १-२४३ पिट्ठे इतिवुत्तके।
५. भगवा (मूलपण्णासके सालेय्यकसुत्तटीकायं)।

B 227 ये इमे रागादयो पापधम्मा यस्मिं सन्ताने उप्पज्जन्ति, तस्स दिट्ठधम्मिकम्पि सम्परायिकम्पि अनत्थं आवहन्ति, निब्बानगामिनिया पटिपदाय एकंसेनेव उजुविपच्चनीकभूता च, ते अत्तहितं परहितञ्च परिपूरेतुं सम्मा पटिपज्जन्तेहि साधूहि दूरतो रहितब्बा परिच्चजितब्बा पहातब्बा ति रहा नाम, ते च यस्मा भगवतो बोधिमूलेयेव अरियमग्गेन सब्बसो पहीना सुसमुच्छिन्ना । यथाह—

> "तथागतस्स खो ब्राह्मण रागो पहीनो दोसो मोहो, सब्बे पि पापका अकुसला धम्मा पहीना उच्छिन्नमूला तालावत्थुकता अनभावंकता आयतिं अनुप्पादधम्मा" ति[१] ।

तस्मा सब्बसो न सन्ति एतस्स रहा ति अरहो ति वत्तब्बे ओकारस्स सानुसारं अकारादेसं कत्वा "**अरहं**" ति वुत्तं । तेनेदं वुच्चति—

> "पापधम्मा रहा नाम, साधूहि रहितब्बतो ।
> तेसं सुट्ठु पहीनत्ता, भगवा **अरहं** मतो" ति ।

ये ते सब्बसो परिञ्ञातक्खन्धा पहीनकिलेसा भावितमग्गा सच्छिकतनिरोधा अरहन्तो खीणासवा, ये च सेखा अप्पत्तमानसा अनुत्तरं योगक्खेमं पत्थयमाना विहरन्ति, ये च परिसुद्धप्पयोगा कल्याणज्झासया सद्धासीलसुतादिगुणसम्पन्ना पुग्गला, तेहि न रहितब्बो न परिच्चजितब्बो, ते च भगवता ति **अरहं** । तथा हि अरियपुग्गला सत्थारा दिट्ठधम्मस्स पच्चक्खकरणतो सत्थु धम्मसरीरेन अविरहिताव होन्ति । **यथाह** आयस्मा पिङ्गियो—

> "पस्सामि नं मनसा चक्खुनाव, रत्तिन्दिवं ब्राह्मण अप्पमत्तो ।
> नमस्समानो विवसेमि रत्तिं, तेनेव मञ्ञामि अविप्पवासं ॥
> B 228 सद्धा च पीति च मनो सति च, ना पेन्ति मे गोतमसासनम्हा ।
> यं यं दिसं वजति भूरिपञ्ञो, स तेन तेनेव नतोहमस्मी" ति[२] ।

तेनेव च ते अञ्ञं सत्थारं न उद्दिसन्ति । यथाह—

"अट्ठानमेतं भिक्खवे अनवकासो, यं दिट्ठिसम्पन्नो पुग्गलो अञ्ञं सत्थारं उद्दिसेय्य, नेतं ठानं विज्जती" ति[३] ।

कल्याणपुथुज्जना पि येभुय्येन सत्थरि निच्चलसद्धा एव होन्ति । इति सुप्पटिपन्नेहि पुरिसविसेसेहि अविरहितब्बतो तेसञ्च अविरहनतो न सन्ति एतस्स रहा परिच्चजनका, नत्थि वा एतस्स रहा साधूहि परिच्चजितब्बता ति **अरहं** । तेनेदं वुच्चति—

---

१. वि० १-४ पिट्ठे । विसुद्धि म० म० टी० ४२१ पिट्ठेपि पस्सितब्बं ।

२. खु० १-४५१ पिट्ठे । ३. म० ३-११०, अं० १-२९ पिट्ठेसु ।

"ये सच्छिकतसद्धम्मा, अरिया सुद्धगोचरा।
न तेहि रहितो होति, नाथो तेनारहं मतो" ति।

रहो ति च गमनं वुच्चति, भगवतो च नानागतीसु परिब्भमनसङ्खातं संसारे गमनं नत्थि कम्मक्खयकरेन अरियमग्गेन बोधिमूलेयेव सब्बसो ससम्भारस्स कम्मवट्टस्स विद्धंसितत्ता। यथाह—

"येन देवूपपत्यस्स, गन्धब्बो वा विहङ्गमो।
यक्खत्तं येन गच्छेय्यं, मनुस्सत्तञ्च अब्बजे॥
ते मय्हं आसवा खीणा, विद्धस्ता विनळीकता" ति[३]॥

एवं नत्थि एतस्स रहो गमनं गतीसु पच्चाजाती ति पि **अरहं**। तेनेदं वुच्चति—

"रहो वा गमनं यस्स, संसारे नत्थि सब्बसो।
पहीनजातिमरणो, **अरहं** सुगतो मतो" ति॥

पासंसत्ता वा भगवा **अरहं**। अक्खरचिन्तका हि पसंसायं अरह-सद्दं वण्णेन्ति। पासंसभावो च भगवतो अनञ्ञसाधारणतो यथाभुच्चगुणाधिगतो सदेवके लोके सुप्पतिट्ठितो। तथा हेस्स अनुत्तरेन सीलेन अनुत्तरेन समाधिना अनुत्तराय पञ्ञाय अनुत्तराय B 229
विमुत्तिया असमो असमसमो अप्पटिमो अप्पटिभागो अप्पटिपुग्गलो ति एवं तस्मिं तस्मिं गुणे विभजित्वा वुच्चमाने पण्डितपुरिसेहि देवेहि ब्रह्मेहि भगवता वा पन परियोसापेतुं असक्कुणेय्यरूपो। इति पासंसत्ता पि भगवा अरहं। तेनेदं वुच्चति—

"गुणेहि सदिसो नत्थि, यस्मा लोके सदेवके।
तस्मा पासंसियत्तापि, **अरहं** द्विपदुत्तमो" ति॥

सब्बसङ्गहवसेन पन—

आरका मन्दबुद्धीनं, आरका च विजानतं।
रहानं सुप्पहीनत्ता, विदूनमरहेय्यतो।
भवेसु च रहाभावा, पासंसा अरहं जिनो ति॥

एत्तावता च "अरहं" ति पदस्स सब्बसो अत्थो विभत्तो होति।

इदानि **सम्मासम्बुद्धो** ति इमस्स अत्थं विभजित्वा दस्सेन्तो आह "**सम्मा सामञ्चा**" ति आदि। तत्थ **सम्मा** ति अविपरीतं। **सामं** ति सयमेव, अपरनेय्यो हुत्वा ति अत्थो। **सम्बुद्धो** ति हि एत्थ सं-सद्दो सयं ति एतस्स अत्थस्स बोधको ति दट्ठब्बो। सब्बधम्मानं ति अनवसेसानं नेय्यधम्मानं। कथं पनेत्थ सब्बधम्मानं ति अयं विसेसो लब्भती ति? एकदेसस्स अग्गहणतो। पदेसग्गहणे हि असति गहेतब्बस्स निप्पदेसताव

३. अ० १-३४८ पिट्ठे।

विञ्ञायति यथा "दिक्खितो[1] न ददाती" ति। एवञ्च कत्वा अत्थविसेसनपेक्खा कत्तरि एव बुद्धसद्दसिद्धि वेदितब्बा कम्मवचनिच्छाय अभावतो। "सम्मा सामञ्च बुद्धत्ता सम्मासम्बुद्धो" ति एत्तकमेव हि इध सद्दतो लब्भति, "सब्बधम्मानं" ति इदं पन अत्थतो लब्भमानं गहेत्वा वुत्तं। न हि बुज्झनकिरिया अविसया युज्जति।

इदानि तस्सा विसयं "सब्बधम्मे" ति सामञ्ञतो वुत्तं विभजित्वा दस्सेतुं "**अभिञ्ञेय्ये धम्मे**" ति आदि वुत्तं। तत्थ **अभिञ्ञेय्ये** ति अनिच्चादितो लक्खण-रसादितो च अभिविसिट्ठेन ञाणेन जानितब्बे चतुसच्चधम्मे। **अभिञ्ञेय्यतो बुद्धो** ति अभिञ्ञेय्यभावतो बुज्झि, पुब्बभागे विपस्सनापञ्ञादीहि अधिगमक्खणे मग्गपञ्ञाय
B 230 अपरभागे सब्बञ्ञुतञ्ञाणादीहि अञ्ञासी ति अत्थो। इतो परेसुपि एसेव नयो। **परिञ्ञेय्ये धम्मे** ति अनिच्चादिवसेन परिजानितब्बं दुक्खं अरियसच्चमाह। **पहातब्बे** ति समुदय-पक्खिये। **सच्छिकातब्बे** ति निब्बानं सन्धायाह। बहुवचननिद्देसो पनेत्थ सोपादिसेसादिकं परियायसिद्धं भेदमपेक्खित्वा कतो, उद्देसो वा अयं चतुसच्चधम्मानम्पि। तथा हि वक्खति "चक्खु दुक्खसच्चं" ति आदि। उद्देसो च अविनिच्छितत्थपरिच्छेदस्स धम्मस्स वसेन करीयति। उद्देसेन हि उद्दिसियमानानं अत्थितामत्तं वुच्चति, न परिच्छेदो ति अपरिच्छेदेन बहुवचनेन वुत्तं यथा "अप्पच्चया धम्मा, असङ्खता धम्मा" ति। **सच्छि-कातब्बे** ति वा फलविमुत्तीनम्पि गहणं, न निब्बानस्सेवा ति बहुवचननिद्देसो कतो। एवञ्च **भावेतब्बे** ति एत्थ झानानम्पि गहणं दट्ठब्बं। **तेनेव चाहा** ति सेलब्राह्मणस्स अत्तनो बुद्धभावं साधेन्तो एवमाह।

किं पन भगवा सयमेव अत्तनो सम्मासम्बुद्धभावं साधेती ति? साधेति महा-करुणाय अञ्ञेसं अविसयतो। तत्थ "एकोम्हि सम्मासम्बुद्धो, सब्बाभिभू सब्बविदूह-मस्मी" ति आदीनि[2] सुत्तपदानि, इदमेव च "अभिञ्ञेय्यं" ति आदि सुत्तपदं एतस्स अत्थस्स साधकं। तत्थ **अभिञ्ञेय्यं** ति इमिना दुक्खसच्चमाह, **भावेतब्बं** ति मग्गसच्चं च-सद्दो पनेत्थ अवुत्तसमुच्चयत्थो, तेन सच्छिकातब्बस्स गहणं वेदितब्बं। अथ वा **अभिञ्ञेय्यं** ति इमिनाव पारिसेसञायेन परिञ्ञेय्यधम्मे सच्छिकातब्बधम्मे च दस्सेति। **तस्मा बुद्धोस्मी** ति यस्मा चत्तारि सच्चानि मया बुद्धानि, सच्चविनिमुत्तञ्च किञ्चि ञेय्यं नत्थि, तस्मा सब्बम्पि ञेय्यं बुद्धोस्मि, अब्भञ्ञासिं ति अत्थो। सेलसुत्तट्ठकथायं[3] पन इदं वुत्तं—

"अभिञ्ञेय्यं ति विज्जा च विमुत्ति च। भावेतब्बं मग्गसच्चं। पहातब्बं समुदयसच्चं। हेतुवचनेन पन फलसिद्धितो तेसं फलानि निरोधसच्चदुक्खसच्चानिपि वुत्तानेव होन्ति। एवं सच्छिकातब्बं सच्छिकतं, परिञ्ञातब्बं परिञ्ञातं ति इदम्पेत्थ सङ्गहितमेवा ति चतुसच्चभावनं चतुसच्चभावनाफलञ्च विमुत्तिं दस्सेन्तो "बुज्झितब्बं बुज्झित्वा बुद्धो जातोस्मी" ति युत्तहेतुना बुद्धभावं साधेती" ति।

---

१. दुक्खितो (स्या०) सद्दनीतिधातुमाला पस्सितब्बा।
२. म० २-२९५, वि० ३-१२ पिट्ठेसु। ३. म० ट्ठ-३-२७६ पिट्ठे।

तत्थ **विज्जा** ति मग्गविज्जा वुत्ता उक्कट्ठनिद्देसेन। **विमुत्ती** ति फलविमुत्ति। B 231
कामञ्चेत्थ मग्गविज्जा पि भावेतब्बभावेन गहिता, सब्बे पि पन सभावधम्मा अभिञ्ञेय्या ति विज्जाय अभिञ्ञेय्यभावो वुत्तो। इमिनाव नयेन सब्बेसम्पि अभिञ्ञेय्यभावो वुत्तो एवा ति दट्ठब्बं। फलेन विना हेतुभावस्सेव अभावतो हेतुवचनेन फलसिद्धि वुत्ता ति वेदितब्बं। निरोधस्स हि सम्पापनेन मग्गस्स हेतुभावो, दुक्खस्स निब्बत्तनेन तण्हाय समुदयभावो ति।

एवं सच्चवसेन सामञ्ञतो वुत्तमत्थं द्वारारम्मणेहि सद्धिं द्वारप्पवत्तधम्मेहि चेव खन्धादीहि च सच्चवसेनेव विभजित्वा दस्सेतुं "**अपि चा**" ति आदि आरद्धं। **मूलकारणभावेना** ति सन्तेसुपि अविज्जादीसु अञ्ञेसु कारणेसु तेसम्पि मूलभूतकारणभावेन। तण्हा हि कम्मस्स विचित्तभावहेतुतो सहायभावूपगमनतो च दुक्खविचित्तताय पधानकारणं। **समुट्ठापिका** ति उप्पादिका। **पुरिमतण्हा** ति पुरिमभवसिद्धा तण्हा। **उभिन्नं** ति चक्खुस्स तं समुदयस्स च। **अप्पवत्ती** ति अप्पवत्तिनिमित्तं। **निरोधप्पजानना** ति सच्छिकिरियाभिसमयवसेन निरोधस्स पटिविज्झना। **एकेकपदुद्धारेना** ति "चक्खुं चक्खुसमुदयो चक्खुनिरोधो" ति आदिना एकेककोट्ठासनिद्धारणेन। तण्हायपि परिञ्ञेय्यभावसब्भावतो उपादानक्खन्धोगधत्ता सङ्खारदुक्खभावतो च दुक्खसच्चसङ्गहं दस्सेतुं "**रूपतण्हादयो छ तण्हाकाया**" ति वुत्तं। तस्मा वत्तमानभवे तण्हा खन्धपरियापन्नत्ता सङ्खारदुक्खभावतो च दुक्खसच्चं। यस्मिं पन अत्तभावे सा उप्पज्जति, तस्स अत्तभावस्स मूलकारणभावेन समुट्ठापिका पुरिमभवसिद्धा तण्हा समुदयसच्चं ति गहेतब्बा।

कसिणानी ति कसिणारम्मणिकज्झानानि। **द्वत्तिंसाकारा** ति द्वत्तिंस कोट्ठासा तदारम्मणज्झानानि च। **नव भवा** ति कामभवो रूपभवो अरूपभवो सञ्ञीभवो असञ्ञीभवो नेवसञ्ञीनासञ्ञीभवो एकवोकारभवो चतुवोकारभवो पञ्चवोकारभवो ति नव भवा। तत्थ भवती ति भवो, कामरागसङ्खातेन कामेन युत्तो भवो कामसङ्खातो वा भवो **कामभवो**, एकादस कामावचरभूमियो। कामे पहाय रूपरागसङ्खातेन रूपेन युत्तो भवो, रूपसङ्खातो वा भवो **रूपभवो**, सोळस रूपावचरभूमियो। कामञ्च रूपञ्च पहाय B 232
अरूपरागसङ्खातेन अरूपेन युत्तो भवो, अरूपसङ्खातो वा भवो **अरूपभवो**, चतस्सो आरुप्पभूमियो। सञ्ञावतं भवो **सञ्ञीभवो**, सञ्ञा वा एत्थ भवे अत्थी ति सञ्ञीभवो, सो कामभवो च असञ्ञीभवमुत्तो रूपभवो च नेवसञ्ञीनासञ्ञीभवमुत्तो अरूपभवो च होति। न सञ्ञीभवो **असञ्ञीभवो**, सो रूपभवेकदेसो। ओळारिकत्ताभावतो नेवसञ्ञा, सुखुमत्तस्स सब्भावतो नासञ्ञा ति नेवसञ्ञानासञ्ञा, ताय युत्तो भवो **नेवसञ्ञानासञ्ञाभवो**। अथ वा ओळारिकाय सञ्ञाय अभावा सुखुमाय च भावा नेवसञ्ञा नासञ्ञा अस्मिं भवे ति नेवसञ्ञानासञ्ञाभवो, सो अरूपभवेकदेसो। एकेन रूपक्खन्धेन वोकिण्णो भवो, एकेन वा वोकारो अस्स भवस्सा ति **एकवोकारभवो**, सो असञ्ञीभवो। चतूहि अरूपक्खन्धेहि वोकिण्णो भवो, चतूहि वा वोकारो अस्स भवस्सा ति **चतुवोकारभवो**, सो अरूपभवो एव। पञ्चहि खन्धेहि वोकिण्णो भवो,

पञ्चहि वा वोकारो अस्स भवस्सा ति **पञ्चवोकारभवो**, सो कामभवो च रूपभवेकदेसो च होति । **वोकारो** ति वा खन्धानमेतमधिवचनं, तस्मा एको वोकारो अस्स भवस्सा ति एकवोकारभवो ति एवमादिनापेत्थ अत्थो वेदितब्बो । **चत्तारि झानानी** ति अग्गहितारम्मणविसेसानि चत्तारि रूपावचरज्झानानि । विपाकज्झानानं वा एतं गहणं । एत्थ च कुसलधम्मानं उपनिस्सयभूता तण्हासमुट्ठापिका[१] पुरिमतण्हा ति वेदितब्बा । किरियधम्मानं पन यत्थ ते किरियधम्मा उप्पज्जन्ति, तस्स अत्तभावस्स कारणभूता तण्हा । **अनुलोमतो** ति एत्थ "सङ्खारा दुक्खसच्चं, अविज्जा समुदयसच्चं" ति इमिना अनुक्कमेन योजेतब्बं ।

अनुबुद्धो ति बुज्झितब्बधम्मस्स अनुरूपतो बुद्धो । **तेना** ति यस्मा[२] सामञ्ञतो विसेसतो च एकेकपदुद्धारेन सब्बधम्मे बुद्धो, तस्मा वुत्तं । किं वुत्तं ति आह "सम्मा सामञ्च सब्बधम्मानं बुद्धत्ता" ति, सब्बस्सपि ञेय्यस्स सब्बाकारतो अविपरीतं सयमेव
B 233 अभिसम्बुद्धत्ता ति अत्थो । इमिनास्स परोपदेसरहितस्स सब्बाकारेन सब्बधम्मावबोधनसमत्थस्स आकङ्खप्पटिबद्धवुत्तिनो अनावरणञाणसङ्खातस्स सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स अधिगमो दस्सितो ।

ननु च सब्बञ्ञुतञ्ञाणतो अञ्ञं अनावरणञाणं, अञ्ञथा "छ असाधारणञाणानि बुद्धञाणानी" ति वचनं विरुज्झेय्या ति ? न विरुज्झति विसयप्पवत्तिभेदवसेन अञ्ञेहि असाधारणभावदस्सनत्थं एकस्सेव ञाणस्स द्विधा वुत्तत्ता । एकमेव हि तं ञाणं अनवसेससङ्खतासङ्खतसम्मुतिधम्मविसयताय सब्बञ्ञुतञ्ञाणं, तत्थ च आवरणाभावतो निस्सङ्गचारमुपादाय अनावरणञाणं ति वुत्तं । यथाह **पटिसम्भिदायं**[३] "सब्बं सङ्खतमसङ्खतं अनवसेसं जानाती ति सब्बञ्ञुतञ्ञाणं, तत्थ आवरणं नत्थी ति अनावरणञाणं" ति आदि । तस्मा नत्थि नेसं अत्थतो भेदो, एकन्तेन चेतं एवमिच्छितब्बं । अञ्ञथा सब्बञ्ञुतानावरणञाणानं साधारणता असब्बधम्मारम्मणता च आपज्जेय्य । न हि भगवतो ञाणस्स अणुमत्तम्पि आवरणं अत्थि, अनावरणञाणस्स असब्बधम्मारम्मणभावे यत्थ तं न पवत्तति, तत्थावरणसब्भावतो अनावरणभावोयेव न सिया । अथ वा पन होतु अञ्ञमेव अनावरणञाणं सब्बञ्ञुतञ्ञाणतो, इध पन सब्बत्थ अप्पटिहतवुत्तिताय अनावरणञाणं ति सब्बञ्ञुतञ्ञाणमेव अधिप्पेतं, तस्स चाधिगमनेन भगवा सब्बञ्ञू सब्बविदू सम्मासम्बुद्धो ति च वुच्चति न सकिं येव सब्बधम्मावबोधनतो । तथा च वुत्तं **पटिसम्भिदायं**[४] "विमोक्खन्तिकमेतं बुद्धानं भगवन्तानं बोधिया मूले सह सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स पटिलाभा सच्छिका पञ्ञत्ति यदिदं बुद्धो" ति । सब्बधम्मावबोधनसमत्थञाणसमधिगमेन हि भगवतो सन्ताने अनवसेसधम्मे पटिविज्झितुं समत्थता अहोसी ति ।

---

१. तण्हा तंसमुट्ठापिका (स्या०)
२. तेना ति तस्मा । यस्मा (सी०-स्या०) ३. खु० ९-१२५ पिट्ठे ।
४. खु०, ९-१७२ पिट्ठे ।

एत्थाह—किं पनिदं ञाणं पवत्तमानं सकिंयेव सब्बस्मिं विसये पवत्तति, उदाहु कमेना ति। किञ्चेत्थ—यदि ताव सकिंयेव सब्बस्मिं विसये पवत्तति, अतीतानागत-पच्चुप्पन्नअज्झत्तबहिद्धादिभेदभिन्नानं सङ्खतधम्मानं असङ्खतसम्मुतिधम्मानञ्च एकज्झं उपट्ठाने दूरतो चित्तपटं पेक्खन्तस्स विय पटिविभागेनावबोधो न सिया, तथा सति "सब्बे धम्मा अनत्ता" ति विपस्सन्तानं अनत्ताकारेन विय सब्बधम्मा अनिरूपितरूपेन B 234 भगवतो ञाणस्स विसया होन्ती ति आपज्जति। येपि[1] "सब्बञेय्यधम्मानं ठितलक्खण-विसयं विकप्परहितं सब्बकालं बुद्धानं ञाणं पवत्तति, तेन ते सब्बविदू ति वुच्चन्ति, एवञ्च कत्वा 'चरं समाहितो नागो, तिट्ठन्तोपि समाहितो' ति इदम्पि वचनं सुवुत्तं होती" ति वदन्ति, तेसम्पि वुत्तदोसा नातिवत्ति, ठितलक्खणारम्मणताय च अतीताना-गतसम्मुतिधम्मानं तदभावतो एकदेसविसयमेव भगवतो ञाणं सिया, तस्मा सकिंयेव ञाणं पवत्तती ति न युज्जति।

अथ कमेन सब्बस्मिं विसये ञाणं पवत्तती ति। एवम्पि न युज्जति। न हि जातिभूमिसभावादिवसेन दिसादेसकालादिवसेन च अनेकभेदभिन्ने ञेय्ये कमेन गय्हमाने तस्स अनवसेसप्पटिवेधो सम्भवति अपरियन्तभावतो ञेय्यस्स। ये पन "अत्थस्स अविसंवादनतो ञेय्यस्स एकदेसं पच्चक्खं कत्वा सेसेपि एवं ति अधिमुच्चित्वा ववत्थापनेन सब्बञ्ञू भगवा, तञ्च ञाणं न अनुमानञाणं संसयाभावतो। संसयानु-बद्धञ्हि लोके अनुमानञाणं" ति वदन्ति, तेसम्पि तं न युत्तं। सब्बस्स हि अप्पच्चक्ख-भावे अत्थाविसंवादनेन ञेय्यस्स एकदेसं पच्चक्खं कत्वा सेसेपि एवं ति अधिमुच्चित्वा ववत्थापनस्स असम्भवतो। यञ्हि तं सेसं, तं अप्पच्चक्खं ति।

अथ तम्पि पच्चक्खं तस्स सेसभावो एव न सिया ति? सब्बमेतं अकारणं। कस्मा? अविसयविचारणभावतो। वुत्तञ्हेतं भगवता "बुद्धविसयो भिक्खवे अचिन्तेय्यो न चिन्तेतब्बो, यो चिन्तेय्य, उम्मादस्स विघातस्स भागी अस्सा" ति[2]। इदं पनेत्थ सन्निट्ठानं—यं किञ्चि भगवता ञातुं इच्छितं सकलं एकदेसो वा, तत्थ तत्थ अप्पटिहत-वुत्तिताय पच्चक्खतो ञाणं पवत्तति निच्चसमाधानञ्च विक्खेपाभावतो। ञातुं इच्छि-तस्स च सकलस्स अविसयभावे तस्स आकङ्खप्पटिबद्धवुत्तिता न सिया, एकन्तेनेवस्स इच्छितब्बा "सब्बे धम्मा बुद्धस्स भगवतो आवज्जनप्पटिबद्धा आकङ्खप्पटिबद्धा मनसिकारप्पटिबद्धा चित्तुप्पादप्पटिबद्धा" ति[3] वचनतो। अतीतानागतविसयम्पि भगवतो ञाणं अनुमानागमतक्कगहणविरहितत्ता पच्चक्खमेव।

ननु च एकस्मिम्पि पक्खे यदा सकलं ञातुं इच्छितं, तदा सकिंयेव सकलविसय- B 235 ताय अनिरूपितरूपेन भगवतो ञाणं पवत्तेय्या ति वुत्तदोसा नातिवत्तियेवा ति? न, तस्स विसोधितत्ता। विसोधितो हि सो बुद्धविसयो अचिन्तेय्यो ति। अञ्ञथा पचुरजन-ञाणसमानवुत्तिताय बुद्धानं भगवन्तानं ञाणस्स अचिन्तेय्यता न सिया, तस्मा सकल-

१. येसं (सी०)
२. अं० १—३९२ पिट्ठे।
३. खु० ७-१३९, खु०—९-३७६ पिट्ठेसु।

धम्मारम्मणम्पि तं एकधम्मारम्मणं विय सुववत्थापितेयेव ते धम्मे कत्वा पवत्तती ति इदमेत्थ अचिन्तेय्यं, "यावतकं ञेय्यं, तावतकं ञाणं। यावतकं ञाणं, तावतकं ञेय्यं। ञेय्यपरियन्तिकं ञाणं, ञाणपरियन्तिकं ञेय्यं" ति[1] एवमेकज्झं विसुं सकिं कमेन वा इच्छानुरूपं सम्मा सामं सब्बधम्मानं बुद्धत्ता सम्मासम्बुद्धो।

विज्जाही ति एत्थ विन्दियं विन्दती ति विज्जा, याथावतो उपलब्भती ति अत्थो। अत्तनो वा पटिपक्खस्स विज्झनट्ठेन विज्जा, तमोक्खन्धादिकस्स पदालनट्ठेना ति अत्थो। ततो एव अत्तनो विसयस्स विदितकरणट्ठेनपि विज्जा। **सम्पन्नत्ता** ति समन्नागतत्ता परिपुण्णत्ता वा, अविकलत्ता ति अत्थो। **तत्र** ति अम्बट्ठसुत्ते। **मनोमयिद्धिया** ति एत्थ "इध भिक्खु इमम्हा काया अञ्ञं कायं अभिनिम्मिनाति रूपिं मनोमयं सब्बङ्गपच्चङ्गं अहीनिन्द्रियं" ति[2] इमिना नयेन आगता इद्धि सरीरब्भन्तरे अञ्ञस्सेव झानमनेन निब्बत्तत्ता मनोमयस्स सरीरस्स निब्बत्तिवसेन पवत्ता मनोमयिद्धि नाम। **छ अभिञ्ञा** ति आसवक्खयञाणेन सद्धिं इद्धिविधादिका पञ्चाभिञ्ञायो। तिस्सन्नं अट्ठन्नञ्च विज्जानं तत्थ तत्थ सुत्ते गहणं वेनेय्यज्झासयवसेना ति दट्ठब्बं। **सत्त सद्धम्मा नाम** सद्धा हिरी ओत्तप्पं बाहुसच्चं वीरियं सति पञ्ञा च। ये सन्धाय वुत्तं "इध भिक्खु सद्धो होति, हिरिमा, ओत्तप्पी, बहुस्सुतो, आरद्धवीरियो, उपट्ठितस्सति, पञ्ञवा होती" ति[3]। **चत्तारि झानानी** ति यानि कानिचि चत्तारि रूपावचरज्झानानि।

कस्मा पनेत्थ सीलादयोयेव पन्नरस "चरणं" ति वुत्ता ति चोदनं सन्धायाह "**इमेयेव ही**" ति आदि। तेन तेसं सिक्खत्तयसङ्गहतो निब्बानुपगमने एकंसतो साधनभावमाह। इदानि तदत्थसाधनाय आगमं दस्सेन्तो "**यथाह**" ति आदिमाह।
B 236 **भगवा** ति आदि वुत्तस्सेवत्थस्स निगमनवसेन वुत्तं। ननु चायं विज्जाचरणसम्पदा सावकेसु पि लब्भती ति? किञ्चापि लब्भति, न पन तथा, यथा भगवतो ति दस्सेतुं "**तत्थ विज्जासम्पदा**" ति आदि वुत्तं। आसवक्खयविज्जाय सब्बञ्ञुभावसिद्धितो आह "**विज्जासम्पदा भगवतो सब्बञ्ञुतं पूरेत्वा ठिता**" ति। चतूसु झानेसु अन्तोगधभावेन चरणधम्मपरियापन्नता करुणाब्रह्मविहारस्स यथारहं तस्स च महाकरुणासमापत्तिवसेन असाधारणसभावस्स भगवति उपलब्भनतो आह "**चरणसम्पदा महाकारुणिकतं पूरेत्वा ठिता**" ति। यथा सत्तानं अनत्थं परिवज्जेत्वा अत्थे नियोजनं पञ्ञाय विना न होति, एवं नेसं अत्थानत्थजाननं सत्थु करुणाय विना न होती ति उभयम्पि उभयत्थ सकिच्चकमेव[4] सिया। यत्थ पन यस्सा पधानभावो, तं दस्सेतुं "**सो सब्बञ्ञुताया**" ति आदि वुत्तं। **यथा तं विज्जाचरणसम्पन्नो** ति एत्थ तं ति निपातमत्तं, यथा अञ्ञो पि विज्जाचरणसम्पन्नो नियोजेति, तथा अयं ति अत्थो। तेन विज्जाचरणसम्पन्नस्सेवायं आवेणिका पटिपत्ती ति दस्सेति। सा पनायं सत्थु विज्जाचरणसम्पदा सासनस्स निय्यानिकताय सावकानं सम्मापटिपत्तिया एकन्तकारणं ति दस्सेतुं

---

१. खु० ९-३७६ पिट्ठे। २. दी० १-७३ पिट्ठे।
३. दी० ३-२०८ पिट्ठे। ४. सकिच्चकरमेव (स्या०)।

"तेनस्सा" ति आदि वुत्तं। तत्थ **अत्तन्तपादयो** ति **आदि**—सद्देन परन्तपउभयन्तपा गहिता। सेसं सुविञ्ञेय्यमेव।

एत्थ च विज्जासम्पदाय सत्थु पञ्ञामहत्तं पकासितं होति, चरणसम्पदाय करुणामहत्तं। तेसु पञ्ञाय भगवतो धम्मरज्जप्पत्ति, करुणाय धम्मसंविभागो। पञ्ञाय संसारदुक्खनिब्बिदा, करुणाय संसारदुक्खसहनं। पञ्ञाय परदुक्खपरिजाननं, करुणाय परदुक्खपतिकारारम्भो। पञ्ञाय परिनिब्बानाभिमुखभावो, करुणाय तदधिगमो। पञ्ञाय सयं तरणं, करुणाय परेसं तारणं। पञ्ञाय बुद्धभावसिद्धि, करुणाय बुद्धकिच्चसिद्धि। करुणाय वा बोधिसत्तभूमियं संसाराभिमुखभावो, पञ्ञाय तत्थ अनभिरति, तथा करुणाय परेसं अभिसापनं, पञ्ञाय सयं परेहि अभायनं। करुणाय परं रक्खन्तो अत्तानं रक्खति, पञ्ञाय अत्तानं रक्खन्तो परं रक्खति। तथा करुणाय अपरन्तपो, पञ्ञाय अनत्तन्तपो, तेन अत्तहिताय पटिपन्नादीसु चतूसु पुग्गलेसु चतुत्थपुग्गलभावो B 237
सिद्धो होति। तथा करुणाय लोकनाथता, पञ्ञाय अत्तनाथता। करुणाय चस्स निन्नताभावो, पञ्ञाय उन्नमाभावो। तथा करुणाय सब्बसत्तेसु जनितानुग्गहो, पञ्ञानुगतत्ता न च न सब्बत्थ विरत्तचित्तो, पञ्ञाय सब्बधम्मेसु विरत्तचित्तो, करुणानुगतत्ता न च न सब्बसत्तानुग्गहाय पवत्तो। यथा हि करुणा भगवतो सिनेहसोतविरहिता, एवं पञ्ञा अहंकारममंकारविनिमुत्ता ति अञ्ञमञ्ञविसोधिता परमविसुद्धा गुणविसेसा विज्जाचरणसम्पदाहि पकासिता ति दट्ठब्बं।

इदानि **सुगतो** ति इमस्स अत्थं दस्सेन्तो आह **"सोभनगमनत्ता"** ति आदि। "गते ठिते" ति आदीसु गमनम्पि गतं ति वुच्चती ति आह **"गमनम्पि हि गतं ति वुच्चती"** ति। **सोभनं** ति सुभं, सुभभावो विसुद्धताय, विसुद्धता दोसविगमेना ति आह **"परिसुद्धमनवज्जं"** ति। गमनञ्च नाम बहुविधं ति इधाधिप्पेतं गमनं दस्सेन्तो **"अरियमग्गो"** ति आह। सो हि निब्बानस्स गति अधिगमो ति च कत्वा गतं गमनं ति च वुच्चति। इदानि तस्सेव गमने कारणं दस्सेतुं **"तेन हेसा"** ति आदि वुत्तं। **खेमं दिसं** ति निब्बानं। **असज्जमानो** ति परिपन्थाभावेन सुगतिगमने पि असज्जन्तो सङ्गं अकरोन्तो, पगेव इतरत्थ। अथ वा एकासने निसीदित्वा खिप्पाभिञ्ञावसेनेव चतुन्नम्पि मग्गानं पटिलद्धभावतो असज्जमानो अबज्झन्तो गतो। यं गमनं गच्छन्तो सब्बगमनत्थं आवहति, सब्बञ्च अनुत्तरं सम्पत्तिं आवहति, तदेव सोभनं नाम, तेन च भगवा गतो ति आह **"इति सोभनगमनत्ता सुगतो"** ति सोभनत्थो सुसद्दो ति कत्वा।

असुन्दरानं दुक्खानं सङ्खारप्पवत्तीनं अभावतो अच्चन्तसुखत्ता एकन्ततो सुन्दरं नाम असङ्खता धातू ति आह **"सुन्दरञ्चेस ठानं गतो अमतं निब्बानं"** ति। तेनाह भगवा "निब्बानं परमं सुखं" ति[1]। **सम्मा** ति सुट्ठु। सुट्ठु गमनञ्च नाम पटिपक्खेन अनभिभूतस्स गमनं ति आह **"पहीने किलेसे पुन अपच्चागच्छन्तो"** ति,

१. म० २-१७६, खु० १-४३ पिट्ठेसु।

पहीनानं पुन असमुदाचारवसेन अपच्चागच्छन्तो। वुत्तमेवत्थं आगमं दस्सेत्वा विभावेन्तो आह "**वुत्तञ्हेतं**" ति आदि। **एतं** ति तेन तेन मग्गेन पहीनकिलेसानं पुन
B 238 अपच्चागमनं, इदञ्च सिखाप्पत्तं सम्मागमनं, याय आगमनीयपटिपदाय सिद्धं, सापि सम्मागमनमेवा ति एवम्पि भगवा सुगतो ति दस्सेतुं "**सम्मा वा आगतो**"ति आदि वुत्तं। **सम्मापटिपत्तिया** ति सम्मासम्बोधिया सम्पापने अविपरीतपटिपत्तिया। **सब्बलोकस्स हितसुखमेव करोन्ता** ति एतेन महाबोधिया पटिपदा अविभागेन सब्बसत्तानं सब्बदा हितसुखावहभावेनेव पवत्तती ति दस्सेति। **सस्सतं उच्छेदं ति इमे अन्ते अनुपगच्छन्तो गतो** ति एतेन पटिच्चसमुप्पादगतिं दस्सेति। **कामसुखं अत्तकिलमथं** ति **इमे अनुपगच्छन्तो गतो** ति एतेन अरियमग्गगतिं दस्सेति।

तत्रा ति युत्तट्ठाने युत्तस्सेव भासने। निप्फादेतब्बे साधेतब्बे चेतं भुम्मं। अभूतं ति अभूतत्थं। अत्थमुखेन हि वाचाय अभूतता भूतता वा। **अतच्छं** ति तस्सेव वेवचनं। **अनत्थसंहितं** ति दिट्ठधम्मिकेन सम्परायिकेन वा अनत्थेन संहितं **अनत्थसंहितं**, अनत्थावहं। न अत्थो ति अनत्थो, अत्थस्स पटिपक्खो अभावो च. तेन संहितं, पिसुणवाचं सम्फप्पलापञ्चाति अत्थो। एवमेत्थ चतुब्बिधस्सपि वचीदुच्चरितस्स सङ्गहो दट्ठब्बो। एत्थ च पठमा वाचा सीलवन्तं "दुस्सीलो" ति, अचण्डालादिं "चण्डालो" ति आदिना भासमानस्स दट्ठब्बा। दुतिया दुस्सीलं "दुस्सीलो" ति, चण्डालादिमेव "चण्डालो" ति आदिना अविनयेन भासमानस्स। ततिया नेरयिकादिकस्स नेरयिकादिभावविभावनीकथा यथा "आपायिको देवदत्तो नेरयिको" ति आदिका। चतुत्थी "वेदविहितेन यञ्ञविधिना पाणातिपातादिकं सुगतिं आवहती" ति लोकस्स ब्यामोहनकथा। पञ्चमी भूतेन पेसुञ्ञुपसंहारा कथा। छट्ठा युत्तपत्तट्ठाने पवत्तिता दानसीलादिकथा वेदितब्बा। **एवं सम्मा गदत्ता** ति यथावुत्तं अभूतादिं वज्जेत्वा भूतं तच्छं अत्थसंहितं पियं मनापं ततो एव सम्मा सुट्ठु गदनतो सुगतो। आपाथगमनमत्तेन कस्सचि अप्पियम्पि हि भगवतो वचनं पियं मनापमेव अत्थसिद्धिया लोकस्स हितसुखावहत्ता। एत्थ पन द-कारस्स त-कारं कत्वा "सुगतो" ति वुत्तं ति दट्ठब्बं।

अपरो नयो—सोभनं गतं गमनं एतस्सा ति **सुगतो**। भगवतो हि वेनेय्यजनुपसङ्कमनं एकन्तेन तेसं हितसुखनिप्फादनतो सोभनं भद्दकं। तथा लक्खणानुब्यञ्जनप्पटिमण्डितरूपकायताय दुतविलम्बितखलितानुकड्ढननिप्पीळनुक्कुटिककुटिलाकुलतादि-
B 239 दोस विरहितं विलासितराजहंसवसभवारणमिगराजगमनं कायगमनं ञाणगमनञ्च विपुलनिम्मलकरुणासतिवीरियादिगुणविसेसहितमभिनीहारतो याव महाबोधि[1] अनवज्जताय सत्तानं हितसुखावहताय च सोभनमेव। अथवा सयम्भूञाणेन सकलम्पि लोकं परिञ्ञाभिसमयवसेन परिजानन्तो सम्मा गतो अवगतो ति **सुगतो**। तथा लोकसमुदयं पहानाभिसमयवसेन पजहन्तो अनुप्पत्तिधम्मतं आपादेन्तो सम्मा गतो अतीतो-ति सुगतो। लोकनिरोधं निब्बानं सच्छिकरियाभिसमयवसेन सम्मा गतो अधिगतो ति

१. महाबोधिं (स्या०)

सुगतो। लोकनिरोधगामिनिं पटिपदं भावनाभिसमयवसेन सम्मा गतो पटिपन्नो ति सुगतो। तथा यं इमस्स सदेवकस्स लोकस्स दिट्ठं सुतं मुतं विञ्ञातं पत्तं परियेसितं ञातं अनुविचरितं मनसा, सब्बं तं हत्थतले आमलकं विय सम्मा पच्चक्खतो गतो अब्भञ्ञासी ति सुगतो।

इदानि **लोकविदू** ति इमस्स अत्थं पकासेन्तो आह **"सब्बथा विदितलोकत्ता"** ति आदि। तत्थ **सब्बथा** ति सब्बप्पकारेन, यो यो लोको येन येन पकारेन वेदितब्बो, तेन तेन पकारेना ति अत्थो। ते पन पकारे दस्सेतुं "सभावतो" ति आदि वुत्तं। तत्थ **सभावतो** ति दुक्खसभावतो। सब्बो हि लोको दुक्खसभावो। यथाह "संखित्तेन पञ्चुपादानक्खन्धा दुक्खा" ति। **समुदयतो** ति यतो समुदेति, ततो तण्हादितो। **निरोधतो** ति यत्थ सो निरुज्झति, ततो विसङ्खारतो। **निरोधूपायतो** ति येन विधिना सो निरोधो पत्तब्बो, ततो अरियमग्गतो इतो अञ्ञस्स पकारस्स अभावा। इति "सब्बथा लोकं अवेदी" ति वत्वा तदत्थसाधकं सुत्तं दस्सेन्तो **"यत्थ खो आवुसो"** ति आदिमाह। इदञ्च सुत्तं "यत्थ खो भन्ते न जायति···पे०···न उपपज्जति, सक्का नु खो सो भन्ते गमनेन लोकस्स अन्तो ञातुं वा दट्ठुं वा पापुणितुं वा" ति[1] ओकासलोकस्स गतिं सन्धाय रोहितदेवपुत्तेन पुट्ठो भगवा अभासि। तत्थ न **जायती** ति आदिना उजुकं जाति आदीनि पटिक्खिपित्वा **न चवति न उपपज्जती** ति पदद्वयेन अपरापरं चवनुपपतनानि पटिक्खिपति। केचि पन "न जायती ति आदि गब्भसेय्यकादिवसेन वुत्तं, B 240
इतरं ओपपातिकवसेना" ति वदन्ति। तं ति जाति आदिरहितं। **गमनेना** ति पदसा गमनेन। **लोकस्सन्तं** ति सङ्खारलोकस्स अन्तभूतं निब्बानं। **ञातेय्यं** ति जानितब्बं। **दट्ठेय्यं** ति दट्ठब्बं। **पत्तेय्यं** ति पत्तब्बं। "ञातायं दिट्ठायं पत्तायं" ति वा पाठो, तत्थ गमनेन लोकस्सन्तं ञाता अयं दिट्ठा अयं पत्ता अयं ति न वदामी ति अत्थो। **अयं** ति निब्बानत्थिको।

कामं पदसा गमनेन गन्त्वा लोकस्सन्तं ञातुं दट्ठुं पत्तुं वा न सक्का, अपि च परिमितपरिच्छिन्नट्ठाने तं पञ्ञापेत्वा दस्सेमी ति दस्सेन्तो "अपि चा" ति आदिमाह। तत्थ **ब्याममत्ते कळेवरे** ति ब्यामप्पमाणे अत्तभावे। इमिना रूपक्खन्धं दस्सेति। ससञ्ञिम्ही ति सञ्ञाय सहिते। इमिना सञ्ञासीसेन वेदनादयो तयो खन्धे दस्सेति सञ्ञासहितत्ता एव। **समनके** ति सविञ्ञाणके ति अत्थो। इमिना विञ्ञाणक्खन्धं दस्सेति, अविञ्ञाणके पन उतुसमुट्ठानरूपसमुदायमत्ते पञ्ञापेतुं न सक्का ति अधिप्पायो। **लोकं** ति खन्धादिलोकं। **लोकनिरोधं** ति तस्स लोकस्स निरुज्झनं निब्बानमेव वा। निब्बानम्पि हि खन्धे पटिच्च पञ्ञापनतो सरीरस्मिंयेव पञ्ञापेति। अदेसम्पि हि तं येसं निरोधो, तेसं वसेन देसतो पि उपचारवसेन निद्दिसीयति यथा "चक्खुं लोके पियरूपं सातरूपं, एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति, एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झती" ति[2]।

---

१. सं० १-६०, अं० १-३५६ पिट्ठेसु।

२. दी० २-२४८, म० १-८६, अभि० २-१०९ पिट्ठेसु।

गमनेना ति पाकतिकगमनेन। **लोकस्सन्तो** ति सङ्खारलोकस्स अन्तो अन्तकिरियाय हेतुभूतं निब्बानं। **कुदाचनं** ति कदाचि पि। **अप्पत्वा** ति अग्गमग्गेन अनधिगन्त्वा। **पमोचनं** ति पमुत्ति निस्सरणं। **तस्मा** ति यस्मा लोकन्तं अप्पत्वा वट्टदुक्खतो मुत्ति नत्थि, तस्मा। **हवे** ति निपातमत्तं। लोकविदू ति सभावादितो सब्बं लोकं विजानन्तो। **सुमेधो** ति सुन्दरपञ्ञो। **लोकन्तगू** ति परिञ्ञाभिसमयेन लोकं विदित्वा पहानाभिसमयेन लोकन्तगू। मग्गब्रह्मचरियस्स परिनिट्ठितत्ता **वुसितब्रह्मचरियो**। सब्बेसं किलेसानं समितत्ता चतुसच्चधम्मानं वा अभिसमितत्ता **समितावी**। **नासीसती** ति न पत्थेति, यथा इमं लोकं, एवं परञ्च लोकं नासीसति अप्पटिसन्धिकत्ता।

B 241 एवं यदिपि लोकविदुता अनवसेसतो दस्सिता सभावादितो दस्सितत्ता, लोको पन एकदेसेनेव वुत्तो ति तं अनवसेसतो दस्सेतुं "**अपि च तयो लोका**" ति आदि वुत्तं। तत्थ इन्द्रियबद्धानं खन्धानं समूहो सन्तानो च **सत्तलोको**। रूपादीसु सत्तविसत्तताय सत्तो, लोकीयति एत्थ कुसलाकुसलं तब्बिपाको चाति लोको। अनिन्द्रियबद्धानं रूपादीनं समूहो सन्तानो च **ओकासलोको** लोकीयन्ति एत्थ जङ्गमा थावरा च तेसञ्च ओकासभूतो ति कत्वा। तदाधारताय हेस "भाजनलोको" ति पि वुच्चति। उभयेपि खन्धा **सङ्खारलोको** पच्चये हि सङ्खरीयन्ति लुज्जन्ति पलुज्जन्ति चाति। **आहारट्ठितिका** ति पच्चयट्ठितिका, पच्चयायत्तवुत्तिका ति अत्थो। पच्चयत्थो हेत्थ आहारसद्दो "अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा कामच्छन्दस्स उप्पादाया" ति आदीसु[1] विय। एवञ्हि "सब्बे सत्ता" ति इमिना असञ्ञसत्ता पि परिग्गहिता होन्ति। सा पनायं आहारट्ठितिकता निप्परियायतो सङ्खारधम्मो, न सत्तधम्मो ति आह "**आहारट्ठितिका ति आगतट्ठाने सङ्खारलोको वेदितब्बो**" ति।

यदि एवं "सब्बे सत्ता" ति इदं कथं ति ? पुग्गलाधिट्ठानदेसना ति नायं दोसो। कस्मा पन भगवा कत्थचि पुग्गलाधिट्ठानं कत्वा धम्मं देसेति, कत्थचि धम्माधिट्ठानं कत्वा धम्मं देसेती ति ? देसनाविलासतो वेनेय्यज्झासयतो च। देसनाविलासप्पत्ता हि बुद्धा भगवन्तो, ते यथारुचि कत्थचि पुग्गलाधिट्ठानं कत्वा कत्थचि धम्माधिट्ठानं कत्वा धम्मं देसेन्ति। ये वा पन वेनेय्या सासनक्कमं अनोतिण्णा, तेसं पुग्गलाधिट्ठानं देसनं देसेन्ति। ये च ओतिण्णा, तेसं धम्माधिट्ठानं। सम्मुतिसच्चविसया पुग्गलाधिट्ठाना देसना, इतरा परमत्थसच्चविसया। पुरिमा करुणानुकूला, इतरा पञ्ञानुकूला। सद्धानुसारीगोत्तानं वा पुरिमा। ते हि पुग्गलप्पमाणिका, पच्छिमा धम्मानुसारी गोत्तानं। सद्धा चरितताय वा लोकाधिपतीनं वलेन पुग्गलाधिट्ठाना, पञ्ञाचरितताय धम्माधिपतीनं वसेन धम्माधिट्ठाना। पुरिमा च नेय्यत्था, पच्छिमा नीतत्था। इति भगवा तं तं विसेसं अपेक्खित्वा तत्थ तत्थ दुविधं देसनं देसेती ति वेदितब्बं।

---

१. सं० ३-९० पिट्ठे।

दिट्ठिगतिकानं सस्सतादिवसेन "अत्ता लोको" ति परिकप्पना येभुय्येन सत्त-विसया, न सङ्खारविसया ति आह "**सस्सतो लोको ति वा असस्सतो लोको ति वा ति आगतट्ठाने अत्तलोको वेदितब्बो**" ति। **यावता चन्दिमसूरिया परिहरन्तो** ति यत्तके ठाने चन्दिमसूरिया परिवत्तन्ति परिब्भमन्ति। **दिसा भन्ति विरोचमाना** ति तेसं परिब्भमनेनेव ता ता दिसा पभस्सरा हुत्वा विरोचन्ति। अथ वा **दिसा** ति उपयोग बहुवचनं, तस्मा सयं विरोचमाना चन्दिमसूरिया यत्तका दिसा भन्ति सोभेन्ति ओभा-सयन्ती ति अत्थो। **ताव सहस्सधा लोको** ति तत्तकेन पमाणेन सहस्सप्पकारो ओकास-लोको, सहस्सलोकधातुयो ति अत्थो। "ताव सहस्सवा" ति वा पाठो, ताव तत्तकं सहस्सं अस्स अत्थी ति तावसहस्सवा। **एत्था** ति सहस्सलोकधातुसङ्खाते लोके। B 242

तम्पी ति तिविधम्पि लोकं। **सब्बथा अवेदी** ति सब्बप्पकारतो पटिविज्झि। कथं पटिविज्झी ति आह "**तथा हो**" ति आदि। **तथा हिस्सा** ति इमस्स "सब्बथा विदितो" ति एतेन सम्बन्धो। **अस्सा** ति अनेन भगवता। **एको लोको सब्बे सत्ता आहारट्ठितिका** ति याय पुग्गलाधिट्ठानाय कथाय सब्बेसं सङ्खारानं पच्चयायत्तवुत्तिता वुत्ता, ताय सब्बो सङ्खारलोको एकविधो पकारन्तरस्स अभावतो। **द्वे लोका** ति आदीसुपि इमिनाव नयेन अत्थो वेदितब्बो। नामग्गहणेन चेत्थ निब्बानस्स अग्गहणं तस्स अलोकसभावत्ता। ननु च आहारट्ठितिका" ति एत्थ पच्चयायत्तवुत्तिताय मग्ग-फलधम्मानम्पि लोकता आपज्जती ति? नापज्जति परिञ्ञेय्यानं दुक्खसच्चधम्मानं इध लोको ति अधिप्पेतत्ता। अथ वा न लुज्जति न पलुज्जती ति यो गहितो तथा न होति, सो लोको ति तंगहणरहितानं लोकुत्तरानं नत्थि लोकता।

तिस्सो वेदना ति सुखदुक्खउपेक्खावसेन। **चत्तारो आहारा** ति कवळीकारा-हारो फस्साहारो मनोसञ्चेतनाहारो विञ्ञाणाहारो ति चत्तारो आहारा। तत्थ कवळीकाराहारो ओजट्ठमकं रूपं आहरती ति आहारो। फस्सो तिस्सो वेदना आहरती ति आहारो। मनोसञ्चेतना तीसु भवेसु पटिसन्धिं आहरती ति आहारो। विञ्ञाणं पटिसन्धिक्खणे नामरूपं आहरती ति आहारो। उपादानानं आरम्मणभूता खन्धा **उपादानक्खन्धा**। छ **अज्झत्तकानि आयतनानो** ति चक्खायतनादिमनायतनपरिय-न्तानि। '**सत्तविञ्ञाणट्ठितियो**' ति नानत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो, नानत्तकाया एकत्त-सञ्ञिनो, एकत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो, एकत्तकाया एकत्तसञ्ञिनो, हेट्ठिमा च तयो आरुप्पा ति इमा सत्त "विञ्ञाणं तिट्ठति एत्था ति विञ्ञाणट्ठितियो" ति वुच्चन्ति। तत्थ नानत्तं कायो एतेसं, नानत्तो वा कायो एतेसं ति नानत्तकाया, नानत्तसञ्ञा एतेसं अत्थी ति नानत्तसञ्ञिनो। इमिना नयेन सेसपदेसु पि अत्थो वेदितब्बो। B 243

सब्बे मनुस्सा[1] छ कामावचरा च देवा एकच्चे च विनिपातिका "**नानत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो**" ति वुच्चन्ति। अपरिमाणेसु हि चक्कवाळेसु अपरिमाणानं मनुस्सानं

---

१. दी० ट्ठ-२-९९, अं० ट्ठ ३-१६३ पिट्ठदीसुपि पस्सितब्बं।

वण्णसण्ठानादिवसेन द्वेपि एकसदिसा नत्थि। येपि कत्थचि यमकभातरो वण्णेन वा सण्ठानेन वा एकसदिसा होन्ति, तेसम्पि आलोकितविलोकितकथितहसितगमनट्ठानादीहि विसेसो होतियेव, पटिसन्धिसञ्ञा च नेसं तिहेतुकापि दुहेतुकापि अहेतुकापि होति, तस्मा सब्बेपि मनुस्सा नानत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो। छ कामावचरदेवेसु च केसञ्चि कायो नीलो होति, केसञ्चि पीतादिवण्णो, पटिसन्धिसञ्ञा च नेसं दुहेतुकापि तिहेतुकापि होति, तस्मा ते पि नानत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो। एकच्चे विनिपातिका पन चतुअपायविनिमुत्तका उत्तरमाता यक्खिनी, पियङ्करमाता, धम्मगुत्ता ति एवमादयो दट्ठब्बा। एतेसञ्हि ओदातकाळमङ्गुरच्छविसामवण्णादिवसेन चेव किसथूलरस्सदीघादिवसेन च कायो नाना होति, मनुस्सानं विय तिहेतुकदुहेतुकाहेतुकवसेन पटिसन्धिसञ्ञापि, ते पन देवा विय न महेसक्खा, कपणमनुस्सा विय अप्पेसक्खा, दुल्लभघासच्छादना दुक्खपीळिता विहरन्ति, एकच्चे काळपक्खे दुक्खिता जुण्हपक्खे सुखिता होन्ति, तस्मा सुखसमुस्सयतो विनिपतितत्ता सुखसमुस्सयतो विनिपातो एतेसं अत्थीति विनिपातिका ति वुत्ता सति पि देवभावे दिब्बसम्पत्तिया अभावतो। ये पनेत्थ तिहेतुका, तेसं धम्माभिसमयो पि होति। पियङ्करमाता हि यक्खिनी पच्चूससमये अनुरुद्धत्थेरस्स धम्मं सज्झायतो सुत्वा—

B 244 "मा सद्दं करि पियङ्कर, भिक्खु धम्मपदानि भासति।
अपि च धम्मपदं विजानिय, पटिपज्जेम हिताय नो सिया॥
पाणेसु च संयमामसे, सम्पजानमुसा न भणामसे।
सिक्खेम सुसील्यमत्तनो, अपि मुच्चेम पिसाचयोनिया" ति[1]—

एवं पुत्तकं सञ्ञापेत्वा तं दिवसं सोतापत्तिफलं पत्ता। उत्तरमाता पन भगवतो धम्मं सुत्वाव सोतापन्ना जाता। एवमिमे पि कायस्स चेव पटिसन्धिसञ्ञाय च नानत्ता "नानत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो" त्वेव सङ्ख्यं गच्छन्ति।

ब्रह्मपारिसज्जब्रह्मपुरोहितमहाब्रह्मसङ्खाता पन हीनमज्झिमपणीतभेदभिन्नेन पठमज्झानेन निब्बत्ता ब्रह्मकायिका चेव चतूसु अपायेसु सत्ता च "**नानत्तकाया एकत्तसञ्ञिनो**" ति वुच्चन्ति। एतेसु हि ब्रह्मकायिकेसु ब्रह्मपुरोहितानं कायो ब्रह्मपारिसज्जेहि पमाणतो विपुलतरो होति, महाब्रह्मानं कायो पन ब्रह्मपुरोहितेहि पि पमाणतो विपुलतरो होति। कामञ्च नेसं पभावसेन पि कायो हेट्ठिमहेट्ठिमेहि उळारतरो होति, तं पन इध अप्पमाणं। तथा हि परित्ताभादीनं परित्तसुभादीनञ्च काये सति पि पभावेमत्ते एकत्तवसेनेव ववत्थपीयती ति "एकत्तकाया" त्वेव ते वुच्चन्ति। एवमिमे ब्रह्मकायिका कायस्स नानत्ता पठमज्झानविपाकवसेन पन पटिसन्धिसञ्ञाय च एकत्ता नानत्तकाया एकत्तसञ्ञिनो। यथा च ते, एवं चतूसु अपायेसु सत्ता। निरयेसु हि केसञ्चि गावुतं, केसञ्चि अड्ढयोजनं, केसञ्चि योजनं अत्तभावो होति, देवदत्तस्स पन

१. सं० १-२११ पिट्ठे।

योजनसतिको जातो। तिरच्छानेसु पि केचि खुद्दका, केचि महन्ता, पेत्तिविसये पि केचि सट्ठिहत्था, केचि असीतिहत्था होन्ति, केचि सुवण्णा, केचि दुब्बण्णा, तथा कालकञ्चिका[1] असुरा। अपि चेत्थ दीघपीट्ठिकपेता नाम सट्ठियोजनिका पि होन्ति, पटिसन्धिसञ्ञा पन सब्बेसम्पि अकुसलविपाकाहेतुकाव होति। इति आपायिका पि "नानत्तकाया एकत्तसञ्ञिनो" त्वेव सङ्ख्यं गच्छन्ति।

दुतियज्झानभूमिका पन परित्ताभा अप्पमाणाभा आभस्सरा "**एकत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो**" ति वुच्चन्ति। नेसञ्हि सब्बेसं कायो एकप्पमाणोव होति। पटिसन्धिसञ्ञा पन दुतियततियज्झानविपाकवसेन नाना होति। B 245

परित्तसुभा, अप्पमाणसुभा, सुभकिण्हा पन ततियज्झानभूमिका "**एकत्तकाया एकत्तसञ्ञिनो**। तेसं वुत्तनयेन कायस्स चेव चतुत्थज्झानविपाकवसेन पटिसन्धिसञ्ञाय च एकत्ता। "वेहप्फला पि इमंयेव चतुत्थविञ्ञाणट्ठितिं भजन्ति कायस्स चेव पञ्चमज्झानविपाकवसेन पटिसन्धिसञ्ञाय च एकरूपत्ता। सुद्धावासा पन अपुनरावत्तनतो विवट्टपक्खे ठिता, न सब्बकालिका। कप्पसतसहस्सम्पि असङ्ख्येय्यम्पि बुद्धसुञ्ञे लोके नुप्पज्जन्ति, सोळसकप्पसहस्सब्भन्तरे बुद्धेसु उप्पज्जन्तेसुयेव उप्पज्जन्ति। धम्मचक्कप्पवत्तिस्स भगवतो खन्धावारट्ठानसदिसा होन्ति, तस्मा नेव विञ्ञाणट्ठितिं, न सत्तावासं भजन्ती" ति वदन्ति। महासीवत्थेरो पन "न खो पन सो सारिपुत्त आवासो सुलभरूपो, यो मया अनावुट्ठपुब्बो इमिना दीघेन अद्धुना अञ्ञत्र सुद्धावासेहि देवेही" ति[2] इमिना सुत्तेन "सुद्धावासा पि चतुत्थविञ्ञाणट्ठितिं चतुत्थसत्तावासं भजन्तो" ति वदति, तं अप्पटिबाहियत्ता सुत्तस्स अनुञ्ञातं। तस्मा असञ्ञसत्तं अपनेत्वा परित्तसुभादीसु अकनिट्ठपरियोसानासु नवसु भूमोसु सत्ता" एकत्तकाया एकत्तसञ्ञिनो" ति गहेतब्बा।

असञ्ञसत्ता पन विञ्ञाणाभावा एत्थ सङ्गहं न गच्छन्ति। तथा हि अनुप्पन्ने बुद्धे तित्थायतने पब्बजिता वायोकसिणे परिकम्मं कत्वा चतुत्थज्झानं निब्बत्तेत्वा ततो वुट्ठाय "धी चित्तं, धी चित्तं, चित्तस्स नाम अभावोयेव साधु। चित्तञ्हि निस्साय बधबन्धादिपच्चयं दुक्खं उप्पज्जति, चित्ते असति नत्थेतं" ति खन्ति रुचिं उप्पादेत्वा अपरिहीनज्झाना कालं कत्वा रूपपटिसन्धिवसेन असञ्ञभवे निब्बत्तन्ति। यो यस्स इरियापथो मनुस्सलोके पणिहितो अहोसि, सो तेन इरियापथेन निब्बत्तित्वा पञ्च कप्पसतानि ठितो वा निसिन्नो वा निपन्नो वा होति। एवं चित्तविरागभावनावसेन तेसं तत्थ विञ्ञाणुप्पत्ति न होती ति विञ्ञाणाभावतो विञ्ञाणट्ठितिं ते न भजन्ति।

नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं पन यथेव सञ्ञाय, एवं विञ्ञाणस्सपि सुखुमत्ता विञ्ञाणट्ठितीसु सङ्गहं न गच्छति। तञ्हि सञ्ञाय विय विञ्ञाणस्सपि सङ्खारावसेससुखुमभावप्पत्तत्ता परिब्यत्तविञ्ञाणकिच्चाभावतो नेव विञ्ञाणं, न च सब्बसो B 246

१. कालकञ्जिका (सी०, स्या०)   २. म० १-११६ पिट्ठे।

अविञ्ञाणं होती ति नेवविञ्ञाणानाविञ्ञाणं, तस्मा परिप्फुटविञ्ञाणकिच्चवन्तीसु विञ्ञाणट्ठितीसु सङ्गहं न गच्छति। तस्मा विनिपातिकेहि सद्धिं छ कामावचरदेवा मनुस्सा च नानत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो, पठमज्झानभूमिका अपायसत्ता च नानत्तकाया एकत्तसञ्ञिनो, दुतियज्झानभूमिका एकत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो, ततियज्झानभूमिका असञ्ञसत्तं वज्जेत्वा सेसा चतुत्थज्झानभूमिका च एकत्तकाया एकत्तसञ्ञिनो ति इमा चतस्सो विञ्ञाणट्ठितियो नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं वज्जेत्वा आकासानञ्चायतनादिहेट्ठिमारुप्पत्तयेन सद्धिं "सत विञ्ञाणट्ठितियो" ति वेदितब्बो।

अट्ठ लोकधम्मा ति लाभो, अलाभो, यसो, अयसो, निन्दा, पसंसा, सुखं, दुक्खं ति इमे अट्ठ लोकस्स धम्मत्ता लोकधम्मा। इमे हि सत्तलोकस्स अवस्संभाविनो धम्मा, तस्मा एतेहि विनिमुत्तो नाम कोचि सत्तो नत्थि। ते हि अपरापरं कदाचि लोकं अनुपतन्ति, कदाचि ते लोको च अनुपतति। वुत्तम्पि चेतं "अट्ठिमे भिक्खवे लोकधम्मा लोकं अनुपरिवत्तन्ति, लोको च अट्ठ लोकधम्मे अनुपरिवत्तती" ति[1]। घासच्छादनादीनं लद्धि, तानि एव वा लद्धब्बतो **लाभो**। तदभावो **अलाभो**। लाभग्गहणेन चेत्थ तब्बिसयो अनुरोधो गहितो, अलाभग्गहणेन विरोधो। एवं **यसा**दीसु पि तब्बिसयअनुरोधविरोधानं गहणं वेदितब्बं। लाभे पन आगते अलाभो आगतोयेव होती ति लाभो च अलाभो च वुत्तो। **यसा**दीसु पि एसेव नयो। तथा च लोहिते सति तदुपघातवसेन पुब्बो विय लाभादीसु अनुरोधे सति अलाभादीसु विरोधो लद्धावसरो एव होति।

नव सत्तावासा ति हेट्ठा वुत्त सत्तविञ्ञाणट्ठितियो एव असञ्ञसत्तचतुत्थारुप्पेहि सद्धिं "नव सत्तावासा" ति वुच्चन्ति। सत्ता आवसन्ति एतेसू ति सत्तावासा, नानत्तकायनानत्तसञ्ञी आदि भेदा सत्तनिकाया। ते हि सत्तनिकाया तप्परियापन्नानं
B 247 सत्तानं ताय एव तप्परियापन्नताय आधारो विय वत्तब्बतं अरहन्ति समुदायाधारताय अवयवस्स यथा "रुक्खे साखा" ति। सुद्धावासानम्पि सत्तावासग्गहणे कारणं हेट्ठा वुत्तमेव।

दसायतनानी ति अरूपसभावं मनायतनं रूपारूपादिमिस्सकं धम्मायतनञ्च ठपेत्वा केवलं रूपधम्मानंयेव वसेन चक्खायतनादयो पञ्च, रूपायतनादयो पञ्चा ति दसायतनानि वुत्तानि, मनायतनधम्मायतनेहि पन सद्धिं तानियेव "**द्वादसायतनानी**" ति वुत्तानि।

कस्मा पनेत्थ चक्खादयो "आयतनानी" ति वुच्चन्ति? आयतनतो[2] आयानं वा तननतो आयतस्स च नयनतो आयतनानि। चक्खुरूपादीसु हि तं तं द्वारारम्मणा चित्तचेतसिका धम्मा सेन सेन अनुभवनादिना किच्चेन आयतन्ति उट्ठहन्ति **घटन्ति**[3]

---

१. अं० ३-७ पिट्ठे। २. अभि० ट्ठ० २-४२ पिट्ठादीसु पि पस्सितब्बं।
३. घट्टेन्ति, अभिट्ठ० २-४२ पिट्ठे।

वायमन्ति, ते च पन आयभूते धम्मे एतानि तनोन्ति वित्थारेन्ति, इदञ्च अनमतग्गे संसारे पवत्तं अतिविय आयतं संसारदुक्खं याव न निवत्तति, ताव नयन्ति पवत्तयन्ति, तस्मा "आयतनानी" ति वुच्चन्ति। अपि च निवासट्ठानट्ठेन आकरट्ठेन समोसरणट्ठेन सञ्जातिदेसट्ठेन कारणट्ठेन च आयतनानि। तथा हि लोके "इस्सरायतनं वासुदेवायतनं" ति आदीसु निवासट्ठानं आयतनं ति वुच्चति। "सुवण्णायतनं रजतायतनं" ति आदीसु आकरो। सासने पन "मनोरमे आयतने, सेवन्ति नं विहङ्गमा" ति आदीसु[1] समोसरणट्ठानं। "दक्खिणापथो गुन्नं आयतनं" ति आदीसु सञ्जातिदेसो। "तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने" ति आदीसु[2] कारणं आयतनं ति वुच्चति। चक्खु आदीसु च ते ते चित्त चेतसिका धम्मा निवसन्ति तदायत्तवुत्तिताया ति चक्खादयो तेसं निवासट्ठानं। चक्खादीसु च ते आकिण्णा तन्निस्सितत्ता तदारम्मणत्ता चा ति चक्खादयोव नेसं आकरो। तत्थ तत्थ वत्थुद्वारारम्मणवसेन समोसरणतो चक्खादयोव नेसं समोसरणट्ठानं। तन्निस्सयारम्मणभावेन तत्थेव उप्पत्तितो चक्खादयोव नेसं सञ्जातिदेसो। चक्खादीनं अभावे अभावतो चक्खादयोव नेसं कारणं ति यथावुत्तेनत्थेन चक्खु च तं आयतनञ्चाति चक्खायतनं। एवं सेसानि पि।

इमानेव पन द्वादसायतनानि चक्खुविञ्ञाणादिछविञ्ञाणेहि सद्धिं **अट्ठारस** B 248
विदहनादितो "**धातुयो**" ति वुच्चन्ति। तथा हि चक्खादीसु एकेको धम्मो यथासम्भवं विदहति, धीयते, विधानं विधियते एताय, एत्थ वा धीयती ति धातू ति वुच्चति। लोकिया हि धातुयो कारणभावेन ववत्थिता व हुत्वा सुवण्णरजतादिधातुयो विय सुवण्णरजतादिं, अनेकप्पकारं संसारदुक्खं विदहन्ति, भारहारेहि च भारो विय सत्तेहि धीयन्ति धारीयन्ति, दुक्खविधानमत्तमेव चेता अवसवत्तनतो। एता हि च कारणभूताहि संसारदुक्खं सत्तेहि अनुविधीयति, तथाविहितञ्च तं एतास्वेव धीयति ठपीयति, तस्मा "धातुयो" ति वुच्चन्ति। अपि च यथा तित्थियानं अत्ता नाम सभावतो नत्थि, न एवमेता, एता पन अत्तनो सभावं धारेन्ती ति धातुयो। यथा च लोके विचित्ता हरितालमनोसिलादयो सेलावयवा "धातुयो" ति वुच्चन्ति। एवमेतापि धातुयो विय धातुयो। विचित्ता हेता ञाणञेय्यावयवा ति। यथा वा सरीरसङ्खातस्स समुदायस्स अवयवभूतेसु रससोणितादीसु अञ्ञमञ्ञविसभागलक्खणपरिच्छिन्नेसु धातुसमञ्ञा, एवमेतेसु पि पञ्चक्खन्धसङ्खातस्स अत्तभावस्स अवयवेसु धातुसमञ्ञा वेदितब्बा। अञ्ञमञ्ञविसभागलक्खणपरिच्छिन्ना हेते चक्खादयो ति। अपि च **धातु** ति निज्जीवमत्तस्सेतं अधिवचनं। तथा हि भगवा "छधातुरो अयं भिक्खु पुरिसो" ति आदीसु[3] जीवसञ्ञासमूहननत्थं धातुदेसनमकासि। तस्मा निज्जीवट्ठेन पि धातुयो ति वुच्चन्ति।

---

१. अं० २-३६ पिट्ठे।

२. म० ३-१३८, अं० १-२५६, अं० २-१४ पिट्ठादीसु।

३. म० ३-२८२ पिट्ठे।

एत्थ च "आहारट्ठितिका" ति पच्चयायत्तवुत्तितावचनेन सङ्खारानं अनिच्चता, ताय च "यदनिच्चं तं दुक्खं, यं दुक्खं तदनत्ता" ति[१] वचनतो दुक्खानत्तता च पकासिता होन्ती ति तीणि पि सामञ्ञलक्खणानि गहितानि। **नामं** ति चत्तारो अरूपिनो खन्धा, ते च अत्थतो फस्सादयो। **रूपं** ति भूतुपादायरूपानि, तानि च अत्थतो पथवी आदयो ति अविसेसेनेव सलक्खणतो सङ्खारा गहिता। तग्गहणेनेव ये ते सविसेसा कुसलादयो हेतुआदयो च, ते पि गहिता एव होन्ती ति आह "**इति अयं सङ्खारलोको पि सब्बथा विदितो**" ति।

B 249 एवं सङ्खारलोकस्स सब्बथा विदितभावं दस्सेत्वा इदानि सत्तलोकस्सपि सब्बथा विदितभावं दस्सेन्तो "**यस्मा पनेसा**" ति आदिमाह। तत्थ **आसयं जानाती** ति आगम्म चित्तं सेति एत्था ति आसयो मिगासयो विय। यथा मिगो गोचराय गन्त्वा पच्चागन्त्वा तत्थेव वनगहने सयती ति सो तस्स आसयो, एवं अञ्ञथा पवत्तित्वापि चित्तं आगम्म यत्थ सेति, सो तस्स आसयो ति वुच्चति। सो पन सस्सतदिट्ठिआदिवसेन चतुब्बिधो। वुत्तञ्च—

"सस्सतुच्छेददिट्ठी च, खन्ति चेवानुलोमिका।
यथाभूतञ्च यं ञाणं, एत्तं आसयसद्दितं" ति॥

तत्थ सब्बदिट्ठीनं सस्सतुच्छेददिट्ठीहि सङ्गहितत्ता सब्बेपि दिट्ठिगतिका सत्ता इमा एव द्वे दिट्ठियो सन्निस्सिता। यथाह "द्वयनिस्सितो ख्वायं कच्चान लोको येभुय्येन अत्थितञ्चेव नत्थितञ्चा" ति[२]। **अत्थिता** ति हि सस्सतग्गाहो अधिप्पेतो, **नत्थिता** ति उच्छेदग्गाहो। अयं ताव वट्टनिस्सितानं पुथुज्जनानं आसयो, विवट्टनिस्सितानं पन सुद्धसत्तानं अनुलोमिका खन्ति यथाभूतञाणं ति दुविधो आसयो। तत्थ "अनुलोमिका खन्ति विपस्सनाञाणं, यथाभूतञाणं पन मग्गञाणं" ति **सम्मोहविनोदनिया** विभङ्गट्ठकथायं[३] वुत्तं। तं चतुब्बिधम्पि सत्तानं आसयं जानाति, जानन्तो च तेसं दिट्ठिगतानं तेसञ्च ञाणानं अप्पवत्तिक्खणे पि जानाति। वुत्तञ्हेतं—

"कामं सेवन्तञ्ञेव जानाति 'अयं पुग्गलो कामगरुको कामासयो कामाधिमुत्तो' ति, कामं सेवन्तञ्ञेव जानाति 'अयं पुग्गलो नेक्खम्मगरुको नेक्खम्मासयो नेक्खम्माधिमुत्तो' ति" आदि[४]।

अनुसयं जानाती ति अनु अनु सयन्ती ति अनुसया, अनुरूपं कारणं लभित्वा उप्पज्जन्ती ति अत्थो। एतेन नेसं कारणलाभे उप्पज्जनारहतं दस्सेति। अप्पहीना हि किलेसा कारणलाभे सति उप्पज्जन्ति। के पन ते? कामरागादयो सत्त अनागता
B 250 किलेसा, अतीता पच्चुप्पन्ना च तंसभावत्ता तथा वुच्चन्ति। न हि धम्मानं कालभेदेन सभावभेदो अत्थि, तं सत्तविधं अनुसयं तस्स तस्स सत्तस्स सन्ताने परोपरभावेन[५] पवत्तमानं जानाति।

---

१. सं० २-१९ पिट्ठे। २. सं० १-२५७ पिट्ठे। ३. अभि०-ट्ठ-२-४४० पिट्ठे।
४. खु० ९-११८ पिट्ठे पटिसम्भिदामग्गे। ५. परोवरभावेन (सी०) परम्परभावेन (क०)

चरितं जानाती ति एत्थ **चरितं** ति सुचरितदुच्चरितं। तञ्हि विभङ्गे[1] चरितनिद्देसे निद्दिट्ठं। अथ वा **चरितं** ति चरिया वेदितब्बा। ता पन रागदोसमोहसद्धाबुद्धिवितक्कवसेन छ मूलचरिया, तासं अपरियन्तो अन्तरभेदो, संसग्गभेदो पन तेसट्ठिविधो। तं चरितं सभावतो संकिलेसतो वोदानतो समुट्ठानतो फलतो निस्सन्दतो ति एवमादिना पकारेन जानाति।

अधिमुत्तिं जानाती ति एत्थ **अधिमुत्ती** ति अज्झासयधातु। सा दुविधा हीनाधिमुत्ति पणीताधिमुत्ती ति। याय हीनाधिमुत्तिका सत्ता हीनाधिमुत्तिकेयेव सेवन्ति, पणीताधिमुत्तिका च पणीताधिमुत्तिके एव। सचे हि आचरियुपज्झाया न सीलवन्तो होन्ति, सद्धिविहारिका सीलवन्तो होन्ति, ते अत्तनो आचरियुपज्झाये पि न उपसङ्कमन्ति, अत्तना सदिसे सारुप्पभिक्खूयेव उपसङ्कमन्ति। सचे आचरियुपज्झाया सारुप्पभिक्खू, इतरे असारुप्पा, ते पि न आचरियुपज्झाये उपसङ्कमन्ति, अत्तना सदिसे हीनाधिमुत्तिके एव उपसङ्कमन्ति। तिपिटकचूळाभयत्थेरो किर नागदीपे चेतियवन्दनाय पञ्चहि भिक्खुसतेहि सद्धिं गच्छन्तो एकस्मिं गामे मनुस्सेहि निमन्तितो थेरेन च सद्धिं एको असारुप्पभिक्खु अत्थि, धुरविहारे पि एको असारुप्पभिक्खु अत्थि, भिक्खुसंघेसु गामं ओसरन्तेसु ते उभो जना किञ्चापि आगन्तुकेन नेवासिको, नेवासिकेन वा आगन्तुको न दिट्ठपुब्बो, एवं सन्ते पि एकतो हुत्वा हसित्वा हसित्वा कथयमाना अट्ठंसु। थेरो दिस्वा "सम्मासम्बुद्धेन जानित्वा **धातुसंयुत्तं**[2] कथितं" ति आह। एवमयं हीनाधिमुत्तिकादीनं अञ्ञमञ्ञोपसेवनादिनियामिका अज्झासयधातु अज्झासयभावो अधिमुत्ती ति वुच्चति, तं अधिमुत्तिं जानाति। "इमस्स अधिमुत्ति हीना, इमस्स पणीता। तत्थापि इमस्स मुदु, इमस्स मुदुतरा, इमस्स मुदुतमा" ति आदिना पटिविज्झति। अधिमुत्तिया पन तिक्खमुदुभावादिको इन्द्रियानं तिक्खमुदुभावादिना वेदितब्बो।

अप्परजक्खे ति पञ्ञामये अक्खिम्हि अप्पं परित्तं रागदोसमोहरजं एतेसं ति B 251
अप्परजक्खा, अप्पं वा रागादिरजं एतेसं ति अप्परजक्खा, अनुस्सदरागादिरजा सत्ता। ते अप्परजक्खे। **महारजक्खे** ति एत्था पि एसेव नयो, उस्सदरागादिरजा महारजक्खा। **जानाती** ति "इमस्स रागरजो अप्पो, इमस्स दोसरजो अप्पो" ति आदिना अप्परजक्खादिके जानाति।

तिक्खिन्द्रिये ति तिखिणेहि सद्धादीहि इन्द्रियेहि समन्नागते। **मुदिन्द्रिये** ति मुदुकेहि सद्धादीहि इन्द्रियेहि समन्नागते। उभयत्था पि उपनिस्सयभूतिन्द्रियानि अधिप्पेतानि। **स्वाकारे** ति सुन्दराकारे, कल्याणपकतिके विवट्टज्झासये ति अत्थो। येसं वा आसयादयो आकारा कोट्ठासा सुन्दरा, ते **स्वाकारा**। विपरीता **द्वाकारा**। **दुविञ्ञापया** ति सम्मत्तनियामं विञ्ञापेतुं सुकरे सद्दे पञ्ञवन्ते च, ये वा कथितं कारणं सल्लक्खेन्ति, सुखेन सक्का होन्ति विञ्ञापेतुं, ते **सुविञ्ञापया**। विपरीता

---

१. अभि २-३५३ पिट्ठे।   २. सं० १-३५८ पिट्ठे।

दुविञ्ञापया। **भब्बे अभब्बे** ति एत्थ ये अरियमग्गप्पटिवेधस्स अनुच्छविका उपनिस्सय सम्पन्ना कम्मावरणकिलेसावरणविपाकावरणरहिता, ते **भब्बा**। विपरीता **अभब्बा**। **तस्मा** ति यस्मा भगवा अपरिमाणे सत्ते आसयादितो अनवसेसेत्वा जानाति, तस्मा अस्स भगवतो सत्तलोको पि सब्बथा विदितो।

ननु च सत्तेसु पमाणादि पि जानितब्बो अत्थी ति ? अत्थि, तस्स पन जाननं न निब्बिदाय विरागाय निरोधाया ति इध न गहितं, भगवतो पन तम्पि सुविदितं सुववत्थापितमेव, पयोजनाभावा देसनं नारुळ्हं। तेन वुत्तं—

"अथ खो भगवा परित्तं नखसिखायं पंसुं आरोपेत्वा भिक्खू आमन्तेसि 'तं किं मञ्ञथ भिक्खवे, कतमं नु खो बहुतरं यो वायं मया परित्तो नखसिखायं पंसु आरोपितो, अयं वा महापथवी' ति" आदि[१]।

एवं सत्तलोकस्स पि सब्बथा विदितभावं दस्सेत्वा इदानि ओकासलोकस्स पि तथेव
B 252 विदितभावं दस्सेन्तो आह **"यथा च सत्तलोको"** ति आदि। ओकासलोको पि सब्बथा विदितो ति सम्बन्धो। चक्कवाळं ति लोकधातु। सा हि नेमिमण्डलसदिसेन चक्कवाळ-पब्बतेन समन्ततो परिक्खित्तत्ता "चक्कवाळं" ति वुच्चति। अड्ढुड्ढानी ति उपड्ढचतुत्थानि, तीणि सतानि पञ्ञासञ्चा ति अत्थो। नहुतानी ति दससहस्सानि। **सङ्खाता** ति कथिता। यस्मा पथवी नामायं तिरियं अपरिच्छिन्ना, तस्मा **"एत्तकं बहलत्तेन, संखातायं वसुन्धरा"** ति बहलतोयेव परिच्छेदो वुत्तो। ननु चक्कवाळपब्बतेहि तं तं चक्कवाळपथवी परिच्छिन्ना ति ? न तदञ्ञचक्कवाळपथविया एकाबद्धभावतो। तिण्णं तिण्णञ्हि पत्तानं अन्तराळसदिसे तिण्णं तिण्णं लोकधातूनं अन्तरेयेव पथवी नत्थि लोकन्तरनिरयभावतो, चक्कवाळपब्बतानं पन चक्कवाळपब्बतन्तरेहि सम्बद्धट्ठाने पथवी एकाबद्धाव, विवट्टकाले सण्ठहमाना पि पथवी यथासण्ठितपथविया एकाबद्धाव सण्ठहति।

सण्ठिती ति हेट्ठा उपरितो चाति सब्बसो ठिति। **एवं सण्ठिते** ति एवं अवट्ठिते। **एत्था** ति चक्कवाळे। **अज्झोगाळ्हो** ति ओगाहित्वा अनुपविसित्वा ठितो। अच्चुग्गतो तावदेवा ति तत्तकमेव चतुरासीति योजनसतसहस्सानियेव उग्गतो। न केवलञ्चेत्थ उब्बेधोव, अथ खो आयामवित्थारापिस्स तत्तकायेव। वुत्तञ्हेतं—

"सिनेरु भिक्खवे पब्बतराजा चतुरासीति योजनसहस्सानि आयामेन, चतुरासीति योजनसहस्सानि वित्थारेना" ति[२]।

सिनेरुपब्बतुत्तमो ति पब्बतेसु उत्तमो, पब्बतोयेव वा उत्तमो पब्बतुत्तमो, सिनेरु-सङ्खातो पब्बतुत्तमो सिनेरुपब्बतुत्तमो, सिनेरुपब्बतराजा ति वुत्तं होति। तस्स च पाचीनपस्सं रजतमयं, तस्मा तस्स पभाय अज्झोत्थरन्तिया पाचीनदिसाय समुद्दोदकं खीरं

---

१. सं० ३-४०० पिट्ठे। २. अं० २-४७४ पिट्ठे।

विय पञ्ञायति। दक्खिणपस्सं पन इन्दनीलमणिमयं, तस्मा दक्खिणदिसाय समुद्दोदकं येभुय्येन नीलवण्णं हुत्वा पञ्ञायति, तथा आकासं। पच्छिमपस्सं फलिकमयं। उत्तरपस्सं सुवण्णमयं। चत्तारो समुद्दा पि सिनेरुरस्मीहि एव परिच्छिन्ना। तथा हि पुब्बदक्खिणपस्सेहि निक्खन्ता रजतमणिरस्मियो एकतो हुत्वा महासमुद्दपिट्ठेन गन्त्वा चक्कवाळपब्बतं आहच्च तिट्ठन्ति, दक्खिणपच्छिमपस्सेहि निक्खन्ता मणिफलिकरस्मियो
पच्छिमुत्तरपस्सेहि निक्खन्ता फलिकसुवण्णरस्मियो, उत्तरपाचीनपस्सेहि निक्खन्ता B 253
सुवण्णरजतरस्मियो एकतो हुत्वा महासमुद्दपिट्ठेन गन्त्वा चक्कवाळपब्बतं आहच्च तिट्ठन्ति, तासं रस्मीनं अन्तरेसु चत्तारो महासमुद्दा होन्ति।

ततो ति सिनेरुस्स हेट्ठा उपरि च वुत्तप्पमाणतो। **उपड्ढुपड्ढेना** ति उपड्ढेन उपड्ढेन। इदं वुत्तं होति—द्वाचत्तालीस योजनसहस्सानि समुद्दे अज्झोगाळ्हो तत्तकमेव उपरि उग्गतो **युगन्धरपब्बतो**, एकवीसति योजनसहस्सानि महासमुद्दे अज्झोगाळ्हो तत्तकमेव च उपरि उग्गतो **ईसधरो** पब्बतो ति इमिना नयेन सेसेसुपि उपड्ढुपड्ढप्पमाणता वेदितब्बा। यथा महासमुद्दो याव चक्कवाळपादमूला अनुपुब्बनिन्नो, एवं याव सिनेरुपादमूला ति हेट्ठा सिनेरुप्पमाणतो उपड्ढप्पमाणो पि युगन्धरपब्बतो पथवियं सुप्पतिठितो। एवं ईसधरादयो पी ति दट्ठब्बं। वुत्तञ्हेतं "महासमुद्दो भिक्खवे अनुपुब्बनिन्नो अनुपुब्बपोणो अनुपुब्बपब्भारो" ति[1]। सिनेरुयुगन्धरादीनं अन्तरे **सीदन्तरसमुद्दा**[2] नाम होन्ति। तत्थ किर उदकं सुखुमं मोरपत्तमत्तम्पि पक्खित्तं पतिट्ठातुं न सक्कोति सीदतेव, तस्मा ते सीदसमुद्दा[3] नाम वुच्चन्ति। ते पन वित्थारतो यथाक्कमं सिनेरुआदीनं अच्चुग्गमसमानपरिमाणा ति वदन्ति। **अज्झोगाळ्हुग्गता** ति अज्झोगाळ्हा च उग्गता च। **ब्रह्मा** ति महन्ता।

सिनेरुस्स समन्ततो ति परिक्खिपनवसेन सिनेरुस्स समन्ततो ठिता। सिनेरुं ताव परिक्खिपित्वा ठितो युगन्धरो, तं परिक्खिपित्वा ईसधरो। एवं तं तं परिक्खिपित्वा ठिता "सिनेरुस्स समन्ततो" ति वुत्ता। कत्थचि पन "सिनेरुं परिक्खिपित्वा अस्सकण्णो नाम पब्बतो पतिट्ठितो, तं परिक्खिपित्वा विनतको नाम पब्बतो" ति एवं अञ्ञोयेव अनुक्कमो आगतो। तथा हि **निमिजातके**—

"सहस्सयुत्तं हयवाहिं, दिब्बयान'मधिट्ठितो।
यायमानो महाराजा, अद्दा सीदन्तरे नगे॥
दिस्वाना' मन्तयी सूतं, इमे के नाम पब्बता" ति[4]॥

एवं निमिमहाराजेन पुट्ठेन मातलिदेवपुत्तेन— B 254

"सुदस्सनो करवीको, ईसधरो युगन्धरो।
नेमिन्धरो विनतको, अस्सकण्णो गिरी ब्रहा॥

---

१. वि०, ४-४१९, खु० १-१३९ पिट्ठेसु। २. सीदसमुद्दा (स्या०)
३. सीदन्तरसमुद्दा (?) ४. खु० ६-२०१, २०२ पिट्ठेसु।

एते सीदन्तरे नगा, अनुपुब्बसमुग्गता।
महाराजानमावासा, यानि त्वं राज पस्ससी'' ति[१]—

वुत्तं।

तत्थ अट्ठकथायं इदं वुत्तं—

"अयं महाराज एतेसं सब्बबाहिरो सुदस्सनो पब्बतो नाम, तदनन्तरे करवीको नाम, सो सुदस्सनतो उच्चतरो। उभिन्नम्पि पन तेसं अन्तरे एकोपि सीदन्तरमहासमुद्दो। करवीकस्स अनन्तरे ईसधरो नाम, सो करवीकतो उच्चतरो। तेसम्पि अन्तरे एको सीदन्तरमहासमुद्दो। ईसधरस्स अनन्तरे युगन्धरो नाम, सो ईसधरतो उच्चतरो। तेसम्पि अन्तरे एको सीदन्तरमहासमुद्दो। युगन्धरस्स अनन्तरे नेमिन्धरो नाम, सो युगन्धरतो उच्चतरो। तेसम्पि अन्तरो एको सीदन्तर-महासमुद्दो। नेमिन्धरस्स अनन्तरे विनतको नाम, सो नेमिन्धरतो उच्चतरो। तेसम्पि अन्तरे एको सीदन्तरमहासमुद्दो। विनतकस्स अनन्तरे अस्सकण्णो नाम, सो विनतकतो उच्चतरो। तेसम्पि अन्तरे एको सीदन्तरमहासमुद्दो। एते सीदन्तर-महासमुद्दे सत्त पब्बता अनुपटिपाटिया समुग्गता सोपानसदिसा हुत्वा ठिता'' ति[२]।

योजनानं सतानुच्चो हिमवा पञ्च पब्बतो ति हिमवा पब्बतो पञ्च योजनसतानि उच्चो, उब्बेधो ति अत्थो। तत्थ हिमवा ति हिमपातसमये हिमयुत्तताय हिमं अस्स अत्थी ति हिमवा, गिम्हकाले हिमं वमती ति हिमवा। **पब्बतो** ति सेलो। सेलो हि सन्धिसङ्खातेहि पब्बेहि सहितत्ता "पब्बतो" ति वुच्चति, पसवनादिवसेन जलस्स सारभूतानं भेसज्जादीनं वत्थूनञ्च गिरणतो "गिरी" ति च वुच्चति। **योजनानं सहस्सानि, तीणि आयतवित्थतो** ति योजनानं तीणि सहस्सानि आयामतो च वित्थारतो
B 255 चा ति अत्थो, आयामतो च वित्थारतो च तीणि योजनसहस्सानी ति वुत्तं होति।

चतुरासीति सहस्सेहि, कूटेहि पटिमण्डितो ति सुदस्सनकूटचित्रकूटादीहि चतुरासीतिकूटसहस्सेहि पटिमण्डितो, सोभितो ति अत्थो। अपि चेत्थ अवुत्तो पि अयं विसेसो वेदितब्बो[३]—अयं हिमवा नाम पब्बतो समन्ततो सन्दमानपञ्चसतनदीविचित्तो, यत्थ आयामवित्थारेन चेव गम्भीरताय च पण्णास पण्णास योजना दियड्ढयोजन-सतपरिमण्डला अनोतत्तदहो कण्णमुण्डदहो रथकारदहो छद्दन्तदहो कुणालदहो मन्दा-किनीदहो सीहप्पपातदहो ति सत्त महासरा पतिट्ठिता। तेसु **अनोतत्तो** सुदस्सनकूटं, चित्रकूटं, काळकूटं, गन्धमादनकूटं केलासकूटं ति इमेहि पञ्चहि पब्बतेहि परिक्खित्तो। तत्थ **सुदस्सनकूटं** सोवण्णमयं द्वियोजनसतुब्बेधं अन्तोवङ्कं काकमुखसण्ठानं तमेव सरं

---

१. खु० ६–२०१, २०२ पिट्ठेसु।

२. जातक-ट्ठ ६–१५६, १५७ पिट्ठेसु।

३. म० ट्ठ, ३–२४, अं-ट्ठ, ३–२१८, सुत्तनिपात–ट्ठ, २-१६० पिट्ठादोसुपि पस्सितब्बं।

पटिच्छादेत्वा ठितं। **चित्तकूटं** सब्बरतनमयं। **काळकूटं** अञ्जनमयं। **गन्धमादनकूटं** सानुमयं अब्भन्तरे मुग्गवण्णं काळानुसारियादिमूलगन्धो चन्दनादिसारगन्धो सरलादिफेग्गुगन्धो लवङ्गादितचगन्धो कपिट्ठादिपपटिकगन्धो सज्जादिरसगन्धो तमालादिपत्तगन्धो नागकुङ्कुमादिपुप्फगन्धो जातिफलादिफलगन्धो सब्बथा गन्धभावतो गन्धगन्धो ति इमेहि दसहि गन्धेहि उस्सन्नं नानप्पकारओसधसञ्छन्नं काळपक्खउपोसथदिवसे आदित्तमिव अङ्गारं जलन्तं तिट्ठति।

तत्थेव नन्दमूलकं[1] नाम पब्भारं पच्चेकबुद्धानं वसनोकासो। तिस्सो गुहायो सुवण्णगुहा मणिगुहा रजतगुहा ति। तत्थ मणिगुहाद्वारे मञ्जूसको नाम रुक्खो योजनं उब्बेधेन, योजनं वित्थारेन, सो यत्तकानि उदके वा थले वा पुप्फानि, सब्बानि पुप्फति विसेसेन पच्चेकबुद्धागमनदिवसे, तस्सूपरितो सब्बरतनमाळो होति। तत्थ सम्मज्जनकवातो कचवरं छड्डेति, समकरणवातो सब्बरतनमयं वालिकं समं करोति, सिञ्चनकवातो अनोतत्तदहतो आनेत्वा उदकं सिञ्चति, सुगन्धकरणवातो सब्बेसं गन्धरुक्खानं गन्धे आनेति, ओचिनकवातो पुप्फानि ओचिनित्वा पातेति, सन्थरणकवातो सब्बत्थ सन्थरति, सदा पञ्ञत्तानेव चेत्थ आसनानि होन्ति। येसु पच्चेकबुद्धुप्पाददिवसे उपोसथदिवसे च सब्बपच्चेकबुद्धा सन्निपतित्वा निसीदन्ति, अयं तत्थ पकति। अभिसम्बुद्धपच्चेकबुद्धो तत्थ गन्त्वा पञ्ञत्तासने निसीदति। ततो सचे तस्मिं काले अञ्ञेपि पच्चेकबुद्धा संविज्जन्ति, तेपि तङ्खणं सन्निपतित्वा पञ्ञत्तासनेसु निसीदन्ति, निसीदित्वा किञ्चिदेव समापत्तिं समापज्जित्वा वुट्ठहन्ति। ततो संघत्थेरो अधुनागतं पच्चेकबुद्धं सब्बेसं अनुमोदनत्थाय "कथमधिगतं" ति कम्मट्ठानं पुच्छति, तदा सो अत्तनो उदानब्याकरणगाथं भासति। एवमिदं गन्धमादनकूटं पच्चेकबुद्धानं आवासट्ठानं होती ति वेदितब्बं। B 256

केलासकूटं पन रजतमयं। सब्बानि चेतानि चित्तकूटादीनि सुदस्सनेन समानुब्बेधसण्ठानानि तमेव सरं पटिच्छादेत्वा ठितानि। सब्बानि पन पुथुलतो पञ्ञासयोजनानि, आयामतो पन उब्बेधतो विय द्वियोजनसतानेवा ति वदन्ति। तानि सब्बानि देवानुभावेन नागानुभावेन च ठस्सन्ति, नदियो च तेसु सन्दति, तं सब्बम्पि उदकं अनोतत्तमेव पविसति, चन्दिमसूरिया दक्खिणेन वा उत्तरेन वा गच्छन्ता पब्बतन्तरेन तत्थ ओभासं करोन्ति, उजुं गच्छन्ता न करोन्ति, तेनेवस्स "**अनोतत्तं**" ति सङ्खा उदपादि। तत्थ रतनमयमनुञ्ञसोपानसिलातलानि निम्मच्छकच्छपानि फलितसदिसनिम्मलूदकानि न्हानतित्थानि तदुपभोगीसत्तानं साधारणकम्मुनाव सुप्पटियत्तानि सुसण्ठितानि होन्ति, येसु बुद्धपच्चेकबुद्धखीणासवा च इद्धिमन्तो च इसयो न्हायन्ति, देवयक्खादयो उय्यानकीळं कीळन्ति।

तस्स चतूसु पस्सेसु सीहमुखं हत्थिमुखं अस्समुखं उसभमुखं ति चत्तारि मुखानि होन्ति, येहि चतस्सो नदियो सन्दन्ति। सीहमुखेन निक्खन्तनदीतीरे सीहा बहुतरा

---

१. सुत्तनिपात-ट्ठ-१-५९ पिट्ठेपि पस्सितब्बं।

होन्ति, हत्थिमुखादीहि हत्थिअस्सउसभा। पुरत्थिमदिसतो निक्खन्तनदी अनोतत्तं तिक्खत्तुं पदक्खिणं कत्वा इतरा तिस्सो नदियो अनुपगम्म पाचीनहिमवन्तेनेव अमनुस्सपथं गन्त्वा महासमुद्दं पविसति। पच्छिमदिसतो च उत्तरदिसतो च निक्खन्तनदियो पि तथेव पदक्खिणं कत्वा पच्छिमहिमवन्तेनेव उत्तरहिमवन्तेनेव च अमनुस्सपथं गन्त्वा महासमुद्दं पविसन्ति। दक्खिणदिसतो निक्खन्तनदी पन तं तिक्खत्तुं पदक्खिणं कत्वा दक्खिणेन उजुकं पासाणपिट्ठेनेव सट्ठि योजनानि गन्त्वा पब्बतं पहरित्वा वुट्ठाय परिक्खेपेन तिगावुतप्पमाणा उदकधारा हुत्वा आकासेन सट्ठि योजनानि गन्त्वा
B 257 तियग्गळे नाम पासाणे पतिता, पासाणो उदकधारावेगेन भिन्नो। तत्थ पञ्ञासयोजनप्पमाणा तियग्गळा नाम महापोक्खरणी जाता। महापोक्खरणिया कूलं भिन्दित्वा पासाणं पविसित्वा सट्ठि योजनानि गता, ततो घनपथविं भिन्दित्वा उमङ्गेन सट्ठि योजनानि गन्त्वा विञ्चुं नाम तिरच्छानपब्बतं पहरित्वा हत्थतले पञ्चङ्गुलिसदिसा पञ्चधारा हुत्वा पवत्तति। सा तिक्खत्तुं अनोतत्तं पदक्खिणं कत्वा गतट्ठाने "**आवट्टगङ्गा**" ति वुच्चति, उजुकं पासाणपिट्ठेन सट्ठि योजनानि गतट्ठाने "**कण्हगङ्गा**" ति, आकासेन सट्ठि योजनानि गतट्ठाने '**आकासगङ्गा**" ति, तियग्गळपासाणे पञ्ञासयोजनाकासे ठिता "**तियग्गळपोक्खरणी** ति, कूलं भिन्दित्वा पासाणं पविसित्वा सट्ठि योजनानि गतट्ठाने "**बहलगङ्गा**" ति, उमङ्गेन सट्ठि योजनानि गतट्ठाने "**उमङ्गगङ्गा**" ति वुच्चति। विञ्चुं नाम तिरच्छानपब्बतं पहरित्वा पञ्चधारा हुत्वा पवत्तट्ठाने पन गङ्गा यमुना अचिरवती सरभू मही ति पञ्चधा सङ्ख्यं गता। एवमेता पञ्च महानदियो हिमवन्ततो पभवन्ति।

छद्दन्तदहस्स पन[1] मज्झे द्वादसयोजनप्पमाणे ठाने सेवालो वा पणकं वा नत्थि, मणिक्खन्धवण्णं उदकमेव सन्तिट्ठति, तदनन्तरं योजनवित्थतं सुद्धकल्लहारवनं तं उदकं परिक्खिपित्वा ठितं, तदनन्तरं योजनवित्थतमेव सुद्धनीलुप्पलवनं तं परिक्खिपित्वा ठितं, योजनयोजनवित्थतानेव रत्तुप्पलसेतुप्पलरत्तपदुमसेतपदुमकुमुदवनानि पुरिमं पुरिमं परिक्खिपित्वा ठितानि, इमेसं पन सत्तन्नं वनानं अनन्तर सब्बेसम्पि कल्लहारादीनं वसेन वोमिस्सकवनं योजनवित्थतमेव तानि परिक्खिपित्वा ठितं, तदनन्तरं नागानं कटिप्पमाणे[2] उदके योजनवित्थतमेव रत्तसालिवनं, तदनन्तरं उदकपरियन्ते नीलपीतलोहितोदातसुरभिसुखुमकुसुमसमाकिण्णं खुद्दकगच्छवनं ति इमानि दस वनानि योजनयोजनवित्थतानेव। ततो खुद्दकराजमासमहाराजमासमुग्गवनं, तदनन्तरं तिपुसएळालुकअलाबुकुम्भण्डवल्लिवनानि, ततो पूगरुक्खप्पमाणं उच्छुवनं, ततो हत्थिदन्तप्पमाणफलं कदलिवनं, ततो सालवनं, तदनन्तरं चाटिप्पमाणफलं पनसवनं, ततो मधुरफलं अम्बवनं, ततो चिञ्चवनं, ततो कपिट्ठवनं, ततो वोमिस्सको महावनसण्डो, ततो वेणुवनं, वेणुवनं
B 258 पन परिक्खिपित्वा सत्त पब्बता ठिता, तेसं बाहिरन्ततो पट्ठाय पठमो चूळकाळपब्बतो नाम, दुतियो महाकाळपब्बतो नाम, ततो उदकपस्सपब्बतो नाम, ततो चन्दपस्सपब्बतो

१. जातक-ट्ठ-५-३८ पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं। २. पतिट्ठप्पमाणे (सी०, स्या०)

नाम, ततो सूरियपस्सपब्बतो नाम, ततो मणिपस्सपब्बतो नाम, सत्तमो सुवण्णपस्सपब्बतो नाम। सो उब्बेधतो सत्तयोजनिको छद्दन्तदहं परिक्खिपित्वा पत्तस्स मुखवट्टि विय ठितो। तस्स अब्भन्तरिमपस्सं सुवण्णवण्णं, ततो निक्खन्तेन ओभासेन छद्दन्तदहो समुग्गतबालसूरियो विय होति। बाहिरिमपब्बतेसु पन एको उब्बेधतो छ योजनानि, एको पञ्च, एको चत्तारि, एको तीणि, एको द्वे, एको योजनं।

एवं सत्तपब्बतपरिक्खित्तस्स पन तस्स दहस्स पुब्बुत्तरकण्णे उदकवातप्पहरणोकासे महानिग्रोधरुक्खो, तस्स खन्धो परिक्खेपतो पञ्चयोजनिको, उब्बेधतो सत्तयोजनिको। चतूसु दिसासु चतस्सो साखायो छ छ योजनिका, उद्धं उग्गतसाखा पि छ योजनिकाव। इति सो मूलतो पट्ठाय उब्बेधेन तेरसयोजनिको साखानं ओरिमन्ततो याव पारिमन्ता द्वादसयोजनिको अट्ठहि पारोहसहस्सेहि पटिमण्डितो मुण्डमणिपब्बतो विय विलासमानो तिट्ठति। छद्दन्तदहस्स पन पच्छिमदिसाभागे सुवण्णपब्बते द्वादसयोजनिका कञ्चनगुहा। छद्दन्तो नागराजा वस्सारत्ते अट्ठसहस्सनागपरिवुतो कञ्चनगुहायं वसति, गिम्हकाले उदकवातं सम्पटिच्छमानो महानिग्रोधमूले पारोहन्तरे तिट्ठति।

मन्दाकिनिया पन मज्झे पञ्चवीसतियोजनमत्ते ठाने सेवालो वा पणकं वा नत्थि, फलिकवण्णं उदकमेव होति, ततो परं पन नागानं कटिप्पमाणे[1] उदके अड्ढयोजनवित्थतं सेतपदुमवनं तं उदकं परिक्खिपित्वा ठितं। तत्थ मुळालं नङ्गलसीसमत्तं होति, भिसं महाभेरिपोक्खरप्पमाणं होति। तस्स एकेकस्मिं पब्बन्तरे आळ्हकप्पमाणं खीरं होति। पदुमानं पुप्फसमये वातो रेणुवट्टिं उट्ठापेत्वा पदुमिनीपत्तेसु ठपेति, तत्थ उदकफुसितानि पतन्ति, ततो आदिच्चपाकेन पच्चित्वा पक्कअयोघटिका विय पोक्खरमधु तिट्ठति, तदनन्तरं तावमहन्तमेव रत्तपदुमवनं, तदनन्तरं रत्तकुमुदवनं, तदनन्तरं सेतकुमुदवनं, B 259
तदनन्तरं नीलुप्पलवनं, तदनन्तरं रत्तुप्पलवनं, तदनन्तरं सुगन्धसालिवनं, तदनन्तरं एळालुकअलाबुकुम्भण्डादीनि मधुररसानि वल्लिफलानि, तदनन्तरं अड्ढयोजनवित्थतमेव उच्छुवनं, तत्थ पूगरुक्खक्खन्धप्पमाणं उच्छु। तदनन्तरं कदलिवनं, यतो दुवे पक्कानि खादन्ता किलमन्ति। तदनन्तरं चाटिप्पमाणफलं पनसवनं, तदनन्तरं अम्बवनं, जम्बुवनं, कपिट्ठवनं ति सङ्खेपतो तस्मिं दहे खादितब्बयुत्तकं फलं नाम नत्थी ति न वत्तब्बं। इति इमस्मिं हिमवति विज्जमानकसत्तमहासरप्पभुतीनं पमाणसण्ठानादिभेदं सब्बमेव विसेसं भगवा सब्बथा अवेदि अञ्ञासि पटिविज्झियेवा ति दट्ठब्बं।

तिपञ्चयोजनक्खन्धपरिक्खेपा ति पन्नरसयोजनप्पमाणक्खन्धपरिक्खेपा, खन्धस्स परिणाहो पन्नरसयोजनप्पमाणो ति वुत्तं होति। **नगव्हया** ति नगसद्देन अव्हातब्बा, रुक्खाभिधाना ति अत्थो। रुक्खो हि न गच्छती ति नगो ति वुच्चति। नगव्हया जम्बू ति योजेतब्बं। **पञ्ञास योजनक्खन्धसाखायामा** ति उब्बेधतो पञ्ञासयोजनप्प-

---

१. पतिट्ठप्पमाणे (सी०, स्या०)

माणक्खन्धायामाउब्बेधतो समन्ततो च पञ्ञासयोजनसाखायामा च। ततो एव **सतयोजनवित्थिण्णा**, **तावदेव च उग्गता**। जम्बुरुक्खस्स हि मूलतो पट्ठाय याव साखाविटपा, ताव पण्णास योजनानि, ततो परम्पि उजुकं उग्गतसाखा पण्णास योजनानि, समन्ततो च एकेका साखा पण्णास पण्णास योजनानि वड्ढितानि। तासु पन महन्ता महन्ता नदियो सन्दन्ति, तासं नदीनं उभयतीरे जम्बुपक्कानं पतितट्ठाने सुवण्णङ्कुरा उट्ठहन्ति, ते नदीजलेन वुय्हमाना अनुपुब्बेन महासमुद्दं पविसन्ति, ततोयेव जम्बुनदियं निब्बत्तत्ता "जम्बुनदं" ति तं सुवण्णं वुच्चति।

यस्सानुभावेना ति यस्सा महन्तता कप्पट्ठायिकादिप्पकारेन पभावेन। यञ्चेतं जम्बुया पमाणं, एतदेव असुरानं चित्तपाटलिया, गरुळानं सिम्बलिरुक्खस्स[1], अपरगोयाने कदम्बस्स, उत्तरकुरूसु कप्परुक्खस्स, पुब्बविदेहे सिरीसस्स, तावतिंसेसु पारिच्छत्तकस्सा ति। तेनाहु पोराणा—

"पाटली सिम्बली जम्बू, देवानं पारिछत्तको।
कदम्बो कप्परुक्खो च, सिरीसेन भवति सत्तमं"[2] ति॥

B 260 एत्थ **सिरीसेन भवति सत्तमं** ति एत्थ **सिरीसेना** ति पच्चत्ते करणवचनं। **सत्तमं** ति लिङ्गविपल्लासेन वुत्तं, सिरीसो भवति सत्तमो ति अत्थो।

चक्कवाळसिलुच्चयो ति चक्कवाळपब्बतो। **परिक्खिपित्वा तं सब्बं, लोकधातुमयं ठितो** ति हेट्ठा वुत्तं सब्बम्पि तं परिक्खिपित्वा चक्कवाळसिलुच्चयो पतिट्ठितो, अयं एका लोकधातु नामा ति अत्थो। म-कारो पदसन्धिवसेन आगतो "तं सब्बं लोकधातुं परिक्खिपित्वा अयं चक्कवाळचिलुच्चयो ठितो" ति एवम्पेत्थ सम्बन्धं वदन्ति, एवं वुत्ते पि चक्कवाळपब्बतो पि लोकधातुयेवा ति वेदितब्बं।

तत्था ति तिस्सं लोकधातुयं। **चन्दमण्डलं एकूनपञ्ञासयोजनं** ति उजुकं आयामतो वित्थारतो उब्बेधतो च एकूनपञ्ञासयोजनं, परिमण्डलतो पन तीहि योजनेहि ऊनदियड्ढसतयोजनं। **सूरियमण्डलं पञ्ञासयोजनं** ति एत्था पि चन्दमण्डले वुत्तनयेनेव उजुकं पञ्ञासयोजनं ति वेदितब्बं, परिमण्डलतो पन दियड्ढसतयोजनं।

तेसु पन चन्दमण्डलं[3] हेट्ठा, सूरियमण्डलं उपरि, अन्तरा नेसं योजनं होति। चन्दस्स हेट्ठिमन्ततो सूरियस्स उपरिमन्तं योजनसतं होति, चन्दविमानं अन्तो मणिमयं, बहि रजतेन परिक्खित्तं, अन्तो च बहि च सीतलमेव होति। सूरियविमानं अन्तो कनकमयं, बाहिरं फलितपरिक्खित्तं होति, अन्तो च बहि च उण्हमेव। चन्दो उजुकं सणिकं गच्छति। सो हि अमावासियं सूरियेन सद्धिं गच्छन्तो दिवसे दिवसे थोकं थोकं ओहीयन्तो पुण्णमासियं उपड्ढमग्गतो ओहीयति, तिरियं पन सीघं गच्छति।

---

१. सिप्पलिरुक्खस्स (क०)।

२. विसुद्धि १-४००, ४४१, अं० ट्ठ १-३७७ पिट्ठेसु।

३. दी-ट्ठ ३-५१ पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।

तथा हेस एकस्मिं मासे कदाचि दक्खिणतो, कदाचि उत्तरतो दिस्सति, चन्दस्स उभोसु पस्सेसु नक्खत्ततारका गच्छन्ति, चन्दो धेनु विय वच्छं तं तं नक्खत्तं उपसङ्कमति, नक्खत्तानि पन अत्तनो गमनट्ठानं न विजहन्ति अत्तनो वीथियाव गच्छन्ति। सूरियस्स पन उजुकं गमनं सीघं, तिरियं गमनं दन्धं। तिरियं गमनं नाम दक्खिणदिसतो उत्तरदिसाय, उत्तरदिसतो दक्खिणदिसाय गमनं, तं दन्धं छहि छहि मासेहि इज्झनतो।

सूरियो काळपक्खउपोसथे चन्देन सहेव गन्त्वा ततो परं पाटिपददिवसे योजनानं सतसहस्सं चन्दमण्डलं ओहाय गच्छति अत्तनो सीघगामिताय तस्स च दन्धगामिताय, B 261
अथ चन्दो लेखा विय पञ्ञायति। ततो परम्पि पक्खस्स दुतियाय योजनानं सतसहस्सं चन्दमण्डलं ओहाय गच्छति। एवं दिवसे याव सुक्कपक्खउपोसथदिवसा सतसहस्सं सतसहस्सं ओहाय गच्छति, अथ चन्दो अनुक्कमेन वड्ढित्वा उपोसथदिवसे परिपुण्णो होति। अनुक्कमेन वड्ढनञ्चेत्थ उपरिभागतो पतितसूरियालोकताय हेट्ठतो पवत्ताय सूरियस्स दूरभावेन दिवसे दिवसे अनुक्कमेन परिहायमानाय अत्तनो छायाय वसेन अनुक्कमेन चण्डमण्डलप्पदेसस्स वड्ढमानस्स विय दिस्समानताया ति वेदितब्बं, तस्मा अनुक्कमेन वड्ढित्वा विय उपोसथदिवसे पुण्णमायं परिपुण्णमण्डलो हुत्वा दिस्सति। अथ सूरियो पाटिपददिवसे योजनानं सतसहस्सं धावित्वा पुन चन्दमण्डलं गण्हाति चन्दस्स दन्धगतिताय अत्तनो च सीघगतिताय, तथा दुतियाय सतसहस्सं ति एवं याव उपोसथदिवसा सतसहस्सं सतसहस्सं धावित्वा गण्हाति। अथ चन्दो अनुक्कमेन हायित्वा काळपक्खउपोसथदिवसे सब्बसो न पञ्ञायति, अनुक्कमेन हायमानता चेत्थ अनुक्कमेन वड्ढमानताय वुत्तनयेन वेदितब्बा। तत्थ पन छायाय हायमानताय मण्डलं वड्ढमानं विय दिस्सति, इध च छायाय वड्ढमानताय मण्डलं हायमानं विय दिस्सति, तस्मा अनुक्कमेन हायित्वा विय उपोसथदिवसे सब्बसो न पञ्ञायति। चन्दं हेट्ठा कत्वा सूरियो उपरि होति, महतिया पातिया खुद्दकभाजनं विय चन्दमण्डलं पिधीयति, मज्झन्हिके गेहच्छाया विय चन्दस्स छाया न पञ्ञायति। सो छायाय अपञ्ञायमानाय दूरे ठितानं दिवा पदीपो विय सयम्पि न पञ्ञायति।

इमेसं पन अजवीथि नागवीथि गोवीथी ति तिस्सो गमनवीथियो होन्ति। तत्थ अजानं उदकं पटिकूलं होति, हत्थिनागानं मनापं, गुन्नं सीतुण्हसमताय फासु होति। तथा च याय वीथिया सूरिये गच्छन्ते वस्सवलाहकदेवपुत्ता सूरियाभितापसन्तत्ता अत्तनो विमानतो न निक्खमन्ति, कीळापसुता हुत्वा न विचरन्ति, तदा किर सूरियविमानं पकतिमग्गतो अधो ओतरित्वा विचरति, तस्स ओरुय्ह चरणेनेव चन्दविमानम्पि अधो ओरुय्ह चरति तग्गतिकत्ता, तस्मा सा वीथि उदकाभावेन अजानुरूपताय B 262
"**अजवीथी**" ति समञ्ञा[1] गता। याय पन वीथिया सूरिये गच्छन्ते वस्सवलाहकदेवपुत्ता सूरियाभितापाभावतो अभिण्हं अत्तनो विमानतो बहि निक्खमित्वा कीळापसुता हुत्वा इतो चितो च विचरन्ति, तदा किर सूरियविमानं पकतिमग्गतो उद्धं आरुहित्वा

१. समञ्ञं (सी०, स्या०)

विचरति, तस्स उद्धं आरुय्ह चरणेनेव चन्दविमानम्पि उद्धं आरुय्ह चरति तग्गतिकत्ता, तग्गतिकता च समानगति नाम वातमण्डलेन विमानस्स फेल्लितब्बत्ता,[१] तस्मा सा वीथि उदकबहुभावेन नागानुरूपताय **"नागवीथी"** ति समञ्ञा गता। यदा सूरियो उद्धं अनारोहन्तो अधो च अनोतरन्तो पकतिमग्गे नेव गच्छति, तदा वस्सवलाहका यथाकालं यथारुचिञ्च विमानतो निक्खमित्वा सुखेन विचरन्ति, तेन कालेन कालं वस्सनतो लोके उतुसमता होति, ताय उतुसमताय हेतुभूताय सा चन्दिमसूरियानं गति गवानुरूपताय **"गोवीथी"** ति समञ्ञा गता। तस्मा यं कालं चन्दिमसूरिया अजवीथिं आरुहन्ति, तदा देवो एकबिन्दुम्पि न वस्सति। यदा नागवीथिं आरोहन्ति, तदा भिन्नं विय नभं पग्घरति। यदा गोवीथिं आरोहन्ति, तदा उतुसमता सम्पज्जति।

यदा पन राजानो अधम्मिका होन्ति, तेसं अधम्मिकताय उपराजसेनापतिप्पभुतयो सब्बे देवा ब्रह्मानो च अधम्मिका होन्ति, तदा तेसं अधम्मिकताय विसमं चन्दिमसूरिया परिवत्तन्ति। तदा हि बह्वाबाधतादि अनिट्ठफलूपनिस्सयभूतस्स यथावुत्तस्स अधम्मिकतासञ्ञितस्स साधारणस्स पापकम्मस्स बलेन विसमं वायन्तेन वायुना फेल्लियमाना[२] चन्दिमसूरिया सिनेरुं परिविखपन्ता विसमं परिवत्तन्ति, यथामग्गेन न पवत्तन्ति। वातो यथामग्गेन न वायति, अयथामग्गेन वायति, अयथामग्गेन वायन्तो आकासट्ठविमानानि खोभेति, विमानेसु खोभितेसु देवतानं कीळनत्थाय चित्तानि न नमन्ति, चित्तेसु अनमन्तेसु सीतुण्हभेदो उतु यथाकालेन न सम्पज्जति, तस्मिं असम्पज्जन्ते न सम्मा देवो वस्सति, कदाचि वस्सति, कदाचि न वस्सति, कत्थचि वस्सति, कत्थचि न वस्सति। वस्सन्तो पि वप्पकाले अङ्कुरकाले नाळकाले पुप्फकाले खीरग्गहणादिकालेसु
B .63 यथा यथा सस्सानं उपकारो न होति, तथा तथा वस्सति च विगच्छति च। तेन सस्सानि विसमपाकानि होन्ति विगतगन्धरसादिसम्पदानि, एकभाजने पक्खित्ततण्डुलेसु पि एकस्मिं पदेसे भत्तं उत्तण्डुलं होति, एकस्मिं अतिकिलिन्नं, एकस्मिं समपाकं। तं परिभुत्तं कुच्छियम्पि सब्बसो अपरिणतं, एकदेसेन परिणतं, सुपरिणतं ति एवं तीहियेव पकारेहि पच्चति, पक्कासयं न सम्मा उपगच्छति। तेन सत्ता बह्वाबाधा चेव होन्ति अप्पायुका च।

धम्मिकानं पन राजूनं काले वुत्तविपरियायेन चन्दिमसूरिया समं परिवत्तन्ति, यथामग्गेन पवत्तन्ति, उतुसमता च सम्पज्जति, चन्दिमसूरिया छ मासे सिनेरुतो बहि निक्खमन्ति, छ मासे अन्तो विचरन्ति। तथा हि सिनेरुसमीपेन तं पदक्खिणं कत्वा गच्छन्ता छ मासे ततो गमनवीथितो बहि अत्तनो तिरियं गमनेन चक्कवाळाभिमुखा निक्खमन्ति। एवं छ मासे खणे खणे सिनेरुतो अपसक्कनवसेन ततो निक्खमित्वा चक्कवाळसमीपं पत्ता। ततो पि छ मासे खणे खणे अपसक्कनवसेन निक्खमित्वा सिनेरुसमीपं पापुणन्ता अन्तो विचरन्ति। ते हि आसाळ्हीमासे सिनेरुसमीपेन चरन्ति, ततो द्वे

---

१. वेल्लितब्बत्ता (सी०) पेल्लितब्बता (स्या०)

२. वेल्लियमाना (सी०) पेल्लियमाना (स्या०)

मासे निक्खमित्वा बहि चरन्ति। पठमकत्तिकमासे मज्झेन गच्छन्ति, ततो चक्कवाळाभिमुखा गन्त्वा तयो मासे चक्कवाळसमीपेन विचरित्वा पुन निक्खमित्वा चित्रमासे मज्झेन गन्त्वा ततो परे द्वे मासे सिनेरुअभिमुखा पक्खन्दित्वा पुन आसाळ्हे सिनेरुसमीपेन चरन्ति। एत्थ च सिनेरुस्स चक्कवाळस्स च यं ठानं वेमज्झं, तस्स सिनेरुस्स च यं ठानं वेमज्झं, तेन गच्छन्ता सिनेरुसमीपेन चरन्ती ति वेदितब्बा, न सिनेरुस्स अग्गालिन्दं अल्लीना, चक्कवाळसमीपेन चरणम्पि इमिनाव नयेन वेदितब्बं। यदा पन सिनेरुस्स चक्कवाळस्स उजुकं वेमज्झेन गच्छन्ति, तदा वेमज्झेन विचरन्ती ति वेदितब्बं।

एवं विचरन्ता च एकप्पहारेन तीसु पि दीपेसु आलोकं करोन्ति। एकेकाय दिसाय नव नव योजनसतसहस्सानि अन्धकारं विधमित्वा आलोकं दस्सेन्ति। कथं? इमस्मिञ्हि दीपे सूरियुग्गमनकालो पुब्बविदेहे मज्झन्हिको होति, उत्तरकुरूसु अत्थङ्गमनकालो, अपरगोयाने मज्झिमयामो, पुब्बविदेहम्हि उग्गमनकालो उत्तरकुरूसु मज्झन्हिको, अपरगोयाने अत्थङ्गमनकालो, इध मज्झिमयामो, उत्तरकुरूसु उग्गमनकालो अपरगोयाने मज्झन्हिको, इध अत्थङ्गमनकालो, पुब्बविदेहे मज्झिमयामो, अपरगोयानदीपे उग्गमनकालो इध मज्झन्हिको, पुब्बविदेहदीपे अत्थङ्गमनकालो, उत्तरकुरूसु मज्झिमयामो। इमस्मिञ्हि दीपे ठितमज्झन्हिकवेलायं पुब्बविदेहवासीनं अत्थङ्गमनवसेन उपड्ढं सूरियमण्डलं पञ्ञायति, अपरगोयानवासीनं उग्गमनवसेन उपड्ढं पञ्ञायति। एवं सेसदीपेसु पि। इति इमिनाव पकारेन तीसु दीपेसु एकप्पहारेनेव चन्दिमसूरिया आलोकं दस्सेन्ती ति वेदितब्बं। B 264

इतो अञ्ञथा पन द्वीसु एव दीपेसु एकप्पहारेनेव आलोकं दस्सेन्ति। यस्मिञ्हि दीपे अत्थङ्गमनवसेन उपड्ढं सूरियमण्डलं पञ्ञायति, अत्थङ्गमिते तत्थ न पञ्ञायति, आलोकं न दस्सेति, द्वीसु एव दीपेसु एकप्पहारेन उभयं। एकेकाय दिसाय नव नव योजनसतसहस्सानि अन्धकारविधमनम्पि इमिनाव नयेन दट्ठब्बं। इमस्मिञ्हि दीपे ठितमज्झन्हिकवेलायं पुब्बविदेहवासीनं अत्थङ्गमनवसेन उपड्ढं सूरियमण्डलं पञ्ञायती-ति पुब्बविदेहे नवयोजनसतसहस्सप्पमाणे ठाने अन्धकारं विधमित्वा आलोकं दस्सेति, तथा अपरगोयाने उग्गमनवसेन तत्थापि उपड्ढस्सेव पञ्ञायमानत्ता। पुब्बविदेहानं पन अत्थङ्गमिते न पञ्ञायती ति द्वीसु दीपेसु सब्बत्थ अन्धकारं विधमित्वा आलोकं दस्सेति अपरगोयाने पि उग्गते सूरिये सब्बत्थ अन्धकारविधमनतो।

पातुभवन्ता च चन्दिमसूरिया एकतोव लोके पातुभवन्ति, तेसु सूरियो पठमतरं पञ्ञायति। पठमकप्पिकानञ्हि सत्तानं सयं पभाय अन्तरहिताय अन्धकारो अहोसि। ते भीततसिता "भद्दकं वतस्स, सचे अञ्ञो आलोको भवेय्या" ति चिन्तयिंसु। ततो महाजनस्स सूरभावं जनयमानं सूरियमण्डलं उट्ठहि, तेनेवस्स "**सूरियो**" ति नामं अहोसि। तस्मिं दिवसं आलोकं कत्वा अत्थङ्गमिते पुन अन्धकारो अहोसि। ते भीततसिता "भद्दकं वतस्स, सचे अञ्ञो आलोको उप्पज्जेय्या" ति चिन्तयिंसु। अथ नेसं छन्दं ञत्वा विय चन्दमण्डलं उट्ठहि, तेनेवस्स "**चन्दो**" ति नामं अहोसि। एवं

B 265 चन्दिमसूरियेसु पातुभूतेसु नक्खत्तानि तारकरूपानि पातुभवन्ति, ततो पभुति रत्तिन्दिवा पञ्ञायन्ति। अनुक्कमेन च मासड्ढमासउतुसंवच्छरा जायन्ति। चन्दिमसूरियानं पन पातुभूतदिवसेयेव सिनेरुचक्कवाळहिमवन्तपब्बता चत्तारो च दीपा पातुभवन्ति, ते च खो अपुब्बं अचरिमं फग्गुणपुण्णमदिवसेयेव पातुभवन्ती ति वेदितब्बं।

यस्मा चेत्थ "एकं चक्कवाळं आयामतो च वित्थारतो च योजनानं द्वादस सतसहस्सानि तीणि सहस्सानि चत्तारि सतानि पञ्ञासञ्च योजनानी" ति **अट्ठकथायं**[1] वुत्तं, तस्मा वुत्तप्पमाणतो इमस्स चक्कवाळस्स सिनेरुपतिट्ठितोकासे चतुरासीति योजनसहस्सानि परतो याव चक्कवाळपब्बता उत्तरदिसाभागप्पमाणञ्च पहाय इमिस्सा दक्खिणदिसाय—

सिनेरुचक्कवाळानं, अन्तरं परिमाणतो।
पञ्च सतसहस्सानि, सहस्सानूनसट्ठि च॥

सतानि सत्त ञेय्यानि, पञ्चवीसुत्तरानि च।
मज्झवीथिगतो नाम, तत्थ वेमज्झगो रवि॥

मज्झतो याव मेरुम्हा, चक्कवाळानमन्तरे।
वेमज्झगो यदा होति, उभयन्तगतो तदा॥

मज्झतो याव मेरुम्हा, चक्कवाळा च पब्बता।
दुवे सतसहस्सानि, सहस्सानूनसीति च॥

अट्ठसतं दुवे सट्ठि, योजनानि द्विगावुतं।
उभतो अन्ततो मेरु-चक्कवाळानमन्तरे॥

एकं सतसहस्सञ्च, सहस्सानूनतालीसं।
नवसतानेकतिंस, योजनानि च गावुतं॥

पमाणतो समन्ता च, मण्डलं मज्झवीथिया।
सतसहस्सानूनवीस, सहस्सानेकतिंस च॥

सतमेकञ्च विञ्ञेय्यं, पञ्चसत्तति उत्तरं।
दक्खिणं उत्तरञ्चापि, गच्छन्तो पन भाणुमा॥

B 266 मज्झवीथिप्पमाणेन, मण्डलेनेव गच्छति।
गच्छन्तो च पनेवं सो, ओरुय्होरुय्ह हेट्ठतो॥

आरुय्हारुय्ह उद्धञ्च, यतो गच्छति सब्बदा।
ततो गतिवसेनस्स, दूरमद्धानमासि तं॥

तिंस सतसहस्सानि, योजनानि पमाणतो।
तस्मा सो परितो याति, तत्तकंव दिने दिने॥

---

१. वि०—ट्ठ १-९१, पिट्ठे।

सहस्समेकं पञ्चसतं, चतुपञ्ञासयोजनं।
तिगावुतं तेरसूसभं, तेत्तिंस रतनानि च॥

अट्ठङ्गुलानि च तिरियं, गच्छतेकदिने रवि।
छतालीससहस्सानि, छ सतानि तिगावुतं॥

योजनानं[1] तितालीसं, मासेनेकेन गच्छति।
तेनवुतिसहस्सानि, द्विसतं सत्तसीति च॥

गावुतानि दुवे चा पि, द्वीहि मासेहि गच्छति।
इमाय गतिया अन्त-वीथितो वीथि अन्तिमं॥

गच्छति छहि मासेहि, तिमासेहि च मज्झिमं।
सिनेरुसन्तिके अन्त-वीथितो पन भाणुमा।
आगच्छन्तो द्विमासेहि, अस्स दीपस्स मज्झगो॥

तस्मा सीहळदीपस्स, मज्झतो मेरुअन्तरं।
दुवे सतसहस्सानि, द्विसतेनाधिकानि तु॥
तेत्तिंसञ्च सहस्सानि, अट्ठारस तिगावुतं।
चक्कवाळन्तरञ्चस्स, दीपस्सेव च मज्झतो॥

तीणि सतसहस्सानि, सहस्सानि छवीसति।
छ उत्तरानि पञ्चेव, सतानेकञ्च गावुतं ति॥

एवमेत्थ अयम्पि विसेसो वेदितब्बो।

तावतिंसभवनं दससहस्सयोजनं ति एत्थ तेत्तिंस सहपुञ्ञकारिनो एत्थ निब्बत्ता ति तं सहचरितट्ठानं तेत्तिंसं, तदेव तावतिंसं, तं निवासो एतेसं ति तावतिंसा, B 267
देवा। तेसं भवनं तावतिंसभवनं। तथा हि मघेन माणवेन सद्धिं मचलगामके कालं कत्वा तत्थ उप्पन्ने तेत्तिंस देवपुत्ते उपादाय अस्स देवलोकस्स अयं पण्णत्ति जाता ति वदन्ति। अथ वा यस्मा सेसचक्कवाळेसु पि छ कामावचरदेवलोका अत्थि। वुत्तम्पि चेतं "सहस्सं चातुमहाराजिकानं सहस्सं तावतिंसानं" ति। तस्मा नामपण्णत्तियेवेसा तस्स देवलोकस्सा ति वेदितब्बा। **दससहस्सयोजनं** ति इदं पन सक्कपुरं सन्धाय वुत्तं ति वेदितब्बं। तथा हि तावतिंसकायिका देवा अत्थि पब्बतट्ठका, अत्थि आकासट्ठका, तेसं परम्परा चक्कवाळपब्बतं पत्ता, तथा चातुमहाराजिकानं यामादीनञ्च। एकदेवलोके पि हि देवानं परम्परा चक्कवाळपब्बतं अप्पत्ता नाम नत्थि। इदं पन तावतिंसभवनं सिनेरुस्स उपरिमतले दससहस्सयोजनिके ठाने पतिट्ठितं ति वेदितब्बं। तस्स पाचीनपच्छिमद्वारानं अन्तरा दसयोजनसहस्सं होति, तथा दक्खिणुत्तरद्वारानं। तं खो पन नगरं द्वारसहस्सयुत्तं अहोसि आरामपोक्खरणीपटिमण्डितं।

---

१. योजनानि (सी०, स्या०)

तस्स मज्झे[1] तियोजनसतुब्बेधेहि धजेहि पटिमण्डितो सत्तरतनमयो सत्तयोजन-सतुब्बेधो सक्कस्स **वेजयन्तो** नाम पासादो। तत्थ सुवण्णयट्ठीसु मणिधजा अहेसुं, मणियट्ठीसु सुवण्णधजा, पवाळयट्ठीसु मुत्तधजा, मुत्तयट्ठीसु पवाळधजा, सत्तरतनमयासु यट्ठीसु सत्तरतनमया धजा।

दियड्ढयोजनसतायामो **वेजयन्तरथो**[2]। तस्स हि पच्छिमन्तो पण्णासयोजनो, मज्झे रथपञ्जरो पण्णासयोजनो, रथसन्धितो याव रथसीसा पण्णासेव योजनानि। तदेव पमाणं दिगुणं कत्वा "तियोजनसतायामो" ति पि वदन्तियेव। तस्मिं योजनिकपल्लङ्को अत्थतो तिट्ठति। तत्थ तियोजनिकं सेतच्छत्तं, एकस्मिंयेव युगे सहस्सआजञ्ञयुत्तं। सेसालङ्कारस्स पमाणं नत्थि। धजो पनस्स अड्ढतियानि योजनसतानि उग्गतो, यस्स वाताहतस्स पञ्चङ्गिकतूरियस्सेव सद्दो निच्छरति।

सक्कस्स पन **एरावणो**[3] नाम हत्थी दियड्ढयोजनसतिको, सो पि देवपुत्तोयेव।
B 268 न हि देवलोकस्मिं तिरच्छानगता होन्ति, तस्मा सो उय्यानकीळाय निक्खमनकाले अत्तभावं विजहित्वा दियड्ढयोजनसतिको एरावणो नाम हत्थी होति। सो तेत्तिंसकुम्भे मापेति आवट्टेन गावुतअड्ढयोजनप्पमाणे, सब्बेसं मज्झे सक्कस्स अत्थाय सुदस्सनं नाम तिंसयोजनिकं कुम्भं मापेति। तस्स उपरि द्वादसयोजनिको रतनमण्डपो होति। तत्थ अन्तरन्तरा सत्तरतनमया योजनुब्बेधा धजा उट्ठहन्ति। परियन्ते किङ्किणिकजाला ओलम्बन्ति, यस्स मन्दवातेरितस्स पञ्चङ्गिकतूरियसद्दसदिसो दिब्बगीतसद्दो विय रवो निच्छरति। मण्डपमज्झे सक्कस्स योजनिको मणिपल्लङ्को पञ्ञत्तो होति, तत्थ सक्को निसीदति। तेत्तिंसाय कुम्भानं एकेकस्मिं कुम्भे सत्त सत्त दन्ते मापेति, तेसु एकेको पण्णासयोजनायामो। एकेकस्मिं चेत्थ दन्ते सत्त सत्त पोक्खरणियो होन्ति, एकेकाय पोक्खरणिया सत्त सत्त पदुमिनीगच्छा, एकेकस्मिं गच्छे सत्त सत्त पुप्फानि होन्ति, एकेकस्स पुप्फस्स सत्त सत्त पत्तानि, एकेकस्मिं पत्ते सत्त सत्त देवधीतरो नच्चन्ति। एवं समन्ता पण्णासयोजनट्ठाने हत्थिदन्तेसुयेव नच्चनटसमज्जो होति।

नन्दा नाम पन पोक्खरणी पञ्ञासयोजना। "पञ्चसतयोजनिका" ति पि वदन्ति।

चित्तलतावनं पन सट्ठियोजनिकं। "पञ्चयोजनसतिकं" ति पि वदन्ति। तं पन दिब्बरुक्खसहस्सपटिमण्डितं, तथा **नन्दनवनं फारुसकवनञ्च**। सक्को पनेत्थ अच्छरासंघपरिवुतो सट्ठियोजनिकं सुवण्णमहावीथिं ओतरित्वा नक्खत्तं कीळन्तो नन्दनवनादीसु विचरति।

---

१. धम्मपद-ट्ठ; १–१७३ पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।

२. सं–ट्ठ, १–३१२ पिट्ठेपि पस्सितब्बं।

३. धम्मपद–ट्ठ–१–१७३ पिट्ठे।

पारिच्छत्तको पन कोविळारो समन्ता तियोजनसतपरिमण्डलो पञ्चदसयोजनपरिणाहक्खन्धो योजनसतुब्बेधो। तस्स मूले सट्ठियोजनायामा पञ्ञासयोजनवित्थारा पञ्चदसयोजनुब्बेधा जयसुमनपुप्फकवण्णा **पण्डुकम्बलसिला**, यस्सा मुदुताय सक्कस्स निसीदतो उपड्ढकायो अनुपविसति, उट्ठितकाले ऊनं[1] परिपूरति।

सुधम्मा नाम देवसभा आयामतो च वित्थारतो च तियोजनसतिका, परिक्खेपतो B 269
नवयोजनसतिका, उब्बेधतो पञ्चयोजनसतिका, तस्सा फलिकमया भूमि, थम्भतुलासङ्घाटादीसु वाळरूपादिसङ्घट्टनकआणियो मणिमया, सुवण्णमया थम्भा, रजतमया थम्भघटका च सङ्घाटञ्च, पवाळमयानि वाळरूपानि, सत्तरतनमया गोपानसियो च पक्खपासा च मुखवट्टि च, इन्दनीलइट्ठकाहि छदनं, सोवण्णमयं छदनविधं[2], रजतमया थूपिका।

आसावती नाम एका लता अत्थि, "सा पुप्फिस्सती" ति देवा वस्ससहस्सं उपट्ठानं गच्छन्ति, पारिच्छत्तके पुप्फमाने एकं वस्सं उपट्ठानं गच्छन्ति। ते तस्स पण्डुपलासादिभावतो पट्ठाय अत्तमना होन्ति। यथाह—

"यस्मिं भिक्खवे समये देवानं तावतिंसानं पारिच्छत्तको कोविळारो पण्डुपलासो होति, अत्तमना भिक्खवे देवा तावतिंसा तस्मिं समये होन्ति 'पण्डुपलासो दानि पारिच्छत्तको कोविळारो, न चिरस्सेव दानि पन्नपलासो भविस्सती' ति" आदि।[3]

सब्बपालिफुल्लस्स पन पारिच्छत्तकस्स कोविळारस्स समन्ता पञ्च योजनसतानि आभा फरति, अनुवातं योजनसतं गन्धो गच्छति। पुप्फिते पारिच्छत्तके आरोहणकिच्चं वा अङ्कुसं गहेत्वा नामनकिच्चं वा पुप्फाहरणत्थं चङ्कोटककिच्चं वा नत्थि। कन्तनकवातो उट्ठहित्वा पुप्फानि वण्टतो कन्तति, सम्पटिच्छनकवातो सम्पटिच्छति, पवेसनकवातो सुधम्मदेवसभं पवेसेति, सम्मज्जनकवातो पुराणपुप्फानि नीहरति, सन्थरणकवातो पत्तकण्णिककेसरानि रचेन्तो[4] सन्थरति, मज्झट्ठाने धम्मासनं होति योजनप्पमाणो रतनपल्लङ्को, तस्स उपरि धारियमानं तियोजनिकं सेतच्छत्तं, तदनन्तरं सक्कस्स देवरञ्ञो आसनं अत्थरीयति, ततो बात्तिंसाय देवपुत्तानं, ततो अञ्ञेसं महेसक्खदेवतानं। अञ्ञेसं देवतानं पन पुप्फकण्णिकाव आसनं होति। देवा देवसभं पविसित्वा निसीदन्ति। ततो पुप्फेहि रेणुवट्टि उग्गन्त्वा उपरि कण्णिकं आहच्च निपतमाना देवतानं तिगावुतप्पमाणं अत्तभावं लाखापरिकम्मसज्जितं विय करोति, तेसं सा कीळा B 270
चतूहि मासेहि परियोसानं गच्छति। इति इमाहि सम्पत्तीहि समन्नागतं तावतिंसभवनं भगवा सब्बथा अवेदी ति वेदितब्बं।

तथा असुरभवनं ति एत्थ देवा विय न सुरन्ति न ईसरन्ति न विरोचन्ती ति असुरा। सुरा नाम देवा, तेसं पटिपक्खा ति वा असुरा। सक्को किर मचलगामके मघो

१. तं ठानं (सी०, स्या०)।
२. छदनपिट्ठं (सी, स्या०)।
३. अं० २–४८६ पिट्ठे।
४. रञ्जेन्तो (स्या०)।

नाम माणवो हुत्वा तेत्तिंस पुरिसे गहेत्वा कल्याणकम्मं करोन्तो सत्त वत्तपदानि पूरेत्वा तत्थ कालकतो देवलोके निब्बत्ति सद्धिं परिसाय। ततो पुब्बदेवा "आगन्तुकदेवपुत्ता आगता, सक्कारं नेसं करोमा" ति वत्वा दिब्बपदुमानि उपनामेसुं, उपड्ढरज्जेन च निमन्तेसुं। सक्को उपड्ढरज्जेन असन्तुट्ठो अहोसि, अथ नेवासिका "आगन्तुकदेवपुत्तानं सक्कारं करोमा" ति गन्धपानं[1] सज्जयिंसु। सक्को सकपरिसाय सञ्ञं अदासि 'मारिसा मा गन्धपानं पिवित्थ, पिवमानाकारमत्तमेव दस्सेथा" ति। ते तथा अकंसु। नेवासिकदेवता सुवण्णसरकेहि उपनीतं गन्धपानं यावदत्थं पिवित्वा मत्ता तत्थ तत्थ सुवण्णपथवियं पतित्वा सयिंसु। सक्को "गण्हथ धुत्ते, हरथ धुत्ते" ति ते पादेसु गाहापेत्वा सिनेरुपादे खिपापेसि। सक्कस्स पुञ्ञतेजेन तदनुवत्तकापि सब्बे तत्थेव पतिंसु। अथ नेसं कम्मपच्चयउतुसमुट्ठानं सिनेरुस्स हेट्ठिमतले दसयोजनसहस्सं असुरभवनं निब्बत्ति पारिच्छत्तकपटिच्छन्नभूताय चित्रपाटलिया उपसोभितं। सक्को तेसं निवत्तित्वा अनागमनत्थाय आरक्खं ठपेसि। यं सन्धाय वुत्तं—

"अन्तरा द्विन्नं अयुज्झपुरानं,
पञ्चविधा ठपिता अभिरक्खा।
उरगकरोटिपयस्स च हारी,
मदनयुता[2] चतुरो च महत्था" ति[3]।

तत्थ द्विन्नं अयुज्झपुरानं ति द्विन्नं देवासुरनगरानं अन्तरा ति अत्थो। द्वे किर नगरानि युद्धेन गहेतुं असक्कुणेय्यताय **अयुज्झपुरानि** नाम जातानि। यदा हि असुरा बलवन्तो होन्ति, अथ देवेहि पलायित्वा देवनगरं पविसित्वा द्वारे पिहिते असुरानं
B 271 सतसहस्सम्पि किञ्चि कातुं न सक्कोति। यदा देवा बलवन्तो होन्ति, अथ असुरेहि पलायित्वा असुरनगरं पविसित्वा द्वारे पिहिते सक्कानं सतसहस्सम्पि किञ्चि कातुं न सक्कोति। इति इमानि द्वे नगरानि अयुज्झपुरानि नाम। तेसं अन्तरा एतेसु उरगादीसु पञ्चसु ठानेसु सक्केन आरक्खा ठपिता। तत्थ **उरग** सद्देन नागा गहिता। ते उदके महब्बला होन्ति, तस्मा सिनेरुस्स पठमालिन्दे एतेसं आरक्खा। सिनेरुस्स किर समन्ततो बहलतो पुथुलतो च पञ्चयोजनसहस्सपरिमाणानि चत्तारि परिभण्डानि तावतिंसभवनस्स आरक्खाय नागेहि गरुळेहि कुम्भण्डेहि यक्खेहि च अधिट्ठितानि। तेहि किर सिनेरुस्स उपड्ढं परियादिन्नं, एतानियेव च सिनेरुस्स आलिन्दानि मेखलानि च वुच्चन्ति। **करोटि** सद्देन सुपण्णा गहिता। तेसं किर करोटि नाम पानभोजनं, तेन नामं लभिंसु, दुतियालिन्दे तेसं आरक्खा। **पयस्सहारी** सद्देन कुम्भण्डा गहिता। दानवरक्खसा किर ते, ततियालिन्दे तेसं आरक्खा। **मदनयुत** सद्देन यक्खा गहिता। विसम-

---

१. गण्डपानं (सी०) गण्डुपानं (स्या०, क०) सं. ट्ठ. १-३०९ पिट्ठे पस्सितब्बं।

२. मदनयुधा (सी०) मदनयुद्धा (स्या०)।

३. सं-ट्ठ० १-३०९, जातक-ट्ठ-१-२१९ पिट्ठेसु।

चारिनो किर ते युद्धसोण्डा, चतुत्थालिन्दे तेसं आरक्खा। **चतुरो च महत्था** ति चत्तारो महाराजानो वुत्ता। ते हि सिनेरुस्स तस्मिं तस्मिं पस्से युगन्धरादीसु पञ्चसत-परित्तदीपपरिवारे महादीपे च सासितब्बस्स महतो अत्थस्स वसेन "महत्था" ति वुच्चन्ति। पञ्चमालिन्दे तेसं आरक्खा।

ते पन असुरा आयुवण्णयसइस्सरियसम्पत्तीहि तावतिंससदिसाव। तस्मा अन्तरा अत्तानं अजानित्वा पाटलिया पुप्फिताय "नयिदं देवनगरं, तत्थ पारिच्छत्तको पुप्फति, इध पन चित्तपाटली, जरसक्केन मयं सुरं पायेत्वा वञ्चिता, देवनगरञ्च नो गहितं, गच्छाम तेन सद्धिं युज्झिस्सामा" ति हत्थिअस्सरथे आरुय्ह सुवण्णरजतमणि-फलकानि गहेत्वा युद्धसज्जा हुत्वा असुरभेरियो वादेन्ता महासमुद्दे उदकं द्विधा भिन्दित्वा उट्ठहन्ति। ते देवे वुट्ठे वम्मिकमक्खिका वम्मिकं विय सिनेरुं अभिरुहितुं आरभन्ति। अथ नेसं पठमं नागेहि सद्धिं युद्धं होति। तस्मिं खो पन युद्धे न कस्सचि छवि वा चम्मं वा छिज्जति, न लोहितं उप्पज्जति, केवलं कुमारकानं दारुमेण्डकयुद्धं विय अञ्ञमञ्ञं सन्तासनमत्तमेव होति। कोटिसता पि कोटिसहस्सा पि नागा तेहि सद्धिं युज्झित्वा असुरपुरं येव पवेसेत्वा निवत्तन्ति। सचे पन असुरा बलवन्तो होन्ति, अथ B 272
नागा ओसक्कित्वा दुतिये आलिन्दे सुपण्णेहि सद्धिं एकतो हुत्वा युज्झन्ति। एस नयो सुपण्णादीसु पि। यदा पन तानि पञ्च पि ठानानि असुरा मद्दन्ति, तदा एकतो सम्पिण्डितानि पि तानि पञ्च बलानि ओसक्कन्ति। अथ चत्तारो महाराजानो गन्त्वा सक्कस्स पवत्तिं आरोचेन्ति। सक्को तेसं वचनं सुत्वा दियड्ढयोजनसतिकं वेजयन्तरथं आरुय्ह सयं वा निक्खमति, एकं वा पुत्तं पेसेति। एकस्मिं पन दिवसे एवं निक्खमित्वा असुरे युद्धेन अब्भुग्गन्त्वा समुद्दे पक्खिपित्वा चतूसु द्वारेसु अत्तना सदिसा पटिमा मापेत्वा ठपेति, तस्मा असुरा नागादयो जिनित्वा आगता पि इन्दपटिमा दिस्वा "सक्को निक्खन्तो" ति पलायन्ति। इति सुरानं पटिपक्खा ति असुरा, वेपचित्तिपहा-रादादयो, तेसं भवनं असुरभवनं। तं पन आयामतो च वित्थारतो च दससहस्सयोजनं ति दस्सेतुं "तथा असुरभवनं" ति वुत्तं।

अवीचिमहानिरयो जम्बुदीपो चा ति एत्थापि **तथा**—सद्दो योजेतब्बो, अवीचिमहानिरयो जम्बुदीपो च तथा दससहस्सयोजनमेवा ति अत्थो। एत्थ च अवीचिमहानिरयस्स अब्भन्तरं आयामेन च वित्थारेन च योजनसतं होति, लोहपथवी लोहछदनं एकेका च भित्ति नवनवयोजनिका होति। पुरत्थिमाय भित्तिया अच्चि उट्ठहित्वा पच्छिमं भित्तिं गहेत्वा तं विनिविज्झित्वा परतो[1] योजनसतं गच्छति। सेसदिसासु पि एसेव नयो। इति जालपरियन्तवसेन आयामवित्थारतो अट्ठारसयोज-नाधिकानि तीणि योजनसतानि होन्ति, परिक्खेपेन नवयोजनसतानि चतुपण्णासञ्च योजनानि। समन्ता पन उस्सदेहि सद्धिं दसयोजनसहस्सं होति। कस्मा पनेस नरको

---

१. पुरतो (स्या०) जातक-ट्ठ ५-२८८ पिट्ठेपि।

"अवीची" ति सङ्ख्यं गतो ति ? वीचि नाम अन्तरं वुच्चति, तत्थ च अग्गिजालानं वा सत्तानं वा दुक्खस्स वा अन्तरं नत्थि, तस्मा सो "अवीची" ति सङ्ख्यं गतो। तस्स हि पुरत्थिमभित्तितो जाला उट्ठहित्वा संसिब्बमानयोजनसतं गन्त्वा भित्तिं विनिविज्झित्वा परतो योजनसतं गच्छति। सेसदिसासु पि एसेव नयो। एवं जालानं निरन्तरताय अवीचि। अब्भन्तरे पनस्स योजनसतिके ठाने नाळियं कोट्टेत्वा पूरिततिपु-
B 273 पिट्ठं विय सत्ता निरन्तरा, "इमस्मिं ठाने सत्तो अत्थि, इमस्मिं ठाने नत्थी" ति न वत्तब्बं, गच्छन्तानं ठितानं निसिन्नानं निपन्नानञ्च पच्चमानानं अन्तो नत्थि, गच्छन्ता ठिते वा निसिन्ने वा निपन्ने वा न बाधेन्ति। एवं सत्तानं निरन्तरताय अवीचि। कायद्वारे पन छ उपेक्खासहगतानि चित्तानि उप्पज्जन्ति, एकं दुक्खसहगतं। एवं सन्ते पि यथा जिव्हग्गे छ मधुबिन्दूनि ठपेत्वा एकस्मिं तम्बलोहबिन्दुम्हि ठपिते अनुदहन-बलवताय तदेव पञ्ञायति, इतरानि अब्बोहारिकानि होन्ति, एवं अनुदहनबलवताय दुक्खमेवेत्थ निरन्तरं, इतरानि अब्बोहारिकानी ति एवं दुक्खस्स निरन्तरताय अवीची ति वुच्चति। "अयञ्च अवीचिमहानिरयो जम्बुदीपस्स हेट्ठा पतिट्ठितो" ति वदन्ति।

जम्बुदीपो पन आयामतो च वित्थारतो च दससहस्सयोजनपरिमाणो। तत्थ च चतुसहस्सयोजनप्पमाणो पदेसो तदुपभोगीसत्तानं पुञ्ञक्खया उदकेन अज्झोत्थटो "समुद्दो" ति सङ्ख्यं गतो। तिसहस्सयोजनप्पमाणे मनुस्सा वसन्ति, तिसहस्सयोजन-प्पमाणे हिमवा पतिट्ठितो ति वेदितब्बो।

अपरगोयानं सत्तसहस्सयोजनं ति आदीसु आयामतो च वित्थारतो च पमाणं दस्सितं ति वेदितब्बं। तत्थ जम्बुदीपो सकटसण्ठानो, छन्नवुतिया पट्टनकोटिसतसहस्सेहि छपण्णासरतनागारेहि नवनवुतिया दोणमुखसतसहस्सेहि तिक्खत्तु तेसट्ठिया नगरसह-स्सेहि च समन्नागतो। जम्बुदीपे किर आदितो तेसट्ठिमत्तानि नगरसहस्सानि उप्पन्नानि, तथा दुतियं, तथा ततियं। तानि पन सम्पिण्डेत्वा सतसहस्सं, ततो परं असीति सहस्सानि च नव सहस्सानि च होन्ति। **दोणमुखं** ति च महानगरस्स आयुप्पत्तिट्ठानभूतं पधानघरं वुच्चति। अपरगोयानो आदासण्ठानो, पुब्बविदेहो अड्ढचन्दसण्ठानो, उत्तर-कुरु पीठसण्ठानो। "तं तं निवासीनं तं तं परिवारदीपवासीनञ्च मनुस्सानं मुखम्पि तं तं सण्ठानं" ति वदन्ति।

अपि चेत्थ उत्तरकुरुकानं पुञ्ञानुभावसिद्धो अयम्पि विसेसो वेदितब्बो। तत्थ किर तेसु तेसु पदेसेसु घननिचितपत्तसञ्छन्नसाखापसाखा कूटागारुपमा मनोरमा रुक्खा तेसं मनुस्सानं निवेसनकिच्चं साधेन्ति। यत्थ सुखं निवसन्ति, अञ्ञे पि तत्थ रुक्खा सुजाता सब्बदा पि पुप्फितग्गा तिट्ठन्ति। जलासया पि विकसितपदुमपुण्डरीक-सोगन्धिकादिपुप्फसञ्छन्ना सब्बकालं परमसुगन्धा समन्ततो पवायन्ता तिट्ठन्ति।

B 274 सरीरम्पि तेसं अतिदीघतादिदोसरहितं आरोहपरिणाहसम्पन्नं जराय अनभि-भूतत्ता वलितपलितादिदोसविरहितं यावतायुकं अपरिक्खीणजवबलपरक्कमसोभमेव हुत्वा तिट्ठति। अनुट्ठानफलूपजीविताय न च तेसं कसिवणिज्जादिवसेन आहारपरिये-

ट्ठिवसेन दुक्खं अत्थि, ततो एव न दासदासीकम्मकरादिपरिग्गहो अत्थि। न च तत्थ सीतुण्हडंसमकसवातातपसरीसपवाळादिपरिस्सयो अत्थि। यथा नामेत्थ गिम्हानं पच्छिमे मासे पच्चूसवेलायं समसीतुण्हो उतु होति, एवमेव सब्बकालं तत्थ समसीतुण्होव उतु होति, न च नेसं कोचि उपघातो विहेसा वा उप्पज्जति।

अकट्ठपाकिममेव सालिं अकणं अथुसं सुद्धं सुगन्धं तण्डुलफलं निद्धूमङ्गारेन अग्गिना पचित्वा परिभुञ्जन्ति। तत्थ किर जोतिकपासाणा नाम होन्ति। अथ ते तयो पासाणे ठपेत्वा तत्थ[1] उक्खलिं आरोपेन्ति, पासाणेहि तेजो समुट्ठहित्वा तं पाचेति, अञ्ञो सूपो वा ब्यञ्जनो वा न होति, भुञ्जन्तानं चित्तानुकूलोयेवस्स रसो होति। तं पन भुञ्जन्तानं नेसं कुट्ठं गण्डो किलासो सोसो कासो अपमारो जरो ति एवमादिको न कोचि रोगो उप्पज्जति। ते तं ठानं सम्पत्तानं देन्तियेव, मच्छरियचित्तं नाम नेव होति, बुद्धपच्चेकबुद्धादयो पि महिद्धिका तत्थ गन्त्वा पिण्डपातं गण्हन्ति। न च ते खुज्जा वा वामना वा काणा वा कुणी वा खञ्जा वा पक्खहता वा विकलङ्गा वा विकलिन्द्रिया वा होन्ति।

इत्थियो पि तत्थ नातिदीघा नातिरस्सा नातिकिसा नातिथूला नातिकाळिका नाच्चोदाता सोभग्गप्पत्तरूपा होन्ति। तथा हि दीघङ्गुली तम्बनखा अलम्बथना तनुमज्झा पुण्णचन्दमुखी विसालक्खी मुदुगत्ता सहितोरू ओदातदन्ता गम्भीरनाभी तनुजङ्घा दीघनीलवेल्लितकेसी पुथुलसुस्सोणी नातिलोमा नालोमा सुभगा[2] उतुसुखसम्फस्सा सण्हा सखिलसम्भासा नानाभरणविभूसिता विचरन्ति, सब्बदा पि सोळसवस्सुद्देसिका विय होन्ति।

पुरिसा पि पञ्चवीसतिवस्सुद्देसिका विय, न पुत्ता मातादीसु रज्जन्ति, अयं तत्थ धम्मता। सत्ताहिकमेव च तत्थ इत्थिपुरिसा कामरतिया विहरन्ति, ततो वीत- B 275
रागा विय यथासुखं गच्छन्ति, न तत्थ इध विय गब्भोक्कन्तिमूलकं गब्भपरिहरणमूलकं वा दुक्खं विजायनमूलकं वा दुक्खं होति, रत्तकञ्चुकतो कञ्चनपटिमा विय दारका मातुकुच्छितो अमक्खिता एव सेम्हादिना सुखेनेव निक्खमन्ति, अयं तत्थ धम्मता। माता पन पुत्तं वा धीतरं वा विजायित्वा तेसं विचरणकप्पदेसे ठपेत्वा अनपेक्खा यथारुचि गच्छति। तेसं तत्थ सयितानं ये पस्सन्ति पुरिसा वा इत्थियो वा, ते अत्तनो अङ्गुलियो उपनामेन्ति, तेसं कम्मबलेन ततो खीरं पवत्तति, तेन ते दारका यापेन्ति। एवं पन वड्ढन्ता कतिपयदिवसेयेव लद्धबला हुत्वा दारिका इत्थियो उपगच्छन्ति, दारका पुरिसे।

कप्परुक्खतो एव च तेसं तत्थ वत्थाभरणानि निप्फज्जन्ति। नानाविरागवण्णविचित्तानि हि वत्थानि सुखुमानि मुदुसुखसम्फस्सानि तत्थ तत्थ कप्परुक्खेसु ओलम्बन्तानि तिट्ठन्ति। नानाविधरंसिजालसमुज्जलविविधवण्णरतनविनद्धानि अनेकविध-

---

१. तं (सी०)। २. सुभमुका (सी०, स्या०)।

मालाकम्मलताकम्मभित्तिकम्मविचित्तानि सीसूपगगीवूपगकटूपगहत्थूपगपादूपगानि सोवण्णमयानि आभरणानि च कप्परुक्खतो ओलम्बन्ति। तथा वीणामुदिङ्गपणवसम्मताळसङ्खवंसवेताळपरिवारादीनि वल्लकीपभुतिकानि तूरियभण्डानि पि ततो ओलम्बन्ति। तत्थ च बहू फलरुक्खा कुम्भमत्तानि फलानि फलन्ति, मधुररसानि यानि परिभुञ्जित्वा ते सत्ताहम्पि खुप्पिपासाहि न बाधीयन्ति।

नज्जो पि तत्थ सुविसुद्धजला सुपतित्था रमणीया अकद्दमा वालुकतला नातिसीता नातिउण्हा सुरभिगन्धीहि जलजपुप्फेहि सञ्छन्ना सब्बकालं सुरभी वायन्तियो सन्दन्ति, न तत्थ कण्टकिना[1] कक्खळगच्छलता होन्ति, अकण्टका पुप्फफलसच्छन्ना एव होन्ति, चन्दननागरुक्खा सयमेव रसं पग्घरन्ति। नहायितुकामा च नदीतित्थे एकज्झं वत्थाभरणानि ठपेत्वा नदिं ओतरित्वा नहायित्वा उत्तिण्णा उत्तिण्णा उपरिट्ठिमं उपरिट्ठिमं वत्थाभरणं गण्हन्ति, न तेसं एवं होति "इदं मम, इदं परस्सा" ति। ततो एव न तेसं कोचि विग्गहो वा विवादो वा, सत्ताहिका एव च नेसं कामरतिकीळा होति, ततो वीतरागा विय विचरन्ति। यत्थ च रुक्खे सयितुकामा होन्ति, तत्थेव सयनं उपलब्भति।

B 276 मते च सत्ते न रोदन्ति न सोचन्ति, तञ्च मण्डयित्वा निक्खिपन्ति। तावदेव च तथारूपा सकुणा उपगन्त्वा मतं दीपन्तरं नेन्ति, तस्मा सुसानं वा असुचिट्ठानं वा तत्थ नत्थि, न च ततो मता निरयं वा तिरच्छानयोनिं वा पेत्तिविसयं वा उपपज्जन्ति। "धम्मतासिद्धस्स पञ्चसीलस्स आनुभावेन ते देवलोके निब्बत्तन्ती"ति वदन्ति। वस्ससहस्समेव च नेसं सब्बकालं आयुप्पमाणं, सब्बमेतं नेसं पञ्चसीलं विय धम्मतासिद्धमेवा ति वेदितब्बं।

तदन्तरेसू ति तेसं चक्कवाळानं अन्तरेसु। **लोकन्तरिक निरया** ति लोकानं लोकधातूनं अन्तरो विवरो लोकन्तरो, तत्थ भवा लोकन्तरिका, निरया। तिण्णञ्हि सकटचक्कानं पत्तानं वा अञ्ञमञ्ञं आसन्नभावेन ठपितानं अन्तरसदिसेसु तिण्णं तिण्णं चक्कवाळानं अन्तरेसु एकेको लोकन्तरिकनिरयो। सो पन परिमाणतो अट्ठयोजनसहस्सप्पमाणो होति निच्चविवटो हेट्ठा उपरि च केनचि न पिहितो। यथा हि हेट्ठा उदकस्स पिधायिका पथवी नत्थी ति असंवुता लोकन्तरिकनिरया, एवं उपरि पि चक्कवाळेसु विय देवविमानानं अभावतो असंवुता अपिहिता चक्खुविञ्ञाणुप्पत्तिनिवारणसमत्थेन च अन्धकारेन समन्नागता। तत्थ किर चक्खुविञ्ञाणं न जायति आलोकस्स अभावतो। तीसु दीपेसु एकप्पहारेन आलोककरणसमत्था पि चन्दिमसूरिया तत्थ आलोकं न दस्सेन्ति। ते हि युगन्धरसमप्पमाणे आकासप्पदेसे विचरणतो चक्कवाळपब्बतस्स वेमज्झेन विचरन्ति, चक्कवाळपब्बतञ्च अतिकम्म लोकन्तरिकनिरया, तस्मा ते तत्थ आलोकं न दस्सेन्ती ति चक्खुविञ्ञाणं नुप्पज्जति।

---

१. कण्टकीलता (स्या०, क०)

यदा पन सब्बञ्ञुबोधिसत्तस्स पटिसन्धिग्गहणादीसु ओभासो उप्पज्जति, तदा चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति। "अञ्ञे पि किर भो सन्ति सत्ता इधूपपन्ना" ति तं दिवसं अञ्ञमञ्ञं पस्सन्ति। अयं पन ओभासो एकं यागुपानमत्तम्पि न तिट्ठति, अच्छरासङ्घाटमत्तमेव विज्जोभासो विय निच्छरित्वा "किं इदं" ति भणन्तानंयेव अन्तरधायति।

किं पन कम्मं कत्वा तत्थ सत्ता निब्बत्तन्ती ति? भारियं दारुणं गरुकं माता-पितूनं धम्मिकसमणब्राह्मणानञ्च उपरि अपराधं अञ्ञञ्च दिवसे दिवसे पाणवधादिं साहसिककम्मं कत्वा उप्पज्जन्ति तम्बपण्णिदीपे अभयचोरनागचोरादयो विय। तेसं अत्तभावो तिगावुतिको होति, वग्गुलीनं विय दीघनखा होन्ति। ते रुक्खे वग्गुलियो B 277
विय नखेहि चक्कवाळपादे लग्गन्ति, यदा संसप्पन्ता अञ्ञमञ्ञस्स हत्थपासगता होन्ति, अथ "भक्खो नो लद्धो" ति मञ्ञमाना खादनत्थं गण्हितुं उपक्कमन्ता विपरिवत्तित्वा लोकसन्धारके उदके पतन्ति, वाते पहरन्ते पि मधुकफलानि विय छिज्जित्वा उदके पतन्ति, पतितमत्ताव अच्चन्तखारे उदके पिट्ठपिण्डं विय विलीयन्ति अतिसीतलभावतो आतपसन्तापाभावेन। अतिसीतलभावमेव हि सन्धाय **अच्चन्तर-खारका** वुत्ता। न हि तं कप्पसण्ठहनउदकं सम्पत्तिकरमहामेघवुट्ठं पथवीसन्धारकं कप्पविनासकउदकं विय खारं भवितुं अरहति। तथा हि सति पथवी पि विलीयेय्य, तेसं वा पापकम्मबलेन पेतानं पकति उदकस्स पुब्बखेळभावापत्ति विय तस्स उदकस्स तदा खारभावप्पत्ति होती ति वुत्तं "अच्चन्तखारे उदके पिट्ठपिण्डं विय विलीयन्ती"ति।

अनन्तानी ति अपरिमाणानि, "एत्तकानी" ति अञ्ञेहि मिनितुं असक्कुणेय्यानि। तानि च भगवा अनन्तेन बुद्धञाणेन अवेदि "अनन्तो आकासो, अनन्तो सत्तनिकायो, अनन्तानि चक्कवाळानी" ति। तिविधम्पि हि अनन्तं बुद्धञाणेन परिच्छिन्दति सयम्पि अनन्तत्ता। यावतकञ्हि ञेय्यं, तावतकं ञाणं। यावतकं ञाणं, तावतकमेव ञेय्यं। ञेय्यपरियन्तिकं ञाणं, ञाणपरियन्तिकं ञेय्यं ति। तेन वुत्तं "**अनन्तेन बुद्धञाणेन अवेदी**"ति आदि। अनन्ता चस्स अनन्तञेय्यप्पटिविज्झनेनेव वेदितब्बा तत्थ अप्पटिहतचारत्ता। इदानि यथावुत्तमत्थं निगमेन्तो आह "**एवमस्स ओकासलोको पि सब्बथा विदितो**" ति।

अपि चेत्थ विवट्टादीनम्पि विदितता वत्तब्बा, तस्मा विवट्टादयो पि आदितो पभुति एवं वेदितब्बा—संवट्टो संवट्टट्ठायी विवट्टो विवट्टट्ठायीति कप्पस्स चत्तारि असङ्ख्येय्यानि। तत्थ संवट्टनं विनस्सनं **संवट्टो**, विनस्समानो असङ्ख्येय्यकप्पो। सो पन अत्थतो कालोयेव, तदा पवत्तमानसङ्खारवसेनस्स विनासो वेदितब्बो। संवट्टतो उद्धं तथाठायीकालो **संवट्टट्ठायी**। विवट्टनं निब्बत्तनं वड्ढनं वा **विवट्टो**, वड्ढमानो असंङ्ख्येय्यकप्पो। सोपि अत्थतो कालोयेव, तदा पवत्तमानसङ्खारवसेनस्स वड्ढि

B 278 वेदितब्बा। विवट्टतो उद्धं तथाठायीकालो **विवट्टट्ठायी**। तत्थ[१] तयो संवट्टा तेजोसंवट्टो आपोसंवट्टो वायोसंवट्टो ति। तिस्सो संवट्टसीमा आभस्सरा सुभकिण्हा वेहप्फला ति। यदा कप्पो तेजेन संवट्टति, तदा आभस्सरतो हेट्ठा अग्गिना डय्हति। यदा आपेन संवट्टति, तदा सुभकिण्हतो हेट्ठा उदकेन विलीयति। यदा वायुना संवट्टति, तदा वेहप्फलतो हेट्ठा वातेन विद्धंसति।

वित्थारतो पन तीसु पि संवट्टकालेसु एकं बुद्धक्खेत्तं विनस्सति। बुद्धक्खेत्तं नाम तिविधं होति जातिक्खेत्तं आणाक्खेत्तं विसयक्खेत्तञ्च। तत्थ **जातिक्खेत्तं** दससहस्सचक्कवाळपरियन्तं होति, यं तथागतस्स पटिसन्धिग्गहणादीसु कम्पति। यत्तके हि ठाने तथागतस्स पटिसन्धिञाणादिञाणानुभावो पुञ्ञफलसमुत्तेजितो सरसेनेव पटिविजम्भति, तं सब्बम्पि बुद्धङ्कुरस्स निब्बत्तनक्खेत्तं नामा ति बुद्धक्खेत्तं ति वुच्चति। **आणाक्खेत्तं** पन कोटिसतसहस्सचक्कवाळपरियन्तं, यत्थ रतनसुत्तं[२] खन्धपरित्तं[३] धजग्गपरित्तं[४] आटानाटियपरित्तं[५] मोरपरित्तं ति[६] इमेसं परित्तानं आनुभावो वत्तति। इद्धिमा हि चेतोवसिप्पत्तो आणाक्खेत्तपरियापन्ने यत्थ कत्थचि चक्कवाळे ठत्वा अत्तनो अत्थाय परित्तं कत्वा तत्थेव अञ्ञं चक्कवाळं गतो पि कतपरित्तो एव होति। एकचक्कवाळे ठत्वा सब्बसत्तानं अत्थाय परित्ते कते आणाक्खेत्ते सब्बसत्तानम्पि अभिसम्भुणातेव परित्तानुभावो तत्थ देवताहि परित्तानं सम्पटिच्छितब्बतो, तस्मा तं आणाक्खेत्तं ति वुच्चति। **विसयक्खेत्तं** पन अनन्तं अपरिमाणं। अनन्तापरिमाणेसु हि चक्कवाळेसु यं यं तथागतो आकङ्खति, तं तं जानाति आकङ्खप्पटिबद्धवत्तिताय बुद्धञाणस्स। एवमेतेसु तीसु बुद्धक्खेत्तेसु एकं आणाक्खेत्तं विनस्सति, तस्मिं पन विनस्सन्ते जातिक्खेत्तं विनट्ठमेव होति। विनस्सन्तम्पि एकतोव विनस्सति, सण्ठहन्तम्पि एकतोव सण्ठहति, तस्सेवं विनासो सण्ठहनञ्च वेदितब्बं।

यस्मिं समये कप्पो अग्गिना नस्सति, आदितोव कप्पविनासकमहामेघो
B 279 उट्ठहित्वा कोटिसतसहस्सचक्कवाळे एकं महावस्सं वस्सति, मनुस्सा तुट्ठा सब्बबीजानि नीहरित्वा वपन्ति, सस्सेसु पन गोखायितमत्तेसु जातेसु गद्रभरवं रवन्तो एकबिन्दुम्पि न वस्सति, तदा पच्छिन्नपच्छिन्नमेव होति वस्सं। इदं सन्धाय हि भगवता "होति सो भिक्खवे समयो यं बहूनि वस्सानि बहूनि वस्ससतानि बहूनि वस्ससहस्सानि बहूनि वस्ससतसहस्सानि देवो न वस्सती" ति[७] वुत्तं। वस्सूपजीविनो पि सत्ता कालं कत्वा परित्ताभादिब्रह्मलोके निब्बत्तन्ति, पुप्फफलूपजीविनियो च देवता। एवं दीघे अद्धाने

---

१. विसुद्धि-ट्ठ० २-४४ पिट्ठादीसु पस्सितब्बं।

२. खु० १–४, ३१२ पिट्ठेसु

३. वि० ४, २४५, अं० १-३८४, खु० ५-५३ पिट्ठेसु

४. सं० १-२२० पिट्ठे।

५. दी० ३.१५८ पिट्ठे।

६. खु० ५,३८ पिट्ठे जातके।

७. अं० २, ४७४ पिट्ठे।

वीतिवत्ते तत्थ तत्थ उदकं परिक्खयं गच्छति, अथानुपुब्बेन मच्छकच्छपा पि कालं कत्वा ब्रह्मलोके निब्बत्तन्ति नेरयिकसत्ता पि। तत्थ नेरयिका सत्तमसूरियपातुभावे विनस्सन्ती ति एके।

झानं पन विना नत्थि ब्रह्मलोके निब्बत्ति, एतेसञ्च केचि दुब्भिक्खपीळिता, केचि अभब्बा झानाधिगमाय, ते कथं तत्थ निब्बत्तन्ती ति? देवलोके पटिलद्धज्झानवसेन। तदा हि "वस्ससतसहस्सस्स अच्चयेन कप्पवुट्ठानं भविस्सती" ति लोकब्यूहा नाम कामावचरदेवा मुत्तसिरा विकिण्णकेसा रुदम्मुखा अस्सूनि हत्थेहि पुञ्छमाना रत्तवत्थनिवत्था अतिविय विरूपवेसधारिनो हुत्वा मनुस्सपथे विचरन्ता एवं आरोचेन्ति "मारिसा मारिसा इतो वस्ससतसहस्सस्स अच्चयेन कप्पवुट्ठानं भविस्सति, अयं लोको विनस्सति, महासमुद्दो पि उस्सुस्सिस्सति, अयञ्च महापथवी सिनेरु च पब्बतराजा डय्हिस्सन्ति विनस्सिस्सन्ति, याव ब्रह्मलोका लोकविनासो भविस्सति. मेत्तं मारिसा भावेथ, करुणं, मुदितं, उपेक्खं मारिसा भावेथ, मातरं उपट्ठहथ, पितरं उपट्ठहथ, कुले जेट्ठापचायिनो होथा" ति। ते पन देवा लोके ब्यूहेन्ति सम्पिण्डेन्ती ति "**लोकब्यूहा**" ति वच्चन्ति। ते किर दिस्वा मनुस्सा यत्थ कत्थचि ठिता पि निसिन्ना पि संवेगजाता सम्भमपत्ताव हुत्वा तेसं आसन्ने ठाने सन्निपतन्ति।

कथं पनेते कप्पवुट्ठानं जानन्ती ति? "धम्मताय सञ्चोदिता" ति आचरिया।" तादिसनिमित्तदस्सनेना" ति एके। "ब्रह्मदेवताहि उय्योजिता" ति अपरे। तेसं पन वचनं सुत्वा येभुय्येन मनुस्सा च भुम्मदेवता च संवेगजाता अञ्ञमञ्ञं मुदुचित्ता हुत्वा मेत्तादीनि पुञ्ञानि करित्वा देवलोके निब्बत्तन्ति। तत्थ दिब्बसुखाभोजनं भुञ्जित्वा ततो वायोकसिणे परिकम्मं कत्वा झानं पटिलभन्ति। देवानं किर सुख- B 280
सम्फस्सवातग्गहणपरिचयेन वायोकसिणे झानानि सुखेनेव इज्झन्ति। तदञ्ञे पन आपायिका सत्ता अपरापरियवेदनीयेन कम्मेन देवलोके निब्बत्तन्ति। अपरापरियवेदनीयकम्मरहितो हि संसारे संसरन्तो नाम सत्तो नत्थि। तेपि तत्थ तथेव झानं पटिलभन्ति। एवं देवलोके पटिलद्धज्झानवसेन सब्बे पि ब्रह्मलोके निब्बत्तन्ति। इदञ्च येभुय्यवसेन वुत्तं।

केचि पन "अपायसत्ता संवट्टमानलोकधातूहि अञ्ञेसु लोकधातूसु पि निब्बत्तन्ति। न हि सब्बे अपायसत्ता तदा रूपारूपभवेसु उप्पज्जन्ती ति सक्का विञ्ञातुं अपायेसु दीघायुकानं देवलोकूपपत्तिया असम्भवतो। नियतमिच्छादिट्ठिको पन विनस्समाने पि कप्पे निरयतो न मुच्चतियेव, तस्मा सो तत्थ अनिब्बत्तित्वा पिट्ठिचक्कवाळे निब्बत्तति। नियतमिच्छादिट्ठिया हि समन्नागतस्स भवतो वुट्ठानं नाम नत्थि। ताय हि समन्नागतस्स नेव सग्गो अत्थि, न मग्गो, तस्मा सो संवट्टमानचक्कवाळतो अञ्ञत्थ निरये निब्बत्तित्वा पच्चति। किं पन पिट्ठिचक्कवाळं न झायती ति? झायति तस्मिं झायमाने पि एस आकासे एकस्मिं पदेसे पच्चती" ति वदन्ति।

वस्सूपच्छेदतो पन उद्धं दीघस्स अद्धुनो अच्चयेन दुतियो सूरियो पातुभवति, पातुभूते पन तस्मिं नेव रत्तिपरिच्छेदो, न दिवापरिच्छेदो पञ्ञायति। एको सूरियो उट्ठेति, एको अत्थं गच्छति, अविच्छिन्नसूरियसन्तापोव लोको होति। यथा च कप्पवुट्ठानकालतो पुब्बे उप्पन्नसूरियविमाने सूरियदेवपुत्तो होति, एवं कप्पविनासकसूरिये नत्थि। कप्पवुट्ठान काले पन यथा अञ्ञे कामावचरदेवा, एवं सूरियदेवपुत्तो पि झानं निब्बत्तेत्वा ब्रह्मलोकं उपपज्जति। सूरियमण्डलं पन पभस्सरतरञ्चेव तेजवन्ततरञ्च हुत्वा पवत्तति। तं अन्तरधायित्वा अञ्ञमेव उपज्जती ति अपरे। तत्थ पकतिसूरिये वत्तमाने आकासे वलाहका पि धूमसिखा पि वत्तन्ति, कप्पविनासकसूरिये वत्तमाने विगतधूमवलाहकं आदासमण्डलं विय निम्मलं नभं होति। ठपेत्वा पञ्च महानदियो सेसकुन्नदिआदीसु उदकं सुस्सति।

B 281 ततो पि दीघस्स अद्धुनो अच्चयेन ततियो सूरियो पातुभवति, यस्स पातुभावा महानदियो पि सुस्सन्ति।

ततो पि दीघस्स अद्धुनो अच्चयेन चतुत्थो सूरियो पातु भवति, यस्स पातुभावा हिमवति महानदीनं पभवा सीहप्पपातदहो[1] मन्दाकिनीदहो कण्णमुण्डदहो रथकारदहो अनोतत्तदहो छद्दन्तदहो कुणालदहो ति इमे सत्त महासरा सुस्सन्ति।

ततो पि दीघस्स अद्धुनो अच्चयेन पञ्चमो सूरियो पातुभवति, यस्स पातुभावा अनुपुब्बेन महासमुद्दे अङ्गुलिपब्बतेमनमत्तम्पि उदकं न सण्ठाति।

ततो पि दीघस्स अद्धुनो अच्चयेन छट्ठो सूरियो पातुभवति, यस्स पातुभावा सकलचक्कवाळं एकधूमं होति परियादिन्नसिनेहं धूमेन। याय हि आपोधातुया तत्थ तत्थ पथवीधातु आबन्धत्ता सम्पिण्डिता हुत्वा तिट्ठति, सा छट्ठसूरियपातुभावेन परिक्खयं गच्छति। यथा चिदं, एवं कोटिसतसहस्सचक्कवाळानि पि।

ततो पि दीघस्स अद्धुनो अच्चयेन सत्तमो सूरियो पातुभवति, यस्स पातुभावा सकलचक्कवाळं एकजालं होति सद्धिं कोटिसतसहस्सचक्कवाळेहि, योजनसतिकादि-भेदानि सिनेरुकूटानि पलुज्जित्वा आकासेयेव अन्तरधायन्ति। सा अग्गिजाला उट्ठहित्वा चातुमहाराजिके गण्हाति। तत्थ कनकविमानरतनविमानमणिविमानानि झापेत्वा तावतिंसभवनं गण्हाति। एतेनेवूपायेन याव पठमज्झानभूमिं गण्हाति, तत्थ तयो पि ब्रह्मलोके झापेत्वा आभस्सरे आहच्च तिट्ठति। सा याव अणुमत्तम्पि सङ्खारगतं अत्थि, ताव न निब्बायति। सब्बसङ्खारपरिक्खया पन सप्पितेलज्झापनग्गिसिखा विय छारिकम्पि अनवसेसेत्वा निब्बायति। हेट्ठा आकासेन सह उपरि आकासो एको होति महन्धकारो।

---

१. सीहपातनो (स्या०) सीहप्पपातनो (क०) म० ट्ठ ३-२५, अं० ट्ठ ३- १८ पिट्ठेसु पन पस्सितब्बं।

एवं एकमसङ्ख्येय्यं एकङ्गणं हुत्वा ठिते लोकसन्निवासे लोकस्स सन्ठानत्थाय देवो वस्सितुं आरभति, आदितोव अन्तरट्ठके हिमपातो विय होति। ततो कणमत्ता तण्डुलमत्ता मुग्गमासबदरआमलकएळालुककुम्भण्डअलाबुमत्ता उदकधारा हुत्वा अनुक्कमेन B 282
उसभद्वेउसभअड्ढगावुतगावुतअड्ढयोजनयोजनद्वियोजन....पे०....योजनसतयोजनसहस्समत्ता हुत्वा कोटिसतसहस्सचक्कवाळगब्भन्तरं याव अविनट्ठब्रह्मलोका पूरेत्वा अन्तरधायति। तं उदकं हेट्ठा च तिरियञ्च वातो समुट्ठहित्वा घनं करोति परिवट्टुमं पदुमिनीपत्ते उदकबिन्दुसदिसं।

कथं ताव महन्तं उदकरासिं घनं करोती ति चे? विवरसम्पदानतो वातस्सा ति। तञ्हिस्स तहिं तहिं विवरं देति। तं एव वातेन सम्पिण्डियमानं घनं करियमानं परिक्खयमानं अनुपुब्बेन हेट्ठा ओतरति। ओतिण्णे ओतिण्णे उदके ब्रह्मलोकट्ठाने ब्रह्मलोको, उपरिचतुकामावचरदेवलोकट्ठाने च देवलोका पातुभवन्ति। चातुमहाराजिकतावतिंसभवनानि पन पथवीसम्बन्धताय न ताव पातुभवन्ति। पुरिमपथविट्ठानं ओतिण्णे पन बलववाता उप्पज्जन्ति, ते तं पिहितद्वारे धम्मकरणे ठितउदकमिव निरुस्साहं कत्वा रुम्भन्ति। मधुरोदकं परिक्खयं गच्छमानं उपरि रसपथविं समुट्ठापेति, उदकपिट्ठे उप्पलिनीपत्तं विय पथवी सण्ठाति। सा वण्णसम्पन्ना चेव होति गन्धरससम्पन्ना च निरुदकपायासस्स उपरि पटलं विय। एत्थ पन महाबोधिपल्लङ्कट्ठानं विनस्समाने लोके पच्छा विनस्सति, सण्ठहमाने पठमं सण्ठहती ति वेदितब्बं।

तदा च आभस्सरब्रह्मलोके पठमतराभिनिब्बत्ता सत्ता आयुक्खया वा पुञ्ञक्खया वा ततो चवित्वा ओपपातिका हुत्वा इधूपपज्जन्ति, ते होन्ति सयंपभा अन्तलिक्खचरा, ते तं रसपथविं सायित्वा तण्हाभिभूता आलुप्पकारकं परिभुञ्जितुं उपक्कमन्ति। अथ तेसं सयंपभा अन्तरधायति, अन्धकारो होति। ते अन्धकारं दिस्वा भायन्ति। ततो तेसं भयं नासेत्वा सूरभावं जनयन्तं परिपुण्णपञ्ञासयोजनं सूरियमण्डलं पातुभवति। ते तं दिस्वा "आलोकं पटिलभिम्हा" ति हट्ठतुट्ठा हुत्वा "अम्हाकं भीतानं भयं नासेत्वा सूरभावं जनयन्तो उट्ठितो, तस्मा सूरियो होतू"ति **सूरियो** त्वेवस्स नामं करोन्ति।

अथ सूरिये दिवसं आलोकं कत्वा अत्थङ्गते "यम्पि आलोकं लभिम्ह, सो पि नो नट्ठो" ति पुन भीता होन्ति। तेसं एवं होति "साधु वतस्स, सचे अञ्ञं आलोकं लभेय्यामा" ति। तेसं चित्तं ञत्वा विय एकूनपञ्ञासयोजनं चन्दमण्डलं पातुभवति। ते तं दिस्वा भिय्योसो मत्ताय हट्ठतुट्ठा हुत्वा "अम्हाकं छन्दं ञत्वा विय उट्ठितो, तस्मा B 283
चन्दो होतू" ति **चन्दो** त्वेवस्स नामं करोन्ति।

एवं चन्दिमसूरियेसु पातुभूतेसु नक्खत्तानि तारकरूपानि पातुभवन्ति, ततो पभुति रत्तिन्दिवा पञ्ञायन्ति, अनुक्कमेन च मासड्ढमासउतुसंवच्छरा, चन्दिमसूरियानं पातुभूतदिवसेयेव सिनेरुचक्कवाळहिमवन्तपब्बता दीपसमुद्दा च पातुभवन्ति। ते च खो अपुब्बं अचरिमं फग्गुणपुण्णमदिवसेयेव पातुभवन्ति। कथं? यथा नाम कङ्गुभत्ते

पच्चमाने एकप्पहारेनेव पुब्बुळका[1] उट्ठहन्ति, एके पदेसा थूपथूपा होन्ति, एके निन्न-निन्ना, एके समसमा, एवमेव थूपथूपट्ठाने पब्बता होन्ति, निन्ननिन्नट्ठाने समुद्दा, समसमट्ठाने दीपा ति ।

अथ तेसं सत्तानं रसपथविं परिभुञ्जन्तानं कम्मेन[2] एकच्चे वण्णवन्तो होन्ति, एकच्चे दुवण्णा होन्ति । तत्थ वण्णवन्तो दुब्बण्णे अतिमञ्ञन्ति, तेसं अतिमानपच्चया सा पि **रसपथवी** अन्तरधायति, **भूमिपप्पटको** पातुभवति । अथ नेसं तेनेव नयेन सोपि अन्तरधायति, अथ **पदालता**[3] पातुभवति । तेनेव नयेन सा पि अन्तरधायति, अकट्ठ-पातो **सालि** पातुभवति अकणो अथुसो सुगन्धो तण्डुलफलो । ततो नेसं भाजनानि उप्पज्जन्ति । ते सालिं भाजने ठपेत्वा पासाणपिट्ठियं ठपेन्ति, सयमेव जालसिखा उट्ठहित्वा तं पचति । सो होति ओदनो सुमनजातिपुप्फसदिसो, न तस्स सूपेन वा ब्यञ्जनेन वा करणीयं अत्थि, यं यं रसं भुञ्जितुकामा होन्ति, तं तं रसोव होति । तेसं तं ओळारिकं आहारं आहरयतं ततो पभुति मुत्तकरीसं सञ्जायति । तथा हि रसपथवी भूमिपप्पटको पदालता ति इमे ताव परिभुत्ता सुधाहारो विय खुदं विनोदेत्वा रसहरणीहि रसमेव परिब्रूहेन्ता तिट्ठन्ति वत्थुनो सुखुमभावेन, न निस्सन्दा, सुखुमभावेनेव गहणिन्धनमेव च होति । ओदनो पन परिभुत्तो रसं वड्ढेन्तो पि वत्थुनो ओळारिकभावेनेव निस्सन्दं विस्सज्जेन्तो पस्सावं करीसञ्च उप्पादेति ।

अथ नेसं निक्खमनत्थाय वणमुखानि पभिज्जन्ति । पुरिसस्स पुरिसभावो, इत्थिया इत्थिभावो पातुभवति । पुरिमत्तभावेसु हि पवत्त उपचारज्झानानुभावेन याव सत्तसन्ता-
B 284 नेसु कामरागो विक्खम्भनवेगेन समितो, न ताव बहलकामरागूपनिस्सयानि इत्थिपुरिसिन्द्रियानि पातुरहेसुं । यदा पनस्स विच्छिन्नताय बहलकामरागो लद्धावसरो अहोसि, तदा तदुपनिस्सयानि तानि भत्तानं अत्तभावेसु सञ्जायिंसु, तदा इत्थी पुरिसं, पुरिसो च इत्थिं अतिवेलं उपनिज्झायति । तेसं अतिवेलं उपनिज्झायनपच्चया कामपरिळाहो उप्पज्जति, ततो **मेथुनं धम्मं** पटिसेवन्ति । ते असद्धम्मपटिसेवनपच्चया विञ्ञूहि गरहियमाना विहेट्ठियमाना तस्स असद्धम्मस्स पटिच्छादनहेतु **अगारानि** करोन्ति । ते अगारं अज्झावसमाना अनुक्कमेन अञ्ञतरस्स अलसजातिकस्स सत्तस्स दिट्ठानुगतिं आपज्जन्ता सन्निधिं करोन्ति । ततो पभुति कणो पि थुसो पि तण्डुलं परियोनन्धन्ति, लायितट्ठानम्पि न पटिविरुहति ।

ते सन्निपतित्वा अनुत्थुनन्ति "पापका वत भो धम्मा सत्तेसु पातुभूता, मयं हि पुब्बे मनोमया अहुम्हा" ति, **अग्गञ्ञसुत्ते**[4] वुत्तनयेन वित्थारेतब्बं । ततो मरियादं ठपेन्ति, अथञ्ञतरो सत्तो अञ्ञस्स भागं अदिन्नं आदियति, तं द्विक्खत्तुं परिभासेत्वा ततियवारे

---

१. बुब्बळका (सी०, स्या०) । २ कमेन (सी०) विसुद्धि-ट्ठ २-४८ पिट्ठेपि ।
३. बदालता (सी० स्या०) ४. दी० ३-७५ पिट्ठे ।

पाणिलेड्डुदण्डेहि पहरन्ति। ते एवं अदिन्नादाने कलहमुसावाददण्डादानेसु उप्पन्नेसु च सन्निपतित्वा चिन्तयन्ति[२] "यन्नून मयं एकं सत्तं सम्मन्नेय्याम, यो नो सम्मा खीयितब्बं खीयेय्य, गरहितब्बं गरहेय्य, पब्बाजेतब्बं पब्बाजेय्य, मयं पनस्स सालीनं भागमनुप्पदस्सामा" ति। एवं कतसन्निट्ठानेसु पन सत्तेसु इमस्मिं ताव कप्पे अयमेव भगवा बोधिसत्तभूतो तेन समयेन तेसु सत्तेसु अभिरूपतरो च दस्सनीयतरो च महेसक्खतरो च बुद्धिसम्पन्नो पटिबलो निग्गहपग्गहं कातुं। ते तं उपसङ्कमित्वा याचित्वा सम्मन्निंसु। सो तेन महाजनेन सम्मतो ति **महासम्मतो**, खेत्तानं अधिपती ति **खत्तियो**, धम्मेन समेन परेसं रञ्जेती ति **राजा** ति तीहि नामेहि पञ्ञायित्थ। यञ्हि लोके अच्छरियट्ठानं, बोधिसत्तोव तत्थ आदिपुरिसो ति एवं बोधिसत्तं आदिं कत्वा खत्तियमण्डले सण्ठिते अनुपुब्बेन ब्राह्मणादयो पि वण्णा सण्ठहिंसु।

तत्थ कप्पविनासकमहामेघतो याव जालोपच्छेदो, इदमेकमसङ्ख्येय्यं **संवट्टो** ति वुच्चति। कप्पविनासकजालोपच्छेदतो याव कोटिसतसहस्सचक्कवाळपरिपूरको सम्पत्ति B 285
महामेघो, इदं दुतियमसङ्खेय्यं **संवट्टट्ठायी** ति वुच्चति। सम्पत्तिमहामेघतो याव चन्दिमसूरियपातुभावो इदं ततियमसङ्ख्येय्यं विवट्टो ति वुच्चति। चन्दिमसूरियपातुभवतो याव पुन कप्पविनासकमहामेघो, इदं चतुत्थमसङ्खेय्यं **विवट्टट्ठायी** ति वुच्चति। विवट्टट्ठायी असङ्खेय्यं चतुसट्ठिअन्तरकप्पसङ्गहं। "वीसति अन्तरकप्पसङ्गहं" ति केचि। सेसासङ्खेय्यानि कालतो तेन समप्पमाणानेव इमानि चत्तारि असङ्ख्येय्यानि एको महाकप्पो होति। एवं ताव अग्गिना विनासो च सण्ठहनञ्च वेदितब्बं।

यस्मिं पन समये कप्पो उदकेन नस्सति, आदितोव कप्पविनासकमहामेघो वुट्ठहित्वा ति पुब्बे वुत्तनयेनेव वित्थारेतब्बं। अयं पन विसेसो—यथा तत्थ दुतियसूरियो, एवमिध कप्पविनासको खारुदकमहामेघो वुट्ठाति। सो आदितो सुखुमं सुखुमं वस्सन्तो अनुक्कमेन महाधाराहि कोटिसतसहस्सचक्कवाळानं पूरेन्तो वस्सति। खारुदकेन फुट्ठफुट्ठा पथवीपब्बतादयो विलीयन्ति, उदकं समन्ततो वातेहि धारीयति। पथविया हेट्ठिमन्ततो पभुति याव दुतियज्झानभूमिं उदकं गण्हाति। तेन हि खारुदकेन फुट्ठफुट्ठा पथवीपब्बतादयो उदके पक्खित्तलोणसक्खरा विय विलीयन्तेव, तस्मा पथवीसन्धारकउदकेन सद्धिं एकूदकमेव तं होती ति केचि। अपरे पन "पथवीसन्धारकउदकं तं सन्धारकवायुक्खन्धञ्च अनवसेसतो विनासेत्वा सब्बत्थ सयमेव एको घनभूतो तिट्ठती" ति वदन्ति, तं युत्तं। उपरि पन छ पि ब्रह्मलोके विलीयापेत्वा सुभकिण्हे आहच्च तिट्ठति। तं याव अणुमत्तम्पि सङ्खारगतं अत्थि, ताव न वूपसम्मति, उदकानुगतं पन सब्बं सङ्खारगतं अभिभवित्वा सहसा वूपसम्मति, अन्तरधानं गच्छति। हेट्ठा आकासेन सह उपरि आकासो एको होति महन्धकारो ति सब्बं वुत्तसदिसं। केवलं पनिध आभस्सरब्रह्मलोकं आदिं कत्वा लोको पातुभवति। सुभकिण्हतो चवित्वा आभस्सरट्ठानादीसु सत्ता निब्बत्तन्ति। तत्थ कप्पविनासकमहामेघतो याव कप्पविनासकखारुदकोपच्छेदो, इदमेकमसङ्खेय्यं। उदकुपच्छेदतो याव सम्पत्तिमहामेघो, इदं दुतियमसङ्खेय्यं। सम्पत्तिमहामेघतो याव चन्दिमसूरियपातुभावो, इदं ततियमसङ्खेय्यं। चन्दिमसूरियपातुभावतो B 286

याव कप्पविनासकमहामेघो, इदं चतुत्थमसङ्खेय्यं। इमानि चत्तारि असङ्ख्येय्यानि एको महाकप्पो होति। एवं उदकेन विनासो च सण्ठहनञ्च वेदितब्बं।

यस्मिं समये कप्पो **वातेन** नस्सति, आदितोव कप्पविनासकमहामेघो वुट्ठहित्वा ति पुब्बे वुत्तनयेनेव वित्थारेतब्बं। अयं पन विसेसो— यथा तत्थ दुतियसूरियो, एवमिध कप्पविनासनत्थं वातो समुट्ठाति। सो पठमं थूलरजं[1] उट्ठापेति, ततो सण्हरजं[2] सुखुमवालिकं थूलवालिकं सक्खरपासाणादयो ति यावकूटागारमत्ते पासाणे विसमट्ठानेठितमहारुक्खे च उट्ठापेति। ते पथवितो नभमुग्गता न पुन पतन्ति, तत्थेव चुण्णविचुण्णा हुत्वा अभावं गच्छन्ति। अथानुक्कमेन हेट्ठा महापथविया वातो समुट्ठहित्वा पथविं परिवत्तेत्वा उद्धं मूलं कत्वा आकासे खिपति। योजनसतप्पमाणा पि पथविप्पदेसा द्वियोजनतियोजनचतुयोजनपञ्चयोजनछयोजनसत्तयोजनप्पमाणा पि पभिज्जित्वा वातवेगुक्खित्ता आकासेयेव चुण्णविचुण्णा हुत्वा अभावं गच्छन्ति। चक्कवाळपब्बतम्पि सिनेरुपब्बतम्पि वातो उक्खिपित्वा आकासे खिपति। ते अञ्ञमञ्ञं अभिहन्त्वा चुण्णविचुण्णा हुत्वा विनस्सन्ति। एतेनेवूपायेन भूमट्ठकविमानानि च आकासट्ठकविमानानि च विनासेन्तो छकामावचरदेवलोके विनासेत्वा कोटिसतसहस्सचक्कवाळानि विनासेति। तत्थ चक्कवाळा चक्कवाळेहि, हिमवन्ता हिमवन्तेहि, सिनेरू सिनेरूहि अञ्ञमञ्ञं समागन्त्वा चुण्णविचुण्णा हुत्वा विनस्सन्ति। पथवितो याव ततियज्झानभूमि वातो गण्हाति, नव पि ब्रह्मलोके विनासेत्वा वेहप्फले आहच्च तिट्ठति। एवं पथवीसन्धारकउदकेन तंसन्धारकवातेन च सद्धिं सब्बसङ्खारगतं विनासेत्वा सयम्पि विनस्सति अवट्ठानस्स कारणाभावतो। हेट्ठा आकासेन सह उपरिआकासो एको होति महन्धकारो ति सब्बं वुत्तसदिसं। इध पन सुभकिण्हब्रह्मलोकं आदिं कत्वा लोको पातुभवति। वेहप्फलतो चवित्वा सुभकिण्हट्ठानादीसु सत्ता निब्बत्तन्ति। तत्थ कप्पविनासकमहामेघतो याव कप्पविनासकवातुपच्छेदो, इदमेकमसङ्खेय्यं। वातुपच्छेदतो याव सम्पत्तिमहामेघो, इदं दुतियमसङ्खेय्यं ति आदि वुत्तनयमेव। एवं वातेन विनासो च सण्ठहनञ्च वेदितब्बं।

B : 87 अथ किं कारणा एवं लोको विनस्सति। यदि पि हि सङ्खारानं अहेतुको सरसनिरोधो विनासकाभावतो, सन्ताननिरोधो[3] पन हेतुविरहितो नत्थि। यथा तं सत्तनिकायेसू ति भाजनलोकस्सपि सहेतुकेन विनासेन भवितब्बं, तस्मा किमेवं लोकविनासे कारणं ति? अकुसलमूलं कारणं। यथा हि तत्थ निब्बत्तनकसत्तानं पुञ्ञबलेन पठमं लोको विवट्टति, एवं तेसं पापकम्मबलेन संवट्टति, तस्मा अकुसलमूलेसु उस्सन्नेसु एवं लोको विनस्सति। यथा हि रागदोसमोहानं अधिकभावेन यथाक्कमं रोगन्तरकप्पो सत्थन्तरकप्पो दुब्भिक्खन्तरकप्पो ति इमे तिविधा अन्तरकप्पा विवट्टट्ठायिम्हि असङ्ख्येय्यकप्पे जायन्ति। एवमेते यथावुत्ता तयो संवट्टा रागादीनं अधिकभावेनेव होन्ति।

---

१. सण्हरजं (स्या०)। २. थूलरजं (स्या०)।

३. सङ्खारनिरोधो (सी०)।

तत्थ रागे उस्सन्नतरे अग्गिना विनस्सति, दोसे उस्सन्नतरे उदकेन विनस्सति। दोसे हि उस्सन्नतरे अधिकतरेन दोसेन विय तिक्खतरेन खारुदकेन विनासो युत्तो ति। केचि पन "दोसे उस्सन्नतरे अग्गिना, रागे उदकेना" ति वदन्ति। तेसं किर अयमधिप्पायो—पाकटसत्तुसदिसस्स दोसस्स अग्गिसदिसता, अपाकटसत्तुसदिसस्स रागस्स खारुदकसदिसता च युत्ता ति। मोहे पन उस्सन्नतरे वातेन विनस्सति। एवं विनस्सन्तो पि च निरन्तरमेव सत्त वारे अग्गिना नस्सति, अट्ठमे वारे उदकेन, पुन सत्त वारे अग्गिना, अट्ठमे उदकेना ति एवं अट्ठमे अट्ठमे वारे विनस्सन्तो सत्तक्खत्तुं उदकेन विनस्सित्वा पुन सत्त वारे अग्गिना नस्सति। एत्तावता तेसट्ठि कप्पा अतीता होन्ति। एत्थन्तरे उदकेन नस्सनवारं सम्पत्तम्पि पटिबाहित्वा लद्धोकासो वातो परिपुण्णचतुसट्ठिकप्पायुके सुभकिण्हे विद्धंसेन्तो लोकं विनासेति। एत्थ पन रागो सत्तानं बहुलं पवत्तती ति अग्गिवसेन बहुसो लोकविनासो वेदितब्बो। इति एवं इमेहि कारणेहि विनस्सित्वा सण्ठहन्तं सण्ठहित्वा ठितञ्च ओकासलोकं भगवा याथावतो अवेदी ति एवम्पिस्स सब्बथा ओकासलोको विदितो ति दट्ठब्बं।

यं पन हेट्ठा वुत्तं "सब्बथा विदितलोकत्ता लोकविदू" ति, इदानि तं निगमेन्तो आह **"एवं सब्बथा विदितलोकत्ता लोकविदू"** ति। तत्था **सब्बथा** ति लक्खणादिप्पभेदतो सङ्खारलोकस्स, आसयादिप्पभेदतो सत्तलोकस्स, परिमाणसण्ठानादिप्पभेदतो ओकासलोकस्सा ति एवं सब्बप्पकारेन विदितलोकत्ता ति अत्थो। B 288

इदानि **अनुत्तरो** ति पदस्स अत्थं संवण्णेन्तो आह **"अत्तनो पन गुणेही** ति आदि। तत्थ **अत्तनो** ति निस्सक्कत्थे सामिवचनमेतं, अत्ततो ति[1] अत्थो। गुणेहि अत्तनो विसिट्ठतरस्सा ति सम्बन्धो। तरग्गहणञ्चेत्थ "अनुत्ततरो" ति पदस्स अत्थनिद्देसताय कतं, न विसिट्ठस्स कस्सचि अत्थिताय। सदेवके हि लोके सदिसकप्पो पि नाम कोचि तथागतस्स नत्थि, कुतो सदिसो, विसि[illegible] पन का कथा। **कस्सचो** ति कस्सचि पि। **अभिभवती** ति सोलसम्पदाय उपनिस्सयभूतानं हिरोत्तप्पमेत्ताकरुणानं विसेसपच्चयानं सद्धासतिवीरियपञ्ञानञ्च उक्कंसप्पत्तिया समुदागमतो पट्ठाय न अञ्ञसाधारणो सवासनपटिपक्खस्स पहीनत्ता उक्कंसपारमिप्पत्तो सत्थु सीलगुणो, तेन भगवा सदेवकं लोकं अञ्ञदत्थु अभिभुय्य पवत्तति, न सयं केनचि अभिभुय्यती ति अधिप्पायो। एवं समाधिगुणादीसु पि यथारहं वत्तब्बं। सीलादयो चेते लोकियलोकुत्तरमिस्सका वेदितब्बा, विमुत्तिञाणदस्सनं पन लोकियं कामावचरमेव।

यदि एवं कथं तेन सदेवकं लाकं अभिभवती ति ? तस्स पि आनुभावतो असदिसत्ता। तम्पि हि विसयतो पवत्तितो पवत्तिआकारतो च उत्तरितरमेव। तञ्हि अनञ्ञसाधारणं सत्थु विमुत्तिगुणं आरब्भ पवत्तति, पवत्तमानञ्च अतक्कावचरं परमगम्भीरं सण्हं सुखुमं सातिसयं पटिपक्खधम्मानं सुप्पहीनत्ता सुट्ठु पाकटं विभूततरं

---

१. अत्तना ति (सो०)

कत्वा पवत्तति, सम्मदेव च वसीभावस्स पापकत्ता भवङ्गपरिवासस्स च अतिपरित्तकत्ता लहु लहु पवत्तती ति।

एवं सीलादिगुणेहि भगवतो उत्तरितरस्स अभावं दस्सेत्वा इदानि सदिसस्स पि अभावं दस्सेतुं "**सीलगुणेन पि असमो**" ति आदि वुत्तं। तत्थ **असमो** ति एकस्मिं काले नत्थि एतस्स सीलादिगुणेन समो सदिसो ति असमो। तथा असमेहि समो **असमसमो**।
B 289 असमा वा समा एतस्सा ति असमसमो। सीलादिगुणेन नत्थि एतस्स पटिमा ति **अप्पटिमो**। सेसपदद्वये पि एसेव नयो। तत्थ उपमामत्तं पटिमा, सदिसूपमा पटिभागो, युगग्गाहवसेन ठितो पटिपुग्गलो ति वेदितब्बो।

न खो पनाहं भिक्खवे समनुपस्सामी ति आदीसु मम समन्तचक्खुना हत्थतले आमलकं विय सब्बं लोकं पस्सन्तो पि तत्थ सदेवके…पे०…पजाय अत्तनो अत्ततो सीलसम्पन्नतरं सम्पन्नतरसीलं कञ्चिपि पुग्गलं न खो पन पस्सामि तादिसस्स अभावतो ति अधिप्पायो।

अग्गप्पसादसुत्तादीनी ति एत्थ—

"यावता भिक्खवे सत्ता अपदा वा द्विपदा वा चतुप्पदा वा बहुप्पदा वा रूपिनो वा अरूपिनो वा सञ्ञिनो वा असञ्ञिनो वा नेवसञ्ञीनासञ्ञिनो वा, तथागतो तेसं अग्गमक्खायति अरहं सम्मासम्बुद्धो[1]। ये भिक्खवे बुद्धे पसन्ना, अग्गे ते पसन्ना। अग्गे खो पन पसन्नानं अग्गो विपाको होती" ति—

इदं अग्गप्पसादसुत्तं। **आदि-सद्देन**—

"सदेवके भिक्खवे लोके…पे०…सदेवमनुस्साय तथागतो अभिभू अनभिभूतो अञ्ञदत्थु दसो वसवत्ती, तस्मा तथागतो ति वुच्चती" ति[2]—

एवमादीनि सुत्तपदानि वेदितब्बानि। **आदिका गाथायो** ति—

"अहं हि अरहा लोके, अहं सत्था अनुत्तरो।
एकोम्हि सम्मासम्बुद्धो, सीतिभूतोस्मि निब्बुतो॥[3]

दन्तो दमयतं सेट्ठो, सन्तो समयतं इसि।
मुत्तो मोचयतं अग्गो, तिण्णो तारयतं वरो॥[4]

१. अं० १-३४३, खु० १-२५४ पिट्ठेसु।

२. अं० १-३३२, दी० ३-१११ पिट्ठेसु।

३. वि० ३-१२, म० १-२२७, म० २, २९५ पिट्ठेसु।

४. खु० १-२७७ पिट्ठे।

नयिमस्मिं लोके परस्मिं वा पन,
बुद्धेन सेट्ठो सदिसो च विज्जति।
आहुनेय्यानं परमाहुतिं[1] गतो,
पुञ्ञत्थिकानं विपुलप्फलेसिनं"[2] ति ॥ B 290

एवमादिका गाथा वित्थारेतब्बा।

पुरिसदम्मसारथी ति आदीसु दमितब्बा ति दम्मा, दमितुं अरहरूपा। पुरिसा च ते दम्मा चाति पुरिसदम्मा। विसेसनस्स चेत्थ परनिपातं कत्वा निद्देसो, दम्मपुरिसा ति अत्थो। "सति पि मातुगामस्स पि दम्मभावे पुरिसग्गहणं उक्कट्ठपरिच्छेदवसेना" ति वदन्ति। **सारेती** ति इमस्स अत्थं दस्सेन्तो आह "**दमेती**" ति आदि। तत्थ **दमेती** ति समेति, कायसमादीहि योजेती ति अत्थो। तं पन कायसमादीहि योजनं यथारहं तदङ्गविनयादीसु पतिट्ठापनं होती ति आह "**विनेती ति वुत्तं होती**" ति। **अदन्ता** ति इदं सब्बेन सब्बं दमतं[3] अनुपगता पुरिसदम्मा ति वुत्ता ति कत्वा वुत्तं। ये पन विप्पकतदम्मभावा सब्बथा दमेतब्बतं नातिवत्ता, तेपि पुरिसदम्मा एव, यतो[4] ते सत्था दमेति। भगवा हि विसुद्धसीलस्स पठमज्झानं आचिक्खति, पठमज्झानलाभिनो दुतियज्झानं ति आदिना तस्स तस्स उपरूपरि विसेसं आचिक्खन्तो एकदेसेन दन्ते पि समेति। तेनेव वुत्तं **विसुद्धिमग्गे**[5] "अपि च सो भगवा विसुद्धसीलादीनं पठमज्झानादीनि सोतापन्नादीनञ्च उत्तरिमग्गप्पटिपदं आचिक्खन्तो दन्ते पि दमेतियेवा" ति। अथ वा सब्बेन सब्बं अदन्ता एकदेसेन दन्ता च इध अदन्तग्गहणेनेव सङ्गहिता ति वेदितब्बं। **दमेतुं युत्ता** ति दमनारहा।

तिरच्छानपुरिसा ति आदीसु उद्धं अनुगन्त्वा तिरियं अञ्चिता गता वड्ढिता ति तिरच्छाना, देवमनुस्सादयो विय उद्धं दीघं अहुत्वा तिरियं दीघा ति अत्थो। तिरच्छानायेव पुरिसा तिरच्छानपुरिसा। मनस्स उस्सन्नताय **मनुस्सा**। सतिसूरभावब्रह्मचरिययोग्यतादिगुणवसेन उपचितमानसा उक्कट्ठगुणचित्ता। के पन ते? जम्बुदीपवासिनो सत्तविसेसा। तेनाह भगवा— B 291

"तीहि भिक्खवे ठानेहि जम्बुदीपका मनुस्सा उत्तरकुरुके च मनुस्से अधिग्गण्हन्ति देवे च तावतिंसे। कतमेहि तीहि, सूरा सतिमन्तो इध ब्रह्मचरियवासो"[6] ति।

तथा हि बुद्धा भगवन्तो पच्चेकबुद्धा अग्गसावका महासावका चक्कवत्तिनो अञ्ञे च महानुभावा सत्ता तत्थेव उप्पज्जन्ति। तेहि समानरूपादिताय पन सद्धिं

---

१. तमाहु दक्खिणेय्यानं अग्गतं (सी०), यमाहु दक्खिणेय्यानं अग्गतं (स्या०)।
२. खु० २-९५, अभि० ३-४०३ पिट्ठेसु।
३. दमततं (सी०) दमथं (स्या०)।
४. ततो (सी०)।
५. विसुद्धि, १-२०१ पिट्ठे।
६. अं० ३-१९८ पिट्ठे।

परित्तदीपवासीहि इतरमहादीपवासिनो पि मनुस्सात्वेव पञ्ञायिंसू ति एके। अपरे पन भणन्ति—लोभादीहि च अलोभादीहि च सहितस्स मनस्स उस्सन्नताय मनुस्सा। ये हि सत्ता मनुस्सजातिका, तेसु विसेसतो लोभादयो अलोभादयो च उस्सन्ना, ते लोभादि-उस्सन्नताय अपायमग्गं, अलोभादि उस्सन्नताय सुगतिमग्गं निब्बानगामिमग्गञ्च पूरेन्ति, तस्मा लोभादीहि अलोभादीहि च सहितस्स मनस्स उस्सन्नताय परित्तदीपवासोहि सद्धिं चतुमहादीपवासिनो सत्तविसेसा मनुस्सा ति वुच्चन्ति। लोकिया पन "मनुनो अपच्चभावेन मनुस्सा" ति वदन्ति। मनु नाम पठमकप्पिको लोकमरियादाय आदिभूतो हिताहितविधायको सत्तानं पितुट्ठानियो, यो सासने महासम्मतो ति वुच्चति, पच्चक्खतो परम्पराय च तस्स ओवादानुसासनियं ठिता तस्स पुत्तसदिसताय मनुस्सा मनुस्सा ति च वुच्चन्ति। ततो एव हि ते माणवा "मनुजा" ति च वोहरीयन्ति, मनुस्सा च ते पुरिसा चाति मनुस्सपुरिसा।

अमनुस्सपुरिसा ति एत्थ न मनुस्सा ति अमनुस्सा। तंसदिसता एत्थ जोती-यति। तेन मनुस्सत्तमत्तं नत्थि, अञ्ञं समानं ति यक्खादयो अमनुस्सा ति अधिप्पेता। न ये केचि मनुस्सेहि अञ्ञे, तथा तिरच्छानपुरिसानं विसुं गहणं कतं। यक्खादयो एव च निद्दिट्ठा। अपलालो हिमवन्तवासी, चूळोदरमहोदरा नागदीपवासिनो, अग्गिसिख-धूमसिखा सीहळदीपवासिनो निब्बिसा कता दोसविसस्स विनोदनेन। तेनाह—"**सरणेसु**
B 292 **च सीलेसु च पतिट्ठापिता**" ति। **कूटदन्तादयो** ति **आदि**-सद्देन घोरमुखउपालिगहपति-आदीनं सङ्गहो दट्ठब्बो। **सक्कादयो** ति **आदि**-सद्देन अजकलापयक्खबकब्रह्मादीनं सङ्गहो दट्ठब्बो। एतेसं पन दमनं तत्थ तत्थ वुत्तनयेनेव सक्का विञ्ञातुं ति अतिप्प-पञ्चभावतो इध न वुच्चति। **इदञ्चेत्थ सुत्तं वित्थारेतब्बं** ति इदं केसीसुत्तं "**विनीता विचित्रेहि विनयनूपायेहो**" ति एतस्मिं अत्थे वित्थारेतब्बं यथारहं सण्हादीहि उपायेहि विनयनस्स दीपनतो।

अत्थपदं ति अत्थाभिब्यञ्जनकं पदं, वाक्यं ति अत्थो। वाक्येन हि अत्थाभिब्यत्ति, न नामादिपदमत्तेन, एकपदभावेन च अनञ्ञसाधारणो सत्थु पुरिसदम्मसारथिभावो दस्सितो होति। तेनाह "**भगवा हो**" ति आदि। **अट्ठ दिसा** ति अट्ठ समापत्तियो। ता हि अञ्ञमञ्ञं सम्बन्धा पि असंकिण्णभावेन दिस्सन्ति अपदिस्सन्ति, दिसा विया ति वा दिसा। **असज्जमाना** ति न सज्जमाना वसीभावप्पत्तिया निस्सङ्गचारा। **धावन्तो** ति जवनवुत्तियोगतो धावन्ति। **एकंयेव दिसं धावती** ति अत्तनो कायं अपरि-वत्तन्तो ति अधिप्पायो, सत्थारा पन दमिता पुरिसदम्मा एकिरियापथेनेव अट्ठ दिसा धावन्ति। तेनाह "**एकपल्लङ्केनेव निसिन्ना**" ति। **अट्ठ दिसा** ति च निदस्सनमत्तमेतं लोकियेहि अगतपुब्बं निरोधसमापत्तिदिसं अमतदिसञ्च पक्खन्दनतो।

दिट्ठधम्मिकसम्परायिकपरमत्थेही ति आदोसु दिट्ठधम्मो वुच्चति पच्चक्खो अत्तभावो, तत्थ नियुत्तो ति दिट्ठधम्मिको, इधलोकत्थो। कम्मकिलेसवसेन सम्परेतब्बतो सम्मा गन्तब्बतो सम्परायो, परलोको। तत्थ नियुत्तो ति सम्परायिको, परलोकत्थो। परमो उत्तमो अत्थो परमत्थो, निब्बानं। तेहि दिट्ठधम्मिकसम्परायिक परमत्थेहि।

यथारहं ति यथानुरूपं, तेसु तेसु अत्थेसु यो यो पुग्गलो यं यं अरहति, तदनुरूपं। **अनुसासती** ति विनेति तस्मिं तस्मिं अत्थे पतिट्ठापेति। सह अत्थेन वत्तती ति **सत्थो**, भण्डमूलेन वणिज्जाय देसन्तरं गच्छन्तो जनसमूहो। हितुपदेसादिवसेन परिपालेतब्बो सासितब्बो सो एतस्स अत्थी ति **सत्था** सत्थवाहो निरुत्तिनयेन। सो विय भगवा ति आह "**सत्था विया ति सत्था, भगवा सत्थवाहो**" ति।

इदानि तमत्थं निद्देसपाळिनयेन दस्सेतुं "**यथा सत्थवाहो**" ति आदि वुत्तं। B 293
तत्थ **सत्थे** ति सत्थिके जने। कं उदकं करोन्ति एत्था ति **कन्तारो**, निरुदको अरञ्ञप्पदेसो। रुळ्हीवसेन पन इतरो पि अरञ्ञप्पदेसो तथा वुच्चति। **चोरकन्तारं** ति चोरेहि अधिट्ठितकन्तारं, तथा **वाळकन्तारं**। **दुब्भिक्खकन्तारं** ति दुल्लभभिक्खं कन्तारं। **तारेती** ति अखेमन्तट्ठानं अतिक्कामेति। **उत्तारेती** ति आदि उपसग्गेन पदं वड्ढेत्वा वुत्तं। अथ वा **उत्तारेती** ति खेमन्तभूमिं उपनेन्तो तारेति। **नित्तारेती** ति अखेमन्तट्ठानतो निक्खमेन्तो तारेति। **पतारेती** ति परिग्गहेत्वा तारेति, हत्थेन परिग्गहेत्वा तारेति विय तारेती ति अत्थो। सब्बम्पेतं तारणुत्तारणादि खेमट्ठाने ठपनमेवा ति आह "**खेमन्तभूमिं सम्पापेती**" ति। **सत्ते** ति वेनेय्यसत्ते। महागहनताय महानत्थताय दुन्नित्थरताय च जातियेव कन्तारो **जातिकन्तारो**, तं जातिकन्तारं।

उक्कट्ठपरिच्छेदवसेना ति उक्कट्ठसत्तपरिच्छेदवसेन। देवमनुस्सा एव हि उक्कट्ठसत्ता, न तिरच्छानादयो। एतं ति "देवमनुस्सानं" ति एतं वचनं। **भब्बपुग्गलपरिच्छेदवसेना** ति सम्मत्तनियामोक्कमनस्स योग्यपुग्गलस्स परिच्छिन्दनवसेन। **भगवतो** ति निस्सक्के सामिवचनं यथा "उपज्झायतो अज्झेती" ति। भगवतो सन्तिके वा ति अत्थो। **उपनिस्सयसम्पत्ति** ति तिहेतुकपटिसन्धि आदिकं मग्गफलाधिगमस्स बलवकारणं। **गग्गराया** ति गग्गराय नाम रञ्ञो देविया, ताय वा कारितत्ता 'गग्गरा" ति लद्धनामाय। **सरे निमित्तं अग्गहेसी** ति 'धम्मो एसो वुच्चती" ति धम्मसञ्ञाय सरे निमित्तं गण्हि, गण्हन्तो च पसन्नचित्तो परिसपरियन्ते निपज्जि। **सन्निरुम्भित्वा अट्ठासी** ति तस्स सीसे दण्डस्स ठपितभावं अपस्सन्तो तत्थ दण्डं उप्पीळेत्वा अट्ठासि। मण्डूको पि दण्डे ठपिते पि उप्पीळिते पि धम्मगतेन पसादेन विस्सरमकरोन्तोव कालमकासि। देवलोके निब्बत्तसत्तानं अयं धम्मता, या "कुतोहं इध निब्बत्तो, तत्थ किन्नु खो कम्ममकासिं" ति आवज्जना। तस्मा अत्तनो पुरिमभवस्स दिट्ठत्ता आह "**अरे अहम्पि नाम इध निब्बत्तो**" ति। **भगवतो पादे सिरसा वन्दी** ति कतञ्ञुतासंवड्ढितेन पेमगारवबहुमानेन वन्दि।

जानन्तोव पुच्छी ति महाजनस्स कम्मफलं बुद्धानुभावञ्च पच्चक्खं कातुकामो B 294
भगवा "**को मे वन्दती**" ति गाथाय पुच्छि। तत्थ[1] **को** ति देवनागयक्खगन्धब्बादीसु को, कतमो ति अत्थो। **मे** ति मम। पादानी ति पादे। **इद्धिया** ति इमाय एवरूपाय देविद्धिया। **यससा** ति इमिना एदिसेन यसेन च परिवारेन च। **जलं ति** विज्जोतमानो।

---

१. विमान-ट्ठ-२०२ पिट्ठेपि पस्सितब्बं।

अभिक्कन्तेना ति अतिविय कन्तेन कामनीयेन सुन्दरेन। **वण्णेना** ति छविवण्णेन सरीरवण्णनिभाय। **सब्बा ओभासयं दिसा** ति सब्बा दसपि दिसा पभासेन्तो, चन्दो विय सूरियो विय च एकोभासं एकालोकं करोन्तो ति अत्थो।

एवं पन भगवता पुच्छितो देवपुत्तो अत्तानं पवेदेन्तो "**मण्डूकोहं पुरे आसिं**" ति गाथमाह। तत्थ **पुरे** ति पुरिमजातियं। **उदके** ति इदं तदा अत्तनो उप्पत्तिट्ठानदस्सनं। **उदके मण्डूको** ति तेन उद्धुमायिकादिकस्स थले मण्डूकस्स निवत्तनं कतं होति। गावो चरन्ति एत्था ति गोचरो, गुन्नं वासेसनट्ठानं। इध पन गोचरो विया ति गोचरो, वारि उदकं गोचरो एतस्सा ति **वारिगोचरो**। उदकचारी पि हि कोचि कच्छपादि अवारिगोचरो पि होती ति "वारिगोचरो" ति विसेसेत्वा वुत्तं। **तव धम्मं सुणन्तस्सा** ति ब्रह्मस्सरेन करवीकरुतमञ्जुना देसेन्तस्स तव धम्मं "धम्मो एसो वुच्चती" ति सरे निमित्तग्गाहवसेन सुणन्तस्स। अनादरे चेतं सामिवचनं। **अवधी वच्छपालको** ति वच्छे रक्खन्तो गोपालकदारको मम समीपं आगन्त्वा दण्डमोलुब्भ तिट्ठन्तो मम सीसे दण्डं सन्निरुम्भित्वा मं मारेसी ति अत्थो।

सितं कत्वा ति "तथा परित्ततरेन पि पुञ्ञानुभावेन एवं अतिविय उळारा लोकियलोकुत्तरसम्पत्तियो लब्भन्ती" ति पीतिसोमनस्सजातो भासुरतरधवळविप्फुरन्तदसनखकिरणावळीहि भिय्योसो मत्ताय तं पदेसं ओभासेन्तो सितं कत्वा। पीतिसोमनस्सवसेन हि सो—

"मुहुत्तं चित्तपसादस्स, इद्धिं पस्स यसञ्च मे।
आनुभावञ्च मे पस्स, वण्णं पस्स जुतिञ्च मे॥

B 295 ये च ते दीघमद्धानं, धम्मं अस्सोसुं गोतम।
पत्ता ते अचलट्ठानं, यत्थ गन्त्वा न सोचरे" ति[१]—

इमा द्वे गाथा वत्वा पक्कामि।

यं पन किञ्चो ति एत्थ **यं** ति अनियमितवचनं, तथा **किञ्ची** ति। **पना** ति वचनालङ्कारमत्तं। तस्मा यं किञ्ची ति ञेय्यस्स अनवसेसपरियादानं कतं होति। **पना** ति वा विसेसत्थदीपको निपातो। तेन "सम्मासम्बुद्धो" ति इमिना सङ्खेपतो वित्थारतो च सत्थु चतुसच्चाभिसम्बोधो वुत्तो। **बुद्धो** ति पन इमिना तदञ्ञस्स पि ञेय्यस्स अवबोधो। पुरिमेन वा सत्थु पटिवेधञाणानुभावो, पच्छिमेन देसनाञाणानुभावो। **पो**-ति उपरि वुच्चमानो विसेसो जोतीयति। **विमोक्खन्तिकञाणवसेना** ति एत्थ सब्बसो पटिपक्खेहि विमुच्चती ति विमोक्खो, अग्गमग्गो, तस्स अन्तो, अग्गफलं, तस्मिं लद्धे लद्धब्बतो तत्थ भवं **विमोक्खन्तिकं, ञाणं**, सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन सद्धिं सब्बम्पि बुद्धञाणं।

---

१. खु० २–७३ पिट्ठे-विमाने।

एवं पवत्तो ति एत्थ—

"सब्बञ्ञुताय बुद्धो, सब्बदस्साविताय बुद्धो, अनञ्ञनेय्यताय बुद्धो, विसविताय बुद्धो, खीणासवसङ्खातेन बुद्धो, निरुपलेपसङ्खातेन बुद्धो, एकन्तवीतरागो ति बुद्धो, एकन्तवीतदोसो ति बुद्धो, एकन्तवीतमोहो ति बुद्धो, एकन्त निक्किलेसो ति बुद्धो, एकायनमग्गं गतो ति बुद्धो, एको अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो ति बुद्धो, अबुद्धिविहतत्ता बुद्धिपटिलाभा बुद्धो। बुद्धो ति नेतं नाम मतरा कतं, न पितरा कतं, न भातरा कतं, न भगिनिया कतं, न मित्तामच्चेहि कतं, न ञातिसालोहितेहि कतं, न समणब्राह्मणेहि कतं, न देवताहि कतं, विमोक्खन्तिकमेतं बुद्धानं भगवन्तानं बोधिया मूले सह सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स पटिलाभा सच्छिका पञ्ञत्ति यदिदं बुद्धो" ति[1]—अयं B 296
निद्देसपाळिनयो। यस्मा चेत्थ तस्सा पटिसम्भिदापाळिया[2] भेदो नत्थि, तस्मा द्वीसु एकेन पि अत्थसिद्धी ति दस्सनत्थं "**पटिसम्भिदा नयो वा**" ति अनियमत्थो **वा** सद्दो वुत्तो।

तत्थ[3] यथा लोके अवगन्ता "अवगतो" ति वुच्चति, एवं **बुज्झिता सच्चानी ति बुद्धो** सुद्धकत्तुवसेन। यथा पण्णसोसा वाता "पण्णसुसा" ति वुच्चन्ति, एवं **बोधेता पजाया ति बुद्धो** हेतुकत्तुवसेन। हेतु अत्थो चेत्थ अन्तोनीतो। **सब्बञ्ञुताय बुद्धो** ति सब्बधम्मबज्झनसमत्थाय बुद्धिया बुद्धो ति अत्थो। **सब्बदस्साविताय बुद्धो** ति सब्बधम्मबोधनसमत्थाय बुद्धिया बुद्धो ति अत्थो। **अनञ्ञनेय्यताय बुद्धो** ति अञ्ञेन अबोधितो सयमेव बुद्धत्ता बुद्धो ति अत्थो। **विसविताय बुद्धो** ति नानागुणविसवनतो[4] पदुममिव विकसनट्ठेन बुद्धो ति अत्थो। **खीणासवसङ्खातेन बुद्धो** ति एवमादीहि छहि पदेहि चित्तसङ्कोचकरधम्मप्पहानेन निद्दाक्खयविबुद्धो पुरिसो विय सब्बकिलेसनिद्दाक्खयविबुद्धत्ता बुद्धो ति वुत्तं होति। तत्थ सङ्खा सङ्खातं ति अत्थतो एकत्ता **सङ्खातेना** ति वचनस्स कोट्ठासेना ति अत्थो। तण्हालेपदिट्ठिलेपाभावेन **निरुपलेपसङ्खातेन**। सवासनानं सब्बकिलेसानं पहीनत्ता एकन्तवचनेनेव विसेसेत्वा "**एकन्तवीतरागो**" ति आदि वुत्तं। **एकन्तनिक्किलेसो** ति रागदोसमोहावसेसेहि सब्बकिलेसेहि निक्किलेसो। **एकायनमग्गगतो ति बुद्धो** ति गमनत्थानं बुद्धिअत्थतो विय बुद्धिअत्थानम्पि गमनत्थता लब्भती ति एकायनमग्गं गतत्ता बुद्धो ति वुच्चती ति अत्थो। **एको अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो ति बुद्धो** ति न परेहि बुद्धत्ता बुद्धो, अथ खो सयमेव अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धत्ता बुद्धो ति अत्थो। **अबुद्धिविहतत्ता बुद्धिपटिलाभा बुद्धो** ति बुद्धि बुद्धं बोधो ति अनत्थन्तरं। तत्थ यथा रत्तगुणयोगतो रत्तो पटो, एवं बुद्धगुणयोगतो बुद्धो ति ञापनत्थं वुत्तं। ततो परं **बुद्धो ति नेतं नामं** ति आदि अत्थानुगतायं पञ्ञत्ती ति बोधनत्थं वुत्तं ति एवमेत्थ इमिना पि कारणेन भगवा बुद्धो ति वेदितब्बो।

---

१. खु० ७–३६४ पिट्ठे। २. खु० ९–१७२ पिट्ठे।

३. पटिसं–ट्ठ २-५४, महनिद्देस-अट्ठ–३९० पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।

४. विकसिताय बुद्धो ति नानागुणविकसनतो (सी०, क०)

B 297 इदानि **भगवा** ति इमस्स अत्थं दस्सेन्तो आह "**भगवा ति इदं पनस्सा**" ति आदि। तत्थ **अस्सा** ति भगवतो। **गुणविसिट्ठसत्तुत्तमगरुगारवाधिवचनं** ति सब्बेहि सीलादिगुणेहि विसिट्ठस्स ततो एव सब्बसत्तेहि उत्तमस्स गरुनो गारववसेन वुच्चमानवचनमेतं भगवा ति। तथा हि लोकनाथो अपरिमितनिरुपमप्पभावसीलादिगुणविसेससमङ्गिताय सब्बानत्थपरिहारपुब्बङ्गमाय निरवसेसहितसुखविधानतप्पराय निरतिसयाय पयोगसम्पत्तिया सदेवमनुस्साय पजाय अच्चन्तुपकारिताय च अपरिमाणासु लोकधातूसु अपरिमाणानं सत्तानं उत्तमं गारवट्ठानं ति।

भगवा ति वचनं सेट्ठं ति सेट्ठवाचकं वचनं सेट्ठगुणसहचरणतो "सेट्ठं" ति वुत्तं। अथ वा वुच्चती ति वचनं, अत्थो, तस्मा यो "भगवा" ति वचनेन वचनीयो अत्थो, सो सेट्ठो ति अत्थो। **भगवा ति वचनमुत्तमं** ति एत्थापि एसेव नयो। **गारवयुत्तो** ति गरुभावयुत्तो गरुगुणयोगतो। गरुकरणं वा सातिसयं अरहती ति गारवयुत्तो, गारवारहो ति अत्थो। "सिप्पादिसिक्खापका गरू होन्ति, न च गारवयुत्ता, अयं पन तादिसो न होति, तस्मा 'गरू' ति वत्वा 'गारवयुत्तो' ति वुत्तं" ति केचि।

गुणविसेसहेतुकं "भगवा" ति इदं भगवतो नामं ति सङ्खेपतो वुत्तमत्थं वित्थारतो विभजितुकामो नामंयेव ताव अत्थुद्धारवसेन दस्सेन्तो "**चतुब्बिधं हि नामं**" ति आदिमाह। तत्थ **आवत्थिकं** ति अवत्थाय विदितं तं तं अवत्थं उपादाय पञ्ञत्तं वोहरितं। तथा **लिङ्गिकं** तेन तेन लिङ्गेन वोहरितं। **नेमित्तिकं** ति निमित्ततो आगतं। **अधिच्चसमुप्पन्नं** ति यदिच्छाय पवत्तं, यदिच्छाय आगतं यदिच्छकं[1]। इदानि आवत्थिकादीनि नामानि सरूपतो दस्सेन्तो आह "**तत्थ वच्छो दम्मो बलिबद्दो**" ति आदि। तत्थ पठमेन **आदि**-सद्देन बालो युवा वुड्ढो ति एवमादिं सङ्गण्हाति, दुतियेन मुण्डी जटी ति एवमादिं, ततियेन बहुस्सुतो धम्मकथिको झायी ति एवमादिं, चतुत्थेन अघपदीपनं[2] पावचनं ति एवमादिं सङ्गण्हाति। नेमित्तिकं ति वुत्तमत्थं ब्यतिरेकवसेन पतिट्ठापेतुं "**न महामायाया**" ति आदि वुत्तं। **विमोक्खन्तिकं** ति इमिना पन इदं नामं अरियाय जातिया जातक्खणेयेव जातं ति दस्सेति। यदि विमोक्खन्तिकं, अथ कस्मा
B 298 अञ्ञेहि खीणासवेहि असाधारणं ति आह "**सह सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स पटिलाभा**" ति। बुद्धानञ्हि अरहत्तफलं निप्फज्जमानं सब्बञ्ञुतञ्ञाणादीहि सब्बेहि बुद्धगुणेहि सद्धिं येव निप्फज्जति। तेन वुत्तं "विमोक्खन्तिकं" ति। **सच्छिका पञ्ञत्ती** ति सब्बधम्मानं सच्छिकिरियाय निमित्ता पञ्ञत्ति। अथ वा **सच्छिका पञ्ञत्ती** ति पच्चक्खसिद्धा पञ्ञत्ति। यं गुणनिमित्ता[1] हि सा, ते[2] सत्थु पच्चक्खभूता, तं गुणा विय सा पि सच्छिकता एव नाम होति, न परेसं वोहारमत्तेना ति अधिप्पायो।

---

१. या गुणनिमित्ता (सी०)

२. ते सत्थु पच्चक्खभूता गुणविसेसा विय (सी०)
ते सत्थु पच्चक्खभूता ति गुणा विय सा पि (स्या०)

वदन्तो ति महाथेरस्स गरुभावतो बहुवचनेनाह, सङ्गीतिकारेहि वा कतमनुवादं सन्धाय। इस्सरियादिभेदो भगो अस्स अत्थी ति **भगी**। मग्गफलादिअरियधम्मरतनं अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि अप्पसद्दादिगुणयुत्तानि भजि सेवि सीलेना ति **भजी**। भजनसीलो ति अत्थो। **भागी** ति चीवरपिण्डपातादीनं चतुन्नं पच्चयानञ्चेव अत्थधम्मविमुत्तिरसस्स च अधिसीलादीनञ्च भागी ति अत्थो। विभजि पविभजि धम्मरतनं ति **विभत्तवा**। **अकासि भग्गं** ति रागादिपापधम्मं भग्गं अकासी ति भगवा ति अत्थो। गरु पि लोके भगवा ति वुच्चती ति आह "गरू" ति। यस्मा गरु, तस्मा पि भगवा ति वुत्तं होति। हेतु अत्थो हि **इति**-सद्दो। सो च यत्थ इति-सद्दो नत्थि भगी ति आदीसु, तत्थ पच्चेकं योजेतब्बो। भाग्यमस्स अत्थी ति **भाग्यवा**। **बहूहि ञायेही** ति कायभावनादिकेहि अनेकेहि भावनाक्कमेहि। **सुभावितत्तनो** ति सम्मदेव भावितसभावस्स। पच्चत्ते चेतं सामिवचनं, तेन सुभावितत्ता ति वुत्तं होति, सुभावितसभावो ति अत्थो। **महागण्ठिपदे** पन "सुभावितत्तनो सुभावितकायो" ति वुत्तं। भवानं अन्तं निब्बानं गतो ति **भवन्तगो**।

निद्देसे वुत्तनयेना ति एत्थायं निद्देसनयो—

"भगवा ति गारवाधिवचनमेतं। अपि च भग्गरागो ति भगवा, भग्गदोसो ति भगवा, भग्गमोहो ति भगवा, भग्गमानो ति भगवा, भग्गदिट्ठी ति भगवा, भग्गतण्हो ति भगवा, भग्गकिलेसो ति भगवा, भजि विभजि पविभजि धम्मरतनं ति भगवा, भवानं अन्तकरो ति भगवा, भावितकायो भावितसीलो भावितचित्तो भावितपञ्ञो ति भगवा, B 299
भजि वा भगवा अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि अप्पसद्दानि अप्पनिग्घोसानि विजनवातानि मनुस्सराहस्सेय्यकानि पटिसल्लानसारुप्पानी ति भगवा। भागी वा भगवा चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारानं ति भगवा। भागी वा भगवा अत्थरसस्स धम्मरसस्स विमुत्तिरसस्स अधिसीलस्स अधिचित्तस्स अधिपञ्ञाया ति भगवा। भागी वा भगवा चतुन्नं झानानं चतुन्नं अप्पमञ्ञानं चतुन्नं अरूपसमापत्तीनं ति भगवा। भागी वा भगवा अट्ठन्नं विमोक्खानं अट्ठन्नं अभिभायतनानं नवन्नं अनुपुब्बविहारसमापत्तीनं ति भगवा। भागी वा भगवा दसन्नं सञ्ञाभावनानं दसन्नं कसिणसमापत्तीनं आनापानस्सतिसमाधिस्स असुभसमापत्तिया ति भगवा। भागी वा भगवा चतुन्नं सतिपट्ठानानं चतुन्नं सम्मप्पधानानं चतुन्नं इद्धिपादानं पञ्चन्नं इन्द्रियानं पञ्चन्नं बलानं सत्तन्नं बोज्झङ्गानं अरियस्स अट्ठङ्गिकस्स मग्गस्सा ति भगवा। भागी वा भगवा दसन्नं तथागतबलानं चतुन्नं वेसारज्जानं चतुन्नं पटिसम्भिदानं छन्नं अभिञ्ञानं छन्नं बुद्धधम्मानं ति भगवा। भगवा ति नेतं नामं······पे०······सच्छिका पञ्ञत्ति यदिदं भगवा" ति[1]।

एत्थ च "गारवाधिवचनं" ति आदीनि यदिपि गाथायं आगत पदानुक्कमेन न निद्दिट्ठानि, यथारहं पन तेसं सब्बेसम्पि निद्देसभावेन वेदितब्बानि तत्थ **गारवाधिवचनं**

---

१. खु०, ७-१६२ पिट्ठे।

ति गरूनं गरुभाववाचकं वचनं। **भजी** ति भागसो कथेसि। तेनाह "विभजि पविभजि धम्मरतनं" ति। मग्गफलादि अरियधम्मोयेव **धम्मरतनं**। पुन **भजी** ति इमस्स सेवी ति अत्थो। **भागी** ति भागाभिधेय्यवा। पुन **भागी** ति एत्थ भजनसीलो ति अत्थो। **अत्थरसस्सा** ति अत्थसन्निस्सयस्स रसस्स। विमुत्तायतनसीसे हि ठत्वा धम्मं कथेन्तस्स सुणन्तस्स च तदत्थं आरब्भ उप्पज्जनकपीतिसोमनस्सं अत्थरसो। धम्मं आरब्भ **धम्मरसो**। यं सन्धाय वुत्तं "लभति अत्थवेदं, लभति धम्मवेदं" ति।[1] **विमुत्तिरसस्सा**
B 300 ति विमुत्तिभूतस्स विमुत्तिसन्निस्सयस्स वा रसस्स। **सञ्ञाभावनानं** ति अनिच्चसञ्ञादीनं दसन्नं सञ्ञाभावनानं। **छन्नं बुद्धधम्मानं** ति छ असाधारणञाणानि सन्धाय वुत्तं। तत्थ तत्थ भगवा ति सद्दसिद्धि निरुत्तिनयेनेव वेदितब्बा।

यदिपि "भाग्यवा" ति आदीहि पदेहि वुच्चमानो अत्थो "भगी भजी" ति[2] निद्देसगाथाय सङ्गहितो एव, तथापि पदसिद्धिअत्थविभागअत्थयोजनादिसहितो संवण्णनानयो ततो अञ्ञाकरो ति वुत्तं **"अयं पन अपरो नयो"** ति। **वण्णविपरियायोति एतं** ति एत्थ **इति** सद्दो आदि अत्थो, तेन वण्णविकारो वण्णलोपो धातुअत्थेन[3] नियोजनञ्चाति इयं तिविधं लक्खणं सङ्गण्हाति। **सद्दनयेना** ति सद्दलक्खणनयेन। पिसोदरादीनं सद्दानं आकतिगणभावतो वुत्तं **"पिसोदरादि पक्खेपलक्खणं गहेत्वा"** ति। पक्खिपनमेव लक्खणं। तप्परियापन्नताकरणञ्हि पक्खिपनं। **पारप्पत्तं** ति परमुक्कंसगतं पारमीभावप्पत्तं। भाग्यं ति कुसलं। तत्थ मग्गकुसलं लोकुत्तरसुखनिब्बत्तकं, इतरं लोकियसुखनिब्बत्तकं, इतरम्पि वा विवट्टूपनिस्सयं परियायतो लोकुत्तरसुखनिब्बत्तकं सिया।

इदानि **भगवा** ति इमस्स अत्थं विभजित्वा दस्सेन्तो आह "यस्मा पना" ति आदि। तत्थ लोभादयो एककवसेन गहिता, तथा विपरीतमनसिकारो विपल्लासभावसामञ्ञेन, अहिरिकादयो दुकवसेन। तत्थ कुज्झनलक्खणो **कोधो**, सो नवविधआघातवत्थु सम्भवो। "अक्कोच्छि मं अवधि मं" ति आदिना[4] पुनप्पुनं कुज्झनवसेन चित्तपरियोनन्धनो **उपनाहो**। उभयम्पि पटिघोयेव, सो पवत्तिनानत्ततो भिन्दित्वा वुत्तो। सकिं उपन्नो कोधो कोधोयेव, तदुत्तरि उपनाहो। वुत्तञ्हेतं "पुब्बकाले कोधो अपरकाले उपनाहो" ति[5]। अगारियस्स[6] अनगारियस्स वा सुकतकरणविनासनो **मक्खो**। अगारियो पि हि केनचि अनुकम्पकेन दलिद्दो समानो उच्चे ठाने ठपितो अपरेन समयेन "किं तया मय्हं कतं" ति तस्स सुकतकरणं विनासेति। अनागारियो पि समाणेरकालतो पभुति आचरियेन वा उपज्झायेन वा चतूहि पच्चयेहि उद्देसपरिपुच्छा-

---

१. अं० २-२५२ पिट्ठे।
२. खु० ७-१६२ पिट्ठे।
३. धातुअत्थातिसयेन (सी०)
४. खु० १-१३ पिट्ठे धम्मपदे।
५. अभि० २-३७१ पिट्ठे।
६. म०-ट्ठ १-१७३ पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।

दीहि च अनुग्गहेत्वा धम्मकथानयप्पकरणकोसल्लादीनि सिक्खापितो अपरेन समयेन B 301
राजराजमहामत्तादीहि सक्कतो गरुकतो आचरियुपज्झायेसु अचित्तीकतो चरमानो "अयं अम्हेहि दहरकाले एवं अनुग्गहितो संवड्ढितो च, अथ च पनिदानि निस्सिनेहो जातो" ति वुच्चमानो "किं मय्हं तुम्हेहि कतं" ति तेसं सुकतकरणं विनासेति, तस्सेसो पुब्बकारितालक्खणस्स गुणस्स विनासनो उदकपुञ्छनिया विया सरीरानुगतं उदकं निपुञ्छन्तो मक्खो। तथा हि सो परेसं गुणानं मक्खनट्ठेन "मक्खो" ति वुच्चति। पळासती ति **पळासो**, परस्स गुणे दस्सेत्वा[1] अत्तनो गुणेहि समे करोती ति अत्थो। सो पन बहुस्सुतेपि पुग्गले अज्झोत्थरित्वा "ईदिसस्स च बहुस्सुतस्स अनियता गति, तव वा मम वा को विसेसो" ति रत्तञ्ञू चिरपब्बजिते पुग्गले अज्झोत्थरित्वा "त्वम्पि इमस्मिं सासने पब्बजितो, अहम्पि पब्बजितो, त्वम्पि सीलमत्ते ठितो, अहम्पी" ति आदिना नयेन उप्पज्जमानो युगग्गाहो। युगग्गाहलक्खणो हि पळासो।

परेसं सक्कारादीनि खीयमाना उसूयमान **इस्सा**। अत्तनो सम्पत्तिया निगूहनं परेहि साधारणभावं असहमानं **मच्छरियं**। वञ्चनिकचरियभूता **माया**, सा सकदोसपटिच्छादनलक्खणा। तथा हि सा अत्तनो विज्जमानदोसपटिच्छादनतो चक्खुमोहनमाया विया ति "माया" ति वुच्चति। अत्तनो अविज्जमानगुणप्पकासनलक्खणं केराटिकभावेन उप्पज्जमानं **साठेय्यं**। असन्तगुणदीपनञ्हि "केराटियं" ति वुच्चति। केराटिको हि पुग्गलो आयनमच्छो[2] विय होति। आयनमच्छो[2] नाम सप्पमुखमच्छवाला एका मच्छजाति। सो किर मच्छानं नङ्गुट्ठं दस्सेति, सप्पानं सीसं "तुम्हाकं सदिसो अहं" ति जानापेतुं, एवमेव केराटिको पुग्गलो यं यं सुत्तन्तिकं वा आभिधम्मिकं वा उपसङ्कमति, तं तं एवं वदति "अहं तुम्हाकं अन्तेवासी, तुम्हे मय्हं अनुकम्पका, नाहं तुम्हे मुञ्चामी" ति। एवमेते "सगारवो अयं अम्हेसु सप्पतिस्सो" ति मञ्ञिस्सन्ति, तस्सेवं केराटिकभावेन उप्पज्जमानं साठेय्यं।

सब्बसो मद्दवाभावेन वातभरितभस्तसदिसस्स थद्धभावस्स अनोनमितदण्डसदिसताय पग्गहितसिरअनिवातवुत्तिकायस्स च कारको **थम्भो**। तदुत्तरिकरणो B 302
सारम्भो। सो दुविधेन लब्भति अकुसलवसेन चेव कुसलवसेन च। तत्थ अगारियस्स परेन कतं अलङ्कारादिं दिस्वा तद्दिगुणतद्दिगुणकरणेन उप्पज्जमानो, अनगारियस्स च यत्तकं यत्तकं परो परियापुणाति वा कथेति वा, मानवसेन तद्दिगुणतद्दिगुणकरणेन उप्पज्जमानो अकुसलो। तेन हि समन्नागतो पुग्गलो तद्दिगुणं तद्दिगुणं करोति। अगारियो समानो एकेनेकस्मिं घरवत्थुस्मिं सज्जिते अपरो द्वे वत्थूनि सज्जेति, अपरो चत्तारो, अपरो अट्ठ, अपरो सोळस। अनगारियो समानो एकेनेकस्मिं निकाये गहिते "नाहं एकस्स हेट्ठा भविस्सामी" ति अपरो द्वे गण्हाति, अपरो तयो, अपरो चत्तारो, अपरो पञ्च। सारम्भवसेन हि गण्हितुं वट्टति। अकुसलपक्खो हेस निरयगामिमग्गो। अगारियस्स पन

---

१. दंसित्वा (स्या०)।

२. आनन्दमच्छो (सी०) आयन्दमच्छो (स्या०), आयतनमच्छो (म०-ट्ठ १-१७८ पिट्ठे)।

परं एकं सलाकभत्तं देन्तं दिस्वा अत्तनो द्वे वा तीणि वा दातुकामताय उप्पज्जमानो, अनगारियस्स च परेन एकनिकाये गहिते मानं अनिस्साय केवलं तं दिस्वा अत्तनो आलसियं अभिभुय्य द्वे निकाये गहेतुकामताय उप्पज्जमानो कुसलो, कुसलपक्खवसेन हि एकस्मिं एकं सलाकभत्तं देन्ते द्वे, द्वे देन्ते चत्तारि दातुं वट्टति। भिक्खुना पि परेन एकस्मिं निकाये गहिते "द्वे निकाये गहेत्वा सज्झायन्तस्स मे फासु होती" ति विवट्टपक्खे ठत्वा तदुत्तरि गण्हितुं वट्टति, इध पन अकुसलपक्खियो तदुत्तरिकरणो "सारम्भो' ति वुत्तो।

जाति आदीनि निस्साय सेय्यस्स "सेय्योहमस्मी" ति आदिना उन्नतिवसेन पग्गण्हनवसेन पवत्तो **मानो**। अब्भुन्नतिवसेन पवत्तो **अतिमानो**। पुब्बे केनचि अत्तानं सदिसं कत्वा पच्छा कतो अधिकतो दहतो उप्पज्जमानको अतिमानो ति वेदितब्बो। जाति आदिं पटिच्च मज्जनाकारो **मदो**, सो पि अत्थतो मानो एव। सो पन जातिमदो गोत्तमदो आरोग्यमदो योब्बनमदो जीवितमदो लाभमदो सक्कारमदो गरुकारमदो पुरेक्खारमदो परिवारमदो भोगमदो वण्णमदो सुतमदो पटिभानमदो रत्तञ्ञुमदो पिण्डपातिकमदो अनवञ्ञत्तिमदो इरियापथमदो इद्धिमदो यसमदो सीलमदो झानमदो सिप्पमदो आरोहमदो परिणाहमदो सण्ठानमदो पारिपूरिमदो ति अनेकविधो।

B 303 तत्थ[1] जातिं निस्साय उप्पन्नो मज्जनाकारप्पवत्तो मानो **जातिमदो**। सो खत्तियादीनं चतुन्नम्पि वण्णानं उप्पज्जति। जातिसम्पन्नो हि खत्तियो "मादिसो अञ्ञो नत्थि, अवसेसा अन्तरा उट्ठाय खत्तिया जाता, अहं पन वंसागतखत्तियो" ति मानं करोति। ब्राह्मणादीसु पि एसेव नयो। गोत्तं निस्साय उप्पन्नो मज्जनाकारप्पवत्तो मानो **गोत्तमदो**, सोपि खत्तियादीनं चतुन्नम्पि वण्णानं उप्पज्जति। खत्तियो पि हि "अहं कोण्डञ्ञगोत्तो, अहं आदिच्चगोत्तो" ति मानं करोति। ब्राह्मणोपि "अहं कस्सपगोत्तो, अहं भारद्वाजगोत्तो" ति मानं करोति। वेस्सा पि सुद्दा पि अत्तनो अत्तनो कुलगोत्तं निस्साय मानं करोति। आरोग्यमदादीसु पि "अहं अरोगो, सेसा रोगबहुला, कण्डुवनमत्तम्पि मय्हं ब्याधि नाम नत्थी" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **आरोग्यमदो** नाम। "अहं तरुणो, अवसेससत्तानं अत्तभावो पपाते ठितरुक्खसदिसो, अहं पन पठमवये ठितो" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **योब्बनमदो**। "अहं चिरं जीविं, चिरं जीवामि, चिरं जीविस्सामि, सुखं जीविं, सुखं जीवामि, सुखं जीविस्सामी" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **जीवितमदो** नाम। "अहं लाभी, अवसेसा सत्ता अप्पलाभा, मय्हं पन लाभस्स पमाणं नत्थी" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **लाभमदो** नाम।

"अवसेसा सत्ता यं वा तं वा लभन्ति, अहं पन सुकतं पणीतं चीवरादिपच्चयं लभामी"ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **सक्कारमदो** नाम। "अवसेसभिक्खूनं पादपिट्ठियं अक्कमित्वा गच्छन्ता मनुस्सा 'अयं समणो'ति पि न वन्दन्ति, मं पन

---

१. अभिट्ठ-[1], ४४७ पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।

दिस्वा वन्दन्ति, पासाणच्छत्तं विय गरुकं कत्वा अग्गिक्खन्धं विय च दुरासदं कत्वा मञ्ञन्तो" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **गरुकारमदो** नाम। "उप्पन्नो पञ्हो मय्हमेव मुखेन छिज्जति, भिक्खाचारं गच्छन्ता पि आगच्छन्ता पि ममेव पुरतो कत्वा परिवारेत्वा गच्छन्तो" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **पुरेक्खारमदो** नाम। अगारियस्स ताव महापरिवारस्स "पुरिससतम्पि पुरिससहस्सम्पि मं परिवारेती" ति, अनगारियस्स "समणसतम्पि समणसहस्सम्पि मं परिवारेति, सेसा अप्पपरिवारा, अहं महापरिवारो चेव सुचिपरिवारो चा" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **परिवारमदो** नाम। "अवसेसा सत्ता अत्तनो परिभोगमत्तकम्पि न लभन्ति, मय्हं पन निधानगतस्सेव B 304 धनस्स पमाणं नत्थी" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **भोगमदो** नाम। "अवसेसा सत्ता दुब्बण्णा दुरूपा, अहं अभिरूपो पासादिको" ति पि "अवसेससत्ता निग्गुणा पत्थटअकित्तिनो, मय्हं पन कित्तिसद्दो देवमनुस्सेसु पाकटो 'इति पि थेरो बहुस्सुतो, इति पि सीलवा, इति पि धुतगुणयुत्तो' ति"। एवं सरीरवण्णं गुणवण्णञ्च पटिच्च मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **वण्णमदो** नाम।

"अवसेसा सत्ता अप्पस्सुता, अहं पन बहुस्सुतो" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **सुतमदो** नाम। "अवसेसा सत्ता अप्पटिभाना, मय्हं पन पटिभानस्स पमाणं नत्थी" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **पटिभानमदो** नाम। "अहं रत्तञ्ञू असुकं बुद्धवंसं राजवंसं जनपदवंसं गामवंसं रत्तिन्दिवपरिच्छेदं नक्खत्तमुहुत्तयोगं जानामी" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **रत्तञ्ञुमदो** नाम। अवसेसा भिक्खू अन्तरा पिण्डपातिका जाता, अहं पन जातिपिण्डपातिको" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **पिण्डपातिकमदो** नाम। "अवसेसा सत्ता उञ्ञाता अवञ्ञाता, अहं पन अनवञ्ञातो" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **अनवञ्ञत्तिमदो** नाम। "अवसेसानं सत्तानं इरियापथो अपासादिको, मय्हं पन पासादिको" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **इरियापथमदो** नाम। "अवसेसा सत्ता छिन्नपक्खकाकसदिसा, अहं पन महिद्धिको महानुभावो" ति वा "अहं यं यं कम्मं करोमि तं तं इज्झती" ति वा मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **इद्धिमदो** नाम।

यसमदो पन अगारिकेन पि अनगारिकेन पि दीपेतब्बो। अगारिको पि हि एकच्चो अट्ठारससु सेणीसु एकिस्सा जेट्ठको होति, तस्स "अवसेसे पुरिसे अहं पट्ठपेमि, अहं विचारेमी" ति, अनगारिको पि एकच्चो कत्थचि जेट्ठको होति, तस्स "अवसेसा भिक्खू मय्हं ओवादे वत्तन्ति, अहं जेट्ठको" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **यसमदो** नाम। "अवसेसा सत्ता दुस्सीला अहं पन सीलवा" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **सीलमदो** नाम। "अवसेसानं सत्तानं कुक्कुटस्स उदकपानमत्ते पि काले चित्तेकग्गता नत्थि, अहं पन उपचारप्पनानं लाभी" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **झानमदो** नाम। अवसेसा सत्ता निस्सिप्पा, अहं सिप्पवा" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **सिप्पमदो** B 305 नाम। "अवसेसा सत्ता रस्सा, अहं दीघो" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **आरोहमदो** नाम। अवसेसा सत्ता रस्सा वा होन्ति दीघा वा, अहं निग्रोधपरिमण्डलो" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **परिणाहमदो** नाम। "अवसेसानं सत्तानं सरीरसण्ठानं विरूपं

बीभच्छं, मय्हं पन मनापं पासादिकं" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो सण्ठानमदो नाम। अवसेसानं सत्तानं सरीरे बहू दोसा, मय्हं पन सरीरे केसग्गमत्तम्पि वज्जं नत्थी" ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो **पारिपूरिमदो** नाम। एवमयं सब्बो पि जाति आदिं निस्साय मज्जनाकारवसप्पवत्तो मानो इध "मदो" ति वुत्तो। कामगुणेसु चित्तस्स वोस्सग्गो **पमादो**, पञ्चसु कामगुणेसु सतिया अनिग्गण्हित्वा चित्तस्स वोस्सज्जनं, सतिविरहो ति वुत्तं होति। **तण्हाविज्जा** पाकटायेव।

लोभादयो च पुन **तिविधाकुसलमूलं** ति तिकवसेन गहिता। दुच्चरितादीसु पि **तिविध**-सद्दो पच्चेकं योजेतब्बो। तत्थ कायदुच्चरितादीनि **तिविधदुच्चरितानि**। तण्हासंकिलेसादयो **तिविधसंकिलेसा**। रागमलादयो मलीनभावकरत्ता **तिविधमलानि**। रागादयो हि चित्तं मलीनं करोन्ति, मलं गाहापेन्ति, तस्मा "मलानी" ति वुच्चन्ति। "रागो विसमं, दोसो विसमं, मोहो विसमं"ति[1] एवं वुत्ता रागादयो "कायविसमं वचीविसमं मनोविसमं" ति एवमागता कायदुच्चरितादयो च **तिविधविसमानि**। तानि पन यस्मा रागादीसु चेव कायदुच्चरितादीसु च सत्ता पक्खलन्ति, पक्खलिता च सासनतो पि सुगतितो पि पतन्ति, तस्मा पक्खलनपातहेतुभावतो "विसमानी"ति वुच्चन्ति। "कामसञ्ञा ब्यापादसञ्ञा विहिंसासञ्ञा" ति[2] एवमागता कामादिपटिसंयुत्ता सञ्ञा **तिविधसञ्ञा**। तथा "कामवितक्को ब्यापादवितक्को विहिंसावितक्को" ति एवमागता **तिविधवितक्का**। तण्हापपञ्चो दिट्ठिपपञ्चो मानपपञ्चो ति इमे **तिविधपपञ्चा**। वट्टस्मिं सत्ते पपञ्चेन्ती ति तण्हादयो "पपञ्चा" ति वुच्चन्ति।

चतुब्बिधविपरियेसा ति आदीसु **चतुब्बिध**-सद्दो पच्चेकं योजेतब्बो। तत्थ अनिच्चादीनि वत्थूनि निच्चं ति आदिना नयेन विपरीततो एसन्ती ति विपरियेसा।
B 306 "अनिच्चे निच्चं ति सञ्ञाविपरियेसो चित्तविपरियेसो दिट्ठिविपरियेसो, दुक्खे सुखं ति सञ्ञाविपरियेसो चित्तविपरियेसो दिट्ठिविपरियेसो असुभे सुभं ति सञ्ञाविपरियेसो चित्तविपरितेसो, दिट्ठिविपरियेसो, अनत्तनि अत्ता ति सञ्ञाविपरियेसो चित्तविपरियेसो दिट्ठिविपरियेसो" ति एवमागता द्वादस विपल्लासा चतुन्नं अनिच्चादिवत्थूनं वसेन "चतुब्बिधविपरियेसा" ति वुत्ता। एत्थ पन चित्तकिच्चस्स दुब्बलट्ठाने दिट्ठिविरहिताय अकुसलसञ्ञाय सककिच्चस्स बलवकाले सञ्ञाविपल्लासो वेदितब्बो, दिट्ठिविरहितस्सेव अकुसलचित्तस्स सककिच्चस्स बलवकाले चित्तविपल्लासो, दिट्ठिसम्पयुत्तचित्ते दिट्ठिविपल्लासो। तस्मा सब्बदुब्बलो सञ्ञाविपल्लासो, ततो बलवतरो चित्तविपल्लासो, सब्बबलवतरो दिट्ठिविपल्लासो। अजातबुद्धिदारकस्स कहापणदस्सनं विय सञ्ञा आरम्मणस्स उपट्ठानाकारमत्तगहणतो। गामिकपुरिसस्स कहापणदस्सनं विय चित्तं लक्खणप्पटिवेधस्स पि सम्पादनतो।[3] कम्मारस्स महासण्डासेन अयोगहणं विय दिट्ठि अभिनिवेसपरामसनतो। तत्थ चत्तारो दिट्ठिविपल्लासा अनिच्चानत्तेसु निच्चं ति आदिवसप्पवत्ता

---

१. अभि २-३८२ पिट्ठे।
२. अभि-२-३७७ पिट्ठे।
३. सम्पापनतो (सी०, स्या०)।

चत्तारो सञ्ञाचित्तविपल्लासा ति इमे अट्ठ विपल्लासा सोत्तापत्तिमग्गेन पहीयन्ति। असुभे सुभं ति सञ्ञाचित्तविपल्लासा सकदागामिमग्गेन तनुका होन्ति, अनागामिमग्गेन पहीयन्ति। दुक्खे सुखं ति सञ्ञाचित्तविपल्लासा अरहत्तमग्गेन पहीयन्ती ति वेदितब्बा।

"कामासवो भवासवो दिट्ठासवो अविज्जासवो" ति[1] एवमागता कामतण्हादयो चत्तारो आसवन्ति चक्खुआदितो सन्दन्ति पवत्तन्ती ति **आसवा**। किञ्चापि चक्खुआदितो कुसलादीनम्पि पवत्ति अत्थि, कामासवादयो एव पन वणतो यूसं विय पग्घरणकअसुचिभावेन सन्दन्ति, तस्मा ते एव "आसवा" ति वुच्चन्ति। तत्थ हि पग्घरणकअसुचिम्हि निरुळ्हो आसवसद्दो ति। अथ वा धम्मतो याव गोत्रभुं, ओकासतो याव भवग्गं सवन्ति गच्छन्ति आरम्मणकरणवसेन पवत्तन्ती ति आसवा, एते धम्मे एतञ्च ओकासं अन्तोकरित्वा पवत्तन्ती ति अत्थो। अवधि अत्थो हि **आ**-कारो। अवधि च मरियादाभिविधिभेदतो दुविधो। तत्थ मरियादं किरियं बहिकत्वा पवत्तति यथा "आपाटलिपुत्तं वुट्ठो देवो" ति, अभिविधि पन किरियं ब्यापेत्वा पवत्तति यथा "आभवग्गं भगवतो यसो पवत्तती" ति, अभिविधि अत्थो चायं **आ**-कारो इध गहितो, तस्मा B 307 ते धम्मे तञ्च ओकासं अन्तोकरित्वा आरम्मणकरणवसेन सवन्ती ति "आसवा" ति वुच्चन्ति। चिरपारिवासियट्ठेन मदिरादयो आसवा विया ति पि आसवा। लोकस्मिञ्हि चिरपारिवासिका मदिरादयो "आसवा" ति वुच्चन्ति। यदि च चिरपारिवासियसट्ठेन आसवा, एतेयेव भवितुमरहन्ति। वुत्तञ्हेतं "पुरिमा भिक्खवे कोटि न पञ्ञायति अविज्जाय, इतो पुब्बे अविज्जा नाहोसी" ति आदि[2]। अञ्ञेसु पन यथावुत्ते धम्मे ओकासञ्च आरम्मणं कत्वा पवत्तमानेसु मानादीसु च विज्जमानेसु अत्तत्तनियादिग्गाहवसेन अभिब्यापनं मदनकरणवसेन आसवसदिसता च एतेसंयेव, न अञ्ञेसं ति द्वीसु पि अत्थविकप्पेसु एतेसुयेव आसवसद्दो निरुळ्हो ति दट्ठब्बो। आयतं वा संसारदुक्खं सवन्ति पसवन्ती ति पि आसवा। न हि तं किञ्चि संसारदुक्खं अत्थि, यं आसवेहि विना उप्पज्जेय्य।

"अभिज्झा कायगन्थो ब्यापादो कायगन्थो सीलब्बतपरामासो कायगन्थो इदं सच्चाभिनिवेसो कायगन्थो" ति[3] एवमागता अभिज्झादयो चत्तारो यस्स संविज्जन्ति, तं चुतिपटिसन्धिवसेन वट्टस्मिं गन्थेन्ति घटेन्ती ति **गन्था**। "कामोघो भवोघो दिट्ठोघो अविज्जोघो" ति[4] एवमागता चत्तारो कामतण्हादयो यस्स संविज्जन्ति, तं वट्टस्मिं ओहनन्ति ओसीदापेन्ती ति **ओघा**। तेयेव "कामयोगो भवयोगो दिट्ठियोगो अविज्जायोगो" ति[5] एवमागता वट्टस्मिं योजेन्ती ति **योगा**। अरिया एताय न गच्छन्ती ति

१. खु० ८–१४७ पिट्ठे चूळनिद्देसे। २. अं० ३-३४६ पिट्ठे।
३. सं० ३-५५, खु० ७-७६, २५६ पिट्ठेसु।
४. सं० ३-५४, खु० ७-४३, खु० ८-७२, ८५ पिट्ठेसु।
५. सं० ३-५४, अं० १-३१६ पिट्ठेसु।

अगति, सा छन्दादिवसेन चतुब्बिधा। "चीवरहेतु वा भिक्खुनो तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, पिण्डपात, सेनासन, इतिभवाभवहेतु वा भिक्खुनो तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जती" ति[1] एवमागता चत्तारो **तण्हुप्पादा**। तत्थ **इतिभवाभवहेतू** ति एत्थ **इती** ति निदस्सने निपातो, यथा चीवरादिहेतु, एवं भवाभवहेतुपी ति अत्थो। **भवाभवो** ति चेत्थ पणीतपणीततरानि तेलमधुफाणितादीनि अधिप्पेतानि। कामुपादानादीनि चत्तारि उपादानानि।

B 308 **पञ्चचेतोखिला** ति आदीसु "बुद्धे कङ्खति, धम्मे, संघे, सिक्खाय कङ्खति, सब्रह्मचारीसु कुपितो होति अनत्तमनो आहतचित्तो खिलजातो" ति[2] एवमागतानि पञ्च चेतोखिलानि, चेतो खिलयति थद्धभावं आपज्जति एतेही ति **चेतोखिलानि**। **विनिबन्धादीसु** पि पञ्च-सद्दो पच्चेकं योजेतब्बो। "कामे अवीतरागो होति, काये अवीतरागो, रूपे अवीतरागो, यावदत्थं उदरावदेहकं भुञ्जित्वा सेय्यसुखं पस्ससुखं मिद्धसुखं अनुयुत्तो विहरति, अञ्ञतरं देवनिकायं पणिधाय ब्रह्मचरियं चरती" ति[3] आगता पञ्च चित्तं बन्धित्वा मुट्ठियं कत्वा विय गण्हन्ती ति **चेतोविनिबन्धा**। एते हि तण्हाप्पवत्तिभावतो कुसलप्पवत्तिया अवसराप्पदानवसेन चित्तं बन्धं विय समोरोधेत्वा गण्हन्ति। सद्दत्थतो पन चेतो विरूपं निबन्धीयति संयमीयति एतेही ति चेतोविनिबन्धा। कामच्छन्दादीनि पञ्च कुसलधम्मे नीवारेन्ति आवरन्ती ति **नीवरणानि**। रूपाभिनन्दनादयो **पञ्चाभिनन्दना**।

छ विवादमूला ति आदीसु कोधो मक्खो इस्सा सठेय्यं पापिच्छता सन्दिट्ठिपरामासो ति इमानि **छ विवादमूलानि**। यस्मा कुद्धो वा कोधवसेन....पे०....सन्दिट्ठिपरामासी वा सन्दिट्ठिपरामसिताय कलहं विग्गहं विवादं आपज्जति, तस्मा कोधादयो "छ विवादमूलानि" ति वुच्चन्ति। रूपतण्हासद्दतण्हादयो **छ तण्हाकाया**। कामरागपटिघदिट्ठिविचिकिच्छाभवरागमानाविज्जा **सत्तानुसया**। थामगतट्ठेन अप्पहीनट्ठेन च अनुसेन्ती ति अनुसयो। मिच्छादिट्ठिमिच्छासङ्कप्पमिच्छावाचामिच्छाकम्मन्तमिच्छाआजीवमिच्छावायाममिच्छासतिमिच्छासमाधी **अट्ठ मिच्छत्ता**।

"तण्हं पटिच्च परियेसना, परियेसनं पटिच्च लाभो, लाभं पटिच्च विनिच्छयो, विनिच्छयं पटिच्च छन्दरागो, छन्दरागं पटिच्च अज्झोसानं, अज्झोसानं पटिच्च परिग्गहो, परिग्गहं पटिच्च मच्छरियं, मच्छरियं पटिच्च आरक्खो, आरक्खाधिकरणं दण्डादानसत्थादानकलहविग्गहविवादतुवंतुवंपेसुञ्ञमुसावादा अनेके पापका अकुसला धम्मा सम्भवन्ती" ति[4] एवमागता परियेसनादयो **नव तण्हामूलका**। तत्थ[5] **तण्हं**
B 309 **पटिच्चा** ति तण्हं निस्साय। **परियेसना** ति रूपादिआरम्मणपरियेसना। सा हि तण्हाय सति होति। **लाभो** ति रूपादिआरम्मणपटिलाभो। सो हि परियेसनाय सति होति।

---

१. अं० १-३१६ पिट्ठे। २. म० १-१४६, दी० ३-१९८ पिट्ठेसु।
३. म० १-१६४, दी० ३-१९८–पिट्ठेसु। ४. दी० २-५०, दी० ३-२५३ पिट्ठेसु।
५. दी-ट्ठ० २-८९ पिट्ठादीसु पस्सितब्बं।

विनिच्छयो ति इध वितक्को अधिप्पेतो। लाभं लभित्वा हि इट्ठानिट्ठं सुन्दरासुन्दरञ्च वितक्केनेव विनिच्छिनति "एत्तकं मे रूपारम्मणत्थाय भविस्सति, एत्तकं सद्दादि-आरम्मणत्थाय, एत्तकं मय्हं भविस्सति, एत्तकं परस्स, एत्तकं परिभुञ्जिस्सामि, एत्तकं निदहिस्सामी" ति। तेन वुत्तं "लाभं पटिच्च विनिच्छयो" ति। **छन्दरागो** ति एवं अकुसलवितक्केन वितक्किते वत्थुस्मिं दुब्बलरागो च उप्पज्जति। **छन्दो** ति हि इध दुब्बलरागस्साधिवचनं। **अज्झोसानं** ति अहं ममं ति बलवसन्निट्ठानं। **परिग्गहो** ति तण्हादिट्ठिवसेन परिग्गहकरणं। **मच्छरियं** ति परेहि साधारणभावस्स असहनता। तेनेवस्स पोराणा एवं वचनत्थं वदन्ति "इदं अच्छरियं मय्हमेव होतु, मा अञ्ञस्स अच्छरियं होतू ति पवत्तत्ता मच्छरियं ति वुच्चती" ति। **आरक्खो** ति द्वारपिदहन-मञ्जुसगोपनादिवसेन सुट्ठु रक्खणं। अधिकरोती ति **अधिकरणं**, कारणस्सेतं नाम। **अरक्खाधिकरणं** ति भावनपुंसकं, आरक्खहेतू ति अत्थो। दण्डादानादीसु परनिसेधनत्थं दण्डस्स आदानं **दण्डादानं**। एकतोधारादिनो सत्थस्स आदानं **सत्थादानं**। **कलहो** ति कायकलहो पि वाचाकलहो पि। पुरिमो पुरिमो विरोधो **विग्गहो**। पच्छिमो पच्छिमो **विवादो**। **तुवं तुवं** ति अगारववचनं, त्वं त्वं ति अत्थो।

पाणातिपातअदिन्नादानकामेसुमिच्छाचारमुसावादपिसुणवाचाफरुसवाचासम्फप्प-लापअभिज्झाब्यापादमिच्छादिट्ठी **दस अकुसलकम्मपथा**। चत्तारो सस्सतवादाचत्तारो एकच्चसस्सतवादा चत्तारो अन्तानन्तिका चत्तारो अमराविक्खेपिका द्वे अधिच्च-समुप्पन्निका सोळस सञ्ञीवादा अट्ठ असञ्ञीवादा अट्ठ नेवसञ्ञीनासञ्ञीवादा सत्त उच्छेदवादा पञ्च परमदिट्ठधम्मनिब्बानवादा ति एतानि **द्वासट्ठि दिट्ठिगतानि**। रूपतण्हादि छ तण्हायेव पच्चेकं कामतण्हाभवतण्हाविभवतण्हावसेन अट्ठारस होन्ति। तथा हि रूपारम्मणा तण्हा, रूपे वा तण्हा ति रूपतण्हा, सा कामरागभावेन रूपं अस्सादेन्ती पवत्तमाना कामतण्हा, सस्सतदिट्ठिसहगतरागभावेन "रूपं निच्चं धुवं सस्सतं" ति एवं अस्सादेन्ती पवत्तमाना भवतण्हा, उच्छेददिट्ठिसहगतरागभावेन "रूपं उच्छिज्जति विनस्सति पेच्च न भवती" ति एवं अस्सादेन्ती पवत्तमाना विभवतण्हा ति B 310
एवं तिविधा होति। यथा रूपतण्हा, एवं सद्दतण्हादयो पी ति एतानि अट्ठारस तण्हा-विचरितानि होन्ति, तानि अज्झत्तरूपादीसु अट्ठारस, बहिद्धारूपादीसु अट्ठारसा ति छत्तिंस, इति अतीतानि छत्तिंस, अनागतानि छत्तिंस, पच्चुप्पन्नानि छत्तिंसा ति **अट्ठसततण्हाविचरितानि**, अट्ठुत्तरसततण्हाविचरितानी ति अत्थो। **पभेद**-सद्दो पच्चेकं सम्बन्धितब्बो। तत्थायं योजना "लोभप्पभेदो दोसप्पभेदो याव अट्ठसततण्हाविचरितप्प-भेदो" ति। **सब्बदरथपरिळाहकिलेससतसहस्सानी** ति सब्बानि सत्तानं दरथपरिळाह-करानि किलेसानं अनेकानि सतसहस्सानि। आरम्मणादिविभागतो हि पवत्ति आकार-विभागतो च अनन्तप्पभेदा किलेसा।

सङ्खेपतो वा ति आदीसु सम्पति आयतिञ्च सत्तानं अनत्थावहत्ता मारणट्ठेन विबाधनट्ठेन किलेसाव मारो ति **किलेसमारो**। वधकट्ठेन खन्धाव मारो ति **खन्धमारो**। तथा हि वुत्तं "वधकं रूपं, वधकं रूपं ति यथाभूतं नप्पजानाती" ति आदि। जाति-

जरादिमहाब्यसननिब्बत्तनेन अभिसङ्खारोव मारो **अभिसङ्खारमारो**। संकिलेसनिमित्तं हुत्वा गुणमारणट्ठेन देवपुत्तोव मारो ति **देवपुत्तमारो**। सत्तानं जीवितस्स जीवित-परिक्खारानञ्च जानिकरणेन[1] महाबाधरूपत्ता मच्चु एवं मारो ति **मच्चुमारो**। तत्थ समुच्छेदप्पहानवसेन सब्बसो अप्पवत्तिकरणेन किलेसमारं, समुदयप्पहानपरिञ्ञा-वसेन खन्धमारं, सहायवेकल्लकरणवसेन सब्बसो अप्पवत्तिकरणेन अभिसङ्खारमारं, बलविधमनविसयातिक्कमनवसेन देवपुत्तमच्चुमारञ्च अभञ्जि, भग्गे अकासी ति अत्थो। **परिस्सयानं** ति उपद्दवानं।

सतपुञ्ञजलक्खणधरस्सा ति[2] अनेकसतपुञ्ञनिब्बत्तमहापुरिसलक्खणधरस्स। एत्थ हि "केवलं सत्तमत्तेन पुञ्ञकम्मेन एकेकलक्खणं निब्बत्तं" ति इममत्थं न रोचयिंसु अट्ठकथाचरिया "एवं भन्ते यो कोचि बुद्धो भवेय्या" ति, अनन्तासु पन लोकधातूसु यत्तका सत्ता, तेहि सब्बेहि पच्चेकं सतक्खत्तुं कतानि दानादीनि पुञ्ञ-कम्मानि यत्तकानि, ततो एकेकं पुञ्ञकम्मं महासत्तेन सतगुणं कतं सतं ति अधिप्पेतं ति इममत्थं रोचयिंसु। तस्मा इध **सत**-सद्दो बहुभावपरियायो, न सङ्ख्याविसेसवचनो
B 311 ति दट्ठब्बो "सतग्घं सतं देवमनुस्सा" ति आदीसु[3] विय। **रूपकायसम्पत्ति दीपिता होति** इतरासं फलसम्पदानं मूलभावतो अधिट्ठानभावतो च। **दीपिता होती** ति इदं धम्मकाय-सम्पत्ती ति आदीसु पि योजेतब्बं। तत्थ महानसम्पदापुब्बकत्ता ञाणसम्पदादीनं धम्मकायसम्पत्ति दीपिता होती ति वेदितब्बं। **लोकियसरिक्खकानं बहुमतभावो** ति एत्थ भाग्यवन्तताय लोकियानं बहुमतभावो, भग्गदोसताय सरिक्खकानं बहुमतभावो ति योजेतब्बं। एवं इतो परेसु पि यथाक्कमं योजना वेदितब्बा।

पुञ्ञवन्तं गहट्ठा खत्तियादयो अभिगच्छन्ति, पहीनदोसं दोसविनयाय धम्मं देसेती ति पब्बजिता तापसपरिब्बाजकादयो अभिगच्छन्ती ति आह "**गहट्ठपब्बजिते हि अभिगमनीयता**" ति। अभिगतानञ्च तेसं कायचित्तदुक्खापनयने पटिबलभावो आमिस-दानधम्मदानेहि उपकारसब्भावतो रूपकायं तस्स पसादचक्खुना धम्मकायं पञ्ञाचक्खुना दिस्वा दुक्खद्वयस्स पटिप्पस्सम्भनतो ति वेदितब्बो। भाग्यवन्तताय उपगतानं आमिस-दानं देति, भग्गदोसताय धम्मदानं देती ति आह "**आमिसदानधम्मदानेहि उपकारिता**" ति। **लोकियलोकुत्तरसुखेहि च संयोजनसमत्थता दीपिता होती** ति "पुब्बे आमिसदान-धम्मदानेहि मया अयं लोकग्गभावो अधिगतो, तस्मा तुम्हेहि पि एवमेव पटिपज्जितब्बं" ति एवं सम्मापटिपत्तियं नियोजनेन अभिगतानं लोकियलोकुत्तरसुखेहि संयोजनसमत्थता च दीपिता होति।

सकचित्ते इस्सरियं नाम अत्तनो चित्तस्स वसीभावापादनंयेव, पटिकूलादीसु अप्पटिकूलसञ्ञितादिविहारसिद्धि, अधिट्ठानिद्धि आदिको इद्धिविधो पि चित्तिस्सरियमेव

---

१. जानिकरणट्ठेन (स्या०)   २. सतपुञ्ञलक्खणधरस्सा ति (सी०, स्या०)

३. सतग्घि सतदेवमनुस्सा ति आदीसु (सी० स्या०)

चित्तभावनाय वसीभावप्पत्तिया इज्झनतो। **अणिमालघिमादिकं** ति आदि-सद्देन महिमा पत्ति पाकम्मं ईसिता वसिता यत्थकामावसायिता ति इमे छ पि सङ्गहिता। तत्थ कायस्स अणुभावकरणं **अणिमा**। आकासे पदसा गमनादीनं अरहभावेन[1] लहुभावो **लघिमा**। महत्तं **महिमा** कायस्स महन्ततापादानं। इट्ठदेसस्स पापुणनं **पत्ति**। अधिट्ठानादिवसेन इच्छितनिप्फादनं **पाकम्मं**। सयंवसिता इस्सरभावो **ईसिता**। इद्धिविधे वसीभावो **वसिता**। आकासेन वा गच्छतो अञ्ञं वा किञ्चि करोतो यत्थ कत्थचि वोसानप्पत्ति **यत्थकामावसायिता**। कुमारकरूपादिदस्सनं ति पि वदन्ति। एवमिदं B 312
अट्ठविधं लोकियसम्मतं इस्सरियं। तं पन भगवतो इद्धिविधन्तोगधं अनञ्ञसाधारणञ्चा ति आह "**सब्बाकारपरिपूरं अत्थो**" ति। तथा[2] लोकुत्तरो धम्मो अत्थी ति सम्बन्धो। एवं यसादीसु पि अत्थि-सद्दो योजेतब्बो।

केसञ्चि यसो पदेसवुत्ति अयथाभूतगुणसन्निस्सयत्ता अपरिसुद्धो च होति, न एवं तथागतस्साति दस्सेतुं "**लोकत्तयब्यापको** ति वुत्तं। तत्थ इध अधिगतसत्थुगुणानं "इति पि सो भगवा" ति आदिना भगवतो यसो पाकटो होती ति आह "लोकत्तयब्यापको" ति। **यथाभुच्चगुणाधिगतो** ति यथाभूतगुणेहि अधिगतो। **अतिविय परिसुद्धो** ति यथाभूतगुणाधिगतत्ता एव अच्चन्तपरिसुद्धो। **सब्बाकारपरिपूरा** ति अनवसेसलक्खणानुब्यञ्जनादिसम्पत्तिया सब्बाकारेहि परिपुण्णा। **सब्बङ्गपच्चङ्गसिरी** ति सब्बेसं अङ्गपच्चङ्गानं सोभा। **यं यं एतेन इच्छितं पत्थितं** ति "तिण्णो तारेय्यं" ति आदिना यं यं एतेन लोकनाथेन मनोवचीपणिधानवसेन इच्छितं कायपणिधानवसेन पत्थितं। **तथेवा** ति पणिधानानुरूपमेव। **सम्मावायामसङ्खातो पयत्तो** ति वीरियपारमिभावप्पत्तो अरियमग्गपरियापन्नो च सम्मावायामसङ्खातो उस्साहो।

कुसलादीहि भेदेही ति सब्बत्तिकदुकपदसङ्गहितेहि कुसलादिप्पभेदेहि। **पटिच्चसमुप्पादादीही** ति **आदि**-सद्देन न केवलं विभङ्गपाळियं आगता सतिपट्ठानादयोव सङ्गहिता, अथ खो सङ्गहादयो समयविमुत्तादयो ठपनादयो तिकपट्ठानादयो च सङ्गहिता ति वेदितब्बं। **पीळनसङ्खतसन्तापविपरिणामट्ठेन वा दुक्खमरियसच्चं** ति आदीसु **पीळनट्ठो** तं समङ्गिनो सत्तस्स हिंसनं अविप्फारिकताकरणं। **सङ्खतट्ठो** समेच्च सङ्गम्म सम्भूय पच्चयेहि कतभावो। **सन्तापट्ठो** दुक्खदुक्खतादीहि सन्तापनं परिदहनं। **विपरिणामट्ठो** जराय मरणेन चाति द्विधा विपरिणामेतब्बता। समुदयस्स **आयूहनट्ठो** दुक्खस्स निब्बत्तनवसेन सम्पिण्डनं। **निदानट्ठो** "इदं तं दुक्खं" ति निदस्सेन्तस्स विय समुट्ठापनं। **संयोगट्ठो** संसारदुक्खेन संयोजनं। **पलिबोधट्ठो** मग्गाधिगमस्स निवारणं। निरोधस्स **निस्सरणट्ठो** सब्बूपधीनं पटिनिस्सग्गसभावत्ता ततो विनिस्सटता, तंनिस्सरणनिमित्तता वा। **विवेकट्ठो** सब्बसङ्खारविसंयुत्तता। B 313
असङ्खतट्ठो केनचि पि पच्चयेन अनभिसङ्खतता। **अमतट्ठो** निच्चसभावत्ता मरणाभावो, सत्तानं मरणाभावहेतुता वा। **मग्गस्स निय्यानट्ठो** वट्टदुक्खतो निक्कमनट्ठो।

---

१. गमनदीसु अरहभावेन (सी०) गमनादिअरहभावेन (स्या०) २. तत्थ (सी०)

हेतुअत्थो निब्बानस्स सम्पापकभावो। **दस्सनट्ठो** अच्चन्तसुखुमस्स निब्बानस्स सच्छिकरणं। **अधिपतेय्यट्ठो** चतुसच्चदस्सने सम्पयुत्तानं आधिपच्चकरणं, आरम्मणाधिपतिभावो वा विसेसतो मग्गाधिपतिवचनतो। सति पि हि ञानादीनं आरम्मणाधिपतिभावे "ञानाधिपतिनो धम्मा" ति एवमादिं अवत्वा "मग्गाधिपतिनो धम्मा इच्चेव वुत्तं, तस्मा विञ्ञायति "अत्थि मग्गस्स आरम्मणाधिपतिभावे विसेसो" ति। एतेयेव च पीळनादयो सोळसाकारा ति वुच्चन्ति।

दिब्बब्रह्मअरियविहारे ति आदीसु कसिणादिआरम्मणानि रूपावचरज्झानानि **दिब्बविहारो**। मेत्तादिज्झानानि **ब्रह्मविहारो**। फलसमापत्ति अरियविहारो। कामेहि विवेकट्ठकायतावसेन एकीभावो **कायविवेको**। पठमज्झानादिना नीवरणादीहि विवित्तचित्तता **चित्तविवेको। उपधिविवेको** निब्बानं। **उपधी** ति चेत्थ चत्तारो उपधी कामुपधि खन्धुपधि किलेसुपधि अभिसङ्खारुपधी ति। कामापि हि "यं पञ्च कामगुणे पटिच्च उप्पज्जति सुखं सोमनस्सं, अयं कामानं अस्सादो"[1] ति एवं वुत्तस्स सुखस्स अधिट्ठानभावतो उपधीयति एत्थ सुखं ति इमिना वचनत्थेन "उपधी" ति वुच्चन्ति, खन्धापि खन्धमूलकस्स दुक्खस्स अधिट्ठानभावतो, किलेसा पि अपायदुक्खस्स अधिट्ठानभावतो, अभिसङ्खारा पि भवदुक्खस्स अधिट्ठानभावतो वुत्तनयेन "उपधी" ति वुच्चन्ति। इमेहि पन चतूहि उपधीहि विवित्तकाय निब्बानं "उपधिविवेको" ति वुच्चति।

सुञ्ञताकारेन निब्बानं आरम्मणं कत्वा पवत्तो अरियमग्गो **सुञ्ञतविमोक्खो**। सो हि सुञ्ञताय धातुया उप्पन्नत्ता सुञ्ञतो, किलेसेहि च विमुत्तत्ता विमोक्खो। एतेनेव नयेन अप्पणिहिताकारेन निब्बानं आरम्मणं कत्वा पवत्तो **अप्पणिहितविमोक्खो**। अनिमित्ताकारेन निब्बानं आरम्मणं कत्वा पवत्तो **अनिमित्तविमोक्खो**। अथ वा सुञ्ञतानुपस्सनासङ्खाताय अनत्तानुपस्सनाय वसेन पटिलद्धो अरियमग्गो
B 314 आगमनवसेन "सुञ्ञतविमोक्खो" ति वुच्चति। तथा अप्पणिहितानुपस्सनासङ्खाताय दुक्खानुपस्सनाय वसेन पटिलद्धो अप्पणिहितविमोक्खो। अनिमित्तानुपस्सनासङ्खाताय अनिच्चानुपस्सनाय वसेन पटिलद्धो "अनिमित्तविमोक्खो" ति वेदितब्बो।

वुत्तञ्हेतं—

"अनिच्चतो मनसिकरोन्तो अधिमोक्खबहुलो अनिमित्तविमोक्खं पटिलभति, दुक्खतो मनसिकरोन्तो पस्सद्धिबहुलो अप्पणिहितविमोक्खं पटिलभति, अनत्ततो मनसिकरोन्तो वेदबहुलो सुञ्ञतविमोक्खं पटिलभती" ति[2]।

अञ्ञे ति लोकियअभिञ्ञादिके।

किलेसाभिसङ्खारवसेन भवेसु परिब्भमनं, तञ्च तण्हापधानं ति आह "**तण्हासङ्खातं गमनं**" ति। **वन्तं** ति अरियमग्गमुखेन उग्गिरितं पुन अपच्चागमनवसेन छड्डितं।

---

१. म० १-१२० पिट्ठे।

२. खु० ९-२५४ पिट्ठे पटिसम्भिदामग्गे।

भगवा ति वुच्चति निरुत्तिनयेना ति दस्सेन्तो आह **"यथा लोके"** ति आदि। यथा लोके निरुत्तिनयेन एकेकपदतो एकेकमक्खरं गहेत्वा "मेखला" ति वुत्तं, एवमिधापी ति अत्थो। **मेहनस्सा** ति गुय्हप्पदेसस्स। **खस्सा** ति ओकासस्स।

अपरो नयो[1]—भगवा ति भगवा। भतवा ति भगवा। भागे वनी ति भगवा। भगे वनी ति भगवा। भत्तवा ति भगवा। भगे वमी ति भगवा। भागे वमी ति भगवा।

भागवा भतवा भागे, भगे च वनि भत्तवा।
भगे वमि तथा भागे, वमी ति भगवा जिनो॥

तत्थ कथं **भगवा ति भगवा**? ये ते सीलादयो धम्मक्खन्धा गुणकोट्ठासा, ते अनञ्ञसाधारणा निरतिसया तथागतस्स अत्थि उपलब्भन्ति। तथा हिस्स सीलं समाधि पञ्ञा विमुत्ति विमुत्तिञाणदस्सनं, हिरी ओत्तप्पं, सद्धा वीरियं, सति सम्पजञ्ञं, सीलविसुद्धि दिट्ठिविसुद्धि, समथो विपस्सना, तीणि कुसलमूलानि, तीणि सुचरितानि, तयो सम्मावितक्का, तिस्सो अनवज्जसञ्ञा, तिस्सो धातुयो, चत्तारो सतिपट्ठाना, चत्तारो सम्मप्पधाना, चत्तारो इद्धिपादा, चत्तारो अरियमग्गा, चत्तारि अरियफलानि, चतस्सो पटिसम्भिदा, चतुयोनिपरिच्छेदकञाणानि, चत्तारो अरियवंसा, चत्तारि वेसारज्जञाणानि, पञ्च पधानियङ्गानि, पञ्चङ्गिको सम्मासमाधि, पञ्चञाणिको सम्मासमाधि, पञ्चिन्द्रियानि, पञ्च बलानि, पञ्च निस्सारणीया धातुयो, पञ्च विमुत्तायतनञाणानि, पञ्चविमुत्तिपरिपाचनीया सञ्ञा, छ अनुस्सतिट्ठानानि, छ गारवा, छ निस्सारणीया धातुयो, छ सततविहारा, छ अनुत्तरियानि, छ निब्बेधभागिया सञ्ञा, छ अभिञ्ञा, छ असाधारणञाणानि, सत्त अपरिहानीया धम्मा, सत्त अरियधनानि, सत्त बोज्झङ्गानि, सत्त सप्पुरिसधम्मा, सत्त निज्जरवत्थूनि, सत्त सञ्ञा, सत्त दक्खिणेय्यपुग्गलदेसना, सत्तखीणासवबलदेसना, अट्ठपञ्ञापटिलाभहेतुदेसना, अट्ठसमत्तानि, अट्ठलोकधम्मातिक्कमो, अट्ठ आरम्भवत्थूनि, अट्ठ अक्खणदेसना, अट्ठ महापुरिसवितक्का, अट्ठअभिभायतनदेसना, अट्ठ विमोक्खा, नव योनिसोमनसिकारमूलका धम्मा, नव परिसुद्धिपधानियङ्गानि, नवसत्तावासदेसना, नव आघातप्पटिविनया, नव सञ्ञा, नव नानत्ता, नव अनुपुब्बविहारा, दस नाथकरणा धम्मा, दस कसिणायतनानि, दस कुसलकम्मपथा, दस सम्मत्तानि, दस अरियवासा, दस असेक्खधम्मा, दस तथागतबलानि, एकादस मेत्तानिसंसा, द्वादस धम्मचक्काकारा, तेरस धुतगुणा, चुद्दस बुद्धञाणानि, पञ्चदस विमुत्तिपरिपाचनीया धम्मा, सोळसविधा आनापानस्सति, सोळस अपरन्तपनीया धम्मा, अट्ठारस बुद्धधम्मा, एकूनवीसति पच्चवेक्खणञाणानि, चतुचत्तालीस ञाणवत्थूनि, पञ्ञास उदयब्बयञाणानि, परोपण्णास कुसलधम्मा, सत्तसत्तति ञाणवत्थूनि, चतुवीसतिकोटिसतसहस्ससमापत्तिसञ्चारिमहावजिरञाणं, अनन्तनयसमन्तपट्ठानपविचयपच्चवेक्खणदेसनाञाणानि, तथा अनन्तासु लोकधातूसु अनन्तानं सत्तानं असयादिविभावनञाणानि चाति एवमादयो अनन्तापरि- B 315

---

१. इतिवुत्तक-ट्ठ० ५ पिट्ठादीसु पस्सितब्बं।

माणभेदा अनञ्ञसाधारणा निरतिसया गुणभागा गुणकोट्ठासा संविज्जन्ति उपलब्भन्ति, तस्मा यथावुत्तविभागा गुणभागा अस्स अत्थीति भगवा ति वत्तब्बे आकारस्स रस्सत्तं कत्वा "भगवा" ति वुत्तो । एवं ताव भागवा ति भगवा ।

यस्मा सीलादयो सब्बे, गुणभागा असेसतो ।
विज्जन्ति सुगते तस्मा, भगवा ति पवुच्चति ॥

कथं **भतवा ति भगवा** ? ये ते सब्बलोकहिताय उस्सुक्कमापन्नेहि मनुस्सत्तादिके
B 316 अट्ठधम्मे समोधानेत्वा सम्मासम्बोधिया कतमहाभिनीहारेहि महाबोधिसत्तेहि परिपूरेतब्बा दानपारमी, सील, नेक्खम्म, पञ्ञा, वीरिय, खन्ति, सच्च, अधिट्ठान, मेत्ता, उपेक्खापारमी ति दस पारमियो दस उपपारमियो दस परमत्थपारमियो ति समतिंस पारमियो, दानादीनि चत्तारि सङ्गहवत्थूनि, चत्तारि अधिट्ठानानि, अत्तपरिच्चागो, नयन, धन, रज्ज, पुत्तदारपरिच्चागो ति पञ्च महापरिच्चागा, पुब्बयोगो, पुब्बचरिया, धम्मक्खानं, ञातत्थचरिया, लोकत्थचरिया, बुद्धत्थचरिया ति एवमादयो सङ्खेपतो वा पुञ्ञसम्भारञाणसम्भारा बुद्धकरा धम्मा, ते महाभिनीहारतो पट्ठाय कप्पानं सतसहस्साधिकानि चत्तारि असङ्ख्येय्यानि यथा हानभागिया संकिलेसभागिया ठितिभागिया वा न होन्ति, अथ खो उत्तरुत्तरि विसेसभागियाव होन्ति, एवं सक्कच्चं निरन्तरं अनवसेसतो भता सम्भता अस्स अत्थी ति भतवा ति भगवा, निरुत्तिनयेन त-कारस्स गकारं कत्वा । अथ वा **भतवा** ति तेयेव यथावुत्ते बुद्धकरे धम्मे वुत्तनयेन भरि सम्भरि, परिपूरेसी ति अत्थो । एवम्पि भतवा ति भगवा ।

यस्मा सम्बोधिया सब्बे, दानपारमिआदिके ।
सम्भारे भतवा नाथो, तस्मापि भगवा मतो ॥

कथं **भागे वनी ति भगवा** ? ये ते चतुवीसतिकोटिसतसहस्ससङ्ख्या देवसिकं वळञ्जनकसमापत्तिभागा, ते अनवसेसतो लोकहितत्थं अत्तनो च दिट्ठधम्मसुखविहारत्थं निच्चकप्पं वनि भजि सेवि बहुलमकासी ति भागे वनी ति भगवा । अथ वा अभिञ्ञेय्यधम्मेसु कुसलादीसु खन्धादीसु च ये ते परिञ्ञेय्यादिवसेन सङ्खेपतो वा चतुब्बिधा अभिसमयभागा, वित्थारतो पन "चक्खु परिञ्ञेय्यं, सोतं परिञ्ञेय्यं ...पे० ... जरामरणं परिञ्ञेय्यं" ति आदिना[1] अनेके परिञ्ञेय्यभागा, "चक्खुस्स समुदयो पहातब्बो ...पे० ... जरामरणस्स समुदयो पहातब्बो ति आदिना नयेन पहातब्बभागा, "चक्खुस्स निरोधो ... पे० ... जरामरणस्स निरोधो सच्छिकातब्बो" ति आदिना सच्छिकातब्बभागा, "चक्खुस्स निरोधगामिनी पटिपदा" ति आदिना "चत्तारो सतिपट्ठाना" ति आदिना च अनेकभेदा भावेतब्बभागा च धम्मा वुत्ता, ते सब्बे वनि भजि यथारहं गोचरभावनासेवनानं वसेन सेवि । एवम्पि भागे वनी ति भगवा । अथ वा ये इमे सीलादयो धम्मक्खन्धा सावकेहि
B 317 साधारण गुणकोट्ठासा गुणभागा, किन्ति नु खो ते विनेय्यसन्तानेसु पतिट्ठपेय्यं[2] ति

१. खु० ९-२३ पिट्ठे पटिसम्भिदामग्गे । २. पतिट्ठहेय्यं ति (स्या०) ।

महाकरुणाय वनि अभिपत्थयि, सा चस्स अभिपत्थना यथाधिप्पेतफलावहा अहोसि। एवम्पि भागे वनी ति भगवा।

यस्मा ञेय्यसमापत्ति-गुणभागे तथागतो।
भजि पत्थयि सत्तानं, हिताय भगवा ततो॥

कथं **भगे वनी ति भगवा**? समासतो ताव कतपुञ्ञेहि पयोगसम्पन्नेहि यथाविभवं भजीयन्ती ति भगा, लोकियलोकुत्तरसम्पत्तियो। तत्थ लोकिये ताव तथागतो सम्बोधितो पुब्बे बोधिसत्तभूतो परमुक्कंसगते[1] वनि भजि सेवि, यत्थ पतिट्ठाय निरवसेसतो बुद्धकरधम्मे समन्नानेन्तो बुद्धधम्मे परिपाचेसि। बुद्धभूतो पन ते निरवज्जसुखूपसंहिते अनञ्ञसाधारणे लोकुत्तरे पि वनि भजि सेवि। वित्थारतो पन पदेसरज्जइस्सरियचक्कवत्तिसम्पत्ति देवरज्जं सम्पत्ति आदिवसेन झानविमोक्खसमाधिसमापत्तिञाणदस्सनमग्गभावनाफलसच्छिकिरियादिउत्तरिमनुस्सधम्मवसेन च अनेकविहिते अनञ्ञसाधारणे भगे वनि भजि सेवि। एवं भगे वनी ति भगवा।

या ता सम्पत्तियो लोके, या च लोकुत्तरा पुथु।
सब्बा ता भजि सम्बुद्धो, तस्मापि भगवा मतो॥

कथं **भत्तवा ति भगवा**? भत्ता दळ्हभत्तिका अस्स बहू अत्थी ति भत्तवा। तथागतो हि महाकरुणासब्बञ्ञुतञ्ञाणादिअपरिमितनिरुपमप्पभावगुणविसेससमङ्गीभावतो सब्बसत्तुत्तमो, सब्बानत्थपरिहारपुब्बङ्गमाय निरवसेसहितसुखविधानतप्पराय निरतिसयाय पयोगसम्पत्तिया सदेवमनुस्साय पजाय अच्चन्तुपकारिताय द्वत्तिंस महापुरिसलक्खणासीतिअनुब्यञ्जन ब्यामप्पभादि अनञ्ञसाधारणविसेसपटिमण्डितरूपकायताय यथाभुच्चगुणाधिगतेन "इति पि सो भगवा" ति आदिनयप्पवत्तेन लोकत्तयब्यापिना सुविपुलेन सुविसुद्धेन च थुतिघोसेन समन्नागतत्ता उक्कंसपारमिप्पत्तासु अप्पिच्छतासन्तुट्ठिताआदीसु सुप्पतिट्ठितभावतो दसबलचतुवेसारज्जादिनिरतिसयगुणविसेससमङ्गीभावतो च रूपप्पमाणो रूपप्पसन्नो, घोसप्पमाणो घोसप्पसन्नो, लूखप्पमाणो लूखप्पसन्नो, धम्मप्पमाणो धम्मप्पसन्नो ति एवं चतुप्पमाणिके लोकसन्निवासे सब्बथापि पसादावहभावेन B 318
समन्तपासादिकत्ता अपरिमाणानं सत्तानं सदेवमनुस्सानं आदरबहुमानगारवायतनताय परमपेमसम्भत्तिट्ठानं। ये चस्स ओवादे पतिट्ठिता अवेच्चप्पसादेन समन्नागता होन्ति, केनचि असंहारिया तेसं सम्भत्ति समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा ति। तथा हि ते अत्तनो जीवितपरिच्चागे पि तत्थ पसादं न परिच्चजन्ति तस्स वा आणं दळ्हभत्तिभावतो। तेनेवाह—

"यो वे कतञ्ञू कतवेदि धीरो,
कल्याणमित्तो दळ्हभत्ति च होती" ति,[2]

---

१. परमुक्कंसगतो (सी०)। २. खु० ६–१० पिट्ठे जातके।

"सेय्यथा पि भिक्खवे महासमुद्दो ठितधम्मो वेलं नातिवत्तति, एवमेव खो भिक्खवे यं मया सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं, तं मम सावका जीवितहेतु पि नातिक्कमन्ती" ति[1] च।

एवं भत्तवा ति भगवा निरुत्तिनयेन एकस्स त-कारस्स लोपं कत्वा इतरस्स त-कारस्स ग-कारं कत्वा।

गुणातिसययुत्तस्स, यस्मा लोकहितेसिनो।
सम्भत्ता बहवो सत्थु, भगवा तेन वुच्चति॥

कथं **भगे वमी ति भगवा** ? यस्मा तथागतो बोधिसत्तभूतो पि पुरिमासु जातीसु पारमियो पूरेन्तो भगसञ्ञितं सिरिं इस्सरियं यसञ्च वमि उग्गिरि, खेळपिण्डं विय अनपेक्खो छड्डयि। तथा हिस्स **सोमनस्सकुमारकाले**[2] **हत्थिपालकुमारकाले**[3] **अयोघरपण्डितकाले**[4] **मूगपक्खपण्डितकाले**[5] **चूळसुतसोमकाले**[6] ति एवमादीसु नेक्खम्मपारमीपूरणवसेन देवरज्जसदिसाय रज्जसिरिया परिच्चत्तत्तभावानं पमाणं नत्थि, चरिमत्तभावे पि हत्थगतं चक्कवत्तिसिरिं देवलोकाधिपच्चसदिसं चतुदीपिस्सरियं चक्कवत्तिसम्पत्ति-
B 319 सन्निस्सयं सत्तरतनसमुज्जलं यसञ्च तिणाय पि अमञ्ञमानो निरपेक्खो पहाय अभिनिक्खमित्वा सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो, तस्मा इमे सिरिआदिके भगे वमी ति भगवा। अथ वा भानि नाम नक्खत्तानि. तेहि समं गच्छन्ति पवत्तन्ती ति भगा, सिनेरुयुगन्धरउत्तरकुरुहिमवन्तादिभाजनलोकविसेससन्निस्सया सोभा कप्पट्ठायिभावतो[7], ते पि भगवा वमि तं निवासिसत्तावाससमतिक्कमनतो तप्पटिबद्धछन्दरागप्पहानेन पजही ति। एवम्पि भगे वमी ति भगवा।

चक्कवत्तिसिरिं यस्मा, यसं इस्सरियं सुखं।
पहासि लोकचित्तञ्च, सुगतो भगवा ततो॥

कथं **भागे वमी ति भगवा** ? भागो नाम सभागधम्मकोट्ठासा, ते खन्धायतनधातादिवसेन, तत्थापि रूपवेदनादिवसेन अतीतादिवसेन च अनेकविधा, ते च भगवा सब्बं पपञ्चं सब्बं योगं सब्बं गन्थं सब्बं संयोजनं समुच्छिन्दित्वा अमतधातुं समधिगच्छन्तो वमि उग्गिरि, अनपेक्खो छड्डयि न पच्चागमि। तथा हेस सब्बत्थकमेव पथविं आपं, तेजं, वायं, चक्खुं, सोतं, घानं, जिव्हा, कायं, मनं, रूपे, सद्दे, गन्धे, रसे, फोट्ठब्बे धम्मे, चक्खुविञ्ञाणं....पे०....मनोविञ्ञाणं, चक्खुसम्फस्सं,....पे०....मनोसम्फस्सं, चक्खुसम्फस्सजंवेदनं,....पे०....मनोसम्फस्सजं वेदनं, चक्खुसम्फस्सजं सञ्ञं,....पे०....

१. अ० ३–४५, खु० १-१४२, वि० ४, ४२१ पिट्ठेसु
२. खु० ५-३३४ पिट्ठे जातके। ३. खु० ५-३५० पिट्ठे जातके।
४. खु० ५-३५३ पिट्ठे जातके। ५. खु० ६–१४९ पिट्ठे जातके।
६. खु० ६-२५ पिट्ठे जातके। ७. कप्पट्ठियभावतो (स्या०)।

मनोसम्फस्सजं सञ्ञं, चक्खुसम्फस्सजं चेतनं····पे०··मनोसम्फस्सजं चेतनं, रूपतण्हं,···· पे०····धम्मतण्हं, रूपवितक्कं,····पे०····धम्मवितक्कं, रूपविचारं,···पे०····धम्मविचारं ति आदिना अनुपदधम्मविभागवसेन पि सब्बेव धम्मकोट्ठासे अनवसेसतो वमि उग्गिरि, अनपेक्खपरिच्चागेन छड्डयि। वुत्तञ्हेतं "यं तं आनन्द चत्तं वन्तं मुत्तं पहीनं पटिनिस्सट्ठं, तं तथागतो पुन पच्चागमिस्सती ति नेतं ठानं विज्जती" ति[1]। एवम्पि भागे वमी ति भगवा। अथ वा **भागे वमी** ति सब्बे पि कुसलाकुसले सावज्जानवज्जे हीनपणीते कण्हसुक्कसप्पटिभागे धम्मे अरियमग्गञाणमुखेन वमि उग्गिरि, अनपेक्खो परिच्चजि पजहि, परेसञ्च तथत्ताय धम्मं देसेसि। वुत्तम्पि चेतं "धम्मा पि वो भिक्खवे पहातब्बा पगेव अधम्मा[2]। कुल्लूपमं वो भिक्खवे धम्मं देसेस्सामि नित्थरणत्थाय, नो गहणत्थाया" ति आदि[3]। एवम्पि भागे वमी ति भगवा।

खन्धायतनधातादि-धम्मभेदा महेसिना। B 320
कण्हा सुक्का यतो वन्ता, ततोपि भगवा मतो॥

तेन वुत्तं—

"भागवा भतवा भागे, भगे च वनि भत्तवा।
भगे वमि तथा भागे, वमी ति भगवा जिनो" ति॥

एत्थ च यस्मा सङ्खेपतो अत्तहितसम्पत्तिपरहितपटिपत्तिवसेन दुविधा बुद्धगुणा, तासु अत्तहितसम्पत्ति पहानसम्पदाञाणसम्पदाभेदतो दुविधा आनुभावसम्पदादीनं तद-विनाभावेन तदन्तोगधत्ता। परहितपटिपत्ति पयोगासयभेदतो दुविधा। तत्थ पयोगतो लाभसक्कारादिनिरपेक्खचित्तस्स सब्बदुक्खनिय्यानिकधम्मूपदेसो, आसयतो पटिविरु-द्धेसु पि निच्चं हितेसिता ञाणपरिपाककालागमनादिपरहितप्पटिपत्ति। आमिसपटि-ग्गहणादिना पि अत्थचरिया परहितपटिपत्ति होतियेव, तस्मा तेसम्पि विभावनवसेन **पाळियं** "अरहं" ति आदीनं पदानं गहणं वेदितब्बं।

तत्था **अरहं** ति इमिना पदेन पहानसम्पदावसेन भगवतो अत्तहितसम्पत्ति विभा-विता, **सम्मासम्बुद्धो लोकविदू** ति च इमेहि पदेहि ञाणसम्पादावसेन। ननु च "लोकविदू" ति इमिना पि सम्मासम्बुद्धता विभावीयती ति? सच्चं विभावीयति, अत्थि पन विसेसो "सम्मासम्बुद्धो" ति इमिना सब्बञ्ञुतञ्ञाणानुभावो विभावितो, "लोकविदू" ति पन इमिना आसयानुसयञाणादीनम्पि आनुभावो विभावितो ति। **विज्जाचरणसम्पन्नो** ति इमिना सब्बा पि भगवतो अत्तहितसम्पत्ति विभाविता। **सुगतो** ति पन इमिना समुदागमतो पट्ठाय भगवतो अत्तहितसम्पत्ति परहितपटिपत्ति च विभाविता। **अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि सत्था देवमनुस्सानं** ति इमेहि पदेहि भगवतो

---

१. दी० २-९९ पिट्ठे। २. म० १-१८८ पिट्ठे।
३. म० १-१८७ पिट्ठे।

परहितपटिपत्ति विभाविता। **बुद्धो** ति इमिना भगवतो अत्तहितसम्पत्ति परहितपटिपत्ति च विभाविता। एवञ्च कत्वा "सम्मासम्बुद्धो" ति वत्वा "बुद्धो" ति वचनं समत्थितं होति। तेनेवाह "अत्तना पि बुज्झि, अञ्ञे पि सत्ते बोधेसी" ति आदि। **भगवा** ति च इमिना पि समुदागमतो पट्ठाय भगवतो सब्बा अत्तहितसम्पत्ति परहितपटिपत्ति च विभाविता।

B 321 अपरो नयो—हेतुफलसत्तुपकारवसेन सङ्खेपतो तिविधा बुद्धगुणा। तत्थ **अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो लोकविदू** ति इमेहि पदेहि फलसम्पत्तिवसेन बुद्धगुणा विभाविता। **अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि सत्था देवमनुस्सानं** ति इमेहि सत्तुपकारवसेन बुद्धगुणा पकासिता। **बुद्धो** ति इमिना फलवसेन सत्तुपकारवसेन च बुद्धगुणा विभाविता। **सुगतो भगवा** ति पन इमेहि पदेहि हेतुफलसत्तुपकारवसेन बुद्धगुणा विभाविता ति वेदितब्बं।

सो इमं लोकं ति आदीसु **सो भगवा** ति यो "अरहं" ति आदिना कित्तितगुणो, सो भगवा। **इमं लोकं** ति नयिदं महाजनस्स सम्मुखामत्तं[1] सन्धाय वुत्तं, अथ खो अनवसेसं परियादाया ति दस्सेतुं "**सदेवकं**" ति आदि वुत्तं। तेनाह "**इदानि वत्तब्बं निदस्सेती**" ति **पजातत्ता** ति। यथासकं कम्मकिलेसेहि निब्बत्तत्ता। **सदेवकवचनेन पञ्चकामावचरदेवग्गहणं** पारिसेसञायेना ति वेदितब्बं इतरेसं पदन्तरेहि सङ्गहितत्ता। **सदेवकं** ति च अवयवेन विग्गहो समुदायो समासत्थो। **समारकवचनेन छट्ठकामावचर-देवग्गहणं** पच्चासत्तिञायेना ति दट्ठब्बं। तत्थ हि सो जातो तं निवासी च। **सब्रह्मक वचनेन ब्रह्मकायिकादि ब्रह्मग्गहणं** ति एत्थापि एसेव नयो। **पच्चत्थिका**....पे०.... **समणब्राह्मणग्गहणं** ति निद्दिस्सनमत्तमेतं अपच्चत्थिकानं असमिताबाहितपापानञ्च समण-ब्राह्मणानं सस्समणब्राह्मणीवचनेन गहितत्ता। कामं "सदेवकं" ति आदिविसेसनानं वसेन सत्तविसयो लोकसद्दो ति विञ्ञायति तुल्ययोगविसयत्ता तेसं, "सलोमको सपक्खको" ति आदीसु पन अतुल्ययोगे पि अयं समासो लब्भती ति ब्यभिचारदस्सनतो पजा-गहणं ति आह '**पजावचनेन सत्तलोकग्गहणं** ति। सदेवकादिवचनेन उपपत्तिदेवानं, सस्समणब्राह्मणीवचनेन विसुद्धिदेवानञ्च गहितत्ता आह "**सदेवमनुस्सवचनेन सम्मुतिदेवअवसेसमनुस्सग्गहणं**" ति। तत्थ **सम्मुतिदेवा** राजानो। **अवसेसमनुस्सग्गहणं** ति समणब्राह्मणेहि अवसेसमनुस्सग्गहणं। **तीहि पदेही** ति सदेवकसमारकसब्रह्मकवच-नेहि। **द्वीही** ति सस्समणब्राह्मणिं सदेवमनुस्सं ति इमेहि द्वीहि पदेहि।

B 322 अरूपी सत्ता अत्तनो आनेञ्जविहारेन विहरन्ता दिब्बन्ती ति देवा ति इमं निब्बचनं लभन्ती ति आह "**सदेवकग्गहणेन अरूपावचरलोको गहितो**" ति। तेनेवाह भगवा "आकासानञ्चायतनूपगानं देवानं सहब्यतं" ति आदि[2]। छकामावचरदेवलोकस्स सविसेसं मारस्स वसे वत्तनतो आह "**समारकग्गहणेन छकामावचरदेवलोको**" ति।

---

१. सम्मुखीमत्तं (स्या०) सम्मुखपत्तं (क)। २. अं० १-२७० पिट्ठे

अरूपीब्रह्मलोकस्स विसुं गहितत्ता आह "**रूपीब्रह्मलोको**" ति। **चतुपरिसवसेना** ति खत्तियपरिसा, ब्राह्मण, गहपति, समण, चातुमहाराजिक, तावतिंस, मार, ब्रह्मपरिसा ति इमासु अट्ठसु परिसासु खतियादिचतुपरिसवसेन। इतरा पन चतस्सो परिसा समारकग्गहणेन गहिता एवा ति।

कथं पनेत्थ चतुपरिसवसेन मनुस्सलोको गहितो ? "सस्समणब्राह्मणिं" ति इमिना समणपरिसा ब्राह्मणपरिसा च गहिता होन्ति, "सदेवमनुस्सं" ति इमिना खत्तियपरिसा गहपतिपरिसा च गहिता, "पजं" ति इमिना पन इमायेव चतस्सो परिसा वुत्ता, चतुपरिसङ्खातं पजं वुत्तं होति, कथं पन सम्मुतिदेवेहि सह मनुस्सलोको गहितो? एत्थापि "सस्समणब्राह्मणिं" ति इमिना समणब्राह्मणा गहिता, "सदेवमनुस्सं" ति इमिना सम्मुतिदेवसङ्खाता खत्तिया, गहपतिसुद्दसङ्खाता अवसेसमनुस्सा च गहिता होन्ति। इतो पन अञ्ञेसं मनुस्ससत्तानं अभावतो "पजं" ति इमिना चतूहि पकारेहि ठिता एतेयेव मनुस्ससत्ता वुत्ता ति दट्ठब्बं। एवं विकप्पद्वये पि पजाग्गहणेन चतुपरिसादिवसेन ठितानं मनुस्सानं येव गहितत्ता इदानि "पजं" ति इमिना अवसेससत्ते सङ्गहेत्वा दस्सेतुकामो आह "**अवसेससब्बसत्तलोको वा**"ति। तत्थ नागगरुळादिवसेन अवसेससत्तलोको वेदितब्बो। एत्थापि चतुपरिसवसेन सम्मुतिदेवेहि वा सह अवसेस सब्बसत्तलोको वा ति योजेतब्बं। चतुपरिससहितो अवसेससुद्धनागसुपण्णनेरयिकादिसत्तलोको, चतुधा ठितमनुस्ससहितो वा अवसेसनागसुपण्णनेरयिकादिसत्तलोको गहितो ति वुत्तं होति।

एत्तावता भागसो लोकं गहेत्वा योजनं दस्सेत्वा इदानि तेन तेन विसेसेन अभागसो लोकं गहेत्वा योजनं दस्सेतुं "**अपि चेत्था**" ति आदि वुत्तं। तत्थ **उक्कट्ठपरिच्छेदतो** ति उक्कंसगतिविजाननेन। पञ्चसु हि गतीसु देवगतिपरियापन्नव सेट्ठा, तत्थापि अरूपिनो दूरसमुस्सारितकिलेसदुक्खताय सन्तपणीतआनेञ्जविहारसमङ्गिताय अतिविय दीघायुकताया ति एवमादीहि विसेसेहि अतिविय उक्कट्ठा। **ब्रह्मा महानुभावो** ति दससहस्सियं महाब्रह्मुनो वसेन वदति। "उक्कट्ठपरिच्छेदतो" ति हि वुत्तं। **अनुत्तरं** ति सेट्ठं नवलोकुत्तरं। **अनुसन्धिकम्मो** ति अत्थानञ्चेव पदानञ्च अनुसन्धानुक्कमो।[1] पोराणा पनेत्थ एवं वण्णयन्ति—सदेवकं ति देवताहि सद्धिं अवसेसं लोकं। समारकं ति मारेन सद्धिं अवसेसं लोकं। **सब्रह्मकं** ति ब्रह्मेहि सद्धिं अवसेसं लोकं। एवं सब्बे पि तिभवूपगे सत्ते देवमारब्रह्मसहिततासङ्खातेहि तीहि पकारेहि "सदेवकं" ति आदीसु तीसु पदेसु पक्खिपित्वा पुन द्वीहि पदेहि परियादियन्तो "**सस्समणब्राह्मणिं पजं सदेवमनुस्सं**" ति आह। एवं पञ्चहि पि पदेहि सदेवकत्तादिना तेन तेन पकारेन तेधातुकमेव परियादिन्नं ति।

अभिञ्ञा ति यकारलोपेनायं निद्देसो, अभिजानित्वा ति अयमेत्थ अत्थो ति आह "**अभिञ्ञाय अधिकेन ञाणेन ञत्वा**" ति। **अनुमानादिपटिक्खेपो** ति अनुमान-

B 323

१. अनुसन्धानक्कमो (सी०)।

उपमानअत्थापत्तिआदिपटिक्खेपो एकप्पमाणत्ता। सब्बत्थ अप्पटिहतञाणचारताय हि सब्बपच्चक्खा बुद्धा भगवन्तो। **अनुत्तरं विवेकसुखं** ति फलसमापत्तिसुखं। तेन वीथिमिस्सा पि[1] कदाचि भगवतो धम्मदेसना होती ति **हित्वा पी** ति पि सद्दग्गहणं। भगवा हि धम्मं देसेन्तो यस्मिं खणे परिसा साधुकारं वा देति, यथासुतं वा धम्मं पच्चवेक्खति, तं खणं पुब्बभागेन[2] परिच्छिन्दित्वा फलसमापत्तिं समापज्जति, यथापरिच्छेदञ्च समापत्तितो वुट्ठाय ठितट्ठानतो पट्ठाय धम्मं देसेति। **अप्पं वा बहुं वा देसेन्तो** ति उग्घटितञ्ञुस्स वसेन अप्पं वा, विपञ्चितञ्ञुस्स नेय्यस्स वा वसेन बहुं वा देसेन्तो। **आदिकल्याणादिप्पकारमेव देसेती** ति आदिम्हि पि कल्याणं भद्दकं अनवज्जमेव कत्वा देसेति। मज्झे पि परियोसाने पि कल्याणं भद्दकं अनवज्जमेव
B 324 कत्वा देसेती ति वुत्तं होति। धम्मस्स हि कल्याणता निय्यानिकताय निय्यानिकता च सब्बसो अनवज्जभावेन।

समन्तभद्दकत्ता ति सब्बभागेहि सुन्दरत्ता। **धम्मस्सा** ति परियत्तिधम्मस्स। किञ्चापि अवयवविनिमुत्तो समुदायो नाम परत्थतो कोचि नत्थि, येसु पन अवयवेसु समुदायरूपेन अपेक्खितेसु गाथा ति समञ्ञा, तं ततो भिन्नं विय कत्वा संसामिवोहारं आरोपेत्वा दस्सेन्तो **"पठमपादेन आदिकल्याणा"** ति आदिमाह। **एकानुसन्धिकं** ति इदं नातिबहुविभागं यथानुसन्धिना एकानुसन्धिकं सन्धाय वुत्तं। इतरस्स पन तेनेव देसेतब्बधम्मविभागेन आदिमज्झपरियोसानभागा लब्भन्ती ति। **निदानेना** ति आनन्दत्थेरेन ठपितकालदेसदेसकपरिसादिअपदिसनलक्खणेन निदानगन्थेन। **निगमेना** ति "इदमवोचा" ति आदिकेन "इति यं तं वुत्तं, इदमेतं पटिच्च वुत्तं" ति वा यथावुत्तत्थनिगमनेन। सङ्गीतिकारकेहि ठपितानि पि हि निदाननिगमनानि दस्सेत्वा तीणि पिटकानि सत्थु देसनाय अनुविधानतो[3] तदन्तोगधानेव। तेनेव **दीघनिकायट्ठकथायं**[4] "एकानुसन्धिकस्स सुत्तस्स निदानं आदि, इदमवोचा ति परियोसानं, उभिन्नमन्तरा मज्झं" ति वुत्तं।

एवं सुत्तन्तपिटकवसेन धम्मस्स आदिकल्याणादिकं दस्सेत्वा इदानि तीणि पिटकानि एकज्झं गहेत्वा तं दस्सेतुं **"सकलो पी"** ति आदि वुत्तं। तत्थ **सासनधम्मो** ति—

"सब्बपापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसम्पदा।
सचित्तपरियोदपनं, एतं बुद्धानसासनं" ति[5]।

एवं वुत्तस्स सत्थुसासनस्स पकासको परियत्तिधम्मो। सीलमूलकत्ता सासनस्स **"सीलेन आदिकल्याणो"** ति वुत्तं। समथादीनं सासनसम्पत्तिया वेमज्झभावतो आह

---

१. वीतिक्कमिस्सामीति (सी०) पटिमिस्सापि (स्या०) २. पुब्बाभोगेन (सी० स्या०)
३. अनुविजानतो (क) ४. दी० ट्ठ० १-१५८ पिट्ठे।
५. दी० २-४२, खु० १-४१, खु० १०-३७, ६८ पिट्ठेसु।

"**समथविपस्सनामग्गफलेहि मज्झेकल्याणो**" ति। निब्बानाधिगमतो उत्तरि करणीयाभावतो वुत्तं "**निब्बानेन परियोसानकल्याणो**" ति। सासने सम्मापटिपत्ति नाम पञ्ञाय होति, तस्स च सीलं समाधि च मूलं ति आह "**सीलसमाधीहि वा आदिकल्याणो**" ति। B 325 पञ्ञा पन अनुबोधपटिवेधवसेन दुविधा ति तदुभयम्पि गण्हन्तो "**विपस्सनामग्गेहि मज्झेकल्याणो**" ति आह। तस्सा निप्फत्तिफलकिच्चं निब्बानसच्छिकिरिया, ततो परं कत्तब्बं नत्थी ति दस्सेन्तो आह "**फलनिब्बानेहि परियोसानकल्याणो**" ति। फलग्गहणेन वा सउपादिसेसं निब्बानमाह, इतरेन इतरं तदुभयञ्च सासनसम्पत्तिया ओसानं ति आह "फलनिब्बानेहि परियोसानकल्याणो" ति।

बुद्धसुबोधिताय वा आदिकल्याणो ति बुद्धस्स सुबोधिता सम्मासम्बुद्धता, ताय आदिकल्याणो तप्पभवत्ता। सब्बसो संकिलेसप्पहानं वोदानपारिपूरी च धम्मसुधम्मता, ताय **मज्झे कल्याणो** तंसरीरत्ता। सत्थारा यथानुसिट्ठं तथा पटिपत्तिसंघसुप्पटिपत्ति, ताय **परियोसानकल्याणो** ताय सासनस्स लोके सुप्पतिट्ठितभावतो। तं ति सासनधम्मं। **तथत्ताया** ति यथत्ताय भगवता धम्मो देसितो, तथत्ताय तथभावाय। सो पन अभिसम्बोधि पच्चेकबोधि सावकबोधी ति तिविधो इतो अञ्ञथा निब्बानाधिगमस्स अभावतो। तत्थ सब्बगुणेहि अग्गभावतो इतरबोधिद्वयमूलताय च पठमाय बोधिया आदिकल्यणता, गुणेहि वेमज्झभावतो दुतियाय मज्झेकल्याणता, तदुभयताय वा वोसानताय च सासनधम्मस्स ततियाय परियोसानकल्याणता वुत्ता।

एसो ति सासनधम्मो। **नीवरणविक्खम्भनतो** ति विमुत्तायतनसीसे ठत्वा सद्धम्मं सुणन्तस्स नीवरणानं विक्खम्भनसब्भावतो। वुत्तञ्हेतं—

"यथा यथावुसो भिक्खुनो सत्था वा धम्मं देसेति, अञ्ञतरो वा गरुट्ठानीयो सब्रह्मचारी, तथा तथा सो तत्थ लभति अत्थवेदं लभति धम्मवेदं" ति।

"यस्मिं भिक्खवे समये अरियसावको ओहितसोतो धम्मं सुणाति, पञ्चस्स नीवरणानि तस्मिं समये पहीनानि होन्ती" ति—

च आदि। **समथविपस्सनासुखावहनतो** ति समथसुखस्स विपस्सनासुखस्स च B 326 सम्पापनतो। वुत्तम्पि चेतं "सो विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं" ति आदि, तथा—

"यतो यतो सम्मसति, खन्धानं उदयब्बयं।
लभति पीतिपामोज्जं, अमतं तं विजानतं।
अमानुसी रती होति, सम्मा धम्मं विपस्सतो" ति[1] च।

---

१. खु० १-६७ पिट्ठे।

तथा पटिपन्नो ति यथा समथविपस्सनासुखं आवहति, यथा वा सत्थारा अनुसिट्ठं, तथा पटिपन्नो सासनधम्मो। **तादिभावावहनतो** ति छळङ्गुपेक्खावसेन इट्ठादीसु तादिभावस्स लोकधम्मेहि अनुपलेपस्स आवहनतो। **नाथप्पभवत्ता** ति पभवति एतस्मा ति पभवो, उप्पत्तिट्ठानं, नाथोव पभवो एतस्सा ति नाथप्पभवो, तस्स भावो नाथप्पभवत्तं, तस्मा, सासनधम्मस्स नाथहेतुकत्ता ति अत्थो। **अत्थसुद्धिया मज्झेकल्याणो** ति निरुपक्किलेसताय निय्यानिकत्ता अत्थसुद्धि, ताय मज्झेकल्याणो। **किच्चसुद्धिया परियोसान कल्याणो** ति सुप्पटिपत्तिसङ्खातकिच्चस्स सुद्धिया परियोसान कल्याणो सुप्पटिपत्तिपरियोसानत्ता सासनधम्मस्स। यथावुत्तमत्थं निगमेन्तो आह "**तस्मा**" ति आदि।

सासनब्रह्मचरियं ति आदीसु अविसेसेन तिस्सो सिक्खा सकलो च तन्तिधम्मो सासनब्रह्मचरियं। यं सन्धाय वुत्तं "कतमेसानं खो भन्ते बुद्धानं भगवन्तानं ब्रह्मचरियं न चिरट्ठितिकमहोसी" ति आदि[1]। अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो मग्गब्रह्मचरियं। यं सन्धाय वुत्तं "खीणा जाति, वुसितं ब्रह्मचरियं, कतं करणीयं" ति[2]। **यथानुरूपं** ति यथारहं। सिक्खत्तयसङ्गहञ्हि सासनब्रह्मचरियं अत्थसम्पत्तिया **सात्थं**, तथा मग्गब्रह्मचरियं। इतरं पन तन्तिधम्मसङ्खातं सासनब्रह्मचरियं यथावुत्तेनत्थेन **सात्थं सब्यञ्जनञ्च। अत्थसम्पत्तिया** ति सम्पन्नत्थताय। सम्पत्तिअत्थो हि इध सहसद्दो। **ब्यञ्जनसम्पत्तिया** ति एत्थापि एसेव नयो। यस्स हि यागुभत्तादिइत्थिपुरिसादिवण्णनानिस्सिता देसना होति, न सो सात्थं देसेति निय्यानत्थविरहतो तस्सा देसनाय। भगवा पन तथारूपं देसनं पहाय चतुसतिपट्ठानादिनिस्सितं देसनं देसेति, तस्मा "अत्थसम्पत्तिया सात्थं
B 32 देसेती" ति वुच्चति। यस्स पन देसना सिथिलधनितादिभेदेसु ब्यञ्जनेसु एकप्पकारेनेव द्विप्पकारेनेव वा ब्यञ्जनेन युत्तताय एकब्यञ्जनादियुत्ता वा दमिळभासा विय, विवटकरणताय ओट्ठे अफुसापेत्वा उच्चारेतब्बतो सब्बनिरोट्ठब्यञ्जना वा किरातभासा विय, सब्बत्थेव विस्सज्जनीययुत्तताय सब्बविस्सट्ठब्यञ्जना वा यवनभासा विय, सब्बत्थेव सानुसारताय सब्बनिग्गहीतब्यञ्जना वा पादसिकादि[3] मिलक्खुभासा विय, तस्स ब्यञ्जनपारिपूरिया अभावतो अब्यञ्जना नाम देसना होति। सब्बा पि हि एसा ब्यञ्जनेकदेसवसेनेव पवत्तिया अपरिपुण्णब्यञ्जना ति कत्वा "अब्यञ्जना" ति वुच्चति। भगवा पन—

"सिथिलं धनितञ्च दीघरस्सं, गरुकं लहुकञ्च निग्गहीतं।
सम्बन्धं ववत्थितं विमुत्तं, दसधा ब्यञ्जनबुद्धिया पभेदो" ति[4]॥

एवं वुत्तं दसविधं ब्यञ्जनं अमक्खेत्वा परिपुण्णब्यञ्जनमेव कत्वा धम्मं देसेति, तस्मा "ब्यञ्जनसम्पत्तिया सब्यञ्जनं देसेती" ति वुच्चति।

---

१. वि० १-८ पिट्ठे। २. वि० १-६ पिट्ठे।

३. पारसिकादि (सी०, स्या०)।

४. दी० ट्ठ १-१५९, म० ट्ठ २-१०८, वि० ट्ठ० ४-२४७ पिट्ठेसु।

इदानि "सात्थं सब्यञ्जनं" ति एत्थ नेत्तिनयेन पि अत्थं दस्सेतुं "**सङ्कासनं**" पे० "...**सब्यञ्जनं**" ति वुत्तं। तत्थ यदि पि **नेत्तियं** "ब्यञ्जनमुखेन ब्यञ्जनत्थग्गहणं होती ति अक्खरं पदं" ति आदिना ब्यञ्जनपदानि पठमं उद्दिट्ठानि, इध पन पाळियं "सात्थं सब्यञ्जनं" ति आगतत्ता अत्थपदानियेव पठमं दस्सेतुं "**सङ्कासनपकासना**" ति आदि वुत्तं। तत्थ सङ्खेपतो कासनं दीपनं **सङ्कासनं**। **कासनं** ति च कासीयति दीपीयति विभावीयती ति अत्थो। "मञ्ञमानो खो भिक्खु बद्धो मारस्स अमञ्ञमानो मुत्तो" ति आदीसु विय सङ्खेपेन दीपनं सङ्कासनं नाम। तत्तकेन हि तेन भिक्खुना पटिविद्धं। तेनाह "अञ्ञातं भगवा" ति आदि। पठमं कासनं **पकासनं**। सब्बं भिक्खवे आदित्तं" ति एवमादीसु पच्छा कथितब्बमत्थं पठमं वचनेन दीपनं पकासनं नाम। आदिकम्मस्मिञ्हि अयं प-सद्दो "पञ्ञपेति पट्ठपेती" ति—आदीसु विय। तिक्खिन्द्रियापेक्खञ्चेतं पदद्वयं उद्देसभावतो। तिक्खिन्द्रियो हि सङ्खेपतो पठमञ्च वुत्तमत्थं पटिपज्जति। सङ्खित्तस्स वित्थारवचनं सकिं वुत्तस्स पुन वचनञ्च **विवरणविभजनानि**, यथा "कुसला धम्मा" ति सङ्खेपतो सकियेव च वुत्तस्स अत्थस्स "कतमे धम्मा कुसला ? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं" ति आदिना वित्थारतो विवरणवसेन विभजनवसेन च पुन वचनं। मज्झिमिन्द्रियापेक्खमेतं पदद्वयं निद्देसभावतो। विवटस्स वित्थारतराभिधानं विभत्तस्स च पकारेहि ञापनं विनेय्यानं चित्तपरितोसनं **उत्तानीकरणपञ्ञापनानि**, यथा "फस्सो होती" ति आदिना विवटविभत्तस्स अत्थस्स "कतमो तस्मिं समये फस्सो होति ? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना" ति आदिना उत्तानीकिरिया पञ्ञापना च। मुदिन्द्रियापेक्खमेतं पदद्वयं पटिनिद्देसभावतो। B 328

अथ वा "सब्बं भिक्खवे आदित्तं" ति एवं पठमं दीपितमत्थं पुन पाकटं कत्वा दीपनेन 'किञ्च भिक्खवे सब्बं आदित्तं ? चक्खु भिक्खवे आदित्तं, रूपा आदित्ता" ति एवमादिना सङ्खित्तस्स वित्थाराभिधानेन सकिं वुत्तस्स पुनपि अभिधानेन वित्थारेत्वा देसनं **विवरणं** नाम। "कुसला धम्मा" ति सङ्खेपेन निक्खित्तस्स" कतमे धम्मा कुसला ? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होती" ति निद्देसवसेन विवरिते कुसले धम्मे "तस्मिं समये फस्सो होति वेदना होती" ति विभागकरणं **विभजनं** नाम। विवटस्स वित्थाराभिधानेन विभत्तस्स च उपमाभिधानेन उत्तानिं करोती ति विवरणेन विवरितत्थस्स "कतमो तस्मिं समये फस्सो होति ? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना" ति अतिविवरित्वा कथनं, विभजनेन विभत्तस्स 'सेय्यथापि भिक्खवे गावी निच्चम्मा, एवमेव ख्वायं भिक्खवे फस्साहारो दट्ठब्बो ति वदामी" ति एवमादि उपमाकथनञ्च उत्तानीकरणं नाम। धम्मं सुणन्तानं धम्मदेसनेन विचित्तेन अनेकविधेन सोमनस्सस्स उप्पादनं अतिखीणबुद्धीनं अनेकविधेन ञाणतिखिणकरणञ्च **पञ्ञत्ति** नाम सोतूनं चित्ततोसनेन चित्तनिसानेन च पञ्ञापनं पञ्ञत्ती ति कत्वा। **अत्थपद समायोगतो सात्थं** ति परियत्तिअत्थस्स सङ्कासनादिअत्थपदरूपत्ता यथावुत्त छ अत्थपदसमायोगतो **सात्थं**। सङ्कासनपकासनादयो हि अत्थाकारत्ता "**अत्थपदानी**" ति वुच्चन्ति। अत्थोयेव हि ब्यञ्जनपदेहि सङ्कासीयति पकासीयति विवरीयति विभजीयति उत्तानी करीयति पञ्ञापीयति।

अक्खरपदब्यञ्जनाकारनिरुत्तिनिद्देससम्पत्तिया ति एत्थ "सट्ठि वस्ससहस्सानी" ति एवमादीसु स-कार ट्ठ-कार सो-कारादि विय उच्चारणवेलाय अपरियोसिते पदे
B 329 वण्णो **अक्खरं** परियायवसेन अक्खरणतो अवेवचनतो। न हि वण्णस्स परियायो विज्जति। यथा हि पदं सवेवचनताय अत्थवसेन परियायं चरन्तं सञ्चरन्तं विय होति, न एवं वण्णो अवेवचनत्ता। एकक्खरं वा पदं अक्खरं "मा एवं किर तं" ति आदीसु मा—कारादयो विय। केचि पन "तीसु द्वारेसु परिसुद्धपयोगभावेन विसुद्धकरणट्ठानानं चित्तेन पवत्तितदेसना वाचाहि अक्खरणतो अवेवचनतो अकथितत्ता अक्खरं ति सञ्ञिता। तं पारायनिकब्राह्मणानं मनसा पुच्छितपञ्हानं वसेन भगवता रतनघरे निसीदित्वा सम्मसितपट्ठानमहापकरणवसेन च गहेतब्बं" ति वदन्ति। विभत्तियन्तं अत्थस्स ञापनतो **पदं**। पज्जति अत्थो एतेना ति हि पदं। तं नामपदं आख्यातपदं उपसग्गपदं निपातपदं ति चतुब्बिधं। तत्थ फस्सो वेदना चित्तं ति एवमादिकं दब्बपधानं **नामपदं**। नामपदेहि दब्बमाविभूतरूपं, किरिया अनाविभूतरूपा। फुसति वेदयति विजानाती ति एवमादिकं किरियापधानं **आख्यातपदं**। आख्यातपदेहि किरिया आविभूतरूपा, दब्बमनाविभूतरूपं। यथा "चिरप्पवासिं" ति एत्थ प-सद्दो वसनकिरियाय वियोगविसिट्ठतं दीपेति, एवं किरियाविसेसदीपनतो किरियाविसेसावबोधनिमित्तं। प-इति एवमादिकं **उपसग्गपदं**। किरियाय दब्बस्स च सरूपविसेसप्पकासनहेतुभूतं एवं ति एवमादिकं **निपातपदं**। "एवं मनसि करोथ, मा एवं मनसाकत्था" ति आदीसु किरियाविसेसदीपनतो किरियाविसेसस्स जोतको एवंसद्दो, "एवंसीला एवंधम्मा" ति आदीसु दब्बविसेसस्स। सङ्खेपतो वुत्तं पदाभिहितं अत्थं ब्यञ्जेती ति ब्यञ्जनं, वाक्यं। "चत्तारो इद्धिपादा" ति सङ्खेपेन कथितमत्थं" कतमे चत्तारो ? इध भिक्खवे भिक्खु छन्दसमाधिपधानसङ्खारसमन्नागतं इद्धिपादं भावेति, वीरिय, चित्त, वीमंससमाधिपधानसङ्खारसमन्नागतं इद्धिपादं भावेती" ति आदिना पाकटं करोती ति वाक्यमेव ब्यञ्जनं, तं पन अत्थतो पदसमुदायो ति दट्ठब्बं। सआख्यातं सनिपातं सकारकं सविसेसनं वाक्यं ति हि वदन्ति। ननु च पदेन पि अत्थो ब्यञ्जीयती ति पदम्पि ब्यञ्जनं ति आपज्जती ति ? तं न। पदमत्तसवनेपि हि अधिकारादिवसेन लब्भमानेहि पदन्तरेहि अनुसन्धानं कत्वाव अत्थसम्पटिपत्ति होती ति वाक्यमेव अत्थं ब्यञ्जयती ति।

पकारतो वाक्यविभागो **आकारो**। "तत्थ कतमो छन्दो ? यो छन्दो छन्दिकता
B 330 कत्तुकम्यता" ति एवमादीसु कथितस्सेव वाक्यस्स अनेकविधेन विभागकरणं आकारो नाम। आकाराभिहितं निब्बचनं **निरुत्ति**। "फस्सो, वेदना" ति एवमादीसु आकारेन कथितं "फुसती ति फस्सो, वेदयती ति वेदना" ति नीहरित्वा वित्थारवचनं निरुत्ति नाम। "निब्बानं मग्गति, निब्बानत्थिकेहि वा मग्गीयति, किलेसे वा मारेन्तो गच्छती ति मग्गो" ति आदिना निब्बचनवित्थारो निरवसेसदेसनत्ता **निद्देसो**। अथ वा वेदयती ति वेदना ति निब्बचनलद्धपदेसु सुखदुक्खअदुक्खमसुखासु सुखयती ति सुखा, दुक्खयती ति दुक्खा, नेव दुक्खयति न सुखयती ति अदुक्खमसुखा ति अत्थवित्थारो निरवसेसेन

कथितत्ता **निद्देसो** नाम। एतेसं अक्खरादीनं ब्यञ्जनपदानं सम्पत्तिया सम्पन्नताय **सब्यञ्जनं**।

एवं पनस्स अत्थपदसमायोगो ब्यञ्जनपदसम्पत्ति च वेदितब्बा। तत्थ भगवा अक्खरेहि सङ्कासेति। पदेहि पकासेति। ब्यञ्जनेहि विवरति, आकारेहि विभजति, निरुत्तीहि उत्तानिं करोति, निद्देसेहि पञ्ञपेति। तथा हि पदावयवग्गहणमुखेन पदग्गहणं, गहितेन च पदेन पदत्थावबोधो गहितपुब्बसङ्केतस्स होती ति भगवा अक्खरेहि सङ्कासेति। यस्मा पन अक्खरेहि सङ्खित्तेन दीपियमानो अत्थो पदपरियोसाने वाक्यस्स अपरियोसितत्ता पदेन पठमं पकासितो दीपितो होति, तस्मा पदेहि पकासेति। वाक्यपरियोसाने पन सो अत्थो विवरितो विवटो कतो होती ति ब्यञ्जनेहि विवरति। यस्मा च पकारेहि वाक्यभेदे कते तदत्थो विभत्तो नाम होति, तस्मा आकारेहि विभजति। तथा वाक्यावयवानं पच्चेकं निब्बचनविभागे कते सो अत्थो पाकटो होती ति निरुत्तीहि उत्तानिं करोति। कतनिब्बचनेहि पन वाक्यावयवेहि वित्थारवसेन निरवसेसतो देसितेहि वेनेय्यानं चित्तपरितोसनं बुद्धिनिसानञ्च कतं होती ति निद्देसेहि पञ्ञपेति। अपि च भगवा अक्खरेहि उग्घटेत्वा पदेहि विनेति उग्घटितञ्ञुं, ब्यञ्जनेहि विपञ्चेत्वा आकारेहि विनेति विपञ्चितञ्ञुं, निरुत्तीहि नेत्वा निद्देसेहि विनेति नेय्यं। एवञ्चायं धम्मो उग्घटियमानो उग्घटितञ्ञुं विनेति, विपञ्चियमानो विपञ्चितञ्ञुं, नीयमानो नेय्यं। तत्थ उग्घटना आदि, विपञ्चना मज्झे, नयनं अन्ते। एवं तीसु कालेसु तिधा देसितो दोसत्तयविधमनो गुणत्तयावहो तिविधविनेय्यविनयनो ति एवम्पि तिविधकल्याणोयं धम्मो अत्थब्यञ्जनपारिपूरिया सात्थो सब्यञ्जनो ति वेदितब्बो। वुत्तञ्हेतं **नेत्तिपकरणे**[1] — B 331

"तत्थ भगवा अक्खरेहि सङ्कासेति, पदेहि पकासेति, ब्यञ्जनेहि विवरति, आकारेहि विभजति, निरुत्तीहि उत्तानिं करोति, निद्देसेहि पञ्ञपेति। तत्थ भगवा अक्खरेहि च पदेहि च उग्घटेति, ब्यञ्जनेहि च आकारेहि च विपञ्चेति, निरुत्तीहि च निद्देसेहि च वित्थारेति। तत्थ उग्घटना आदि, विपञ्चना मज्झे, वित्थारना परियोसानं। सोयं धम्मविनयो उग्घटियन्तो उग्घटितञ्ञुं पुग्गलं विनेति, तेन नं आहु आदिकल्याणो ति। विपञ्चियन्तो विपञ्चितञ्ञुं पुग्गलं विनेति, तेन नं आहु मज्झे कल्याणो ति। वित्थारियन्तो नेय्यं पुग्गलं विनेति, तेन नं आहु परियोसानकल्याणो ती" ति।

अत्थगम्भीरता ति आदीसु **अत्थो** नाम तन्ति अत्थो। **धम्मो** तन्ति। **पटिवेधो** तन्तिया तन्ति अत्थस्स च यथाभूतावबोधो। **देसना** नाम मनसा ववत्थापिताय तन्तिया देसना। ते पनेते अत्थादयो यस्मा ससादीहि विय महासमुद्दो मन्दबुद्धीहि दुक्खोगाहा अलब्भनेय्यपतिट्ठा च, तस्मा **गम्भीरा**। अथ वा **अत्थो** नाम हेतुफलं। **धम्मो** हेतु। **देसना** पञ्ञत्ति, यथाधम्मं धम्माभिलापो। अनुलोमपटिलोमसङ्खेपवित्थारादिवसेन वा

---

१. खु० १०-९ पिट्ठे।

कथनं। **पटिवेधो** अभिसमयो, अत्थानुरूपं धम्मेसु, धम्मानुरूपं अत्थेसु, पञ्ञत्तिपथानुरूपं पञ्ञत्तीसु अवबोधो। तेसं तेसं वा धम्मानं पटिविज्झितब्बो लक्खणसङ्खातो अविपरीतसभावो। तेपि चेते अत्थादयो यस्मा अनुपचितकुसलसम्भारेहि दुप्पञ्ञेहि ससादीहि विय महासमुद्दो दुक्खोगाहा अलब्भनेय्यपतिट्ठा च, तस्मा **गम्भीरा**। तेसु पटिवेधस्सपि अत्थसन्निस्सितत्ता वुत्तं "**अत्थगम्भीरतापटिवेधगम्भीरता हि सात्थं**" ति अत्थगुणदीपनतो। तासं धम्मदेसनानं ब्यञ्जनसन्निस्सितत्ता वुत्तं "**धम्मगम्भीरतादेसनागम्भीरताहि सब्यञ्जनं**" ति तासं ब्यञ्जनसम्पत्तिदीपनतो अत्थेसु। पभेदगतं ञाणं अत्थपटिसम्भिदा, अत्थधम्मनिरुत्तिपटिसम्भिदासु पभेदगतं ञाणं पटिभानपटिसम्भिदा ति इमिस्सापि पटिसम्भिदाय अत्थविसयत्ता आह "**अत्थपटिभानपटिसम्भिदा-**
B 332 **विसयतो सात्थं**" ति अत्थसम्पत्तिया असति तदभावतो। **धम्मो** ति तन्ति। **निरुत्ती** ति तन्तिपादानं निद्धारेत्वा वचनं। तत्थ पभेदगतानि ञाणानि धम्मनिरुत्तिपटिसम्भिदा ति आह "**धम्मनिरुत्तिपटिसम्भिदाविसयतो सब्यञ्जनं**" ति असति ब्यञ्जनसम्पत्तिया तदभावतो।

सरिक्खकजनप्पसादकं ति एत्थ **इति**—सद्दो हेतु अत्थो। यस्मा सरिक्खकजनानं किं कुसलगवेसीनं पसादावहं, तस्मा **सात्थं**। अत्थसम्पन्नं ति फलेन हेतुनो अनुमानं नदीपूरेन विय उपरि वुट्ठिपवत्तिया। सात्थकता पनस्स **पण्डितवेदनीयताय**। सा परमगम्भीरसण्हसुखुमभावतो वेदितब्बो। वुत्तञ्हेतं "गम्भीरो दुद्दसो" ति आदि। **लोकियजनप्पसादकं ति सब्यञ्जनं** ति यस्मा लोकियजनस्स पसादावहं, तस्मा **सब्यञ्जनं**। लोकियजनो हि ब्यञ्जनसम्पत्तिया तुस्सति। इधापि फलेन हेतुनो अनुमानं। सब्यञ्जनता पनस्स **सद्धेय्यताय**, सा आदिकल्याणादिभावतो वेदितब्बो। अथ वा **पण्डितवेदनीयतो सात्थं** ति पञ्ञापदट्ठानताय अत्थसम्पन्नतं आह, ततो **सरिक्खकजनप्पसादकं सद्धेय्यतो सब्यञ्जनं** ति सद्धापदट्ठानताय ब्यञ्जनसम्पन्नतं, ततो लोकियजनप्पसादकं ति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो। **गम्भीराधिप्पायतो सात्थं** ति अधिप्पायतो अगाधापारताय[1] अत्थ सम्पन्नं अञ्ञथा तदभावतो। **उत्तानपदतो सब्यञ्जनं** ति सुबोधसद्दकताय ब्यञ्जनसम्पन्नं परमगम्भीरस्सपि अत्थस्स विनेय्यानं सुविञ्ञेय्यभावापादनतो। सब्बोपेस अत्थसम्पत्तिया सात्थं, ब्यञ्जनसम्पत्तिया सब्यञ्जनं ति सब्बपठमं वुत्तस्सेव अत्थद्वयस्स पपञ्चो ति दट्ठब्बो। तथा चेव तत्थ तत्थ संवण्णितं। तथा हेत्थ विकप्पस्स समुच्चयस्स वा अग्गहणं। **उपनेतब्बस्स अभावतो** ति पक्खिपितब्बस्स वोदानत्थस्स अवुत्तस्स अभावतो। **केवल** सद्दो सकलाधिवचनं ति आह "**सकलपरिपुण्णभावेना**" ति, सब्बभागेहि परिपुण्णताया ति अत्थो। **अपनेतब्बस्सा** ति संकिलेसधम्मस्स।

ब्रह्मचरियं पकासेतो ति एत्थ पन अयं **ब्रह्मचरिय**-सद्दो दाने वेय्यावच्चे पञ्चसिक्खापदसीले अप्पमञ्ञासु मेथुनविरतियं सदारसन्तोसे वीरिये उपोसथङ्गेसु अरियमग्गे सासने ति इमेसु अत्थेसु दिस्सति।

---

१. अगाधपादताय (क)।

किं ते वतं किं पन ब्रह्मचरियं, B 333
किस्स सुचिण्णस्स अयं विपाको।
इद्धी जुती बलवीरियूपपत्ति,
इदञ्च ते नाग महाविमानं॥

अहञ्च भरिया च मनुस्सलोके,
सद्धा उभो दानपती अहुम्हा।
ओपानभूतं मे घरं तदा' सि,
सन्तप्पिता समणब्राह्मणा च॥
तं मे वतं तं पन ब्रह्मचरियं,
तस्स सुचिण्णस्स अयं विपाको।
इद्धी जुती बलवीरियूपपत्ति,
इदञ्च मे धीर महाविमानं" ति—

इमस्मिञ्हि **पुण्णकजातके**[१] दानं "ब्रह्मचरियं" ति वुत्तं।

"केन पाणि कामददो, केन पाणि मधुस्सवो।
केन ते ब्रह्मचरियेन, पुञ्ञं पाणिम्हि इज्झति।
तेन पाणि कामददो, तेन पाणि मधुस्सवो।
तेन मे ब्रह्मचरियेन, पुञ्ञं पाणिम्हि इज्झती" ति—

इमस्मिं **अङ्कुरपेतवत्थुम्हि**[२] वेय्यावच्चं "ब्रह्मचरियं" ति वुत्तं। "एवं खो तं भिक्खवे तित्तिरियं नाम ब्रह्मचरियं अहोसी" ति[३] इमस्मिं **तित्तिरजातके** पञ्चसिक्खापदसीलं "ब्रह्मचरियं" ति वुत्तं। "तं खो पन मे पञ्चसिख ब्रह्मचरियं नेव निब्बिदाय न विरागाय न निरोधाय यावदेव ब्रह्मलोकूपपत्तिया" ति इमस्मिं **महागोविन्द सुत्ते**[४] चतस्सो अप्पमञ्ञायो ब्रह्मचरियं" ति वुत्ता। "परे अब्रह्मचारी भविस्सन्ति, मयमेत्थ ब्रह्मचारी भविस्सामा" ति इमस्मिं **सल्लेखसुत्ते**[५] मेथुनविरति "ब्रह्मचरियं ति वुत्ता।

"मयञ्च भरिया नातिक्कमाम,
अम्हे च भरिया नातिक्कमन्ति। B 334
अञ्ञत्र ताहि ब्रह्मचरियं चराम,
तस्मा हि अम्हं दहरा न मीयरे" ति—

१. खु० ६-३०३,३०४ पिट्ठे विधुरजातके। २. खु० २-१५६ पिट्ठे।
३. वि० ४-३११ पिट्ठे। ४. दी० २-२०१ पिट्ठे।
५. म० १-५१ पिट्ठे।

महाधम्मपालजातके[1] सदारसन्तोसो "ब्रह्मचरियं" ति वुत्तो। "अभिजानामि खो पनाहं सारिपुत्त चतुरङ्गसमन्नागतं ब्रह्मचरियं चरिता, तपस्सी सुदं होमी" ति **लोमहंसनसुत्ते**[2] वीरियं "ब्रह्मचरियं" ति वुत्तं।

"हीनेन ब्रह्मचरियेन, खत्तिये उपपज्जति।
मज्झिमेन च देवत्तं, उत्तमेन विसुज्झती" ति—

एवं **निमिजातके**[3] अत्तदमनवसेन कतो अट्ठङ्गिको उपोसथो "ब्रह्मचरियं" ति वुत्तो। "इदं खो पन मे पञ्चसिख ब्रह्मचरियं एकन्तनिब्बिदाय विरागाय,····पे०····अयमेव अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो" ति **महागोविन्दसुत्तस्मियेव**[4] अरियमग्गो "ब्रह्मचरियं" ति वुत्तो। "तयिदं ब्रह्मचरियं इद्धञ्चेव फीतञ्च वित्थारिकं बाहुजञ्ञं पुथुभूतं यावदेव मनुस्सेहि सुप्पकासित" ति **पासादिकसुत्ते**[5] सिक्खत्तयसङ्गहं सकलसासनं "ब्रह्मचरियं" ति वुत्तं। इमस्मिम्पि ठाने इदमेव "ब्रह्मचरियं" ति अधिप्पेतं ति आह "**सिक्खत्तयपरिग्गहितत्ता** ति आदि। **सेट्ठेहि** ति बुद्धादीहि सेट्ठेहि। सेट्ठन ब्रह्मभूतं वा चरियं **ब्रह्मचरियं**।

सनिदानं ति हेट्ठा वुत्तलक्खणेन निदानेन सनिदानं। **सउप्पत्तिकं** ति सअट्ठुप्पत्तिकं। **वेनेय्यानं अनुरूपतो** ति वेनेय्यानं चरियादिअनुरूपतो। **अत्थस्सा** ति देसियमानस्स सीलादिअत्थस्स। **हेतुदाहरणयुत्ततो** ति "तं किस्स हेतु सेय्यथापि भिक्खवे" ति च आदिना तत्थ तत्थ हेतुपमग्गहणेन हेतुदाहरणेहि युत्ततो। **सद्धापटिलाभेना** ति "ते तं धम्मं सुत्वा तथागते सद्धं पटिलभन्ती" ति आदिना वुत्तसद्धापटिलाभेन। **पटिपत्तिया** ति सीलविसुद्धियादिसम्मापटिपत्तिया, पटिपत्तिनिमित्तं ति अत्थो। **अधिगमब्यत्तितो** ति सच्चप्पटिवेधेन अधिगमवेय्यत्तियसब्भावतो सात्थं कपिलमतादि विय तुच्छं निरत्थकं
B 335 अहुत्वा अत्थसम्पन्नं ति कत्वा। **परियत्तिया** ति परियत्तिधम्मपरिचयेन। **आगमब्यत्तितो** ति दुरक्खातधम्मेसु परिचयं करोन्तस्स विय सम्मोहं अजनेत्वा[5] बाहुसच्चवेय्यत्तियसब्भावतो **सब्यञ्जनं**। ब्यञ्जनसम्पत्तिया हि सति आगमब्यत्ती ति। **सीलादिपञ्चधम्मक्खन्धयुत्ततो** ति सीलादीहि पञ्चहि धम्मकोट्ठासेहि अविरहितत्ता। **केवलपरिपुण्णं** ति अनवसेसेन समन्ततो पुण्णं पूरितं। **निरुपक्किलेसतो** ति दिट्ठिमानादिउपक्किलेसाभावतो। **नित्थरणत्थाया** ति वट्टदुक्खतो निस्सरणाय। **लोकामिसनिरपेक्खतो** ति कथञ्चिपि तण्हासन्निस्सयस्स अनिस्सयतो **परिसुद्धं**। इदं वुत्तं होति—यो "इमं धम्मदेसनं निस्साय लाभं वा सक्कारं वा लभिस्सामी" ति देसेति, तस्स अपरिसुद्धा देसना होति। भगवा पन लोकामिसनिरपेक्खो हितफरणेन मेत्ताभावनाय मुदुहदयो उल्लुम्पनसभावसण्ठितेन चित्तेन देसेति, तस्मा तस्स देसना परिसुद्धा ति।

---

१. खु० ५-२८४ पिट्ठे। २. म० १-११० पिट्ठे महासीहनादसुत्ते।
३. खु० ६-१८५ पिट्ठे। ४. दी० २-२०१ पिट्ठे।
५. दी० ३-१०२ पिट्ठे। ५. अपनेत्वा (सी०)।

साधू ति अयं सद्दो "साधु मे भन्ते भगवा सङ्खित्तेन धम्मं देसेतू" ति आदीसु आयाचने दिस्सति। "साधु भन्ते ति खो सो भिक्खु भगवतो भासितं अभिनन्दित्वा अनुमोदित्वा" ति आदीसु[1] सम्पटिच्छने[2]। "साधु साधु सारिपुत्ता" ति आदीसु[3] सम्पहंसने। "तेन हि ब्राह्मण साधुकं सुणोही" ति आदीसु[4] दळ्हीकम्मे आणत्तियञ्च दिस्सति।

"साधु धम्मरुचि राजा, साधु पञ्ञाणवा नरो।
साधु मित्तानमद्दुब्भो, पापस्साकरणं सुखं" ति—

आदीसु[5] सुन्दरे। इधापि सुन्दरेयेव दट्ठब्बो ति आह **"साधु खो पना ति सुन्दरं खो पना"** ति। तत्थ **सुन्दरं** ति भद्दकं। भद्दकता च पस्सन्तस्स हितसुखावहभावेना ति आह **"अत्थावहं सुखावहं"** ति। तत्थ **अत्थावहं** ति दिट्ठधम्मिकसम्परायिकपरमत्थसञ्ञित-हितावहं। **सुखावहं** ति यथावुत्ततिविधसुखावहं। **तथारूपानं** ति तादिसानं। यादिसेहि पन गुणेहि भगवा समन्नागतो, तेहि चतुप्पमाणिकस्स लोकस्स सब्बकाले पि अच्चन्ताय पसादनीयो तेसं यथाभूत सभावत्ता ति दस्सेन्तो "यथारूपो" ति आदिमाह। तत्थ **यथाभुच्च**······**पे०**·······**अरहतं** ति इमिना धम्मप्पमाणानं लूखप्पमाणानञ्च सत्तानं भगवतो पसादावहतं दस्सेति, तं दस्सनेन च इतरेसम्पि रूपप्पमाणघोसप्पमाणानं B 336
पसादावहता दस्सिता होती ति दट्ठब्बं तदविनाभावतो। ब्रह्मचरियं पकासेती ति कित्तिसद्दो अब्भुग्गतो ति एवमेत्थ सम्बन्धो ति आह **"दस्सनमत्तम्पि साधु होती ति एवमज्झासयं कत्वा"** ति आदि। तत्थ **दस्सनमत्तम्पि साधु होती** ति एत्थ **कोसिय-सकुणवत्थु** कथेतब्बं।

२॥ **येन वा कारणेना** ति हेतुम्हि इदं करणवचनं। हेतु अत्थो हि किरियाकारणं, न करणं विय किरियत्थो,[6] तस्मा नानप्पकारगुणविसेसाधिगमत्ता इध उपसङ्कम-नकिरिया ति "अन्नेन वसती" ति आदीसु विय हेतु अत्थमेवेतं करणवचनं युत्तं, न करणत्थं तस्स अयुज्जमानत्ता ति वुत्तं "येन वा कारणेना" ति। अविभागतो हि सततप्प-वत्तनिरतिसयसादुविपुलामतरससद्धम्मफलतायस्स सादुफलनिच्चफलितमहारुक्खेन भगवा उपमितो। सादुफलूपभोगाधिप्पायग्गहणेनेव हि महारुक्खस्स सादुफलता गहिता ति। **उपसङ्कमी** ति उपसङ्कमन्तो[7]। सम्पत्तकामताय हि किञ्चि ठानं गच्छन्तो तं तं पदेसातिक्कमनेन उपसङ्कमि उपसङ्कमन्तो ति[8] वत्तब्बतं लभति। तेनाह **"गतो ति वुत्तं**

---

१. सं० २-२९४ पिट्ठे। २. म० ३-६६ पिट्ठे।
३. दी० ३-२२६-पिट्ठे। ४. अ० २-१९७-पिट्ठे।
५. खु० ६-४५ पिट्ठे।
६. किरियत्ता (सी०, स्या०) मूलपण्णासके भयभेरवसुत्तटीका पस्सितब्बा।
७. उपसङ्कन्तो (सी०)। ८. उपसङ्कन्तो ति (सी०)।

होतो" ति, उपगतो ति अत्थो। **उपसङ्कमित्वा** ति पुब्बकालकिरियानिद्देसो ति आह "**उपसङ्कमनपरियोसानदीपनं**" ति। **ततो** ति यं ठानं पत्तो उपसङ्कमी ति वुत्तो, ततो उपगतट्ठानतो। **आसन्नतरं ठानं** ति पञ्हं वा पुच्छितुं धम्मं वा सोतुं सक्कुणेय्यट्ठानं।

यथा खमनीयादीनि पुच्छन्तो ति यथा भगवा "कच्चि ते ब्राह्मण खमनीयं, कच्चि यापनीयं" ति आदिना खमनीयादीनि पुच्छन्तो तेन ब्राह्मणेन सद्धिं समप्पवत्तमोदो अहोसि। पुब्बभासिताय तदनुकरणेन एवं सोपि ब्राह्मणो भगवता सद्धिं समप्पवत्तमोदो अहोसी ति योजना। तं पन समप्पवत्तमोदतं उपमाय दस्सेतुं "**सीतोदकं विय**" ति आदि वुत्तं। **सम्मोदितं** ति संसन्दितं। **एकीभावं** ति सम्मोदनकिरियाय समानतं एकरूपतं।
B 337 **खमनीयं** ति "इदं चतुचक्कं नवद्वारं सरीरयन्तं दुक्खबहुलताय सभावतो दुस्सहं, कच्चि खमितुं सक्कुणेय्यं ति पुच्छति। **यापनीयं** ति पच्चयायत्तवुत्तिकं चिरप्पबन्धसङ्खाताय यापनाय कच्चि यापेतुं सक्कुणेय्यं। सीसरोगादिआबाधाभावेन **कच्चि अप्पाबाधं**। दुक्खजीविकाभावेन **कच्चि अप्पातङ्कं**। तं तं किच्चकरणे उट्ठानसुखताय **कच्चि लहुट्ठानं**। तदनुरूपबलयोगतो **कच्चि बलं**। सुखविहारसम्भवेन **कच्चि फासुविहारो** अत्थी ति तत्थ तत्थ कच्चिसद्दं योजेत्वा अत्थो वेदितब्बो। बलप्पत्ता पीति **पीति** येव। तरुणपीति **पामोज्जं**। सम्मोदं जनेति करोती ति सम्मोदनिकं, तदेव सम्मोदनीयं ति आह "**सम्मोदजननतो**" ति। सम्मोदितब्बतो सम्मोदनीयं ति इदं पन अत्थं दस्सेन्तो "**सम्मोदितुं युत्तभावतो**" ति आह। **सरितब्बभावतो** ति अनुस्सरितब्बभावतो। "सरणीयं" ति वत्तब्बे दीघं कत्वा "**सारणीयं**" ति वुत्तं। **सुय्यमानसुखतो** ति आपाथमधुरतमाह। **अनुस्सरियमानसुखतो** ति विमद्दरमणीयतं। **ब्यञ्जनपरिसुद्धताया** ति सभावनिरुत्तिभावेन तस्सा कथाय वचनचातुरियमाह। **अत्थपरिसुद्धताया** ति अत्थस्स निरुपक्किलेसतं। **अनेकेहि परियायेही** ति अनेकेहि कारणेहि।

अतिदूरअच्चासन्नपटिक्खेपेन नातिदूरनाच्चासन्नं नाम गहितं, तं पन अवकंसतो उभिन्नं पसारितहत्थासंघट्टनेन दट्ठब्बं। **गीवं पसारेत्वा** ति गीवं परिवत्तनवसेन पसारेत्वा। **मे** ति कत्तु अत्थे सामिवचनं ति आह "**मया सुतं**" ति। **जातिब्राह्मणे** ति जातिया ब्राह्मणे, न बाहितपापताया ति वुत्तं होति। **खण्डिच्चादिभावं आपादिते** ति खण्डितदन्तपलितकेसादिभावं सम्पापिते। **वुड्ढिमरियादप्पत्ते** ति वुड्ढिपरिच्छेदं सम्पत्ते, वुड्ढिपरियन्तप्पत्ते ति वुत्तं होति। **जातिमहल्लकताया** ति उप्पत्तिया महल्लकभावेन। महत्तं लाति गण्हाती ति महल्लको, जातिया महल्लको, न विभवादिना ति जातिमहल्लको। **अद्धानं** ति दीघकालं। कित्तको पन सो ति आह "**द्वे तयो राजपरिवट्टे**" ति, द्विन्नं तिण्णं राजूनं रज्जपसासनपटिपाटियो ति अत्थो। "अद्धगते" ति वत्वा कथं वयोगहणं ओसानवयापेक्खं ति आह "**पच्छिमवयं अनुप्पत्ते**" ति। **पच्छिमो ततियभागो** ति सत्तसट्ठितो पट्ठाय पच्छिमवयो कोट्ठासो।

B 338 दुतिये अत्थविकप्पे **जिण्णे** ति नायं जिण्णता वयोमत्तेन, अथ खो कुलपरिवट्टेन पुराणताया ति आह "**जिण्णे ति पोराणे**" ति आदि। तेन तेसं ब्राह्मणानं कुलवसेन उदितोदितभावमाह। "वयो अनुप्पत्ते" ति इमिना जातिवुड्ढिया वक्खमानत्ता गुण-

वुड्ढिया ततो सतिसयत्ता च "**वुड्ढेति सीलाचारादिगुणवुड्ढियुत्ते**" ति आह। तथा जातिमहल्लकताय पि तेनेव वक्खमानत्ता **महल्लके** ति पदेन विभवमहत्तता योजिता। **मग्गपटिपन्ने** ति ब्राह्मणानं पटिपत्तिविधिं[1] उपगते तं अवोक्कम्म चरणतो। **अन्तिमवयं** ति पच्छिमवयं।

पच्चुट्ठानं नाम आसना वुट्ठानं ति आह "**नासना वुट्ठहती**" ति, निसिन्नासनतो न वुट्ठाती ति अत्थो। एत्थ च जिण्णे......पे०......वयोअनुप्पत्ते ति उपयोगवचनं आसना वुट्ठानकिरियापेक्खं न होति, तस्मा जिण्णे......पे०......वयोअनुप्पत्ते दिस्वा ति अज्झाहारं कत्वा अत्थो वेदितब्बो। अथ वा पच्चुग्गमनकिरियापेक्खं उपयोगवचनं, तस्मा **न पच्चुट्ठेती** ति उट्ठाय पच्चुग्गमनं न करोती ति अत्थो वेदितब्बो। पच्चुग्गमनम्पि हि पच्चुट्ठानं ति वुच्चति। वुत्तञ्हेतं "आचरियं पन दूरतोव दिस्वा पच्चुट्ठाय पच्चुग्गमनकरणं पच्चुट्ठानं नामा" ति। नासना वुट्ठाती ति इमिना पन पच्चुग्गमनाभावस्स उपलक्खणमत्तं दस्सितं ति दट्ठब्बं। **विभावने नाम अत्थे** ति पकतिविभावनसङ्खाते अत्थे, **न अभिवादेति वा** ति न अभिवादेतब्बं ति सल्लक्खेती ति वुत्तं होति।

तं अञ्ञाणं ति "अयं मम अभिवादनादीनि कातुं अरहरूपो न होती" ति अजाननवसेन पवत्तं अञ्ञाणं। **ओलोकेन्तो** ति "दुक्खं खो अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, किं नु खो अहं समणं वा ब्राह्मणं वा सक्करेय्यं, गरुं करेय्यं" ति आदिसुत्तवसेन[2] ञाणचक्खुना ओलोकेन्तो। **निपच्चकारारहं** ति पणिपातारहं। **सम्पतिजातो** ति मुहुत्तजातो, जातसमनन्तरमेवा ति वुत्तं होति। उत्तरेन मुखो ति **उत्तराभिमुखो**, उत्तरदिसाभिमुखो ति वुत्तं होति। **सत्तपदवीतिहारेन गन्त्वा सकलं दससहस्सिलोकधातुं ओलोकेसि** ति इदं "धम्मता एसा भिक्खवे सम्पतिजातो बोधिसत्तो समेहि पादेहि पतिट्ठहित्वा उत्तराभिमुखो सत्तपदवीतिहारेन गच्छति, सेतम्हि छत्ते अनुधारियमाने सब्बा दिसा विलोकेति, आसभिञ्च वाचं भासती" ति एवं पाळियं[3] B 339
सत्तपदवीतिहारूपरिट्ठितस्स विय सब्बदिसानुविलोकनस्स कथितत्ता वुत्तं, न पनेतं एवं दट्ठब्बं, सत्तपदवीतिहारतो पगेव दिसाविलोकनस्स कतत्ता। महासत्तो हि मनुस्सानं हत्थतो मुच्चित्वा पुरत्थिमदिसं ओलोकेसि, अनेकानि चक्कवाळसहस्सानि एकङ्गणानि अहेसुं। तत्थ देवमनुस्सा गन्धमालादीहि पूजयमाना "महापुरिस इध तुम्हेहि सदिसो पि नत्थि, कुतो उत्तरितरो" ति आहंसु। एवं चतस्सो दिसा चतस्सो अनुदिसा हेट्ठा उपरी ति दस पि दिसा अनुविलोकेत्वा अत्तनो सदिसं अदिस्वा "अयं उत्तरा दिसा" ति सत्तपदवीतिहारेन अगमासी ति वेदितब्बो। **ओलोकेसि** ति मम पुञ्ञानुभावेन लोकविवरणपाटिहारिये जाते पञ्ञायमानं दससहस्सिलोकधातुं मंसचक्खुनाव ओलोकेसि ति अत्थो।

---

१. पटिपत्तिवीथिं (स्या०)। २. अं० १-३२८ पिट्ठे।

३. दी० २-१३ पिट्ठे।

महापुरिसो ति जातिगोत्तकुलप्पदेसादिवसेन महन्तपुरिसो। **अग्गो** ति गुणेहि सब्बपधानो। **जेट्ठो** ति गुणवसेनेव सब्बेसं वुड्ढतमो, गुणेहि महल्लकतमो ति वुत्तं होति। **सेट्ठो** ति गुणवसेनेव सब्बेसं पसत्थतमो। अत्थतो पन पच्छिमानि द्वे पुरिमस्सेव वेवचनानी ति वेदितब्बं। **तया** ति निस्सक्के करणवचनं। **उत्तरितरो** ति अधिकतरो। **पतिमानेसी** ति पूजेसि। **आसभिं** ति उत्तमं। **मय्हं अभिवादनादिरहो पुग्गलो** ति मय्हं अभिवादनादिकिरियाय अरहो अनुच्छविको पुग्गलो। निच्चसापेक्खताय पनेत्थ समासो दट्ठब्बो। **तथागता** ति[1] तथागततो, तथागतस्स सन्तिका ति वुत्तं होति। **एवरूपं** ति अभिवादनादिसभावं। **परिपाकसिथिलबन्धनं** ति परिपाकेन सिथिलबन्धनं।

३॥ **तं वचनं** ति "नाहं तं ब्राह्मणा" ति आदिवचनं। "नाहं अरसरूपो। मादिसा वा अरसरूपा" ति वुत्ते ब्राह्मणो थद्धो भवेय्य। तेन वुत्तं "**चित्तमुदुभावजननत्थं**" ति। **अयञ्हि परियायसद्दो देसनावारकारणेसु वत्तती** ति एत्थ परियाये ति देसेतब्बमत्थं
B 340 अवगमेति बोधेती ति **परियायो**, देसना। परियायति अपरापरं परिवत्तेती ति **परियायो**, वारो। परियायति अत्तनो फलं परिग्गहेत्वा वत्तति, तस्स वा कारणभाव गच्छती ति **परियायो**। कारणं ति एवं परियायसद्दस्स देसनावारकारणेसु पवत्ति वेदितब्बा। **अञ्ञाय सण्ठहेय्या** ति अरहत्ते पतिट्ठहेय्य। **कतमो पन सो** ति परियाया-पेक्खो पुल्लिङ्गनिद्देसो, कतमो सो परियायो ति अत्थो। **जातिवसेना** ति खत्तियादि-जातिवसेन। **उपपत्तिवसेना** ति देवेसु उपपत्तिवसेन। **सेट्ठसम्मतानम्पी** ति अपि-सद्देन पगेव असेट्ठसम्मतानं ति दस्सेति। **अभिनन्दन्तानं** ति सप्पीतिकतण्हावसेन पमोदमानानं। **रज्जन्तानं** ति बलवरागवसेन रज्जन्तानं। रूपादिपरिभोगेन उप्पन्नतण्हायुत्तसोमनस्स-वेदना रूपतो निब्बत्तित्वा हदयतप्पनतो अम्बरसादयो विय "रूपरसा" ति वुच्चन्ति। **आविञ्छन्ती** ति आकड्ढन्ति। **वत्थारम्मणादिसामग्गियं** ति वत्थुआरम्मणादिकारण-सामग्गियं। **अनुक्खिपन्तो** ति अत्तुक्कंसनवसेन कथिते ब्राह्मणस्स असप्पायभावतो अत्तानं अनुक्खिपन्तो अनुक्कंसेन्तो।

एतस्मिं पनत्थे करणे सामिवचनं ति "जहिता" ति एतस्मिं अत्थे। तथागतस्सा ति करणे सामिवचनं, तथागतेन जहिता ति अत्थो। **मूलं** ति भवमूलं। "तालवत्थु-वत्थुकता" ति **वत्तब्बे** "ओट्ठमुखो" ति आदीसु विय मज्झेपदलोपं कत्वा अकारञ्च दीघं कत्वा "तालावत्थुकता" ति वुत्तं ति आह "**तालवत्थु विय नेसं वत्थु कतं ति तालावत्थुकता**" ति। तत्थ तालस्स वत्थु तालवत्थु। यथा आरामस्स वत्थुभूत पुब्बो पदेसो आरामस्स अभावे "आरामवत्थू" ति वुच्चति। एवं तालस्स पतिट्ठितोकासो समूलं उद्धरिते ताले पदेसमत्ते ठिते तालस्स वत्थुभूतपुब्बत्ता "तालवत्थू" ति वुच्चति। **नेसं** ति रूपरसादीनं। कथं पन तालवत्थु विय नेसं वत्थु

---

१. तथागते ति (क०)

कतं ति आह "यथा ही" ति आदि। रूपादिपरिभोगेन उप्पन्नतण्हायुत्तसोमनस्सवेदना-सङ्खातरूपरसादीनं चित्तसन्तानस्स अधिट्ठानभावतो वुत्तं **"तेसं पुब्बे उप्पन्नपुब्बभावेन वत्थुमत्ते चित्तसन्ताने कते"** ति। तत्थ **पुब्बे** ति पुरे, सरागकाले ति वुत्तं होति। **तालावत्थुकता ति वुच्चन्तो** ति तालवत्थु विय अत्तनो वत्थुस्स कतत्ता रूपरसादयो "तालावत्थुकता" ति वुच्चन्ति। एतेन पहीनकिलेसानं पन उप्पत्तिया अभावो दस्सितो।

अविरुळ्हिधम्मत्ता ति अविरुळ्हिसभावताय। मत्थकच्छिन्नो तालो पत्तफलादीनं B 341
अवत्थुभूतो तालावत्थू ति आह **"मत्थकच्छिन्नतालो विय कता"** ति। एतेन "तालावत्थु विय कता ति तालावत्थुकता" ति अयं विग्गहो दस्सितो। एत्थ पन अवत्थुभूतो तालो विय कता ति अवत्थुतालाकता ति वत्तब्बे विसेसनस्स पदस्स परनिपातं कत्वा "तालावत्थुकता" ति वुत्तं ति दट्ठब्बं। इमिना पनत्थेन इदं दस्सेति—रूपरसादिवचनेन विपाकधम्मधम्मा हुत्वा पुब्बे उप्पन्ना कुसलाकुसलधम्मा गहिता, ते उप्पन्ना पि मत्थकसदिसानं तण्हाविज्जानं मग्गसत्थेन छिन्नत्ता आयतिं तालपत्तसदिसे विपाकक्खन्धे निब्बत्तेतुं असमत्था जाता, तस्मा तालावत्थु विय कता ति तालावत्थुकता रूपरसादयो ति। इमस्मिञ्हि अत्थे "अभिनन्दन्तानं" ति इमिना पदेन कुसलसोमनस्सम्पि सङ्गहितं वदन्ति।

अनुभावं कता ति एत्थ अनु-सद्दो पच्छा-सद्देन समानत्थो ति आह **"यथा नेसं पच्छाभावो न होतो"** ति आदि। **अनु अभावं गता** ति पच्छा अनुप्पत्तिधम्मतावसेन अभावं गता विनासमुपगता, पहीना ति अत्थो। "इमा अनच्छरिया गाथायो पटिभंसू"[१] ति एत्थ अनच्छरियसद्दं उदाहरणवसेन दस्सेन्तो आह **"यथा अनुअच्छरिया अनच्छरिया"** ति। तत्थ **अनु अच्छरिया** ति सवनकाले उपरूपरि विम्हयकरा ति अत्थो।

यञ्च खो त्वं वदेसि, सो परियायो न होती ति यं वन्दनादिसामग्गिरसाभाव-सङ्खातं कारणं अरसरूपताय वदेसि, तं कारणं न होति, न विज्जती ति अत्थो। ननु च ब्राह्मणो यं वन्दनादिसामग्गिरसाभावसङ्खातं परियायं सन्धाय "अरसरूपो भवं गोतमो" ति आह, सो परियायो नत्थी ति वुत्ते वन्दनादीनि भगवा करोती ति आपज्जती ति इमं अनिट्ठप्पसङ्गं दस्सेन्तो आह **"कस्मा पन भगवा एवमाहा"** ति आदि।

४॥ **सब्बपरियायेसू** ति सब्बवारेसु। **सन्धाय भासितमत्तं** ति[२] यं सन्धाय ब्राह्मणो "निब्भोगो भवं गोतमो" ति आदिमाह, भगवा च यं सन्धाय निब्भोगतादिं अत्तनि अनुजानाति, तं सन्धाय भासितमत्तं। **छन्दरागपरिभोगो** ति छन्दरागवसेन परिभोगो। **अपरं परियायं** ति अञ्ञं कारणं। B 342

५॥ **कुलसमुदाचारकम्मं** ति कुलाचारसङ्खातं कम्मं, कुलचारित्तं ति वुत्तं होति। अकिरियं ति अकरणभावं। दुट्ठु चरितं दुच्चरितं, कायद्वारे बाहुल्लवुत्तितो

१. पि० ३-१, ७, ८ पिट्ठेसु। २. भासितमत्थं ति (सी०, स्या०)

कायतो पवत्तं दुच्चरितं ति **कायदुच्चरितं**। तं सरूपतो दस्सेन्तो "**तत्थ चा**" ति आदिमाह। **पाणातिपात अदिन्नादानमिच्छाचारचेतना वेदितब्बा** ति एत्थ[1] **पाणो** ति परमत्थतो जीवितिन्द्रियं, वोहारतो सत्तो। जीवितिन्द्रियञ्चेत्थ रूपारूपवसेन वेदितब्बं। रूपजीवितिन्द्रिये हि विकोपिते इतरम्पि तं सम्बन्धताय विनस्सति। **सत्तो** ति च खन्धसन्तानो गहेतब्बो। तत्थ हि सत्तपञ्ञत्ति। सरसेनेव पतनसभावस्स अन्तरा एव अतीव पातनं अतिपातो, सणिकं पतितुं अदत्वा सीघं पातनं ति अत्थो। अतिक्कम्म वा सत्थादीहि अभिभवित्वा पातनं अतिपातो, पाणस्स अतिपातो **पाणातिपातो**, पाणवधो पाणघातो ति वुत्तं होति। अत्थतो पन पाणे पाणसञ्ञिनो परस्स जीवितिन्द्रियुपच्छेदकपयोगसमुट्ठापिका कायवचीद्वारानमञ्ञतरप्पवत्ता वधकचेतना। याय हि चेतनाय वत्तमानस्स जीवितिन्द्रियस्स निस्सयभूतेसु महाभूतेसु उपक्कमकरण हेतुकमहाभूतपच्चया उप्पज्जनकमहाभूता निप्पजिस्सन्ति। सा तादिसप्पयोगसमुट्ठापिका चेतना पाणातिपातो। लद्धुपक्कमानि हि भूतानि इतरभूतानि विय न विसदानी ति समानजातियानं कारणानि न होन्ति।

एत्थाह—खणे खणे निरुज्झनसभावेसु सङ्खारेसु को हन्ता, को वा हञ्ञति, यदि चित्तचेतसिकसन्तानो, सो अरूपताय न छेदनभेदनादिवसेन विकोपनसमत्थो, न पि विकोपनीयो। अथ रूपसन्तानो, सो अचेतनताय कट्ठकलिङ्गरूपमो ति न तत्थ छेदनादिना पाणातिपातो लब्भति यथा मतसरीरे। पयोगो पि पाणातिपातस्स पहरणप्पहारादि अतीतेसु वा सङ्खारेसु भवेय्य अनागतेसु वा पच्चुप्पन्नेसु वा, तत्थ न ताव अतीतानागतेसु सम्भवति तेसं अभावतो, पच्चुप्पन्नेसु च सङ्खारानं खणिकत्ता
B 343 सरसेनेव निरुज्झनसभावताय विनासाभिमुखेसु निप्पयोजनो पयोगो सिया, विनासस्स च कारणरहितत्ता न पहरणप्पहारादिप्पयोगहेतुकं मरणं, निरीहकताय च सङ्खारानं कस्स सो पयोगो, खणिकत्ता वधाधिप्पायसमकालभिज्जनतो कस्स किरिया, परियोसानकालानवट्ठानतो कस्स वा पाणातिपातकम्मबद्धो ति ?[2]

वुच्चते—यथावुत्तवधकचेतनासहितो सङ्खारानं पुञ्जो सत्तसङ्खातो हन्ता। तेन पवत्तितवधप्पयोगनिमित्तं अपगतुस्माविञ्ञाणजीवितिन्द्रियो मतवोहारप्पवत्तिनिबन्धनो यथावुत्तवधप्पयोगकरणे उप्पज्जनारहो रूपारूपधम्मसमूहो हञ्ञति, केवलो वा चित्तचेतसिकसन्तानो। वधप्पयोगाविसयभावे पि तस्स पञ्चवोकारभवे रूपसन्तानाधीनवुत्तिताय रूपसन्ताने परेन पयोजितजीवितिन्द्रियुपच्छेदकपयोगवसेन तन्निब्बत्तिविनिबन्धकविसदिसरूपुप्पत्तिया विहते विच्छेदो होती ति न पाणातिपातस्स असम्भवो, न पि अहेतुको पाणातिपातो, न च पयोगो निप्पयोजनो। पच्चुप्पन्नेसु सङ्खारेसु कतपयोगवसेन तदनन्तरं उप्पज्जनारहस्स सङ्खारकलापस्स तथा अनुप्पत्तितो खणिकानं सङ्खारानं खणिकमरणस्स इध मरणभावेन अनधिप्पेतत्ता सन्ततिमरणस्स च यथावुत्त-

---

१. इतिवुत्तक-ट्ठ–२८७ पिट्ठादीसु पि पस्सितब्बं।
२. पाणातिपातकम्मबन्धोति (सी०, स्या०)।

नयेन सहेतुकभावतो न अहेतुकं मरणं, न च कत्तुरहितो पाणातिपातपयोगो निरीहकेसु पि सङ्खारेसु सन्निहिततामत्तेन उपकारकेसु अत्तनो अत्तनो अनुरूपफलुप्पादनियतेसु कारणेसु कत्तुवोहारसिद्धितो यथा "पदीपो पकासेति, निसाकरोव चन्दिमा" ति। न च केवलस्स वधाधिप्पायसहभुनो चित्तचेतसिककलापस्स पाणातिपातो इच्छितब्बो सन्तानवसेन अवट्ठितस्सेव पटिजाननतो। सन्तानवसेन वत्तमानानञ्च पदीपादीनं अत्थकिरिया दिस्सती ति अत्थेव पाणातिपातेन कम्मबद्धो। अयञ्च विचारो अदिन्नादानादीसु पि यथासम्भवं विभावेतब्बो।

सो[1] च पाणातिपातो गुणविरहितेसु तिरच्छानगतादीसु पाणेसु खुद्दके पाणे अप्पसावज्जो, महन्ते महासावज्जो। कस्मा? पयोगमहन्तताय, पयोगसमत्ते पि वत्थुमहन्तताय। गुणवन्तेसु मनुस्सादीसु अप्पगुणे पाणे अप्पसावज्जो, महागुणे महासावज्जो। B 344
सरीरगुणानं पन समभावे सति पि किलेसानं उपक्कमानञ्च मुदुताय अप्पसावज्जो, तिब्बताय महासावज्जो ति वेदितब्बो।

कायवाचाहि न दिन्नं ति अदिन्नं, परसन्तकं, तस्स आदानं **अदिन्नादानं**। परस्सहरणं थेय्यं, चोरिका ति वुत्तं होति। अत्थतो पन परपरिग्गहे परपरिग्गहितसञ्ञिनो तदादायकउपक्कमसमुट्ठापिका कायवचीद्वारानमञ्ञतरद्वारप्पवत्ता थेय्यचेतना। तं हीने परसन्तके अप्पसावज्जं, पणीते महासावज्जं। कस्मा? वत्थुपणीतताय। वत्थुसमत्ते सति गुणाधिकानं सन्तके वत्थुस्मिं महासावज्जं, तं तं गुणाधिकं उपादाय ततो ततो हीनगुणस्स सन्तके वत्थुस्मिं अप्पसावज्जं।

मिच्छा चरणं **मिच्छाचारो**, मेथुनसमाचारेसु एकन्तनिन्दितो लामकाचारो। सो पन लक्खणतो असद्धम्माधिप्पायेन कायद्वारप्पवत्ता अगमनीयट्ठानवीतिक्कमचेतना। सो पनेस मिच्छाचारो सीलादिगुणविरहिते अगमनीयट्ठाने अप्पसावज्जो, सीलादिगुणसम्पन्ने महासावज्जो। तस्स चत्तारो सम्भारा—अगमनीयवत्थु, तस्मिं सेवनचित्तं, सेवनपयोगो, मग्गेनमग्गप्पटिपत्ति अधिवासनं ति। एको पयोगो साहत्थिको एव।

वचीद्वारे बाहुल्लवुत्तितो वाचतो पवत्तं दुच्चरितं ति **वचीदुच्चरितं**। तं सरूपतो दस्सेन्तो आह **"मुसावादपिसुणवाचाफरुसवाचासम्फप्पलापचेतना वेदितब्बा"** ति। तत्थ **मुसा** ति अभूतं अतच्छं वत्थु। मुसा वदीयति वुच्चति एताया ति **मुसावादो**, अतथं वत्थुं तथतो परं विञ्ञापेतुकामस्स तथाविञ्ञत्तिसमुट्ठापिका चेतना। सो यमत्थं भञ्जति, तस्स अप्पताय अप्पसावज्जो, महन्तताय महासावज्जो। अपि च गहट्ठानं अत्तनो सन्तकं अदातुकामताय नत्थी ति आदिनयप्पवत्तो अप्पसावज्जो, सक्खिना हुत्वा अत्थभञ्जनत्थं वुत्तो महासावज्जो। पब्बजितानं अप्पकम्पि तेलं वा सप्पि वा लभित्वा हसाधिप्पायेन "अज्ज गामे तेलं नदी मञ्ञे सन्दती" ति पूरणकथानयेन पवत्तो अप्प-

१. म० ट्ठ-२०१, अभि-ट्ठ १-१४०-पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।

सावज्जो, अदिट्ठंयेव पन दिट्ठं ति आदिना नयेन वदन्तानं महासावज्जो। तस्स चत्तारो सम्भारा होन्ति—अतथं वत्थु, विसंवादनचित्तं, तज्जो वायामो, परस्स तदत्थविञ्ञापनं
B 345 ति। एको पयोगो साहत्थिकोव। सो कायेन वा कायपटिबद्धेन वा वाचाय वा परविसंवादककिरियाकरणे दट्ठब्बो। ताय च किरियाय परो तमत्थं जानाति, अयं किरियासमुट्ठापिकचेतनाक्खणेयेव मुसावादकम्मुना बज्झति। यस्मा पन यथा कायकायपटिबद्धवाचाहि परं विसंवादेति, तथा "इदमस्स भणाही" ति आणापेन्तो पि पण्णं लिखित्वा पुरतो निस्सज्जन्तो पि, "अयं अत्थो एवं वेदितब्बो" ति कुट्टादीसु लिखित्वा ठपेन्तो पि, तस्मा एत्थ आणत्तिकनिस्सग्गियथावरा पि पयोगा युज्जन्ति। अट्ठकथासु पन अनागतत्ता वीमंसित्वा गहेतब्बा।

पिसती ति पिसुणा, समग्गे सत्ते अवयवभूते वग्गे भिन्ने करोती ति अत्थो। निरुत्तिनयेन वा पियसुञ्ञकरणतो **पिसुणा**। याय हि वाचाय यस्स तं वाचं भासति तस्स हदये अत्तनो पियभावं, परस्स च पियसुञ्ञभावं करोति, सा **पिसुणावाचा**। लक्खणतो पन संकिलिट्ठचित्तस्स परेसं वा भेदाय अत्तनो पियकम्यताय वा कायवचीपयोगसमुट्ठापिका चेतना पिसुणवाचा पिसुणं वदति एताया ति कत्वा। सा यस्स भेदं करोति, तस्स अप्पगुणताय अप्पसावज्जा, महागुणताय महासावज्जा। तस्सा चत्तारो सम्भारा—भिन्दितब्बो, परो, "इति इमे नाना भविस्सन्ति विना भाविस्सन्ती" ति भेदपुरेक्खारता वा "इति अहं पियो भविस्सामि विस्सासिको" ति पियकम्यता वा तज्जो वायामो, तस्स तदत्थ विजाननं ति। परे पन अभिन्ने कम्मपथभेदो नत्थि, भिन्ने एव होति।

फरुसयती ति **फरुसा**, वाचा। ताय हि वाचाय अत्तानम्पि परम्पि फरुसं सिनेहाभावेन लूखं करोति; सा **फरुसवाचा**। अथ वा सयम्पि फरुसा दोमनस्ससमुट्ठितत्ता सभावेनपि कक्कसा नेव कण्णसुखा न हदयसुखा ति **फरुसवाचा**। एत्थ पन परेसं मम्मच्छेदनवसेन पवत्तिया एकन्तनिट्ठुरताय सभावेन कारणवोहारेन च वाचाय फरुससद्दप्पवत्ति दट्ठब्बा। तं फरुसं वदति एताया ति फरुसवाचा, परस्स मम्मच्छेदककायवचीपयोगसमुट्ठापिका एकन्तफरुसा चेतना। तस्सा आविभावत्थमिदं वत्थु—एको किर दारको मातु वचनं अनादियित्वा अरञ्ञं गच्छति, तं माता निवत्तेतुं असक्कोन्ती "चन्डा तं महिंसी अनुबन्धतू" ति अक्कोसि। अथस्स तथेव अरञ्ञे महिंसी उट्ठासि। दारको "यं मम माता मुखेन कथेसि, तं मा होतु। यं चित्तेन चिन्तेसि, तं होतू" ति
B 346 सच्चकिरियमकासि। महिंसी तत्थेव बद्धा विय अट्ठासि। एवं मम्मच्छेदको पि पयोगो चित्तसण्हताय फरुसवाचा न होति। मातापितरो हि कदाचि पुत्तके एवम्पि वदन्ति "चोरा वो खण्डाखण्डिकं करोन्तू" ति, उप्पलपत्तम्पि च नेसं उपरि पतन्तं न इच्छन्ति। आचरियुपज्झाया च कदाचि निस्सितके एवं वदन्ति "किं इमे अहिरिका अनोत्तप्पिनो चरन्ति, निद्धमथ ने" ति। अथ च नेसं आगमाधिगमसम्पत्तिं इच्छन्ति, यथा चित्तसण्हताय फरुसवाचा न होति, एवं वचनसण्हताय अफरुसवाचा पि न होति। न हि मारापेतुकामस्स "इमं सुखं सयापेथा" ति वचनं अफरुसवाचा होति, चित्तफरुसताय

पन एसा फरुसवाचाव। सा यं सन्धाय पवत्तिता, तस्स अप्पगुणताय अप्पसावज्जा, महागुणताय महासावज्जा। तस्सा तयो सम्भारा—अक्कोसितब्बो परो, कुपितचित्तं, अक्कोसना ति।

सं सुखं हितञ्च फलति विसरति विनासेती ति सम्फं, अत्तनो परेसञ्च अनुपकारकं यं किञ्चि, सम्फं पलपति एताया ति **सम्फप्पलापो**। अनत्थविञ्ञापिक-कायवचीपयोगसमुट्ठापिका अकुसलचेतना। सो आसेवनमन्दताय अप्पसावज्जो, आसे-वनमहन्तताय महासावज्जो। तस्स द्वे सम्भारा—भारतयुद्धसीताहरणादिनिरत्थक-कथापुरेक्खारता, तथारूपीकथाकथनञ्च। परे पन तं कथं अगण्हन्ते कम्मपथभेदो नत्थि, परेन पन सम्फप्पलापे गहितेयेव होति।

अभिज्झाब्यापादमिच्छादिट्ठियो ति एत्थ परसम्पत्तिं अभिमुखं झायती ति **अभिज्झा**, परसम्पत्तीसु लोभो। सा पन "अहो वत इदं ममस्सा" ति एवं परभण्डा-भिज्झायनलक्खणा। अदिन्नादानं विय अप्पसावज्जा महासावज्जा च। तस्सा द्वे सम्भारा—परभण्डं, अत्तनो परिणामनञ्च। परभण्डवत्थुके हि लोभे उप्पन्ने पि न ताव कम्मपथभेदो होति, याव "अहो वत इदं ममस्सा" ति अत्तनो न परिणामेति।

हितसुखं ब्यापादेति विनासेती ति **ब्यापादो**, पटिघो। सो परविनासाय मनोप-दोसलक्खणो। सो फरुसवाचा विय अप्पसावज्जो महासावज्जो च। तस्स द्वे सम्भारा—परसत्तो, तस्स च विनासनचिन्ता। परसत्तवत्थुके हि कोधे उप्पन्ने पि न ताव कम्म-पथभेदो होति, याव "अहो वतायं उच्छिज्जेय्य विनस्सेय्या" ति तस्स विनासनं न चिन्तेति।

यथाभुच्चगहणाभावेन मिच्छा पस्सती ति **मिच्छादिट्ठि**। सा "नत्थि दिन्नं" B 347
ति आदिना नयेन विपरीतदस्सनलक्खणा। सम्फप्पलापो विय अप्पसावज्जा महासा-वज्जा च। अपि च अनियता अप्पसावज्जा, नियता महासावज्जा। तस्स द्वे सम्भारा—वत्थुनो गहिताकारविपरीतता, यथा च तं गण्हाति, तथाभावेन तस्सुपट्ठानं ति। तत्थ नत्थिकाहेतुकअकिरियदिट्ठीहि एवं कम्मपथभेदो होति।

"अनेकविहितानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं" ति सामञ्ञवचने पि पारिसेस-ञायतो वुत्तावसेसा अकुसला धम्मा गहेतब्बा ति आह "**ठपेत्वा ते धम्मे**" ति आदि। ते यथावुत्तकायदुच्चरितादिके अकुसलधम्मे ठपेत्वा ति अत्थो। **अनेकविहिता** ति अनेकप्पकारा।

६॥ **अयं लोकतन्ती** ति अयं वुड्ढानं अभिवादनादिकिरियालक्खणा लोकप्पवेणी। अनागामिब्रह्मानं अलङ्कारादीसु अनागामिभिक्खूनञ्च चीवरादीसु निकन्तिवसेन रागुप्पत्ति होती ति अनागामिमग्गेन पञ्चकामगुणिकरागस्सेव पहानं वेदितब्बं ति आह "**पञ्चकामगुणिकरागस्सा**" ति। रूपादीसु पञ्चसु कामगुणेसु वत्थुकामकोट्ठासेसु उप्पज्जमानो रागो "पञ्चकामगुणिकरागो" ति वेदितब्बो। कोट्ठासवचनो हेत्थ गुण-

सद्दो "वयोगुणा अनुपुब्बं जहन्ती" ति आदीसु[1] विय। **द्वीसु अकुसलचित्तेसू** ति दोमनस्ससहगतेसु द्वीसु अकुसलचित्तेसु। मोहस्स सब्बाकुसलसाधारणत्ता आह "**सब्बाकुसलसम्भवस्सा**" ति। **अवसेसानं** ति सक्कायदिट्ठि आदीनं।

७॥ **जिगुच्छति मञ्ञे ति** "अहमभिजातो रूपवा पञ्ञवा, कथं नाम अञ्ञेसं अभिवादनादिं करेय्यं" ति जिगुच्छति विय जिगुच्छती ति वा सल्लक्खेमि। **अकोसल्लसम्भूतट्ठेना** ति अञ्ञाणसम्भूतट्ठेन। अकुसले धम्मे जिगुच्छमानो तेसं समङ्गीभावम्पि जिगुच्छती ति वुत्तं "**अकुसलानं धम्मानं समापत्ती**" ति। **समापत्ती** ति एतस्सेव वेवचनं **समापज्जना समङ्गीभावो** ति। **मण्डनकजातियो** ति मण्डनसभावो, मण्डनसीलो ति अत्थो। जेगुच्छितं ति जिगुच्छनसीलतं।

८॥ **लोकजेट्ठककम्मं** ति लोके जेट्ठकानं कत्तब्बकम्मं, लोके वा सेट्ठसम्मतं कम्मं।
B 348 **तत्रा** ति यथावुत्तेसु द्वीसु पि अत्थविकप्पेसु। पदाभिहितो अत्थो **पदत्थो**, ब्यञ्जनत्थो ति वुत्तं होति। **विनयं वा अरहती** ति एत्थ विनयनं विनयो, निग्गण्हनं ति अत्थो। तेनाह "**निग्गहं अरहतीति वुत्तं होती**" ति। ननु च पठमं वुत्तेसु द्वीसु पि अत्थविकप्पेसु सकत्थे अरहत्थे च तद्धितपच्चयो सद्दलक्खणतो दिस्सति, न पन "विनयाय धम्मं देसेती" ति इमस्मिं अत्थे, तस्मा कथमेत्थ तद्धितपच्चयो ति आह "**विचित्रा हि तद्धितवुत्ती**" ति। विचित्रता चेत्थ लोकप्पमाणतो वेदितब्बा। तथा हि यस्मिं यस्मिं अत्थे तद्धितप्पयोगो लोकस्स, तत्थ तत्थ तद्धितवुत्ति लोकतो सिद्धा ति विचित्रा तद्धितवुत्ति। तस्मा यथा "मा सद्दमकासी" ति वदन्तो "मासद्दिको" ति वुच्चति, एवं विनयाय धम्मं देसेती ति वेनयिको ति वुच्चती ति अधिप्पायो।

९॥ **कपणपुरिसो** ति गुणविरहिताय दीनमनुस्सो। **ब्यञ्जनानि अविचारेत्वा** ति तिस्सदत्तादिसद्देसु[2] विय "इमस्मिं अत्थे अयं नाम पच्चयो" ति एवं ब्यञ्जनं विचारं अकत्वा, अनिप्फन्नपाटिपदिकवसेना ति वुत्तं होति।

१०॥ **देवलोकगब्भसम्पत्तिया** ति वत्वा ठपेत्वा भुम्मदेवे सेसेसु देवेसु गब्भग्गहणस्स अभावतो पटिसन्धियेवेत्थ गब्भसम्पत्ती ति वेदितब्बा ति वुत्तमेवत्थं विवरित्वा दस्सेन्तो आह "**देवलोक पटिसन्धिपटिलाभाय संवत्तती**" ति। **अस्सा** ति आभिवादनादिसामीचिकम्मस्स। **मातुकुच्छिस्मिं पटिसन्धिग्गहणे दोसं दस्सेन्तो** ति मातितो अपरिसुद्धभावं दस्सेन्तो, अक्कोसितुकामस्स दासिया पुत्तो ति दासिकुच्छिस्मिं निब्बत्तभावे दोसं दस्सेत्वा अक्कोसनं विय भगवतो मातुकुच्छिस्मिं पटिसन्धिग्गहणे दोसं दस्सेत्वा अक्कोसन्तो पि एवमाहा ति अधिप्पायो। **गब्भतो** ति देवलोकपटिसन्धितो। तेनेवाह "**अभब्बो देवलोकूपपत्तिं पापुणितुं ति अधिप्पायो**" ति। **हीनो वा गब्भो अस्सा ति अपगब्भो** ति इमस्स विग्गहस्स एकेन परियायेन अधिप्पायं

१. सं० १–३ पिट्ठे।

२. डित्थडवित्थादिसद्देसु (सी०) उद्दिट्ठवित्थारसद्देसु (स्या०)

दस्सेन्तो आह **"देवलोकगब्भपरिबाहिरत्ता आयतिं हीनगब्भपटिलाभभागीती"** ति। **इति**-सद्दो हेतु अत्थो, यस्मा आयतिम्पि हीनगब्भपटिलाभभागी, तस्मा हीनो वा गब्भो B 349
अस्सा ति अपगब्भो ति अधिप्पायो।

पुन तस्सेव विग्गहस्स **कोधवसेन**···पे०··· **दस्सेन्तो** ति हेट्ठा वुत्तनयस्स अनुरूपं कत्वा अधिप्पायं दस्सेन्तो आह **"हीनो वास्स मातु कुच्छिस्मिं गब्भवासो अहोसी ति अधिप्पायो"** ति। गब्भ-सद्दो अत्थि मातुकुच्छि परियायो "गब्भे वसति माणवो" ति आदीसु[1] विय। अत्थि मातुकुच्छिस्मिं निब्बत्तसत्तपरियायो "अन्तमसो गब्भपातनं उपादाया" ति आदीसु[2] विय। तत्थ मातुकुच्छि परियायं गहेत्वा अत्थं दस्सेन्तो आह **"अनागते गब्भसेय्या"** ति। गब्भे सेय्या **गब्भसेय्या**। **अनुत्तरेन मग्गेना** ति अग्गमग्गेन। कम्मकिलेसानं मग्गेन विहतता आह **"विहतकारणत्ता"** ति। **इतरा तिस्सो पी** ति अण्डजसंसेदजओपपातिका। एत्थ च यदि पि "अपगब्भो" ति इमस्स अनुरुपतो गब्भसेय्या एव वत्तब्बा, पसङ्गतो पन लब्भमानं सब्बम्पि वत्थुं वट्टती ति पुनब्भवाभिनिब्बत्ति पि वुत्ता ति वेदितब्बा।

इदानि सत्तपरियायस्स गब्भसद्दस्स वसेन विग्गहनानत्तं दस्सेन्तो आह "अपि चा" ति आदि। इमस्मिं पन विकप्पे **गब्भसेय्या पुनब्भवाभिनिब्बत्ती** ति उभयम्पि गब्भसेय्यवसेनेव वुत्तं ति पि वदन्ति। ननु च "आयतिं गब्सेय्या पहीना" ति[3] वुत्तता गब्भस्स सेय्या एव पहीना, न पन गब्भो ति आपज्जती ति आह **"यथा चा"** ति आदि। अथ "अभिनिब्बत्ती" ति एकत्तकमेव अवत्वा पुनब्भवग्गहणं किमत्थं ति आह **"अभिनिब्बत्ति च नामा"** ति आदि। **अपुनब्भवभूता** ति खणे खणे उप्पज्जमानानं धम्मानं अभिनिब्बत्ति।

११॥ **धम्मधातु** ति एत्थ धम्मे अनवसेसे धारेति याथावतो उपधारेती ति धम्मधातु, धम्मानं यथासभावतो अवबुज्झनसभावो, सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्सेतं अधिवचनं। **पटिविज्झित्वा** ति सच्छिकत्वा, पटिलभित्वा ति अत्थो, पटिलाभहेतू ति वुत्तं होति। **देसनाविलासप्पत्तो होती** ति रुचिवसेन परिवत्तेत्वा देसेतुं समत्थता देसनाविलासो, तं पत्तो अधिगतो ति अत्थो। **करुणाविप्फारं ति** सब्बसत्तेसु महाकरुणाय फरणं। तादिगुणलक्खणमेव पुन उपमाय विभावेत्वा दस्सेन्तो आह **"पथवीसमचित्ततं"** ति। यथा B 350
पथवी सुचिअसुचिनिक्खेपछेदनभेदनादीसु न विकम्पति, अनुरोधविरोधं न पापुणाति, एवं इट्ठानिट्ठेसु लाभालाभादीसु अनुरोधविरोधप्पहानतो अविकम्पितचित्तताय पथवीसमचित्ततं ति अत्थो। **अकुप्पधम्मतं** ति एत्थ "अकुप्पधम्मो नाम फलसमापत्ती" ति तीसुपि **गण्ठिपदेसु** वुत्तं।" परेसु पन अक्कोसन्तेसु पि अत्तनो पथवीसमचित्ततालक्खणं अकुज्झनसभावतं ति एवमेत्थ अत्थो गहेतब्बो" ति अम्हाकं खन्ति। **जराय अनुसटं**

१. खु० ५–३५२ पिट्ठे जातके। २. वि० ३–१३४ पिट्ठे।
३. वि० १–४ पिट्ठे।

ति जराय पलिवेठितं। **वट्टखाणुभूतं** ति अनेकेसं अनयब्यसनानं निपातलक्खणत्थम्भ-भूतताय संसारखाणुभूतं। ब्राह्मणस्स वुड्ढताय आसन्नवुत्तिमरणं ति सम्भावनवसेन **"अज्ज मरित्वा"** ति आदि वुत्तं। **महन्तेन खो पन उस्साहेना** ति "साधु खो पन तथारूपानं अरहतं दस्सनं होती" ति एवं सञ्जातमहुस्साहेन। **अप्पटिसमं पुरेजात-भावं** ति अनञ्ञसाधारणं पुरेजातभावं। नत्थि एतस्स पटिसमो ति **अप्पटिसमो,** पुरेजातभावो।

"अपी" ति अवत्वा "पी" ति वदन्तो पि-सद्दो पि विसुं अत्थि निपातो ति दस्सेति। **सम्भावनत्थे** ति "अपि नामेवं सिया" ति विकप्पनत्थो सम्भावनत्थो, तस्मिं जोतकताय पि सद्दो वत्तति। **वचनसिलिट्ठताया** ति वचनस्स मधुरभावत्थं, मुदुभावत्थं ति अत्थो। **एवञ्हि लोके सिलिट्ठवचनं होती** ति एवं एकमेव गणनं अवत्वा अपराय गणनाय सद्धिं वचनं लोके सिलिट्ठवचनं होति यथा "द्वे वा तीणि वा उदकफुसितानी" ति। **सम्मा अधिसयितानी** ति पादादीहि अत्तना नेसं किञ्चि उपघातं अकरोन्तिया बहिवातादिपरिस्सयपरिहारत्थं सम्मदेव उपरि सयितानि। उपरिअत्थो हेत्थ अधि-सद्दो। **उतुं गण्हापेन्तिया** ति तेसं अल्लसिनेहपरियादानत्थं अत्तनो कायुस्मावसेन उतुं गण्हापेन्तिया। तेनाह **"उस्मीकतानी"** ति। **सम्मा परिभावितानी** ति सम्मदेव सब्बसो कुक्कुटवासनाय वासितानि। तेनाह **"कुक्कुटगन्धं गाहापितानी"** ति।

एत्थ च सम्मा परिसेदनं कुक्कुटगन्धपरिभावनञ्च सम्मा अधिसयननिप्फत्तिया
B 351 आनुभावनिप्फादितं ति[१] दट्ठब्बं। सम्मा अधिसयनेनेव हि इतरद्वयं इज्झति। न हि सम्मा अधिसयनतो विसुं सम्मा परिसेदनस्स सम्मा परिभावनस्स च करणं अत्थि, तेन पन सद्धिं येव इतरेसं द्विन्नम्पि इज्झनतो वुत्तं **"एवं तीहि पकारेहि तानि अण्डानि परिपालियमानानी"** ति। **नखसिखा** ति नखग्गानि। **मुखतुण्डकं** ति मुखग्गं। **कपालस्स तनुकत्ता** ति एत्थ यथा कपालस्स तनुता आलोकस्स अन्तो पञ्ञायमानस्स कारणं, तथा कपालस्स तनुताय नखसिखामुखतुण्डकानं खरताय च अल्लसिनेहपरियादानं कारणवचनं ति दट्ठब्बं। **सङ्कुटितहत्थपादा** ति एत्थ **हत्था** ति पक्खा। न हि कुक्कुटानं पक्खतो अञ्ञो हत्थो नाम अत्थि। **एत्था** ति आलोकट्ठाने। **पक्खे विधुनन्ता** ति पक्खे चालेन्ता। निक्खमन्तानं ति निद्धारणे सामिवचनं, निक्खमन्तेसू ति अत्थो।

सो जेट्ठो इति अस्स वचनीयो ति यो पठमतरं अण्डकोसतो निक्खन्तो कुक्कुटपोतको, सोयेव जेट्ठो ति वचनीयो अस्स, भवेय्या ति अत्थो। **सम्पटिपादेन्तो** ति संसन्देन्तो। तिभूमकपरियापन्ना पि सत्ता अविज्जाकोसस्स अन्तो पविट्ठा तत्थ तत्थ अप्पहीनाय अविज्जाय वेठितत्ता ति आह **"अविज्जाकोसस्स अन्तो पविट्ठेसु सत्तेसू"** ति। **अण्डकोसं** ति बीजकपालं। **लोकसन्निवासे** ति लोको एव लोकसन्निवासो। **सम्मासम्बोधिं** ति एत्थ **सम्मा** ति अविपरीतत्थो, सं—सद्दो सामं ति इममत्थं दीपेति,

१. अनुनिप्फादितं ति (स्या०)।

तस्मा सम्मा अविपरीतेनाकारेन सयमेव चत्तारि सच्चानि बुज्झति, पटिविज्झती ति सम्मासम्बोधी ति मग्गो वुच्चति। तेनाह "**सम्मा सामञ्च बोधि**" ति, सम्मा सयमेव च बुज्झनकं ति अत्थो। **सम्मा** ति वा पसत्थवचनो, **सं**—सद्दो सुन्दरवचनो ति आह "**अथ वा पसत्थं सुन्दरञ्च बोधिं**" ति। बोधि—सद्दस्स अनेकत्थतं दस्सेत्वा इधाधिप्पेतमत्थं निद्धारेत्वा दस्सेतुकामो आह "**बोधी ति रुक्खो पि मग्गो पि**" ति आदि। तत्थ अबुज्झि एत्था ति **रुक्खो** बोधि। सयं बुज्झति, बुज्झन्ति वा तेन अरिया ति **मग्गो** बोधि। सब्बधम्मे सब्बाकारतो बुज्झति पटिविज्झती ति **सब्बञ्ञुतञ्ञाणं** बोधि। बुज्झीयति सच्छिकरीयती ति **निब्बानं** बोधि। **अन्तरा च बोधिं** ति दुतियमुदाहरणं विनापि रुक्खसद्देन बोधिसद्दस्स रुक्खे पवत्तिदस्सनत्थं वुत्तं। **वरभूरिमेधसो** ति महापथवी विय पत्थटवरपञ्ञो ति अत्थो। **असब्बगुणदायकत्ता** ति सब्बगुणानं अदायकत्ता। सब्बगुणे न ददाती ति हि असब्बगुणदायको, अयुत्तसमासोयं गमकत्ता B 352
यथा "असूरियंपस्सानि मुखानी" ति।

तिस्सो विज्जा ति उपनिस्सयवतो सहेव अरहत्तफलेन तिस्सो विज्जा देति। ननु चेत्थ तीसु विज्जासु आसवक्खयञाणस्स मग्गपरियापन्नत्ता कथमेतं युज्जति "मग्गो तिस्सो विज्जा देती" ति? नायं दोसो। सति पि आसवक्खयञाणस्स मग्गपरियापन्नभावे अट्ठङ्गिके मग्गे सति मग्गञाणेन सद्धिं तिस्सो विज्जा परिपुण्णा होन्ती ति "मग्गो तिस्सो विज्जा देती" ति वुच्चति। **छ अभिञ्ञा** ति एत्था पि एसेव नयो। **सावकपारमिञाणं** ति अग्गसावकेहि पटिलभितब्बं सब्बमेव लोकियलोकुत्तरञाणं। **पच्चेकबोधिञाणं** ति एत्थापि इमिनाव नयेन अत्थो वेदितब्बो। **अब्भञ्ञासिं** ति जानिं। जाननञ्च न अनुस्सवादिवसेना ति आह "**पटिविज्झिं**" ति, पच्चक्खमकासिं ति अत्थो। पटिवेधो पि न दूरे ठितस्स लक्खणप्पटिवेधो विया ति आह "**पत्तोम्ही**" ति, पापुणिं ति अत्थो। पापुणनञ्च न सयं गन्त्वा ति आह "**अधिगतोम्ही**" ति, सकसन्ताने उप्पादनवसेन पटिलभिं ति अत्थो।

ओपम्मसम्पटिपादनं ति ओपम्मत्थस्स उपमेय्येन सम्मदेव पटिपादनं। **अत्थेना** ति उपमेय्यत्थेन। यथा कुक्कुटिया अण्डेसु तिविध किरियाकरणं कुक्कुटच्छापकानं अण्डकोसतो निक्खमनस्स मूलकारणं, एवं बोधिसत्तभूतस्स भगवतो तिविधानुपस्सनाकरणं अविज्जण्डकोसतो निक्खमनस्स मूलकारणं ति आह "**यथा हि तस्सा कुक्कुटिया पे०····तिविधानुपस्सनाकरणं**" ति। "सन्ताने" ति वुत्तत्ता अण्डसदिसता सन्तानस्स बहि निक्खन्त कुक्कुटच्छापकसदिसता बुद्धगुणानं, बुद्धगुणा ति च अत्थतो बुद्धोयेव "तथागतस्स खो एतं वासेट्ठ अधिवचनं धम्मकायो इति पी" ति वचनतो। **अविज्जण्डकोसस्स तनुभावो** ति बलवविपस्सनावसेन अविज्जण्डकोसस्स तनुभावो, पटिच्छादनसामञ्ञेन च अविज्जाय अण्डकोससदिसता। मुदुभूतस्सपि खरभावापत्ति होती ति तन्निवत्तनत्थं "**थद्धखरभावो**" ति वुत्तं। **तिक्खखरविप्पसन्नसूरभावो** ति एत्थ परिग्गय्हमानेसु सङ्खारेसु विपस्सनाञाणस्स समाधिन्द्रियवसेन सुखानुप्पवेसो **तिक्खता**, अनुपविसित्वा पि सतिन्द्रियवसेन अनतिक्कमनतो अकुण्ठता **खरभावो**। तिक्खो पि हि

एकच्चो सरो लक्खं पत्वा कुण्ठो होति, न तथा इदं। सति पि खरभावे
B 353 सुखुमप्पवत्तिवसेन किलेससमुदाचारसङ्खोभरहितताय सद्धिन्द्रियवसेन **पसन्नभावो**, सति पि च पसन्नभावे अन्तरा अनोसक्कित्वा किलेसपच्चत्थिकानं सुट्ठु अभिभवनतो वीरियिन्द्रियवसेन **सूरभावो** वेदितब्बो। एवमिमेहि पकारेहि सङ्खारुपेक्खाञाणमेव गहितं ति दट्ठब्बं। **विपस्सनाञाणस्स परिणामकालो** ति विपस्सनाय वुट्ठानगामिनिभावप्पत्ति, तदा च सा मग्गञाणगब्भं धारेन्ती विय होति ति आह "**गब्भग्गहणकालो** ति। **गब्भं गण्हापेत्वा** ति सङ्खारुपेक्खाय अनन्तरं सिक्खाप्पत्तअनुलोमविपस्सनावसेन मग्गविजायनत्थं गब्भं गण्हापेत्वा। **अनुपुब्बाधिगतेना** ति पठममग्गपटिपाटिया अधिगतेन। **अभिञ्ञापक्खे** ति लोकियाभिञ्ञापक्खे। लोकुत्तराभिञ्ञा हि अविज्जण्डकोसं पदालिता। पोत्थकेसु पन कत्थचि "छ अभिञ्ञापक्खे" ति लिखन्ति, सो अपाठो ति वेदितब्बो। **जेट्ठो सेट्ठो** ति बुद्धतमत्ता जेट्ठो, सब्बगुणेहि उत्तमत्ता पस्सत्थतमो ति **सेट्ठो**

इदानि "आरद्धं खो पन मे ब्राह्मण वीरियं' ति आदिकाय देसनाय अनुसन्धि दस्सेन्तो आह **एवं भगवा**" ति आदि। तत्थ **पुब्बभागतो पभुती** ति भावनाय पुब्बभागियवीरियारम्भादितो पट्ठाय। **चित्तमेवमुप्पन्नं** ति एवं उपरि वक्खमानपरिवितक्कवसेन चित्तमुप्पन्नं ति अत्थो। "चित्तमेव उप्पन्नं" ति पि पाठो, तत्थ चित्तमेव उप्पन्नं, न ताव भगवति पसादो ति अत्थो। **मुट्ठस्सतिना** ति विनट्ठस्सतिना, सतिविरहितेना ति अत्थो। **सारद्धकायेना** ति सदरथकायेन। **बोधिमण्डे** ति बोधिसङ्खातस्स ञाणस्स मण्डभावप्पत्ते ठाने। बोधी ति हि पञ्ञा वुच्चति, सा एत्थ मण्डा पसन्ना जाता ति सो पदेसो "बोधिमण्डो" ति पञ्ञातो। **चतुरङ्गसमन्नागतं** ति "कामं तचो न्हारू च अट्ठि च अवसिस्सतु, सरीरे उपसुस्सतु मंसलोहितं" ति[1] एवं वुत्तचतुरङ्गसमन्नागतं वीरियं। तत्थ तचो ति एकं अङ्गं, न्हारु एकं अङ्गं, अट्ठि एकं अङ्गं, मंसलोहितं एकं अङ्गं ति वेदितब्बं। **तचो एकं अङ्गं** ति च तचे निरपेक्खभावो एकं अङ्गं ति गहेतब्बं। पधानं अनुयुञ्जन्तस्स हि तचे पलुज्जमानेपि तं निमित्तं अवोसानापज्जनं तस्स वीरियस्स एकं अङ्गं एकं कारणं। एवं
B 354 सेसेसु पि अत्थो वेदितब्बो। **पग्गहितं** ति आरम्भं[2] सिथिलं अकत्वा दळ्हपरक्कमसङ्खातुस्साहनभावेन गहितं। तेनाह "**असिथिलप्पवत्तितं ति वुत्तं होती**" ति।

असल्लीनं ति असङ्कुचितं कोसज्जवसेन सङ्कोचं अनापन्नं। **उपट्ठिता** ति ओगाहनसङ्खातेन अपिलापभावेन आरम्मणं उपगन्त्वा ठिता। तेनाह "**आरम्मणाभिमुखीभावेना**" ति। सम्मोसस्स विद्धंसनवसेन पवत्तिया न समुट्ठाति **असम्मुट्ठा**। किञ्चापि चित्तपस्सद्धिवसेनेव चित्तमेव पस्सद्धं, कायपस्सद्धिवसेनेव च कायो पस्सद्धो होति, तथा पि यस्मा कायपस्सद्धि उप्पज्जमाना चित्तपस्सद्धिया सहेव उप्पज्जति, न विना,

---

१. म० २-१४६, सं० १-२६६, अं० १-५२, खु० ७-३७९ पिट्ठेसु।

२. आरब्भ (स्या०, क०)।

तस्मा वुत्तं "**कायचित्तपस्सद्धिवसेना**" ति। कायपस्सद्धिया उभयेसम्पि कायानं पस्सम्भनावहत्ता वुत्तं "**रूपकायो पि पस्सद्धोयेव होती**" ति। **सो च खो** ति सो च खो कायो। **विगतदरथो** ति विगतकिलेसदरथो। नामकाये हि विगतदरथे रूपकायो पि वूपसन्तदरथपरिळाहो होति। **सम्मा आहितं** ति नानारम्मणेसु विधावनसङ्खातं विक्खेपं विच्छिन्दित्वा एकस्मियेव आरम्मणे अविक्खित्तभावापादनेन सम्मदेव आहितं ठपितं। तेनाह "**सुट्ठु ठपितं**" ति आदि। चित्तस्स अनेकग्गभावो विक्खेपवसेन चञ्चलता, सा सति एकग्गताय न होती ति आह "**एकग्गं अचलं निप्फन्दनं**" ति। **एत्तावता** ति "आरद्धं खो पना" ति आदिना वीरियसतिपस्सद्धिसमाधीनं किच्चिसिद्धिदस्सनेन।

ननु च सद्धापञ्ञानम्पि किच्चसिद्धि झानस्स पुब्बपटिपदाय इच्छितब्बा ति? सच्चं इच्छितब्बा, सा पन नान्तरिकभावेन अवुत्तसिद्धा ति न गहिता। असति हि सद्धाय वीरियारम्भादीनं असम्भवोयेव, पञ्ञापरिग्गहे च नेसं असति ञायारम्भादिभावो न सिया, तथा असल्लीनासम्मोसतादयो वीरियादीनं ति असल्लीनतादिग्गहणेनेवेत्थ पञ्ञाकिच्चसिद्धि गहिता ति दट्ठब्बं। झानभावनायं वा समाधिकिच्चं अधिकं इच्छितब्बं ति दस्सेतुं समाधिपरियोसानाव झानस्स पुब्बपटिपदा कथिता ति दट्ठब्बं।

पठमज्झानकथा

इदानि "विवेच्चेव कामेही" ति आदिनयप्पवत्ताय पाळिया झानविभङ्गे[1] वुत्तम्पि अत्थं अट्ठकथानयेनेव संवण्णेतुकामो विभङ्गपाळियं वुत्तनयेन अवचने कारणं दस्सेतुं "**किञ्चापि तत्थ कतमे कामा**" ति आदिमाह। तत्थ पत्थनाकारेन पवत्तो B 355
दुब्बलो लोभो छन्दनट्ठेन **छन्दो**, ततो बलवा रञ्जनट्ठेन **रागो**, ततो पि बलवतरो बहलरागो **छन्द रागो**। निमित्तानुब्यञ्जनानि सङ्कप्पेति एतेना ति **सङ्कप्पो**, तथापवत्तो लोभो। तत्थ **निमित्तसङ्कप्पना** नाम अवयवे समोधानेत्वा "इत्थि पुरिसो" ति आदिना एकज्झं कत्वा उपरूपरि किलेसुप्पत्तिया निमित्तस्स कप्पना। **अनुब्यञ्जनसङ्कप्पना** पन "हत्था सोभना' पादा सोभना" ति एवं अनुब्यञ्जनवसेन विभजित्वा कप्पना ति। किलेसानञ्हि अनु अनुब्यञ्जनतो परिब्यञ्जनतो परिब्यत्तिवसेन उप्पत्तिया पच्चयभावतो अनुब्यञ्जनं हत्थपादादिअवयवा वुच्चन्ति। ततो बलवा रञ्जनट्ठेन **रागो**, सङ्कप्पवसेनेवपवत्तो ततो पि बलवतरो **सङ्कप्परागो**। स्वायं पभेदो एकस्सेव लोभस्स पवत्तिआकारवसेन अवत्थाभेदवसेन च वेदितब्बो यथा "वच्छो दम्मो बलीबद्दो" ति। **कामा** ति किलेसकामा, कामेन्ती ति कामा, कामेन्ति एतेही ति वा।

सेय्यथिदं ति इमस्स तं कतमं, तं कथं ति वा अत्थो। **विविच्चित्वा** ति विसुं हुत्वा। तेनाह "**विना हुत्वा अपसक्कित्वा**" ति, पजहनवसेन अपक्कमित्वा ति अत्थो। **विविच्चेव कामेही** ति एत्थ **विविच्चा** ति इमिना विवेचनं झानक्खणे कामानं अभावमत्तं वुत्तं। **विवेच्चेवा** ति पन इमिना एकंसतो कामानं विवेचेतब्बतादीपनेन तप्पटि-

१. अभि० २-२५३ पिट्ठे।

पक्खता झानस्स कामविवेकप्पहानस्स च झानाधिगमूपायता दस्सिता होती ति इममत्थं दस्सेतुं "पठमज्झानं" ति आदि वत्वा तमेवत्थं पाकटतरं कातुं "कथं" ति आदि वुत्तं। **अन्धकारे सति पदीपो विया** ति एतेन यथा पदीपाभावेन रत्तियं अन्धकाराभिभवो, एवं झानाभावेन चित्तसन्ततियं कामाभिभवो ति दस्सेति।

एतं ति पुब्बपदेयेव अवधारणवचनं, न खो पन एवं दट्ठब्बं कामेहि एवा ति अवधारणस्स अकतत्ता। **तन्निस्सरणतो** ति निस्सरन्ति निग्गच्छन्ति एतेन, एत्थ वा ति निस्सरणं। के निग्गच्छन्ति? कामा। तेसं कामानं निस्सरणं पहानं **तन्निस्सरणं**, ततो कामनिस्सरणतो ति अत्थो। कथं पन समाने विक्खम्भने कामानमेवेतं निस्सरणं, न ब्यापादादीनं ति चोदनं युत्तितो आगमतो च साधेतुं **कामधातू** ति आदि वुत्तं। तत्थ **कामधातुसमतिक्कमनतो** ति सकलस्स पि कामभवस्स समतिक्कमपटिपदाभावतो। तेन
B 356 इमस्स झानस्स कामपरिञ्ञाभावमाह। **कामरागपटिपक्खतो** ति "छन्दो कामो" ति आदिना[1] वुत्तविभागस्स किलेसकामस्स पच्चत्थिकभावतो। तेन यथा मेत्ता ब्यापादस्स, करुणा विहिंसाय, एवमिदं झानं कामरागस्स उजुविपच्चनीकभूतं ति दस्सेति। विपाकेन चेत्थ कामधातुसमतिक्कमो अत्तनो पवत्तिक्खणे कामरागपटिपक्खता च वेदितब्बा। एवमत्तनो पवत्तिया विपाकप्पवत्तिया च कामरागतो कामधातुतो च विनिवत्तसभावत्ता इदं झानं विसेसतो कामानमेव निस्सरणं, स्वायमत्थो पाठागतो एवा ति आह "**यथाहा**" ति आदि। **नेक्खम्मं** ति पठमज्झानं।

कामञ्चेत्थ तमत्थं दीपेतुं पुरिमपदेयेव अवधारणं गहितं, उत्तरपदे पि पन तं गहेतब्बमेव तथा अत्थसम्भवतो ति दस्सेतु "**उत्तरपदे पो**" ति आदि वुत्तं। **इतो** ति कामच्छन्दतो। **एस दट्ठब्बो** ति एस नियमो दट्ठब्बो। **साधारणवचनेना** ति सब्बविवेकसाधारणवचनेन। तदङ्गविक्खम्भनसमुच्छेदपटिपस्सद्धिनिस्सरणविवेका **तदङ्गविवेकादयो**। कायचित्तउपधिविवेका **कायविवेकादयो**। **तयो एव इध दट्ठब्बा** ति तयो एव इध झानकथायं दट्ठब्बा समुच्छेदविवेकादीनं असम्भवतो। **निद्देसे** ति महानिद्देसे[1]। तत्थ हि "उद्दानतो द्वे कामा वत्थुकामा किलेसकामा चा" ति उद्दिसित्वा तत्थ "कतमे वत्थुकामा मनापिया रूपा,....पे०....मनापिया फोट्ठब्बा" ति आदिना वत्थुकामा निद्दिट्ठा। ते पन कामीयन्ती ति कामा ति वेदितब्बा। **तत्थेवा** ति निद्देसेयेव। **विभङ्गे** ति झानविभङ्गे। **एवञ्हि सती** ति एवं उभयेसम्पि कामानं सङ्गहे सति। **वत्थुकामेहि पो** ति वत्थुकामेहि विविच्चेवा ति पि अत्थो युज्जती ति एवं युज्जमानत्थन्तरसमुच्चयत्थो पि-सद्दो, न किलेसकामसमुच्चयत्थो। कस्मा? इमस्मिं अत्थे किलेसकामेहि विवेकस्स दुतियपदेन वुत्तत्ता। **तेना** ति वत्थुकामविवेकेन। **कायविवेको वुत्तो होती** ति पुत्तदारादिपरिग्गहविवेकदीपनतो कायविवेको वुत्तो होति।

---

१. खु० ७-२ पिट्ठे।

पुरिमेना ति कायविवेकेन। **एत्था** ति "विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेही" ति एतस्मिं पदद्वये। इतो वा निद्धारिते विवेकद्वये, अकुसलसद्देन यदि किलेसकामा, सब्बाकुसला पि वा गहिता, सब्बथा किलेसकामेहि विवेको वुत्तो ति B 357
आह "**दुतियेन किलेसकामेहि विवेकवचनतो**" ति। **दुतियेना** ति च चित्तविवेकेना ति अत्थो। **एतेसं** ति यथावुत्तानं। निद्धारणे चेतं सामिवचनं। तण्हादिसकिलेसानं वत्थुनो पहानं **संकिलेसवत्थुप्पहानं**। **लोलभावो** नाम तत्थ तत्थ रूपादीसु तण्हुप्पादो, तस्स हेतू वत्थुकामा एव वेदितब्बा। बालभावस्स हेतुपरिच्चागो ति सम्बन्धो। **बालभावो** नाम अविज्जा, दुच्चिन्तितचिन्तितादि वा, तस्स अयोनिसोमनसिकारो, सब्बे पि वा अकुसला धम्मा हेतू। कामगुणाधिगमहेतु पाणातिपातादिअसुद्धप्पयोगो होती ति तब्बिवेकेन **पयोगसुद्धि** विभाविता। तण्हासंकिलेससोधनेन विपट्टूपनिस्सयसंवड्ढनेन च अज्झासयविसोधनं **आसयपोसनं**। **आसयपोसनं** ति च झानभावनाय पच्चयभूता पुब्बयोगादिवसेन सिद्धा अज्झासयसम्पदा, सा पन तण्हुपतापविगमेन होति। तेन वुत्तं "तण्हासंकिलेसविसोधनेना" ति। **कामेसू** ति निद्धारणे भुम्मं।

अनेकभेदो ति कामासवकामरागसंयोजनादिवसेन रूपतण्हादिवसेन च अनेकप्पभेदो। **कामच्छन्दोयेवा** ति कामसभावोयेव छन्दो, न कत्तुकम्यताछन्दो न पि कुसलच्छन्दो ति अधिप्पायो। **अकुसलपरियापन्नो पी** ति "विविच्च अकुसलेही" ति एत्थ वुत्तअकुसलेसु अन्तोगधो पि। **झानपटिपक्खतो** ति झानस्स पटिपक्खभावतो तं हेतु तं निमित्तं विसुं वुत्तो, अकुसलभावसामञ्ञेन अग्गहेत्वा विसुं सरूपेन गहितो। यदि किलेसकामोव पुरिमपदे वुत्तो, तं कथं बहुवचनं हि आह "**अनेकभेदतो**" ति आदि। **अञ्ञेसम्पी** ति दिट्ठिमानअहिरिकानोत्तप्पादीनं तं सहितफस्सादीनञ्च। **उपरिझानङ्गपच्चनीकपटिपक्खभावदस्सनतो** ति "सवितक्कं सविचारं" ति आदिना उपरि वुच्चमानानि झानङ्गानि उपरिझानङ्गानि, तेसं अत्तनो पच्चनीकानं पटिपक्खभावदस्सनतो तप्पच्चनीकनीवरणवचनं। "उपरिझानङ्गानं पच्चनीकपटिपक्खभावदस्सनतो" ति पि पाठो। तत्थ **पच्चनीकपटिपक्खभावदस्सनतो** ति उपरि वुच्चमानझानङ्गानं उजुविपच्चनीकवसेन पटिपक्खभावदस्सनतो ति अत्थं वदन्ति। **झानङ्गपच्चनीकानी** ति झानङ्गानं पवत्तिनिवारणतो झानङ्गपच्चनीकानि। **विद्धंसकानी** ति विघातकानि। **समाधि कामच्छन्दस्स पटिपक्खो** ति रागपणिधिया उजुविपच्चनीकभावतो नानारम्मणेहि पलोभितस्स परिब्भन्तस्स चित्तस्स समाधानतो कामच्छन्दस्स B 358
समाधि पटिपक्खो। **पीति ब्यापादस्सा** ति पामोज्जेन समानयोगक्खेमत्ता ब्यापादस्स पीति पटिपक्खा। **वितक्को थिनमिद्धस्सा** ति योनिसो सङ्कप्पनवसेन सविप्फारप्पवत्तितो वितक्को थिनमिद्धस्स पटिपक्खो। **सुखं उद्धच्चकुक्कुच्चस्सा** ति सुखं वूपसन्तसीतलसभावत्ता अवूपसमानुतापसभावस्स उद्धच्चकुक्कुच्चस्स पटिपक्खं।

---

१. खु० ७–१ पिट्ठे।

विचारो विचिकिछाया ति विचारो आरम्मणे अनुमज्जनवसेन पञ्ञापतिरूपसभावत्ता विचिकिच्छाय पटिपक्खो। महाकच्चानत्थेरेन देसिता पिटकानं संवण्णना पेटकं, तस्मिं **पेटके**।

पञ्चकामगुणभेदविसयस्सा ति रूपादिपञ्चकामगुणविसेसविसयस्स। **आघातवत्थुभेदादिविसयानं** ति ब्यापादविवेकवचनेन "अनत्थं मे अचरी" ति आदि आघातवत्थुभेदविसयस्स दोसस्स, मोहाधिकेहि थिनमिद्धादीहि विवेकवचनेन पटिच्छादनवसेन दुक्खादिपुब्बन्तादिभेदविसयस्स मोहस्स विक्खम्भनविवेको वुत्तो। कामरागब्यापादतदेकट्ठथिनमिद्धादिविक्खम्भकञ्चेतं सब्बाकुसलपटिपक्खसभावत्ता सब्बकुसलानं, तेन सभावेन सब्बाकुसलप्पहायकं होन्तम्पि कामरागादिविक्खम्भनसभावमेव होति तंसभावत्ता ति अविसेसेत्वा नीवरणाकुसलमूलादीनं विक्खम्भनविवेको वुत्तो होती ति आह।

यथापच्चयं पवत्तमानानं सभावधम्मानं नत्थि काचि वसवत्तिता ति वसवत्तिभावनिवारणत्थं "**वितक्कनं वितक्को**" ति वुत्तं। **वितक्कनं** ति हि वितक्कनकिरिया, सा च वितक्कस्स अत्तनो पच्चयेहि पवत्तिमत्तमेवा ति भावनिद्देसो वसवत्तिभावनिवारणाय होति। तयिदं वितक्कनं "ईदिसमिदं" ति आरम्मणपरिकप्पनं ति आह "**ऊहनं ति वुत्तं होती**" ति। यस्मा चित्तं वितक्कबलेन आरम्मणं अभिनिरुळ्हं विय होति, तस्मा सो आरम्मणाभिनिरोपनलक्खणो वुत्तो। यथा हि कोचि राजवल्लभं ञातिं वा मित्तं वा निस्साय राजगेहं आरोहति अनुपविसति, एवं वितक्कं निस्साय चित्तं आरम्मणं आरोहति। यदि एवं कथं अवितक्कं चित्तं आरम्मणं आरोहती ति? वितक्कबलेनेव। यथा हि सो पुरिसो परिचयेन तेन विना पि निरासङ्को राजगेहं पविसति, एवं परिचयेन वितक्केन विना पि अवितक्कं चित्तं आरम्मणं आरोहति।
B 359 **परिचयेना** ति च सन्ताने पवत्तवितक्कभावनासङ्खातेन परिचयेन। वितक्कस्स हि सन्ताने अभिण्हं पवत्तस्स वसेन चित्तस्स आरम्मणाभिरुहनं चिरपरिचितं, तेन तं कदाचि वितक्केन विना पि तत्थ पवत्ततेव। यथा तं ञाणसहितं हुत्वा सम्मसनवसेन चिरपरिचितं कदाचि ञाणरहितम्पि सम्मसनवसेन पवत्तति, यथा वा किलेससहितं हुत्वा पवत्तं सब्बसो किलेसरहितम्पि परिचयेन किलेसवासनावसेन पवत्तति, एवं सम्पदमिदं दट्ठब्बं।

आहननपरियाहननरसो ति आदितो, अभिमुखं वा हननं **आहननं**। परितो, परिवत्तित्वा वा आहननं **परियाहननं**। "रूपं रूपं, पथवी पथवी" ति आकोटेन्तस्स विय पवत्ति आहननं परियाहननं ति च वेदितब्बं। यस्मिञ्हि आरम्मणे चित्तं अभिनिरोपेति, तं तस्स गहणयोग्यं करोन्तो वितक्को आकोटेन्तो विय होति। यदि एवं नागसेनत्थेरेन "आकोटनलक्खणो वितक्को। यथा महाराज भेरी आकोटिता अथ पच्छा अनुरवति अनुसद्दायति, एवमेव खो महाराज यथा आकोटना, एवं वितक्को दट्ठब्बो। अथ पच्छा अनुरवना अनुसद्दना, एवं विचारो दट्ठब्बो" ति आकोटनलक्खणता वितक्कस्स कस्मा वुत्ता? नायं विरोधो। थेरेन हि किच्चसन्निस्सितं कत्वा

लक्खणं वुत्तं। धम्मानञ्हि सभावविनिमुत्ता काचि किरिया नाम नत्थि तथा गहेतब्बाकारो च। बोधनेय्यजनानुरोधेन पन परमत्थतो एकीभावो पि सभावधम्मो परियायवचनेहि विय समारोपितरूपेहि बहूहि पकारेहि पकासीयति। एवञ्हि सो सुट्ठु पकासितो होति। **आनयनपच्चुपट्ठानो** ति एत्थ आनयनं चित्ते आरम्मणस्स उपनयनं, आकड्ढनं वा।

अनुसञ्चरणं अनुपरिब्भमनं। स्वायं विसेसो सन्तानम्हि लब्भमानो एव सन्ताने पाकटो होती ति दट्ठब्बो। सेसेसु पि एसेव नयो। अनुमज्जनं ति आरम्मणे चित्तस्स अनुमसनं, परिमज्जनं ति अत्थो। तथा हि "विचारो परिमज्जनहत्थो विय सञ्चरणहत्थो विया" ति च वुत्तो। **तत्था** ति आरम्मणे। सहजातानं अनुयोजनं आरम्मणे अनुविचरणसङ्खातअनुमज्जनवसेनेव वेदितब्बं। अनुप्पबन्धनं आरम्मणे चित्तस्स अविच्छिन्नस्स विय पवत्ति। तथा हि सो "अनुप्पबन्धनता" ति निद्दिट्ठो। तेनेव च "घण्टानुरवो विय, परिब्भमनं विया" ति च वुत्तो। **कत्थची** ति पठमज्झाने परित्तचित्तुप्पादेसु च। **ओळारिकट्ठेना** ति विचारतो ओळारिकट्ठेन। यथा घण्टाभि- B 360
घातसद्दो पठमाभिनिपातो होति, एवं आरम्मणाभिमुखनिरोपनट्ठेन वितक्को चेतसो पठमाभिनिपातो विय होती ति आह "**घण्टाभिघातसद्दो विया**" ति आदि। **विप्फारवा** ति एत्थ विप्फारो नाम वितक्कस्स थिनमिद्धपटिपक्खो आरम्मणे अनोलीनता असङ्कोचो, सो पन अभिनिरोपनभावेन चलनं विय होती ति अधिप्पायेनाह "परिप्फन्दनभावो चित्तस्सा" ति। **परिब्भमनं विया** ति एत्थ परिस्सयाभाववीमंसनत्थं परिब्भमनं ति वेदितब्बं। **दुकनिपातट्ठकथायं** पन—

"आकासे गच्छतो महासकुणस्स उभोहि पक्खेहि वातं गहेत्वा पक्खे सन्निसीदापेत्वा गमनं विय आरम्मणे चेतसो अभिनिरोपनभावेन पवत्तो वितक्को, वातग्गहणत्थं पक्खे फन्दापयमानस्स गमनं विय अनुमज्जनभावेन पवत्तो विचारो" ति—

वुत्तं। तं अनुप्पबन्धनेन पवत्तियं युज्जति। तथा हि उपचारे वा अप्पनायं वा सन्तानेन पवत्तियं वितक्को निच्चलो हुत्वा आरम्मणं अनुपविसित्वा विय पवत्तति, न पठमाभिनिपाते पाकटो होति। यथा हि अपुब्बारम्मणे पठमाभिनिपातभूतो वितक्को विप्फारवा होति, न तथा एकस्मिंयेव आरम्मणे निरन्तरं अनुप्पबन्धवसेन पवत्तियं, नाति विप्फारवा पन तत्थ होति सन्निसिन्नभावतो। **पठमदुतियज्झानेसु पाकटो होती** ति वितक्कस्स विसेसो अभिनिरोपनाकारो ओळारिकत्ता पठमज्झाने पाकटो होति, तदभावतो पञ्चकनये दुतियज्झाने विचारस्स विसेसो अनुमज्जनाकारो पाकटो होति।

अयं पनेत्थ अपरो नयो—मलग्गहितं कंसभाजनं एकेन हत्थेन दळ्हं गहेत्वा इतरेन हत्थेन चुण्णतेलएळकलोमादिकतचुम्बटकेन परिमज्जन्तस्स दळ्हं गहणहत्थो विय वितक्को, परिमज्जनहत्थो विय विचारो। तथा कुम्भकारस्स दण्डप्पहारेन चक्कं भमयित्वा भाजनं करोन्तस्स पिण्डस्स उप्पीळनहत्थो विय वितक्को, तस्सेव इतो चितो च सञ्चरणहत्थो विय विचारो। तथा कंसभाजनादीसु किञ्चि मण्डलं वट्टलेखं

B 361 करोन्तस्स मज्झे सन्निरुम्भित्वा ठितकण्टको विय अभिनिरोपनो वितक्को, बहि परिब्भमनकण्टको विय अनुमज्जनो विचारो ति वेदितब्बं।

यथा पुप्फफलसाखादिअवयवविनिमुत्तो अविज्जमानो पि रुक्खो "सपुप्फो सफलो" ति वोहरीयति, एवं वितक्कादिअङ्गविनिमुत्तं अविज्जमानम्पि झानं "सवितक्कं सविचारं" ति वोहरीयती ति दस्सेतुं "**रुक्खो विया**" ति आदि वुत्तं। **विभङ्गे पना** ति आदीसु झानभावनाय पुग्गलवसेन देसेतब्बत्ता "इध भिक्खु विविच्चेव कामेही" ति आदिना[1] पुग्गलाधिट्ठानेन झानानि उद्दिट्ठानी ति। यदिपि विभङ्गे पुग्गलाधिट्ठाना देसना कता, अत्थो पन तत्रापि विभङ्गे पि यथा इध "इमिना च वितक्केना" ति आदिना धम्मवसेन वुत्तो, एवमेव दट्ठब्बो, परमत्थतो पुग्गलस्सेव अभावतो ति अधिप्पायो। अथ वा झानसमङ्गिनो वितक्कविचारसमङ्गितादस्सनेन झानस्सेव सवितक्कसविचारता वुत्ता ति आह "**अत्थो पन तत्रापि एवमेव दट्ठब्बो**" ति।

विवेक सद्दस्स भावसाधनतं सन्धायाह ""**तस्मा विवेका**" ति। हेतु अत्थे चेतं निस्सक्कवचनं, तस्मा विवेका हेतुभूता ति अत्थो। **विवेक**-सद्दस्स कत्तुसाधनतं कम्मसाधनतं वा सन्धायाह "**तस्मिं वा** विवेके" ति। "विवित्तो" ति हि इमिना नीवरणेहि विनाभूतो तेहि विवेचितो ति च साधनद्वयम्पि सङ्गहितमेवा ति। **पिनयती** ति तप्पेति वड्ढेति। वा **सम्पियायनलक्खणा** ति परितुस्सनलक्खणा। **पीननरसा** ति परिब्रूहनरसा। **फरणरसा** ति पणीतरूपेहि कायस्स ब्यापनरसा। उदग्गभावो **ओदग्यं**। सुखयती ति **सुखं**, अत्तना सम्पयुत्तधम्मे लद्धस्सादे करोती ति अत्थो। स्वायं कत्तुनिद्देसो परियायलद्धो धम्मतो अञ्ञस्स कत्तुनिवत्तनत्थो, निप्परियायेन पन भावसाधनमेव लब्भती ति "**सुखनं सुखं**" ति वुत्तं। **सातलक्खणं** ति इट्ठसभावत्ता तंसमङ्गीपुग्गलं, सम्पयुत्तधम्मे वा अत्तनि सादयती ति सातं द-कारस्स त-कारं कत्वा। सातं मधुरं ति वदन्ति, सात लक्खणं एतस्सा ति सातलक्खणं। **उपब्रूहनरसं** ति आदीसु उपब्रूहनं सम्पयुत्तधम्मानं संवद्धनं, दुक्खं विय अविस्सज्जेत्वा अदुक्खमसुखा विय अनज्झुपेक्खित्वा अनु अनु गण्हनं उपकारिता वा अनुग्गहो। **कत्थचो** ति पठमज्झानादिके।
B 362 **पटिलाभतुट्ठी** ति पटिलाभवसेन उप्पज्जनकतुट्ठि। **पटिलद्धरसानुभवनं** ति पटिलद्धस्स आरम्मणरसस्स अनुभवनं। एतेन पीतिसुखानि सभावतो विभजित्वा दस्सितानि। **यत्थ पीति, तत्थ सुखं** ति वितक्कस्स विय विचारेन पीतिया सुखेन अच्चन्तसंयोगमाह। **यत्थ सुखं, तत्थ न नियमतो पीती** ति विचारस्स विय वितक्केन, सुखस्स पीतिया अनच्चन्तसंयोगं। तेन अच्चन्तानच्चन्तसंयोगिताय पीतिसुखानं विसेसं दस्सेति।

कं उदकं तारेन्ति एत्था ति **कन्तारं**, निरुदकमरुट्ठानं[2]। वनमेव **वनन्तं**। **वनच्छायप्पवेसनउदकपरिभोगेसु विय सुखं** ति यथा हि पुरिसो महाकन्तारमग्गं

---

१. अभि २–२५३ पिट्ठे।

२. निरुदकमरञ्ञट्ठानं (सी०)

पटिपन्नो घम्मपरेतो तसितो पिपासितो पटिपथे पुरिसं दिस्वा "कत्थ पानीयं अत्थी" ति पुच्छेय्य, सो "अटविं उत्तरित्वाव जातस्सरवनसण्डो अत्थि, तत्थ गन्त्वा लभिस्ससी" ति वदेय्य, सो तस्स कथं सुत्वाव हट्ठपहट्ठो भवेय्य, ततो गच्छन्तो भूमियं पतितानि उप्पलदलनाळपत्तादीनि दिस्वा सुट्ठुतरं हट्ठपहट्ठो हुत्वा गच्छन्तो अल्लवत्थे अल्लकेसे पुरिसे पस्सेय्य, वनकुक्कुटवनमोरादीनं सद्दं सुणेय्य, जातस्सरपरियन्ते जातमणिजालसदिसं नीलवनसण्डं पस्सेय्य, सरे जातानि उप्पलपदुमकुमुदानि पस्सेय्य, अच्छं विपसन्नं उदकम्पि पस्सेय्य, सो भिय्यो भिय्यो हट्ठपहट्ठो हुत्वा जातस्सरं ओतरित्वा यथारुचि न्हात्वा च पिवित्वा च पस्सद्धदरथो भिसमुळालपोक्खरादीनि खादित्वा नीलुप्पलादीनि पिळन्धित्वा मन्दालवमूलानि खन्धे खिपित्वा उत्तरित्वा साटकं निवासेत्वा उदकसाटकं आतपे कत्वा सीतच्छायाय मन्दमन्दे वाते पहरन्ते निपन्नोव "अहो सुखं अहो सुखं" ति वदेय्य, एवं सम्पदमिदं दट्ठब्बं। तस्स हि पुरिसस्स जातस्सरवनसण्डसवनतो पट्ठाय याव उदकदस्सना हट्ठपहट्ठकालो विय पुब्बभागारम्मणे हट्ठपहट्ठाकारा पीति, न्हायित्वा च पिवित्वा च सीतच्छायाय मन्दमन्दे वाते पहरन्ते "अहो सुखं अहो सुखं" ति वदन्तो निपन्नकालो विय बलप्पत्तं आरम्मणरसानुभवनाकारसण्ठितं सुखं।

तस्मिं तस्मिं समये ति इट्ठारम्मणस्स पटिलाभसमये पटिलद्धस्स रसानुभवनसमये वनच्छायादीनं सवनदस्सनसमये परिभोगसमये च। **पाकटभावतो** ति यथाक्कमं पीतिसुखानं विभूतभावतो। **विवेकजं पीतिसुखं** ति एत्थ पुरिमस्मिं अत्थे B 363
विवेकजं ति झानं वुत्तं। पीतिसुखसद्दतो च अत्थिअत्थविसेसवतो **अस्स झानस्स, अस्मिं वा झाने** ति एत्थ अकारो[1] दट्ठब्बो यथा अरिससो ति[2]। दुतिये पीतिसुखमेव विवेकजं, विवेकजंपीतिसुखं ति च अञ्ञपदत्थसमासो पच्चत्तनिद्देसस्स च अलोपो कतो, लोपे वा सति "विवेकजपीतिसुखं" ति पाठो ति अयं विसेसो।

गणनानुपुब्बतो पठमं ति इमिना देसनाक्कमं उल्लिङ्गेति। "गणनानुपुब्बता पठमं "ति पि पाठो, तत्था पि गणनानुपुब्बताया ति अत्थो, गणनानुपुब्बतामत्तं वा पठमं ति इदं वचनं ति अत्थो। **पठमं समापज्जती** ति **पठमं** ति इदं पन न एकन्तलक्खणं। चिण्णवसीभावो हि अट्ठसमापत्तिलाभी आदितो पट्ठाय मत्थकं पापेन्तो पि समापज्जितुं सक्कोति, मत्थकतो पट्ठाय आदिं पापेन्तो पि समापज्जितुं सक्कोति, अनतन्रतरा ओक्कमन्तो पि सक्कोति। एवं पुब्बुप्पत्तियट्ठेन पन पठमं उप्पन्नं ति पि पठमं। तेनेव **विसुद्धिमग्गे**[3] "गणनानुपुब्बता पठमं, पठमं उप्पन्नं ति पि पठमं" ति एत्तकमेव वुत्तं। **पच्चनीकधम्मे झापेती** ति नीवरणादिपच्चनीकधम्मे दहति, विक्खम्भनवसेन पजहती ति अत्थो। **गोचरं** ति कसिणादिआलम्बनं। **तं** ति तं गोचरं। **उपनिज्झायती** ति पस्सति। **सह उपचारेना** ति सद्धिं उपचारज्झानेन। **कसिणारम्मणूपनिज्झायनतो**

१. जकारो (सी०)।   २. अरिसजो ति (सी०)
३. विसुद्धि म० १–१४५ पिट्ठे।

ति पथवीकसिणादिनो अत्तनो आरम्मणस्स रूपं विय चक्खुना उपनिज्झायनतो। **लक्खणूपनिज्झायनतो** ति यथासम्भवं अनिच्चादिलक्खणत्तयस्स निब्बानधातुया तथलक्खणस्स च उपनिज्झायनतो। तेनेवाह "एत्थ ही" ति आदि। निच्चादिविपल्लासप्पहानेन मग्गो असम्मोहतो अनिच्चादिलक्खणानि उपनिज्झायती ति लक्खणूपनिज्झानं ति आह "**विपस्सनाय उपनिज्झायनकिच्चं**" ति आदि। **तथलक्खणं** ति अविनासधम्मस्स निब्बानस्स अनञ्ञथाभावतो अविपरीतसभावो तथलक्खणं, मग्गस्सपि वा निब्बानारम्मणतो तथलक्खणूपनिज्झानता योजेतब्बा।

विसदिसोदाहरणं ताव दस्सेन्तो आह "यथा सधनो" ति आदि। **अञ्ञो अपदेसारहो होती** ति धनतो परिजनतो च अञ्ञो धनवा परिजनवा च पुरिसो सह धनेन वत्तति परिजनेन चाति सधनो सपरिजनो ति अपदेसं अरहती ति अपदेसारहो

B 364 होति, अपदिसितब्बो होती ति वुत्तं होति। **सेनङ्गेसु एव सेनासम्मुती** ति रथादिसेनङ्गविनिमुत्ताय सेनाय अभावे पि रथेहि पत्तीहि च सह वत्तनतो सरथा सपत्ति सेना ति रथादिसेनङ्गेसुयेव सेनावोहारो ति अत्थो। कस्मा पनेत्थ झानपाठे अग्गहिता चित्तेकग्गता गहिता ति अनुयोगं सन्धायाह "अवुत्तत्ता" ति आदि। **एवं वुत्तायेवा** ति एवं सरूपतो विभङ्गे वुत्तायेव। **सचित्तेकग्गतं** ति इध अवुत्ते पी ति "सचित्तेकग्गतं" ति एवं सरूपतो इमस्मिं झानपाठे अवुत्ते पी ति अत्थो, सामञ्ञतो पन झानग्गहणेन गहिता एव। तेनेवाह "**येन ही**" ति आदि। इदं वुत्तं होति—येन वितक्कादीहि सह वत्तब्बं, तं धम्मं दीपेतुं तस्स पकासनाधिप्पायेन "सवितक्कं सविचारं" ति आदिना उद्देसो कतो, सो एव अधिप्पायो तेन भगवता विभङ्गे[1] "चित्तस्सेकग्गता" ति निद्दिसन्तेन पकासितो, तस्मा सा झानपाठे अग्गहिता ति न चिन्तेतब्बं ति।

उपसम्पज्जा ति एत्थ **उप-सं** सद्दा "उपलब्भती" ति आदीसु विय निरत्थका ति दस्सेतुं "उपगन्त्वा" ति आदिं वत्वा पुन तेसं सात्थकभावं दस्सेतुं "उपसम्पादयित्वा" ति आदि वुत्तं, तस्मा **उपसम्पज्जा** ति एत्थ पत्वा साधेत्वा ति वा अत्थो। **इरियं** ति किरियं। **वुत्ति** ति आदीनि तस्सेव वेवचनानि। एकं इरियापथबाधनं इरियापथन्तरेहिरक्खणं **पालनं**। सब्बबुद्धानं आचिण्णत्ता आनापानस्सतिकम्मट्ठानमेव वुत्तं। तञ्हि सब्बबुद्धानं आचिण्णं ति वदन्ति।

पठमज्झानकथा निट्ठिता।

दुतियज्झानकथा

वूपसमा ति वूपसमहेतु। वूपसमो ति चेत्थ पहानं अधिप्पेतं, तञ्च वितक्कविचारानं अभिक्कमो अत्थतो दुतियज्झानक्खणे अनुप्पादो ति आह "**समतिक्कमा**" ति

---

१. अभि० २–२६७ पिट्ठे।

आदि। कतमेसं पनेत्थ वितक्कविचारानं वूपसमो अधिप्पेतो, किं पठमज्झानिकानं, उदाहु दुतियज्झानिकानं ति, किञ्चेत्थ—यदि पठमज्झानिकानं, नत्थि तेसं वूपसमो। न हि कदाचि पठमज्झानं वितक्कविचाररहितं अत्थि। अथ दुतियज्झानिकानं, एवम्पि B 365 नत्थेव वूपसमो सब्बेन सब्बं तेसं तत्थ अभावतो ति इमं अनुयोगं सन्धायाह **"तत्थ किञ्चा पी"** ति आदि। यस्मा दिट्ठादीनवस्स तं तं झानक्खणे अनुप्पत्तिधम्मतापादनं वूपसमनं अधिप्पेतं, वितक्कादयो एव च झानङ्गभूता तथा करीयन्ति, न तं सम्पयुत्ता फस्सादयो, तस्मा वितक्कादीनंयेव वूपसमाधिवचनं झाने आगतं[1]। यस्मा पन वितक्कादीनं विय तं सम्पयुत्तधम्मानम्पि "एतेन एतं ओळारिकं" ति आदीनवदस्सनं सुत्ते आगतं, तस्मा अविसेसेन वितक्कादीनं तं सहगतानञ्च वूपसमादिके वत्तब्बे वितक्कादीनं येव वूपसमो वुच्चमानो अधिकवचनं अञ्ञमत्थं बोधेती ति कत्वा कञ्चि विसेसं दीपेती ति दस्सेन्तो **"ओळारिकस्स पना"** ति आदिमाह। अयञ्हेत्थ अधिप्पायो—येहि वितक्कविचारेहि पठमज्झानस्स ओळारिकता, तेसं समतिक्कमा दुतियज्झानस्स समधिगमो, न सभावतो अनोळारिकानं फस्सादीनं समतिक्कमा ति अयमत्थो "वितक्कविचारानं वूपसमा" ति एतेन दीपितो, तस्मा "किं पठमज्झानिकानं वितक्कविचारानं वूपसमो इधाधिप्पेतो, उदाहु दुतियज्झानिकानं" ति एदिसी चोदना अनोकासाव। "पीतिया च विरागा" ति आदीसु पि एसेव नयो। तस्मा वितक्कविचारपीतिसुखसमतिक्कमवचनानि ओळारिकोळारिकङ्गसमतिक्कमा दुतियादिअधिगमदीपकानी ति तेसं एकदेसभूतं वितक्तविचारसमतिक्कमवचनं अवयवेन समुदायोपलक्खणनयेन तं दीपकं वुत्तं। विसुं विसुं ठिते पि हि वितक्कविचारसमतिक्कमवचनादिके पहेय्यङ्गनिद्देसतासामञ्ञेन चित्तेन समूहतो गहिते वितक्कविचारवूपसमवचनस्स तदेकदेसता होती ति। अथ वा वितक्कविचारवूपसमवचनेनेव तंसमतिक्कमा दुतियादिअधिगमदीपकेन पीतिविरागादिवचनानं पीतिआदिसमतिक्मा ततियादि अधिगमदीपकता दीपिता होती ति तस्स तंदीपकता वुत्ता। एवञ्हि अवयवेन समुदायोपलक्खणं विना वितक्कविचारवूपसमवचनेन पीतिविरागादिवचनानं सविसये समानब्यापारता दस्सिता होति।

अज्झत्तं ति नियकज्झत्तं अधिप्पेतं, न अज्झत्तज्झत्तादी ति दस्सेन्तो आह **"अज्झत्तं ति नियकज्झत्तं अधिप्पेतं"** ति। तत्थ कारणमाह **"विभङ्गे पना"** ति आदि। B 366
पन-सद्दो पि अपि सद्दत्थो, विभङ्गे पी ति अत्थो। अयमेव वा पाठो।

नीलवण्णयोगतो नीलवत्थं विया ति नीलयोगतो वत्थं नीलं विया ति अधिप्पायो। **इममिञ्च अत्थविकप्पे** ति "चेतो[2] सम्पसादयती" ति एतस्मिं पक्खे। **चेतसो** ति च उपयोगत्थे सामिवचनं। **पुरिमस्मिं** ति "सम्पसादनयोगतो झानम्पि सम्पसादनं" ति वुत्तपक्खे। **चेतसो** ति सम्बन्धे सामिवचनं। "याव न परे एकगते[3] करोमी" ति—

---

१. आयागतं (विसुद्धिमग्गटीकायं पथवीकसिणनिद्देसवण्णानायं)।

२. चेतसो (क०)।

३. एकाहन्ते (विसुद्धिमग्गटीकायं पथवीकसिणनिद्देसवण्णनायं)।

आदीसु सेट्ठवचनो पि एकसद्दो लोके दिस्सती ति आह **"सेट्ठो पि हि लोके एको ति वुच्चती"** ति। "एकाकी हि[1] खुद्दकेहि जितं" ति आदीसु असहायत्थो पि एकसद्दो दिट्ठो ति आह **"एको असहायो हुत्वा"** ति। सद्धादयो पि कामं सम्पयुत्तधम्मानं साधारणतो च असाधारणतो च पच्चया होन्तियेव, समाधि पन झानक्खणे सम्पयुत्तधम्मानं अविक्खेपलक्खणे इन्दट्ठकरणेन सातिसयं पच्चयो होती ति दस्सेन्तो **"सम्पयुत्तधम्मे····पे०····अधिवचनं"** ति आह।

"सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं" ति विसेसनद्वयं झानस्स अतिसयवचनिच्छावसेन गहितं। स्वायमतिसयो यथा इमस्मिं झाने लब्भति, न तथा पठमज्झाने ति इमं विसेसं दस्सेतुं **"ननु चा"** ति आदि वुत्तं। आरम्मणे आहननपरियाहननवसेन अनुमज्जनअनुयुज्जनवसेन च पवत्तमाना धम्मा सति पि नीवरणप्पहानेन किलेसकालुस्सियापगमे सम्पयुत्तानं किञ्चि खोभं करोन्ता विय तेहि च ते न सन्निसिन्ना होन्ती ति वुत्तं **"वितक्कविचारक्खोभेन····पे०····न सुप्पसन्नं** ति। तत्थ खुद्दिका ऊमियो **वीचियो,** महतियो **तरङ्गा। समाधि पि न सुट्ठु पाकटो** ति सति पि इन्द्रियसमत्ते वीरियसमताय च तेनेव खो तेन सम्पसादाभावेन च बहले विय जले मच्छो समाधि पि न सुट्ठु पाकटो। **वितक्कविचारपलिबोधाभावेना** ति एत्थ यथावुत्तखोभो एव पलिबोधो। **एवं वुत्तेना** ति यस्सा सद्धाय वसेन सम्पसादनं, यस्सा च चित्तेकग्गताय वसेन एकोदिभावं ति च झानं वुत्तं, तासं एव "सद्दहना" ति आदिना[2] पवत्तिआकारविसेसविभावनवसेन
B 367 वुत्तेन तेन विभङ्गपाठेन। **अयं अत्थवण्णना** ति "सम्पसादनयोगतो, सम्पसादनतो वा सम्पसादनं। एकोदिं भावेती ति एकोदिभावं ति झानं वुत्तं" ति एवं पवत्ता अयं अत्थवण्णना। **अञ्ञदत्थु संसन्दति चेव समेति च, एवं वेदितब्बा** ति कथं पनायं अत्थवण्णना तेन विभङ्गपाठेन सद्धिं संसन्दति समेति, ननु झानविभङ्गे "सम्पसादनं" ति पदं उद्धरित्वा "या सद्धा सद्दहना" ति आदिना सद्धायेव वुत्ता। "चेतसो एकोदिभावं" ति च पदं उद्धरित्वा "या चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिती" ति आदिना समाधिस्सेव निद्देसो कतो, अट्ठकथायं पन "सम्पसादनं एकोदिभावं" ति झानमेव वुत्तं ति अट्ठकथाय विभङ्गपाठेन सद्धिं विरोधो आपज्जती ति ? नापज्जति विभङ्गे पि इमिनाव अधिप्पायेन निद्देसस्स कतत्ता। तथा हि येन सम्पसादनेन योगा झानं "सम्पसादनं" ति वुच्चति, तस्मिं "या सद्धा सद्दहना" ति आदिना दस्सिते सम्पसादनं झानं ति समानाधिकरणनिद्देसेनेव तंयोगा झाने तंसद्दप्पवत्ति दस्सिता होति। "एकोदिभावं" ति च पदं उद्धरित्वा एकोदिम्हि दस्सिते एकोदिभावं झानं ति समानाधिकरणनिद्देसे नेव झानस्स एकोदिवड्ढनता वुत्ताव होती ति इमिना अधिप्पायेन ब्यञ्जनविचारं अकत्वा धम्ममत्तमेव निद्दिट्ठं ति अविरोधो युत्तो।

यं पन वुत्तं टीकाकारेहि आचरियधम्मपालत्थेरादीहि "यदि एकोदी ति समाधिस्स गहणं अधिप्पेतं, तदा 'एकोदिभावं' ति पदं उद्धरित्वा समाधिस्स निद्देसो

---

१. एककाहि (क०)। २. अभि २-२६८ पिट्ठे।

न कत्तब्बो सिया। तस्मा एकोदिभावसद्दो एव समाधिम्हि पवत्तो सम्पसादनसद्दो विय झाने पवत्तती ति युत्तं" ति, तं अट्ठकथाय विरुज्झति। तस्मा सो अट्ठकथानिरपेक्खो विसुंयेवेको अत्थविकप्पो ति गहेतब्बं। अयञ्हि नेसं अधिप्पायो—वितक्कविचारेहि अनज्झारूळ्हत्ता एकं उदेती ति एकोदी ति तथाविधसमाधियुत्तं झानचित्तमेव गहेत्वा एकोदिस्स भावो एकोदिभावो ति समाधिस्स गहणं सक्का वुत्तं ति। यो पनायं तेसमभिनिवेसो "एकोदी ति समाधिस्स गहणे सति 'एकोदिभावं' ति पदं उद्धरित्वा समाधिस्स निद्देसो न कतब्बो सिया" ति, सो अनेकन्तिकत्ता अयुत्तो। अञ्ञत्थ पि हि ब्यञ्जनविचारं अकत्वा अत्थमत्तस्सेव बाहुल्लेन विभङ्गे निद्देसो दिस्सति।

सन्ता ति समं निरोधं गता। **समिता** ति भावनाय समं गमिता निरोधिता। B 368
वूपसन्ता ति ततो एव सुट्ठु उपसन्ता। **अत्थङ्गता** ति अत्थं विनासं गता। **अब्भत्थङ्गता** ति उपसग्गेन पदं वड्ढेत्वा वुत्तं। **अप्पिता** ति गमिता विनासं गता। **सोसिता** ति पवत्तिसङ्खातस्स सन्तानस्स अभावेन सोसं सुक्खभावं गता। **ब्यन्तीकता** ति विगतन्ता कता।

अयमत्थो ति भावनाय पहीनत्ता वितक्कविचारानं अभावसङ्खातो अत्थो। चोदकेन वुत्तमत्थं सम्पटिच्छित्वा परिहरितुं "**एवमेतं सिद्धो वायमत्थो**" ति वत्वा "**नतुपनेतं**" ति आदि वुत्तं। तत्थ **एतं** ति "वितक्कविचारानं वूपसमा" ति एतं वचनं। **तदत्थदीपकं** ति तस्स वितक्कविचारभावमत्तसङ्खातस्स अत्थस्स दीपकं। **न किलेसकालुस्सियस्सा** ति उपचारक्खणे विय नीवरणसङ्खातस्स किलेससङ्खोभस्स वूपसमा न सम्पसादनं ति अत्थो। ननु च "**पुरिमं वत्वा पि वत्तब्बमेवा**" ति इदं कस्मा वुत्तं। तथा हि दुतियज्झानादि अधिगमूपायदीपकेन अज्झत्तं सम्पसादनताय चेतसो एकोदिभावताय च हेतुदीपकेन अवितक्कअविचारभावहेतुदीपकेन च वितक्कविचारवूपसमवचनेनेव वितक्कविचाराभावो दीपितो ति, किं पुन अवितक्कअविचारवचनेन कतेना ति ? न, अदीपितत्ता। न हि वितक्कविचारवूपसमवचनेन वितक्कविचारानं अप्पवत्ति वुत्ता होति। वितक्कविचारेसु हि तण्हाप्पहानं एतेसं वूपसमनं। ओळारिकङ्गमुखेन हि तं तं झाननिकन्तिया विक्खम्भनं वितक्कविचारवूपसमवचनादीहि पकासितं। यतो वितक्कविचारेसु विरत्तभावदीपकं वितक्कविचारवूपसमवचनं, ये च सङ्खारेसु तण्हाप्पहानं करोन्ति, तेसु मग्गेसु पहीनतण्हेसु च फलेसु सङ्खारप्पवत्ति होति, एवमिधा पि विक्खम्भितवितक्कविचारतण्हस्स दुतियज्झानस्स वितक्कविचारसम्पयोगो पुरिमेन न निवारितो सिया ति तन्निवारणत्थं आवज्जितुकामतादिअतिक्कमो च तेसं वूपसमो ति दस्सनत्थञ्च "**अवितक्कं अविचारं**" ति वुत्तं। पठमज्झानं दुतियज्झानस्स उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो होती ति आह "**पठमज्झानसमाधितो**" ति। **पठमम्पी** ति पठमज्झानम्पि।

गणनानुपुब्बतो ति आदि हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। एत्था पि "दुतियं उप्पन्नं ति पि दुतियं" ति वत्तुं वट्टतियेव। वुत्तमेवत्थं विभङ्गपाठेन साधेन्तो आह "यथाहा"

B 369 ति आदि। यं पन **विभङ्गे**[1] "झानं ति सम्पसादो पीति सुखं चित्तस्सेकग्गता" ति वुत्तं, तं सपरिक्खारं झानं दस्सेतुं परियायेन वुत्तं। रथस्स पण्डुकम्बलं विय हि सम्पसादो झानस्स परिक्खारो, न झानङ्गं ति आह "**परियायोयेव चेसो**" ति। निप्परियायतो पन उपनिज्झानलक्खणप्पत्तानं अङ्गानं वसेन तिवङ्गिकमेवेतं होती ति आह "**सम्पसादनं पन ठपेत्वा**" ति आदि।

दुतियज्झानकथा निट्ठिता

ततियज्झानकथा

विरज्जनं विरागो। तं पन विरज्जनं निब्बिन्दनमुखेन हीळनं वा तप्पटिबद्ध-रागप्पहानं वा ति दस्सेतुं "**तस्सा पीतिया जिगुच्छनं वा समतिक्कमो वा**" ति वुत्तं। **उभिन्नमन्तरा** ति **पीतिया विरागा** ति इमेसं द्विन्नं पदानं अन्तरा, मज्झे ति अत्थो। **सम्पिण्डनं** समुच्चयो। मग्गो ति उपायो। दुतियज्झानस्स हि पटिलाभं विना ततियज्झानस्स अधिगमो न होती ति वितक्कविचारानं वूपसमो ततियज्झानाधिगमस्स उपायो। **तदधिगमाया** ति ततियमग्गाधिगमाय।

उपपत्तितो ति समवाहितभावेन पतिरूपतो झानुपेक्खा पि समवाहितमेव अन्तोनीतं कत्वा पवत्तती ति आह "**समं पस्सती**" ति। **विसदाया** ति संकिलेसविगमेन परिब्यत्ताय। **विपुलाया** ति सातिसयं महग्गतभावप्पत्तितो महतिया। **थामगताया** ति पीतिविगमेन थिरभावप्पत्ताय। ननु चेत्थ उपेक्खावेदनाव न सम्भवति, तस्मा कथमयं ततियज्झानसमङ्गी उपेक्खाय समन्नागतत्ता "उपेक्खतो" ति वुच्चती ति चे? न केवलं वेदनुपेक्खाव उपेक्खा ति वुच्चति, अथ खो अञ्ञा पि उपेक्खा विज्जन्ती ति दस्सेन्तो आह "**उपेक्खा पन दसविधा होति**" ति आदि। तत्थ[1] "इध भिक्खवे[2] भिक्खु चक्खुना रूपं दिस्वा नेव सुमनो होति न दुम्मनो, उपेक्खको विहरति सतो सम्पजानो" ति[3] एवमागता खीणासवस्स छसु द्वारेसु इट्ठानिट्ठ छळारम्मणापाथे परिसुद्धपकतिभावाविजहनाकारभूता उपेक्खा **छळङ्गुपेक्खा** नाम।

B 370 या पन "उपेक्खासहगतेन चेतसा एकं दिसं फरित्वा विहरती" ति[4] एवमागत सत्तेसु मज्झत्ताकारभूता उपेक्खा, अयं **ब्रह्मविहारुपेक्खा** नाम।

या "उपेक्खासम्बोज्झङ्गं भावेति विवेकनिस्सितं" ति[5] एवमागता सहजात-धम्मानं मज्झत्ताकारभूता उपेक्खा, अयं **बोज्झङ्गुपेक्खा** नाम।

---

१. अभि॰ ट्ठ॰ १-२१६, विसुद्धि॰ १-१५५ पिट्ठादीसु पि पस्सितब्बं।

२. खीणासवो (सब्बत्थ)

३. अं. २-२४७ पिट्ठे।

४. दी. ३-१८७ पिट्ठे।

५. म. १-१४, सं. ३-५८, ६५ पिट्ठेसु।

या पन "कालेन कालं उपेक्खानिमित्तं मनसि करोती ति"[1] एवमागता अनच्चारद्ध-नातिसिथिलवीरियसङ्खाता उपेक्खा, अयं **वीरियुपेक्खा** नाम ।

या—

"कति सङ्खारुपेक्खा समथवसेन उप्पज्जन्ति, कति सङ्खारुपेक्खाविपस्सनावसेन उपज्जन्ति ? अट्ठ सङ्खारुपेक्खा समथवसेन उप्पज्जन्ति, दस सङ्खारुपेक्खा विप-स्सानवसेन उप्पज्जन्ति ।

कतमा अट्ठ सङ्खारुपेक्खा समथवसेन उप्पज्जन्ति ? पठमज्झानपटिलाभत्थाय नीवरणे पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, दुतियज्झानपटिलाभत्थाय वितक्कविचारे पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, ततियज्झानपटिला-भत्थाय पीतिं पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, चतुत्थज्झानपटिला-भत्थाय सुखदुक्खे पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, आकासानञ्चा-यतनसमापत्ति पटिलाभत्थाय रूपसञ्ञं पटिघसञ्ञं नानत्तसञ्ञं पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, विञ्ञाणञ्चायतनसमापत्तिपटिलाभत्थाय आकासानञ्चायतनसञ्ञं पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्ति पटिलाभत्थाय विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञं पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्ति पटिला-भत्थाय आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञं पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, इमा अट्ठ सङ्खारुपेक्खा समथवसेन उप्पज्जन्ति ।

कतमा दस सङ्खारुपेक्खा विपस्सनावसेन उप्पज्जन्ति ? सोतापत्तिमग्ग B 371
पटिलाभत्थाय उप्पादं पवत्तं निमित्तं आयूहनं पटिसन्धिं गतिं निब्बत्तिं उपपत्तिं जातिं जरं ब्याधिं मरणं सोकं परिदेवं उपायासं पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, सोतापत्तिफलसमापत्तत्थाय उप्पादं पवत्तं निमित्तं आयूहनं पटिसन्धिं पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, सकदागामिमग्ग-पटिलाभत्थाय....पे०....सकदागामिफलसमापत्तत्थाय....पे०....अनागामिमग्गपटि-लाभत्थाय....पे०....अनागामिफलसमापत्तत्थाय....पे०....अरहत्तमग्गपटिलाभत्थाय उप्पादं पवत्तं निमित्तं आयूहनं पटिसन्धिं गतिं निब्बत्तिं उपपत्तिं जातिं जरं ब्याधिं मरणं सोकं परिदेवं उपायासं पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, अरहत्तफलसमापत्तत्थाय....पे०....सुञ्ञतविहारसमापत्तत्थाय....पे०....अनिमित्त-विहारसमापत्तत्थाय उप्पादं पवत्तं निमित्तं आयूहनं पटिसन्धिं पटिसङ्खा सन्तिट्ठना-पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, इमा दस सङ्खारुपेक्खा विपस्सनावसेन उप्पज्जन्ती" ति[1]—

एवमागता नीवरणादिपटिसङ्खासन्तिट्ठनाकारभूता उपेक्खा, अयं **सङ्खारुपेक्खा** नाम ।

---

१. अं १-२५८ पिट्ठे ।   १. खु० ९-६२ पिट्ठे पटिसम्भिदामग्गे ।

तत्थ[1] **नीवरणे पटिसङ्खा** ति पञ्च नीवरणानि पहातब्बभावेन पटिसङ्खाय, परिग्गहेत्वा ति अत्थो। **सन्तिट्ठना** ति नीवरणानं पहानाभिमुखीभूतत्ता तेसं पहाने पि अब्यापारभावूपगमनेन मज्झत्तताय सन्तिट्ठना। **सङ्खारुपेक्खासू** ति नीवरणप्पहाने ब्यापाराकरणेन नीवरणसङ्खातानं सङ्खारानं उपेक्खनासू ति अत्थो। एस नयो **वितक्कविचारदीसु उप्पादा**दीसु च। तत्थ **उप्पादं** ति पुरिमकम्मपच्चया खन्धानं इध उप्पत्तिमाह। **पवत्तं** ति तथा उप्पन्नस्स पवत्ति। **निमित्तं** ति सब्बम्पि तेभूमकं सङ्खारगतं निमित्तभावेन उपट्ठानतो। **आयूहनं** ति आयतिं पटिसन्धिहेतुभूतं कम्मं। **पटिसन्धी** ति अयतिं उपपत्ति। **गतिं** ति याय गतिया सा पटिसन्धि होति। **निब्बत्ति** ति खन्धानं निब्बत्तनं **उपपत्ति** ति विपाकप्पवत्ति। **जातिं** ति जरादीनं पच्चयभूतं भवपच्चया जाति। **जरामरणादयो** पाकटा एव।

B 372 एत्थ च उप्पादादयो पञ्चेव सङ्खारुपेक्खाञाणस्स विसयवसेन वुत्ता, सेसा तेसं वेवचनवसेन। निब्बत्ति जाती ति इदञ्हि द्वयं उप्पादस्स चेव पटिसन्धिया च वेवचनं। गति उपपत्ति चाति इदं द्वयं पवत्तस्स, जरादयो निमित्तस्सा ति वेदितब्बं। ननु चेत्थ चतूसु मग्गवारेसु "उप्पादं" ति आदीनि पञ्च मूलपदानि, "गती" ति आदीनि दस वेवचनपदानी ति पन्नरस पदानि वुत्तानि, छसु पन फलसमापत्तिवारेसु पञ्च मूलपदानेव वुत्तानि, तं कस्मा ति चे? सङ्खारुपेक्खाय तिक्खभावे सति किलेसप्पहानसमत्थस्स मग्गस्स सब्भावतो तस्सा तिक्खभावदस्सनत्थं वेवचनपदेहि सह दळ्हं कत्वा मूलपदानि वुत्तानि। फलस्स निरुस्साहभावेन सन्तसभावत्ता मग्गायत्तत्ता च मन्दभूता पि सङ्खारुपेक्खा फलस्स पच्चयो होती ति दस्सनत्थं मूलपदानेव वुत्तानी ति वेदितब्बानि।

तत्थ "सोतापत्तिमग्गपटिलाभत्थाया" ति आदीसु चतूसु मग्गवारेसु सुञ्ञता-निमित्तप्पणिहितमग्गानं अञ्ञतरो वुत्तो। "सोतापत्तिफलसमापत्तत्थाया" ति आदीसु चतूसू फलवारेसु पन अप्पणिहितफलसमापत्ति वेदितब्बा। कस्मा? सुञ्ञतविहारसमापत्तत्थाय अनिमित्तविहारसमापत्तत्थाया ति इतरासं द्विन्नं फलसमापत्तीनं विसुं वुत्तत्ता। अनिच्चानुपस्सनावुट्ठानवसेन हि अनिमित्तमग्गो, तथेव फलसमापत्तिकाले अनिमित्तफल-समापत्ति, दुक्खानुपस्सनावुट्ठानवसेन अप्पणिहितमग्गफलसमापत्तियो, अनत्तानुपस्सना-वुट्ठानवसेन सुञ्ञतमग्गफलसमापत्तियो सुत्तन्तनयेन वेदितब्बा। एवञ्च कत्वा सुञ्ञता-दिविमोक्खवसेन मग्गुप्पत्तिहेतुभूता चतस्सो, तथा अप्पणिहितफलसमापत्तिया चतस्सो, सुञ्ञतविहारअनिमित्तविहारवसेन द्वेति दस सङ्खारुपेक्खाविपस्सनापञ्ञा वुत्ता, समथसङ्खारुपेक्खा पन अप्पनावीथिया आसन्नपुब्बभागे बलप्पत्तं भावनामयञाणं।

या पन "यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं" ति[2] एवमागता अदुक्खमसुखसञ्ञिता उपेक्खा, अयं **वेदनुपेक्खा** नाम।

---

१. पटिसं० ट्ठ १-२५१ पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।

२. अभि. १-४० पिट्ठे।

या "यदत्थि यं भूतं, तं पजहति, उपेक्खं पटिलभती" ति[1] एवमागता विचिनने मज्झत्तभूता उपेक्खा, अयं **विपस्सनुपेक्खा** नाम।

तत्थ **यदत्थि यं भूतं** ति खन्धपञ्चकं, त मुञ्चितुकम्यताञाणेन पजहति। **उपेक्खं पटिलभती** ति दिट्ठसोवत्तिकत्तयस्स[2] सप्पस्स लक्खणविचिनने विय दिट्ठलक्खणत्तयस्स खन्धपञ्चकस्स सङ्खारलक्खणविचिनने उपेक्खं पटिलभती ति अत्थो। B 373

या पन छन्दादीसु येवापनकेसु आगता सहजातानं समप्पवत्तिहेतुभूता उपेक्खा, अयं **तत्रमज्झत्तुपेक्खा** नाम।

या "उपेक्खको च विहरती" ति[3] एवमागता अग्गसुखे पि तस्मिं अपक्खपातजननी उपेक्खा, अयं **झानुपेक्खा** नाम।

या पन "उपेक्खासतिपारिसुद्धि चतुत्थं झानं" ति[2] एवमागता सब्बपच्चनीकपरिसुद्धा पच्चनीकवूपसमने पि अब्यापारभूता उपेक्खा, अयं **पारिसुद्धुपेक्खा** नाम।

तत्थ छळङ्गुपेक्खा च ब्रह्मविहारुपेक्खा च बोज्झङ्गुपेक्खा च तत्रमज्झत्तुपेक्खा च झानुपेक्खा च पारिसुद्धुपेक्खा च अत्थतो एका तत्रमज्झत्तुपेक्खाव होति। तेन तेन अवत्थाभेदेन पनस्सा अयं भेदो एकस्सपि सतो सत्तस्स कुमारयुवथेरसेनापतिराजादिवसेन भेदो विय। तस्मा तासु यत्थ छळङ्गुपेक्खा, न तत्थ बोज्झङ्गुपेक्खादयो, यत्थ वा पन बोज्झङ्गुपेक्खा, न तत्थ छळङ्गुपेक्खादयो होन्ती ति वेदितब्बा। यथा चेतासं अत्थतो एकीभावो, एवं सङ्खारुपेक्खाविपस्सनुपेक्खानम्पि। पञ्ञा एव हि सा किच्चवसेन द्विधा भिन्ना। यथा हि पुरिसस्स सायं गेहं पविट्ठं सप्पं अजपददण्डं गहेत्वा परियेसमानस्स तं थुसकोट्ठके निपन्नं दिस्वा "सप्पो नु खो, नो" ति अवलोकेन्तस्स सोवत्तिकत्तयं दिस्वा निब्बेमतिकस्स "सप्पो, न सप्पो" ति विचिनने मज्झत्तता होति, एवमेव या आरद्धविपस्सकस्स विपस्सनाञाणेन लक्खणत्तये दिट्ठे सङ्खारानं अनिच्चभावादिविचिनने मज्झत्तता उप्पज्जति, अयं **विपस्सनुपेक्खा**। यथा पन तस्स पुरिसस्स अजपदेन दण्डेन गाळ्हं सप्पं गहेत्वा "किन्ताहं इमं सप्पं अविहेठेन्तो अत्तानञ्च इमिना अडंसापेन्तो मुञ्चेय्यं" ति मुञ्चनाकारमेव परियेसतो गहणे मज्झत्तता होति, एवमेव या लक्खणत्तयस्स दिट्ठता आदित्ते विय तयो भवे पस्सतो सङ्खारग्गहणे मज्जत्तता, अयं **सङ्खारुपेक्खा**। इति विपस्सनुपेक्खाय B 374
सिद्धाय सङ्खारुपेक्खा पि सिद्धाव होति। इमिना पनेसा विचिननगहणेसु मज्झत्तसङ्खातेन किच्चेन द्विधा भिन्ना। वीरियुपेक्खा पन वेदनुपेक्खा च अञ्ञमञ्ञञ्च अवसेसाहि च अत्थतो भिन्ना एवा ति।

---

१. म० ३-५१, अं० २-४५० पिट्ठेसु। २. दिट्ठसोवत्थिकत्तयस्स (स्या०)।

३. दी० १ ७१, अभि० १-४५ पिट्ठेसु।

इमासं पन दसन्नम्पि उपेक्खानं भूमिपुग्गलादिवसेन विभागो तत्थ तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बो ति दस्सेन्तो आह "**एवमयं दसविधा पी**" ति आदि। तत्थ **भूमिपुग्गलचित्तारम्मणतो** ति "छळङ्गुपेक्खा कामावचरा, ब्रह्मविहारुपेक्खा रूपावचरा" ति एवमादिना **भूमितो**। "छळङ्गुपेक्खा खीणासवस्सेव, ब्रह्मविहारुपेक्खा तिण्णम्पि पुथुज्जनसेक्खासेक्खानं" ति एवमादिना **पुग्गलतो**। "छलङ्गुपेक्खा सोमनस्सुपेक्खासहगतचित्तसम्पयुत्ता" ति आदिना **चित्ततो**। छळङ्गुपेक्खा छळारम्मणा, ब्रह्मविहारुपेक्खा धम्मारम्मणा" ति आदिना **आरम्मणतो**। **खन्धसङ्गहएकक्खणकुसलत्तिकसङ्खेपवसेना** ति "वेदनुपेक्खा वेदनाक्खन्धेन सङ्गहिता, इतरा नव सङ्खारक्खन्धेना" ति **खन्धसङ्गहवसेन**। छळङ्गुपेक्खा ब्रह्मविहारबोज्झङ्गझानपारिसुद्धितत्रमज्झत्तुपेक्खा च अत्थतो एका, तस्मा एकक्खणे तासु एकाय सति न इतरा, तथा सङ्खारुपेक्खाविपस्सनुपेक्खा पि वेदितब्बा, वेदनावीरियुपेक्खानं एकक्खणे सिया उप्पत्ती ति एवं **एकक्खणवसेन**। छळङ्गुपेक्खा अब्याकता, ब्रह्मविहारुपेक्खा कुसलाब्याकता, तथा सेसा, वेदनुपेक्खा पन सिया अकुसला पी ति एवं **कुसलत्तिकवसेन**। दसपेता सङ्खेपतो चत्तारोव धम्मा वीरियवेदनातत्रमज्झत्तताञाणवसेना ति एवं **सङ्खेपवसेन**।

इदानि इधाधिपेताय झानुपेक्खाय लक्खणादिं निद्धारेत्वा दस्सेन्तो आह "**लक्खणादितो पना**" ति आदि। तत्थ **अनाभोगरसा** ति पणीतसुखे पि तस्मिं अवनतिपटिपक्खकिच्चा ति[1] अत्थो। **अब्यापारपच्चुपट्ठाना** ति सति पि सुखपारमिप्पत्तियं तस्मिं सुखे अब्यावटा हुत्वा पच्चुपतिट्ठति, सम्पयुत्तानं वा तत्थ अब्यापारानं पच्चुपट्ठपेती ति अत्थो। सम्पयुत्तधम्मानं खोभं उप्पिलवञ्च आवहन्तेहि वितक्कादीहि अभिभूतत्ता अपरिब्यत्तं तत्थ तत्रमज्झत्तताय किच्चं, तदभावतो इध परिब्यत्तं ति आह "**अपरिब्यत्तकिच्चतो**" ति। तेनेवाह "अपरिब्यत्तं ही" ति आदि।

B 375 **इदानि सतो च सम्पजानो** ति एत्थ "वुच्चती" ति अज्झाहरितब्बं। **सरती** ति इमिना 'सतो" ति पदस्स कत्तुसाधनतमाह। **सम्पजानाती** ति सम्मदेव पजानाति। **पुग्गलेना** ति पुग्गलाधिट्ठानेन। सरणं चिन्तनं उपट्ठानं लक्खणमेतिस्सा ति **सरणलक्खणा**। सम्मुस्सनपटिपक्खो असम्मुस्सनं किच्चं एतिस्सा ति **असम्मुस्सनरसा**। किलेसेहि आरक्खा हुत्वा पच्चुपतिट्ठति, ततो वा आरक्खं पच्चुपट्ठपेती ति **आरक्खपच्चुपट्ठाना**। असम्मुय्हनं सम्मदेव पजाननं, सम्मोहपटिपक्खो वा असम्मोहो लक्खणमेतस्सा ति **असम्मोहलक्खणं**। **तीरणं** किच्चस्स पारगमनं। **पविचयो** वीमंसा। कामं उपचारज्झानादिं उपादाय पठमदुतियज्झानानि पि सुखुमानेव, इमं पन उपरिमज्झानं उपादाय "**ओळारिकत्ता पन तेसं झानानं**" ति वुत्तं, सा च ओळारिकता वितक्कादिथूलङ्गताय वेदितब्बा। केचि "बहुचेतसिकताया" ति च वदन्ति। **भूमियं विय पुरिसस्सा** ति पुरिस्स भूमियं गति विया ति वुत्तं होति। **गति सुखा होती** ति तेसु झानेसु

---

१. अच्चन्तपटिपक्खकिच्चा ति (स्या०)।

गति सुखा होति। **अञ्ञत्तं तत्थ सतिसम्पजञ्ञकिच्चं** ति "इदं नाम दुक्करं करीयती" ति वत्तब्बस्स अभावतो वुत्तं। **ओळारिकङ्गप्पहानेन पन सुखुमत्ता** ति अयमत्थो कामं दुतियज्झाने पि सम्भवति, तथापि येभुय्येन अविप्पयोगीभावेन वत्तमानेसु पीतिसुखेसु पीतिसङ्खातस्स ओळारिकङ्गस्स पहानेन सुखुमताय इध सातिसयो सतिपञ्ञाब्यापारो ति वुत्तं "**पुरिसस्सा**" ति आदि। धेनुं पिवती ति **धेनुपगो**[1], धेनुया खीरं पिवन्तो ति वुत्तं होति। **पुनदेव पीतिं उपगच्छेय्या** ति हानभागियं झानं सिया, दुतियज्झानमेव सम्पज्जेय्या ति अत्थो। तेनाह "**पीतिसम्पयुत्तमेव सिया**" ति। **इदञ्च अतिमधुरं सुखं** ति ततियज्झाने सुखं सन्धायाह, अतिमधुरता चस्स पहासोदग्यसभावाय पीतिया अभावेनेव वेदितब्बा। **इदं** ति "सतो सम्पजानो" ति पदद्वयं।

सुखञ्च कायेन पटिसंवेदेसि ति एत्थ कथमाभोगेन विना सुखपटिसंवेदना ति आह "किञ्चापी" ति आदि। यस्मा तस्स नामकायेन सम्पयुत्तं सुखं, तस्मा एतमत्थं दस्सेन्तो "सुखञ्च कायेन पटिसंवेदेसि" ति आहा ति योजेतब्बं। अयं पनेत्थ सङ्खेपत्थो– "सुखं वेदयामी" ति एवमाभोगे असति पि नामकायेन चेतसिकसुखं, कायिकसुखहेतु B 376
रूपासमुट्ठापनेन कायिकसुखञ्च झानसमङ्गी पटिसंवेदेती ति वुच्चती ति। **तस्सा** ति झानसमङ्गिनो। **यं वा तं** ति यं वा तं यथावुत्तं नामकायसम्पयुत्तं सुखं। **तं समुट्ठानेना** ति ततो समुट्ठितेन अतिपणीतेन रूपेन अस्स झानसमङ्गिनो रूपकायो यस्मा फुटो, तस्मा एतमत्थं दस्सेन्तो ति सम्बन्धितब्बं। **यस्सा** ति रूपकायस्स। **फुटत्ता** ति ब्यापितत्ता ति अत्थो। यथा हि उदकेन फुट्ठसरीरस्स तादिसे फोट्ठब्बे फुट्ठे सुखं उप्पज्जति, एवं एतेहि झानचित्तसमुट्ठितेहि रूपेहि फुट्ठसरीरस्स। **झाना वुट्ठितो पी** ति झानम्हा वुट्ठितो पि। **सुखं पटिसंवेदेय्या** ति चित्तसमुट्ठितरूपेहि अवसेसतिसमुट्ठितरूपसङ्घट्टनेन उप्पन्नकायविञ्ञाणेन कायिकं सुखं पटिसंवेदेय्य। **एतमत्थं** ति वुत्तनयेन चेतसिककायिकसुखपटिसंवेदनसङ्खातं अत्थं।

यं ति हेतुअत्थे निपातो, यस्मा ति अत्थो। तेनाह "**यं झानहेतु**" ति। **आचिक्खन्ती** ति आदीनि पदानि कित्तनत्थानी ति अधिप्पायेनाह "**पसंसन्ती ति अधिप्पायो**" ति। **किन्ती** ति पसंसनाकारपुच्छा। **सुख पारमिप्पत्ते** ति सुखस्स परमं परियन्तं पत्ते। **सुखाभिसङ्गेना** ति सुखस्मि आलयेन। एदिसेसु ठानेसु सतिग्गहणेनेव सम्पजञ्ञम्पि गहितं होती ति इध पाळियं सतिया एव गहितत्ता एवं उपट्ठितस्सतिताय सतिमा इच्चेव वुत्तं, सम्पजानो ति हेट्ठा वुत्तत्ता वा। **असंकिलिट्ठं** ति किलेसेहि असम्मिस्सत्ता असंकिलिट्ठं। झानक्खणे निप्परियायतो चेतसिकसुखमेव लब्भती ति "**सुखं नामकायेन पटिसंवेदेती**" ति वुत्तं। **ततियं ति गणनानुपुब्बतो ततियं** ति आदि हेट्ठा वुत्तनयानुसारेन वेदितब्बं।

ततियज्झानकथा निट्ठिता।

---

१. धेनुपको (स्या०)।

चतुत्थज्झानकथा

"पुब्बेवा" ति वुत्तत्ता **"कदा पन नेसं पहानं होती"** ति चोदनं समुट्ठापेत्वा आह **"चतुन्नं झानानं उपचारक्खणे"** ति। एव वेदितब्बं ति सम्बन्धो। **पहानक्कमेन अवुत्तानं** ति एत्थ **पहानक्कमो** नाम पहायकधम्मानं उप्पत्तिपटिपाटि। तेन पन वुच्चमाने "दुक्खं दोमनस्सं सुखं सोमनस्सं" ति वत्तब्बं सिया, कस्मा इतो अञ्ञथा
B 377 वचनं ति आह **"इन्द्रियविभङ्गे"** ति आदि। **उद्देसक्कमेना** ति "सुखिन्द्रियं दुक्खिन्द्रियं सोमनस्सिन्द्रियं दोमनस्सिन्द्रियं" ति एवं पवत्त उद्देसक्कमेन।

अथ कस्मा झानेस्वेव निरोधो वुत्तो ति सम्बन्धो। **कत्थ चुप्पन्नं** दुक्खिन्द्रियं ति अत्तनो पच्चयेहि उप्पन्नं अविक्खम्भितं दुक्खिन्द्रियं। **कत्थ च अपरिसेसं निरुज्झती** ति निरोधट्ठानं निरोधकारणं पुच्छति। तेन **कत्था** ति पुच्छाय **एत्था** ति विस्सज्जने पि हेतुम्हि भुम्मवचनं दट्ठब्बं। झानानुभावनिमित्तञ्हि अनुप्पज्जन्तं दुक्खिन्द्रियं अपरिसेसं निरुज्झती ति वुत्तं। **अतिसयनिरोधो** सुट्ठु पहानं उजुपटिपक्खेन वूपसमो। **निरोधो** पहानमत्तं। **नानावज्जने** ति येन आवज्जनेन अप्पनावीथि, ततो भिन्नावज्जने अनेकावज्जने वा। अप्पनावीथियञ्हि उपचारो एकावज्जनो, इतरो अनेकावज्जनो अनेकक्खत्तुं पवत्तनतो। विसमनिसज्जाय उप्पन्नकिलमथो **विसमासनुपतापो। पोति फरणेना** ति पीतिया फरणरसत्ता पीतिसमुट्ठानानं वा पणीतरूपानं कायस्स ब्यापनतो वुत्तं। तेनाह **"सब्बो कायो सुखोक्कन्तो होती"** ति। पणीतरूपफुट्ठसरीरस्स सुखोक्कन्तकायत्ता कुतो दुक्खुप्पत्ति विसमासनुपतापादिना ति आह **"पटिपक्खेन अविहतत्ता"** ति। **वितक्कविचारपच्चयेपी** ति पि-सद्दो अट्ठानप्पयुत्तो, सो "पहीनस्सा" ति एत्थ आनेत्वा सम्बन्धितब्बो। **पहीनस्सपि दोमनस्सिन्द्रियस्सा** ति इदञ्च "सिया उप्पत्ती" ति इमिना सम्बन्धितब्बं। एकं ति दोमनस्सिन्द्रियं। "उप्पज्जती" ति इमिना सम्बन्धो। "तस्स मय्हं अतिचिरं वितक्कयतो विचारयतो कायो पि किलमि, चित्तम्पि ऊहञ्ञी" ति वचनतो कायचित्तखेदानं वितक्कविचारपच्चयत्ता वेदितब्बा। **वितक्कविचारभावे** ति एत्थ "उप्पज्जति दोमनस्सिन्द्रियं" ति आनेत्वा सम्बन्धितब्बं। **तत्थस्स सिया उप्पत्ती** ति तत्थ दुतियज्झानुपचारे अस्स पहीनस्सपि दोमनस्सिन्द्रियस्स उप्पत्ति भवेय्य।

एत्थ च यदेके वदन्ति "तत्थस्स सिया उप्पत्ती ति वदन्तेन झानलाभीनम्पि दोमनस्सुप्पत्ति अत्थी ति दस्सितं होति, तेन च अनीवरणसभावो लोभो विय दोसो पि अत्थी ति दीपेति। न हि दोसेन विना दोमनस्सं पवत्तति, न चेत्थ पट्ठानपाळिया विरोधो चिन्तेतब्बो। यस्मा तत्थ परिहीनज्झानं आरम्मणं कत्वा पवत्तमानं दोमनस्सं दस्सितं, अपरिहीनज्झानं आरम्मणं कत्वा उप्पज्जमानस्स दोमनस्सस्स असम्भवतो झानलाभीनं सब्बसो दोमनस्सं नुप्पज्जती ति च न सक्का वत्तुं अट्ठसमापत्तिलाभिनो
B 378 अपि तस्स उप्पन्नत्ता, न हेव खो सो परिहीनज्झानो अहोसी" ति, तं अयुत्तं अनीवरणसभावस्स दोमनस्सस्स अभावतो। यदि सिया, रूपारूपावचरसत्तानम्पि उप्पज्जेय्य,

न च उप्पज्जति। तथा हि आरुप्पे कामच्छन्दनीवरणं पटिच्च थिनमिद्धनीवरणं उद्धच्च-नीवरणं अविज्जानीवरणं ति आदीसु ब्यापादकुक्कुच्चनीवरणानि अनुद्धटानि, न चेत्थ अनीवरणतापरियायो कामच्छन्दादीनम्पि अनीवरणानंयेव नीवरणसदिसताय नीवरणपरियायस्स वुत्तत्ता। यं पन वुत्तं "अट्ठसमापत्ति लाभिनो अपि तस्स उप्पन्नत्ता" ति, तम्पि अकारणं उप्पज्जमानेन च दोमनस्सेन झानतो परिहायनतो। लहुकेन पन पच्चयेन परिहीनं तादिसा नं अप्पकसिरेनेव पटिपाकतिकं करोन्ती ति दट्ठब्बं। "तत्थस्स सिया उप्पत्ती" ति इदं पन परिकप्पनवचनं उपचारक्खणे दोमनस्सस्स अप्पहीनभावदस्सनत्थं। तथा हि वुत्तं "**न त्वेव अन्तो अप्पनायं**" ति। यदि पन तदा दोमनस्सं उप्पज्जेय्य, पठमज्झानम्पिस्स परिहीनमेवा ति दट्ठब्बं। पहीनम्पि सोमनस्सिन्द्रियं पीति विय न दूरे ति कत्वा "**आसन्नत्ता**" ति वुत्तं। नानावज्जनूपचारे पहीनम्पि पहानङ्ग पटिपक्खेन अविहतत्ता अन्तरन्तरा उप्पज्जेय्य वा ति इममत्थं दस्सेन्तो "**अप्पनाप्पत्ताया**" ति आदिमाह। तादिसाय आसेवनाय इच्छितब्बत्ता यथा मग्गवीथितो पुब्बे द्वे तयो जवनवारा सदिसानुपस्सनाव पवत्तन्ति, एवमिधा पि अप्पनावारतो पुब्बे द्वे तयो जवनवारा उपेक्खासहगताव पवत्तन्ती ति वदन्ति।

समाहरी ति समानेसि, सङ्गहेत्वा अभासी ति अत्थो। **सुखुमा** ति सुखदुक्खानि विय अनोळारिकत्ता अविभूतताय सुखुमा, ततो एव अनुमिनितब्बसभावत्ता **दुब्बिञ्ञेय्या**। **दुद्दसा** ति दुट्ठपयोगस्स, दुद्दमस्सा ति अत्थो। **सक्का होति सो गाहयितुं** ति अञ्ञा-पोहननयेन सक्का गाहयितुं ति अधिप्पायो। **अदुक्खमसुखाय चेतोविमुत्तिया** ति इदमेव चतुत्थं झानं दट्ठब्बं। **पच्चयदस्सनत्थं** ति अधिगमस्स उपायभूतपच्चयदस्सनत्थं। तेनाह "**दुक्खप्पहानादयो**[1] **हि तस्सा पच्चया**" ति। **दुक्खप्पहानादयो** ति च सोपचारा पठमज्झानादयोवेत्थ अधिप्पेता। **पहीना ति वुत्ता** ति "पञ्चन्नं ओरम्भागियानं संयोजनानं परिक्खया" ति[2] वुत्तत्ता। **एता** ति सुखादयो वेदना। **सुखं सोमनस्सस्स** B 379 **पच्चयो** ति वसनगन्धालेपनपुप्फाभरणसमालेपनादिनिब्बत्तं कायिकसुखं सोमनस्सस्स पच्चयो। "सुखाय खो आवुसो विसाख वेदनाय रागानुसयो अनुसेती" ति[3] वचनतो आह "**सोमनस्सं रागस्स पच्चयो**" ति। "दुक्खाय खो आवुसो विसाख वेदनाय पटिघानुसयो अनुसेती" ति वचनतो वुत्तं "**दोमनस्सं दोसस्स पच्चयो**" ति। **सुखादि-घातेना** ति सुखादीनं पहानेन।

अदुक्खमसुखं ति एत्थ न दुक्खं ति अदुक्खं, दुक्खविदूरं। यस्मा तत्थ दुक्खं नत्थि, तस्मा वुत्तं "**दुक्खाभावेना**" ति। **असुखं** ति एत्थापि एसेव नयो। **एतेना** ति दुक्खसुखपटिक्खेपवचनेन। **पटिपक्खभूतं** ति इदं इध ततियवेदनाय दुक्खादीनं सम-तिक्कमवसेन पत्तब्बत्ता वुत्तं, न कुसलाकुसलानं विय उजुविपच्चनीकताय। **इट्ठानिट्ठ-**

---

1. सुखप्पहानादयो (क०)
2. म० ३-१२४, सं० ३-३३० पिट्ठेसु।
3. म० १-३७७ पिट्ठे।

विपरीतानुभवनलक्खणा ति इट्ठानिट्ठविपरीतस्स मज्झत्तारम्मणस्स, इट्ठानिट्ठविपरीतं वा मज्झत्ताकारेन अनुभवनलक्खणा। ततो एव **मज्झत्तरसा**। **अविभूतपच्चुपट्ठाना** ति सुखदुक्खानि विय न विभूताकारा पिट्ठिपासाणे मिगगतमग्गो विय तेहि अनुमातब्बविभूताकारोपट्ठाना। सुखनिरोधो नाम इध चतुत्थज्झानूपचारो, सो पदट्ठानं एतिस्सा ति **सुखनिरोधपदट्ठाना**। **उपेक्खासतिपारिसुद्धि** ति पुरिमपदे उत्तरपदलोपेनेतं समासपदं ति आह "**उपेक्खाय जनितसतिपारिसुद्धि**" ति। सब्बपच्चनीकधम्मपरिसुद्धाय पच्चनीकसमने पि अब्यावटाय पारिसुद्धुपेक्खाय वत्तमानाय चतुत्थज्झाने सति सम्पहंसनपञ्ञा विय सुपरिसुद्धा सुविसदा च होती ति आह "**सतिया पारिसुद्धि, सा उपेक्खाय कता न अञ्ञेना**" ति। यदि तत्रमज्झत्तता इध "उपेक्खा" ति अधिप्पेता, कथं सतियेव पारिसुद्धा ति वुत्ता ति आह "**न केवलं**" ति आदि। **सति सीसेना** ति सतिं उत्तमङ्गं कत्वा, पधानं कत्वा ति वुत्तं होति।

एवमपि कस्मा इधेव सति "उपेक्खासतिपारिसुद्धी" ति वुत्ता ति अनुयोगं सन्धाय "**तत्थ किञ्चा पी**" ति आदि वुत्तं। तत्थ हेट्ठा तीसु झानेसु विज्जमानायपि तत्रमज्झत्तताय पच्चनीकाभिभवनतो सहायपच्चयवेकल्लतो च अपारिसुद्धि, तथा तंसम्पयुत्तानं तदभावतो इध पारिसुद्धी ति इममत्थं उपमावसेन दस्सेतुं "**यथा पना**" ति आदि वुत्तं। **सूरियप्पभाभिभवा** ति सूरियप्पभाय अभिभुय्यमानत्ता। अतिक्खताय
B 380 चन्दलेखा विय रत्ति पि सोम्मसभावा सभागाय रत्तियमेव च चन्दलेखा समुज्जलती ति सा तस्सा सङ्गय्हती ति दस्सेन्तो "**सोम्मभावेन च अत्तनो उपकारकत्तेन वा सभागाय रत्तिया**" ति आह। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेव।

चतुत्थज्झानकथा निट्ठिता।

पुब्बेनिवास कथा

१२॥ रूपविरागभावनावसेन पवत्तं चतुब्बिधम्पि अरूपज्झानं चतुत्थज्झानसङ्गहमेवा ति आह "**चत्तारि झानानी**" ति। युत्तं ताव चित्तेकग्गता भवोक्कमनत्थता विय विपस्सनापादकता पि चतुन्नं झानानं साधारणा ति तेसं वसेन "चत्तारि झानानी" ति वचनं, अभिञ्ञापादकता पन निरोधपादकता च चतुत्थस्सेव झानस्स आवेणिका, सा कथं चतुन्नं झानानं साधारणा वुत्ता ति? परम्पराधिट्ठानभावतो। पदट्ठानपदट्ठानम्पि हि पदट्ठानन्त्वेव वुच्चति, कारणकारणम्पि कारणं ति यथा "तिणेहि भत्तं सिद्धं" ति। एवञ्च कत्वा पयोजननिद्देसे अट्ठसमापत्तिग्गहणं समत्थितं होति। **चित्तेकग्गतत्थानी** ति चित्तसमाधत्थानि, दिट्ठधम्मसुखविहारत्थानी ति अत्थो। चित्तेकग्गतासीसेन हि दिट्ठधम्मसुखविहारो वुत्तो, सुक्खविपस्सकखीणासववसेन चेतं वुत्तं। तेनाह "**एकग्गचित्ता सुखं दिवसं विहरिस्सामा**" ति। **भवोक्कमनत्थानी** ति भवेसु निब्बत्तिअत्थानि। सत्ताहं निरोधसमापत्तिया समापज्जनतो आह "**सत्ताहं अचित्तका हुत्वा**" ति। कस्मा

पन सत्ताहमेव निरोधं समापज्जन्ती ति ? तथाकालपरिच्छेदकरणतो, तञ्च येभुय्येन आहारूपजीवीनं सत्तानं उपादिन्नकप्पवत्तस्स एकदिवसं भुत्ताहारस्स सत्ताहमेव यापनतो।

का[1] पनायं निरोधसमापत्ति नाम, के तं समापज्जन्ति, के न समापज्जन्ति, कत्थ समापज्जन्ति, कस्मा समापज्जन्ति, कथञ्चस्सा समापज्जनं होती ति ? वुच्चते—तत्थ **का पनायं निरोधसमापत्ति नामा** ति या अनुपुब्बनिरोधवसेन चित्तचेतसिकानं धम्मानं अप्पवत्ति। **के तं समापज्जन्ति, के न समापज्जन्ती** ति सब्बेपि पुथुज्जनसोता- B 381
पन्नसकदागामिनो सुक्खविपस्सका च अनागामिअरहन्तो न समापज्जन्ति, अट्ठसमापत्तिलाभिनो पन अनागामिनो खीणासवा च समापज्जन्ति। **कत्थ समापज्जन्ती** ति पञ्चवोकारभवे। कस्मा ? अनुपुब्बसमापत्तिसब्भावतो। चतुवोकारभवे पन पठमज्झानादीनं उप्पत्तियेव नत्थि, तस्मा न सक्का तत्थ समापज्जितुं। **कस्मा समापज्जन्ती** ति सङ्खारानं पवत्तिभेदे उक्कण्ठित्वा "दिट्ठधम्मे अचित्तका हुत्वा निरोधं निब्बानं पत्वा सुखं विहरिस्सामा" ति। **कथञ्चस्सा समापज्जनं होती** ति समथविपस्सनावसेन उस्सक्कित्वा कतपुब्बकिच्चस्स नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं निरोधयतो एवमस्सा समापज्जनं होति। यो हि समथवसेनेव उस्सक्कति, सो नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्तिं पत्वा तिट्ठति। योपि[2] विपस्सनावसेनेव उस्सक्कति, सो फलसमापत्तिं पत्वा तिट्ठति। यो पन उभयवसेनेव उस्सक्कित्वा नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं निरोधेति, सो तं समापज्जती ति अयमेत्थ सङ्खेपो।

अयं पन वित्थारो—इध भिक्खु निरोधं समापज्जितुकामो पठमज्झानं समापज्जित्वा वुट्ठाय तत्थ सङ्खारे अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो विपस्सति। विपस्सना च पनेसा तिविधा सङ्खारपरिग्गण्हनकविपस्सना फलसमापत्तिविपस्सना निरोधसमापत्तिविपस्सना ति। तत्थ **संखारपरिग्गण्हनकविपस्सना** मन्दा वा तिक्खा वा मग्गस्स पदट्ठानं होति येव। **फलसमापत्तिविपस्सना** तिक्खाव वट्टति मग्गभावनासदिसा। **निरोधसमापत्तिविपस्सना** पन नातिमन्दनातितिक्खा वट्टति, तस्मा एस नातिमन्दाय नातितिक्खाय विपस्सनाय ते सङ्खारे विपस्सति। ततो दुतियज्झानं…पे०…ततो विञ्ञाणञ्चायतनं समापज्जित्वा वुट्ठाय तत्थ सङ्खारे तथेव विपस्सति। अथ आकिञ्चञ्ञायतनं समापज्जित्वा वुट्ठाय चतुब्बिधं पुब्बकिच्चं करोति नानाबद्धअविकोपनं संघपतिमाननं सत्थुपक्कोसनं अद्धानपरिच्छेदं ति।

तत्थ **नानाबद्धअविकोपनं** ति यं इमिना भिक्खुना सद्धिं एकाबद्धं न होति, नानाबद्धं हुत्वा ठितं पत्तचीवरं वा मञ्चपीठं वा निवासगेहं वा अञ्ञं वा पन यं किञ्चि परिक्खारजातं, तं यथा न विकुप्पति, अग्गिउदकवातचोरउन्दूरादीनं वसेन न विनस्सति, एवं अधिट्ठातब्बं। तत्रिदं अधिट्ठानविधानं "इदञ्चिदञ्च इमस्मिं सत्ता- B 382

---

१. विसुद्धि २-३४४ पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।

२. यो हि (सी०, क०)।

हब्भन्तरे मा अग्गिना झायतु, मा उदकेन वुय्हतु, मा वातेन विद्धंसतु, मा चोरेहि हरीयतु, मा उन्दूरादीहि खज्जतू" ति। एवं अधिट्ठिते तं सत्ताहं तस्स न कोचि परिस्सयो होति, अनधिट्ठहतो पन अग्गिआदीहि नस्सति, इदं नानाबद्धअविकोपनं नाम। यं पन एकाबद्धं होति निवासनपारुपनं वा निसिन्नासनं वा, तत्थ विसुं अधिट्ठानकिच्चं नत्थि, समापत्तियेव नं रक्खति।

संघपतिमाननं ति भिक्खुसंघस्स पतिमाननं उदिक्खनं, याव सो भिक्खु आगच्छति, ताव संघकम्मस्स अकरणं ति अत्थो। एत्थ च पतिमाननं एतस्स न पुब्बकिच्चं, पतिमाननावज्जनं पन पुब्बकिच्चं। तस्मा एवं आवज्जितब्बं "सचे मयि सत्ताहं निरोधं समापज्जित्वा निसिन्ने संघो अपलोकनकम्मादीसु किञ्चिदेव कम्मं कत्तुकामो होति, याव मं कोचि भिक्खु आगन्त्वा न पक्कोसति, तावदेव वुट्ठहिस्सामी" ति। एवं कत्वा समापन्नो हि तस्मिं समये वुट्ठहतियेव। यो पन एवं न करोति, संघो चे सन्निपतित्वा तं अपस्सन्तो "असुको भिक्खु कुहिं" ति पुच्छित्वा "निरोधं समापन्नो" ति वुत्ते कञ्चि भिक्खुं पेसेति "तं पक्कोसाही" ति, अथस्स तेन भिक्खुना सवनूपचारे ठत्वा "संघो तं आवुसो पतिमानेती" ति वुत्तमत्तेयेव वुट्ठानं होति। एवं गरुका हि संघस्स आणा नाम, तस्मा तं आवज्जित्वा यथा पठममेव वुट्ठाति, एवं समापज्जितब्बं।

सत्थुपक्कोसनं ति इधापि सत्थुपक्कोसनावज्जनमेव इमस्स पुब्बकिच्चं, तस्मा तम्पि एवं आवज्जितब्बं। सेसं पुरिमनयेनेव वेदितब्बं।

अद्धानपरिच्छेदो ति जीवितद्धानस्स परिच्छेदो। इमिना भिक्खुना अद्धानपरिच्छेदेसु कुसलेन भवितब्बं, "अत्तनो आयुसङ्खारा सत्ताहं पवत्तिस्सन्ति न पवत्तिस्सन्ती" ति आवज्जित्वा व समापज्जितब्बं। सचे हि सत्ताहब्भन्तरे निरुज्झनके आयुसङ्खारे अनावज्जित्वाव समापज्जति, तस्स निरोधसमापत्ति मरणं पटिबाहितुं न सक्कोति, अन्तोनिरोधे मरणस्स नत्थिताय अन्तराव समापत्तितो वुट्ठाति, तस्मा एतं आवज्जित्वाव समापज्जितब्बं। अवसेसञ्हि अनावज्जितुम्पि वट्टति, इदं पन आवज्जितब्बमेवा ति वुत्तं। सो एवं आकिञ्चञ्ञायतनं समापज्जित्वा वुट्ठाय इदं पुब्बकिच्चं कत्वा नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं समापज्जति, अथेकं वा द्वे वा चित्तवारे अतिक्कमित्वा
B 333 अचित्तको होति, निरोधं फुसति। कस्मा पनस्स द्विन्नं चित्तानं उपरि चित्तानि न पवत्तन्ती ति? निरोधस्स पयोगत्ता। इदञ्हि इमस्स भिक्खुनो द्वे समथविपस्सनाधम्मे युगनद्धे[1] कत्वा अट्ठसमापत्तिआरोहनं अनुपुब्बनिरोधस्स पयोगो, न नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्तिया ति निरोधस्स पयोगत्ता द्विन्नं चित्तानं उपरि चित्तानि न पवत्तन्ती ति।

यस्मा बोधिसत्तेन बोधिमण्डुपसङ्कमनतो पुब्बे पि चरिमभवे चतुत्थज्झानं निब्बत्तितपुब्बं, तदा पन तं निब्बत्तितमत्तमेव अहोसि, न विपस्सनादिपादकं। तस्मा

---

१. युगनन्धे (सी०, क०)

"बोधिरुक्खमूले निब्बत्तितं" ति ततो विसेसेत्वा वुत्तं। **विपस्सनापादकं** ति विपस्सनारम्भे विपस्सनाय पादकं। **अभिञ्ञापदकं** ति एत्थापि एसेव नयो। बुद्धानञ्हि पठमारम्भे एव पादकज्झानेन पयोजनं अहोसि, न ततो परं उपरिमग्गाधिगमफलसमापत्ति अभिञ्ञावळञ्जनादि अत्थं। अभिसम्बोधिसमधिगमतो पट्ठाय हि सब्बं ञाणसमाधिकिच्चं आकङ्खमत्तपटिबद्धमेवा ति। **सब्बकिच्चसाधकं** ति अनुपुब्बविहारादिसब्बकिच्चसाधकं। **सब्बलोकियलोकुत्तरगुणदायकं** ति एत्थ विपस्सनाभिञ्ञापादकत्ता एव चतुत्थस्स झानस्स भगवतो सब्बलोकियलोकुत्तरगुणदायकता वेदितब्बा। सब्बञ्ञुतञ्ञाणपदट्ठानञ्हि मग्गञाणं तंपदट्ठानञ्च सब्बञ्ञुतञ्ञाणं अभिसम्बोधि, तदधिगमसमकालमेव च भगवतो सब्बे बुद्धगुणा हत्थगता अहेसुं, चतुत्थज्झानसन्निस्सयो च मग्गाधिगमो ति।

"चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहासिं" ति वत्वा "सो" ति वुत्तत्ता आह "सो अहं" ति। **एवं समाहिते** ति एत्थ **एवं**-सद्दो हेट्ठा झानत्तयाधिगमपटिपाटिसिद्धस्स चतुत्थज्झानसमाधानस्स निदस्सनत्थो ति आह "**एवं ति चतुत्थज्झानक्कमनिद्दस्सनमेतं**" ति। चतुत्थज्झानस्स तस्स च अधिगममग्गस्स निदस्सनं, येन समाधानानुक्कमेन चतुत्थज्झानसमाधिलद्धो, तदुभयनिदस्सनं ति अत्थो। तेनाह "**इमिना**...... **पे०**....... **वुत्तं होती**" ति। तत्थ **इमिना कमेना** ति इमिना पठमज्झानाधिगमादिना कमेन। यदि पि "एवं" ति इदं आगमनसमाधिना सद्धिं चतुत्थज्झानसमाधानं दीपेति, सतिपारिसुद्धिसमाधि एव पन इद्धिया अधिट्ठानभावतो पधानं ति आह "**चतुत्थज्झानसमाधिना समाहिते**" ति। सब्बपच्चनीकधम्मुपक्किलेसपरिसुद्धाय पच्चनीकसमने पि अब्यावटाय पारिसुद्धपेक्खाय वत्तमानाय चतुत्थज्झानं तंसम्पयुत्ता च धम्मा सुपरिसुद्धा B 384
सुविसदा च होन्ति, सतिसीसेन पन तत्थ देसना कता ति आह "**उपेक्खासतिपारिसुद्धिभावेन परिसुद्धे**" ति, उपेक्खाय जनितसतिपारिसुद्धिसम्भवेनाति अत्थो। परिसुद्धिया एव पच्चयविसेसेन पवत्तिविसेसो परियोदातता सुधन्तसुवण्णस्स निघंसनेन पभस्सरता विया ति आह "**परिसुद्धतायेव परियोदाते, पभस्सरे ति वुत्तं होती**" ति।

सुखादीनं पच्चयानं घातेना ति सुखसोमनस्सानं दुक्खदोमनस्सानञ्च यथाक्कमं रागदोसपच्चयानं विक्खम्भनेन। "सुखं सोमनस्सस्स पच्चयो, सोमनस्सं रागस्स, दुक्खं दोमनस्सस्स पच्चयो, दोमनस्सं दोसस्सा" ति वुत्तं। यथा रागादयो चेतसो मलासुचिभावेन "अङ्गणानी" ति वुच्चन्ति, एवं उपगन्त्वा किलेसनट्ठेन उपक्किलेसा ति आह "**अनङ्गणत्ता एव च विगतुपक्किलेसे**" ति। तेनाह "**अङ्गणेन हि चित्तं उपक्किलिस्सती**" ति, विबाधीयति उपतापीयती ति अत्थो। **सुभावितत्ता** ति पगुणभावापादनेन सुट्ठु भावितत्ता। तेनाह "**वसीभावप्पत्ते**" ति, आवज्जनादिना पञ्चधा चुद्दसविधेन वा परिदमनेन वसं वत्तितुं उपगते ति अत्थो। **वसे वत्तमानं हि चित्तं मुदू ति वुच्चती** ति वसे वत्तमानं चित्तं पगुणभावापत्तिया सुपरिमद्दितं विय चम्मं सुपरिकम्मकता विय च लाखामुदू ति वुच्चति। **कम्मक्खमे** ति विकुब्बनादिइद्धिकम्मक्खमे। **तदुभयं** ति मुदुताकम्मनियद्वयं।

नाहं ति आदीसु न-कारो पटिसेधत्थो। **अहं** ति सत्था अत्तानं निद्दिसति। **भिक्खवे** ति भिक्खू आलपति। **अञ्ञं** ति इदानि वुच्चमानचित्ततो अञ्ञं। **एकधम्मम्पी** ति एकम्पि सभावधम्मं। न समनुपस्सामी ति सम्बन्धो। अयञ्हेत्थ अत्थो—अहं भिक्खवे सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन ओलोकेन्तो पि अञ्ञं एकधम्मम्पि न समनुपस्सामि, यं वसीभावापादनेन भावितं तथा पुनप्पुनं करणेन बहुलीकतं एवं सविसेसमुदुभावप्पत्तिया मुदु कम्मक्खमताय कम्मनियञ्च होति यथा इदं चित्तं ति। **इदं चित्तं** ति च अत्तनो तेसञ्च पच्चक्खताय एवमाह।

यथा यथावुत्ता परिसुद्धतादयो न विगच्छन्ति, एवं सुभावितं चित्तं तत्थ
B 385 अवट्ठितं इध "ठितं आनेञ्जप्पत्तं" ति च वुत्तं ति आह "**एतेसु परिसुद्धभावादीसु ठितत्ता**
ठिते, ठितत्तायेव आनेञ्जप्पत्ते" ति। यथा मुदुकम्मञ्ञता वसीभावप्पत्तिया लक्खीयति,
एवं वसीभावप्पत्ति पि मुदुकम्मञ्ञताहि लक्खीयती ति "**मुदुकम्मञ्ञभावेन वा अत्तनो**
वसे ठितत्ता ठिते" ति वुत्तं। यथा हि कारणेन फलं निद्धारीयति, एवं फलेनपि कारणं
निद्धारीयती ति निच्चलभावेन अवट्ठानं अनेञ्जप्पत्तिया च सम्पयुत्तधम्मेसु थिरभावेन
पटिपक्खेहि अकम्पनियताय च सम्भवतं सद्धादिबलानं आनुभावेन होती ति आह
"**सद्धादीहि परिग्गहितत्ता आनेञ्जप्पत्ते**" ति।

इदानि सङ्खेपतो वुत्तमेवत्थं विवरितुं "**सद्धापरिग्गहितं हि**" ति आदि वुत्तं।
तत्थ **सद्धापरिग्गहितं** ति एवं सुभावितं वसीभावप्पत्तं चित्तं एकंसेन अभिञ्ञासच्छिक-
रणीयानं धम्मानं अभिञ्ञासच्छिकिरियाय संवत्तती ति एवं पवत्ताय सद्धाय परिग्गहितं
यथावुत्तसद्धाबलेन उपत्थम्भितं। **असद्धियेना** ति तप्पटिपक्खेन अस्सद्धियेन हेतुना।
न इञ्जती ति न चलति न कम्पति, अञ्ञदत्थु उपरिविसेसावहभावेनेव तिट्ठति।
वीरियपरिग्गहितं ति आदीसुपि इमिनाव नयेन अत्थो वेदितब्बो। अयं पन विसेसो—
वीरियपरिग्गहितं ति वसीभावापादनपरिदग्गनसाधनेन वीरियेन उपत्थम्भितं। **सति-**
परिग्गहितं ति यथावुत्ते भावनाबहुलीकारे असम्मोसादिकाय कुसलानञ्च धम्मानं
गतियो समन्वेसमानाय सतिया उपत्थम्भितं। **समाधिपरिग्गहितं** ति तत्थेव अविक्खे-
पसाधनेन समाधानेन उपत्थम्भितं। **पञ्ञापरिग्गहितं** ति तस्सा एव भावनाय उपका-
रानुपकारधम्मानं पजाननलक्खणाय पञ्ञाय उपत्थम्भितं। **ओभासगतं** ति ञाणोभास-
सहगतं। ओभासभूतेन हि यथावुत्तसमाधानसंवड्ढितेन ञाणेन संकिलेसपक्खं याथावतो
पस्सन्तो ततो उत्रासन्तो ओत्तप्पन्तो तं अभिभवति, न तेन अभिभुय्यति। तेनाह
"**किलेसन्धकारेन न इञ्जती**" ति। एतेन ञाणपरिग्गहितं हिरोत्तप्पबलं दस्सेति।
अट्ठङ्गसमन्नागतं ति चतुत्थज्झानसमाधिना समाहितता परिसुद्धता परियोदातता
अनङ्गणता विगतुपक्किलेसता मुदुभावो कम्मनियता आनेञ्जप्पत्तिया ठितता ति इमेहि
अट्ठहि अङ्गेहि समन्नागतं। अथ वा समाहितस्स चित्तस्स इमानि अङ्गानी ति
"समाहिते" ति इमं अङ्गभावेन अग्गहेत्वा ठितिआनेञ्जप्पत्तियो विसुं गहेत्वा यथावुत्तेहि
B 386 अट्ठहि अङ्गेहि समन्नागतं ति अत्थो दट्ठब्बो। **अभिनीहारक्खमं** ति इद्धिविधादि अत्थं
अभिनीहारक्खमं तदभिमुखकरणयोग्गं। तेनाह "**अभिञ्ञासच्छिकरणीयानं धम्मानं**
अभिञ्ञासच्छिकिरियाया" ति।

कामं नीवरणानि विक्खम्भेत्वा एव पठमज्झानसमधिगमो, वितक्कादिवूपसमा एव च दुतियज्झानादिसमधिगमो, तथा पि न तथा ते तेहि दूरीभूता, अपेता वा यथा चतुत्थज्झानतो, तस्मा चेतसो मलीनभावसङ्खोभउप्पिलाभावकरेहि[१] नीवरणादीहि सुट्ठु विमुत्तिया तस्स परिसुद्धिपरियोदातता च वुत्ता ति आह "**नीवरण**.....**पे०**..... **परियोदाते**" ति। **ञाणपटिलाभपच्चनीकानं** ति एत्थ **आचरियधम्मपालत्थेरेन** "ञाणपटिलाभपच्चयानं" ति पाठं गहेत्वा "ञाणपटिलाभपच्चनीकानं" ति अयं पाठो पटिक्खित्तो। वुत्तञ्हि तेन—

"**ञाणपटिलाभपच्चयानं** ति ञाणपटिलाभहेतुकानं ञाणपटिलाभं निस्साय उप्पज्जनकानं। **पापकानं** ति लामकानं। **इच्छावचरानं** ति इच्छाय अवचरानं इच्छावसेन ओतिण्णानं 'अहो वत ममेव सत्था पटिपुच्छित्वा भिक्खूनं धम्मं देसेय्या' ति आदिनयप्पवत्तानं मानमायासाठेय्यादीनं। **अभिज्झादीनं** ति **आदि**-सद्देन पि तेसंयेव सङ्गहो। अभिज्झा चेत्थ पठमज्झानेन अविक्खम्भनेय्या मानादयो च तदेकट्ठा दट्ठब्बा ञाणपटिलाभपच्चयानं ति अनुवत्तमानत्ता। विक्खम्भनेय्या पन नीवरणग्गहणेन गहिता। कथं पन पठमज्झानेन अविक्खम्भनेय्या इध विगच्छन्ती ति? 'सब्बे कुसला धम्मा सब्बाकुसलानं पटिपक्खा' ति सल्लेखपटिपत्तिवसेन एवं वुत्तं ञाणस्स अपरामट्ठभाव-दस्सनतो। ये पनेत्थ 'इच्छावचरानं अभिज्झादीनं' ति इमेहि पदेहि कोपअप्पच्चयकाम-रागब्यापादादयो गहिता ति अधिप्पायेन 'ञाणपटिलाभपच्चयानं' ति पाठं पटिक्खिपित्वा 'ञाणपटिलाभपच्चनीकानं' ति पाठो ति वदन्ति, तं तेसं मतिमत्तं तथा पाठस्सेव अभावतो, ञाणपटिलाभपच्चनीका च नीवरणा चेव तदेकट्ठा च, तेसं दूरीभावं वत्वा पुन तेसंयेव अभावविगमचोदनाय अयुज्जमानत्ता। ननु च अनङ्गणसुत्तवत्थसुत्तेसु अयमत्थो लब्भति ओळारिकानंयेव पापधम्मानं तत्थ अधिप्पेतत्ता ति। सच्चमेतं, इध पन अधिगतचतुत्थज्झानस्स वसेन वुत्तत्ता सुखुमायेव ते गहिता, अङ्गणुपक्किलेसतासा-मञ्ञेन पनेत्थ सुत्तानं अपदिसनं। तथा हि 'सुत्तानुसारेना' ति वुत्तं, न पन सुत्तव-सेना" ति[२]। B 387

अवस्सञ्चेतमेवं सम्पटिच्छितब्बं अधिगतज्झानानम्पि केसञ्चि इच्छावचरानं पवत्तिसब्भावतो ति। तेनेव **आचरियधम्मपालत्थेरेन** "ञाणपटिलाभपच्चयानं" ति पाठं गहेत्वा "ञाणपटिलाभपच्चनीकानं" ति अयं पाठो पटिक्खित्तो। **महागण्ठिपदे** विसुद्धिमग्गस्स **सीहळगण्ठिपदे** पि च "ञाणपटिलाभपच्चयानं" ति इमस्सेव पाठस्स अत्थो वुत्तो। तस्मा अयमेव पाठो गहेतब्बो, अत्थो पि चेत्थ यथावुत्तनयेनेव वेदितब्बो। तेन "इच्छावचरानं ति इच्छाय अवचरानं इच्छावसेन ओतिण्णानं पवत्तानं नानप्प-कारानं कोपअप्पच्चयानं ति अत्थो" ति अयम्पि पाठो अयुत्तोयेवा ति गहेतब्बं, ततोयेव च **विसुद्धिमग्गे** अयं पाठो सब्बेन सब्बं न दस्सितो ति।

---

१. मलीनभावसङ्खोभउब्बिल्लाभोगकरेहि (सी०)। मलीनभावसङ्खोभउब्बिल्लाभावकरेहि (स्या०)। मलीनभावसङ्खातउप्पिलाभोगकरेहि (विसुद्धिमग्गटीकायं इद्धिविधनिद्देसवण्णनायं)

२. विसुद्धिमग्गटीकायं इद्धिविधनिद्देसवण्णनायं।

इद्धिपादकभावूपगमनेना ति इद्धिया पादकभावस्स पदट्ठानभावस्स उपगमनेन। **भावनापारिपूरिया** ति इतो परं कत्तब्बस्स अभाववसेन अभिनीहारक्खमभावनाय परिपुण्णत्ता। **पणीतभावूपगमनेना** ति ततो एव पधानभावं नीतताय उत्तमट्ठेन अतित्तिकरट्ठेन च पणीतभावस्स उपगमनेन। उभयञ्चेतं भावनाय ठितिया कारणवचनं, परिपुण्णाय भावनाय पणीतभावप्पत्तिया ठिते ति। **आनेञ्जप्पत्ते** ति इदं ठितिया विसेसनं। तेनाह "**यथा आनेञ्जप्पत्तं होति, एवं ठिते**" ति। इमस्मिं पक्खे "ठिते आनेञ्जप्पत्ते" ति उभयमेतं अङ्गं, "समाहिते" ति पन इदम्पि एकमङ्गं। तेनेवस्स पठमविकप्पतो विसेसं सन्धायाह "**एवम्पि अट्ठङ्गसमन्नागतं**" ति।

पुब्बेनिवासं अनुस्सरति, तस्स वा अनुस्सरणं **पुब्बेनिवासानुस्सति** तंनिस्सयादि-
B 388 पच्चयभूतं पटिच्च उप्पज्जनतो। **पुब्बेनिवासानुस्सतिम्हि यं ञाणं तदत्थाया** ति सङ्खेपेन वुत्तमत्थं विवरन्तो पुब्बेनिवासं ताव दस्सेत्वा तत्थ सतिञाणानि दस्सेतुं "पुब्बेनिवासो" ति आदिमाह। तत्थ "पुब्बे" ति इदं पदं "एकम्पि जातिं" ति आदिवचनतो अतीतभवविसयं इधाधिप्पेतं ति आह "**अतीतजातीसू**" ति। **निवाससद्दो** कम्मसाधनो, खन्धविनिमुत्तो च निवसितधम्मो नत्थी ति आह "**निवुत्थक्खन्धा**" ति। निवुत्थता चेत्थ सन्ताने पवत्तता, तथाभूता च ते अनु अनु भूता जाता पवत्ता, तत्थ उप्पज्जित्वा विगता च होन्ती ति आह "**निवुत्था ति अज्झावुत्था अनुभूता अत्तनो सन्ताने उप्पज्जित्वा निरुद्धा**" ति। एवं ससन्ततिपरियापन्नधम्मवसेन निवाससद्दस्स अत्थं वत्वा इदानि अविसेसेन वत्तुं "**निवुत्थधम्मा वा निवुत्था**" ति वत्वा तं विवरितुं "**गोचरनिवासेना**" ति आदि वुत्तं। गोचरभूता पि हि गोचरासेवनाय आसेविता आरम्मणकरणवसेन अनुभूता निवुत्था नाम होन्ति। ते पन दुविधा सपरविञ्ञाणगोचरताया ति उभये पि ते दस्सेतुं "**अत्तनो**" ति आदि वुत्तं। तत्थ **अत्तनो विञ्ञाणेन विञ्ञाता**" ति वत्वा "**परिच्छिन्ना**" ति वचनं ये ते गोचरनिवासेन निवुत्थधम्मा, न ते केवलं विञ्ञाणेन विञ्ञातमत्ता, अथ खो यथा पुब्बे नामगोत्तवण्णलिङ्गाहारादीहि विसेसेहि परिच्छेदकारिकाय पञ्ञाय परिच्छिज्ज गहिता, तथेवेतं ञाणं परिच्छिज्ज गण्हाती ति इमस्स अत्थस्स दीपनत्थं वुत्तं। परविञ्ञाणविञ्ञाता पि वा निवुत्था ति सम्बन्धो। न केवलं अत्तनोव विञ्ञाणेन, अथ खो परेसं विञ्ञाणेन विञ्ञाता पी ति अत्थो। इधा पि "परिच्छिन्ना" ति पदं आनेत्वा सम्बन्धितब्बं, परेसम्पि वा विञ्ञाणेन विञ्ञाता परिच्छिन्ना ति। तस्स च गहणे पयोजनं वुत्तनयेनेव वत्तब्बं।

ते च खो यस्मा अतीतासु एव जातीसु अञ्ञेहि विञ्ञाता परिच्छिन्ना, ते च परिनिब्बुता पि होन्ति, येहि ते विञ्ञाता, तेसं तदा वत्तमानसन्तानानुसारेन तेसम्पि अतीते पवत्ति विञ्ञायती ति सिखाप्पत्तं पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणस्स विसयभूतं पुब्बेनिवासं दस्सेतुं "**छिन्नवटुमकानुस्सरणादीसू**" ति वुत्तं। छिन्नवटुमका सम्मासम्बुद्धा, तेसं अनुस्सरणं **छिन्नवटुमकानुस्सरणं**। "आदि-सद्देन पच्चेकबुद्धबुद्धसावकानुस्सरणानि गय्हन्ती" ति केचि वदन्ति। छिन्नवटुमका पन सब्बेव अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बुता छिन्नसंसारमग्गत्ता, तेसं अनुस्सरणं नाम तेसं पटिपत्तिया अनुस्सरणं।

सा पन पटिपत्ति सङ्खेपतो छळारम्मणग्गहणलक्खणा ति तानि इध परविञ्ञाण- B 389
विञ्ञातग्गहणेन गहितानि। तस्मा पुरिमासु जातीसु अत्तनो विञ्ञाणेन अविञ्ञातानं परिनिब्बुतानं सब्बेसम्पि बुद्धपच्चेकबुद्धसावकानं अनुस्सरणं छिन्नवटुमकानुस्सरणं ति वेदितब्बं। **आदि**-सद्देन पनेत्थ पुरिमासु जातीसु अत्तनो विञ्ञाणेन अविञ्ञातानं अपरिनिब्बुतानम्पि वत्तमानक्खन्धपटिपाटिया आगन्त्वा सीहोक्कन्तिकवसेन अनुस्सरणं गहितं, इमे पन यथावुत्तछिन्नवटुमकानुस्सरणादयो बुद्धानंयेव लब्भन्ति। न हि अतीते बुद्धा भगवन्तो एवं विपस्सिंसु, एवं मग्गं भावेसुं, फलनिब्बानानि सच्छाकंसु, एवं वेनेय्ये विनेसुं ति एत्थ सब्बथा अञ्ञेसं ञाणस्स गति अत्थी ति। ये पन पुरिमासु जातीसु अत्तनोव विञ्ञाणेन विञ्ञाता, ते परिनिब्बुते पि खन्धपटिबद्धत्ता सावका अनुस्सरन्तियेव। याय सतिया पुब्बेनिवासं अनुस्सरति, सा पुब्बेनिवासानुस्सती ति आनेत्वा सम्बन्धितब्बं। **अभिनीहरिं** ति चित्तं झानारम्मणतो अपनेत्वा पुब्बेनिवासाभिमुखं पेसेसिं, पुब्बेनिवासनिन्नं पुब्बेनिवासपोणं पुब्बेनिवासपब्भारं अकासिं ति अत्थो।

पाळियं "अभिनिन्नामेसिं" ति उत्तमपुरिसप्पयोगत्ता "सो" ति एत्थ अहं-सद्दो अनेत्वा वुच्चमानो तदत्थो पाकटो होती ति "**सो अहं**" ति वुत्तं। **अनेकविधं** ति नानाभवयोनिगतिविञ्ञाणट्ठितिसत्तावासादिवसेन बहुविधं। **पकारेहो** ति नामगोत्तादिआकारेहि सद्धिं। सहयोगे चेतं करणवचनं। **पवत्तितं** ति देसनावसेन पवत्तितं। तेनाह "**संवण्णितं**" ति, वित्थारितं ति अत्थो। **निवासं** ति अन्तोगधभेदसामञ्ञवचनमेतं ति ते भेदे ब्यापनिच्छावसेन सङ्गहेत्वा दस्सेन्तो "**तत्थ तत्थ निवुत्थसन्तानं**" ति आह। **अनुगन्त्वा अनुगन्त्वा** ति ञाणगतिया अनुगन्त्वा अनुगन्त्वा। **अनुदेवा** तिं अनु एव, द-कारो पदसन्धिवसेन आगतो। "अभिनिन्नामेसिं" ति वत्वा "अनुस्सरामी" ति वुत्तत्ता चित्तस्स अभिनीहारसमनन्तरभावसरणं अनुसद्दो दीपेती ति आह। "**चित्ते अभिनिन्नामितमत्ते एव सरामी ति दस्सेतो**" ति। **परिकम्मं वत्तब्बं सिया** ति "पुब्बेनिवासं अनुस्सरितुकामेन आदिकम्मिकेन भिक्खुना पच्छाभत्तं पिण्डपातपटिक्कन्तेन रहोगतेन पटिसल्लीनेन पटिपाटिया चत्तारि झानानि समापज्जित्वा अभिञ्ञापादकचतुत्थज्झानतो वुट्ठाय सब्बपच्छिमा निसज्जा आवज्जितब्बा" ति एवमादिना पुब्बेनिवासञाणस्स परिकम्मभूतं पुब्बकरणं वत्तब्बं भवेय्य।

आरद्धप्पकारदस्सनत्थे ति अनुस्सरितुं आरद्धस्स पुब्बेनिवासस्स पभेददस्सनत्थे। B 390
एकम्पि जातिं ति एकम्पि भवं। सो हि एककम्मनिब्बत्तो आदाननिक्खेपपरिच्छिन्नो अन्तोगधधम्मप्पभेदो खन्धप्पबन्धो इध "जाती" ति अधिप्पेतो जायती ति जाती ति कत्वा। तेनाह "एकम्पि····पे०····खन्धसन्तानं" ति। **परिहायमानो** ति खीयमानो विनस्समानो। **कप्पो** ति असङ्ख्येय्यकप्पो। सो पन अत्थतो कालो, तदा पवत्तमानसङ्खारवसेनस्स परिहानि वेदितब्बा। **वड्ढमानो विवट्टकप्पो** ति एत्था पि एसेव नयो। यो पन "कालं खेपेति, कालो घसति भूतानि, सब्बानेव सहत्तना" ति[1] च

१. खु० ५-६८ पिट्ठे जातके।

आदीसु कालस्स पि खयो वुच्चति, सो इध नाधिप्पेतो अनिट्ठप्पसङ्गतो। संवट्टनं विनस्सनं संवट्टो, संवट्टतो उद्धं तथाठायी **संवट्टट्ठायी**। **तम्मूलकत्ता** ति तं पुब्बकत्ता। विवट्टनं निब्बत्तनं, वड्ढनं वा **विवट्टो**।

तेजेन संवट्टो **तेजोसंवट्टो**। **संवट्टसीमा** ति संवट्टनमरियादा। संवट्टती ति विनस्सति। **सदा** ति सब्बकालं, तीसु पि संवट्टकालेसू ति अत्थो। एकं बुद्धक्खेत्तं ति इध यं सन्धाय वुत्तं, तं नियमेत्वा दस्सेतुं "बुद्धक्खेत्तं नाम तिविधं" ति आदि वुत्तं। यत्तके ठाने तथागतस्स पटिसन्धिञाणादिञाणानुभावो पुञ्ञफलसमुत्तेजितो सरसेनेव परिजम्भति, तं सब्बम्पि बुद्धङ्कुरस्स निब्बत्तनक्खेत्तं नामा ति आह "**जातिक्खेत्तं दससहस्सचक्कवाळपरियन्तं**" ति। **आनुभावो पवत्तती** ति इध इद्धिमा चेतोवसिप्पत्तो आणाक्खेत्तपरियापन्ने यत्थ कत्थचि चक्कवाळे ठत्वा अत्तनो अत्थाय परित्तं कत्वा तत्थेव अञ्ञं चक्कवाळं गतो पि कतपरित्तो एव होती ति कत्वा वुत्तं। अथ वा तत्थ एकस्मिं चक्कवाळे ठत्वा सब्बसत्तानं अत्थाय परित्ते कते आणाक्खेत्ते सब्बसत्तानं अभिसम्भुणात्वेव परित्तानुभावो तत्थ देवताहि परित्तानं सम्पटिच्छितब्बतो ति वुत्तं "आनुभावो पवत्तती" ति। **यं यावता वा पन आकङ्खेय्या ति वुत्तं** ति यं विसयक्खेत्तं सन्धाय एकस्मिंयेव खणे सरेन[1] अभिविञ्ञापनं अत्तनो रूपदस्सनञ्च पटिजानन्तेन भगवता "यावता वा पन आकङ्खेय्या" ति वुत्तं। **यत्था** ति यस्मिं पदेसे अनन्तापरिमाणे विसयक्खेत्ते। यं यं **आकङ्खति, तं तं अनुस्सरती** ति आकङ्खमत्तपटिबद्धवुत्तिताय
B 391 बुद्धञाणस्स यं यं अनुस्सरितुं इच्छति, तं तं अनुस्सरति। **एकं आणाक्खेत्तं विनस्सती** ति इमिना तिरियतो संवट्टमानपरिच्छेदो वुत्तो। **सण्ठहन्तं** ति विवट्टमानं जायमानं। तस्स विनासो च सण्ठहनञ्च **विसुद्धिमग्गे** वुत्तं ति अम्हेहि पि हेट्ठा "लोकविदू" ति इमस्स अत्थसंवण्णनाधिकारे पसङ्गतो वुत्तत्ता इध न वुच्चति।

एवं पसङ्गेन संवट्टादिके पकासेत्वा इदानि यथाधिगतं तेसं अनुस्सरणाकारं दस्सेतुं "**ये पनेते संवट्टविवट्टा वुत्ता**" ति आदिमाह। तत्थ **एतेसू** ति निद्धारणे भुम्मं संवट्टविवट्टकप्पसमुदायतो अनेकेसं संवट्टकप्पादीनं निद्धारियमानत्ता। **अमुम्हि संवट्टकप्पे** ति एत्थ **वा**-सद्दो लुत्तनिद्दिट्ठो दट्ठब्बो। तेन च अनियमत्थेन न इतरासं असङ्ख्येय्यानम्पि सङ्गहो सिद्धो ति। अथ वा **अमुम्हि संवट्टकप्पे** ति इदं संवट्टकप्पस्स आदितो पाळियं गहितत्ता वुत्तं। तथा पि हि इमस्स कतिपयकालं भवादीसु संसरणं उपलब्भती ति। संवट्टकप्पे वा वत्तमाने येसु भवादीसु इमस्स उपपत्ति अहोसि, तं दस्सनमेतं दट्ठब्बं। **भवे वा** ति आदीसु कामादिभवे वा अण्डजादियोनिया वा देवादिगतिया वा नानत्तकायनानत्तसञ्ञी आदिविञ्ञाणट्ठितिया वा सत्तावासे वा खत्तियादिसत्तनिकाये वा। यस्मा इदं भगवतो वसेन[2] पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणं आगतं, तस्मा तस्सेव नामादिवसेन अत्थं योजेत्वा दस्सेन्तो आह "**एवं नामो ति वेस्सन्तरो वा जोतिपालो वा**" ति आदि। **सालिमंसोदनाहरो वा** ति गिहिकालं सन्धाय वुत्तं। **पवत्तफलभोजनो वा** ति तापसादि-

---

१. परेन (क०) २. बलेन (स्या०)

कालं सन्धाय। **पवत्तफलभोजनो** ति सयम्पतितफलाहारो। **सामिसनिरामिसादिप्पभेदानं** ति एत्थ **सामिसा** गेहस्सितसोमनस्सादयो, **निरामिसा** नेक्खम्मस्सितसोमनस्सादयो। **आदि**-सद्देन विवेकजसमाधिजसुखादीनं सङ्गहो।

हेट्ठा सामञ्ञतो वुत्तमेवत्थं विभजित्वा दस्सेतुकामो "**अथ वा**" ति आदिमाह। तत्थ **अमुत्रासिं** ति सामञ्ञनिद्देसोयं, ब्यापनिच्छालोपो वा, अमुत्र अमुत्र आसिं ति वुत्तं होति। **अनुपुब्बेन आरोहन्तस्स यावदिच्छकं अनुस्सरणं** ति एत्थ **आरोहन्तस्सा** ति पटिलोमतो ञाणेन पुब्बेनिवासं आरोहन्तस्स। **पटिनिवत्तन्तस्सा** ति पुब्बेनिवासं अनुस्सरणवसेन यावदिच्छकं गन्त्वा पच्चागच्छन्तस्स। **पच्चवेक्खणं** ति अनुस्सरितानुस्सरितस्स पच्चवेक्खणं। **तस्मा** ति वुत्तस्सेवत्थस्स कारणभावेन पच्चामसनं, पटिनिवत्तन्तस्स पच्चवेक्खणभावतो ति वुत्तं होति। **इधूपपत्तिया** ति इध चरिमभवे उपपत्तिया। **अनन्तरं** ति अतीतानन्तरमाह। **अमुत्रा** ति अमुकस्मिं भवे ति अत्थो। **उदपादिं** ति उप्पज्जिं। ताहि देवताही ति तुसितदेवताहि। **एकगोत्तो** ति तुसितगोत्तेन एकगोत्तो। महाबोधिसत्तानं सन्तानस्स परियोसानावत्थायं देवलोकूपपत्तिजनकं नाम अकुसलेन कम्मुना अनुपद्दुतमेव होती ति अधिप्पायेन "**दुक्खं पन सङ्खारदुक्खमत्तमेवा**" ति वुत्तं। महापुञ्ञानम्पि पन देवपुत्तानं पुब्बनिमित्तुप्पत्तिकालादीसु अनिट्ठारम्मणसमायोगो होतियेवा ति "कदाचि दुक्खदुक्खस्स पि सम्भवो नत्थी" ति न सक्का वत्तुं, धम्मानं उप्पादनिरोधसङ्खारदुक्खं ति वेदितब्बं। **सत्तपञ्ञास**....पे०.... **परियन्तो** ति इदं मनुस्सवस्सगणनावसेन वुत्तं। तत्थ देवानं वस्सगणनाय पन चतुसहस्समेव। B 392

इति ति वुत्तत्थनिदस्सनमेतं, तञ्च खो यथारहतो, न यथानुपुब्बतो ति दस्सेन्तो "**नामगोत्तवसेना**" ति आदिमाह। **उद्दिसीयती** ति दिस्वाव अविञ्ञेय्यत्ता "अयं को नामो" ति पुच्छिते "तिस्सो गोतमो" ति नामगोत्तेन उद्दिसीयति। **वण्णादीही** ति वण्णाहारवेदयितायुपरिच्छेदेहि। **सामो तो** ति एत्थ इति-सद्दो आदिअत्थो, पकारत्थो वा। तेन एवमादि एवंपकारनानत्ततो ति दस्सितं होति। **नामगोत्तं उद्देसो** ति उद्दिसीयति सत्तो एतेना ति उद्देसो नामगोत्तं। **इतरे आकारा** ति आकरीयति दिस्वाव सत्तो विञ्ञायति एतेही ति इतरे वण्णादयो आकारा। "**नो च खो अविसेसेना**" ति सङ्खेपतो वुत्तमेवत्थं वित्थारेन दस्सेन्तो आह "**तित्थियाही**" ति आदि। तत्थ **तित्थिया** ति अञ्ञतित्थिया। ते पन कम्मवादिनो किरियवादिनो तापसादयो। यस्मा तित्थियानं **ब्रह्मजालादीसु** चत्तालीसाय एव संवट्टविवट्टानं अनुस्सरणं आगतं, तस्मा "**न ततो परं**" ति वत्वा तत्थ कारणं वदन्तो "**दुब्बलपञ्ञत्ता**" ति आदिमाह। तेन विपस्सनाभियोगो पुब्बेनिवासनुस्सतिञाणस्स विसेसकारणं ति दस्सेति। ततोयेव च बलवपञ्ञत्ता ठपेत्वा अग्गसावकमहासावके इतरे पकतिसावका कप्पसतम्पि कप्पसहस्सम्पि अनुस्सरन्तियेवा ति दट्ठब्बं। तेनेव वुत्तं **विसुद्धिमग्गे**[1] "पकतिसावका कप्पसतम्पि कप्पसहस्सम्पि अनुस्सरन्तियेव बलवपञ्ञत्ता" ति। **एत्तको हि तेसं अभिनीहारो** ति कप्पानं सत- B 393

१. विसुद्धि० २-४१-पिट्ठे।

सहस्सम्पि तदधिकं एकं द्वे च असङ्ख्येय्यानीति कालवसेन एवं परिमाणो यथाक्कमं तेसं महासावकअग्गसावकपच्चेकबुद्धानं पुञ्ञञाणाभिनीहारो, सावकपच्चेकबोधिपारमिता सिद्धा। यदि बोधिसम्भारसम्भरणकालपरिच्छिन्नो तेसं तेसं अरियानं अभिञ्ञाञाण-विभवो, एवं सन्ते बुद्धानम्पिस्स परिच्छेदता आपन्ना ति आह **"बुद्धानं पन परिच्छेदो नत्थी"** ति। "यावतकं ञेय्यं तावतकं ञाणं" ति[1] वचनतो सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स विय बुद्धानं अभिञ्ञाञाणानम्पि सविसये परिच्छेदो नाम नत्थी ति तत्थ यं यं ञातुं इच्छन्ति, तं तं जानन्ति एव। अथ वा सति पि कालपरिच्छेदे कारणूपायकोसल्लपरिग्गहादिना[2] सातिसयत्ता महाबोधिसम्भारानं पञ्ञापारमिताय पवत्तिआनुभावस्स परिच्छेदो नाम नत्थि, कुतो तं निब्बत्तानं अभिञ्ञाञाणानं ति आह **"बुद्धानं पन परिच्छेदो नत्थी"** ति। अतीते "एत्तकानं कप्पानं असङ्ख्येय्यानी" ति एवं कालपरिच्छेदो नत्थि अनागते अनागतंसञाणस्स विय। तेनाह **"याव इच्छन्ति ताव सरन्ती"** ति।

एवं पञ्चन्नं जनानं पुब्बेनिवासानुस्सरणं कालविभागतो दस्सेत्वा इदानि आरम्मणग्गहणवसेनस्स पवत्तिविसेसं दस्सेन्तो **"तित्थिया चा"** ति आदिमाह। **खन्धपटिपाटिमेव सरन्ती** ति एत्थ खन्धपटिपाटि खन्धानं अनुक्कमो, सा च खो चुतितो पट्ठाय उप्पटिपाटिवसेन। केचि पनेत्थ "इरियापथपटिपाटि खन्धपटिपाटी" ति वदन्ति। वुत्तमेवत्थं ब्यतिरेकतो विभावेन्तो आह **"पटिपाटिं मुञ्चित्वा"** ति आदि। तत्थ **चुतिपटिसन्धिवसेना** ति अत्तनो परस्स वा तस्मिं तस्मिं अत्तभावे चुतिं दिस्वा अन्तरा किञ्चि अनामसित्वा पटिसन्धिया एव गहणवसेन। यथा पन अन्धा यट्ठिं अमुञ्चित्वा गच्छन्ति, एवं ते खन्धपटिपाटिं अमुञ्चित्वाव सरन्ती ति आह **"तेसञ्हि अन्धानं विय इच्छितप्पदेसोक्कमनं नत्थी"** ति। **सावका** ति पकतिसावका पि महासावका पि अग्गसावका पि सामञ्ञतो वुत्ता। पकतिसावका पि हि खन्धपटिपाटिया पि
B 394 अनुस्सरन्ति, चुतिपटिसन्धिवसेनपि सङ्कमन्ति बलवपञ्ञत्ता, तथा असीतिमहासावका। द्विन्नं पन अग्गसावकानं खन्धपटिपाटिकिच्चं नत्थि। एकस्स अत्तभावस्स चुतिं दिस्वा पटिसन्धिं पस्सन्ति, पुन अपरस्स चुतिं दिस्वा पटिसन्धिं ति एवं चुतिपटिसन्धिवसेन पि सङ्कमन्ता गच्छन्ति। यथा नाम सरदसमये ठितमज्झन्हिकवेलायं चतुरतनिके गेहे चक्खुमतो पुरिसस्स रूपगतं सुपाकटमेव होती ति लोकसिद्धमेतं। सिया पन तस्स सुखुमतरतिरोकुट्टादिभेदस्स रूपगतस्स अगोचरता, न त्वेव बुद्धानं ञातुं इच्छितस्स ञेय्यस्स अगोचरता, अथ खो तं ञाणालोकेन ओभासितं हत्थतले आमलकं विय सुपाकटं सुविभूतमेव होति, तथा ञेय्यावरणस्स सुप्पहीनत्ता ति आह **"बुद्धा पना"** ति आदि।

तत्थ **सीहोक्कन्तवसेना** ति सीहगतिपतनवसेन। **यं यं ठानं आकङ्खन्ती** ति यस्मिं कप्पे यस्मिं भवे यं यं ठानं जानितुं इच्छन्ति। **तं सब्बं सरन्तियेवा** ति ञातुं

---

१. खु० ९-३७६-पिट्ठे।

२. करुणूपायकोसल्लपरिग्गहादिना (विसुद्धिमग्गटीकायं अभिञ्ञानिद्देसवण्णनायं)।

इच्छितं तं सब्बं सरन्तियेव, न न सरन्ति। बुद्धानञ्हि नेव खन्धपटिपाटिकिच्चं, न च चुतिपटिसन्धिवसेन सङ्कमनकिच्चं अत्थि। तेसञ्हि अनेकासु कप्पकोटीसु हेट्ठा वा उपरि वा यं यं ठानं इच्छन्ति, तं तं पाकटमेव होति। तस्मा यथा पेय्यालपाळि पठन्ता "पठमं झानं....पे०....पञ्चमं झानं" ति आदिपरियोसानमेव गण्हन्ता सङ्खिपित्वा सज्झायन्ति, न अनुपदं, एवं अनेका पि कप्पकोटियो पेय्यालपाळि विय सङ्खिपित्वा यं यं इच्छन्ति, तत्थ तत्थेव ञाणेन ओक्कमन्ता सीहोक्कन्तवसेन गच्छन्ति। एवं गच्छन्तानञ्च तेसं ञाणं यथा नाम कतवालवेधिपरिचयस्स सरभङ्गसदिसस्स धनुग्गहस्स खित्तो सरो अन्तरन्तरा रुक्खलतादीसु असज्जमानो लक्खेयेव पतति न सज्जति न विरज्झति, एवं अन्तरन्तरासु जातीसु न सज्जति न विरज्झति, असज्जमानं अविरज्झमानं इच्छितिच्छितट्ठानंयेव गण्हाति।

अतीतभवे खन्धा तप्पटिबद्धनामगोत्तानि च सब्बं पुब्बेनिवासन्त्वेव सङ्गहितानी ति आह "**किं विदितं करोति?** पुब्बेनिवासं" ति। मोहो पटिच्छादकट्ठेन तमो विय तमो ति आह "**स्वेव मोहो**" ति आदि। **ओभासकरणट्ठेना** ति कातब्बतो करणं, ओभासोव करणं ओभासकरणं, अत्तनो पच्चयेहि ओभासभावेन निब्बत्तेतब्बट्ठेना ति अत्थो। **सेसं पसंसावचनं** ति पटिपक्खविधमनपवत्तिविसेसानं बोधनतो वुत्तं। **अविज्जा विहता** ति एतेन विजाननट्ठेन विज्जा ति अयम्पि अत्थो दीपितो ति दट्ठब्बं। **कस्मा? यस्मा विज्जा उप्पन्ना** ति एतेन विज्जापटिपक्खा अविज्जा, पटिपक्खता चस्सा पहातब्बभावेन विज्जाय च पहायकभावेना ति दस्सेति। **एस नयो इतरस्मिम्पि पदद्वये** ति इमिना तमो विहतो विनट्ठो। कस्मा? यस्मा आलोको उप्पन्नो ति इममत्थं अतिदिसति। किलेसानं आतापनपरितापनट्ठेन वीरियं आतपो ति आह "**वीरियातापेन आतापिनो**" ति, वीरियवतो ति अत्थो। **पेसितचित्तस्सा** ति[1] यथाधिप्पेतत्थसिद्धिं पतिविस्सट्ठचित्तस्स[2]। **यथा अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो** ति अञ्ञस्सपि कस्सचि मादिसस्सा ति अधिप्पायो। पधानानुयोगस्सा ति सम्मप्पधानमनुयुत्तस्स। सेसमेत्थ उत्तानत्ता वुत्तनयत्ता च सुविञ्ञेय्यमेव। B 395

पुब्बेनिवासकथा निट्ठिता।

दिब्बचक्खुञाणकथा

१३॥ **चुतिया** ति चवने। उपपाते ति उपपज्जने। समीपत्थे चेतं भुम्मवचनं, चुतिक्खणसामन्ता उपपत्तिक्खणसामन्ता चाति वुत्तं होति। तथा हि वक्खति "ये पन

---

१. पेसितत्तस्सा ति (सी०, क०)

२. यथाधिप्पेतत्थसिद्धिपतिविस्सट्ठस्स चित्तस्स (स्या०, क०)
यथाधिप्पेतत्थसिद्धिं पति विस्सट्ठचित्तस्स (सी०)

आसन्नचुतिका" ति आदि। **येन ञाणेना** ति येन दिब्बचक्खुञाणेन। दिब्बचक्खुञाणेनेव हि सत्तानं चुतिं च उपपत्तिं च ञायति। **परिकम्मं वत्तब्बं सिया** ति "दिब्बचक्खुञाणं उप्पादेतुकामेन आदिकम्मिकेन कुलपुत्तेन कसिणारम्मणं अभिञ्ञापादकज्झानं सब्बाकारेन अभिनीहारक्खमं कत्वा तेजोकसिणं ओदातकसिणं आलोककसिणं ति इमेसु तीसु कसिणेसु अञ्ञतरं आसन्नं कातब्बं, उपचारज्झानगोचरं कत्वा वड्ढेत्वा ठपेतब्बं" ति आदिना दिब्बचक्खुञाणस्स परिकम्मं वत्तब्बं भवेय्य।

सो अहं ति सो कतचित्ताभिनीहारो अहं। **दिब्बसदिसत्ता** ति दिवि भवन्ति दिब्बं, देवानं पसादचक्खु, तेन दिब्बेन चक्खुना सदिसत्ता ति अत्थो। **दिब्बसदिसत्ता**
B 396 ति च हीनूपमादस्सनं देवतानं दिब्बचक्खुतो पि इमस्स महानुभावत्ता। इदानि तं दिब्बसदिसत्तं विभावेतुं **"देवतानञ्हि"** ति आदि वुत्तं। तत्थ **सुचरितकम्मनिब्बत्तं** ति सद्धाबहुलताविसुद्धदिट्ठिताआनिसंसदस्साविताादिसम्पत्तिया सुट्ठु चरितत्ता सुचरितेन देवूपपत्तिजनकेन पुञ्ञकम्मेन निब्बत्तं। **पित्तसेम्हरुहिरादीहि** ति **आदि**-सद्देन वातरोगादीनं सङ्गहो। **अपलिबुद्धं** ति अनुपद्दुतं। पित्तादीहि अनुपद्दुतत्ता कम्मस्स च उळारताय उपक्किलेस विमुत्ति वेदितब्बा। उपक्किलेसदोसरहितञ्हि कम्मं तिणादिदोसरहितं विय सस्सं उळारफलं अनुपक्किलिट्ठं होति। कारणूपचारेन चस्स फलं तथा वोहरीयति यथा "सुक्कं सुक्कविपाकं" ति। **दूरे पी** ति पि-सद्देन सुखुमस्स पि आरम्मणस्स सम्पटिच्छनसमत्थतं सङ्गण्हाति। पसादचक्खू ति चतुन्नं महाभूतानं पसादलक्खणं चक्खु। **वीरियभावनाबलनिब्बत्तं** ति वीरियारम्भवसेनेव इज्झनतो सब्बा पि कुसलभावना वीरियभावना, पधानसङ्खारसमन्नागता वा इद्धिपादभावना विसेसतो वीरियभावना, तस्सा आनुभावेन निब्बत्तं वीरियभावनाबलनिब्बत्तं। ञाणमयं चक्खु **ञाणचक्खु**। **तादिसमेवा** ति उपक्किलेसविमुत्तताय दूरे पि सुखुमस्सपि आरम्मणस्स सम्पटिच्छनसमत्थताय च तंसदिसमेव।

दिब्बविहारवसेन पटिलद्धत्ता ति दिब्बविहारसङ्खातानं चतुन्नं झानानं वसेन पटिलद्धत्ता। इमिना कारणवसेनस्स दिब्बभावमाह। **दिब्बविहारसन्निस्सितत्ता** ति अट्ठङ्गसमन्नागमेन उक्कंसगतं पादकज्झानसङ्खातं दिब्बविहारं सन्निस्साय पवत्तत्ता, दिब्बविहारपरियापन्नं वा अत्तना सम्पयुत्तं रूपावचरचतुत्थज्झानं निस्साय पच्चयभूतं सन्निस्सितत्ता ति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो। **आलोकपरिग्गहेन महाजुतिकत्ता पि दिब्बं** ति कसिणालोकानुग्गहेन पत्तब्बत्ता सयं ञाणालोकफरणभावेन च महाजुतिकभावतो पि दिब्बं ति अत्थो। महाजुतिकम्पि हि दिब्बं ति वुच्चति "दिब्बमिदं ब्यम्हं" ति आदीसु। **महागतिकत्ता** ति महनीयगमनत्ता, विम्हनीयपवत्तिकत्ता ति अत्थो। विम्हयनीया हिस्स पवत्ति तिरोकुट्टादिगतरूपदस्सनतो। **तं सब्बं** ति हेट्ठा वुत्तं अत्थपञ्चकमपेक्खित्वा वुत्तं ति वदन्ति। केचि पन "जुतिगतिअत्थेसु पि सद्दविदू दिवु सद्दं इच्छन्ती ति महाजुतिकत्ता महागतिकत्ता ति इदमेव द्वयं सन्धाय वुत्तं, तस्मा 'सद्दसत्थानुसारेन वेदितब्बं' ति इदं दिब्बति जोतयती ति दिब्बं, दिब्बति गच्छति असज्जमानं पवत्तती ति दिब्बं ति इममत्थं दस्सेतुं वुत्तं" ति वदन्ति। **आचरियधम्म-**

पालत्थेरो पन—

"दिब्बचक्खुलाभाय योगिनो परिकम्मकरणं तप्पटिपक्खाभिभवस्स अत्थतो B 397
तस्स विजयिच्छा नाम होति, दिब्बचक्खुलाभी च इद्धिमा देवतानं वचनगहणक्खमन-धम्मदानवसेन महामोग्गल्लानत्थेरादयो विय दानग्गहणलक्खणे वोहारे च पवत्तेय्या ति एवं विहारविजयिच्छावोहारजुतिगतिसङ्खातानं अत्थानं वसेन इमस्स अभिञ्ञाञाणस्स दिब्बचक्खुभावसिद्धितो सद्दविदू च तेसु एव अत्थेसु दिवुसद्दं इच्छन्ती ति 'तं सब्बं सद्दसत्थानुसारेन वेदितब्बं' ति वुत्तं" ति[1] आह।

दस्सनट्ठेना ति रूपदस्सनभावेन। चक्खुना हि सत्ता रूपं पस्सन्ति। यथा मंसचक्खु विञ्ञाणाधिट्ठितं समविसमं आचिक्खन्तं विय पवत्तति, न तथा इदं। इदं पन सयमेव ततो सातिसयं चक्खुकिच्चकारी ति आह "**चक्खु किच्चकरणेन चक्खुमिवा ति पि चक्खू**" ति। **दिट्ठिविसुद्धिहेतुत्ता** ति सङ्खेपतो वुत्तमत्थं विवरितुं "**यो हि**" ति आदि वुत्तं। **उच्छेददिट्ठिं गण्हाती** ति परतो उप्पत्तिया अदस्सनतो "एत्थेवायं सत्तो उच्छिन्नो, एवमितरे पी" ति उच्छेददिट्ठिं गण्हाति। **नवसत्तपातुभावदिट्ठिं गण्हाती** ति झानलाभी अधिच्चसमुप्पन्निको विय गण्हाति। यथा हि सो असञ्ञसत्ता चवित्वा इधूपपन्नो पब्बजितो समानो अभिञ्ञालाभी हुत्वा पुब्बेनिवासं अनुस्सरन्तो इधूपपत्तिमेव दिस्वा ततो परं असञ्ञभवे उप्पत्तिं अनुस्सरितुमसक्कोन्तो "अहं अधिच्चसमुप्पन्नो पुब्बे नाहोसिं, सोम्हि एतरहि अहुत्वा सत्तताय परिणतो, सेसापि सत्ता "तादिसायेवा ति अभिनवसत्तपातुभावदिट्ठिं गण्हाति, एवमयम्पि उपपातमत्तमेव दिस्वा चुतिं अपस्सन्तो नवसत्तपातुभावदिट्ठिं गण्हाति।

इदानि अञ्ञथापि विसुद्धिकारणं दस्सेन्तो आह "**एकादसउपक्किलेसविरहतो वा**" ति आदि। **यथाहा** ति उपक्किलेससुत्ते आगतपाळिं निदस्सेति। तत्थ हि अनुरुद्धो नन्दियो किमिलो ति इमे तयो कुलपुत्ते आमन्तेत्वा धम्मं दस्सेन्तेन "अनुरुद्धा तुम्हे किं इमेहि न आलुळिस्सन्ति, अहम्पि इमेहि उपादाय एकादसहि उपक्किलेसेहि आलुळितपुब्बो" ति दस्सेतुं—

"अहम्पि सुदं अनुरुद्धा पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धो बोधिसत्तोव समानो B 398
ओभासञ्चेव सञ्जानामि दस्सनञ्च रूपानं, सो खो पन मे ओभासो न चिरस्सेव अन्तरधायति दस्सनञ्च रूपानं। तस्स मय्हं अनुरुद्धा एतदहोसि 'को नु खो हेतु, को पच्चयो, येन मे ओभासो अन्तरधायति दस्सनञ्च रूपानं' ति। तस्स मय्हं अनुरुद्धा एतदहोसि 'विचिकिच्छा खो मे उदपादि, विचिकिच्छाधिकरणञ्च मे समाधि चवि, समाधिम्हि चुते ओभासो अन्तरधायति दस्सनञ्च रूपानं, सोहं तथा करिस्सामि, यथा मे पुन न विचिकिच्छा उप्पज्जिस्सती' ति।

सो खो अहं अनुरुद्धा अप्पमत्तो आतापी पहितत्तो विहरन्तो ओभासञ्चेव सञ्जानामि दस्सनञ्च रूपानं, सो खो पन मे ओभासो न चिरस्सेव अन्तरधायति

१. विसुद्धिमग्गटीकायं अभिञ्ञानिद्देसवण्णनायं।

दस्सनञ्च रूपानं'। तस्स मय्हं अनुरुद्धा एतदहोसि 'को नु खो हेतु, को पच्चयो, येन मे ओभासो अन्तरधायति दस्सनञ्च रूपानं' ति। तस्स मय्हं अनुरुद्धा एतदहोसि 'अमनसिकारो खो मे उदपादि, अमनसिकाराधिकरणञ्च पन मे समाधि चवि, समाधिम्हि चुते ओभासो अन्तरधायति दस्सनञ्च रूपानं, सोहं तथा करिस्सामि, यथा मे पुन न विचिकिच्छा उप्पज्जिस्सति न अमनसिकारो' ति''—

आदिना[1] देसनं आरभित्वा इदं वुत्तं ''सो खो अहं अनुरुद्धा विचिकिच्छा चित्तस्स उपक्किलेसो ति इति विदित्वा'' ति आदि।

तत्थ[2] **विचिकिच्छा** ति महासत्तस्स आलोकं वड्ढेत्वा दिब्बचक्खुना नानाविधानि रूपानि पस्सन्तस्स ''इदं नु खो किं'' ति उप्पन्ना विचिकिच्छा। मनसिकारवसेन पन मे रूपानि उपट्ठहिंसु, रूपानि पस्सतो विचिकिच्छा उप्पज्जति, तस्मा इदानि किञ्चि न मनसि करिस्सामी ति तुण्ही भवति, तं तुण्हीभावप्पत्तिं सन्धायाह ''**अमनसिकारो**'' ति। **थिनमिद्धं** ति किञ्चि अमनसिकरोन्तस्स उप्पन्नं थिनमिद्धं। तथाभूतस्स हि सविप्फारिकमनसिकारस्स अभावतो थिनमिद्धं उप्पज्जति। **छम्भितत्तं**
B 399 ति थिनमिद्धं विनोदेत्वा यथारद्धमनसिकारवसेन हिमवन्ताभिमुखं आलोकं वड्ढेत्वा दानवरक्खसअजगरादयो पस्सन्तस्स उप्पन्नं छम्भितत्तं। **उप्पिलं** ति[3] ''मया दिट्ठभयं पकतिया चक्खुविञ्ञाणेन ओलोकियमानं न पस्सति, अदिट्ठे परिकप्पितसदिसे किं नाम भयं'' ति भयस्स विनोदनवसेन चिन्तेन्तस्स अत्तनो पच्चवेक्खणाकोसल्लं निस्साय उप्पन्नं उप्पिलावितत्तं[4]। **दुट्ठुल्लं** ति कायालसियं। ''मया थिनमिद्धं छम्भितत्तानं वूपसमनत्थं गाळ्हं वीरियं पग्गहितं, तेन मे उप्पिलसङ्खाता चित्तसमाधिदूसिता गेहस्सिता बलवपीति उप्पन्ना'' ति वीरियं सिथिलं करान्तस्स हि कायदुट्ठुल्लं कायदरथो कायालसियं उदपादि।

अच्चारद्धवीरियं ति मम वीरियं सिथिलं करोतो दुट्ठुल्लं उप्पन्नं'' ति पुन वीरियं पग्गण्हतो उप्पन्नं अच्चारद्धवीरियं। **अतिलीनवीरियं** ति ''मम वीरियं पग्गण्हतो एवं जातं'' ति पुन वीरियं सिथिलयतो उप्पन्नं अतिलीनवीरियं। **अभिजप्पा** ति देवलोकाभिमुखं आलोकं वड्ढेत्वा देवसंघं पस्सतो उप्पन्ना तण्हा। ''एवं मे होतू'' ति हि अभिनिविसनवसेन जप्पती ति अभिजप्पा, तण्हा। **नानत्तसञ्ञा** ति ''मय्हं एकजातिकं रूपं मनसिकरोन्तस्स अभिजप्पा उप्पन्ना, नानाविधं रूपं मनसिकारं करिस्सामी'' ति कालेन देवलोकाभिमुखं कालेन मनुस्सलोकाभिमुखं वड्ढेत्वा नानाविधानि रूपानि मनसिकरोतो उप्पन्ना नानत्तसञ्ञा, नानत्ते नानासभावे सञ्ञा ति नानत्तसञ्ञा। **अतिनिज्झायितत्तं** ति ''मय्हं नानाविधानि रूपानि मनसिकरोन्तस्स नानत्तसञ्ञा उदपादि, इट्ठं वा अनिट्ठं वा एकजातिकमेव रूपं मनसि करिस्सामी'' ति तथा मनसि-

---

१. म० ३-१९६ पिट्ठे। २. म० ट्ठ-४-१४८ पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।
३. उब्बिल्लावितंति (सी०) उब्बिल्लन्ति (स्या०)।
४. उब्बिल्लावितत्तं (सी०, स्या०)।

करोतो उप्पन्नं रूपानं अतिनिज्झायितत्तं, अतिविय उत्तरि कत्वा निज्झानं पेक्खनं अतिनिज्झायितत्तं। **ओभासं ति** परिकम्म समुट्ठितं ओभासं। **न च रूपानि पस्सामी** ति परिकम्मोभासमनसिकारप्पसुतताय दिब्बचक्खुना रूपानि न पस्सामि। **रूपानि हि खो पस्सामी** ति तेन परिकम्मोभासेन फरित्वा ठितट्ठाने दिब्बचक्खुनो विसयभूतानि रूपगतानि पस्सामि।

एवमादी ति **आदि**-सद्देन—

"केवलम्पि रत्तिं केवलम्पि दिवं केवलम्पि रत्तिन्दिवं तस्स मय्हं अनुरुद्धा एतदहोसि" 'को नु खो हेतु, को पच्चयो, य्वाहं ओभासं हि खो सञ्जानामि, न च रूपानि पस्सामि, रूपानि खो पस्सामि, न च ओभासं सञ्जानामि केवलम्पि रत्तिं केवलम्पि दिवं केवलम्पि रत्तिन्दिवं' ति। B 400
तस्स मय्हं अनुरुद्धा एतदहोसि 'यस्मिं हि खो अहं समये रूपनिमित्तं अमनसिकरित्वा ओभासनिमित्तं मनसि करोमि। ओभासं हि खो तस्मिं समये सञ्जानामि, न च रूपानि पस्सामि। यस्मिं पनाहं समये ओभासनिमित्तं अमनसिकरित्वा रूपनिमित्तं मनसि करोमि। रूपानि हि खो तस्मिं समये पस्सामि, न च ओभासं सञ्जानामि केवलम्पि रत्तिं केवलम्पि दिवं केवलम्पि रत्तिन्दिवं" ति[1]—एवमादि पाळिं सङ्गण्हाति।

मनुस्सानं इदं ति मानुसकं, मनुस्सानं गोचरभूतं रूपारम्मणं। तदञ्ञस्स पन तिब्बतिरोकुट्टसुखुमादिभेदस्स रूपस्स दस्सनतो अतिक्कन्तमानुसकं। एवरूपं तञ्च मनुस्सूपचारं अतिक्कन्तं नाम होती ति आह **"मनुस्सूपचारं अतिक्कमित्वा रूपदस्सनेना"** ति। तत्थ **मनुस्सूपचारं** ति मनुस्सेहि उपचरितब्बट्ठानं, पकतिया चक्खुद्वारेन गहेतब्बं विसयं ति अधिप्पायो। एवं विसयमुखेन दस्सेत्वा इदानि विसयिमुखेन दस्सेतुं **"मानुसकं वा"** ति आदि वुत्तं। तत्था पि मंसचक्खातिक्कमो तस्स किच्चातिक्कमेनेव दट्ठब्बो। **दिब्बेन चक्खुना** ति दिब्बचक्खुञाणेनपि दट्ठुं न सक्का खणस्स अतिइत्तरताय अतिसुखुमताय केसञ्चि रूपस्स, अपि च दिब्बचक्खुस्स पच्चुप्पन्नं रूपारम्मणं, तञ्च पुरेजातपच्चयभूतं, न च आवज्जनपरिकम्मेहि विना महग्गतस्स पवत्ति अत्थि, नापि उप्पज्जमानमेव रूपं आरम्मणपच्चयो भवितुं सक्कोति, भिज्जमानं वा, तस्मा चुतूपपातक्खणे रूपं दिब्बचक्खुना दट्ठुं न सक्का ति सुवुत्तमेतं।

यदि दिब्बचक्खुञाणं रूपारम्मणमेव, अथ कस्मा "सत्ते पस्सामी" ति वुत्तं ति? येभुय्येन सत्तसन्तानगतरूपदस्सनतो एवं वुत्तं। सत्तगहणस्स वा कारणभावतो वोहारवसेन वुत्तं ति पि वदन्ति। ते चवमाना ति अधिप्पेता ति सम्बन्धो। **एवरूपे** ति न चूतूपपातक्खणसमङ्गिनो ति अधिप्पायो। मोहूपनिस्सयं नाम कम्मं निहीनं निहीनफलं होती ति आह **"मोहनिस्सन्दयुत्तता"** ति। मोहूपनिस्सयता च

१. म० ३-१९९ पिट्ठे।

B 401 कुसलकम्मस्स पुब्बभागे मोहप्पवत्ति बहुलताय वेदितब्बा। ताय पन मोहप्पवत्तिया संकिलिट्ठं कुसलकम्मं निहीनमेव जातिं आदिं निप्फादेती ति निहीनजाति आदयो मोहस्स निस्सन्दफलानी ति आह **"हीनानं जातिकुलभोगादीनं"** ति आदि। **हीळिते** ति गरहिते। **ओहीळिते** ति विसेसतो गरहिते। **उञ्ञाते** ति लामकभावेन ञाते। **अवञ्ञाते** ति विसेसतो लामकभावेन विदिते। **अमोहनिस्सन्दयुत्तत्ता** ति एत्थ अमोहो सम्पयुत्तवसेन पुब्बभागवसेन च पवत्तो कथितो, तेन च तिहेतुकपटिसन्धिकं दस्सेति। तब्बिपरीते ति तस्स हीळितादिभावस्स विपरीते, अहीळिते अनोहीळिते अनुञ्ञाते अनवञ्ञाते चित्तीकते ति अत्थो।

सुवण्णे ति सुन्दरवण्णे। **दुब्बण्णे** ति असुन्दरवण्णे। सा पनायं सुवण्णदुब्बण्णता यथाक्कमं कम्मस्स अदोसदोसूपनिस्सयताय होती ति आह **"अदोसनिस्सन्दयुत्तत्ता"** ति आदि। अदोसूपनिस्सयता च कम्मस्स मेत्तादीहि परिभावितसन्तानप्पवत्तिया वेदितब्बा। **अभिरूपे विरूपे** ति इदं सण्ठानवसेन वुत्तं। सण्ठानवचनो पि हि वण्णसद्दो होति "महन्त हत्थिवण्णं अभिनिम्मिनित्वा" ति आदीसु[1] विय। पठमं वुत्तो पन अत्थो वण्णवसेनेव वुत्तो। सुन्दरं गतिं गता सुगता ति आह **"सुगतिगते"** ति, सुगतिं उपपन्ने ति अत्थो। अलोभज्झासया सत्ता वदञ्ञू विगतमच्छेरा, अलोभूपनिस्सयेन कम्मुना सुगता समिद्धा होन्ती ति आह **"अलोभनिस्सन्दयुत्तत्ता वा अड्ढे महद्धने"** ति। दुक्खं गतिं गता दुग्गता ति आह **"दुग्गतिगते"** ति। लोभज्झासया सत्ता लुद्धा मच्छरिनो लोभूपनिस्सयेन कम्मुना दुग्गता दुरूपा होन्ती ति आह **"लोभनिस्सन्दयुत्तत्ता वा दलिद्दे अप्पन्नपाने"** ति। **उपचितं** ति फलावहभावेन कतं। यथा कतञ्हि कम्मं फलदानसमत्थं होति, तथा कतं उपचितं। **चवमाने ति आदीहि दिब्बचक्खुकिच्चं वुत्तं** ति विसयमुखेन विसयिब्यापारमाह। **पुरिमेहो** ति "दिब्बेन चक्खुना" ति आदीनि पदानि सन्धाय वुत्तं। **आदीही** ति एत्थ च-सद्दो लुत्तनिद्दिट्ठो, तस्मा "दिब्बेन....पे०....पस्सामी
B 402 ति इमेहि "चवमाने" ति आदीहि च दिब्बचक्खु किच्चं वुत्तं ति अत्थो। **इमिना पन पदेना** ति "यथाकम्मूपगे सत्ते पजानामी" ति इमिना वाक्येन। पज्जति ञायति अत्थो इमिना ति हि पदं वाक्यं।

महन्तं दुक्खमनुभवमाने ति एत्थ दिब्बचक्खुञाणेन रूपं दिस्वा तेसं दुक्खानुभवनं कामावचरचित्तेनेव जानाती ति वेदितब्बं। **सो** ति नेरयिकसत्ते पच्चक्खतो दिस्वा ठितो दिब्बचक्खुञाणलाभी। **एवं मनसि करोती** ति तेसं नेरयिकानं निरयसंवत्तनिकस्स कम्मस्स ञातुकामतावसेन पादकज्झानं समापज्जित्वा वुट्ठाय परिकम्मवसेन मनसि करोति। **किं नु खो** ति आदि मनसिकारविधिदस्सनं। एवं पन परिकम्मं कत्वा पादकज्झानं समापज्जित्वा वुट्ठितस्स तं कम्मं आरम्मणं कत्वा आवज्जनं उप्पज्जति, तस्मिं निरुद्धे चत्तारि पञ्च वा जवनानि जवन्ति। येसं पुरिमानि तीणि चत्तारि वा परिकम्मउपचारानुलोमगोत्रभुनामकानि कामावचरानि, चतुत्थं पञ्चमं

---

१. सं० १-१०५ पिट्ठे।

वा अप्पनाचित्तं रूपावचरं चतुत्थज्झानिकं, तत्थ यं तेन अप्पनाचित्तेन सद्धिं उप्पन्नं ञाणं, तं यथाकम्मूपगञाणं ति वेदितब्बं। "**विसुं परिकम्मं नत्थी**" ति इदं पन दिब्बचक्खुञाणेन विन यथाकम्मूपगञाणस्स विसुं परिकम्मं नत्थी ति अधिप्पायेन वुत्तं। एवञ्चेतं इच्छितब्बं, अञ्ञथा यथाकम्मूपगञाणस्स महग्गतभावो एव न सिया। देवानं दस्सने पि एसेव नयो। नेरयिकदेवग्गहणञ्चेत्थ निदस्सनमत्तं दट्ठब्बं। आकङ्खमानो हि दिब्बचक्खुलाभी अञ्ञगतिकेसु पि एवं पटिपज्जतियेव। तथा हि वक्खति "अपायग्गहणेन तिरच्छानयोनिं दीपेती" ति आदि, "सुगतिग्गहणेन मनुस्सगति पि सङ्गय्हती" ति च। तं निरयसंवत्तनियकम्मं आरम्मणमेतस्सा ति **तंकम्मारम्मणं। फारुसकवनादीसू** ति **आदि**-सद्देन चित्तलतावनादीनं सङ्गहो।

यथा चिमस्सा ति यथा च इमस्स यथाकम्मूपगञाणस्स विसुं परिकम्मं नत्थि, एवं अनागतं सञ्ञाणस्स पी ति विसुं परिकम्माभावञ्च निदस्सेति। तत्थ कारणमाह "**दिब्बचक्खुपादकानेव हि इमानी**" ति। तत्रायमधिप्पायो—यथा दिब्बचक्खुलाभी निरयादि अभिमुखं आलोकं वड्ढेत्वा नेरयिकादिके सत्ते दिस्वा तेहि पुब्बे आयूहितं निरयसंवत्तनियादिकं कम्मं तादिसेन समादानेन तज्जेन च मनसिकारेन परिक्खते चित्ते याथावतो जानाति, एवं यस्स यस्स सत्तस्स समनन्तरं अनागतं अत्तभावं ञातुकामो, तं तं ओदिस्स आलोकं वड्ढेत्वा तेन तेन अतीते एतरहि वा आयूहितं तस्स निब्बत्तकं कम्मं यथाकम्मूपगञाणेन दिस्वा तेन तेन निब्बत्तेतब्बं B 403
अनागतं अत्तभावं ञातुकामो तादिसेन समादानेन तज्जेन च मनसिकारेन परिक्खते चित्ते याथावतो जानाति। एस नयो ततो परेसु पि अत्तभावेसु। एतं अनागतंसञाणं नाम। यस्मा एतं द्वयं दिब्बचक्खुञाणे सति एव सिज्झति, नासति। तेन वुत्तं "**इमानि दिब्बचक्खुना सहेव इज्झन्ती**" ति।

कायेन दुच्चरितं, कायतो वा उप्पन्नं दुच्चरितं ति कायेन दुट्ठु चरितं, कायतो वा उप्पन्नं किलेसपूतिकत्ता दुट्ठु चरितं कायदुच्चरितं ति एवं यथाक्कमं योजेतब्बं। **कायो** ति चेत्थ चोपनकायो अधिप्पेतो। कायविञ्ञत्तिवसेन पवत्तं अकुसलं कायकम्मं कायदुच्चरितं। यस्मिं सन्ताने कम्मं कतुपचितं, असति[1] आहारुपच्छेदे विपाकारहसभावस्स अविगच्छनतो सो तेन सहितोयेवा ति वत्तब्बो ति आह "**समन्नागता ति समङ्गीभूता**" ति। **अनत्थकामा हुत्वा** ति एतेन मातापितरो विय पुत्तानं, आचरियुपज्झाया विय च निस्सितकानं अत्थकामा हुत्वा गरहका उपवादका न होन्ती ति दस्सेति। गुणपरिधंसनेना ति विज्जमानानं गुणानं विद्धंसनेन, विनासनेना ति अत्थो। ननु च अन्तिमवत्थुना पि उपवादो गुणपरिधंसनमेवा ति? सच्चमेतं, गुणा ति पनेत्थ झानादिविसेसा उत्तरिमनुस्सधम्मा अधिप्पेता ति सीलपरिधंसनं विसुं गहितं। तेनाह "**नत्थि इमेसं समणधम्मो**" ति आदि। **समणधम्मो** ति च सीलसंयमं सन्धाय वदति। **जानं वा** ति यं उपवदति, तस्स अरियभावं जानन्तो वा। **अजानं वा** ति अजानन्तो

---

१. असतिस्स (स्या०)।

वा। जाननाजानन्चेत्थ अप्पमाणं, अरियभावो एव पमाणं। तेनाह **"उभयथापि अरियूपवादोव होती"** ति। "अरियो ति पन अजानतो अदुट्ठचित्तस्सेव तत्थ अरियगुणभावं पवेदेन्तस्स गुणपरिधंसनं न होती ति तस्स अरियूपवादो नत्थी" ति वदन्ति। **भारियं कम्मं** ति आनन्तरियसदिसत्ता भारियं कम्मं, सतेकिच्छं पन होति खमापनेन, न आनन्तरियं विय अतेकिच्छं।

तस्स च आविभावत्थं ति भारियादिसभावस्स पकासनत्थं। **तं जिगुच्छी** ति तं थेरं, तं वा किरियं जिगुच्छि। **अतिच्छातो** ति अतिविय खुदाभिभूतो। **महल्लको** ति समणानं सारुप्पमसारुप्पं, लोकसमुदाचारमत्तं वा न जानाती ति अधिप्पायेन वुत्तत्ता
B 404 गुणपरिधंसनेन गरहती ति वेदितब्बं। **अम्हाकं लज्जितब्बकं अकासी** ति "समणेन नाम एवं कतं" ति वुत्ते मयं सीसं उक्खिपितुं न सक्कोमा ति अधिप्पायो। जानन्तो एव थेरो **"अत्थि ते आवुसो इमस्मिं सासने पतिट्ठा"** ति पुच्छि। इतरो पि सच्चाभिसमयो सासने पतिट्ठा ति आह **"सोतापन्नो अहं"** ति। थेरो तं करुणायमानो **"खीणासवो तया उपवदितो"** ति अत्तानं आवि अकासि। **तेनस्स तं पाकतिकं अहोसी** ति तेन अस्स तं कम्मं मग्गावरणं नाहोसी ति अधिप्पायो। पुब्बेव पन सोतापन्नत्ता अपायगामीनं सुप्पहीनभावतो सग्गावरणमस्स कातुमसमत्थमेव तं कम्मं। **अत्तना वुड्ढतरो होती** ति एत्थ "उक्कुटिकं निसीदित्वा खमापेतब्बो" ति **विसुद्धिमग्गे**[1] वुत्तं। सोतापन्नसकदागामिनो दोसेन पि नक्खमन्ति, सेस अरिया वा तस्स अत्थकामा हुत्वा आयतिं संवरणत्थाय न खमापेय्युं ति आह **"सचे सो नक्खमती"** ति। **अत्तना वुड्ढतरो होति, ठितकेनेवा** ति एत्थापि "उक्कुटिकं निसीदित्वा" ति विसुद्धिमग्गे[1] वुत्तं। एवञ्हि तत्थ वुत्तं—

"सचे दिसापक्कन्तो होति, सयं वा गन्त्वा सद्धिविहारिके वा पेसेत्वा खमापेतब्बो। सचे ना पि गन्तुं, न पेसेतुं सक्का होति, ये तस्मिं विहारे भिक्खू वसन्ति, तेसं सन्तिकं गन्त्वा सचे नवकतरा होन्ति, उक्कुटिकं निसीदित्वा, सचे वुड्ढतरा, वुड्ढेसु वुत्तनयेनेव पटिपज्जित्वा 'अहं भन्ते असुकं नाम आयस्मन्तं इदञ्चिदञ्च अवचं, खमतु मे सो आयस्मा' ति वत्वा खमापेतब्बं। सम्मुखा अखमन्ते पि एतदेव कातब्बं" ति।

इदं पन परम्पि तत्थ वुत्तं—

"सचे एकचारिकभिक्खु होति, नेवस्स वसनट्ठानं, न गतट्ठानं पञ्ञायति, एकस्स पण्डितस्स भिक्खुनो सन्तिकं गन्त्वा 'अहं भन्ते असुकं नाम आयस्मन्तं इदञ्चिदञ्च अवचं, तं मे अनुस्सरतो अनुस्सरतो विप्पटिसारो होति, किं करोमी ति वत्तब्बं। सो वक्खति 'तुम्हे मा चिन्तयित्थ, थेरो तुम्हाकं खमति, चित्तं वूपसमेथा' ति। तेन पि अरियस्स गतदिसाभिमुखेन[2] अञ्जलिं पग्गहेत्वा 'खमतू' ति वत्तब्बं" ति।

---

१. विसुद्धि॰ २-५६ पिट्ठे। २. अनियमगतदिसाभिमुखेन (क॰)।

परिनिब्बुतमञ्चट्ठानं ति पूजाकरणट्ठानं सन्धायाह। **पाकतिकमेव होती** ति B 405
एवं कते अत्तनो चित्तं पसीदती ति तं कम्मं सग्गावरणं मग्गावरणञ्च न होती ति अधिप्पायो ति केचि वदन्ति। चरियापिटके मातङ्गचरितसंवण्णनायं[1]—

"पारमितापरिभावनसमिद्धाहि नानासमापत्तिविहारपरिपूरिताहि सीलदिट्ठिसम्पदाहि सुसङ्खतसन्ताने महाकरुणाधिवासे महासत्ते अरियूपवादकम्मअभिसपसङ्खातं फरुसवचनं संयुत्तं महासत्तस्स खेत्तविसेसभावतो तस्स च अज्झासयफरुसताय दिट्ठधम्मवेदनीयं हुत्वा सचे सो महासत्तं न खमापेति, सत्तमे दिवसे विपच्चनसभावं जातं। खमापिते पन महासत्ते पयोगसम्पत्तिया विपाकस्स पटिबाहितत्ता अविपाकधम्मतं आपज्जि अहोसिकम्मभावतो। अयञ्हि अरियूपवादपापस्स दिट्ठधम्मवेदनीयस्स च धम्मता" ति—

आचरिय धम्मपालत्थेरेन वुत्तत्ता एवं खमापिते तं कम्मं पयोगसम्पत्तिया विपाकस्स पटिबाहितत्ता अहोसिकम्मभावेन अविपाकधम्मतं आपन्नं ति नेव सग्गावरणं न मोक्खावरणञ्च होती ति एवमेत्थ अत्थो गहेतब्बो।

विपरीतं दस्सनमेतेसंति **विपरीतदस्सना**। समादातब्बट्ठेन समादानानि, कम्मानि समादानानि येसं ते कम्मसमादाना, मिच्छादिट्ठिवसेन कम्मसमादाना **मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना**, हेतु अत्थं वा अन्तोगधं कत्वा मिच्छादिट्ठिवसेन परे कम्मेसु समादापका **मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना**। तयिमं अत्थं दस्सेन्तो "**मिच्छादिट्ठिवसेना**" ति आदिमाह। ये च····पे०····समादपेन्ति, ते पि मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना ति योजेतब्बं। **सीलसम्पन्नो** ति आदि परिपक्किन्द्रियस्स मग्गसमङ्गिनो वसेन वुत्तं, अग्गमग्गट्ठे पन वत्तब्बमेव नत्थि। अथ वा अग्गमग्गपरियापन्ना एव सीलादयो वेदितब्बा। अग्गमग्गट्ठस्स हि दिट्ठेव धम्मे एकंसिका अञ्ञाराधना, इतरेसं अनेकंसिका। **अञ्ञं** ति अरहत्तं। **एवंसम्पदमिदं** ति एत्थ सम्पज्जनं सम्पदा, निप्फत्ति, एवं अविरज्झनकनिप्फत्तिकं ति अत्थो, यथा तं अवस्सम्भावी, एवमिदम्पी ति वुत्तं होति। यथा हि मग्गानन्तरं अविरज्झित्वाव फलं निब्बत्तं, एवमेतं इमस्स पि B 406
पुग्गलस्स चुति अनन्तरं अविरज्झित्वाव निरये पटिसन्धि होती ति दस्सेति। सकलस्मिञ्हि बुद्धवचने न इमाय उपमाय गाळ्हतरं कत्वा वुत्त उपमा अत्थि। **तं वाचं अप्पहाया** ति आदीसु[2] अरियूपवादं सन्धाय "पुन एवरूपिं वाचं न वक्खामी" ति वदन्तो वाचं पजहति नाम, "पुन एवरूपं चित्तं न उप्पादेस्सामी" ति चिन्तेन्तो चित्तं पजहति नाम, "पुन एवरूपिं दिट्ठिं न गण्हिस्सामी" ति पजहन्तो दिट्ठिं पजहति नाम। तथा अकरोन्तो नेव पजहति न पटिनिस्सज्जति। **यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये** ति यथा निरयपालेहि आहरित्वा निरये ठपितो, एवं निरये ठपितोयेव, नास्स निरयूपपत्तिया कोचि विबन्धो। तत्रायं युत्ति—निरयूपगो अरियूपवादी तदादायकस्स

१. चरियापिटक-ट्ठ-१५६ पिट्ठे।
२. म० ट्ठ० १-३३७ पिट्ठे पि पस्सितब्बं।

अविजहनतो सेय्यथापि मिच्छादिट्ठी ति। एत्थ च "तं वाचं अप्पहाया" ति एवमादिवचनेन तदादायकस्स अप्पहानेनेव अरियूपवादो अन्तरायिको अनत्थावहोव, पहानेन पन अच्चयं देसेत्वा खमापनेन न अन्तरायिको अनत्थावहो यथा तं वुट्ठिता देसिता च आपत्ती ति दस्सेति। मिच्छादिट्ठिवसेन अकत्तब्बं नाम पापं नत्थि, यतो संसारखाणुभावो पि नाम होती ति आह **"मिच्छादिट्ठिपरमानि भिक्खवे वज्जानी"** ति।

"उच्छिन्नभवनेत्तिको भिक्खवे तथागतस्स कायो तिट्ठति,[१] अयञ्चेव कायो बहिद्धा च नामरूपं" ति च एवमादीसु विय इध **काय**-सद्दो खन्धपञ्चकविसयो ति आह **"कायस्स भेदा ति उपादिन्नक्खन्धपरिच्चागा"** ति। अवीतरागस्स मरणतो परं नाम भवन्तरूपादानमेवा ति आह **"परं मरणा ति तदनन्तरं अभिनिब्बत्तक्खन्धग्गहणे"** ति[२]। येन तिट्ठति, तस्स उपच्छेदेनेव कायो भिज्जती ति आह **"कायस्स भेदा ति जीवितिन्द्रियस्स उपच्छेदा"** ति। एति इमस्मा सुखं ति अयो, पुञ्ञं ति आह **"पुञ्ञसम्मता अया"** ति। आयन्ति एतस्मा सुखानी ति आयो, पुञ्ञकम्मादीनं सुखसाधनं। तेनाह **"सुखानं वा आयस्स अभावा"** ति। **विवसा** ति कम्मस्स वसे वत्तनतो अत्तनो वसे वत्तितुं न सक्कोन्तो ति विगतो वसो एतेसं ति विवसा,
B 407 अवसवत्तिनो ति अत्थो। इयति[३] अस्सादीयती ति अयो अस्सादो ति आह **"अस्साद-सञ्ञितो अयो"** ति।

नागराजादीनं ति **आदि**-सद्देन सुपण्णादीनं सङ्गहो। **असुरसदिसं** ति पेतासुर-सदिसं। **सो हि** ति सो असुरकायो। **सब्बसमुस्सयेहि** ति सब्बेहि सम्पत्तिसमुस्सयेहि, सब्बसम्पत्तिरासितो ति वुत्तं होति। **वुत्तविपरियायेना** ति "सुट्ठु चरितं, सोभनं वा चरितं अनवज्जत्ता ति सुचरितं" ति आदिना कायदुच्चरितेना ति आदीनं पदानं वुत्तस्स अत्थस्स विपरियायेन। "इतो भो सुगतिं गच्छा" ति[४] वचनतो मनुस्सगति पि सुगतियेवा ति आह **"सुगतिग्गहणेन मनुस्सगति पि सङ्गय्हती"** ति। सेसमेत्थ वुत्तनयत्ता उत्तानत्थतो च सुविञ्ञेय्यमेव।

दिब्बचक्खुञाणकथा निट्ठिता

आसवक्खयञाणकथा

१४। **विपस्सनापादकं** ति विपस्सनाय पदट्ठानभूतं। विपस्सना च तिविधा विपस्सकपुग्गलभेदेन। महाबोधिसत्तानञ्हि पच्चेकबोधिसत्तानञ्च चिन्तामयञाण-

---

१. दी० १-४२ पिट्ठे। २. अभिनिब्बत्तक्खन्धग्गहणा ति (स्या०)
३. अयति (सी० स्या०) ४. खु० १-२४८ पिट्ठे।

संवड्ढितत्ता[1] सयम्भूञाणभूता, इतरेसं सुतमयञाणसंवड्ढितत्ता परोपदेससम्भूता। सा "ठपेत्वा नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं अवसेसरूपारूपज्झानानं अञ्ञतरतो वुट्ठाया" ति आदिना अनेकधा अरूपमुखवसेन चतुधातुववत्थाने वुत्तानं तेसं तेसं धातुपरिग्गहमुखानं अञ्ञतरमुखवसेन अनेकधाव **विसुद्धिमग्गे** नानानयतो विभाविता। महाबोधिसत्तानं पन चतुवीसतिकोटिसतसहस्समुखेन पभेदगमनतो नानानयं सब्बञ्ञुतञ्ञाणसन्निस्सयस्स अरियमग्गञाणस्स अधिट्ठानभूतं पुब्बभागञाणगब्भं गण्हापेन्तं परिपाकं गच्छन्तं परमगम्भीरं सण्हसुखुमतरं अनञ्ञसाधारणं विपस्सनाञाणं होति। यं **अट्ठकथासु** महावजिरञ्ञाणं ति वुच्चति। यस्स च पवत्तिविभागेन चतुवीसतिकोटिसतसहस्सपभेदस्स पादकभावेन समापज्जियमाना चतुवीसतिकोटिसतसहस्ससङ्ख्या देवसिकं सत्थु वळञ्जनकसमापत्तियो वुच्चन्ति, स्वायं बुद्धानं विपस्सनाचारो **परमत्थमञ्जूसायं** B 408
विसुद्धिमग्गवण्णनायं उद्देसतो दस्सितो, अत्थिकेहि ततो गहेतब्बो।

आसवानं खेपनतो समुच्छिन्दनतो आसवक्खयो अरियमग्गो, उक्कट्ठनिद्देसवसेन अरहत्तमग्गग्गहणं। आसवानं खये ञाणं आसवक्खयञाणं ति दस्सेन्तो **"तत्र चेतं ञाणं"** ति वत्वा **खये** ति च आधारे भुम्मं, न विसये ति दस्सेन्तो **"तप्परियापन्नत्ता"** ति आह। **इदं दुक्खं** ति दुक्खस्स अरियसच्चस्स तदा पच्चक्खतो गहितभावदस्सनं। **एत्तकं दुक्खं** ति तस्स परिच्छिज्ज गहितभावदस्सनं। **न इतो भिय्यो** ति अनवसेसेत्वा गहितभावदस्सनं। तेनाह "सब्बम्पि दुक्खसच्चं" ति आदि। **सरसलक्खणपटिवेधेना** ति सभावसङ्खातस्स लक्खणस्स असम्मोहतो पटिविज्झनेन। असम्मोहपटिवेधो ति च यथा तस्मिं ञाणे पवत्ते पच्छा दुक्खस्स सरूपादिपरिच्छेदे सम्मोहो न होति, तथा पवत्ति। तेनाह **"यथाभूतं अब्भञ्ञासिं"** ति। **निब्बत्तिकं** ति निप्फादेन्तं। **यं ठानं पत्वा** ति यं निब्बानं मग्गस्स आरम्मणपच्चयट्ठेन कारणभूतं आगम्म। तदुभयवतो हि पुग्गलस्स पत्ति तदुभयस्स पत्ती ति वुत्तं। **पत्वा** ति वा पापुणनहेतु। **अप्पवत्तिं** ति अप्पवत्तिनिमित्तं। ते वा न पवत्तन्ति एत्थाति अप्पवत्ति, निब्बानं। **तस्सा** ति दुक्खनिरोधस्स। **सम्पापकं** ति सच्छिकिरियावसेन सम्मदेव पापकं।

किलेसवसेना ति आसवसङ्खातकिलेसवसेन। यस्मा आसवानं दुक्खसच्चपरियायो, तप्परियापन्नत्ता, सेससच्चानञ्च तंसमुदयादिपरियायो अत्थि, तस्मा वुत्तं **"परियायतो"** ति। दस्सेन्तो सच्चानी ति योजना। आसवानं येव चेत्थ गहणं "आसवानं खयञाणाया" ति आरद्धत्ता। तथा हि आसवविमुत्तिसीसेनेव सब्बसंकिलेसविमुत्ति वुत्ता। **इदं दुक्खं ति यथाभूतं अब्भञ्ञासिं** ति आदिना मिस्सकमग्गो इध कथितो ति **"सह विपस्सनाय कोटिप्पत्तं मग्गं कथेती"** ति वुत्तं। एत्थ च सच्चप्पटिवेधस्स तदा अतीतकालिकत्ता "यथाभूतं अब्भञ्ञासिं" ति वत्वा पि अभिसमयकाले तस्स पच्चुप्पन्नतं उपादाय "एवं जानतो एवं पस्सतो" ति वत्तमानकालेन निद्देसो कतो। सो च कामं मग्गक्खणतो परं यावज्जतना अतीतकालिको एव, सब्बपठमं पनस्स

१. चिन्तामयञाणसंवड्ढिता (सी०, स्या०)

B 409 अतीतकालिकत्तं फलक्खणेनेव[1] वेदितब्बं ति आह **"विमुच्चित्था ति इमिना फलक्खणं दस्सेती"** ति। **जानतो पस्सतो** ति वा हेतुनिद्देसोयं। जाननहेतु दस्सनहेतु कामासवा पि चित्तं विमुच्चित्था ति योजना। भवासवग्गहणेनेव चेत्थ भवरागस्स विय भवदिट्ठिया पि समवरोधो ति दिट्ठासवस्स पि सङ्गहो दट्ठब्बो।

यस्मा पहीनकिलेसपच्चवेक्खणेन विज्जमानस्सपि कम्मस्स आयतिं अप्पटिसन्धिकभावतो "खीणा जाती" ति जानाति, यस्मा च मग्गपच्चवेक्खणादीहि वुसितं ब्रह्मचरियं ति आदिं पजानाति, तस्मा वुत्तं **"खीणा जाती ति आदीहि तस्स भूमिं"** ति। तत्थ **तस्सा** ति पच्चवेक्खणञाणस्स। **भूमिं** ति पवत्तिट्ठानं। येनाधिप्पायेन **"कतमा पना"** ति आदिना चोदना कता, तं पकासेत्वा परिहारं वत्तुकामो आह **"न तावस्सा"** ति आदि। **न तावस्स अतीता जाति खीणा** ति मग्गभावनाय न खीणा ति अधिप्पायो। तत्थ कारणमाह **"पुब्बेव खीणत्ता"** ति। न अनागता अस्स जाति खीणा ति योजना। **न अनागता** ति च अनागतत्तसामञ्ञं गहेत्वा लेसेन वदति। तेनाह **"अनागते वायामाभावतो"** ति। विज्जमानेयेव हि पयोगो सम्भवति, नाविज्जमाने ति अधिप्पायो। अनागतविसेसो पनेत्थ अधिप्पेतो, तस्स च खेपने वायामो पि लब्भतेव। तेनाह **"या पन मग्गस्सा"** ति आदि। "या पना" ति हि आदिना मग्गभावनाय अनागतजातिया एव हेतुविनासनद्वारेन खीणभावो पकासीयति। **एकचतुपञ्चवोकारभवेसू** ति भवत्तयग्गहणं वुत्तनयेन अनवसेसतो जातिया खीणभावदस्सनत्थं। **तं** ति यथावुत्तजातिं। **सो** ति भगवा।

ब्रह्मचरियवासो नाम इध मग्गब्रह्मचरियस्स निब्बत्तनमेवा ति आह **"निट्ठितं"** ति। सम्मादिट्ठिया चतूसु सच्चेसु परिञ्ञादिकिच्चसाधनवसेन पवत्तमानाय सम्मासङ्कप्पादीनम्पि दुक्खसच्चे परिञ्ञाभिसमयानुगुणा पवत्ति, इतरसच्चेसु च नेसं पहानाभिसमयादिवसेन पवत्ति पाकटा एव। तेन वुत्तं **"चतूहि मग्गेहि परिञ्ञापहानसच्छिकिरियाभावनाभिसमयवसेना"** ति। **नापरं इत्थत्ताया** ति इमे पकारा इत्थं, तब्भावो इत्थत्तं, तदत्थं ति वुत्तं होति। ते पन पकारा अरियमग्गब्यापारभूता परिञ्ञादयो इधाधिप्पेता ति आह **"एवं सोळसकिच्चभावाया"** ति। ते हि मग्गं पच्चवेक्खतो
B 410 मग्गानुभावेन पाकटा हुत्वा उपट्ठहन्ति, परिञ्ञादीसु च पहानमेव पधानं, तदत्थत्ताय इतरेसं ति आह **"किलेसक्खयाय वा"** ति। पहीनकिलेसपच्चवेक्खणवसेन वा एतं वुत्तं। "नापरं इत्थत्ताया ति अब्भञ्ञासि" ति एत्थायमपरो नयो—**इत्थत्ताया** ति निस्सक्के सम्पदानवचनं। तेनायमत्थो—इत्थत्ताय इत्थम्भावतो इमस्मा एवंपकारा इदानि वत्तमानक्खन्धसन्ताना अपरं अनागतक्खन्धसन्तानं मय्हं नत्थि, इमे पन चरिमत्तभावसङ्खाता पञ्चक्खन्धा परिञ्ञाता अप्पतिट्ठा तिट्ठन्ति छिन्नमूलका रुक्खा विय। अपरिञ्ञातमूलका हि पतिट्ठा। यथा "कवळीकारे चे भिक्खवे आहारे अत्थि रागो अत्थि नन्दी अत्थि तण्हा, पतिट्ठितं तत्थ विञ्ञाणं विरुळ्हं" ति आदि[1]। ते

---

१. सं० १–३२५, अभि०–४–११४, खु० ७–१९ पिट्ठेसु।

पन पञ्चक्खन्धा चरिमकविञ्ञाणनिरोधेन अनुपादानो विय जातवेदो निब्बायिस्सन्ती ति अब्भञ्ञासिं ति ।

पच्चवेक्खणञाणपरिग्गहितं ति न पठमदुतियञाणद्वयाधिगमं विय केवलं ति अधिप्पायो । **दस्सेन्तो** ति निगमनवसेन दस्सेन्तो । सरूपतो हि पुब्बे दस्सितमेवा ति । सेसमेत्थ वुत्तनयत्ता सुविञ्ञेय्यमेव ।

तिक्खत्तुं जातो ति इमिना पन इदं दस्सेति "अहं ब्राह्मण पठमविज्जाय जातोयेव पुरेजातस्स सहजातस्स वा अभावतो सब्बेसं वुड्ढो महल्लको, किमङ्गं पन तीहि विज्जाहि तिक्खत्तुं जातो ति । **पुब्बेनिवासञाणेन अतीतंसञाणं** ति अतीतारम्मणसभागताय तब्भावीभावतो च पुब्बेनिवासञाणेन अतीतंसञाणं पकासेत्वा ति योजेतब्बं । तत्थ **अतीतंसञाणं** ति अतीतक्खन्धायतनधातुसङ्खाते अतीतकोट्ठासे अप्पटिहतञाणं । दिब्बचक्खुञाणस्स पच्चुप्पन्नारम्मणत्ता यथाकम्मूपगञाणस्स अनागतंसञाणस्स च दिब्बचक्खुवसेनेव इज्झनतो दिब्बचक्खुनो परिभण्डञाणत्ता दिब्बचक्खुम्हियेव च ठितस्स चेतोपरियञाणसिद्धितो वुत्तं "**दिब्बचक्खुना पच्चुप्पन्नानागतंसञाणं**" ति । तत्थ **दिब्बचक्खुना** ति सपरिभण्डेन दिब्बचक्खुञाणेन । पच्चुप्पन्नंसो च अनागतंसो च पच्चुप्पन्नानागतंसं, तत्थ ञाणं **पच्चुप्पन्नानागतंसञाणं** । आसवक्खयञाणाधिगमेनेव सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स विय सेसासाधारणञाणदसबलञाणआवेणिकबुद्धधम्मादीनम्पि अनञ्ञसाधारणानं बुद्धगुणानं इज्झनतो वुत्तं "**आसवक्खयेन सकललोकियलोकु-** B 411
त्तरगुणं" ति । तेनाह "**सब्बेपि सब्बञ्ञुगुणे पकासेत्वा**" ति ।

आसवक्खयञाणकथा निट्ठिता ।

देसनानुमोदनकथा

१५।। **पीतिविप्फारपरिपुण्णगत्तचित्तो** ति पीतिफरणेन परिपुण्णकायचित्तो । **अञ्ञाणं** ति अञ्ञाणस्सा ति अत्थो । **धी** सद्दस्स योगतो हि सामि अत्थे एतं उपयोगवचनं । **अभिक्कन्ता** ति एत्थ अतिक्कन्ता विगता ति अत्थो ति आह "**खये दिस्सती**" ति । तेनेव हि "**निक्खन्तो पठमो यामो**" ति वुत्तं । **अभिक्कन्ततरो चा** ति अतिविय कन्ततरो मनोरमो, तादिसो च सुन्दरो भद्दको नाम होती ति आह "**सुन्दरे दिस्सती**" ति । **को** ति देवनागयक्खगन्धब्बादीसु को कतमो । **मे** ति मम । **पादानी** ति पादे । **इद्धिया** ति इमाय एवरूपाय देविद्धिया । **यससा** ति इमिना एदिसेन परिवारेन परिच्छेदेन । **जलं** ति विज्जोतमानो । **अभिक्कन्तेना** ति अतिविय कन्तेन कमनीयेन अभिरूपेन । **वण्णेना** ति छविवण्णेन सरीरवण्णनिभाय । **सब्बा ओभासयं दिसा** ति दसपि दिसा पभासेन्तो चन्दो विय सूरियो विय च एकोभासं एकालोकं करोन्तो ति गाथाय अत्थो । **अभिरूपे** ति उळाररूपे सम्पन्नरूपे ।

अभिक्कन्तं भो गोतम, अभिक्कन्तं भो गोतमा ति वचनद्वयस्स "साधु साधु भो गोतमा" ति आमेडितवसेन अत्थं दस्सेत्वा तस्स विसयं निद्धारेन्तो आह "**भये कोधे**" ति आदि। तत्थ "चोरो चोरो, सप्पो सप्पो" ति आदीसु **भये** आमेडितं। विज्झ विज्झ, पहर पहरा ति आदीसु **कोधे**। "साधु साधू" ति आदीसु **पसंसायं**। "गच्छ गच्छ, लुनाहि लुनाही" ति आदीसु **तुरिते**। "आगच्छ आगच्छा" ति आदीसु **कोतूहले**। "बुद्धो बुद्धो ति चिन्तेन्तो" ति आदीसु[1] **अच्छरे**। "अभिक्कमथायस्मन्तो, अभिक्कमथायस्मन्तो" ति आदीसु[2] **हासे**। "कहं एकपुत्तक, कहं एकपुत्तका" ति
B 412 आदीसु **सोके**। "अहो सुखं, अहो सुखं" ति आदीसु[3] **पसादे**। **च**—सद्दो अवुत्तसमुच्चयत्थो। तेन गरहअसम्मानादीनं सङ्गहो दट्ठब्बो। तत्थ "पापो पापो" ति आदीसु **गरहायं**। "अभिरूपक अभिरूपका" ति आदीसु **असम्माने** दट्ठब्बं।

नयिदं आमेडितवसेन द्विक्खत्तुं वुत्तं, अथ खो अत्थद्वयवसेना ति दस्सेन्तो "**अथ वा**" ति आदिमाह। **अभिक्कन्त** ति वचनं अपेक्खित्वा नपुंसकलिङ्गवसेन वुत्तं। तं पन भगवतो वचनं धम्मस्स देसना ति कत्वा वुत्तं "**यदिदं भोतो गोतमस्स धम्मदेसना**" ति। अत्थमत्तदस्सनं वा एतं, तस्मा अत्थवसेन लिङ्गविभत्तिविपरिणामो वेदितब्बो। दुतियपदे पि एसेव नयो। **दोसनासनतो** ति रागादिकिलेसविद्धंसनतो। **गुणाधिगमनतो** ति सीलादिगुणानं सम्पापनतो। ये गुणे देसना अधिगमेति, तेसु पधानभूता गुणा दस्सेतब्बा ति ते पधान भूते गुणे ताव दस्सेतुं "**सद्धाजननतो पञ्ञाजननतो**" ति वुत्तं। सद्धापमुखा हि लोकिया गुणा, पञ्ञापमुखा लोकुत्तरा। **सात्थतो** ति आदीसु सीलादिअत्थसम्पत्तिया **सात्थतो**। सभावनिरुत्तिसम्पत्तिया **सब्यञ्जनतो**। सुविञ्ञेय्यसद्दप्पयोगताय **उत्तानपदतो**, सण्हसुखुमभावेन दुविञ्ञेय्यत्थताय **गम्भीरत्थतो**। सिनिद्धमुदुमधुरसद्दप्पयोगताय **कण्णसुखतो**, विपुलविसुद्धपेमनीयत्थताय **हदयङ्गमतो**। मानातिमानविधमनेन **अनत्तुक्कंसनतो**, थम्भसारम्भनिम्मद्दनेन **अपरवम्भनतो**। हिताधिप्पायप्पवत्तिया परेसं रागपरिळाहादिवूपसमनेन **करुणासीतलतो**, किलेसन्धकारविधमनेन **पञ्ञावदाततो**। करवीकरुतमञ्जुताय **आपाथरमणीयतो**, पुब्बापराविरुद्धसुविसुद्धत्थताय **विमद्दक्खमतो**। आपाथरमणीयताय एव **सुय्यमानसुखतो**, विमद्दक्खमताय हितज्झासयप्पवत्तिताय च **वीमंसियमानहिततो** ति एवमत्थो वेदितब्बो। **एवमादीहि** ति आदि-सद्देन संसारचक्कनिवत्तनतो, सद्धम्मचक्कप्पवत्तनतो, मिच्छावादविधमनतो, सम्मावादपतिट्ठापनतो[4], अकुसलमूलसमुद्धरणतो, कुसलमूलसंरोपनतो, अपायद्वारपिधानतो, सग्गमग्गद्वारविवरणतो, परियुट्ठानवूपसमनतो, अनुसयसमुग्घातनतो ति एवमादीनं सङ्गहो दट्ठब्बो।

---

१. खु० ४–३१०–पिट्ठे।

२. दी० ३–१२, अं० ३–१८१–पिट्ठेसु।

३. खु० १–९८, वि०–४–३३९–पिट्ठादीसु।

४. मिच्छाचारविधमनतो, सम्माचारपतिट्ठापनतो (क०)

अधोमुखठपितं ति केनचि अधोमुखं ठपितं। **हेट्ठामुखजातं** ति सभावेनेव हेट्ठामुखं जातं। **उग्घाटेय्या** ति विवटं करेय्य। **हत्थे गहेत्वा** ति "पुरत्थाभिमुखो उत्तराभिमुखो वा गच्छा" ति आदीनि अवत्वा हत्थे गहेत्वा "निस्सन्देहं एस मग्गो, एवं गच्छा" ति दस्सेय्य। **काळपक्खचातुद्दसी** ति काळपक्खे चातुद्दसी काळपक्खचातुद्दसी। **निक्कुज्जितं उक्कुज्जेय्या** ति आधेय्यस्स अनाधारभूतं भाजनं आधारभावापादनवसेन उक्कुज्जेय्य। हेट्ठामुखजातताय **सद्धम्मविमुखं** अधोमुखठपितताय **असद्धम्मे पतिट्ठितं** ति एवं पदद्वयं यथारहं योजेतब्बं, न यथासङ्ख्यं। कामं कामच्छन्दादयो पि पटिच्छादका नीवरणभावतो, मिच्छादिट्ठि पन सविसेसं पटिच्छादिका सत्ते मिच्छाभिनिवेसनेनाति आह "**मिच्छादिट्ठिगहनपटिच्छन्नं**" ति। तेनाह भगवा "मिच्छादिट्ठिपरमाहं भिक्खवे वज्जं वदामी" ति। सब्बो अपायगामिमग्गो **कुम्मग्गो** कुच्छितो मग्गो ति कत्वा, सम्मादिट्ठिआदीनं उजुपटिपक्खताय मिच्छादिट्ठिआदयो अट्ठ मिच्छत्तधम्मा **मिच्छामग्गो**। तेनेव हि तदुभयपटिपक्खतं सन्धाय "**सग्गमोक्खमग्गं आचिक्खन्तेना**" ति वुत्तं। सप्पिआदिसन्निस्सयो पदीपो न तथा, उज्जलो यथा तेलसन्निस्सयो ति तेलपज्जोतग्गहणं। **एतेहि परियायेहि** ति एतेहि निक्कुज्जितुक्कुज्जनपटिच्छन्नविवरणादिउपमोपमितब्बप्पकारेहि, एतेहि वा यथा वुत्तेहि अरसरूपतादीनं अत्तनि अञ्ञथा पटिपादनपरियायेहि अत्तनो दिब्बविहारविभावन परियायेहि विज्जत्तयविभावनापदेसेन अत्तनो सब्बञ्ञुगुणविभावनपरियायेहि च। तेनाह "**अनेकपरियायेन धम्मो पकासितो**" ति। B 413

देसनानुमोदनकथा निट्ठिता।

पसन्नाकारकथा

पसन्नाकारं ति पसन्नेहि कातब्बं सक्कारं। **सरणं गच्छामी** ति एत्थ इतिसद्दो लुत्तनिद्दिट्ठो ति आह "**सरणं ति गच्छामी**" ति। एत्थ हि नायं गमिसद्दो नीसद्दादयो विय द्विकम्मको, तस्मा यथा अजं गामं नेती ति वुच्चति, एवं "गोतमं सरणं गच्छामी" ति वत्तुं न सक्का "सरणं ति गच्छामी" ति पन वत्तब्बं, तस्मा एत्थ इतिसद्दो लुत्तनिद्दिट्ठो ति वेदितब्बं। **सरणं** ति पटिसरणं। तेनाह "**परायणं**" ति। परायणभावो च अनत्थनिसेधनेन अत्थसम्पटिपादनेन च होती ति आह "**अघस्स ताता हितस्स च विधाता**" ति। **अघस्सा** ति दुक्खतो ति वदन्ति, पापतो ति पन अत्थो युत्तो, निस्सक्के चेतं सामिवचनं। सरणं ति गमनञ्चेत्थ तदधिप्पायेन भजनं तथा जाननं वा ति दस्सेन्तो "**इति इमिना अधिप्पायेना**" ति आदिमाह। तत्थ **गच्छामी** ति आदीसु पुरिमस्स पुरिमस्स पच्छिमं पच्छिमं अत्थवचनं। **भजनं** वा सरणाधिप्पायेन उपसङ्कमनं, **सेवना** सन्तिकावचरता, **पयिरुपासनं** वत्तप्पटिवत्तकरणेन उपट्ठानं ति एवं सब्बथा पि अनञ्ञसरणतंयेव दीपेति। **गच्छामी** ति पदस्स कथं बुज्झामी ति अयमत्थो लब्भती ति आह "**येसं ही**" ति आदि। B 414

अधिगतमग्गे सच्छिकतनिरोधे ति पदद्वयेन पि फलट्ठा एव दस्सिता, न मग्गट्ठा ति ते दस्सेन्तो **"यथानुसिट्ठं पटिपज्जमाने चा"** ति आह। ननु च कल्याणपुथुज्जनो पि यथानुसिट्ठं पटिपज्जती ति वुच्चती ति ? किञ्चा पि वुच्चति, निप्परियायेन पन मग्गट्ठा एव तथा वत्तब्बा, न इतरे नियामोक्कमनाभावतो। तथा हि ते एव **"अपायेसु अपतमाने धारेती"** ति वुत्ता। सम्मत्तनियामोक्कमनेन हि अपायविनिमुत्तसम्भवो। **अक्खायती** ति एत्थ इति-सद्दो आदि अत्थो, पकारत्थो वा। तेन "यावता भिक्खवे धम्मा सङ्खता वा असङ्खता वा, विरागो तेसं अग्गमक्खायती" ति[1] **सुत्तपदं** सङ्गण्हाति, **"वित्थारो"** ति वा इमिना। एत्थ च अरियमग्गो निय्यानिकताय, निब्बानं तस्स तदत्थसिद्धिहेतुताया ति उभयमेव निप्परियायेन धम्मो ति वुत्तो। निब्बानञ्हि आरम्मणपच्चयभूतं लभित्वा अरियमग्गस्स तदत्थसिद्धि, तथा पि अरियफलानं "यस्मा ताय सद्धाय[2] अवूपसन्ताया" ति आदिवचनतो मग्गेन समुच्छिन्नानं किलेसानं पटिप्पस्सद्धिप्पहानकिच्चताय निय्यानानुगुणताय निय्यानपरियोसानताय च। परियत्तिधम्मस्स पन निय्यानधम्मसमधिगमहेतुताया ति इमिना परियायेन वुत्तनयेन धम्मभावो लब्भति एव, स्वायमत्थो पाठारुळ्हो एवा ति दस्सेन्तो **"न केवलं"** ति आदिमाह।

रागविरागो ति मग्गो कथितो ति कामरागो भवरागो ति एवमादिभेदो सब्बो पि रागो विरज्जति पहीयति एतेना ति रागविरागो ति मग्गो कथितो। **अनेजमसोकं ति फलं** ति एजासङ्खाताय तण्हाय अन्तोनिज्झानलक्खणस्स सोकस्स च तदुप्पत्तियं सब्बसो परिक्खीणत्ता अनेजमसोकं ति फलं कथितं। **अप्पटिकूल** ति अविरोधदीपनतो केनचि अविरुद्धं, इट्ठं पणीतं ति वा अत्थो। पगुणरूपेन पवत्तितत्ता, पकट्ठगुणविभावनतो वा **पगुणं**। यथाह "विहिंससञ्ञी पगुणं न भासिं, धम्मं पणीतं मनुजेसु ब्रह्मे" ति[3]। सब्बधम्मक्खन्धा कथिता ति योजना। **दिट्ठिसीलसङ्घातेना** ति "यायं दिट्ठि अरिया निय्यानिका निय्याति तक्करस्स सम्मा दुक्खक्खयाय, तथारूपाय दिट्ठिया दिट्ठिसामञ्ञगतो विहरती" ति[4] एवं वुत्ताय दिट्ठिया "यानि तानि सीलानि अखण्डानि अच्छिद्दानि असबलानि अकम्मासानि भुजिस्सानि विञ्ञुप्पसत्थानि अपरामट्ठानि समाधिसंवत्तनिकानि, तथारूपेहि सीलेहि सीलसामञ्ञगतो विहरती" ति[5] एवं वुत्तानं सीलानञ्च संहतभावेन, दिट्ठिसील सामञ्ञेना ति अत्थो। **संहतो** ति घटितो समेतो ति अत्थो। अरियपुग्गला हि यत्थ कत्थचि दूरे ठिता पि अत्तनो गुणसामग्गिया संहता एव। **अट्ठ च पुग्गला धम्मदसा ते** ति पुरिसयुगळवसेन चत्तारो पि पुग्गलवसेन अट्ठेव अरियधम्मस्स पच्चक्खदस्साविताय धम्मदसा। तीणि वत्थूनि सरणं ति गमनेन तिक्खत्तुं गमनेन च **तीणि सरणगमनानि। पटिवेदेसी** ति अत्तनो हदयङ्गतं वाचाय पवेदेसि।

पसन्नाकारकथा निट्ठिता।

---

१. खु० १-२५४, अं १-३४३ पिट्ठेसु। २. सिद्धाय (सी०, क०)।
३. म० १-२२६; वि० ३-१०-पिट्ठेसु। ४. दी० ३-२०४, २३७, म० १-३७९, म० ३-३९ पिट्ठेसु।
५. दी० ३-२०३, म० १-३९७, अं० २-२५६, वि० ५-१६८ पिट्ठेसु।

सरणगमनकथा

सरणगमनस्स विसयप्पभेदफलसंकिलेसभेदानं विय कत्तु च विभावना तत्थ कोसल्लाय होती ति "**सरणगमनेसु कोसल्लत्थं सरणं**...पे०...**वेदितब्बो**" ति वुत्तं तेन विना सरणगमनस्सेव असम्भवतो। तत्थ **सरणं** ति पदत्थतो ताव हिंसती ति सरणं। हिंसत्थस्स हि सरसद्दस्स वसेनेतं पदं दट्ठब्बं, तस्मा सरणगतानं तेनेव सरणगमनेन वट्टभयं चित्तुत्रासं कायिकं दुक्खं दुग्गतिपरियापन्नं सब्बम्पि दुक्खं हनति, विनासेती ति अत्थो। रतनत्तयस्सेवेतं अधिवचनं। अथ वा हिते पवत्तनेन "सम्पन्न- B 416
सीला भिक्खवे विहरथा" ति आदिना[1] अत्थे नियोजनेन अहिता च निवत्तनेन "पाणातिपातस्स खो पन पापको विपाको, पापकं अभिसम्परायं" ति आदिना आदीनवदस्सनादिमुखेन अनत्थतो निवत्तनेन सत्तानं भयं हिंसति, हिताहितेसु अप्पवत्तिपवत्तिहेतुकं ब्यसनं अपवत्तिकरणेन विनासेति बुद्धो। भवकन्तारउत्तरणेन मग्गसङ्खातो धम्मोसत्तानं भयं हिंसति, इतरो अस्सासदानेन। अप्पकानम्पि दानवसेन पूजावसेन च उपनीतानं सक्कारानं विपुलफलपटिलाभकरणेन सत्तानं भयं हिंसति संघो अनुत्तरदक्खिणेय्यभावतो, तस्मा इमिना पि विभजित्वा वुत्तपरियायेन रतनत्तयं सरणं। "सम्मासम्बुद्धो भगवा, स्वाक्खातो धम्मो, सुप्पटिपन्नो संघो" ति एवं पवत्तरतनत्तयपसादतग्गरुकता हि विधुतदिट्ठिविचिकिच्छासम्मोहअस्सद्धियादिताय विहतकिलेसो तदेव रतनत्तयं सरणं परायणं गति ताणं लेणं ति एवं पवत्तिया तप्परायणताकारप्पवत्तो चित्तुप्पादो सरणगमनं सरणं ति गच्छति एतेना ति कत्वा। तेन यथावुत्तचित्तुप्पादेन समन्नागतो सत्तो सरणं ति गच्छति, वुत्तप्पकारेन चित्तुप्पादेन "एतानि मे तीणि रतनानि सरणं, एतानि परायणं" ति एवं उपेति भजति सेवति पयिरुपासति, एवं वा जानाति, बुज्झती ति अत्थो। एवं ताव सरणं, सरणगमनं यो च सरणं गच्छति, इदं तयं वेदितब्बं।

सरणगमनप्पभेदे पन दुविधं सरणगमनं लोकुत्तरं लोकियञ्च। तत्थ लोकुत्तरं दिट्ठसच्चानं मग्गक्खणे सरणगमनुपक्किलेससमुच्छेदनेन आरम्मणतो निब्बानारम्मणं हुत्वा किच्चतो सकले पि रतनत्तये इज्झति। अत्थतो चतुसच्चाधिगमो एव हि लोकुत्तरसरणगमनं। तत्थ हि निब्बानधम्मो सच्छिकिरियाभिसमयवसेन, मग्गधम्मो भावनाभिसमयवसेन पटिविज्झियमानोयेव सरणगमनत्थं साधेति, बुद्धगुणा पन सावकगोचरभूता परिञ्ञाभिसमयवसेन, तथा अरियसंघगुणा। तेन वुत्तं "किच्चतो सकले पि रतनत्तये इज्झती" ति। इज्झन्तञ्च सहेव इज्झति, न लोकियं विय पटिपाटिया असम्मोहपटिवेधेन पटिविद्धत्ता। ये पन वदन्ति "न सरणगमनं निब्बानारम्मणं हुत्वा पवत्तति, मग्गस्स अधिगतत्ता पन अधिगतमेव होति एकच्चानं तेविज्जादानं लोकिय- B 417
विज्जादयो विया" ति, तेसं लोकियमेवसरणगमनं सिया, न लोकुत्तरं। तञ्च अयुत्तं दुविधस्सपि इच्छितब्बत्ता। लोकियं पन सरणगमनं पुथुज्जनानं सरणगमनुपक्किलस-

---

१. म० १-३९ पिट्ठे।

विक्खम्भनेन आरम्मणतो बुद्धादिगुणारम्मणं हुत्वा इज्झति। तं अत्थतो बुद्धादोसु वत्थूसु "सम्मासम्बुद्धो भगवा" ति आदिना सद्धापटिलाभो यथावुत्त सद्धापुब्बङ्गमा च सम्मादिट्ठि, दससु पुञ्ञकिरियवत्थूसु दिट्ठिजुकम्मं ति वुच्चति। एत्थ च "सद्धापटिलाभो" ति इमिना मातादीहि उस्साहितदारकादीनं विय ञाणविप्पयुत्तसरणगमनं दस्सितं ति वेदितब्बं। "सम्मादिट्ठी" ति इमिना पन ञाणसम्पयुत्त सरणगमनं दस्सितं बुद्धसुबुद्धतं धम्मसुधम्मतं संघसुप्पटिपत्तिञ्च लोकियावबोधवसेनेव सम्मा ञायेन दस्सनतो।

तयिदं लोकियसरणगमनं चतुधा पवत्तति अत्तसन्निय्यातनेन तप्परायणताय सिस्सभावूपगमनेन पणिपातेना ति। तत्थ **अत्तसन्निय्यातनं** नाम "अज्ज आदिं कत्वा अहं अत्तानं बुद्धस्स निय्यातेमि, धम्मस्स, संघस्सा" ति एवं बुद्धादोनंयेव संसारदुक्खनित्थरणत्थं अत्तनो अत्तभावस्स परिच्चजनं। **तप्परायणता** नाम "अज्ज आदिं कत्वा अहं बुद्धपरायणो धम्मपरायणो संघपरायणो ति मं धारेथा" ति एवं तप्परायणभावो। **सिस्सभावूपगमनं** नाम "अज्ज आदिं कत्वा 'अहं बुद्धस्स अन्तेवासिको, धम्मस्स, संघस्सा' ति मं धारेथा" ति एवं सिस्सभावूपगमो। **पणिपातो** नाम "अज्ज आदिं कत्वा 'अहं अभिवादनं पच्चुट्ठानं अञ्जलिकम्मं सामीचिकम्मं बुद्धादीनंयेव तिण्णं वत्थूनं करोमी' ति मं धारेथा' ति एवं बुद्धादीसु परमनिपच्चकारो। इमेसञ्हि चतुन्नं आकारानं अञ्ञतरम्पि करोन्तेन गहितंयेव होति सरणगमनं।

अपि च "भगवतो अत्तानं परिच्चजामि, धम्मस्स, संघस्स अत्तानं परिच्चजामि जीवितं परिच्चजामि, परिच्चत्तोयेव मे अत्ता, परिच्चत्तंयेव मे जीवितं, जीवितपरियन्तिकं बुद्धं सरणं गच्छामि, बुद्धो मे सरणं लेणं ताणं" ति एवम्पि **अत्तसन्निय्यातनं** वेदितब्बं। "सत्थारञ्च वताहं पस्सामि, भगवन्तमेव पस्सामि, सुगतञ्च वताहं पस्सामि, भगवन्तमेव पस्सामि, सम्मासम्बुद्धञ्च वताहं पस्सामि, भगवन्तमेव पस्सामी' ति[1] एवं महाकस्सपत्थेरस्स सरणगमनं विय **सिस्सभावूपगमनं** दट्ठब्बं।

B 418 "सो अहं विचरिस्सामि, गामा गामं पुरा पुरं।
नमस्समानो सम्बुद्धं, धम्मस्स च सुधम्मतं[2]।
ते मयं विचरिस्साम, गामा गामं नगा नगं॥....पे०.... सुधम्मतं" ति[3]

एवम्पि आळवकसातागिरहेमवतादीनं सरणगमनं विय **तप्परायणता** वेदितब्बा। ननु चेते आळवकादयो मग्गेनेव आगतसरणगमना, कथं तेसं तप्परायणतासरणगमनं वुत्तं ति? मग्गेनागतसरणगमनेहि पि "सोहं विचरिस्सामि गामा गामं" ति आदिना[4] तेहि तप्परायणताकारस्स पवेदितत्ता तथा वुत्तं। अथ खो ब्रह्मायु ब्राह्मणो उट्ठायासना एकंसं उत्तरसङ्गं करित्वा भगवतो पादेसु सिरसा निपतित्वा भगवतो पादानि मुखेन च

---

१. सं० १-४१९ पिट्ठे। २. सं० १-२१७ पिट्ठे, खु० १-३०७ पिट्ठेसु।
३. खु० १-३०५ पिट्ठे। ४. म० २-३४५ पिट्ठे।

परिचुम्बति, पाणीहि च परिसम्बाहति, नामञ्च सावेति "ब्रह्मायु अहं **भो गोतम** ब्राह्मणो, ब्रह्मायु अहं भो गोतम ब्राह्मणो" ति[1] एवम्पि **पणिपातो** दट्ठब्बो।

सो पनेस ञातिभयाचरियदक्खिणेय्यतावसेन[2] चतुब्बिधो होति। तत्थ दक्खिणेय्यताहेतुकेन पणिपातेन सरणगमनं होति, न इतरेहि ञातिभयादिवसप्पवत्तेहि तीहि पणिपातेहि। सेट्ठवसेनेव हि सरणं गय्हति, सेट्ठवसेन भिज्जति, तस्मा यो साकियो वा कोलियो वा "बुद्धो अम्हाकं ञातको" ति वन्दति, अग्गहितमेव होति सरणं। यो वा "समणो गोतमो राजपूजितो महानुभावो अवन्दियमानो अनत्थम्पि करेय्या" ति भयेन वन्दति, अग्गहितमेव होति सरणं। योपि बोधिसत्तकाले भगवतो सन्तिके किञ्चि उग्गहितं सरमानो बुद्धकाले वा—

"एकेन भोगं भुञ्जेय्य, द्वीहि कम्मं पयोजये।
चतुत्थञ्च निधापेय्य, आपदासु भविस्सती" ति॥[3]

एवरूपं दिट्ठधम्मिकं अनुसासनिं उग्गहेत्वा "आचरियो मे" ति वन्दति, अग्गहितमेव होति सरणं, सम्परायिकं पन निय्यानिकं वा अनुसासनिं पच्चासीसन्तो दक्खिणेय्यपणिपातमेव करोति। यो पन 'अयं लोके अग्गदक्खिणेय्यो' ति वन्दति, तेनेव गहितं होति सरणं।

एवं गहितसरणस्स च उपासकस्स वा उपासिकाय वा अञ्ञतित्थियेसु पब्बजितम्पि ञातिं "ञातको मे अयं" ति वन्दतो पि सरणगमनं न भिज्जति, पगेव अपब्बजितं। तथा राजानं भयवसेन वन्दतो। सो हि रट्ठपूजितत्ता अवन्दियमानो अनत्थम्पि करेय्या ति। तथा यं किञ्चि सिप्पसिक्खापकं तित्थियम्पि "आचरियो मे अयं" ति वन्दतो पि न भिज्जति। एवं **सरणगमनस्स पभेदो** वेदितब्बो। B 419

सरणगमनकथा निट्ठिता।

सरणगमनफल कथा

एत्थ च लोकुत्तरस्स सरणगमनस्स चत्तारि सामञ्ञफलानि विपाकफलं अरियमग्गस्सेव लोकुत्तरसरणगमनं ति अधिप्पेतत्ता। सकलस्स पन वट्टदुक्खस्स अनुप्पादनिरोधो आनिसंसफलं। वुत्तञ्हेतं—

"यो च बुद्धञ्च धम्मञ्च, संघञ्च सरणं गतो।
चत्तारि अरियसच्चानि, सम्मप्पञ्ञाय पस्सति॥
दुक्खं दुक्खसमुप्पादं, दुक्खस्स च अतिक्कमं।
अरियञ्चट्ठङ्गिकं मग्गं, दुक्खूपसमगामिनं।

---

१. ञातिभयाचरियदक्खिणेय्यवसेन (दी० ट्ठ० १-२०७, म० ट्ठ० १-१३७, अं-ट्ठ० २-१८ पिट्ठेसु)।
२. दी० ३-१५३-पिट्ठे।

एतं खो सरणं खेमं, एतं सरणमुत्तमं।
एतं सरणमागम्म, सब्बदुक्खा पमुच्चती" ति[1]॥

अपि च निच्चतो अनुपगमनादिवसेनपेतस्स आनिसंसफलं वेदितब्बं। वुत्तञ्हेतं—

"अट्ठानमेतं भिक्खवे अनवकासो, यं दिट्ठिसम्पन्नो पुग्गलो कञ्चि सङ्खारं निच्चतो उपगच्छेय्य, सुखतो उपगच्छेय्य, कञ्चि धम्मं अत्ततो उपगच्छेय्य, मातरं जीविता वोरोपेय्य, पितरं जीविता वोरोपेय्य, अरहन्तं जीविता वोरोपेय्य, पदुट्ठचित्तो तथागतस्स लोहितं उप्पादेय्य, संघं भिन्देय्य, अञ्ञं सत्थारं उद्दिसेय्य, नेतं ठानं विज्जती" ति[2]।

B 420 लेकियस्स पन सरणगमनस्स भवसम्पदा पि भोगसम्पदा पि फलमेव। वुत्तञ्हेतं—

"ये केचि बुद्धं सरणं गतासे,
न ते गमिस्सन्ति अपायभूमिं।
पहाय मानुसं देहं,
देवकायं परिपूरेस्सन्ती" ति[3]।

अपरम्पि वुत्तं—

"अथ खो सक्को देवानमिन्दो असीतिया देवतासहस्सेहि सद्धिं येनायस्मा महामोग्गल्लानो तेनुपसङ्कमि......पे०....एकमन्तं ठितं खो सक्कं देवानमिन्दं आयस्मा महामोग्गल्लानो एतदवोच 'साधु खो देवानमिन्द वुद्धसरणगमनं होति, बुद्धसरणगमन हेतु खो देवानमिन्द एवमिधेकच्चे सत्ता कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जन्ति। ते अञ्ञे देवे दसहि ठानेहि अधिगण्हन्ति दिब्बेन आयुना दिब्बेन वण्णेन सुखेन यसेन आधिपतेय्येन दिब्बेहि रूपेहि सद्देहि गन्धेहि रसेहि फोट्ठब्बेही" ति[4]।

एस नयो धम्मे संघे च।

अपि च वेलामसुत्तादिवसेन पि सरणगमनस्स फलविसेसो वेदितब्बो। तथा हि **वेलामसुत्ते**[5] "करीसस्स चतुत्थभागप्पमाणानं चतुरासीतिसहस्ससङ्ख्यानं सुवण्णपातिरूपियपातिकंसपातीनं यथाक्कमं रूपियसुवण्णहिरञ्ञपूरानं सब्बालङ्कारपटिमण्डितानं चतुरासीतिया हत्थिसहस्सानं चतुरासीतिया अस्ससहस्सानं चतुरासीतिया रथसहसहस्सानं चतुरासीतिया धेनुसहस्सानं चतुरासीतिया कञ्ञासहस्सानं चतुरासीतिया पल्लङ्कसहस्सानं चतुरासीतिया वत्थकोटिसहस्सानं अपरिमाणस्स च खज्जभोज्जादि-

---

१. खु० १-४२ पिट्ठे धम्मपदे। २. म० ३-११०, अं० १-२९ पिट्ठेसु।
३. दी० २-२०४, सं० १-२५ पिट्ठेसु। ४. सं० २-४६३, ४६७ पिट्ठेसु।
५. अं० ३-१९५ पिट्ठे।

भेदस्स आहारस्स परिच्चजनवसेन सत्तमासाधिकानि सत्त संवच्छरानि निरन्तरं पवत्तवेलाममहादानतो एकस्स सोतापन्नस्स दिन्नं महप्फलतरं, ततो सतं सोतापन्नानं दिन्नदानतो एकस्स सकदागामिनो, ततो एकस्स अनागामिनो, ततो एकस्स अरहतो, B 421
ततो एकस्स पच्चेकसम्बुद्धस्स, ततो सम्मासम्बुद्धस्स, ततो बुद्धप्पमुखस्स संघस्स दिन्नदानं महप्फलतरं, ततो चातुद्दिसं संघं उद्दिस्स विहारकरणं, ततो सरणगमनं महप्फलतरं" ति पकासितं। वुत्तञ्हेतं—

> "यं गहपति वेलामो ब्राह्मणो दानं अदासि महादानं, यो चेकं दिट्ठिसम्पन्नं भोजेय्य, इदं ततो महप्फलतरं" ति[1],

आदि। एवं **सरणगमनफलं** वेदितब्बं।

सरणगमनफलकथा निट्ठिता।

सरणगमनसंकिलेसभेदकथा

तत्थ च लोकियसरणगमनं तीसु वत्थूसु अञ्ञाणसंसयमिच्छाञाणादीहि संकिलिस्सति, न महाजुतिकं, न उज्जलं अपरिसुद्धं अपरियोदातं होति, न महाविप्फारं अनुळारं। एत्थ च **अञ्ञाणं** नाम वत्थुत्तयस्स गुणानं अजाननं तत्थ सम्मोहो। "बुद्धो नु खो, न नु खो" ति आदिना विचिकिच्छा **संसयो**। **मिच्छाञाणं** नाम तस्स गुणानं अगुणभावपरिकप्पनेन विपरीतग्गाहो ति वेदितब्बं। लोकुत्तरस्स पन सरणगमनस्स नत्थि संकिलेसो। लोकियस्स च सरणगमनस्स दुविधो भेदो सावज्जो अनवज्जो च। तत्थ **सावज्जो** अञ्ञसत्थारादीसु अत्तनिय्यातनादीहि होति, सो अनिट्ठफलो। **अनवज्जो** पन कालकिरियाय होति। लोकियञ्हि सरणगमनं सिक्खापदसमादानं विय अग्गहितकालपरिच्छेदकं जीवितपरियन्तमेव होति, तस्मा तस्स खन्धभेदेन भेदो, सो अविपाकत्ता अफलो। लोकुत्तरस्स पन नेवत्थि भेदो। भवन्तरे पि हि अरियसावको अञ्ञं सत्थारं न उद्दिसती ति। एवं सरणगमनस्स **संकिलेसो** च **भेदो** च वेदितब्बो।

कस्मा पनेत्थ वोदानं न गहितं, ननु वोदानविभावना पि तत्थ कोसल्लाय होती ति? सच्चमेतं, तं पन संकिलेसग्गहणेन अत्थतो दीपितं होती ति न गहितं। यानि हि तेसं संकिलेसकारणानि अञ्ञाणादीनि, तेसं सब्बेन सब्बं अनुप्पादनेन उप्पन्नानञ्च B 422
पहानेन वोदानं होती ति। एवमेत्थ "सरणं सरणगमनं" ति आदीनं पपञ्चो वेदितब्बो। इमस्स पन यथावुत्तपपञ्चस्स इध अवचने कारणं दस्सेन्तो आह **"सो पन इध वुच्चमानो"** ति आदि। तत्थ **सरणवण्णनतो** ति सामञ्ञफलसुत्ते वुत्तसरणवण्णनतो।

सरणगमनसंकिलेसभेदकथा निट्ठिता।

---

१. अं० ३-१९६-पिट्ठे।

उपासकत्तपटिवेदना कथा

एवं धारेतू ति एवं जानातू ति अत्थो। एत्थ **को उपासको** ति सरूपपुच्छा, तस्मा किं लक्खणो उपासको ति वुत्तं होति। **कस्मा** ति हेतुपुच्छा। तेन केन पवत्तिनिमित्तेन उपासकसद्दो तस्मिं पुग्गले निरुळ्हो ति दस्सेति। तेनाह "**कस्मा उपासकोति वुच्चती**" ति। सद्दस्स हि अभिधेय्यपवत्तिनिमित्तं तदत्थस्स तब्भावकारणं। **किमस्स सीलं** ति कीदिसं अस्स उपासकस्स सीलं, कित्तकेन सीलेनायं सीलसम्पन्नो नाम होती ति अत्थो। **को आजीवो** ति को अस्स सम्माआजीवो। सो पन मिच्छाजीवस्स परिवज्जनेन होती ति सो पि विभजीयति॥ **का विपत्ती** ति कस्स सीलस्स आजीवस्स वा विपत्ति। अनन्तरस्स हि विधि वा पटिसेधो वा। **सम्पत्ती** ति एत्था पि एसेव नयो।

इदं पकिण्णकं वेदितब्बं ति कथं वेदितब्बं? वुच्चते—**को उपासको** ति खत्तियादीसु यो कोचि तिसरणं गतो गहट्ठो। सरणगमनमेव हेत्थ कारणं, न जातिआदिविसेसो। वुत्तञ्हेतं "यतो खो महानाम बुद्धं सरणं गतो होति, धम्मं, संघं सरणं गतो होति। एत्तावता खो महानाम उपासको होती" ति[1]।

कस्मा उपासको ति रतनत्तयउपासनतो। तेनेव सरणगमनेन तत्थ च सक्कच्चकिरियाय आदरगारवबहुमानादियोगेन पयिरुपासनतो ति वुत्तं होति। सो हि बुद्धं उपासती ति उपासको। धम्मं, संघं उपासती ति उपासको॥

B 423 **किमस्स सीलं** ति पञ्च वेरमणियो। **वेरमणियो** ति चेत्थ वेरं वुच्चति पाणातिपातादीसु दुस्सील्यं, तस्स मननतो हननतो विनासनतो वेरमणियो पञ्च विरतियो विरत्तिप्पधानत्ता तस्स सीलस्स। वुत्तञ्हेतं "यतो खो महानाम उपासको पाणातिपाता पटिविरतो होति, अदिन्नादाना, कामेसुमिच्छाचारा, मुसावादा, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो होति। एत्तावता खो महानाम उपासको सीलवा होती" ति[2]।

को आजीवो ति पञ्च मिच्छावणिज्जा पहाय धम्मेन समेन जीवितकप्पनं। वुत्तञ्हेतं "पञ्चिमा भिक्खवे वणिज्जा उपासकेन अकरणीया। कतमा पञ्च? सत्थवणिज्जा सत्तवणिज्जा मंसवणिज्जा मज्जवणिज्जा विसवणिज्जा। इमा खो भिक्खवे पञ्च वणिज्जा उपासकेन अकरणीया" ति।[3]

एत्थ च **सत्थवणिज्जा** ति आवुधभण्डं कत्वा वा कारेत्वा वा यथाकतं वा पटिलभित्वा तस्स विक्कयो। **सत्तवणिज्जा** ति मनुस्सविक्कयो। **मंसवणिज्जा** ति सूनकारादयो विय मिगसूकरादिके पोसेत्वा मंसं सम्पादेत्वा विक्कयो। **मज्जवणिज्जा** ति यं किञ्चि मज्जं योजेत्वा तस्स विक्कयो। **विसवणिज्जा** ति विसं योजेत्वा सङ्गहेत्वा वा तस्स विक्कयो। तत्थ सत्थवणिज्जा परोपरोधनिमित्तताय अकरणीया

---

१. सं० ३-३४४ पिट्ठे। २. सं० ३-३४५ पिट्ठे। ३. अं० २-१८३ पिट्ठे।

वुत्ता, सत्तवणिज्जा अभुजिस्सभावकरणतो, मंसविसवणिज्जा वधहेतुतो, मज्जवणिज्जा पमादट्ठानतो ति वेदितब्बा।

का विपत्ती ति या तस्सेव सीलस्स च आजीवस्स च विपत्ति भेदो कोपो पकोपो च, अयमस्स विपत्ति। अपि च याय एस चण्डालो चेव होति मलञ्च पतिकुट्ठो च, सापिस्स विपत्ती ति वेदितब्बा। ते च अत्थतो अस्सद्धियादयो पञ्च धम्मा होन्ति। यथाह—

"पञ्चहि भिक्खवे धम्मेहि समान्नागतो उपासको उपासकचण्डालो च होति उपासकमलञ्च उपासकपटिकुट्ठो च। कतमेहि पञ्चहि? अस्सद्धो होति, दुस्सीलो होति, कोतूहलमङ्गलिको होति। मङ्गलं पच्चेति, नो कम्मं, इतो च बहिद्धा दक्खिणेय्यं परियेसति, तत्थ च पुब्बकारं करोती" ति[1]। B 424

एत्थ च **उपासकपटिकुट्ठो** ति उपासकनिहीनो। बुद्धादीसु कम्मकम्मफलेसु च सद्धाविपरियायो अस्सद्धियं मिच्छाधिमोक्खो, यथावुत्तेन अस्सद्धियेन समन्नागतो **अस्सद्धो**। यथावुत्तसीलविपत्तिआजीवविपत्तिवसेन **दुस्सीलो**। "इमिना दिट्ठादिना इदं नाम मङ्गलं होती" ति एवं बालजनपरिकप्पितकोतूहलसङ्खातेन दिट्ठसुतमुतमङ्गलेन समन्नागतो **कोतूहलमङ्गलिको**। **मङ्गलं पच्चेती** ति दिट्ठमङ्गलादिभेदं मङ्गलमेव पत्तियायति। **नो कम्मं** ति कम्मस्सकतं नो पत्तियायति। **इतोबहिद्धा** ति इतो सब्बञ्ञुबुद्धसासनतो बहिद्धा बाहिरकसमये। **दक्खिणेय्यं परियेसती** ति दुप्पटिपन्नं दक्खिणारहसञ्ञी गवेसति। **पुब्बकारं करोती** ति दानमाननादिकं कुसलकिरियंपठमतरं करोति। एत्थ च दक्खिणेय्यपरियेसनपुब्बकारे एकं कत्वा पञ्च धम्मा वेदितब्बा।

का सम्पत्ती ति साव तस्स सीलसम्पदा च आजीवसम्पदा च सम्पत्ति, ये चस्स रतनभावादिकरा सद्धादयो पञ्च धम्मा। यथाह—

"पञ्चहि भिक्खवे धम्मेहि समन्नागतो उपासको उपासकरतनञ्च होति उपासकपदुमञ्च उपासकपुण्डरीको च। कतमेहि पञ्चहि? सद्धो होति, सीलवा होति, न कोतूहलमङ्गलिको होति, कम्मं पच्चेति, नो मङ्गलं, न इतो बहिद्धा दक्खिणेय्यं परियेसति, इध च पुब्बकारं करोती" ति[1]।

एत्थ च चतुन्नम्पि परिसानं रतिजननट्ठेन उपासकोव रतनं **उपासकरतनं**, गुणसोभाकित्तिसद्दसुगंधताहि उपासकोव पदुमं **उपासकपदुमं**, तथा **उपासकपुण्डरीको** च वेदितब्बो। सेसमेत्थ विपत्तियं वुत्तविपरियायेन विञ्ञेय्यं। एवमिदं "को उपासको" ति आदिकं पकिण्णकं वित्थारतो वेदितब्बं। इमस्स पन पकिण्णकस्स इध वित्थारेत्वा अवचने कारणं दस्सेन्तो आह "**तं अति भारियकरणतो**" ति आदि।

आदिम्हो ति आदि अत्थे। **कोटियं** ति परियन्तकोटियं। **विहारग्गेना** ति ओवरककोट्ठासेन, "इमस्मिं गब्भे वसन्तानं इदं पनसफलं पापुणाती" ति आदिना तं तं B 425

१. अं० २-१८१ पिट्ठे।

वसनट्ठानकोट्ठासेना ति अत्थो । **अज्ज**तं ति अज्ज इच्चेव अत्थो । **पाणेहि उपेतं** ति इमिना तस्स सरणगमनस्स आपाणकोटिकतं दस्सेन्तो "**याव मे जीवितं पवत्तती**" ति आदीनि वत्वा पुन जीवितेनप, हं[1] वत्थुत्तयं पटिपूजेन्तो सरणगमनञ्च रक्खामी ति उप्पन्नं तस्स ब्राह्मणस्स अधिप्पायं विभावेन्तो "**अहञ्हि**" ति आदिमाह । **पाणेहि उपेतं** ति हि याव मे पाणा धरन्ति, ताव सरणं उपेतं, उपेन्तो न वाचामत्तेन न एकवारं चित्तुप्पादनमत्तेन अथ खो पाणानं परिच्चजनवसेन यावजीवं उपेतं ति एवमेत्थ अत्थो वेदितब्बो ।

अधिवासेतू ति सादियतु, तं पन सादियनं मनसा सम्पटिग्गहो होती ति आह "**सम्पटिच्छतू**" ति । **कायङ्गं** ति कायमेव अङ्गं ति वदन्ति, कायस्स वा अङ्गं सीसादि कायङ्गं, सीसादि सरीरावयवं ति वुत्तं होति । वाचङ्गं ति "होतु साधू" ति एवमादि-वचाय अङ्गं अवयवं । वाचङ्गस्स चोपनं वाचाय पवत्तनमेवा ति वेदितब्बं । **अब्भन्तरे-येवा** ति अत्तनो चित्तसंतानेयेव ।**खन्ति चारेत्वा** ति खन्ति पवत्तेत्वा, रुचिं उप्पादेत्वा ति वुत्तं होति । "खन्ति धारेत्वा" तिपि पाठो, उप्पन्नं रुचिं अब्भन्तरेयेव धारेत्वा वची-भेदेन अपकासेत्वा ति वुत्तं होति ।

कथं पन वेरञ्जो ब्राह्मणो भगवतो अधिवासनं अञ्ञासि । न हि तेन सक्का भगवतो चित्तप्पवत्ति पच्चक्खतो विञ्ञातुं, तस्मा "भगवतो अधिवासनं विदित्वा" ति कस्मा वुत्तं ति चे ? किञ्चापि तेन न सक्का चित्तप्पवत्ति पच्चक्खतो विञ्ञातुं, तथापि आकारसल्लक्खणकुसलताय अन्वयब्यतिरेकवसेन अनुमानतो अञ्ञासी ति दस्सेन्तो आह "**सचे मे समणो गोतमो**" ति आदि । **आकारसल्लक्खणकुसलताया** ति चित्तप्पवत्तिआकारविजानने छेकताय, अधिप्पायविजानने कुसलताया ति वुत्तं होति । **दसनखसमोधानसमुज्जलं** ति द्वीसु हत्थेसु दसन्नं नखानं समोधानेन एकीभावेन समुज्जलन्तं । **अञ्जलिं ति** हत्थपुटं । **पटिमुखोयेवा** ति अभिमुखोयेव, न भगवतो पिट्ठिं दस्सेत्वा ति अत्थो । **वन्दित्वा** ति पञ्चपतिट्ठितेन वन्दित्वा ।

उपासकत्तपटिवेदनाकथा निट्ठिता ।

———

B 426 **दुब्भिक्खकथा**

१६॥ **सुसस्सकाले पी** ति सम्पन्नसस्सकाले पि । **अतिसमग्घे पी** ति अतिसयेन अप्पग्घे पि, यदा किञ्चिदेव दत्वा बहुं पुब्बण्णापरण्णं गण्हन्ति, तादिसे काले पी ति अत्थो । सालिआदि धञ्ञं **पुब्बण्णं**, मुग्गमासादि **अपरण्णं** । द्विधा पवत्तं ईहितं एत्था ति द्वीहितिका ति मज्झपदलोपीबाहिरत्थसमासोयमी ति दस्सेन्तो आह "**द्विधा पवत्तईहितिका**" ति । ईहनं ईहितं ति ईहितसद्दोयं भावसाधनो ति आह "**ईहितं नाम इरिया**" ति । तत्थ **इरिया** ति किरिया । कस्स पनेसा किरिया ति आह "**चित्तइरिया**" ति, चित्त-

---

१. जीवितेन अहं (स्या०) जीवितेन सह (क०) ।

किरिया चित्तप्पयोगो ति अत्थो। तेनेवाह "**चित्तईहा**" ति। कथं पनेत्थ ईहितस्स द्विधा पवत्ती ति आह "**लच्छाम नु खो**" ति आदि। तत्थ **लच्छाम नु खो** ति इदं दुग्गतानं वसेन वुत्तं। **जीवितुं वा सक्खिस्साम नु** खो, **नो** ति इदं पन इस्सरानं वसेन वुत्तं ति वेदितब्बं। **भिक्खमाना** ति याचमाना। "दुहितिका" ति पि पाठो। तत्था पि वुत्तनये नेवत्थो वेदितब्बो। द्वि-सद्दस्स हि दु—सद्दादेसेनायं निद्देसो होति। दुक्खं वा ईहितं एत्थ न सक्का कोचि पयोगो सुखेन कातुं ति **दुहितिका,** दुक्करजीवितप्पयोगो ति अत्थो।

दु—सद्दे वा उकारस्स वकारं कत्वा द्वीहितिका ति अयं निद्देसो ति आह "**अथ वा**" ति आदि। **ब्याधि रोगो** ति एतानि "आतुरता" ति इमस्स वेवचनानि। तेन सेतट्टिका नाम एका रोगजाती ति दस्सेति। सो पन रोगो पाणकदोसेन सम्भवति। एको किर पाणको नाळमज्झगतं गण्ठि विज्झति, येन विद्धत्ता निक्खन्तम्पि सालिसीसं खीरं गहेतुं न सक्कोति। तेनाह "**पच्छिन्नखीरं**" ति आदि।

वुत्तसस्सं ति वपितसस्सं। **तत्था** ति वेरञ्जायं। सलाकामत्तं वुत्तं एत्था ति **सलाकावुत्ता**, पुरिमपदे उत्तरपदलोपेनायं निद्देसो। तेनाह "**सलाका एव सम्पज्जती**" ति। यं तत्थ वुत्तं वापितं, तं सलाकामत्तमेव अहोसि, फलं न जायती ति अत्थो। **सम्पज्जती** ति च इमिना "सलाकावुत्ता" ति एत्थायं वुत्तसद्दो निप्फत्तिअत्थो ति दस्सेति। **सलाकाया** ति वेळुविलीवतालपण्णादीहि कतसलाकाय। **धञ्ञविक्कयकानं सन्तिकं** ति धञ्ञं विक्किणन्ती ति धञ्ञविक्कयका, तेसं समीपं ति अत्थो। **कयकेसु** ति धञ्ञगण्हनकेसु। **किणित्वा** ति गहेत्वा। **धञ्ञकरणट्ठाने** ति कोट्ठागारस्स समीपट्ठाने, धञ्ञमिननट्ठाने ति वुत्तं होति। **वण्णज्झक्खं** ति कहापणपरिक्खकं। B 427
न सुकरा उञ्छेन पग्गहेन यापेतुं ति पग्गय्हती ति पग्गहो, पत्तो। तेन पग्गहेन पत्तेना ति अत्थो, पत्तं गहेत्वा भिक्खाचरियाय यापेतुं न सक्का ति वुत्तं होति। तेनेवाह "**पग्गहेन यो उञ्छो**" ति आदि। **न सुकरा** ति सुकरभावो एत्थ नत्थी ति न सुकरा। **पिण्डाय चरित्वा** ति पिण्डाय चरणहेतु। हेतुअत्थे पि हि त्वासद्दमेके इच्छन्ति।

उत्तरापथतो आगता, उत्तरापथो वा निवासो एतेसं ति उत्तरापथका ति वत्तब्बे निरुत्तिनयेन "उत्तराहका" ति वुत्तं। तेनाह "**उत्तरापथवासिका**" ति आदि। "उत्तरापथका" इच्चेव वा पाळिपाठो वेदितब्बो। केचि पन "उत्तरं विसिट्ठं भण्डं आहरन्ती ति उत्तराहका, उत्तरं वा अधिकं अग्घं नेन्ती ति उत्तराहका" ति आदिना अञ्ञेन पकारेन अत्थं वण्णयन्ति। **अस्सानं उठट्ानट्ठाने** ति अस्सानं आकरट्ठाने। **वेरञ्जं** ति वेरञ्जायं। भुम्मत्थे हेतं उपयोगवचनं। **मन्दिरं** ति अस्ससालं। **अस्समण्डलिकायो ति पञ्ञायिसु** ति परिमण्डलाकारेन कतत्ता अस्समण्डलिकायो ति पाकटा अहेसुं। एवं कतानञ्च अस्ससालानं बहुत्ता बहुवचननिद्देसो कतो। दसन्नं दसन्नं अस्सानं वसनोकासो एकेका अस्समण्डलिका ति पि वदन्ति। **अद्धा-नक्खमा न होन्ती** ति दीघकालं पवत्तेतुं खमा न होन्ति, न चिरकालप्पवत्तिनो ति वुत्तं होति।

गङ्गाय दक्खिणा दिसा अप्पतिरूपदेसो, उत्तरा दिसा पतिरूपदेसो ति अधिप्पायेनाह **"न हि ते"** ति आदि। गङ्गाय दक्खिणतीरजाता **दक्खिणापथमनुस्सा।** "अम्हाकं बुद्धो" ति एवं बुद्धं ममायन्ती ति **बुद्धमामका**। एवं सेसेसु पि। **पटियादेतुं** ति सम्पादेतुं। **निच्चभत्तसङ्खेपेना** ति निच्चभत्ताकारेन। **पुब्बण्हसमयं** ति इदं भुम्मत्थे उपयोगवचनं ति आह **"पुब्बण्हसमये ति अत्थो"** ति। अच्चन्तसंयोगे वा इदं उपयोगवचनं ति दस्सेतुं यथा अच्चन्त संयोगत्थो सम्भवति, तथा अत्थं दस्सेन्तो आह **"पुब्बण्हे वा समयं"** ति आदि। **एवं** ति एवं पच्छा वुत्तनयेन अत्थे वुच्चमाने। ननु च विहारे निसीदन्तापि अन्तरवासकं निवासेत्वाव निसीदन्ति, तस्मा "निवासेत्वा" ति इदं कस्मा वुत्तं ति आह **"विहारनिवासनपरिवत्तनवसेना"** ति आदि। विहारनिवासनपरिवत्त-
B 428 नञ्च विहारे निसिन्नकाले निवत्थम्पि पुन गामप्पवेसनसमये चालेत्वा इतो चितो च सण्ठपेत्वा सक्कच्चं निवासनमेवा ति वेदितब्बं। तेनेवाह **"न हि ते ततो पुब्बे अनिवत्था अहेसुं"** ति। **पत्तचीवरमादाया** ति पत्तञ्च चीवरञ्च गहेत्वा। गहणञ्चेत्थ न केवलं हत्थेनेव, अथ खो येन केनचि आकारेन धारणमेवा ति दस्सेन्तो यथासम्भवमत्थयोजनं करोति **"पत्तं हत्थेही"** ति आदिना।

गतगतट्ठाने ति अस्समण्डलिकासु सम्पत्तसम्पत्तट्ठाने। **उदुक्खले कोट्टेत्वा कोट्टेत्वा परिभुञ्जन्ती** ति एत्थ कस्मा पन ते भिक्खू सयमेव एवं कत्वा परिभुञ्जन्ति, किमेवं लद्धं कप्पियकारकेहि यागुं वा भत्तं वा पचापेत्वा सयं वा पचित्वा परिभुञ्जितुं न वट्टती ति आह **'थेरानं कोचि कप्पियकारको नत्थी"** ति आदि। कप्पियाकप्पियभावं अनपेक्खित्वा भिक्खूनं एवं कातुं सारुप्पं न होती ति वत्वा पुन अकप्पियभावम्पि दस्सेन्तो आह **"न च वट्टती"** ति। भाजनादिपरिहरणवसेन बहुभण्डिकताय अभावतो वुत्तं" **"सल्लहुकवुत्तिता"** ति। **सकं सकं पटिवीसं** ति अत्तनो अत्तनो कोट्ठासं। **अप्पोस्सुक्का** ति समणधम्मतो अञ्ञत्थ निरुस्साहा। **तदुपियं** ति तदनुरूपं। **पिसती** ति चुण्णेति। पुञ्ञञाणविसेसेहि कत्तब्बकम्मस्स मनापता होती ति आह **"पुञ्ञवता"** ति आदि। **नं** ति नं पत्थपुलकं। "न ततो पट्ठाया" ति वचनतो ततो पुब्बे भगवतो पिण्डाय चरणम्पि दस्सितं ति वेदितब्बं।

लद्धा ति लभित्वा। "लद्धो" ति वा पाठो, उपट्ठाकट्ठानं नेव लद्धो ति अत्थो। कदा पन थेरो उपट्ठाकट्ठानं लद्धो ति ? वुच्चते[1]—एकदा किर भगवा नागसमालत्थेरेन सद्धिं अद्धानमग्गप्पटिपन्नो द्वेधापथं पत्तो। थेरो मग्गा उक्कम्म "भगवा अहं इमिना मग्गेन गच्छामी" ति आह। अथ नं भगवा "एहि भिक्खु, इमिना गच्छामा" ति आह। सो "हन्द भगवा तुम्हाकं पत्तचीवरं गण्हथ, अहं इमिना गच्छामी" ति वत्वा पत्तचीवरं छमायं ठपेतुं आरद्धो। अथ भगवा "आहर भिक्खू" ति वत्वा पत्तचीवरं गहेत्वा गतो। तस्स पि भिक्खुनो इतरेन मग्गेन गच्छतो चोरा पत्तचीवरञ्चेव हरिंसु, सीसञ्च भिन्दिंसु। सो "भगवा दानि मे पटिसरणं,

१. दी०-ट्ठ-२-१२, अं० ट्ठ० १-२२८ पिट्ठेसु पस्सितब्बं।

न अञ्ञो'' ति चिन्तेत्वा लोहितेन गळन्तेन भगवतो सन्तिकं आगमि। ''किमिदं भिक्खू'' ति च, वुत्ते तं पवत्तिं आरोचेसि। अथ नं भगवा ''मा चिन्तयि भिक्खु, एतं कारणं- B 429
येव ते निवारयिम्हा'' ति वत्वा समस्सासेसि।

एकदा पन भगवा मेघियत्थेरेन सद्धिं पाचीनवंसमिगदाये जन्तुगामं अगमासि। तत्रापि मेघियो जन्तुगामे पिण्डाय चरित्वा नदीतीरे पासादिकं अम्बवनं दिस्वा ''भगवा तुम्हाकं पत्तचीवरं गण्हथ, अहं एतस्मिं अम्बवने समणधम्मं करोमी'' ति वत्वा भगवता तिक्खत्तुं निवारियमानो पि गन्त्वा अकुसलवितक्केहि अन्वासत्तो पच्चागन्त्वा तं पवत्तिं आरोचेसि। तम्पि भगवा ''इदमेव ते कारणं सल्लक्खयित्वा निवारयिम्हा'' ति वत्वा अनुपुब्बेन सावत्थिं अगमासि। तत्थ गन्धकुटिपरिवेणे पञ्ञत्तवरबुद्धासने निसिन्नो भिक्खुसंघपरिवुतो भिक्खू आमन्तेसि ''भिक्खवे इदानिम्हि महल्लको, एकच्चे भिक्खू 'इमिना मग्गेन गच्छामा' ति वुत्ते अञ्ञेन गच्छन्ति, एकच्चे मय्हं पत्तचीवरं भूमियं निक्खिपन्ति, मय्हं निबद्धुपट्ठाकं भिक्खुं जानाथा'' ति। भिक्खूनं धम्मसंवेगो उदपादि। अथायस्मा सारिपुत्तो उट्ठाय भगवन्तं वन्दित्वा ''अहं भन्ते तुम्हेयेव पत्थयमानो सतसहस्सकप्पाधिकं असङ्ख्येय्यं पारमियो पूरेसिं, ननु मादिसो महापञ्ञो उपट्ठाको नाम वट्टति, अहं उपट्ठहिस्सामी'' ति आह। तं भगवा ''अलं सारिपुत्त, यस्सं दिसायं त्वं विहरसि, असुञ्ञायेव सा[1] दिसा, तव ओवादो बुद्धानं ओवादसदिसो, न मे तया उपट्ठाककिच्चं अत्थी'' ति पटिक्खिपि। एतेनेवुपायेन महामोग्गल्लानं आदिं कत्वा असीतिमहासावका उट्ठहिंसु। सब्बे भगवा पटिक्खिपि।

आनन्दत्थेरो पन तुण्हीयेव निसीदि। अथ नं भिक्खू आहंसु ''आवुसो भिक्खुसंघो उपट्ठाकट्ठानं याचति, त्वम्पि याचाही'' ति। याचित्वा लद्धट्ठानं नाम आवुसो कीदिसं होति, किं मं सत्था न पस्सति, सचे रोचेस्सति, ''आनन्दो मं उपट्ठातू'' ति वक्खती ति। अथ भगवा ''न भिक्खवे आनन्दो अञ्ञेन उस्साहेतब्बो, सयमेव जानित्वा मं उपट्ठहिस्सती'' ति आह। ततो भिक्खू ''उट्ठेहि आवुसो आनन्द, उट्ठेहि आवुसो आनन्द, दसबलं उपट्ठाकट्ठानं याचाही'' ति आहंसु। थेरो उट्ठहित्वा चत्तारो पटिक्खेपे च चतस्सो च आयाचना ति अट्ठ वरे याचि।

चत्तारो पटिक्खेपा नाम ''सचे मे भन्ते भगवा अत्तना लद्धं पणीतं चीवरं न B 430
दस्सति, पिण्डपातं न दस्सति, एकगन्धकुटियं वसितुं न दस्सति, निमन्तनं गहेत्वा न गमिस्सति, एवाहं भगवन्तं उपट्ठहिस्सामी'' ति वत्वा ''कं पनेत्थ आनन्द आदीनवं अद्दसा'' ति वुत्ते आह ''सचाहं भन्ते इमानि वत्थूनि लभिस्सामि, भविस्सन्ति वत्तारो 'आनन्दो दसबलेन लद्धं पणीतं चीवरं परिभुञ्जति, पिण्डपातं परिभुञ्जति, एकगन्धकुटियं वसति, एकनिमन्तनं गच्छति, एकं लाभं लभन्तो तथागतं उपट्ठाति, को एवं उपट्ठहतो भारो ति''। इमे चत्तारो पटिक्खेपे याचि

१. असुञ्ञा मे सा (स्या०)

चतस्सो आयाचना नाम "सचे भन्ते भगवा मया गहितं निमन्तनं गमिस्सति, सचाहं तिरोरट्ठा तिरोजनपदा भगवन्तं दट्ठुं आगतपरिसं आगतक्खणे एव भगवन्तं दस्सेतुं लच्छामि, यदा मे कङ्खा उप्पज्जति, तस्मिं येव खणे भगवन्तं उपसङ्कमितुं लच्छामि, तथा यं भगवा मय्हं परम्मुखं धम्मं देसेति, तं आगन्त्वा मय्हं कथेस्सति, एवाहं भगवन्तं उपट्ठहिस्सामी "ति वत्वा" कं पनेत्थ आनन्द आनिसंसं पस्ससी "ति वुत्ते आह" इध भन्ते सद्धा कुलपुत्ता भगवतो ओकासं अलभन्ता मं एवं वदन्ति 'स्वेव भन्ते आनन्द भगवता सद्धिं अम्हाकं घरे भिक्खं गण्हेय्याथा' ति। सचे भगवा तत्थ न गमिस्सति, इच्छितक्खणेयेव परिसं दस्सेतुं कङ्खञ्च विनोदेतुं ओकासं न लच्छामि भविस्सन्ति वत्तारो 'किं आनन्दो दसबलं उपट्ठाति, एत्तकम्पिस्स अनुग्गहं भगवा न करोती' ति। भगवतो च परम्मुखा मं पुच्छिस्सन्ति 'अयं आवुसो आनन्द गाथा इदं सुत्तं इदं जातकं कत्थ देसितं' ति। सचाहं तं न सम्पायिस्सामि, भविस्सन्ति वत्तारो 'एत्तकम्पि आवुसो न जानासि, कस्मा त्वं छाया विय भगवन्तं न विजहन्तो दीघरत्तं चिरं विचरी' ति। तेनाहं परम्मुखा देसितस्सपि धम्मस्स पुन कथनं इच्छामी"ति। इमा चतस्सो आयाचना याचि। भगवापिस्स अदासि। एवं इमे अट्ठ वरे गहेत्वा निबद्धुपट्ठाको अहोसि।

तस्सेव ठानन्तरस्स अत्थाय कप्पसतसहस्सं पूरितानं पारमीनं फलं पापुणि, पापुणित्वा च उपट्ठाकानं अग्गो हुत्वा भगवन्तं उपट्ठहि। थेरो हि उपट्ठाकट्ठानं लद्धकालतो पट्ठाय भगवन्तं दुविधेन उदकेन तिविधेन दन्तकट्ठेन पादपरिकम्मेन पिट्ठिपरिकम्मेन गन्धकुटिपरिवेणसम्मज्जनेनाति एवमादीहि किच्चेहि उपट्ठहन्तो "इमाय नाम वेलाय
B 431 सत्थु इदं नाम लद्धुं वट्टति, इदं नाम कातुं वट्टती" ति चिन्तेत्वा तं तं निप्फादेन्तो महतिं दण्डदीपिकं गहेत्वा एकरत्तिं गन्धकुटिपरिवेणं नव वारे अनुपरियायति। एवञ्हिस्स अहोसि "सचे मे थिनमिद्धं ओक्कमेय्य, भगवति पक्कोसन्ते पटिवचनं दातुं नाहं सक्कुणेय्यं" ति। तस्मा सब्बरत्तिं दण्डदीपिकं हत्थेन न मुञ्चति, एवमेतस्स निबद्धुपट्ठाकट्ठानस्स अलद्धभावं सन्धाय वुत्तं "**नो च खो उपट्ठाकट्ठानं** लद्धा" ति। **निबद्धुपट्ठाको नाम नत्थी** ति नियतुपट्ठाको नाम नत्थि। अनियतुपट्ठाका पन भगवतो पठमबोधियं बहू अहेसुं, ते दस्सेन्तो आह "**कदाचि नागसमालत्थेरो**" ति आदि। ञाति च सो पसत्थतमगुणयोगतो सेट्ठो चाति **ञाति सेट्ठो। एवरूपेसु ठानेसु अयमेव पतिरूपो** ति आपदासु आमिसस्स अभिसङ्खरित्वा दानं नाम ञातकेनेव कातुं युत्ततरं ति अधिप्पायो।

मारावट्टनाया ति मारेन कतचित्तावट्टनाय, मारानुभावेन सञ्जातचित्तसम्मोहेना ति वुत्तं होति। तेनेवाह "**आवट्टेत्वा मोहेत्वा**" ति आदि। **तिट्ठन्तु**....पे०....**तम्पि मारो आवट्टेय्या** ति फुस्सस्स भगवतो काले कतुपचितस्स अकुसलकम्मस्स तदा लद्धोकासवसेन उपट्ठितत्ता। वुत्तञ्हेतं **अपदाने**—

"फुस्सस्साहं पावचने, सावके परिभासयिं।[1]
यवं खादथ भुञ्जथ, मा च भुञ्जथ सालयो।

---

१. परिभासिसं (स्या०, क०)।

तेन कम्मविपाकेन, तेमासं खादितं यवं ।
निमन्तितो ब्राह्मणेन, वेरञ्जायं वसिं तदा" ति ।[1]

परियुट्ठितचित्तो ति परियोनद्धचित्तो, अभिभूतचित्तो ति अत्थो । **आवट्टितपरियोसाने आगमिसू** ति मारेन आवट्टेत्वा गते पच्छा आगमिसु । **अविसहताया"** ति असक्कुणेय्यताय । **अभिहटभिक्खाया** ति पचित्वा अभिहरियमानभिक्खाय । **निबद्धदानस्सा** ति "एत्तकं कालं भगवतो दस्सामा" ति निच्चभत्तवसेन परिच्छिन्दित्वा ठपितदानस्स । **अप्पितवत्थस्सा** ति इदं बुद्धस्स चतुपच्चयपरिभोगत्थं ति विहारं नेत्वा दिन्नवत्थुनो । **न विसहती** ति न सक्कोति । **अभिहटभिक्खासङ्खेपेना** ति अभिहटभिक्खानीहारेन । **ब्यामप्पभाया** ति समन्ततो ब्याममत्ताय पभाय । एत्थ च अनुब्यञ्जनानं ब्यामप्पभाय च निप्पभाकरणं अन्तरायो ति दट्ठब्बं । तेनेवाह "**चन्दिमसूरियदेवब्रह्मानम्पि ही**" ति आदि । अनुब्यञ्जनानं ब्यामप्पभाय एकाबद्धत्ता वुत्तं "**अनुब्यञ्जनब्यामप्पभाप्पदेसं पत्वा**" ति । **सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स अन्तरायो** नाम ञेय्यधम्मेसु आवरणं । B 432

अस्सोसि खो भगवा उदुक्खलसद्दं ति किं सयमेव उप्पन्नं उदुक्खलसद्दं अस्सोसीति चेति आह "**पत्थपत्थपुलकं कोट्टेन्तानं**" ति आदि । **अत्थसञ्हितं** ति पयोजनसाधकं । **अनत्थसञ्हिते** ति अनत्थनिस्सिते वचने । घातापेक्खं भुम्मवचनं । यस्मिञ्च येन घातो निप्फादीयति, तस्सेव तेन घातो कतो नाम होती ति आह "**मग्गेनेव तादिसस्स वचनस्स घातो समुच्छेदो ति वुत्तं होती**"ति । सामिअत्थे वा भुम्मवचनं ति मञ्ञमानो एवमाहा ति दट्ठब्बं । वचनस्स च समुग्घातो तम्मूलकिलेसानं समुग्घातेना ति वेदितब्बं ।

आकरो ति अत्तनो अनुरूपताय समरियादं सपरिच्छेदं फलं निप्फत्तेती ति आकारो कारणं ति आह "**आकारेही ति कारणेही**" ति । **अट्ठुप्पत्तियुत्तं** ति पच्चुप्पन्नवत्थुं निस्साय पवत्तं । **ताय पुच्छाय वीतिक्कमं पाकटं कत्वा** ति "सच्चं किर त्वं भिक्खू" ति आदिपुच्छाय तेन भिक्खुना कतवीतिक्कमं पकासेत्वा, वीतिक्कमप्पकासनञ्च किमत्थमिदं सिक्खापदं पञ्ञपेती ति अनुजाननत्थं ।

नत्थि किञ्चि वत्तब्बं ति पुब्बे वुत्तनयत्ता न किञ्चि एत्थ अपुब्बं वत्तब्बमत्थीति दस्सेति । तेनाह "**पुब्बे वुत्तमेव ही** ति आदि । **साधु साधू** ति इदं पसंसायं आमेडितवचनं ति आह "**आयस्मन्तं आनन्दं सम्पहंसेन्तो**" ति । **द्वीसु आकारेसू** ति धम्मदेसनसिक्खापदपञ्ञत्तिसङ्खातेसु द्वीसु कारणेसु । **एकं गहेत्वा** ति धम्मं वा देसेस्सामा ति एवं वुत्तकारणं गहेत्वा । **एवंदुब्भिक्खे** ति एवं दुक्खेन लभितब्बा भिक्खा एत्था ति एवं दुब्भिक्खे काले, देसे वा । **दुल्लभपिण्डे** ति एतस्सेव अत्थदीपनं । भाजनादिपरिहरणवसेन बहुभण्डिकताय अभावतो वुत्तं "**इमाय सल्लहुकवुत्तिताया**"

---

१. खु० ३-३४९ पिट्ठे अपदाने ।

ति। एत्तकमेव अलं यापेतुं ति उत्तरि पत्थनाभावतो पन **इमिना च सल्लेखेना"** ति वुत्तं। **दुब्भिक्खं विजितं** ति एत्थ हि भिक्खानं अभावो **दुब्भिक्खं** "निम्मक्खिकं" ति
B 433 आदीसु विय। भिक्खाभावोयेव हि तंनिमित्तचित्तविघातानं अभावतो भिक्खूहि विजितो वसे वत्तितो। **लोभो विजितो** ति आमिसहेतु रत्तिच्छेदवस्सच्छेदसमुट्ठापको लोलुप्पादो पि[1] तेसं नाहोसी ति आमिसलोलतासङ्खातो लोभो विजितो। **इच्छाचारो विजितो** ति "आमिसहेतु अञ्ञमञ्ञस्स उत्तरिमनुस्सधम्मप्पकासनवसेन गुणवणिज्जं कत्वा जीविकं कप्पेस्सामा" ति एवं पवत्तइच्छाचारस्स अभावतो यथावुत्तो इच्छाचारो विजितो। चित्तुप्पादमत्तस्स पि अनुप्पन्नभावं सन्धाय **"चिन्ता वा"** ति वुत्तं। पुनप्पुनानुसोचनवसेन पन चित्तपीळा पि नाहोसी ति दस्सनत्थं **"विघातो वा"** ति वुत्तं।

रत्तिच्छेदो वा ति सत्ताहकरणीयवसेन गन्त्वा बहि अरुणुट्ठापनवसेन रत्तिच्छेदो वा न कतो सत्ताहकिच्चवसेन पि कत्थचि आगतत्ता। सत्ताहकिच्चवसेन विप्पवासञ्हि सन्धाय रत्तिच्छेदो ति अट्ठकथावोहारो, ततोयेव च **वस्सूपनायिकक्खन्धकवण्णनायं**[2] "अयं पनेत्थ पाळिमुत्तकरत्तिच्छेदविनिच्छयो" ति वत्वा "धम्मस्सवनत्थाय अनिमन्तितेन गन्तुं न वट्टती" ति आदिना सत्ताहकरणीयमेव विभत्तं। **महाअट्ठकथायम्पि** वुत्तं "सत्ताहकिच्चेन गन्त्वा एकभिक्खुना पि रत्तिच्छेदो वा न कतो" ति। एवञ्च कत्वा **रत्तिच्छेदो नाम सत्ताहकरणीयवसेन** होति, न अञ्ञथा ति रत्तिच्छेदलक्खणञ्च **कथितं** ति दट्ठब्बं। एत्थ च पच्चयवेकल्लसङ्खाते वस्सच्छेदकारणे सति रत्तिच्छेदस्सपि वुत्तत्ता यत्थ वस्सच्छेदकारणं लब्भति, तत्थ सत्ताहकिच्चेन गन्तुम्पि वट्टतीति सिद्धं ति **चूळगण्ठिपदे मज्झिमगण्ठिपदे** च वुत्तं, तं सुवुत्तं वस्सूपनायिकक्खन्धके वस्सच्छेदाधिकारे—

> "तेन खो पन समयेन अञ्ञतरस्मिं आवासे वस्सूपगतानं भिक्खूनं गामो चोरेहि वुट्ठासि। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं। अनुजानामि भिक्खवे येन गामो तेन गन्तुं" ति[3]—

एत्थ "सचे गामो अविदूरगतो होति, तत्थ पिण्डाय चरित्वा विहारमेव आगन्त्वा वसितब्बं। सचे दूरगतो, सत्ताहवारेन अरुणो उट्ठापेतब्बो। न सक्का चे होति, तत्थेव सभागट्ठाने वसितब्बं" ति[4] इमिना अट्ठकथावचनेनपि संसन्दनतो। तथा हि गामे
B 434 वुट्ठिते भिक्खाय अभावतो वस्सच्छेदे पि अनापत्ति वदन्तेन भगवता "अनुजानामि भिक्खवे येन गामो तेन गन्तुं" ति[5] वुत्तत्ता भिक्खाय अभावो वस्सच्छेदकारणं। तत्थ "सचे दूरगतो, सत्ताहवारेन अरुणो उट्ठापेतब्बो" ति[6] इदं अट्ठकथावचनं वस्सच्छेदकारणे सति सत्ताहकिच्चेन गन्तुम्पि वट्टती ति इममत्थं साधेति।

---

१. लोभुप्पादो पि (स्या०)
२. वि० ट्ठ० ३-३५१ पिट्ठे।
३. वि० ३-२०७ पिट्ठे।
४. वि० ट्ठ० ३-३५२ पिट्ठे।
५. वि० ३-२०७ पिट्ठे।
६. वि० ट्ठ० ३-३५२ पिट्ठे।

यं पन वुत्तं **केनचि**—

> "**रत्तिच्छेदो** ति सत्ताहकिच्चं सन्धाय वुत्तो, सत्ताहकरणीयेन गन्त्वा रत्तिच्छेदो वा वस्सच्छेदो वा एकभिक्खुनापि न कतो ति वुत्तं किर महाअट्ठकथायं, तस्मा वस्सच्छेदस्स कारणे सति सत्ताहकिच्चं कातुं वट्टती ति एके। विनयधरा पन न इच्छन्ति, तस्मा अट्ठकथाधिप्पायो वीमंसितब्बो" ति।

तं पन सयं सम्मूळ्हस्स परेसं मोहुप्पादनमत्तं। न हि विनयधरानं अनिच्छाय कारणं दिस्सति अट्ठकथाय विरुज्झनतो युत्तिअभावतो च। यञ्हि कारणं वस्सच्छेदे पि अनापत्तिं साधेति, तस्मिंसति विना वस्सच्छेदं सत्ताहकिच्चेन गन्तुं न वट्टती ति का नाम युत्ति। "पच्छिमिकाय तत्थ वस्सं उपगच्छामा" ति इदं तेसं भिक्खूनं अनुरूपपरिवितक्कनपरिदीपनं, न पन विसेसत्थपरिदीपनं। तथा हि दुब्भिक्खताय वस्सच्छेदकरणसब्भावतो पुरिमिकाय ताव वस्सच्छेदेपि अनापत्ति। पच्छिमिकायं अनुपगन्तुकामताय गमनेपि नत्थि दोसो पच्छिमिकाय वस्सूपनायिकदिवसस्स असम्पत्तभावतो।

न किस्मिञ्चि मञ्ञन्ती ति किस्मिञ्चि गुणे सम्भावनवसेन न मञ्ञन्ति। **पकासेत्वा** ति पटिलद्धज्झानादिगुणवसेन पकासेत्वा। "पच्छा सीलं अधिट्ठहेय्यामा" ति वुत्तनयेन कुच्छिपटिजग्गने सति तथापवत्तइच्छाचारस्स अपरिसुद्धभावतो आजीवसुद्धिया च अभावतो पुन वायमित्वा संवरे पतिट्ठातब्बं ति आह "**पच्छासीलं अधिट्ठहेय्यामा**" ति।

किं इदं ति गरहणवसेन वुत्तं। सालितण्डुलेहि सम्पादितं मंसेन उपसित्तं ओदनं **सालिमंसोदनं, अतिमञ्ञिस्सती** ति अवञ्ञातकरणवसेन अतिक्कमित्वा मञ्ञिस्सति, लामकं निहीनं कत्वा मञ्ञिस्सती ति वुत्तं होति। तेनाह "**ओञ्ञातं अवञ्ञातं करिस्सती**" ति। हेट्ठा कत्वा निहीनं कत्वा ञातं **ओञ्ञातं**। **अवञ्ञातं** ति तस्सेव वेवचनं। **स्वायं** ति सो अयं जनपदो। **इमाय पटिपत्तिया** ति वेरञ्जायं पूरिताय सुदुक्कराय पटिपत्तिया। **तुम्हे निस्साया** ति तुम्हाकं इमं अप्पिच्छपटिपदं निस्साय। **सब्रह्मचारीसङ्गाता** ति छब्बग्गियादयो वुत्ता। **तुम्हाकं अन्तरे निसीदित्वा** ति तुम्हाकं मज्झे निसीदित्वा, तुम्हेहि सद्धिं निसीदित्वा ति वुत्तं होति। **ओमानं** ति अतिमानं। अतिमानोयेव हेत्थ निहीनताय "ओमानं" ति वुत्तो, न पन हीळेत्वा मञ्ञनं। तुम्हेहि आनन्द सप्पुरिसेहि विजितं सालिमंसोदनं पच्छिमा जनता अतिमञ्ञिस्सती ति एवमेत्थ पाळिं योजेत्वा अत्थं वण्णयन्ति। इदं वुत्तं होति—यं लद्धं, तेनेव तुस्सित्वा सालिमंसोदनपत्थनाय छिन्नत्ता च तुम्हेहि विजितं अभिभूतं सालिमंसोदनं पच्छिमा जनता तत्थ पत्थनं छिन्दितुं असमत्थताय अतिमञ्ञिस्सती ति। B 435

दुब्भिक्खकथा निट्ठिता

महामोग्गल्लानस्स सीहनादकथा

१७। आयस्मा ति वा देवानंपिया ति वा भद्रभवं ति वा पियसमुदाचारो एसो ति आह **"आयस्मा ति पियवचनमेतं"** ति। विञ्ञुजातिका हि परं पियेन समुदाचरन्ता "भवं" ति वा "देवानंपिया" ति वा "आयस्मा" ति वा समुदाचरन्ति, तस्मा सम्मुखा सम्बोधनवसेन आवुसो ति, तिरोक्खं आयस्मा ति अयम्पि समुदाचारो। तयिदं पियवचनं गरुगारवसप्पतिस्सवसेन वुच्चती ति आह **"गरुगारवसप्पतिस्साधिवचनमेतं"** ति। गुणमहत्तताय महामोग्गल्लानो, न चूळमोग्गल्लानस्स अत्थिताया ति आह **"महा च सो गुणमहन्तताया"** ति। **पप्पटकोजं** ति पथवीसन्धारकं उदकं आहच्च ठिते महापथविया हेट्ठिमतले समुट्ठितं उदकोघेन अज्झोत्थटे भूमिप्पदेसे सञ्जातकद्दमपटल-सदिसं अतिमधुरपथवीमण्डं। **न मेतं अस्स पतिरूपं** ति तं अनापुच्छा करणं न मे अनुच्छविकं भवेय्या ति अत्थो। अनापुच्छा करोन्तेन च यथा भगवा इच्छितिच्छितं किञ्चि अनापुच्छा करोति, एवमहम्पी ति भगवता समानं कत्वा अत्तानं मानेन कतं
B 436 विय भविस्सती ति आह **"युगग्गाहो विय भगवता सद्धिं कतो भवेय्या"** ति। परेन हि सद्धिं अत्तानं युगं युगळं समानं कत्वा गाहो, तस्स मम वा को विसेसो ति गहणं **युगग्गाहो**।

सम्पन्नं ति सम्पत्तियुत्तं। सा पनेत्थ रससम्पत्ति अधिप्पेता सामञ्ञजोतनाय विसेसे अवट्ठानतो। तेनाह **"सम्पन्नं ति मधुरं सादुरसं ति अत्थो"** ति। तिविधञ्हि सम्पन्नं परिपुण्णसमङ्गीमधुरवसेन। तत्थ—

"सम्पन्नं सालिकेदारं, सुवा भुञ्जन्ति कोसिय।
पटिवेदेमि ते ब्रह्मे, न ने वारेतुमुस्सहे" ति[१]—

इदं **परिपुण्णसम्पन्नं** नाम। परिपुण्णम्पि हि समन्ततो पन्नं पत्तं ति सम्पन्नं ति वुच्चति। "इमिना पातिमोक्खसंवरेन उपेतो होति समुपेतो उपगतो समुपगतो सम्पन्नो। समन्नागतो" ति[२] इदं **समङ्गीसम्पन्नं** नाम। समङ्गी पि हि सम्मदेव पन्नो गतो उपगतो ति सम्पन्नो ति वुच्चति। "तत्रस्स रुक्खो सम्पन्नफलो च उप्पन्नफलो चा" ति[३] इदं **मधुरसम्पन्नं** नाम। तत्थ मधुरसम्पन्नं इधाधिप्पेतं ति वेदितब्बं। **उपपन्नफलो** ति बहुफलो। **अस्सा** ति पथविया हेट्ठिमतलस्स। **ओपम्मनिदस्सनत्थं** ति उपमाय निदस्सनत्थं। **अनीळकं** ति निद्दोसं। निद्दोसता चेत्थ मक्खिकादिरहितताया ति आह **"निम्मक्खिकं"** ति आदि। नत्थि एत्थ मक्खिका ति निम्मक्खिकं। मक्खिकासद्देन चेत्थ मक्खिकण्ड-कम्पि सामञ्ञतो गहितं ति वदन्ति। तेनेव **तीसुपि गण्ठिपदेसु** वुत्तं "निम्मक्खिकं ति इमस्सेवत्थं पकासेतुं निम्मक्खिकण्डकं ति वुत्तं, मक्खिकाहि तासं अण्डकेहि च विरहितं ति अत्थो" ति। अयं पनेत्थ अम्हाकं **खन्ति** "मक्खिकानं अण्डानि मक्खि-

१. खु० ५-२७६ पिट्ठे जातके। २. अभि० २-२५५ पिट्ठे।
३. म० २-२९ पिट्ठे।

कण्डानि, नत्थि एत्थ मक्खिकण्डानी ति निम्मक्खिकण्डं ति। इमिना मक्खिकानं अण्डेहि रहितता वुत्ता, 'निम्मक्खिकं' ति इमिना पन मक्खिकानंयेव अभावो वुत्तो" ति **एतं किर मधू** ति खुद्दकमक्खिकाहि कतमधु। **सब्बमधूही** ति महामक्खिकभमरमक्खिकादिकतेहि। **अग्गं** ति उत्तमं। **सेट्ठं** ति पसत्थतमं। **सुरसं** ति सोभनरसं। **ओजवन्तं** ति अच्चन्तमोजसम्पन्नं।

आयाचनवचनमेतं ति इमिना सम्पटिच्छनसम्पहंसनादिअत्थं निवत्तेति। **एकं हत्थं** ति एकं पाणितलं। "**अभिनिम्मिनिस्सामी**" ति वुत्तमत्थं पकासेतुं "**पथवीसदिसं करिस्सामी**" ति वुत्तं। **अयं नु खो पथवी, उदाहु न अयं** ति इमिना निम्मितपथविया पकतिपथविया च सन्दिस्समानत्ता "एसा नु खो अम्हाकं पथवी, उदाहु अञ्ञा" ति उप्पज्जमानकुक्कुच्चं दस्सेति। निबद्धविपुलागमो गामो **निगमो**, पवत्तितमहाआयो महागामो ति वुत्तं होति। **न वा एस विपल्लासो** ति पुब्बपक्खं निदस्सेति। कस्मा पनेस विपल्लासो न होती ति आह "**अचिन्तेय्यो हि इद्धिमतो इद्धिविसयो**" ति। इद्धिबलेनेव तेसं सत्तानं तादिसो विपल्लासो न भविस्सती ति अधिप्पायो। इदानि अञ्ञथा विपल्लासप्पटिलाभं दस्सेन्तो आह "**एवं पना**" ति आदि। **गरहन्ता** ति सम्मुखा गरहन्ता। **उपवदन्ता** ति परम्मुखा अक्कोसन्ता। B 437

ननु च उत्तरकुरुं पिण्डाय गमनं पटिसेधेत्वा विपल्लासम्पि सत्ता पटिलभेय्युं ति कारणं न वुत्तं, तस्मा किमेत्थ कारणं ति आह "**तत्थ किञ्चापी**" ति आदि। यदिपि न वुत्तं, तथापि "विपल्लासम्पि सत्ता पटिलभेय्युं" ति पुब्बे अधिकतत्ता तेनेव कारणेन पिण्डाय उत्तरकुरुगमनम्पि भगवता पटिसिद्धं ति विञ्ञायति, तस्मा तदेव कारणं इधापि गहेतब्बं ति दस्सेन्तो आह "**पुब्बे वुत्तनयेनेव गहेतब्बं**" ति। **विपल्लासम्पि सत्ता पटिलभेय्युं** ति इदं इध अवुत्तम्पि आनेत्वा सम्बन्धितब्बं ति अधिप्पायो। अत्थोपि चस्स वुत्तसदिसमेव वेदितब्बो ति। "एवं पन विपल्लासं पटिलभेय्युं" ति आदिना पच्छा वुत्तमेव अत्थविकप्पं सन्धाय वदति। यं पन तत्थ वुत्तं "ते गुणे निब्बत्तेत्वा दुब्भिक्खकाले पथविं परिवत्तेत्वा पप्पटकोजं परिभुञ्जिसू" ति, तं अपनेत्वा ते गुणे निब्बत्तेत्वा दुब्भिक्खकाले उत्तरकुरुं गन्त्वा पिण्डाय चरित्वा परिभुञ्जिसू ति एवमेत्थ योजना कातब्बा। **एकेन पदवीतिहारेना** ति एत्थ पदस्स वीतिहरणं निक्खिपनं पदवीतिहारो, पदनिक्खेपो, तस्मा एकेन पदनिक्खेपेना ति वुत्तं होति। एकेन पदवीतिहारेन अतिक्कमितब्बट्ठानञ्च समगमनेन छिन्नं पदानं अन्तरे मुट्ठिरतनमत्तं, तस्मा। **मातिकामत्तं अधिट्ठहित्वा** ति मुट्ठिरतनप्पमाणं मातिकामत्तं अधिट्ठाया ति अत्थो।

निट्ठिता महामोग्गल्लानस्स सीहनादकथा।

B 438

विनयपञ्ञत्तियाचनकथा

१८॥ **विनयपञ्ञत्तिया** ति पुब्बे अपञ्ञत्तसिक्खापदं सन्धाय वुत्तं। थेरो हि पञ्ञत्तसिक्खापदानि ठपेत्वा इदानि पञ्ञपेतब्बसिक्खापदानि पातिमोक्खुद्देसञ्च सन्धाय "एतस्स भगवा कालो, एतस्स सुगत कालो, यं भगवा सावकानं सिक्खापदं पञ्ञपेय्य, उद्दिसेय्य पातिमोक्खं" ति[1] आह। भगवता पि—

> "को नु खो भन्ते हेतु, को पच्चयो, येन पुब्बे अप्पतरानि चेव सिक्खापदानि अहेसुं, बहुतरा च भिक्खू अञ्ञाय सण्ठहिंसु। को पन भन्ते हेतु, को पच्चयो, येन एतरहि बहुतरानि चेव सिक्खापदानि होन्ति, अप्पतरा च भिक्खू अञ्ञाय सण्ठहन्ती ति। एवमेतं भद्दालि होति, सत्तेसु हायमानेसु सद्धम्मे अन्तरधायमाने बहुतरानि चेव सिक्खापदानि होन्ति, अप्पतरा च भिक्खू अञ्ञाय सण्ठहन्ती ति। न ताव भद्दालि सत्था सावकानं सिक्खापदं पञ्ञपेति, याव न इधेकच्चे आसवट्ठानीया धम्मा सङ्घे पातुभवन्ती" ति—

इमस्मिं **भद्दालिसुत्ते**[2] विय एकच्चेसु पञ्ञत्तेसु पि ततो परं पञ्ञपेतब्बानि सन्धाय "न ताव सारिपुत्त सत्था सावकानं सिक्खापदं पञ्ञपेती" ति वुत्तं। इधेव च अट्ठकथायं "सामम्पि पचनं समणसारुप्पं न होति, न च वट्टती" ति[3] वचनं "रत्तिच्छेदो वा वस्सच्छेदो वा न कतो" ति[4] वचनञ्च पुब्बे पञ्ञत्तसिक्खापदानं सब्भावे पमाणं ति दट्ठब्बं। सेससिक्खापदानञ्चेव पातिमोक्खुद्देसस्स च थेरस्स आयाचनेन पञ्ञत्तत्ता **"मूलतो पभुति निदानं दस्सेतुं"** ति आह। **रहोगतस्सा** ति रहो जनविवित्तं ठानं उपगतस्स। तेन गणसङ्गणिकाभावेन थेरस्स कायविवेकमाह। **पटिसल्लीनस्सा** ति नानारम्मणचारतो चित्तस्स निवत्तिया पटिसम्मदेव निलीनस्स तत्थ अविसटचित्तस्स। तेन चित्तसङ्गणिकाभावेनस्स पुब्बभागियं चित्तविवेकमाह। **चिरं** ति कालापेक्खं अच्चन्तसंयोगे उपयोगवचनं। **चिरा** ति चिरकालयुत्ता ठिति अभेदेन वुत्ता।

B 439 **एतं न सक्कोती** ति एतं विनिच्छिनितुं न सक्कोति। अट्ठकथायं वुत्तनयं दस्सेत्वा इदानि थेरवादं दस्सेन्तो आह **"महापदुमत्थेरो पना"** ति आदि। अट्ठकथायम्पि "न सक्कोती" ति इदं यस्मा जानमानो पि सम्मदेव परिच्छिन्दितुं न सक्कोति, तस्मा वुत्तं ति वदन्ति। **सोळसविधाय पञ्ञाय** मत्थकं **पत्तस्सा ति मज्झिमनिकाये अनुपदसुत्तन्तदेसनायं**[5]—

> "महापञ्ञो भिक्खवे सारिपुत्तो, पुथुपञ्ञो भिक्खवे सारिपुत्तो, हासपञ्ञो भिक्खवे सारिपुत्तो, जवनपञ्ञो भिक्खवे सारिपुत्तो, तिक्खपञ्ञो भिक्खवे सारिपुत्तो, निब्बेधिकपञ्ञो भिक्खवे सारिपुत्तो" ति—

---

१. वि० १-१० पिट्ठे। २. म० २-१०८ पिट्ठे। ३. वि० ट्ठ० १४५ पिट्ठे।
४. वि० ट्ठ० १४८ पिट्ठे। ५. म० ३-७५ पिट्ठे।

एवमागता महापञ्ञादिका छ, तस्मियेव सुत्ते आगता नवानुपुब्बविहारसमापत्तिपञ्ञा, अरहत्तमग्गपञ्ञा ति इमासं सोळसप्पभेदानं पञ्ञानं सावकविसये उक्कट्ठकोटिप्पत्तस्स।

कस्मा पनेत्थ भगवा विपस्सीआदीनं सत्तन्नंयेव बुद्धानं ब्रह्मचरियस्स चिरट्ठितिकाचिरट्ठितिकभावं कथेसि, न बुद्धवंसदेसनायं विय पञ्चवीसतिया बुद्धानं, ततो वा पन भिय्यो ति ? येसं सम्मासबुद्धानं पटिवेधसासनं एकंसतो निच्छयेन अज्जा पि धरति, न अन्तरहितं, ते एव कित्तेन्तो विपस्सीआदीनंयेव भगवन्तानं ब्रह्मचरियस्स चिरट्ठितिकाचिरट्ठितिक भावं इध कथेसि। तेसंयेव हि सावका तदा चेव एतरहि च सुद्धावास भूमियं ठिता, न अञ्ञेसं परिनिब्बुतत्ता। सिद्धत्थतिस्सफुस्सानं किर बुद्धानं सावका सुद्धावासेसु उप्पन्ना उप्पत्तिसमनन्तरमेव इमस्मिं सासने उपकादयो विय अरहत्तं अधिगन्त्वा न चिरस्सेव परिनिब्बायिंसु, न तत्थ तत्थ सावका यावतायुकं अट्ठंसू ति वदन्ति। अपुब्बाचरिमनियमो पन अपरापरं संसरणकसत्तावासवसेन एकिस्सा लोकधातुया इच्छितो ति न तेनेतं विरुज्झती ति दट्ठब्बं।

१९॥ असाधारणो हेतु, साधारणो पच्चयो ति एवमादिविभागेन इध पयोजनं नत्थि, विपस्सीआदीनं पन ब्रह्मचरियस्स अचिरट्ठितिकताय चिरट्ठितिकताय च कारणपुच्छापरत्ता चोदनाया ति आह **"हेतु पच्चयो ति उभयमेतं कारणाधिवचनं"** ति। हिनोति तेन फलं ति हेतू ति करणसाधनोयं हेतुसद्दो ति आह **"तेन तस्स फलं"** ति 440
आदि। कत्तुसाधनो पि हेतुसद्दो नो न युज्जति हिनोति फलस्स हेतुभावं उपगच्छती ति हेतू ति। तं पटिच्च एति पवत्तती ति तं कारणं पटिच्च तस्स फलं एति पवत्तति निब्बत्तती ति अत्थो।

किलासुनो अहेसुं ति अप्पोस्सुक्का अहेसुं, निरुस्साहा अहेसुं ति अत्थो। सा पन निरुस्साहता न आलसियवसेना ति आह **"न आलसियकिलासुनो"** ति, आलसियवसेन किलासुनो नाहेसुं ति अत्थो। तत्थ कारणमाह **"न ही"** ति आदि। **आलसियं वा** ति इमिना थिनमिद्धवसप्पवत्तानं अकुसलानं अभावमाह। **ओसन्नवीरियता वा** ति इमिना पन "आलसियाभावे पि अन्तमसो अन्नभारनेसादानम्पि सक्कच्चंयेव धम्मं देसेती" ति वचनतो यस्स कस्सचि पि धम्मदेसनाय निरुस्साहता नत्थी ति दीपेति सब्बेसं समकेनेव उस्साहेन धम्मदेसनाय पवत्तनतो। तेनाह **"बुद्धा हो"** ति आदि। **ओसन्नवीरिया** ति ओहीनवीरिया, अप्पोस्सुक्का ति अत्थो। **उस्सन्नवीरिया** ति अधिकवीरिया, महुस्साहा ति अत्थो। **वेगेना** ति जवेन। धम्मे गरु एतेसं ति **धम्मगरुनो**। धम्मे गारवमेतेसं ति **धम्मगारवा**। विपस्सिस्स भगवतो काले असीति वस्ससहस्सानि आयुप्पमाणं सिखिस्स सत्तति वस्ससहस्सानि, वेस्सभुस्स सट्ठि वस्ससहस्सानि आयुप्पमाणं ति आह **"तेसं किर काले दीघायुका सत्ता"** ति। **अभिसमेन्ती** ति पटिविज्झन्ति।

निद्दोसताया ति वीतिक्कमदोसस्स अभावतो। "इमस्मिं वीतिक्कमे अयं नाम आपत्ती" ति एवं आपत्तिवसेन अपञ्ञपेत्वा "पाणातिपातं पहाय पाणातिपाता

पटिविरतो होती'' ति आदिना[1] धम्मदेसनावसेन ओवादसिक्खापदानंयेव पञ्ञत्तत्ता वुत्तं **''सत्तापत्तिक्खन्धवसेन आणासिक्खापदं अपञ्ञत्तं''** ति। छन्नं छन्नं वस्सानं अच्चयेना ति पाठसेसो दट्ठब्बो। अथ वा छन्नं छन्नं वस्सानं ओसानदिवसं अपेक्खित्वा **''सकिं सकिं''** ति वुत्तत्ता तदपेक्खमिदं सामिवचनं। सकलजम्बुदीपे सब्बोपि भिक्खुसंघो एकस्मिंयेव ठाने उपोसथं अकासी ति सम्बन्धो। कतमं तं ठानं ति
B 441 आह **''बन्धुमतिया राजधानिया''** ति आदि। इसिपतनं तेन समयेन खेमं नाम उय्यानं होति, मिगानं पन अभयवासत्थाय दिन्नत्ता मिगदायो ति वुच्चति। तं सन्धाय वुत्तं **''खेमे मिगदाये''** ति।

अब्बोकिण्णानि दस पि वीसति पि भिक्खुसहस्सानि वसन्तो ति विसभागपुग्गलेहि असंसट्ठानि दस पि वीसति पि भिक्खूनं सहस्सानि वसन्ति। **दीघनिकायट्ठकथायं** पन ''ते सब्बेपि द्वादससहस्सभिक्खुगण्हनका महाविहारा अभयगिरिचेतियपब्बतचित्तलपब्बत-विहारसदिसा च अहेसुं'' ति वुत्तं। **उपोसथारोचिका** ति उपोसथारोचनका। ता किर देवता एकम्हि वस्से निक्खन्ते तत्थ तत्थ गन्त्वा आरोचेन्ति ''निक्खन्तं खो मारिसा एकं वस्सं, पञ्च दानि वस्सानि सेसानि, पञ्चन्नं वस्सानं अच्चयेन बन्धुमती राजधानी उपसङ्कमितब्बा पातिमोक्खुद्देसाया'' ति। तथा द्वीसु वस्सेसु निक्खन्तेसु ''निक्खन्तानि खो मारिसा द्वे वस्सानि, चत्तारि वस्सानि सेसानि, चतुन्नं वस्सानं अच्चयेन बन्धुमती राजधानी उपसङ्कमितब्बा पातिमोक्खुद्देसाया'' ति आरोचेन्ति। इमिनाव नयेन तीसु चतूसु पञ्चसु वस्सेसु अतिक्कन्तेसु आरोचेन्ति। तेन वुत्तं **''मारिसा एकं वस्सं अतिक्कन्तं''** ति आदि। **सानुभावा** ति इद्धानुभावेन सानुभावा। **ते किर भिक्खू** ति ये देवतानुभावेन गच्छन्ति, ते सन्धाय वदति। **पाचीनसमुद्दन्ते** ति पाचीनसमुद्दस्स समीपदेसे। **गमियवत्तं** ति गमिकेहि कातब्बं सेनासनपटिज्जग्गनादिवत्तं। **उपोसथग्गं** ति उपोसथकरणट्ठानं। **गताव होन्ती** ति देवतानुभावेन गता एव होन्ति। **ते** ति अत्तनो अत्तनो आनुभावेन देवतानुभावेन च गता सब्बेपि।

खन्ती परमं ति आदीसु[2] परूपवादं परापकारं सीतुण्हादिभेदञ्च गुणोपरोधं खमति सहति अधिवासेती ति **खन्ति**। सा पन सीलादीनं पटिपक्खधम्मे सविसेसं तपति सन्तपति विधमतीति **परमं** उत्तमं **तपो**। तितिक्खनं खमनं **तितिक्खा**। खन्तियायेवेतं वेवचनं। अक्खरचिन्तका हि खमायं तितिक्खासद्दं वण्णेन्ति, तस्मा एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो ''तितिक्खासङ्खाता अधिवासनखन्ति नाम उत्तमं तपो'' ति। **निब्बानं परमं वदन्ति बुद्धा** ति भवेन भवन्तरं विनाति भवनिकन्तिभावेन संसिब्बति, सतण्हस्सेव वा
B 442 आयतिं पुनब्भवभावतो फलेन सद्धिं कम्मं विनाति संसिब्बती ति वानं ति सङ्ख्यं गताय तण्हाय निक्खन्तं निब्बानं तत्थ तस्सा सब्बसो अभावतो। तं निब्बानं पन सन्तपणीत-निपुणसिवखेमादिना सब्बाकारेन परमं ति वदन्ति बुद्धा।

---

१. दी० १-४, ५९ पिट्ठेसु।

२. दी-ट्ठ० २-६९। धम्मपद-ट्ठ० २-१५४—पिट्ठेसुपि पस्सितब्बं।

न हि पब्बजितो परूपघाती ति यो अधिवासनखन्तिरहितत्ता परं उपघातेति बाधति विहिंसति, सो पब्बजितो नाम न होति पब्बाजेतब्बधम्मस्स अपब्बाजनतो। चतुत्थपादो पन ततियपादस्सेव वेवचनं अनत्थन्तरत्ता। "न हि पब्बजितो ति एतस्स हि "न समणो होती" ति वेवचनं। "परूपघाती" ति एतस्स "परं विहेठयन्तो" ति वेवचनं। अथ वा **परूपघाती** ति सीलूपघाती। सीलञ्हि उत्तमट्ठेन "परं" ति वुच्चति परसद्दस्स सेट्ठवाचकत्ता "पुग्गलपरोपरञ्ञू" ति आदीसु विय। यो च समणो परं यं कञ्चि सत्तं विहेठयन्तो परूपघाती होति अत्तनो सीलविनासको, सो पब्बजितो नाम न होती ति अत्थो। अथ वा यो अधिवासनखन्तिया अभावा परूपघाती होति, परं अन्तमसो डंसमकसम्पि जीविता वोरोपेति, सो न हि पब्बजितो। किं कारणा? पापमलस्स अपब्बाजितत्ता अनीहटत्ता। "पब्बाजयमत्तनो मलं, तस्मा पब्बजितो ति वुच्चती" ति[1] इदञ्हि पब्बजितलक्खणं। यो पि नहेव खो उपघातेति न मारेति, अपि च दण्डादीहि विहेठेति, सो पि परं विहेठयन्तो समणो न होति। किं कारणा? विहेसाय असमितत्ता। समितत्ता समणो ति वुच्चती ति इदञ्हि समणलक्खणं। "समितत्ता हि पापानं, समणो ति पवुच्चती" ति[2] हि वुत्तं।

अपि च भगवा भिक्खूनं पातिमोक्खं उद्दिसन्तो पातिमोक्खकथाय च सीलप्पधानत्ता सीलस्स च विसेसतो दोसो पटिपक्खो ति तस्स निग्गण्हनविधिं दस्सेतुं आदितो "**खन्ती परमं तपो**" ति आह। तेन अनिट्ठस्स पटिहननूपायो वुत्तो, तितिक्खाग्गहणेन पन इट्ठस्स, तदुभयेनपि उप्पन्नं अरतिं उप्पन्नं रतिं अभिभुय्य विहरतो ति अयमत्थो दस्सितो। तण्हावानस्स वूपसमनतो निब्बानं परमं वदन्ति बुद्धा। तत्थ खन्तिग्गहणेन पयोगविपत्तिया अभावो दस्सितो, तितिक्खाग्गहणेन आसयविपत्तिया अभावो। तथा खन्तिग्गहणेन परापराधसहता, तितिक्खाग्गहणेन परेसु अनपरज्झना दस्सिता। एवं कारणमुखेन अन्वयतो पातिमोक्खं दस्सेत्वा इदानि ब्यतिरेकतो तं दस्सेतुं "**न हि**" ति B 443
आदि वुत्तं। तेन यथा सत्तानं जीविता वोरोपनं परं पाणिलेड्डुदण्डादीहि विहेठनञ्च "परूपघाती परं विहेठनं" ति वुच्चति, एवं तेसं सापतेय्यावहरणं परामसनं विसंवादनं अञ्ञमञ्ञभेदनं फरुसवचनेन मम्मघट्टनं निरत्थकविप्पलापो परसन्तकाभिज्झानं उच्छेदचिन्तनं मिच्छाभिनिवेसनञ्च उपघातो परविहेठनञ्च होती ति यस्स कस्सचि अकुसलस्स कम्मपथस्स कम्मस्स च करणेन पब्बजितो समणो च न होती ति दस्सेति।

दुतियगाथाय **सब्बपापस्सा** ति सब्बाकुसलस्स सब्बस्सपि द्वादसाकुसलस्स सब्बचित्तुप्पादसङ्गहितस्स सावज्जधम्मस्स। **अकरणं** ति अनुप्पादनं। करणञ्हि नाम तस्स अत्तनो सन्ताने उप्पादनं ति तप्पटिक्खेपतो अकरणं अनुप्पादनं। **कुसलस्सा** ति चतुभूमिककुसलस्स। "कुसलस्सा ति हि इदं "एतं बुद्धान सासनं" ति वक्खमानत्ता अरियमग्गधम्मे तेसञ्च सम्भारभूते तेभूमिककुसले धम्मे बोधेति। **उपसम्पदा** ति उपसम्पादनं। तं पन अत्थतो तस्स कुसलस्स समधिगमो पटिलाभो। **सचित्तपरियोदपनं** ति अत्तनो चितस्स जोतनं चित्तस्स पभस्सरभावकरणं सब्बसो परिसोधनं। तं पन अरहत्तेन होति। एत्थ च यस्मा अग्गमग्गसमङ्गिनो चित्तं सब्बसो परियोदपीयति

नाम, **अग्गफलक्खणे पन** परियोदपितं होति पुन परियोदपेतब्बताय अभावतो, तस्मा परिनिट्ठितपरियोदपनतं सन्धाय वुत्तं "तं पन अरहत्तेन होती" ति। इति सीलसंवरेन सब्बपापं पहाय लोकियलोकुत्तराहि समथविपस्सनाहि कुसलं सम्पादेत्वा अरहत्तफलेन चित्तं परियोदपेतब्बं ति एतं बुद्धानं सासनं ओवादो अनुसिट्ठि।

ततियगाथाय **अनुपवादो** ति वाचाय कस्सचि अनुपवदनं। **अनुपघातो** ति **कायेन मनसा** च कस्सचि उपघातकरणं मनसा पि परेसं अनत्थचिन्तनादिवसेन उपघातकरणस्स वज्जेतब्बत्ता। **पातिमोक्खे** ति यं तं पअतिमोक्खं अतिपमोक्खं उत्तमं सीलं, पाति वा सुगतिभयेहि मोक्खेति दुग्गतिभयेहि, यो वा नं पाति, तं मोक्खेती ति पातिमोक्खं ति वुच्चति, तस्मिं पातिमोक्खे च। **संवरो** ति सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं अवीतिक्कमलक्खणो संवरो। **मत्तञ्ञुता** ति भोजने मत्तञ्ञुता पटिग्गहणपरिभोगवसेन पमाणञ्ञुता। **पन्तञ्च सयनासनं** ति जनसङ्घट्टविरहितं निज्जनसम्बाधं विवित्तं सेनासनञ्च।
B 444 एत्थ द्वीहियेव पच्चयेहि चतुपच्चयसन्तोसो दीपितो ति वेदितब्बो पच्चयसन्तोससामञ्ञेन इतरद्वयस्स पि लक्खणहारनयेन जोतितभावतो।[1] **अधिचित्ते च आयोगो** ति विपस्सनापादकं अट्ठसमापत्तिचित्तं अधिचित्तं, ततोपि च मग्गफलचित्तमेव अधिचित्तं, तस्मिं यथा वुत्ते अधिचित्ते आयोगो च, अनुयोगो ति अत्थो। एतं **बुद्धानसासनं** ति एतं परस्स अनुपवदनं अनुपघातनं पातिमोक्खे संवरो पटिग्गहणपरिभोगेसु मतञ्ञुता विवित्तसेनासनसेवनं अधिचित्तानुयोगो च बुद्धानं सासनं ओवादो अनुसिट्ठि।

इमा पन सब्बबुद्धानं पातिमोक्खुद्देसगाथा होन्ती ति वेदितब्बा। तेनाह "**एतेनेव उपायेना**" ति आदि। **याव सासनपरियन्ता** ति धरमानकबुद्धानं अनुसासनपरियन्तं सन्धाय वुत्तं, याव बुद्धा धरन्ति, ताव उद्दिसितब्बतं आगच्छन्तो ति वुत्तं होति। ओवादपातिमोक्खञ्हि बुद्धायेव उद्दिसन्ति, न सावका। पठमबोधियंयेव उद्देसमागच्छन्ती ति सम्बन्धो। पठमबोधि चेत्थ वीसतिवस्सपरिच्छिन्ना ति **महागणिठपदे** वुत्तं। तञ्च हेट्ठा अट्ठकथायमेव "भगवतो हि पठमबोधियं वीसतिवस्सन्तरे निबद्धुपट्ठाको नाम नत्थी" ति कथितत्ता "पठमबोधि नाम वीसतिवस्सानी" ति गहेत्वा वुत्तं। **आचरियधम्मपालत्थेरेन** पन "पञ्चचत्तालीसाय वस्सेसु आदितो पन्नरस वस्सानि पठमबोधी" ति वुत्तं। एवञ्च सति मज्झे पन्नरस वस्सानि मज्झिमबोधि, अन्ते पन्नरस वस्सानि पच्छिमबोधी ति तिण्णं बोधीनं समप्पमाणता सिया ति तम्पि युत्तं। पन्नरसत्तिकेन हि पञ्चचत्तालीस वस्सानि पूरेन्ति। अट्ठकथायं पन पन्नरसवस्सप्पमाणाय पठमबोधिया वीसतिवस्सेसुयेव अन्तोगधत्ता "पठमबोधियं वीसतिवस्सन्तरे" ति वुत्तं ति एवम्पि सक्का विञ्ञातुं।

ननु च कानिचि सिक्खापदानि पञ्ञपेत्वापि न ताव आणापातिमोक्खं अनुञ्ञातं पच्छा थेरस्स आयाचनेन अनुञ्ञातत्ता, तस्मा कथमेतं वुत्तं सिक्खापदपञ्ञत्तिकालतो

---

१. बोधितभावतो (स्या०)।

पन पभुति अणापातिमोक्खमेव उद्दिसीयती" ति, यदि पि कानिचि सिक्खापदानि पञ्ञपेत्वाव आणापातिमोक्खं न अनुञ्ञातं, तथा पि अपञ्ञत्ते सिक्खापदे आणापातिमोक्खं नत्थि, किन्तु पञ्ञत्तेयेवा ति इममत्थं दस्सेतुं **"सिक्खापदपञ्ञत्तिकालतो पन पभुती"** ति वुत्तं। **पुब्बारामे** ति सावत्थिया पाचीनदिसाभागे कतत्ता एवं लद्धवोहारे B 445 महाविहारे। **मिगारमातुपासादे** ति मिगारसेट्ठिनो मातुट्ठानियत्ता मिगारमाता ति सङ्ख्यं गताय विसाखामहाउपासिकाय कारिते पासादे। **अट्ठानं** ति हेतुपटिक्खेपो। **अनवकासो** ति पच्चयपटिक्खेपो। उभयेन पि कारणमेव पटिक्खिपति। **यं** ति येन कारणेन।

तेसं ति भिक्खूनं। **सम्मुखसावकानं सन्तिके पब्बजिता** ति सब्बन्तिमानं सुभद्दसदिसानं सम्मुखसावकानं सन्तिकं पब्बजिते सन्धाय वदति। खत्तियकुलादिवसेनेव विविधा कुला ति सम्बन्धो। **उच्चनीचउळारुळारभोगादिकुलवसेन वा** ति उच्चनीचकुलवसेन उळारुळारभोगादिकुलवसेन वा ति योजेतब्बं। तत्थ खतियब्राह्मणवसेन वा खत्तियब्राह्मणगहपतिकानं वसेन वा **उच्चकुलता** वेदितब्बा, सेसानं वसेन **नीचकुलता। उळारुळारभोगादिकुलवसेन वा** ति उळारतरतमउपभोगवन्तादिकुलवसेन। उळारातिसयजोतनत्थञ्हि पुन उळारग्गहणं "दुक्खदुक्खं"ति आदीसु विय। **आदि**-सद्देन उळारानुळारानं गहणं वेदितब्बं।

ब्रह्मचरियं रक्खन्ती ति वुत्तमेवत्थं पकासेत्वा दस्सेन्तो आह **"चिरं परियत्तिधम्मं परिहरन्तो"** ति। अपञ्ञत्तेपि सिक्खापदे यदि समानजातिआदिका सियुं, अत्तनो अत्तनो कुलानुगतगन्थं विय न नासेय्युं। यस्मा पन सिक्खापदम्पि अपञ्ञत्तं, इमे च भिक्खू न समानजातिआदिका, तस्मा विनासेसुं ति इममत्थं दस्सेतुं **"यस्मा एकनामा···पे०···तस्मा अञ्ञमञ्ञं विहेठेन्ता"** ति आदि वुत्तं। यदि एवं कस्मा चिरट्ठितिकवारेपि "नानानामा" ति आदि वुत्तं ति? सति पि तेसं नानाजच्चादिभावे सिक्खापदपञ्ञत्तिया एव सासनस्स चिरप्पवत्ती ति दस्सनत्थं वुत्तं। सिक्खापदपञ्ञत्तिवसेनेव सासनस्स चिरप्पवत्ति। यस्मा बुद्धा अत्तनो परिनिब्बनतो उद्धम्पि विनेतब्बसत्तसम्भवे सति सिक्खापदं पञ्ञपेन्ति, असति न पञ्ञपेन्ति, तस्मा ति वेदितब्बो।[1] यथा कायवचीद्वारसङ्खातं विञ्ञत्तिं समुट्ठापेत्वा पवत्तमानम्पि चित्तं तस्सायेव विञ्ञतिया वसेन पवत्तनतो "कायवाचीद्वारेहि पवत्तं" ति वुच्चति, एवंसम्पदमिदं दट्ठब्बं। **यथा तं** ति एत्थ **तं** ति निपातमत्तं। **वग्गसङ्गहपण्णाससङ्गहादीही** ति सीलक्खन्धवग्गमहावग्गादिवग्गसङ्गहवसेन मूलपण्णासमज्झिमपण्णासादिपण्णाससङ्गहवसेन। **आदि**-सद्देन संयुत्तादिसङ्गहो वेदितब्बो।

एवं वितक्केथ, मा एवं वितक्कयित्था ति एत्थ **एवं** ति यथानुसिट्ठाय अनुसास- B 346 निया विधिवसेन पटिसेधनवसेन च पवत्तिताकारपरामसनं, सा च सम्मावितक्कानं मिच्छावितक्कानञ्च पवत्तिआकारदस्सनवसेन पवत्तति अत्थ आनिसंसस्स आदीनवस्स

१. वेदितब्बा (स्या०)।

च विभावनत्थं। तेनाह "**नेक्खम्मवितक्कादयो तयो वितक्के वितक्केथा**" ति आदि। एत्थ **आदि** सद्देन अब्यापादवितक्कअविहिंसावितक्कानं गहणं वेदितब्बं। तत्थ नेक्खम्मं वुच्चति लोभतो निक्खन्तत्ता अलोभो, नीवरणेहि निक्खन्तत्ता पठमज्झानं, सब्बाकुसलेहि निक्खन्तता सब्बो कुसलो धम्मो, सब्बसङ्खतेहि निक्खन्तत्ता निब्बानं, उपनिस्सयतो सम्पयोगतो आरम्मणकरणतो च नेक्खम्मेन पटिसंयुत्तो वितक्को **नेक्खम्मवितक्को**, सम्मासङ्कप्पो। सो असुभज्झानस्स पुब्बभागे कामावचरो होति, असुभज्झाने रूपावचरो, तं झानं पादकं कत्वा उप्पन्नमग्गफलकाले लोकुत्तरो। ब्यापादस्स पटिपक्खो अब्यापादो, कञ्चिपि न ब्यापादेन्ति एतेनाति वा अब्यापादो, मेत्ता। यथावुत्तेन अब्यापादेन पटिसंयुत्तो वितक्को **अब्यापादवितक्को**। सो मेत्ताझानस्स पुब्बभागे कामावचरो होति, मेत्ताभावनावसेन अधिगते पठमज्झाने रूपावचरो, तं झानं पादकं कत्वा उप्पन्नमग्गफलकाले लोकुत्तरो। विहिंसाय पटिपक्खा, न विहिंसन्ति वा एताय सत्ते ति अविहिंसा, करुणा। ताय पटिसंयुत्तो वितक्को **अविहिंसावितक्को**। सो करुणाझानस्स पुब्बभागे कामावचरो, करुणाभावनावसेन अधिगते पठमज्झाने रूपावचरो, तं झानं पादकं कत्वा उप्पन्नमग्गफलकाले लोकुत्तरो।

ननु च अलोभादोसामोहानं अञ्ञमञ्ञाविरहतो नेसं वसेन उप्पज्जनकानं इमेसं नेक्खम्मवितक्कादीनं अञ्ञमञ्ञं असङ्करतो ववत्थानं न होती ति? नो न होति। यदा हि अलोभो पधानो होति नियमितपरिणतसमुदाचारादिवसेन, तदा इतरे द्वे तदन्वायिका भवन्ति। तथा हि यदा अलोभप्पधानो नेक्खम्मगरुको चित्तुप्पादो होति, तदा लद्धावसरो नेक्खम्मवितक्को पतिट्ठहति। तं सम्पयुत्तस्स पन अदोसलक्खणस्स अब्यापादस्स वसेन यो तस्सेव अब्यापादवितक्कभावो सम्भवेय्य, सति च अब्यापादवितक्कभावे कस्सचि पि अविहेठनजातिकताय अविहिंसावितक्कभावो च सम्भवेय्य। ते
B 447 इतरे द्वे तस्सेव नेक्खम्मवितक्कस्स अनुगामिनो सरूपतो अदिस्सनतो तस्मिं सति होन्ति, असति न होन्ती ति अनुमानेय्या भवन्ति। एवमेव यदा मेत्तापधानो चित्तुप्पादो होति, तदा इतरे द्वे तदन्वायिका भवन्ति। यदा करुणापधानो चित्तुप्पादो होति, तदा इतरे द्वे तदन्वायिका भवन्ति।

कामवितक्कादयो ति एत्थ **आदि**—सद्देन ब्यापादवितक्कविहिंसावितक्कानं गहणं वेदितब्बं। तत्थ कामपटिसंयुतो वितक्को **कामवितक्को**। एत्थ हि द्वे कामा वत्थुकामो च किलेसकामो च। तत्थ वत्थुकामपक्खे आरम्मणवसेन कामेहि पटिसंयुत्तो वितक्को कामवितक्को, किलेसकामपक्खे पन सम्पयोगवसेन कामेन पटिसंयुत्तो ति योजेतब्बं। ब्यापादपटिसंयुत्तो वितक्को **ब्यापादवितक्को**। विहिंसापटिसंयुत्तो वितक्को **विहिंसावितक्को**। तेसु द्वे सत्तेसु पि सङ्खारेसु पि उप्पज्जन्ति। कामवितक्को हि पिये मनापे सत्ते वा सङ्खारे वा वितक्केन्तस्स उप्पज्जति, ब्यापादवितक्को अप्पिये अमनापे सत्ते वा सङ्खारे वा कुज्झित्वा ओलोकनकालतो पट्ठाय याव विनासना उप्पज्जति, विहिंसावितक्को सङ्खारेसु नुप्पज्जति। सङ्खारो हि दुक्खापेतब्बो नाम नत्थि, "इमे सत्ता हञ्ञन्तु वा उच्छिज्जन्तु वा विनस्सन्तु वा मा वा अहेसुं" ति चिन्तनकाले पन

सत्तेसु उप्पज्जति। अथ कस्मा वुत्तं "सङ्खारो दुक्खापेतब्बो नाम नत्थी" ति, ननु ये दुक्खापेतब्बा ति इच्छिता सत्तसञ्ञिता, तेपि अत्थतो सङ्खारा एवा ति? सच्चमेतं, ते पन इन्द्रियबद्धा सविञ्ञाणकताय दुक्खं पटिसंवेदेन्ति, तस्मा ते विहिंसावितक्कस्स विसया इच्छिता सत्तसञ्ञिता। ये पन न दुक्खं पटिसंवेदेन्ति वुत्तलक्खणायोगतो, ते सन्धाय "विहिंसावितक्को सङ्खारेसु नुप्पज्जती" ति वुत्तं।

अनुपादाय आसवेहि चित्तानि विमुच्चिसू ति एत्थ **आसवेही** ति कत्तुअत्थे करणनिद्देसो, **चित्तानी** ति पच्चत्तबहुवचनं, **विमुच्चिसू ति** कम्मसाधनं, तस्मा आसवेहि कत्तुभूतेहि अनुपादाय आरम्मणवसेन अग्गहेत्वा चित्तानि विमुच्चितानी ति[1] एवमेत्थ अत्थो गहेतब्बो ति आह "**तेसं हि चित्तानी**" ति आदि। **येहि असवेही** ति एत्थापि कत्तुअत्थे एव करणनिद्देसो। **विमुच्चिसू ति** कम्मसाधनं। **न ते तानि गहेत्वा विमुच्चिसू**ति ते आसवा तानि चित्तानि आरम्मणवसेन न गहेत्वा विमुच्चिसु विमोचेसुं। एत्थ हि **चित्तानी** ति उपयोगबहुवचनं, **विमुच्चिसू** ति कत्तुसाधनं। **अनुप्पादनिरोधेन निरुज्झमाना** ति आयतिं अनुप्पत्तिसङ्खातेन निरोधेन निरुज्झमाना आसवा। **अग्गहेत्वा विमुच्चिसू** ति आरम्मणकरणवसेन अग्गहेत्वा चित्तानि विमोचेसुं। **विकसितचित्ता अहेसुं** ति सातिसयञाणरस्मिसम्फस्सेन सम्फुल्लचित्ता अहेसुं। **पुरिमवचनापेक्खं** ति "अञ्ञतरस्मिं भिसनके वनसण्डे" ति वुत्तवचनपेक्खं। तेनाह "**यं वुत्तं अञ्ञतरस्मिं भिसनके वनसण्डे ति, तत्रा**" ति। **कतं** ति भावसाधनवाचि इदं पदं ति आह "**भिसनकतस्मिं होति, भिसनकिरियाया**" ति। भिसनस्स करणं किरिया भिसनकतं, तस्मिं **भिसनकतस्मिं**। B 448

इदानि अञ्ञथापि अत्थयोजनं दस्सेन्तो आह "**अथ वा**" ति आदि। इमस्मिं अत्थविकप्पे भिसयती ति भिसनो, भिसनो एव भिसनको, तस्स भावो भिसनकत्तं ति वत्तब्बे त—कारस्स लोपं कत्वा "भिसनकतं" ति वुत्तं ति दस्सेन्तो आह "**भिसनकतस्मिं ति भिसनकभावे ति अत्थो**" ति आदि। येभुय्यग्गहणं लोमवन्तवसेन पि योजेतब्बं, न लोमवसेनेवा ति आह "**बहुतरानं वा**" ति आदि।

पुरिसयुगवसेना ति पुरिसकालवसेन, पुरिसानं आयुप्पमाणवसेनाति वुत्तं होति। "सब्बपच्छिमको सुभद्दसदिसो" ति **तीसुपि गण्ठिपदेसु** वुत्तं। तस्मिं काले विज्जमानानं द्विन्नं पुरिसानं आयुपरिच्छेदं सकलमेव गहेत्वा "**सतसहस्सं····पे०····अट्ठासी**" ति वुत्तं। **द्वेयेव पुरिसयुगानी** ति एत्थ पुरिसानं युगप्पवत्तिकालो पुरिसयुगं। अभिलापमत्तमेव चेतं, अत्थतो पन पुरिसोव पुरिसयुगं। धरमाने भगवति एकं पुरिसयुगं, परिनिब्बुते एकं ति कत्वा "द्वेयेव पुरिसयुगानी" ति वुत्तं। परिनिब्बुते पन भगवति एकमेव पुरिसयुगं असीतियेव वस्ससहस्सानि ब्रह्मचरियं अट्ठासी ति वेदितब्बं।

---

१. विमोच्चितानी ति (स्या०)।

२०॥ **सावकयुगानी** ति सावका एव सावकयुगानि। **असम्भुणन्तेना** ति अपापुणन्तेन। गब्भं **गण्हापेन्तस्सा** ति सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स विजायनत्थं ञाणगब्भं गण्हापेन्तस्स।

B 449 २१॥ **को अनुसन्धो** ति पुब्बापरकथानं किं अनुसन्धानं, को सम्बन्धो ति अत्थो। **सिक्खापदपञ्ञत्तियाचनापेक्खं** ति याचीयती ति याचना, सिक्खापदपञ्ञत्तियेव याचना सिक्खापदपञ्ञत्तियाचना, तं अपेक्खती ति सिक्खापदपञ्ञत्तियाचनापेक्खं भुम्मवचनं, याचियमानसिक्खापदपञ्ञत्तिअपेक्खं भुम्मवचनं ति वुत्तं होति। याचना-विसिट्ठा सिक्खापदपञ्ञत्तियेव हि "तत्था" ति इमिना परामट्ठा,[1] तेनेव वक्खति "तत्थ तस्सा सिक्खापदपञ्ञत्तिया" ति। **यं वुत्तं** ति "सिक्खापदं पञ्ञपेय्या" ति इमिना यं सिक्खापदपञ्ञपनं वुत्तं, याचितं ति अत्थो। **तत्थ तस्सा सिक्खापदपञ्ञत्तिया** ति तस्सं याचियमानसिक्खापदपञ्ञत्तियं ति अत्थो। **अकालं** ति सिक्खापदपञ्ञत्तिया अकालं।

आसवट्ठानीया ति एत्थ अधिकरणे अनीयसद्दो ति आह "**आसवा तिट्ठन्ति एतेसू**" ति आदि। के पन ते आसवा, के च धम्मा तदधिकरणभूता ति आह "**येसु-दिट्ठधम्मिकसम्परायिका**" ति आदि। **दिट्ठधम्मिका** परूपवादादयो, **सम्परायिका** आपायिका अपायदुक्खविसेसा। ते आसवन्ति तेन तेन पच्चयवसेन पवत्तन्ती ति **आसवा। नेसं** ति परूपवादादिआसवानं। **ते** ति वीतिक्कमधम्मा। असति आसवट्ठानीये धम्मे सिक्खापदपञ्ञत्तियं को दोसो, येनेवं वुत्तं ति आह "**यदि हि पञ्ञपेय्या**" ति आदि, वीतिक्कमदोसं आदिस्वा यदि पञ्ञपेय्या ति अधिप्पायो। परम्मुखा अक्कोसनं **परूपवादो**, परेहि वचनेसु दोसारोपनं **परूपारम्भो**, सम्मुखा गरहनं **गरहदोसो**।

कथञ्हि नाम पलिवेठेस्सती ति सम्बन्धो, कथं—सद्दयोगे अनागतप्पयोगो दट्ठब्बो। **अन्वायिको** ति अनुवत्तको। **भोगक्खन्धं** ति भोगरासिं। "अम्हाकमेते" ति ञायन्ती ति ञाती, पितामहपितुपुत्तादिवसेन परिवट्टनट्ठेन परिवट्टो, ञातीयेव परिवट्टो **ञातिपरिवट्टो। घासच्छादनपरमताय सन्तुट्ठा** ति घासच्छादने परमताय उत्तमकाय सन्तुट्ठा, घासच्छादनपरियेसने सल्लेखवसेन परमताय उक्कट्ठभावे सण्ठिता ति अत्थो। घासच्छादनमेव वा परमं परमा कोटि एतेसं न ततो परं किञ्चि असामिसजातं परियेसन्ति पच्चासीसन्ति चाति घासच्छादनपरमा, तेसं भावो घासच्छादनपरमता, तस्सं
B 450 **घासच्छादनपरमताय सन्तुट्ठा। तेसु नाम को** ति यथावुत्तगुणविसिट्ठेसु तेसु भिक्खूसु को नाम **लोकामिसभूतं** ति लोकपरियापन्नं हुत्वा किलेसेहि आमसितब्बत्ता लोकामिस-भूतं। **पब्बज्जासङ्खेपेनेवा** ति "पाणातिपाता वेरमणी" ति आदिना पब्बज्जामुखेनेव। **एतं** ति मेथुनादीनं अकरणं। **थामं** ति सिक्खापदानं पञ्ञापनकिरियाय सामत्थियं। **बलं** ति याथावतो सब्बधम्मानं पटिवेधसमत्थं ञाणबलं। **कुप्पेय्या** ति कुप्पं भवेय्य। एतस्सेवत्थस्स पाकटकरणं **न यथाट्ठाने तिट्ठेय्या** ति, पञ्ञत्तिट्ठाने न तिट्ठेय्या ति

अत्थो। **अकुसलो** ति तिकिच्छितुं युत्तकालस्स अपरिजाननतो अकुसलो अछेको। अवुड्ढि **अनयो, ब्यसनं** दुक्खं। **पटिकच्चेवा** ति गण्डुप्पादनतो पठममेव। **सञ्छविं कत्वा** ति सोभनच्छविं कत्वा। **बालवेज्जो** ति अपण्डितवेज्जो। **लोहितक्खयञ्च मं पापेती** ति विभत्तिविपरिणामं कत्वा योजेतब्बं।

अकालं दस्सेत्वा ति सिक्खापदपञ्ञत्तिया अकालं दस्सेत्वा। **रोगं वूपसमेत्वा** ति[1] फासु कत्वा। **सके आचरियके** ति आचरियस्स भावो, कम्मं वा आचरियकं, तस्मिं अत्तनो आचरियभावे आचरियकम्मे वा। निमित्तत्थे चेतं भुम्मवचनं। **विदितानुभावो** ति पाकटानुभावो।

विपुलभावेना ति पब्बजितानं बहुभावेन। **सासने एकच्चे आसवट्ठानीया धम्मा न उप्पज्जन्ती** ति यस्मा सेनासनानि पहोन्ति, तस्मा आवासमच्छरियादिहेतुका सासने एकच्चे आसवट्ठानीया धम्मा न उप्पज्जन्ति। **इमिना नयेना** ति एतेन पदसोधम्मसिक्खापदादीनं सङ्गहो दट्ठब्बो।

लाभग्गमहत्तं ति चीवरादिलभितब्बपच्चयो लाभो, तस्स अग्गं महत्तं पणीतता बहुभावो वा। बहुसुतस्स भावो **बाहुसच्चं। अयोनिसो उम्मुज्जमाना** ति अनुपायेन अभिनिविसमाना, विपरीततो जानमाना ति अत्थो। **रसेन रसं संसन्दित्वा** ति सभावेन सभावं संसन्दित्वा, अनुञ्ञातपच्चत्थरणादीसु सुखसम्फस्ससामञ्ञतो उपादिन्नफस्सरसेपि अनवज्जसञ्ञिताय अनुपादिन्नफस्सरसेन उपादिन्नफस्सरसं संसन्दित्वा, समानभावं उपनेत्वा ति अत्थो। **उद्धम्मं उब्बिनयं सत्थुसासनं दीपेन्ती** ति "तथाहं भगवता धम्मं B 451
देसितं आजानामी" ति आदिना[2] सत्थुसासनं उद्धम्मं उब्बिनयं कत्वा दीपेन्ति।

इमस्मिं अत्थे ति निरब्बुदो हि सारिपुत्त भिक्खुसंघो"[3] ति एवं वुत्तभिक्खुसंघसञ्ञिते अत्थे। कथं पन दुस्सीलानं चोरभावो ति आह **"ते हि अस्समणाव हुत्वा"** ति आदि। **काळकधम्मयोगा** ति दुस्सीलतासङ्खातपापधम्मयोगतो। **पभस्सरो** ति पभस्सरसीलो। **सारो ति वुच्चन्ती** ति सासनब्रह्मचरियस्स सारभूतत्ता सीलादयो गुणा "सारो" ति वुच्चन्ति।

सब्बपरित्तगुणो ति सब्बेहि निहीनगुणो अप्पगुणो वा। **सो सोतापन्नो** ति आनन्दत्थेरं सन्धाय वदति। **सोतं आपन्नो** ति मग्गसोतं आपन्नो। पटिपक्खधम्मानं अनवसेसतो सवनतो पेल्लनतो सोतो अरियमग्गो ति आह **"सोतो ति च मग्गस्सेतं अधिवचनं"** ति। **सोतापन्नो ति तेन समन्नागतस्स पुग्गलस्सा** ति इमिना मग्गसमङ्गी सोतापन्नो ति वत्वा तमेवत्थं उदाहरणेन साधेत्वा इदानि इधाधिप्पेतपुग्गलं निद्धारेत्वा दस्सेन्तो आह **"इध पना"** ति आदि। इध आपन्नसद्दो "फलसच्छिकिरियाय पटिपन्नो"

१. रोपेत्वा ति (सी०, स्या०)।

२. वि० २-१७७ पिट्ठे।

३. वि० १-११ पिट्ठे।

ति आदीसु[1] विय वत्तमानकालिको ति आह **"मग्गेन" फलस्स नामं दिन्नं"** ति। मग्गेन हि अत्तना सदिसस्स अट्ठङ्गिकस्स वा सत्तङ्गिकस्स वा फलस्स सोतो ति नामं दिन्नं, अतीतकालिकत्ते पन सरसतोव नामलाभो सिया। मग्गक्खणे हि मग्गसोतं आपज्जति नाम, फलक्खणे आपन्नो।

विरूपं सदुक्खं सउपायासं निपातेती ति **विनिपातो**, अपायदुक्खे खिपनको। **धम्मो** ति सभावो। तेनाह **"न अत्तानं अपायेसु विनिपातनसभावो"** ति। अथ वा **धम्मो** ति अपायेसु खिपनको सक्कायदिट्ठिआदिको अकुसलधम्मो। यस्स पन सो अकुसलधम्मो नत्थि सब्बसो पहीनत्ता, सो यस्मा अपायेसु अत्तानं विनिपातनसभावो न होति, तस्मा वुत्तं **"न अत्तानं अपायेसु विनिपातनसभावो ति वुत्तं होती"** ति। **कस्मा** ति अविनिपातनधम्मताय कारणं पुच्छति। अपायं गमेन्ती ति **अपायगमनीया**।
B 452 **विनिपातनसभावो** ति उप्पज्जनसभावो। **सम्मत्तनियामेन मग्गेना** ति सम्मा भवनियामकेन पटिलद्धमग्गेन। **नियतो** ति वा हेट्ठिमन्ततो सत्तमभवतो उपरि अनुप्पज्जनधम्मताय नियतो। **सम्बोधी** ति उपरिमग्गत्तयसङ्खाता सम्बोधि। सम्बुज्झती ति हि[2] सम्बोधि, अरियमग्गो। सो च इध पठममग्गस्स अधिगतत्ता अवसिट्ठो एव अधिगन्तब्बभावेन इच्छितब्बो ति। तेनाह **उपरिमग्गत्तयं अवस्सं सम्पापको"** ति। उपरिमग्गत्तयं अवस्सं सम्पापुणाती ति **सम्पापको** सोतापन्नो।

विनयपञ्ञत्तियाचनकथा निट्ठिता।

बुद्धाचिण्णकथा

अनुधम्मता ति लोकुत्तरधम्मानुगतो धम्मो। **अनपलोकेत्वा** ति पदस्स विवरणं **"अनापुच्छित्वा"** ति। **जनपदचारिकं पक्कमन्ती** ति एत्थ इति-सद्दो गम्यमानताय न वुत्तो, एवं अञ्ञत्था पि ईदिसेसु ठानेसु। तत्थ **जनपदचारिकं** ति जनपदेसु चरणं, चरणं वा चारो, सो एव चारिका, जनपदेसु चारिका जनपदचारिका। तं पक्कमन्ति, जनपदगमनं गच्छन्ती ति अत्थो। **पक्कमन्तियेवा** ति अवधारणेन नो न पक्कमन्ती ति दस्सेति। "जनपदचारिकं पक्कमन्ती" ति एत्थ ठत्वा भगवतो चारिकापक्कमनविधिं दस्सेन्तो आह **"जनपदचारिकं चरन्ता चा"** ति आदि। चारिका च नामेसा[3] दुविधा तुरितचारिका चेव अतुरितचारिका च। तत्थ दूरे पि बोधनेय्यपुग्गलं दिस्वा तस्स बोधनत्थाय सहसा गमनं **तुरितचारिका** नाम, सा महाकस्सपत्थेरपच्चुग्गमनादीसु दट्ठब्बा। भगवा हि महाकस्सपत्थेरं पच्चुग्गच्छन्तो मुहुत्तेन तिगावुत्तमगमासि, आळवकस्सत्थाय तिसयोजनं, तथा अङ्गुलिमालस्स, पुक्कुसातिस्स पन पञ्चचत्तालीसयोजनं, महाकप्पिनस्स वीसयोजनसतं, धनियस्सत्थाय सत्तयोजनसतानि अगमासि,

---

१. सं० ३-१७८ पिट्ठे। २. वा (स्या०)

३. दी० अ० १-२१३, म० टु० २-५५ पिट्ठादीसुपि पस्सितब्बं।

धम्मसेनापतिनो सद्धिविहारिकस्स वनवासीतिस्ससामणेरस्स तिगावुताधिकं वीसयोजनसतं अगमासि, अयं तुरितचारिका। यं पन गामनिगमनगरपटिपाटिया देवसिकं योजनअड्ढयोजनवसेन पिण्डपातचरियादीहि लोकं अनुग्गण्हन्तस्स गमनं, अयं **अतुरितचारिका** नाम। इमं पन चारिकं चरन्तो भगवा महामण्डलं मज्झिममण्डलं अन्तिममण्डलं ति इमेसं तिण्णं मण्डलानं अञ्ञतरस्मिं चरति। तत्थ "जनपदचारिकं" B 453
ति वुत्तत्ता अतुरितचारिकाव इधाधिप्पेता। तमेव विभजित्वा दस्सेन्तो आह "**महामण्डलं मज्झिममण्डलं**" ति आदि।

तत्थ **अन्तिममण्डलं** खुद्दकमण्डलं, इतरेसं वा मण्डलानं अन्तोगधत्ता अन्तिममण्डलं, अब्भन्तरिममण्डलं ति वुत्तं होति। इमेसं पन मण्डलानं किं पमाणं ति आह "**तत्थ महामण्डलं नवयोजनसतिकं**" ति आदि। नवयोजनसतिकम्पि ठानं मज्झिमदेसपरियापन्नमेव, ततो परं नाधिप्पेतं तुरितचारिकावसेन अगमनतो। यस्मा निक्खन्तकालतो पट्ठाय गतगतट्ठानस्स चतूसु पस्सेसु[1] समन्ततो योजनसतं एककोलाहलं होति, पुरिमं पुरिमं आगता निमन्तेतुं लभन्ति, इतरेसु द्वीसु मण्डलेसु सक्कारो महामण्डलं ओसरति, तत्थ बुद्धा भगवन्तो तेसु तेसु गामनिगमेसु एकाहं द्वीहं वसन्ता महाजनं आमिसपटिग्गहेन अनुग्गण्हन्ति, धम्मदानेन च विवट्टूपनिस्सितं कुसलं वड्ढेन्ति, तस्मा वुत्तं "**गामनिगमादीसु महाजनं आमिसपटिग्गहेन अनुग्गण्हन्ता**" ति आदि। **समथविपस्सना तरुणा होन्ती** ति एत्थ तरुणा विपस्सना ति सङ्खारपरिच्छेदने ञाणं कङ्खावितरणे ञाणं सम्मसने ञाणं मग्गामग्गे ञाणं ति चतुन्नं ञाणानं अधिवचनं। समथस्स तरुणभावो पन उपचारसमाधिवसेन वेदितब्बो। "सचे पन अन्तोवस्से भिक्खूनं समथविपस्सना तरुणा होन्ती" ति इदं निदस्सनमत्तं ति दट्ठब्बं। अञ्ञेन पि मज्झिममण्डले वेनेय्यानं ञाणपरिपाकादिकारणेन मज्झिममण्डले चारिकं चरितुकामा चातुमासं वसित्वाव निक्खमन्ति।

पवरणासङ्गहं दत्वा ति अनुमतिदानवसेन दत्वा। **मागसिरस्स पठमदिवसे** ति मागसिरमासस्स पठमदिवसे। इदञ्चेतरहि पवत्तवोहारवसेन कत्तिकमासस्स अपरपक्खपाटिपददिवसं सन्धाय वुत्तं। **तेसं** ति तेसं बुद्धानं। तेहि विनेतब्बता "तेसं विनेय्यसत्ता" ति वुत्तं। **विनेय्यसत्ता** ति च चारिकाय विनेतब्बसत्ता। **मागसिरमासम्पि तत्थेव वसित्वा फुस्समासस्स पठमदिवसे** ति इदम्पि निदस्सनमत्तं ति दट्ठब्बं। चतुमासवुत्थानम्पि बुद्धानं विनेय्यसत्ता अपरिपक्किन्द्रिया होन्ति, तेसं इन्द्रियपरिपाकं आगमयमाना अपरम्पि एकमासं वा द्वितिचतुमासं वा तत्थेव वसित्वा महाभिक्खुसंघपरिवारा निक्खमित्वा पुरिमनयेनेव लोकं अनुग्गण्हन्ता B 454
सत्तहि वा छहि वा पञ्चहि वा चतूहि वा मासेहि चारिकं परियोसापेन्ति। **वेनेय्यवसेनेवा** ति अवधारणेन न चीवरादिहेतु चरन्ती ति दस्सेति। तथा हि इमेसु तीसु मण्डलेसु यत्थ कत्थचि चारिकं चरन्ता न चीवरादिहेतु चरन्ति, अथ

---

१. पदेसु (क०)।

खो ये दुग्गतबालजिण्णब्याधिका, ते "कदा तथागतं आगन्त्वा पस्सिस्सन्ति, मयि पन चारिकं चरन्ते महाजनो तथागतदस्सनं लभिस्सति, तत्थ केचि चित्तानि पसादेस्सन्ति, केचिमालादीहि पूजेस्सन्ति, केचि कटच्छुभिक्खं दस्सन्ति, केचि मिच्छादस्सनं पहाय सम्मादिट्ठिका भविस्सन्ति, तं नेसं भविस्सति दीघरत्तं हिताय सुखाया" ति एवं लोकानुकम्पाय चारिकं चरन्ति।

अपि च चतूहि कारणेहि बुद्धा भगवन्तो चारिकं चरन्ति जङ्घविहारवसेन सरीरफासुकत्थाय, अट्ठुप्पत्तिकालाभिकङ्खनत्थाय, भिक्खूनं सिक्खापदपञ्ञापनत्थाय, तत्थ तत्थ परिपाकगतिन्द्रिये बोधनेय्यसत्ते बोधनत्थाया ति। अपरेहि पि चतूहि कारणेहि बुद्धा भगवन्तो चारिकं चरन्ति बुद्धं सरणं गच्छिस्सन्ती ति वा, धम्मं, संघं सरणं गच्छिस्सन्ती ति वा, महता धम्मवसेन चतस्सो परिसा सन्तप्पेस्सामा ति वा। अपरेहिपि पञ्चहि कारणेहि बुद्धा भगवन्तो चारिकं चरन्ति पाणातिपाता विरमिस्सन्ती ति वा, अदिन्नादाना, कामेसुमिच्छाचारा, मुसावादा, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना विरमिस्सन्ती ति वा। अपरे हि पि अट्ठहि कारणेहि बुद्धा भगवन्तो चारिकं चरन्ति पठमं झानं पटिलभिस्सन्ती ति वा, दुतियं,....पे०....नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्तिं पटिलभिस्सन्ती ति वा। अपरेहि पि अट्ठहि कारणेहि बुद्धा भगवन्तो चारिकं चरन्ति सोतापत्तिमग्गं अधिगमिस्सन्ती ति वा, सोतापत्तिफलं....पे०....अरहत्तफलं सच्छिकरिस्सन्ती ति वा ति।

पुप्फानि ओचिनन्ता विय चरन्ती ति इमिना यथा मालाकारो बहुं पुप्फगच्छं दिस्वा तत्थ चिरम्पि ठत्वा पुप्फानि ओचिनित्वा पुप्फसुञ्ञं गच्छं दिस्वा तत्थ पपञ्चं अकत्वा तं पहाय अञ्ञत्थ गन्त्वा पुप्फानि ओचिनन्तो विचरति, एवमेव बुद्धापि यत्थ गामनिगमादीसु विनेय्यसत्ता बहू होन्ति, तत्थ चिरम्पि वसन्ता ते विनेत्वा विनेय्यसुञ्ञगामादीसु पपञ्चं अकत्वा तं पहाय अञ्ञत्थ बहुविनेय्यकेसु गामादीसु वसन्ता विचरन्ती ति दस्सेति। ततोयेव च अतिखुद्दकेपि अन्तिममलण्डले उपनिस्सयवन्तानं बहुभावतो ताव बहुम्पि कालं सत्तमासपरियन्तं चारिकं चरन्ति।

B 455 सन्तसभावत्ता किलेससमणहेतुताय वा सन्तं निब्बानं, सुखकारणताय च सुखं ति आह "**सन्तं सुखं निब्बानमारम्मणं कत्वा**" ति। **दससहस्स चक्कवाळे** ति जातिक्खेत्तभूताय दससहस्सिलोकधातुया। इदञ्च देवब्रह्मानं वसेन वुत्तं, मनुस्सा पन इमस्मियेव चक्कवाळे बोधनेय्या होन्ति। **बोधनेय्यसत्तसमवलोकनं** ति[१] पठमं महाकरुणाय फरित्वा पच्छा सब्बञ्ञुतञ्ञाणजालं पत्थरित्वा तस्स अन्तो पविट्ठानं बोधनेय्यसत्तानं समोलोकनं। बुद्धा किर महाकरुणासमापत्तिं समापज्जित्वा ततो वुट्ठाय "ये सत्ता भब्बा परिपाकञाणा अज्जयेव मया विनेतब्बा, ते मय्हं ञाणस्स उपट्ठहन्तू" ति चित्तं अधिट्ठाय समन्नाहरन्ति। तेसं सह समन्नाहारा एको वा द्वे वा बहू वा तदा विनयूपगा

---

१. बोधनेय्यसत्तसमोलोकनं ति (सी० स्या०)।

वेनेय्या सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स आपाथमागच्छन्ति, अयमेत्थ बुद्धानुभावो। एवं आपाथमागतानं पन नेसं उपनिस्सयं पुब्बचरियं पुब्बहेतुं सम्पतिवत्तमानञ्च[1] पटिपत्तिं ओलोकेन्ति। वेनेय्यसत्तपरिग्गण्हनत्थञ्हि समन्नाहारे कते पठमं नेसं वेनेय्यभावेनेव उपट्ठानं होति। अथ "किं नु खो भविस्सती" ति सरणगमनादिवसेन किञ्चि निप्फत्तिं[2] वीमंसमाना पुब्बुपनिस्सयानि ओलोकेन्ति।

ओतिण्णे ति आरोचिते, परिसमज्झं वा ओतिण्णे। द्विक्खत्तुं ति एकस्मिं संवच्छरे द्विक्खत्तुं। बुद्धकाले किर एकेकस्मिं संवच्छरे द्वे वारे भिक्खू सन्निपतन्ति उपकट्ठवस्सूपनायिककाले च पवारणाकाले च। उपकट्ठाय वस्सूपनायिकाय दसपि वीसम्पि तिंसम्पि चत्तालीसम्पि पञ्ञासम्पि भिक्खू वग्गवग्गा हुत्वा कम्मट्ठानत्थाय आगच्छन्ति। भगवा तेहि सद्धिं सम्मोदित्वा "कस्मा भिक्खवे उपकट्ठाय वस्सूपनायिकाय विचरथा" ति पुच्छति। अथ ते "भगवा कम्मट्ठानत्थं आगतम्ह, कम्मट्ठानं नो देथा" ति याचन्ति। सत्था तेसं चरियवसेन रागचरितस्स असुभकम्मट्ठानं देति, दोसचरितस्स मेत्ताकम्मट्ठानं, मोहचरितस्स "उद्देसो परिपुच्छा कालेन धम्मस्सवनं कालेन धम्मसाकच्छा इदं तुय्हं सप्पायं" ति आचिक्खति। किञ्चापि हि मोहचरितस्स आनापानस्सतिकम्मट्ठानं सप्पायं, कम्मट्ठानभावनाय पन भाजनभूतं कातुं सम्मोहविगमाय पठमं उद्देसप- B 456
रिपुच्छाधम्मस्सवनधम्मसाकच्छासु नियोजेति। वितक्कचरितस्स आनापानस्सतिकम्मट्ठानं देति। सद्धाचरितस्स विसेसतो पुरिमा छ अनुस्सतियो सप्पाया, तासं पन अनुयुञ्जने अयं पुब्बभागपटिपत्ती ति दस्सेतुं पसादनीयसुत्तन्तेन बुद्धसुबोधितं धम्मसुधम्मतं संघसुप्पटिपत्तिञ्च पकासेति। ञाणचरितस्स पन मरणस्सति उपसमानुस्सति चतुधातुववत्थानं आहारेपटिकूलसञ्ञा विसेसतो सप्पाया, तेसं उपकारधम्मदस्सनत्थं अनिच्चतादिपटिसंयुत्ते गम्भीरे सुत्तन्ते कथेति। ते कम्मट्ठानं गहेत्वा सचे सप्पायं होति, सत्थु सन्तिके एव वसन्ति। नो चे होति, सप्पायं सेनासनं पुच्छन्ता गच्छन्ति। तेपि तत्थ वसन्ता तेमासिकं पटिपदं गहेत्वा घटेन्ता वायमन्ता सोतापन्ना पि होन्ति सकदागामिनो पि अनागामिनो पि अरहन्तो पि। ततो वुत्थवस्सा पवारेत्वा सत्थु सन्तिकं गन्त्वा "भगवा अहं तुम्हाकं सन्तिके कम्मट्ठानं गहेत्वा सोतापत्तिफलं पत्तो……पे०……अहं अग्गफलं अरहत्तं" ति पटिलद्धगुणं आरोचेन्ति, उपरि अनधिगतस्स अधिगमाय कम्मट्ठानञ्च याचन्ति। तेन वुत्तं "**पुरे वस्सूपनायिकाय च कम्मट्ठानग्गहणत्थं…पे०… उपरि कम्मट्ठानग्गहणत्थञ्चा**" ति।

आयामा ति एत्थ **आ**-सद्दो "आगच्छा" ति इमिना समानत्थो ति आह "**आयामा ति आगच्छयामा**" ति, एहि गच्छामा ति अत्थो। **आनन्दा** ति भगवा सन्तिकावचरत्ता थेरं आलपति, न पन तदा सत्थु सन्तिके वसन्तानं भिक्खूनं अभावतो। पञ्चसतपरिमाणो हि तदा भगवतो सन्तिके भिक्खु संघो। थेरो पन "गण्हथावुसो पत्तचीवरानि, भगवा असुकट्ठानं गन्तुकामो" ति भिक्खूनं आरोचेति। "अथ खो भगवा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसी" ति वुत्तत्ता "**भगवतो पच्चस्सोसी**" ति इध **भगवतो**

1. सम्पत्ति वत्तमानञ्च (सी०)। 2. किञ्चनिप्फत्तिं (सी०)।

ति सामिवचनं आमन्तनवचनमेव सम्बन्धीअन्तरं अपेक्खती ति इमिना अधिप्पायेन "**भगवतो वचनं पटि अस्सोसी**" ति वुत्तं। **भगवतो** ति पन इदं पतिस्सवसम्बन्धेन सम्पदानवचनं यथा "देवदत्तस्स पटिस्सुणोती" ति। **पच्चस्सोसी** ति एत्थ **पटि**—सद्दो अभिमुखवचनो ति आह—"**अभिमुखो हुत्वा सुणी**" ति। भगवतो मुखाभिमुखो हुत्वा अधिवासेत्वा सुणि, न उदासीनो हुत्वा ति अधिप्पायो।

B 457 तस्स पाटिहारियस्स आगन्तुकवसेन कतत्ता वुत्तं "**नगरद्वारतो पट्ठाया**" ति। **सुवण्णरसपिञ्जराहि रस्मीहो** ति एत्थ **रस**-सद्दो उदकपरियायो, **पिञ्जर** सद्दो हेमवण्णपरियायो, तस्मा सुवण्णजलधारा विय सुवण्णवण्णाहि रस्मीही ति अत्थो। **समुज्जोतयमानो** ति ओभासयमानो। **अस्सा** ति वेरञ्जस्स ब्राह्मणस्स। **भगवन्तं उपनिसीदितुकामो** ति भगवन्तं उपगन्त्वा निसीदितुकामो, भगवतो समीपे निसीदितुकामो ति वुत्तं होति।

ब्राह्मण तया निमन्तिता वस्संवुत्था अम्हा ति पाळियं सम्बन्धो वेदितब्बो। **दातब्बो अस्सा** ति दातब्बो भवेय्य। **नो असन्तो** ति नेव अविज्जमानो, किन्तु विज्जमानोयेवा ति दीपेति। विना वा लिङ्गविपल्लासेनेत्थ अत्थो दट्ठब्बो ति आह "**अथ वा**" ति आदि। इमिना सामञ्ञवचनतो एत्थ नपुंसकलिङ्गनिद्देसो ति दस्सेति। **नो नत्थो** ति नो अम्हाकं नत्थि। **नो** ति वा एतस्स विवरणं **नत्थो** ति। केसं अदातुकामता वियाति आह "**यथा**" ति आदि। **पहूतवित्तूपकरणानं** ति एत्थ **वित्तो** ति तुट्ठि, वित्तिया उपकरणं वित्तूपकरणं, तुट्ठिकारणं ति अत्थो। पहूतं धनधञ्ञजातरूपरजतनानाविधालङ्कारसुवण्णभाजनादिभेदं वित्तूपकरणमेतेसं ति पहूतवित्तूपकरणा, तेसं पहूतवित्तूपकरणानं मच्छरीनं यथा अदातुकामता, एवं नो अदातुकामता पि नत्थी ति सम्बन्धो। **तं कुतेत्थ लब्भा** ति एत्थ **तं** ति तं कारणं, तं किच्चं वा। **एत्था** ति घरावासे। दुतिये पन अत्थविकप्पे तं ति देय्यधम्मस्स परामसनं। **एत्था** ति इमस्मिं तेमासब्भन्तरे ति अत्थो। **यं** ति येन कारणेन, किरियापरामसनं वा। दुतिये पन अत्थविकप्पे **यं** ति यं देय्यधम्मं ति अत्थो।

अलं घरावासपलिबोधचिन्ताया ति सञ्ञापेत्वा ति ब्राह्मण नेतं घरावासपलिबोधेन कतं, अथ खो मारावट्टनेना ति ब्राह्मणं सञ्ञापेत्वा। **तङ्खणानुरूपाया** ति यादिसी तदा तस्स अज्झासयप्पवत्ति, तदनुरूपाया ति अत्थो। तस्स तदा तादिसस्स विवट्टसन्निस्सितस्स ञाणपरिपाकस्स अभावतो केवलं अब्भन्तरसन्निस्सितो[1] एव अत्थो दस्सितो ति आह "**दिट्ठधम्मिकसम्परायिकं अत्थं सन्दस्सेत्वा**" ति, पच्चक्खतो विभावेत्वा ति अत्थो। **कुसले धम्मे** ति तेभूमके कुसले धम्मे। **तत्था** ति कुसलधम्मे यथा-
B 458 समादपिते। **नं** ति ब्राह्मणं। **समुत्तेजेत्वा** ति सम्मदेव उपरूपरि निवेसेत्वा पुञ्ञकिरियाय तिक्खविसदभावं आपादेत्वा। तं पन अत्थतो तस्स उस्साहजननं होती ति आह "**सउस्साहं कत्वा**" ति। एवं पुञ्ञकिरियाय सउस्साहतो एवरूपगुणसमङ्गिता च

---

१. अबिभुदयनिस्सितो (सी०) अब्भुदयनिस्सितो (स्या०) अब्भुदस्स निस्सितो (क)।

नियमतो दिट्ठधम्मिकादिअत्थसम्पादनं ति एवं सउस्साहताय अञ्ञेहि च तस्मिं विज्ज-मानगुणेहि **सम्पहंसेत्वा** सम्मदेव हट्ठतुट्ठभावं आपादेत्वा।

यदि भगवा धम्मरतनवस्सं वस्सि, अथ कस्मा सो विसेसं नाधिगच्छि? उप-निस्सयसम्पत्तिया अभावतो। यदि एवं कस्मा भगवा तस्स तथा धम्मरतनवस्सं वस्सी ति? वुच्चते–यदिपि तस्स विसेसाधिगमो नत्थि, आयतिं पन निब्बानाधिगमत्थाय वासनाभागिया च सब्बा पुरिमपच्छिमधम्मकथा अहोसी ति दट्ठब्बा। न हि भगवतो निरत्थका धम्मदेसना अत्थि। **तेमासिको पि देय्यधम्मो** ति तेमासं दातब्बो पि देय्यधम्मो। **यं दिवसं** ति यस्मिं दिवसे।

२३॥ **बुद्धपरिणायकं** ति बुद्धो परिणायको एतस्सा ति बुद्धपरिणायको, भिक्खुसंघो। तं बुद्धपरिणायकं, बुद्धजेट्ठकं ति अत्थो। **यावदत्थं कत्वा** ति याव अत्थो, ताव भोजनेन तदा कतं ति अधिप्पायो। दातुं उपनीतभिक्खाय पटिक्खेपो नाम हत्थसञ्ञाय मुख-विकारेन वचीभेदेन वा होती ति आह "**हत्थसञ्ञाया**" ति आदि। ओनीतपत्तपाणिं ति एत्थ ओनीतो पत्ततो पाणि एतस्सा ति ओनीतपत्तपाणी ति भिन्नाधिकरणविसयोयं सद्दो[1] वाहिरत्थसमासो ति आह "**पत्ततो ओनीतपाणिं**" ति आदि। "ओनित्तपत्तपाणिं" ति पि पाठो, तस्सत्थो ओनित्तं नानाभूतं विनाभूतं आमिसापनयनेन वा सुचिकतं पत्तं पणीतो अस्सा ति ओनित्तपत्तपाणि, तं ओनित्तपत्तपाणिं, हत्थे च पत्तञ्च धोवित्वा एकमन्ते पत्तं निक्खिपित्वा निसिन्नं ति अत्थो। **पत्तुण्णपट्टपटे चा** ति पत्तुण्णपटे च पट्टपटे च। तत्थ पत्तुण्णपदेसे भवा पत्तुण्णा, कोसियविसेसा ति पि वदन्ति। पट्टानि पन चीनपटानि। **आयोगादीसु आयोगो** ति पटिआयोगो, **अंसबद्धकं** पत्तत्थविकादीसु। B 459
भेसज्जतेलानं ति भेसज्जसम्पाकेन साधिततेलानं। **तुम्बानी** ति चम्ममयतेलभाजनानि। एकमेकस्स भिक्खुनो सहस्सग्घनकं तेलमदासी ति सम्बन्धो।

महायागं याजित्वा ति महादानं दत्वा। **सपुत्तदारं वन्दित्वा निसिन्नं** ति पुत्तदारेहि सद्धिं वन्दित्वा निसिन्नं। **तेमासं** ति अच्चन्तसंयोगे उपयोगवचनं। "तेमासं सोतब्बधम्मं अज्जेव सुणिस्सामी" ति निसिन्नस्स तं अज्झासयं पूरेत्वा देसितत्ता वुत्तं "**परिपुण्णसङ्कप्पं कुरुमानो**" ति। **अनुबन्धित्वा** ति अनुगन्त्वा।

बुद्धानं अनभिरतिपरितस्सिता नाम नत्थीति आह "**यथाज्झासयं यथारुचितं वासं वसित्वा**" ति। अभिरन्तं अभिरती ति हि अत्थतो एकं। अभिरन्तसद्दो चायं अभिरुचिपरियायो, न अस्सादपरियायो। अस्सादवसेन च कत्थचि वसन्तस्स अस्सादव-त्थुविगमनेन सिया तस्स तत्थ अनभिरति, तयिदं खीणासवानं नत्थि, पगेव बुद्धानं, तस्मा अभिरतिवसेन कत्थचि वसित्वा तदभावतो अञ्ञत्थ गमनं नाम बुद्धानं नत्थि, विनेय्यविनयनत्थं पन कत्थचि वसित्वा तस्मिं सिद्धे विनेय्यविनयत्थमेव ततो अञ्ञत्थ गच्छन्ति, अयमेत्थ यथारुचि। **सोरेय्यादीनि अनुपगम्मा** ति महामण्डलचारिकाय

१. तिपदो (सी०), पदो (स्या०)।

वीथिभूतानि सोरेय्यनगरादीनि अनुपगन्त्वा। **पयागपतिट्ठानं** ति गामस्सपि अधिवचनं तित्थस्सपि। गङ्गं नदिं ति गङ्गं नाम नदिं। **तदवसरी** ति एत्थ **तं** ति करणत्थे उपयोगवचनं ति आह "**तेन अवसरि तदवसरी**" ति।

बुद्धाचिण्णकथा निट्ठिता।

———

समन्तपासादिकाया ति समन्ततो सब्बसो पसादं जनेती ति समन्तपासादिका, तस्सा समन्तपासादिकाय। **तत्रिदं समन्तपासादिकाय समन्तपासादिकत्तस्मिं** ति एत्थ **तत्रा** ति पुरिमवचनापेक्खं, **इदं** ति वक्खमानकारणवचनापेक्खं। तत्रायं योजना—यं वुत्तं "समन्तपासादिकाय विनयसंवण्णनाया" ति, तत्र या सा समन्तपासादिका ति संवण्णना वुत्ता, तस्सा समन्तपासादिकाय संवण्णनाय समन्तपासादिकत्तस्मिं समन्तपासादिकभावे सब्बसो पसादजनकत्ते इदं होति। किं होती ति आह "**आचरिय परम्परतो**" ति आदि।

B 460 **आचरियपरम्परतो** ति "उपालि दासको" ति आदिना[1] वुत्तआचरियपरम्परतो। **निदानवत्थुप्पभेददीपनतो** ति निदानप्पभेददीपनतो वत्थुप्पभेददीपनतो च। तत्थ बाहिरनिदानअब्भन्तरनिदानसिक्खापदनिदानदस्सनवसेन निदानप्पभेददीपनं वेदितब्बं, थेरवादप्पकासनं पन **वत्थुप्पभेददीपनं**। **परसमयविवज्जनतो** ति "सकाय पटिञ्ञाय मेत्तियं भिक्खुनिं नासेथा" ति आदीसु[2] मिच्छापटिपन्नानं परेसं लद्धिनिराकरणतो, ततोयेव च अत्तनो समयपतिट्ठापनेन सकसमयविसुद्धितो।

ब्यञ्जनपरिसोधनतो ति पाठसोधनेन ब्यञ्जनपरिसोधनं वेदितब्बं, सद्दसत्थानुसारेन वा निब्बचनं दस्सेत्वा पदनिप्फत्तिदस्सनं ब्यञ्जनपरिसोधनं। **विभङ्गनयभेददस्सनतो** "तिस्सो इत्थियो" ति आदिपदभाजनस्स अनुरूपवसेन नयभेददस्सनतो। **सम्पस्सतं** ति ञाणचक्खुना सम्मा पस्सन्तानं, उपपरिक्खन्तानं ति अत्थो। **अपासादिकं** ति अप्पसादावहं। **एत्था** ति समन्तपासादिकाय। सम्पस्सतं विञ्ञूनं ति सम्बन्धो। तस्मा अयं संवण्णना समन्तपासादिकात्वेव पवत्ता ति योजेतब्बं। कस्स केनं देसितस्स संवण्णना ति आह "**विनयस्सा**" ति आदि।

इति समन्तपासादिकाय विनयट्ठकथाय सारत्थदीपनियं
वेरञ्जकण्डवण्णना समत्ता।

पठमो भागो निट्ठितो।

●

---

१. वि० ५-२-पिट्ठे। २. वि-१-२४९ पिट्ठे।

सारत्थदीपनीटीकाय पठमभागे

संवण्णितपदानं अनुक्कमणिका

२३

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः

श्रुतम् मे गोपाय